

मतिवा ४ ? गोयमा ! वेमायाए आणमतिवा ४ ॥ एवं जाव मणुस्सा ॥ वाणमतारा
जह्वा नागकुमारा ॥ जेतिसियाण भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा !
जहण्वेण मुहुच पटुनस्स उक्कोसेणवि मुहुचपुहुचस्स आणमतिवा ४ ॥ वेमापि
याण भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्वेण मुहुचपुहुचस्स,
उक्कोसेण तेचीसाए पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ सोहम्मग देवाण भते ! केवइ
कालस्स आणमति ४ ? गोयमा ! जहण्वेण मुहुचपुहुचस्स उक्कोसेण वेण्हपक्खाण
आणमतिवा ४ ॥ ईसाणगदेवाण भते ! केवइकालस्स अणमतिवा ४ ॥ गोयमा !
जहण्वेण साइगेस्स मुहुचपुहुचस्स उक्कोसेण माइरागाणं वेण्ह पक्खाण आणमतिवा ४ ॥

वासोभास छते हैं ! अहो गौतम ! मयन्य साव स्वाक में चत्तए मुहूर्त पुणत्त्व में [दो मुहूर्त से नव मुहूर्त
तक में क्यों कि इन का मयन्य दण हजार वर्ष चत्तए परबोधम का ही आयुज्य होता है) जैसा नाग
कुमार का कहा हैसा ही यापत् स्वनिठ कुमार तक का कहना ऐसे ही जाने भी प्रभोपर सर्व स्यान्

वहाँ दुःख है वहाँ श्वासोभास की अभिक्ता है और सुख अधिक है वहाँ श्वासोभास की भद्रता है इसलिये देवता
में भित्तिने सागरोप्प का आयुज्य होता है उसने पशु में श्वासोभास छेत्ते हैं

सणकुमाराण दवाण भत ! केवइकालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण दोण्हं पक्खाण उक्कोसेणं सचण्हं पक्खाण आणमतिवा ५ ॥ माहिदग देवाणं भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ६ ? गोयमा ! जहण्णेणं साइरेगाण दोण्हं पक्खाण उक्कोसेण साइरेगाण सचण्हं पक्खाणं आणमतिवा ॥ बमलोय देवाण भते ! केवइकालस्स आणमतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं सचण्हं पक्खाण, उक्कोसेण दसण्ह पक्खाण आणमतिवा ॥ लंतग दवाण भते ! केवइ कालस्स आणमतिवा ? गोयमा ! जहण्णेणं दसण्ह पक्खाण, उक्कोसेणं चउदसण्हं पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ महा सुक्क देवाण भते ! केवइ कालस्स आणमतिवा ४ ? गोयमा ! जहण्णेण चउदसण्ह

जानना अहो भगवत् ! पृथ्वीकायिक बीबों कितने काल में श्वासोश्वास लेते हैं ! अहो गौतम ! वेमाया अर्थात् प्रमान राहित श्वासोश्वास लेते हैं जिसा पृथ्वीकाया का कड़ा तैसा ही पाषों स्वावर बीनों बिक्कसेन्द्रिय विर्यच वंधेन्द्रिय और पनुष्य तक कहना पाणम्यन्तर का जैसा नागकुमार देव का कड़ा तैसा कहना अर्थात् अथन्य सात स्लोक में उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्स्व में ज्योतिपी नयन्य और उत्कृष्ट मुहूर्त पृथक्स्व में ही श्वासोश्वास लेते हैं ॥ समुच्चय वैमानिक दवता नयन्य मुहूर्त पृथक्स्व में उत्कृष्ट वेवीस पक्ष में श्वासाश्वास लेते हैं और बिद्धेय से-१ सो

४० अथन्य दो की सिद्ध्या से स्माकर उत्कृष्ट ९ तक सिद्ध्या को पृथक्स्व कहते हैं

गविज्जगदेवाण भते! केवइकालस्स आणमतिवा ४? गोयमा! जहण्णेणं चावीसाए पक्खाणं
 उक्कासेण तेवीसाए पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ हेट्ठिम मज्झिम गेविज्जग देवाण भते! केवइ
 कालस्स आणमतिवा ४? गोयमा! जहण्णं तवीसाए पक्खाण उक्कोसेण चोवीसाए पक्खाण
 आणमतिवा ४ ॥ हेट्ठिम उवरिम गविज्जग देवाण भत! केवइकालस्स आणमतिवा ४?
 गायमा! जहण्णेण चोवीसाए पक्खाण उक्कासेण पणवीसाए पक्खाण आणमतिवा
 ४ ॥ मज्झिम हेट्ठिम गेविज्जग देवाण भत! केवइकालस्स आणमतिवा ४? गोयमा!
 जहण्णेण पणवीसाए पक्खाण, उक्कोसेण छव्वीसाए पक्खाण आणमतिवा ॥ मज्झिम
 मज्झिम गेविज्जग देवाण भत! केवइ कालस्स आणमतिवा ४ गोयमा! जहण्णेण
 छवीसाए पक्खाण, उक्कोसेण सचावीसाए पक्खाण आणमतिवा ४ ॥ मज्झिम

८ महत्सार देवलोक के देव जगन्य सतरह पक्ष में उत्कृष्ट भठारा पक्ष में, ९ आणत देवलोक में जगन्य
 भठारापक्ष में उत्कृष्ट वषीस पक्ष में, १० प्राणव देवलोक के देव जगन्य वषीस पक्ष में उत्कृष्ट वषीस पक्ष में, ११ आण
 देवलोक के देव जगन्य वषीस पक्ष में उत्कृष्ट इक्कीस पक्ष में, १२ अणुत देवलोक के देव जगन्य इक्कीस पक्ष में
 उत्कृष्ट वषीस पक्ष में नीचे के ग्रैनेयक के देव जगन्य वषीस पक्ष में उत्कृष्ट वषीस पक्ष में, नीचे के
 वीच के ग्रैनेयक के देव जगन्य वषीस पक्ष में उत्कृष्ट चोवीस पक्ष में. नीचे क ऊपर के ग्रैनेयक के देव

आसोश्वास के प्रमाण का यत्र

स्थान	नरक	अमुरकुमार	नवनीकाय	स्थावर	व्यन्तर	उयोसिपी	वैमानिक	सोधर्म	इशान
अपन्य	अप्रमान	सब	सब	हीन बिलु न्द्रिय त्रिपंच पंचन्द्रिय और पनुष्य	सब	पुष्यस्व मुहूर्त	पुष्यस्व मुहूर्त	पुष्यस्व मुहूर्त	पुष्यस्व मुहूर्त
सत्कष्ट	०	पस	पुष्यस्व मुहूर्त	अयन्यास्तुष्ट विषम मात्रा	पुष्यस्व मुहूर्त	पुष्यस्व मुहूर्त	११ पस	२ पस	२ पस

सन०	माहिन्द्र	अस	सठक	शुक्र	सह०	आन	ग्राम	आन	अन्यु	मद्र	सुमद्र	सुना०	सुमन
२ पस	२ पस	७ पस	१०	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
७ पस	अधिक	१०	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
७ पस	अधिक	१०	१४	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६

प्रियदर्श	सुवर्ण	अपह	पद्मावर	मार्तिण्ड	विनाय	विजयत	जयत	अपरा	सर्वार्थ
२१	२७	२८	२	३०	२१	११	२१	जित	मिद्ध
२७	२८	२९	१	३१	३३	३३	३३	३३	३३

विजय वेजयत जयत अपर जत दिमागमु दगण भत ! कवइकालस्स आणमतिवा

५ ? गोयमा ! जहण्णेणं एकचीसाए पत्तसाण उक्कासेण तेचीसाए पक्खाण आण मतिवा ६ ? सव्वट्ठसिद्धग दवाण भते ! केइ कालस्स आणमतिवा पाणमतिवा उससतिवा नीससतिवा ? गोयमा ! अजहणगमणुक्कासेण तर्चीसाए पक्खाण आण मतिवा पाणमतिवा उससतिवा नीनमतिवा ॥ इति पणवण्णाए भगवईए ऊसासपय ॥ ७ ॥

विजय वेजयत अपर और अतराजित इन चार विधान क दत्ता जयन्त एकतीस पत्त में दत्तु वेतीस पत्त में श्वासोश्वास लेते हैं और सर्वार्थ मिद्ध ३३ पत्तों के दत्ता अमयन्योरुष्ट वेतीस पत्त में आण प्राण श्वासोश्वास लेते हैं इति प्रज्ञापना भगवती का श्वासोश्वास नामक सातवा पद समाप्त ॥ ७ ॥

❖ अष्टम सज्ञा पदम् ❖

वक्ष्ण भत ! सण्णाओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! दत्त सण्णाओ पण्णत्ताओ तंजहा
आहार सण्णा, भयसण्णा, मेहुण सण्णा, परिग्गह सण्णा, कोहसण्णा, माणसण्णा।

भय आठवा सज्ञा पद कहत है अहो भगवन् ! कितनी सज्ञा कही है ! अज्ञा गौतम ! दत्त सज्ञा कही
है उन के नाम—१ आहार सज्ञा, २ भय सज्ञा, ३ मैयुन सज्ञा, ४ परिग्रह सज्ञा ५ भोष सज्ञा, ६ मान
सज्ञा, ७ माया सज्ञा, ८ सोम सज्ञा, ९ साकगज्ञा और १० खोपसंज्ञा ॥ सज्ञा की व्याख्या वेदनीय और
मोहनीय कर्म के उदय कर तथा ज्ञानावरणिय दर्शनावरणिय रु सयापशमवर विविध प्रकार की इच्छा
का त्रिप समय में उद्भव होवे उसे सज्ञा कही जाती है १ तथा वेदनी क उदयकर उस के उपशमनरूप
पुद्गलों के मत्त सयोग का वितवन वह आहार सज्ञा, २ भयपाहनीय कर्भोदय दृष्टो मुख रामावली का
उद्भवनरूप क्रिया वह भय संज्ञा ३ चारित्र माहनीय क उदय द्यो पुरुष १पुपकादि के सम्बन्ध का
वितवन वह मैयुन सज्ञा, ४ परिग्रह माहनीय क उदय सचिव अचिव मिश्र वस्तु क संग्रह का वितवन वह
परिग्रह सज्ञा, ५ प्रापमाहनीय उदय मुखनत्रादि का वेष्टा का पलटना वह भोष सज्ञा, ६ मान मोहनीय
उदय अङ्कार कर आत्मोत्कृष पना वह मान सज्ञा, ७ माया माहनीय के उदय परिणामों की साक्षिपृता

मायासण्णा, लोभसण्णा, लोभसण्णा ओघसण्ण ॥ नेरइयाण भते ! कइसण्णाओ पण्णाओ ? गोयमा ! एस सण्णाओ पण्णाओ तजहा आहार सण्णा जाव ओघसण्णा असुरकुमाराण भते ! कइसण्णाओ पण्णाओ ? गोयमा ! एस सण्णाओ पण्णाओ तजहा आहारसण्णाओ जाव ओघसणा, एव जाव यणिय कुमारण, ॥ एव पुढवी काइयाण जाव वेमाणियाधसाणाण जेयव्व ॥ नेरइयाण भते ! किं आहारसण्णोवत्ता, भयसण्णोवत्ता, मेहुणसण्णोवत्ता परिग्गहसण्णोवत्ता ? गोयमा ! ठसण्ण कारणं पढुच्च भयसण्णोवत्ता, सतइभावपढुच्च आहारसण्णोवत्तावि जाव परिग्गह सण्णोवत्तावि ॥ एणुत्तिण भते ! नेरइयाण आहार सण्णोवत्ताण

बह माया सङ्गा, ८ लोभ मोहनीय के उदय आस्ति ते अधिक सचिचादि परिग्रह की बाँछा बह लोभ सङ्गा, ९ मविद्वान के ज्ञयोपशम से जो घट पटादि बिचार बह लोक सङ्गा, और १० सम्यक् दर्शन के अवधारणकर सामान्यपने घट पटादि का ग्रहण जैसे बच्चा किसी वदार्थ को देखा देखी ग्रहण तो करता है परंतु उसको पिछानता नहीं है जैसे भावे बह औपसङ्गा अहोभगवन् ! नरक के जीवकें कितनी सङ्गा हाती है ? बहो गौतम ! दस ही सङ्गा होती है उन के नाम—१ आहार सङ्गा २ भय सङ्गा ३ मेहुन सङ्गा ४ परिग्रह सङ्गा ५ औप सङ्गा ६ मान सङ्गा ७ माया सङ्गा ८ लोभ सङ्गा ९ लोभ सङ्गा और १० औप सङ्गा

भयसण्णो वडत्ताण, मेहुण सण्णोवडत्ताण, परिग्गह सण्णोवडत्ताण कयरे २ हिंत्तो अप्पावा बहुयावा तुल्लावा विससाहियावा ? गोयमा ! सव्वत्थोवा नेरइया मेहुणसण्णोवडत्ता, आहारसण्णोवडत्ता सखेज्जगुणा, परिग्गहसण्णोवडत्ता सखेज्जगुणा, भयसण्णोवडत्ता सखेज्जगुणा॥तिरिक्खजोभियाण भंते!आहार सण्णोवडत्ताअं जाव परिग्गहसण्णोवडत्ताण कयरे २ जाव विससाहिया ? गोयमा! उसण्णं कारण पढुअ आहार सण्णोवडत्ता सतइ

अहो भगवन् ! असुर कुमार में किवनी संज्ञा ? अहो गौतम ! दश ही संज्ञा पाती है उन के नाम—आहार संज्ञा यावत् भौव संज्ञा भैसा असुर कुमार का कश वैसा ही त्याग कुमार आदि नव ही भुवनपति देव का ज्ञानना ऐसे ही पृथ्वीकायादि पाँच स्वार में भी दश ही संज्ञा ज्ञानना यावत् भैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दंडक में दश ही संज्ञा ज्ञानना

इन में से प्रसन्नीचो में तो दश ही संज्ञा व्यक्त प्रगट है और स्वाचो में दश ही संज्ञा अव्यक्त है, जैसे १ कृशादि वनस्पति पानी आदि का आहार ग्रहण कर वह आहार संज्ञा, २ लज्जातु आदि भय भौत हो शरीर को संकोच्य वह भय संज्ञा ३ तारुण्यपने रम्यते आदि के प्रकार प्रगट (मृष्य विन्द देखोवे) भेदुन संज्ञा, ४ पत्रादि कर फल्यदि को गुप्त करे वह परिग्रह संज्ञा, ५ छेदनादि करतो कुम्भनादि हो वह कोच संज्ञा, ६ ताक्यपन में सुसेमित रहे वह मान संज्ञा, ७ अपने फलादि को पत्रादि से छियावे, वह माया संज्ञा, ८ फल पत्रादि से मार मूल होते भी भरीभरी रहे यह

मात्र पदुष आहारसण्णो बउत्तावि जात्र परिग्गह सण्णोवउत्तावि ॥ ष्णस्सिण भत्ते ! तिरिक्खजोणियाण आहारसण्णावउत्ताण जात्र परिग्गहसण्णोवउत्ताण कयरे २ हित्तो त्रित्तेसाहियात्रा ? गोयमा ! सब्बथाया तिरिक्ख जोणियाण परिग्गह सण्णोवउत्ता, महुणसण्णोवउत्ता सस्सज्जगुणा, मयसण्णोवउत्ता सस्सिज्जगुणा, आहारसण्णो बउत्ता सस्सज्जगुणा ॥ मणुस्साण भत्ते ! किं आहारसण्णोवउत्ता जात्र परिग्गह सण्णोवउत्ता ?

अहो मगनन् ! गीग क्या आशङ्क भङ्गाबाले हैं कि मय सङ्गाबाले हैं कि मैथुन सङ्गाबाले हैं कि परिग्रह सङ्गाबाले हैं ! अहा गौतम ! ऊष्णता कर अर्थात् प्रही प्रबलपने करके पाहु स्वापन कर तो मय भङ्गाबाले बहुत हैं क्यों कि जहाँ पर पार्थीक का प्रयोग है वहाँ वन करके कुंठादि का मय है अन्य दान स्रञ्चादि का प्रयाग कर मय की बहुलता है और आस्थि माष कस्तक अर्थात् मत्तर अननमय का रस, भाण्डर आदिक चार भङ्गाबाले हैं अहो मगनन् ! इन आधार सङ्गाबाले

लोभ संज्ञ, ९ सप्तम्य सुमया कृश च पत्र संकोच पावे सूर्य चद्र का उदय भूले सूर्य बिकासी चन्द्र बिकसी कमलप्रदि
बिकसापमान होवे यह लोक संज्ञा और १० मार्गशि में जाति बेलखी चन्द्रकल् कृशादि को गण्डण करे यह भोग संज्ञा
इस प्रकार स्याबरी में लक्षण कर दश ही सज्ञा का प्रमान होता है यों प्रस में व्यक्त ओर स्यावर में अभ्यक्त रूप
रेखाव यह संज्ञा नहीं

गोयमा। ठसणंकारणं पटुच्च मेहुणसण्णोवठत्ता, सनइभाव पटुच्च अहारसण्णोवठत्तावि
 जाव परिगहसण्णोवठत्तावि ॥ एएसिण भंते ! मणुरसाण आहारसण्णोवठत्ताण जाव
 परिगहसण्णोवठत्ताणय कथरे २ हितो अप्पावा बहुयावा तुक्कावा त्रिसंसाहियावा ?
 गोयमा ! सव्वरथोरा मणुरसा भयसण्णोवठत्ता आहारसण्णोवठत्ता सखिज्जगुणा,

मे मय सज्ञावाले मे मैयुन सज्ञावा ३ मे और परिग्रह संज्ञावाले मे कौन २ अस्य है, बहुत है, मुख्य है, या
 अधिक है ? अहो गौतम ! सब मे याद मैयुन संज्ञावाले हैं, क्यों कि नरक में चतुर्द्विय की मात्र
 रयता नहीं है, पाप मन ही क याग मे कुछ इच्छा मात्र मैयुन संज्ञा होती है उस से आहार संज्ञा
 वाले सुखपात्रगुन वों कि वहां इच्छित आहार का अभाव होन से अन्त सुखा की मात्रदग्ता स आहार
 संज्ञा अधिक है, उस मे परिग्रह भद्रा संख्यावगुनी है क्यों कि आहार का जो यहाँ रही नहीं किन्तु
 शरीर दानादिक का सम्भ-य है उस के रक्षण मे इच्छा अधिक है, और उस से भयप्रज्ञा संख्यावगुनी
 है क्यों कि तदैव प्रणान्त पर्यन्त वे भयभीतही रहते हैं ॥ अहो भगवन् ! त्रिर्वच योनिक क्या आहार
 सज्ञा वा ३ कि भयप्रज्ञा वाल हैं मैयुन सज्ञा वाले हैं कि परिग्रह सज्ञावाले हैं ! अहो गौतम ! बाहुल्य
 ताकत आहार सज्ञा बाळ बहुत हैं और त्रिषयानभाव करते आहार आदिक चारोंसज्ञा बाळ हैं ? अहो
 भगवन् ! त्रिर्वच योनिक मे इन आहार आदिक चारों सज्ञा मे से किस संज्ञा वाले अत्य हैं, क्यादा है

परिग्रहसंज्ञोवत्तः सस्वस्वगुणा, मेदुणसंज्ञोवत्तः सस्वस्वगुणा ॥ देवान भंत ! किं
आहारसंज्ञोवत्तः आध परिग्रह संज्ञोवत्तः ? गोयमा ! उत्सर्णकारण पटुषु
परिग्रहसंज्ञोवत्तः, संतद्भाव पटुषु आहारसंज्ञोवत्तः जाय परिग्रह संज्ञोव-
त्तः ॥ पृथसिण भंते ! देवानं आहारसंज्ञोवत्तः जाय परिग्रहसंज्ञोवत्तः
मुच्य देव अचिक है ? अहो गौतम ! सध से थोड़े परिग्रह संज्ञा वाले बच्चों कि पशुवाकर समवा
कम है, उस से मैयुज संज्ञा वाले सस्यवात मुने बच्चों कि परिग्रह से मैयुज का काळ बन क संस्यवातगुमा
है, उस से भयसंज्ञा वाल संस्यवानुन बच्चों कि पराविनवाकर मयकी अविज्ञा है और उससे आहार संज्ञा
वाले संस्यवत मुने हैं बच्चों कि त्रिदिव के सुयोधनीय का बन्धु की मायवत्ता है और इच्छित आहार का
सम्बन्ध थाहा है ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य आहार संज्ञा वाल हैं कि वाक्त् परिग्रह संज्ञा वाल हैं ? अहो
गौतम ! मनुष्य में बाहुल्यता करते मैयुज मन्वावाले भविक हैं बच्चों कि मनुष्यपने में मोहकी मायवत्ता
बाविक रही हैं विषयमान भावकर आहार आदि आये संज्ञावाल हैं ॥ अहा भगवन् ! इन आहार संज्ञा
पक्षर परिग्रह संज्ञा वाले मनुष्य में कौन २ किस में अल्प हैं ज्यादा है मनुष्य है पा विष्णोविक है ?
अहो गौतम ! सबसे थोड़ी भयसंज्ञा है बच्चों कि स्वाविनता की बहुत है तथा ज्ञान की भी अधिकता है,
उस से आहार संज्ञा संस्यवानुनी प्रुपा की मायवत्ता है, उस से परिग्रह संज्ञा संस्यवात गुनी बच्चों कि

कपरे २ अल्पावा बहुधावा तुष्ठावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सञ्चर्योधा दया
आहारणोवठत्ता, भयसण्णोवठत्ता संखेज्जगुणा, मेधुणसण्णोवठत्ता संखेज्जगुणा, परिग्ग
हसण्णोवठत्ता संखेज्जगुणा ॥ इति पण्णवण्णाय भगवद्द्वेष सण्णोपय अट्टम सम्भत्त ॥ ८ ॥

कुटुम्ब वन गृहादि पर स्मृत अधिक है, और उस से पैधुन सज्ञा संख्यात गुनी ॥ अहो भगवन् !
देवता आहार संज्ञावाले हैं कि यावत् परिग्रह संज्ञावाले हैं ! अहा गौतम ! बाहुव्यता करते परिग्रह सज्ञा वाले हैं
क्यों कि वही वैभन परिवारादि परिग्रह की बाहुव्यता है, सन्धीमाव करके आहार आदिक चारों सज्ञावाले
हैं ॥ अहो भगवन् ! दबता में आहार आवि चारों सज्ञा में से कौन २ सी संज्ञा वाले कमी है, क्यादा
है, तुल्य है अधिक हैं ! अहो गौतम ! सब स योदे आहार संज्ञा वाले क्यों कि वहां सुवा वेदनीयका उदयमद
है, इच्छा होते तृप्त होजाते हैं, उस में भयसंज्ञा वाले संख्यात गुने आभोगी देवता आदिको इन्द्रादिका
भय अधिक रहता है, उस से पैधुन संज्ञावाल संख्यात गुने क्यों अग्रणीषी आदिका परिहार भी अधिक है
और भोगकाल भी अधिक है और उस से परिग्रह सज्ञा वाले संख्यात गुन ॥ इति पनवणा भगवति का
संज्ञा नापक आपुप पद समाप्तम् ॥ ८ ॥

॥ नवम योनि पदम् ॥

कइविहाणं भंते ! जोणी पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा जोणी पण्णत्ता ? तजहा सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणा जाणी ॥ १ ॥ नरइयाणं भंते ! किं सियाजाणी उसिणाजाणी सीओसिणाजोणी ? गायमा । सीयाचिजाणी, उसिणाचि जोणी, नो भव नववा यानि इदं कहत हैं अरि कऱ अनादि सम्बन्धी तमस कापण शरीर सब औदारिक बैकैय शरीररपन परिणमता है तब इन शरीर क पुरुष स्वयं का समुदाय भिम कर मिश्रत जाता है उस उत्सर्ग स्थान को योनि कहत हैं अहो यगवत् ! योनि कितने प्रकार की करी है ? अहो गीतम् ' योनि तीन प्रकार की करी है उन क नाम—१ शीत यानि मो उत्सर्ग स्थान शीतस होवे, २ ऊष्ण योनि सो उत्सर्ग स्थान ऊष्ण होवे, और ३ शीतोष्ण योनि सा उत्सर्ग स्थान शीतोष्ण दोनों स्वर्णवय (मिश्र) होवे ॥ १ ॥ अहा भगवन् ! नेरीय मया शीत यानिय हैं कि ऊष्ण यानिय हैं कि शीतोष्ण योनि हैं ? अहो मौतव ! नेरीय शीत यानिये मी हैं, ऊष्ण योनिये मी हैं परंतु शीतोष्ण योनिये नहीं हैं रतनममा, सर्कर ममा और वायु क ममा इन तीनों नारकी के उत्पत्त सप्त शीत स्वर्ण कर पारेणोपेत हैं, और उत्पत्त स्थान ओर कर अन्य स्थान उत्पन्न स्वर्ण कर परणोपेत हैं, इस स्थिये उन शीत यानिक उत्पत्त कर नेरीयो को ऊष्ण की मया बदना होती है बोधी पद मया नरक में उत्पन्नि स्थान श्रीम स्वभावमय

सीआसिणाजोणी ॥२॥ असुरकुमाराण भते ! किं सीयाजोणी उसिणा जोणी, सीओ
मिणाजोणी ? गायमा ! नो सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ एव
जाय थणियकुमाराण ॥३॥ पुढनिष्काइयाण भत ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओ
सिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजाणी, उसिणाविजाणी स आसिणाविजाणी ॥४॥
एव आऊ, वाऊ, वणस्सइ, येइदिया, तेइदिया चउरिदियाणेथि पचेयइ भाणियव्व ॥५॥
तउक्काइयाण भते ! किं सीयाजाणि उसिणाजोणि, सीअ सिणाजोणी ? गायमा !

परिणामें बहुत हैं और ऊष्ण स्पर्शमय परिणामित यों हैं, जहां शीतोत्पत्ति स्थान हैं वहां नैरीये के रहने का ऊष्ण परिणाम परिणामित सप्त है और जहां ऊष्णात्पत्ति स्थान हैं वहां नरीयों का शीत सप्त है, पाँचवीं धूम्र प्रभा में उत्पत्ति स्थान ऊष्णस्वभावा परिणामित बहुत हैं और शीत स्वभाव परिणामित यों हैं, बदना उक्त प्रमाण, और छठी तम प्रभा सात्वती तमसमें प्रभा में उत्पत्ति स्थान ऊष्ण स्वभाव परिणामित हैं, और नरक शीत की वेदना है ऊष्णता न शीत की वेदना अधिक होती है ॥२॥ अहो भगवन् ! असुर कुमार दयता यथा शीत यान्त्रिक हैं कि ऊष्ण यान्त्रिक हैं कि शीतोष्ण योनिक हैं ! अहा गौतम ! शीत यान्त्रिक और उत्कृष्ट योनिक नहीं हैं परंतु शीतोष्ण यान्त्रिक हैं क्यों कि वेदता में शीतोष्ण की वेदना नहीं है अमुर कुमार क नैसा ही यावत् स्यन्ति कमार तद कइना ॥३॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकया क्या शीत यान्त्रिक है ऊष्ण योनिक है कि शीतोष्ण यान्त्रिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनिष्वल्

ना सीयाजोणी उसिणाजोणी, ना सीओसिणाजोणी ॥ ६ ॥ पश्चिदिय तिरिक्खजोणियाण मत ! कि सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी, उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम पश्चिदिय तिरिक्खजोणियाणवि एवंचेव ॥ गम्भवर्द्धतिय पश्चिदिय तिरिक्खजोणियाण मते ! कि सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! ना सीयाजोणी ना उसिणाजोणी, सीओसीणाजोणी ॥ ७ ॥ मणुस्साण भंत ! कि सीयाजोणी, उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! सीयाविजोणी उसिणाविजोणी, सीओसिणाविजोणी ॥ सम्मुच्छिम मणुस्साण मते ! कि सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! तिविहाजोणी ॥

हे ॥ ६ ॥ एत हो अप्पकाय वायुकाय वनस्पतिकाय वेदइय ठेइइय चौरिन्द्रिय का भी अस्मन् रूइना सब मे तीनों प्रकार की योनि पाती है ॥ वेदमन्त्राय शीत वानिक और क्षीणव्य योनिक नहीं है परंतु ऊर्ज्य योनिक है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पश्चिन्द्रिय तिर्यक् योनिक क्या शीत योनिक है कि ऊर्ज्य योनिक है कि उतप्ल योनिक है ? अहो गौतम ! तीनों प्रकार की यानिवाछे हैं सम्मुच्छिम तिर्यक् वेवेन्द्रिय का वेछे ॥ ज्ञानता गर्भजातेर्यक् पंचान्त्रिय शीत योनिक और ऊर्ज्ययोनिक नहीं है परंतु क्षीतोव्य (सिम) योनि-

गमयस्वार्तिथ्यं मणुस्मरण भंते ! किं सीयाजोणी उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ?
 गोयमा ! ना सीयाजोणी नो उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ ८ ॥ वाणमतर देवानं भंते !
 किं सीयाजोणी उसिणाजोणी सीओसिणाजोणी ? गोयमा ! नो सीयाजोणी नो
 उसिणाजोणी, सीओसिणाजोणी ॥ जाइसिय वैमाणियाणन्नि एवंबेव ॥ ९ ॥ एएसिण भंते !
 जीवाण सीयाजोणियाण, उसिणाजोणियाणं, सीओसिणा जोणियाण, अजोणियाणय
 क्यरे २ हित्तो अप्पावा बहुआवा तुक्कावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सन्वरथावा

है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! मनुष्य क्या क्षीत योनिक है कल्प योनिक है कि क्षीतोष्ण योनिक है ? अहो गौतम !
 तीनों प्रकार के हैं ऐसे ही संपूर्णम मनुष्य का तीनों प्रकार की योनि जानना और गर्भज मनुष्य
 क्षीत यातिक कल्प योनिक नहीं है परंतु क्षीतोष्ण (पिश्र) योनिक है ॥ ८ ॥ वाणमन्तर देवोत्पत्ति और वैमानिक
 द्वार भी क्षीत और कल्प योनिक नहीं परंतु एक क्षीत, ण्य योनिक है ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! इन क्षीत यातिक
 कल्प योनिक क्षीतोष्ण योनिक और अयातिक में याद, बुद्ध, मुख्य व विशेष कौन २ हैं ? अहो गौतम !
 सब से पादे जीवों क्षीतोष्ण योनिक, क्योंकि कि चारों जातिके देखता गर्भज मनुष्य और विषय तथा कितनेक
 बार स्पष्टवर्तीन धिक्खेन्द्रिय असक्षीतिर्वच, मनुष्य इनमें ही योनी है, २ वसस कल्पयोनिक अमंखयातगुणे, क्योंकि
 कि वज्रस्त्राय तो वसकाय से अधिक ही है और कितनी नरक और कितनेक बार स्थावर धिक्खेन्द्रिय

जीवा मीआसिजोणिया, उसिणजोणिया असखेजगुणा, अजाणिया अणतगुणा,
 सीय जोणीया अणतगुणा॥१॥ कइनिहाण मत ! जोणी पणत्ता ? गोयमा ! निविहा
 जाणी पणत्ता ? तजहा अचित्ताजाणी अचित्ताजाणी मीमिया जाणी॥११॥ नेरइयाण
 मत ! किं सचित्ताजाणी अचित्ताजाणा मीमिया जोणी ? गोयमा ! ना सचित्ता
 जाणी अचित्ताजाणी ना मीमियाजाणी॥१२॥ असुरकुमारण भते ! किं सचित्ताजाणी
 अचित्ताजाणी, मिसिथाजोणी ? गोयमा ! ना सचित्ताजाणी, अचित्ताजाणी, ना

अमही तिर्थच पंचेन्द्रिय मनुष्य हम में हैं १ हम म अमेनिक भनत गुन सिद्ध आश्रिय और हम से
 कीते यनिक भनतगुन क्यों कि निगर्दये सब शीत याँक है ॥ और मी यानीया पूछेने हैं ॥ अहो
 मगबन् ! योनि कितने प्रकार की कही है ! अहो गौतम ! गेनि नीर प्रका की कही है उस के नाम
 १ सचित्त बोनी, जा मीष क मन्मथ सहित हाव २ अश्वित्त योनि सो जीव के समान रहित हावे,
 और ३ मिश्र योनि जो मीष अमीष के प्रवेशों की मिश्रता कर गये॥११॥ चलो मगबन् ! नरक की क्या
 साधस्योनी है कि अविशयोनी है कि मिश्रयोनी है ? अहो गेय ! सचित्त और मिश्रयोनी नहीं है
 परंतु एक अविश यानि है, यद्यपि एकन्द्रिय जीव सर्व लोक व्यापी हैं तथापि यानि स्यान उस सम्बन्ध
 रहित है अहो मगबन् ! असुर कुमार क्या सचित्त योनि है- कि अविश योनि है कि मिश्र योनि है

मीसियाजोणी, एव जात्र धणियकुमाराण पुढाधिकार्याण भते ! किं सचिचाजोणी,
अचिसाजोणी, मीसियाजोणी ? गायमा ! सचिचाजोणी, अचिसाजोणी, मीसि
याजोणी ॥ एव जात्र घउरिदियाण ॥ सम्भुद्धिप पक्षिय तिरिक्खजोणियाणं
सम्भुद्धिम मणुस्साणय एवचन ॥ १२ ॥ गम्भवक्कतिय पक्षिय तिरिक्खजोणियाण गम्भ
वक्कतिय मणुस्साणय नो सचिचाजोणी, ना अचिसाजोणी मीसि गजोणी, ॥ १३ ॥ गणमत
जोइसिय वेमाणियाण जहा असुरकुमाराण ॥ १४ ॥ एएसिण भत ! जीवाण सचिचा

१ ! अहा गौतम ! सचिच भोर मिश्र योनिक नहीं हैं परंतु आचिच योनिक हैं एमे ही स्यनित कुमार
पर्यंत जानना अहो मगधन् ! पृथ्वीकाया कथा सचिच योनिक है आचिच योनिक है मिश्र योनिक है ?
अहो गौतम ! तीनों प्रकार की योनि पावी है क्यों कि सचिच यान ना इस प्रकार है कि मत्स
स्यावर दोनों के शरीर में पृथ्वीकाया की उत्पत्ति होती है जेमे तीप क जनि पइन्द्रिय उस के उदर में
मोती पृथ्वीकाया उत्पन्न होते एम ही सर्व के मत्सक की पणि, मनुष्य क मत्सक की पणि, मनुष्य क
पेट की पत्थरी, अगर मच्छ क दाढ़ में तथा मत्सक में मोती सूंझर क दाढ़ में पणि, गज क मत्सक क
मोती यह सब पृथ्वीकाया जानना तेसे ही पृथ्वी परत भवन यिषागादि र्भे स्यात सचिच जानना,
एमे ही पानी स नियरु उत्पन्न हान एने ही पानी मी पानी में उत्पन्न होते नगगादि के मिश्र पानी में

जोणियाण, अविचिञ्जोणियाण मीसिय जोणियाण अजाणिवाणय कयरे २ इति अप्याथा बहुयाथा तुल्लाना विससाहियाचा? गोयमा! सवयस्थावा जीवा मीसजोणिया अविचिञ्जोणिया अससेजगुणा, अजोणिया अणसगुणा, सविचिञ्जोणिया अणतगुणा॥ १५॥ फइविहाण भत्ते! जोणी पण्णत्ता १ गोयमा ! तिञ्चिहा जोणी पण्णत्ता ? संजहा सवुढाजोणी, वियडा जोणी, सवुढावियडाजोणी ॥ १६॥ नरहयाण भत्त! किं सवुढाजोणी, वियडाजोणी, सवुढा मी उत्पन्न हावे अविचिञ्जोणिया तो अने अविचिञ्जोणिया से नण काच से सवुढी स, काचे भी वराचि होवी है, एते ही वायु सविचिञ्जोणिया मिश्र सर्व स्थान में उत्पन्न होता है वनस्पति मी सविचिञ्जोणिया वृक्षादि में उत्पन्न होवे अविचिञ्जोणियादि में उत्पन्न हावे एस ही वेदन्त्रिय वेदन्त्रिय चौरिन्द्रिय मी समूच्छिम विषय पंचान्द्रिय समूच्छिम मनुष्य इन सब की चीनों प्रकारकी योनि होती है ॥ १७२४॥ गर्भम विषय पंचान्द्रिय और मर्मम मनुष्यकी मिश्रयानि ॥ १७३॥ और वाण्यन्तर द्योतिवी वैयानेक असुरकुमारक जैसेही अविचिञ्जोणिया जानना ॥ १७४॥ अहो मगबन् ! सविचिञ्जोणिया अविचिञ्जोणिया मिश्र यानिक अयोनिइ इत्ये कमी जगदा तुल्य अधिक कौन २ है ! अहो गौतम ! सब से थोड़े मिश्रयोनिक कयो कि गर्भम विषय और मनुष्य इम विधेय है २ इस से अविचिञ्जोणिया अहंस्वरात् गुना कयों कि देवता नारकी तथा किसी पावों स्वावर पाकस्मिन्द्रिय असही मनुष्य विषय में पाठी है ३ उस से अयोनिइ अनन्त गुने कयों कि सिद्ध मगबन् है और उससे सविचिञ्जोणिया अनन्तगुने कयों कि निगोदीवे जीवोंकी सविचिञ्जोणी है ॥ १७५॥ और मी योनि

वियढाजोणी ? गोयमा ! सवुढा जोणी, नो वियढाजोणी, नो सवुढात्रियढाजोणी ॥
 एवं जात्र वणरसइ काइयाणं ॥१७॥ येइदियाण पुच्छा ? गोयमा! नो सवुढाजोणी,
 वियढाजोणी, नो सवुडावियढाजोणी ॥ एत्र जात्र घडरिदियाण ॥ सम्मुच्छिम पविधिय
 तिरिक्खजोणियाण सम्मुच्छिम मणुरसाणय एत्रवेव ॥ १८ ॥ गम्भवक्कतिय पविदिय
 तिरिक्खजोणियाणं गम्भवक्कतिय मणुरसाणय नो सवुढाजोणी, नो वियढाजोणी सवुढा

आश्रय प्रभ पूछते हैं - भरो मगवन् ! कितने प्रकार की योनि कहो ! भरो सौतम ! तीन प्रकार की
 योनी कही है - चम के नाम १ सवृत यानिक अम का मुख सङ्चित होने से उस में जीबोत्पत्ति दृष्टीगत
 न होने पर, २ विवृतयोनी मुख खुल/ होने से जीबोत्पत्ति दृष्टीगत हो आवे पर, और ३ संवृतविवृत योनी
 सो कुछ जानने में आष कुछ जानने में नहीं आवे मैस अनुत्पन्नी विर्यवनी का गर्भ पेट बढने से ही जानने
 में आवे ॥१९॥ भरो मगवन्! नारकी की क्या सवृतयानी है कि विवृतयानी है कि संवृतविवृत योनी है? भरो
 गौतम ! संवृत योनी है परंतु विवृत और सवृत विवृत योमी नहीं हैं क्यों कि नरकमें उत्पन्न हान के गवास
 बिस जैसे स्थान है वहां उत्पन्नहोते हैं वे अल्पमात्र स भी नीचे पडते हैं तवायम भी खंचकर निकालते हैं नरक
 के मैसरी दबप्रबनपत्तिका और पर्वोत्पासरोका कहना क्योंकि देवताकी शैया और पावों स्वरकी उत्पत्ति
 स्थान प्रत्यक्ष देखता है ॥२०॥ भरो मगवन्! वेदन्त्रिय के किस प्रकारकी योनि है ? भरो गौतम! वेदन्त्रिय क

त्रियुहाजोनी॥१९॥वाणमतराजोद्वसियाधेमाणिगणानं जहा नैरद्वयाण॥२०॥एमिण भते।
जीवाणं रवडा जाणियाणं वियडा जाणियाण संवुडवियड जोणियाणं अजोणियाण
कयेरे २ द्विना अप्पावा बहुयाथा, तुल्लाया, त्रिसेसाहियावा ? गोयमा ! सवधयोथा
जीवा सनुडाऽयडाजोणिया, वियडजाविया असखेज्जगुणा, अजोपिया अपतगुणा,
सनुडाजाविया अणतगुणा ॥२१॥कइविहाबं भते। जौलीपणत्ता ? गोयमा ! तिन्निहा
जोणि पणत्ता ? तनहा कुम्मुसया जोणी, सखावत्ताजोणी, वसीपत्ताजोणी॥२२॥कुम्मु-

संवृता और संवृता । धृत्वा । यानि नदी । व पत्तु विवृता योनि है एवे ही । तदन्विष चौरिन्विष भर्त्सनी
तिर्विष पवेन्विष ओग मनदय की जाना ॥१८॥ और गर्भन तिर्विष की तथा गर्भन पनुष्य की संवृता और
विवृता योनि नहीं है एक संवृता विवृता योनि है ॥१९॥ वाणव्यन्तर जोठिपी और वैमानिक वेषकी तरक के
ने । एह गत्तु । यानि है ॥२०॥ अथा मगवन् ! इन संवृत, विवृत, सवृतिवृत और व्योमिक-में कौन २
-प ३० न । तन । व वैकृपाधिक है । अथो गौतम ! सब से घोडा संवृतविवृत यानिवासे हैं, व्योमिक
गमन तद्वत् और गर्भन पनुष्य क ही होती है, उन से विवृत योनि एक अवेसवात गुने अधिक, व्योमिक
विक्रमेन्द्रिय और असङ्को तिर्विष व पनुष्य में होती है, उस से व्योमिक (सिद्ध) अनंत गुने और उस से
मनृत योनि एक अनंत गुने क्यों कि निमोदीये चीनों को यही होती है ॥२१॥ और भी योनी आश्रय ही

१२ यौनिक यन्त्र

[illegible]

अयाणजाणी उरामपुरिस माठयाण, कुमुमयाण ओणीए, उरामपुरिसा गग्मंयक्रमति
 तंजहा अरंहता, वक्रवही, बलवेवा, वासुवेवा ॥ सखात्रचाणं ओणी इतिथरणरत,
 सखावचाणं ओणीए बहवे जीवाय योगलाय वक्रमति विठक्रमंति चयति उवचयंति
 नोचिवणं विपजति ॥ वंसीपचाणं ओणि विहुजवस्स, वसीपठियाणुण ओणीए विहुजवे
 गग्मवक्रमति ॥ इति पणवणा भगवईए जवम ओणी परं सम्मत्त ॥ ९ ॥

पूछते हैं ॥ अहो मयबन् ! कितने प्रकार की यानि करी है ? अहो गौतम ! तीन प्रकार की योनि
 करी है, इन के नाप - १ कुर्मक योनिक जो काणवे की पृष्ठकी बैसी ऊंची बाले, २ वंसावर्तयोनि वंस्व
 वेसे बाबुत वाली होते और वंसीपच योनी वह बांस के पत्र समान संपूट मिले हुये होते ॥ इस में
 कुमुदा योनीवों वचमपुरुषों की होती है, तिस से उचम पुरुष उत्पन्न होते हैं उन के नाप १ तीर्तकर,
 २ वक्रवर्ती, ३ वस्वेष और ४ वामुदय दूसरी वंसावर्तयोनि वक्रवर्ती गहाराना के कीरल की होती है,
 उस में जनक भीरो जनक पुत्रों आकर उत्पन्न होते हैं उस में से चबते (मरते) भी हैं और सचयमी
 होते हैं, किन्तु योनी में किसी का नाप नहीं होता है, और वंसीपच यानि सामान्य पाठानों की
 होती है उस में अनेक बीवों उत्पन्न होले, भी हैं और मर्ी भी होते हैं ॥ इति नववा योनी पद संपूर्णम् ॥९॥

॥ दशम चरिम पदम् ॥

कइएन भते ! पुढवीओ पण्णाचाओ ? गोयमा ! अट्ट पुढवीओ पण्णत्ताओ तंजह !
 रयणप्पमा, सक्करप्पमा, वालुयप्पमा, पकप्पमा, धूमप्पमा, तमप्पमा, तमतमप्पमा,
 इसीयपम्भारा ॥ १ ॥ इमाण भते ! रयणप्पमा पुढवि किं चरिमा, अचरिमा,
 चरिमाइ अचरिमाइ, चरमतपप्सा अचरिमत्तपप्सा ? गोयमा ! इमाण रयणप्पमा
 अब दइवा चरिम अचरिम पद कहते हैं—अहो यागवन् ! पृथ्वी कितनी कही है ? अहो गौतम !
 आठ पृथ्वी कही है ? उस के नाम—१ रत्तप्रमा, २ छर्कर प्रमा, ३ वालु प्रमा, ४ पक प्रमा,
 ५ धूमप्रमा, ६ तम प्रमा, ७ तमतम प्रमा और ८ इषत्त प्रागमार ॥ १ ॥ अहो यागवन् ! यह रत्तप्रमा
 पृथ्वी द्रव्य से चरम है कि अचरम है [एक वचन] १ चरिमा है कि अचरिमा है (बहुत वचन) ४ क्षेत्र
 से चरिम प्रवेक्षी है कि अचरिम प्रवेक्षी है ! + अहो गौतम ! यह रत्तप्रमा पृथ्वी चरिम नहीं है तेसे ही
 अचरिम भी नहीं है (एक वचन) चरिमा भी नहीं है अचरिमा भी नहीं है (बहुत वचन) चरम प्रवेक्षी
 भी नहीं है अचरिम प्रवेक्षी भी नहीं मी क्यों कि यह प्रम रत्तप्रमा पृथ्वी का है जो अन्य

+ जैसे मोक्षगामी के अन्तिम शरीर को चरिम शरीर कहते हैं ऐसे ही रत्तप्रमा मरक मय्य को अपेक्षा कर
 भगिन्म के द्रव्य को व प्रवेश को चरिम कहे हैं और अन्तिम द्रव्य व प्रवेश की अपेक्षा कत मय्य को अचरिम कहे हैं

रम्य चरिमाणय चरिमत पएसाणय अचरिमतपएसाणय एव्हट्टयाए पएसट्टयाए
 एव्हट्टपेसट्टयाए कयेरे २ हितो अप्पाया बहुआया, तुल्लावा विसेसाहियावा ?
 गोयमा ! सत्त्वस्थोत्रे इमीसे रयणप्पमाए पुठ्ठाए एव्हट्टयाए एगे अचरिमे, चरिमाइ
 असत्त्वज्जगुणाइ, अचरिम चरिमाणिय दोवि विसेसाहिया ॥ पएसट्टयाए सत्त्वस्थोवा इमीसे
 रयणप्पमाए पुठ्ठाए चरिमतपएसा, अचरिमतपएसा असत्त्वज्जगुणा, चरिमतपएसाए

१७ सूत्र इव इन को उक्त चार दोस स चौगुने करते सब १४८ सूत्र होते हैं ॥ २५ अब इन की
 मर्यादाबहुत कहते हैं—अहो भगवन् ! यह रत्नप्रमा पृथ्वी का १ अचरिमात का एक स्वर्ण, २ चरिमात
 के बहुत स्वर्ण, ३ चरिमात क बहुत प्रदेस, और ४ अचरिमान्त के बहुत प्रदेस, यह द्रव्य आश्रय, प्रदस
 आश्रय और द्रव्य प्रदेस आश्रय कौन २ से बोधे हैं अपि कहें तुल्य हैं विवेकाधिक हैं ? अहो गौतम !
 सब ये पादा इस रत्नप्रमा पृथ्वी द्रव्याधि पने एक अचरिम स्वर्ण, क्यों कि तथा विस्म एक एक
 परिणाम परिमित एक ही अचरिम स्वर्ण विनिश्चित है २ उस से चरम स्वर्ण असत्स्यातगुने, क्योंकि चारों
 तरफ हैं, ३ उससे अचरिम और चरिम यह दोनों विवेकाधिक क्योंकि इसमें दोनों ही सामिल होगये
 प्रदेसाधि कहें—सबसे थोड़ा रत्नप्रमा पृथ्वीके चरिमात प्रदेस क्योंकि अन्तिम प्रदेसही प्ररणाधिक है; उससे अच-
 रिम प्रमत्स्यातगुने क्योंकि मध्य के सब प्रदेस समागये, और उससे चरिमान्त अचरिमान्त दोनों विवेकाधिक इसमें

अचरितमतपुसाय दोषि विसेसाहियावा ॥ ब्वहुयाए पएसहुयाए-सद्वरथोने इमीस-
रयणपभा पुठधीए ब्वहुयाए एगे अचरिमे, चरिमाइ असखेजगुणाइ, चरिम अचरि-
माणिय दोषि विसेसाहियाइ, चरिमतपुसा असखेजगुणा, अचरिमतपुसा असखे
जगुणा, चरिमतपुसाय अचरिमतपुसाय दोषि विसेसाहिया ॥ एवं जाव छहे
सचमाए ॥ सोहम्मस्स जाव लोगस्सय एवंच ॥ ३ ॥ अलोगस्सण भते ! अचरि
मस्सय चरिमाणय चरिमतपुसाणय अचरिमतपुसाणय ब्वहुयाए पएसहुयाए,

दोनों का वा सब रत्नप्रभा के प्रदेशों का समानेस हो गया सब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थ दोनों सामिल आश्रिय
सब से बोहे इस रत्नप्रभा पृथ्वी का द्रव्यार्थपने एक अचरिम खण्ड, क्यों कि सब पृथ्वी का एक ही बड़ा
खण्ड है, २ उस से चरिम खण्ड असंख्यातगुने, क्यों कि चारों तरफ के खण्ड आगय, उस से चरिम
और अचरिम खण्ड दोनों विशिष्टाधिक, उस से चरिमान्त प्रदेश अर्थस्यातगुने क्यों कि चारों तरफ के
मन्त्रिम प्रदष्ट आगये, उस से अचरिम प्रदेश असंख्यातगुने क्यों कि बीच के सब प्रदेश आगये और
इस से चरिमान्त अचरिमान्त प्रदष्ट विशिष्टाधिक सब प्रदेशों का समानेस हो गया इस रत्नप्रभा पृथ्वी के
जैसा ही सातों ही पृथ्वी का छब्बीस ही देखलोकों का सिद्ध सिद्धा का और संपूर्ण लोक का ब्रह्म
करना ॥ ३ ॥ महो यमबन् ! बसोक का अचरिम खण्ड, चरिम खण्ड, चरिमान्त प्रदेश और

दृष्टव्यपसट्टयाए कयरे २ हितो अप्पावा बहुयाधी तुल्लावा विससाहियावा ?
 गोयमा । सव्वस्योवे अलोगरन दव्वट्टयाए एगे अचरिमे, चरिमाइ असस्सेज्जगुणाइ,
 अचरिमच्चरिमानिय दोन्नि विसेसाहियाइं, पसट्टयाए सव्वस्योवा अलोयस्स चरिम
 तपप्सा, अचरिमंतपप्सा अणतगुणा चरिमतपप्साय अचरिमतपप्साय दावि
 विसेसाहिया ॥ दव्वट्टपसट्टयाए सव्वस्योवे अलायस्स दव्वट्टयाए एगे अचरिमे,
 चरिमाइ असस्सेज्जगुणाइ, अचरिमच चरिमानिय दोन्नि विसेसाहियाइ, चरिमतपप्सा
 असस्सेज्जगुणा, अचरिमंतपप्सा अणतगुणा, चरिमतपप्साय अचरिमतपप्साय
 दोन्नि विसेसाहिया ॥ ६ ॥ लोगालोगरसण भते ! अचरिमस्सय चरिमाण्य चरिम

अचरिमान्त् प्रदेश दृष्टव्यार्थपने और द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने कौन २ से मत्प है क्यादा है
 तुल्य है विशेष है ! अहो गौतम ! सब से थोड़ा अलोक का द्रव्यार्थ एक अचरिम लण्ड पर्यो कि
 एकही है २ उस स चरिम लण्ड असख्यातगुणा, १ उससे चरिम अचरिम लण्ड विद्यापाधिकः अब प्रश्नार्थपने
 सब से थोड़े अलोक के चरिमान्त् प्रदेश, उस से अचरिमान्त् प्रदेश अनतगुने, उस से चरिमान्त्
 अचरिमात् अनंत गुने अब द्रव्यार्थपने प्रदेशार्थपने सब से थोड़ा अलोक का द्रव्यार्थपने एक अचरिम
 उस स चरिम लण्ड असख्यातगुने इस से अचरिम चरिम प्रदेश दोनों विद्यापाधिक, उस से चरिमान्त्
 प्रदेश अनंतगुने पर्यो की अलोक अनंत है, उस स चरिमान्त् अचरिमात् दोनों विद्यापाधिक ॥ ४ ॥

तपस्याय अचरिमेतपसाणय दम्बट्टयाए पएसट्टयाए दम्बट्टपणसट्टयाए कयेरे २
 हितो अप्पावा बहुपावा तुल्लावा विससाहियावा ? गोयमा ! सन्वत्थोवा लोगा
 लोगस दम्बट्टयाए एगमेगे अचरिमे, लोगस चरिमाइ असत्थेज्जगुणाइ, अलो
 गस्स चरिमाइ विससाहियाइ, लोगस्सय अलोगस्सय अचरिम चरिमाणिय
 दोवि विससाहियाइ ॥ पएसट्टयाण-सन्वत्थोवा लोगस्स चरिमत्त पप्सा, अलोगस्स

यह लोक असोक का कहन है अहो मगधन् ! लोक असोक का अवरिम स्रष्ट, वरिम स्रष्ट, वरिम प्रवेष्ट, अवरिम प्रवेष्ट द्रव्यार्थपने, प्रदुष्टार्थपने कौन २ से धाहे, क्यादा, तुल्य, विद्वेषाधिक है ? अही गौतम ! तब से बोधा लोक असोक का द्रव्यार्थपने एक लोक का और एक असोक का अवरिम स्रष्ट यहाँ दोनों एकैक ही ग्रहण किय हैं उस से लोक का वरिम स्रष्ट द्रव्यार्थपने असद्रव्यगुना उस से असोक के वरिम स्रष्ट द्रव्यार्थपने विद्वेषाधिक क्यों कि यहाँ लोक का वरिम स्रष्ट, असद्रव्यगुना कहे हैं वे कल्पना से इस प्रकार लोक के तो चार शिक्षा के और चार विद्वेषा के यों आठ स्रष्ट होते हैं और असोक के चार शिक्षा के चार तथा चार विद्वेषा के आठ यों चार स्रष्ट होते हैं इस सिधे विद्वेषाधिक कहे इस से लोक के व्योम के वरिम स्रष्ट विद्वेषाधिक क्यों कि पीछे लोक के आठ स्रष्ट कह से और एक स्रष्ट वरिम का यों ९ तथा असोक के चार स्रष्ट कहे से और एक

चारिमत पशुता असंख्यजगुणा, अलौयस्स चरिमत पशुता विसेसाहिया, लौयस्स अचरिमतपशुसाय असखजगुणा, अलौगस्स अचरमतपदेसा अणतगुणा, लौगस्सय अलौगस्सय चरमतपदेसाय अचरमतपदेसाय दोवि विसेसाहिया, सन्वदन्वा विसे-साहियावा सन्वदपशुसा अणतगुणा सन्वपज्जा अणतगुणा ॥ ५ ॥ परमाणुयोगल्लाण भते ! किं १ चरिमे, २ अचरिमे, ३ सवत्तवप, ४ चरिमाइ, ५ अचरिमाइ, ६

श्लोक के चरम प्रदेश असख्यातगुने (क्योंकि कि एक खण्ड के भर्त्सख्यात प्रदेश का समावेश होता है १ वात से अश्लोक के चरमान्त प्रदेश विशेषाधिक, क्षत्र की विशेषताकर, ७ उस से लोका श्लोक के अचरमांत प्रदेश असंख्यागुने, क्षेप की अधिकताकर ८ जल से असाक के अचरमान्त प्रदेश अनवगुने, क्योंकि अनव अश्लोक है ९ लोक के चरमान्त अचरमान्त प्रदेश तथा अश्लोक के चरमान्त प्रदेश अचरमान्त प्रदेश प्रदेश यह चारों के पूरुष करे विशेषाधिक, १० सब लोकालोक के चरमान्त अचरमान्त प्रदेश से सर्व द्रव्य विशेषाधिक क्योंकि एकैक आकाश प्रदेश गर अनव भीषों तथा परमाणु व स्कन्ध रह हैं वे विशयाधिक हैं ११ सर्व प्रदेश अनवगुने क्यों कि एकैक द्रव्य के प्रदेश अनव हैं १२ उस से पर्याय भर्त्सगुनी क्योंकि प्रति प्रदेश अनव पर्याय का पस्य होता है ॥६॥ अब परमाणु आश्रय चरिम अचरिमके २१ मागे करते हैं—परमाणु की व्याख्या इसप्रकार है—परम=इच्छुष्ट, अणु=मूल्य पुद्गल—

अवत्तव्याद्, ७ उदाहु चरिमेय अवचरिमेय, ८ उदाहु चरिमेय अवचरिमाद्, ९
 उदाहु चरमाद् अवचरिमेय, १० उदाहु चरिमाद् अवचरिमाद्, पटमा चठभंगी
 ११ उदाहु चरिमेय अवत्तव्याद्, १२ उदाहु चरिमेय अवत्तव्याद्, १३ उदाहु
 चरिमाद् अवत्तव्याद्, १४ उदाहु चरिमाद् अवत्तव्याद्, विविधा चठभंगी
 १५ उदाहु अवचरिमेय अवत्तव्याद्, १६ उदाहु अवचरिमेय अवत्तव्याद्, १७ उदाहु
 अवचरिमाद् अवत्तव्याद्, १८ उदाहु अवचरिमाद् अवत्तव्याद्, त्रयया चठभंगी

पूरे बिले (पिछे—मत्स्य होवे) उसे परमाणु पुत्र कहते हैं भारी मगधत् ! १ परमाणु पुत्र कहते हैं
 एक संयोगी २ अवचरिमेय है ३ अवत्तव्या है (चरिमेय भी न कहा जाय, अवचरिमेय भी न कहा जाय ऐसा)
 अवत्तव्या है वीनों भाग यह एक बचनी; ४ चरिमा है, ५ अवचरिमा है, ६ अवत्तव्या है, (यह वीनों
 भाग अनेक बचनी) यह छे भाग एक संयोगी हुवे ७ एक चरिमेय एक अवचरिमेय कहना क्या ! ८ एक
 चरिमेय बहुत अवचरिमेय कहना क्या ! ९ बहुत चरिमेय एक अवचरिमेय कहना क्या ! १० बहुत चरिमेय बहुत अव
 चरिमेय कहना क्या ! यह प्रथम चौभंगी ११ एक चरिमेय एक अवत्तव्या, कहना क्या ! १२ एक चरिमेय बहुत
 अवत्तव्या, कहना क्या ! १३ बहुत चरिमेय एक अवत्तव्या, कहना क्या ! १४ बहुत चरिमेय बहुत अवत्तव्या
 कहना क्या ! यह दूसरी चौभंगी १५ एक अवचरिमेय एक अवत्तव्या, कहना क्या ! १६ अवचरिमेय बहुत

॥ ६ ॥ दुपदोर्षिण भते। स्वधे पुष्ठा ? गोयम। ! दुपदोर्षिण स्वधे सिय चरिमे, नो
अचरिमे, सिय अवचन्वए, सेसा भगा पढिसेइयव्या॥७॥ तिपएसिण भते। स्वधे पुष्ठा ?
गोयमा ! तिपएसिण स्वधे १ सिय चरिमे, २ तो अचरिमे, ३ सिय अवचन्वए, ४

द्विमदोक्षिक स्कन्ध में उक्त २६ भागों के कितने भाग पाते हैं ? ब्रह्मा गौतम ! द्विमदोक्षिक स्कन्ध स्यात्
चरिय है क्योंकि ^{२६-२७-२८} ^{२९-३०-३१} दो आकाश प्रदेश अवगाह कर दो परमाणु रह हैं वह पश्चिम की अपेक्षा
दूसरा चरिम और दूसरे की अपेक्षा पश्चिम कहा जाता है, अचरिम नहीं है क्योंकि कि 'दो परमाणु
स्कन्ध के विमान नहीं होते हैं इस सिद्धे पक्ष नहीं है और २ कदाचित् अवकाश भी है क्योंकि
द्विमदोक्षिक स्कन्ध एक ही आकाश प्रदेश अवगाह कर रहा हो तो चरिम अचरिम कुछ भी नहीं
कह सके। इसलिये यह ६ भाग पाते हैं बाकी २४ भाग का नियम करना ॥ ७ ॥ ब्रह्मा गौतम !
द्विमदोक्षिक स्कन्ध में उक्त २६ भागों के कितने भाग पाते हैं ? ब्रह्मा गौतम ! द्विमदोक्षिक स्कन्ध
स्यात् चरिम है क्योंकि कि जिस पक्ष दो आकाश प्रदेश अवगाह कर हम अजि से रहे, तब द्विमदे
क्षिक के जैसे एकेक की अपेक्षा से एकेक चरिम है, तब अचरिम नहीं क्योंकि कि दो आकाश पदों के
अवगाह स पण्य रहित है, और एक आकाश पदस अवगाह कर रहे तब चरिम अचरिम दोनों ही नहीं

नो चरिमाई, ५ नो अचरिमाई १ नो अवचत्तयाइ, ७ नो चरिमेय अचरिमेय, ८ नो चरिमेय, अचरिमाई, ९ सिय चरिमाइव अचरिमेय, १० नो चरिमाइव अचरिमाई, ११ सिय चरिमेय अवचत्तयाइ, सेसा भगा पडिसेहयन्वा ॥ ८ ॥ चटप्यसिप्य भंते। साधे पुच्छा। गोयमा। चटप्यसिपु संधे। सिय चरिमे, २

होने से स्यात् अवक्तव्य भी है, बहुत बचन की अपेक्षा चरित नहीं है बहुत अचरित भी नहीं बहुत अवक्तव्य भी नहीं अब द्वितीयोणी मांगे करते हैं—एक चरित और एक अचरित भी न होने क्योंकि तीन हैं, चरित का एक अचरित के बहुत यह भी नहीं है, परंतु स्यात् तीनों परमाणुओं तीन प्रवेश अवगाह कर रहे हैं तब दोनों तरफ दो परमाणु रह वे बहु बचन आश्रित चरित है और एक परमाणु बीच में है वह एक बचन आश्रित अचरित है, यह १२ वा मांगा पाया है, बहुत चरित बहुत अचरित यह भी नहीं पावे परंतु स्यात् एक चरित एक अवक्तव्य यह मांगा पावे, जब तीनों प्रवेश में का दो परमाणु को वा आकाश प्रवेश, तब श्रौति से अवगाहवे और एक विषय अवगाहवे ०० तब जो वा सम श्रौति से रहे हैं वे एकेक की अपेक्षा से चरित हैं और जो विषय श्रौति से रहा है अवक्तव्य है, यों इग्यारहवा मांगा पाया है इस प्रकार त्रिप्रवेशिक स्कन्ध में ४ मांग पाते हैं, बाकी २२ मांग का निपट करना ॥ ८ ॥ भरो मतबन् 'चतुष्प्रवेशिक स्कन्ध में कितने मांगे पाते हैं !

नो अचरिमे, ३ सिय अवचत्तवए, ४ नो चरिमाइ, ५ नो अचरिमाइ, ६ नो
 अवचत्तवयाइ, ७ नो चरिमेय अवचरिमेय, ८ नो चरिमेय अचरिमाइच, ९ सिय
 चरिमाइ अचरिमेय, १० सिय चरिमाइच अचरिमाइच, ११ सिय चरिमेय
 अवचत्तवए, १२ सिय चरिमेय अवचत्तवयाइच, १३ नो चरिमाइच अवचत्तवए, १४

धरो गौतम ! चतुर्वेदोक्त स्कन्ध में शास्त्र मणि पाते हैं, सो कहते हैं—१ जब चतुर्वेदोक्त स्कन्ध
 दो आकाश प्रदेश का अन्वेषण कर एकैक प्रदेश पर दो २ परमाणु समझेंगे तो रो सब दो प्रदेशों अब
 गार स्कन्ध को चरिम कहना २ अचरिम नहीं कहना क्योंकि द्विप्रदेशावगाही हैं ३ स्यात् अवकल्प्य
 है क्यों कि जब चारों प्रदेश एक आकाश प्रदेश अवगाह कर रो सब अवकल्प्य करे जावे ४ बहुत
 वचन से चरिम नहीं, ५ बहुत वचन से अचरिम नहीं ६ बहुत वचन से अवकल्प्य नहीं ७ एक चरिम और
 एक अचरिम पर भी द्विस्तंभोमी सातवा मांगा भी नहीं, ८ एक चरिम और बहुत अचरिम पर आठवा
 द्विस्तंभोमी मांगा भी नहीं, ९ स्यात् चरिम बहुत और अचरिम एक यह पिछ जाव क्योंकि जब चतुर्वेद
 दिक स्कन्ध तीन आकाश प्रदेश का अन्वेषण कर [०॥३८॥०] समझेंगे तब रो के आदि अंत के प्रदेश
 अन्वेषण कर बहुत चरिम और प्रथम का एक प्रदेश अन्वेषण कर अचरिम १० स्यात् अन्वेषण मांगा चरिम भी

व्यप्य संसाधना पादितेहेव्यव्य॥ ९ ॥ पञ्चमसिपुण भते स्वधे पुच्छा? गोपमा! पञ्चमपु
 सिए स्वधे १ सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवसठवए, ४ यो
 चरिमाइ, ५ नाअचरिमाइ, ६ नो अवसठवयाइ, ७ सिय चरिमेय अचरिमेय ८

बाकी २ ४-८-१३ १४ १५ १६ १७-१८ १९ २० २१-२२ २४ २५ २६ यह १९ मीने का
 नियम कहना ॥ ९ ॥ अहो मयवत् ! पाँच मयवत् स्वरूप में कितने मीने पाते हैं ? अहो गौसम ! १२
 मीने पाते हैं यथा १ स्वात् चरम है, क्योंकि कि पाँच प्रवेश में से दो परमाणु एक आकाश प्रदेश
 अवगाहक रहे हैं और तीन एक आकाश प्रदेश अवगाहक रहे यों पाँचों दो आकाश प्रदेश का
 अवगाहक करने से एकैक की अपेक्षा एकैक चरम है, २ अचरिम नहीं है ३ स्वात् अन्य

कल्प है क्योंकि कि पाँचों एक ही आकाश प्रदेश का अवगाहक रहे तब चरम अचरमकी अपेक्षा रहित
 अवकल्प है, ४ ५ तीनों बहुत बचनेके मीने मी नहीं पाते हैं, अर्थात् एक चरम एक अचरम है क्योंकि कि
 जब चार परमाणु चारों तरफ़ क आकाश प्रदेश का अवगाहक रहे और एक मध्य का प्रदेश का अवगाह
 इस अपेक्षा त चारों अलग २ चारदिशा के चार चरम रहे और मध्य का अचरम हुआ
 ऐसे ही सभी अणि से तथा बाही अणि से ग्रहणकरे तो भी होते हैं, ८ चरम एक
 अचरिम बहुत मी नहीं पाता है, ९ स्वात् चरम बहुत अचरम एक यह मीणा
 पाता है क्योंकि कि जब पाँच प्रदेशिक स्वरूप तीन आकाश प्रदेशमय अणि
 से अवगाहक रहे उस में पहिले के दो परमाणु एक आकाश प्रदेश एक

॥ १० ॥ दुष्पुंसिपुणं भंते ! संधे पुच्छा ? गोपमा ! दुष्पुंसिपुण स्वधे ?
 सिय चरिमे, २ नो अचरिमे, ३ सिय अवत्तव्वपु ४ नो चरिमाइ ५
 नो अचरिमाइ ६ नो अवत्तव्वयाइ ७ सिय चरिमेय अचरिमेय, ८ सिय
 चरिमेय अचरिमाइच्च, ९ सिय चरिमाइच्च अचरिमेय, १० सिय चरिमाइच्च अचरिमाइच्च
 ११ सिय चरिमेय अवत्तव्वपु १२ सिय चरिमेय अवत्तव्वयाइच्च, १३ सिय चरि-

[illegible]

माइच अवचत्तवण्य, १४ सिय चरिमाइच अवचत्तवयाईच १५ नो अचरिमेय,
अवचत्तवण्य, १६ नो अचरिमेय अवचत्तवयाईच, १७ नो अचरिमाइच अवचत्तवण्य,
१८ नो अचरिमाइच अवचत्तवयाइच १९ सियचरिमेय अचरिमेय अवचत्तवण्य
२० नो अचरिमेय अवचत्तवयाईच, २१ नो चरिमय अचरिमाइच अवचत्तव

प्रदेशवर्ती अचरिम, और विषय ओषिते एकेक प्रदक्ष अगाहकर रहे वे अवक्तव्य २४ स्यात् चरिम के
बहुत अचरिम को एक और अचत्तव्य बहुत यह भी पाता है क्यों कि इस में
पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदेश का अगाहकर रहे उसमें तीन प्रदक्ष प्रथम
परमाणु तीन आकाश प्रदेशपर समझीगएने रहे हैं विषय ओषि से रह के प्रदेशवर्ती
आकाश प्रदेश पर रह हैं उस में भादि अन्त के दो प्रदेश अन्तवर्ती रहे चरिम बहुत, प्रत्यक्ष
वह अचरिम, विषय ओषी के दोनों प्रदेशों अवक्तव्य बहुत २५ स्यात् चरिम भी बहुत अचरिम भी बहुत
अचत्तव्य एक यह भी मांगा पाता है क्यों कि पांच प्रदेशिक स्कन्ध पांच आकाश प्रदक्ष अगाह
उस में चार परमाणु तो सप्तअणि से रहे और एक विषय रहा इन चार आकाश प्रदेश पर रहे भादि
अन्त का एक २ परमाणु चारमे है प्रत्यक्ष दो और विषय ओषिते रहा एकपरमाणु अचत्तव्य और

१५ नो अचरिमेय अवतत्त्वण्य, १६ नो अचरिमेय अवतत्त्वयाइच्च, १७ नो अचरिमाइच्च अवतत्त्वण्य, १८ नो अचरिमाइच्च अवतत्त्वयाइच्च १९ सियचरिमेय अचरिमेय अवतत्त्वण्य, २० सियचरिमेय अचरिमेय अवतत्त्वयाइच्च २१ सियचरिमेय अचरिमाइ अवतत्त्वण्य, २२ सिय चरिमेय अचरिमाइच्च अवतत्त्वयाइच्च, २३ सिय चरिमाइच्च अवरिमेय अवतत्त्वण्य, २४ सिय चरिमाइच्च अचरिमेय अवतत्त्वयाइच्च, २५ सिय चरिमाइच्च अचरिमाइच्च अवतत्त्वण्य, २६ सिय -

प्रवक्त एक २३ चरिम बहुत, अचरिमेय एक अवक्तव्य एक
२४ चरिम बहुत अवरिमेय एक अवक्तव्य बहुत

२५ स्यात् चरिम २६ स्यात् चरिम भी बहुत, अचरिम भी बहुत, और अवक्तव्य भी बहुत, अचरिमेय बहुत, यह भी यागा पावा है क्यों कि आठ प्रदक्षिक रुद्राग्ने और अवक्तव्य एक आदि अंतका आकाशबहुत प्रवेशोकर अगगाहा इसलिये बहुत चरिमों पर्यंत बहुत प्रमाणों से इसलिये बहुत अचरिम है और कौन में दो २ आकाश प्रदेश रहे इसलिये बहुत अवक्तव्य है

असख्य पुरसागाढ नो अणत पुरसोगाढे ॥ पूर्व जाव आयए ॥ परिमडलेण भते
सठाणे अणतपुरसिए किं सख्य पुरसोगाढे, असख्य पुरसोगाढे, अणत
पुरसोगाढे ? गोयमा ! सिय सख्य पुरसोगाढे, सिय असख्य पुरसोगाढे गो
अणत पुरसोगाढ ॥ एव जाव आयए ॥ १५ ॥ परिमडलेण भते ! सठाणे सख्य

किन्तु असख्यात और अनंत प्रवेशावगाही नहीं है। ऐसे ही यावत् आयत सत्यान पर्यंत कहना ॥
अहो भगवन् ! असख्यात प्रवेशिक परिपक्व सत्यान क्या संस्थात प्रवेश अवगाही है कि असख्यात
प्रवेशावगाही है कि अनंत प्रवेशावगाही है ? अहो गौतम ! कदाचित् मस्यान प्रदेश अवगाही भी है,
कदाचित् असख्यात प्रवेशावगाही भी है परंतु अनंत प्रवेशावगाही नहीं है। ऐसा ही यावत् आयत सत्यान
पर्यंत कहना अहो भगवन् ! अनंत प्रदेशी परिपक्व सत्यान क्या संस्थात प्रवेशावगाही है कि अग
स्यात प्रवेशावगाही है कि अनंत प्रवेशावगाही है ! अहो गौतम ! कदाचित् संस्थात प्रवेश अवगाही
भी है कदाचित् असख्यात प्रवेशावगाही भी है परंतु अनंत प्रवेशावगाही नहीं है क्योंकि लोक असं-
ख्यात प्रवेशावगाही है। ऐसे ही यावत् आयत सत्यान पर्यंत कहना ॥ १६ ॥ अहो भगवन् ! संस्थात

अणता ॥ एव जाव आयए ॥ परिमहलण भंते ! राठाण कि संखजपणसिण, असखेजपसिए, अणत पसिए ? गायमा ! सिय संखेजपणसिए, सिय असखज पसिए, सिय अणत पसिए ॥ एव जाव आयए ॥ परिमहलण भंते ! सठाणे कि संखेज पसिए, असखेज पसिए अणत पसिए ? गोयमा ! सिय संखेज पए पसिए असखेज पसिए अणत पसिए एव जाव आयए परिमहलण सिए सिय असखज पसिए सिय अणत पसिए असखज पसिए, अणत पसिए भंते ! संठाणे संखेज पसिए संखेज पसिए, असखज पसिए, अणत पसिए भंते ?

के करे हे वरणा—१ परिमहल (गोल घूही जैसा) २ बर्तुस (गाल-सद जैसा) ३ धिन्नोन सिघाब
 धिन्नोन-चौकी जैसा, और आयत, लंबी लकड़ी जैसा अहो भमबन् ! परिमहल संस्थान
 कि असंख्यात हे कि अनंत हे ! अहो गोमम ! संख्यात असंख्यात नहीं हे परंतु
 हे एरो यापन आयत संस्थान पर्यंत अनंत प्रदेशिक का कहना ॥ अनंत दृष्ट्यात्मक हे अथ
 अहा भगव ! परिमहल संस्थान वगा संस्थान प्रदक्षी हे कि असंख्यात
 नैमए ! कदाचित् संख्यात प्रदक्षी हे कदापि असंख्यात

स्वयं पशुस्य ज्ञानं स्यात् । सृष्टाणे असंख्येज पशुसिष्ट असंख्येज पशुसोगाढे, किं चरिमे पुच्छा?
 परिसंख्येज मते ! सृष्टाणे असंख्येज पशुसिष्ट असंख्येज पशुसोगाढ, जो चरिमे जह ! संख्येज
 गोयना ! असंख्येज पशुसिष्ट असंख्येज पशुसोगाढ, परिसंख्येज मते ! सृष्टाणे
 पशुसोगाढे ॥ एव जाय आयए ॥ १७ ॥
 अर्जुन पशुसिष्ट संख्येज पशुसोगाढे किं चरिमे पुच्छा ? गोपमा ! तदेव जाय आयते

प्रदेशात्क असंख्येज प्रदेशावगारी क्या चरिमे दे पुच्छा ! अहो गौतम ! असंख्येज प्रदेशी परिमंडल
 सस्यान असंख्येज प्रदेशावगारी का भी मेसा सस्यान प्रदेशात्क का कुरा प्रेस ही करना देसेही यावत्
 जायत सस्यान पर्वत करना ॥ १७ ॥ अहो मगधन् ! परिमंडल सस्यान अनंत प्रदेशात्क सस्यान
 प्रदेशावगारी क्या चरिमे दे १ प्रश्न १ अहो गौतम ! तत्क प्रपाने ही करना और देसे ही यावत् आयत
 सस्यान पर्वत करना अनंत प्रदेशात्क असंख्येज प्रदेशावगारी का भी सस्यान
 प्रदेशात्क मेसा ही करना और देसे ही यावत् परिमंडल पर्वत करना अहो मगधन् ! परिमंडल सस्यान

अणतपर्सिष्ट असखेज्ज पएसोगाढ जहा सखज्ज पएसोगाढे, एय जाय आयस ॥
परिमडलरसण भते ! सठाणस्स सखिज्ज पएसियस्स संखेज्ज पएसोगाढस्स अच
रिमरसय चरिमाणय चरिमत्तपएसणय अचरिमत्त पएसणय, पव्वट्टयाण
पएसट्टयाए, दव्वट्टयाणसट्टयाए कयरे २ हिंतो अप्पावा बहुयावा तुलावा विसेसाहि
यावा? गोयमा ! सव्वथरोवे परिमडलस्स सठाणस्स सखिज्ज पएसियस्स सखिज्ज
पएसोगाढस्स दव्वट्टयाए एगे अचरिमे, चरिमाइ संखेज्जगुणाइ, अचरिम च चरिमाणिय
दोवि विसेसाहियाइ ॥ पएसट्टयाए सव्वथरोवा परिमडलस्स सठाणस्स संखेज्ज

सख्यात प्रदशात्मक सख्यात प्रदशाबगारी अचरिम चरिम के प्रदीक्षक और अचरिमान्त प्रदीक्षक
इनमें द्रव्यापपने प्रदीक्षापपने, तथा द्रव्य प्रदक्षापपने कौन-से दोहों स्याद हैं तुल्य हैं विद्यष्ट हैं ? अथा गौतम ।
सब से थोड़े परिमडल सस्यान संख्यात प्रदीक्षक सख्यात प्रदक्षाबगार द्रव्यापपने एक अचरिम सण्ड, उभ
स चरिम बहुचपन शने मे सख्यात गुने बघों कि संख्यात प्रदीक्षक हैं, उस से अपरिम और
चरिम दोनों निम्नकर विष्णुपापिक अब प्रदक्षापपने—सब से थोड़े परिमडल सस्यान सख्यात प्रदीक्षक
सख्यात प्रदक्षाबगार क चरिम प्रदक्ष, उस से अचरिमान्त प्रदीक्ष संख्यात गुने, अरिमत्त प्रदक्ष

चरित पपसाय अचरित पपसाय दोवि विसेसाहिया, ॥दन्वट्टपएसट्टयाए सन्वट्टयेवे
 परिमडलस्स सठाणरस सखिज्ज पपसियस्स सखेज्ज पएसोगाढस्स वन्वट्टयाए एगे अचरिमे
 वरमाइं सखेज्जगुणाइ, अचरिमच्चरिमाणिय दोवि विसेसाहियाइ, चरित पपसा सखेज्ज
 गुणा अचरित पपसा सखेज्जगुणा चरित पपसाय अचरिमत्त
 पपसाय दोवि विसेसाहिया॥एव दहतस चठरस आयएसुवि जोएयठ ॥१८॥ परिम
 डलस्सण भत्ते ! सठाणरस असखिज्ज पणसियस्स सखेज्ज पएसोगाढस्स अचरिमरसय
 अचरिमत्त प्रदेश दोनों मिलकर विशेषाधिक अब द्रव्यार्थ प्रदेशार्थपेने—सब से थोड़ा परिमडल
 सस्यान सख्यात प्रदक्षारभक सख्यात प्रदेशावगाही के द्रव्यार्थपेने एक अचरिम, २ वस से
 चरिम संख्यातगुने, ३ वस स अचरिम चरिम वानों मिलकर विशेषाधिक, ४ वस से चरिमात
 प्रदक्ष संख्यातगुने, ५ वस से अचरिमात प्रदक्ष संख्यातगुने, ६ वस से चरिमात प्रदक्ष अचरिमात प्रदे
 शिक दोनों मिलकर विशेषाधिक ऐसे ही चतुल, त्रिकोन, चतुष्कोन और आयत का कहना ॥ १८ ॥
 अहो भगवन् ! परिमडल संस्यान असख्यात प्रदेशिक संस्यात प्रदेशावगाढ के अचरिप द्रव्य [एक वचन]

चरिमाण्यचरिमंतपपसाबाय अचरिमंतपपसाबाय दंन्वट्टयाए पपसट्टयाए दंन्वट्टपपसट्टयाए
 क्यरे २ हिंतो कप्यावा बहुवावा तुह्वावा विसेसाहियाना ? गोयमा ! सन्वरयोवे
 परिमढळस्स संठाणस्स असस्सज्जपपसियस्स सस्सेज्जपणसोगाढस्स दंन्वट्टयाए पणे
 अचरिमे, चरिमाइं सस्सेज्जगुणाइं, अचरिमव चरिमाणिय पोथि विभेसाहियाइ ॥
 पपसट्टयाए सन्वरयोवा परिमढळस्स संठाणस्स असस्सिज्ज पपसियस्स सस्सेज्ज पपसो
 गाढस्स चरिमंत पपसा अचरिमंत पपसा सस्सेज्जगुणा चरिमंत पपसाय
 अचरिमंत पपसाय दोवि विसेसाहिया ॥ दंन्वट्टपपसट्टयाए सन्वरयोवे
 परिमढळस्स संठाणस्स असस्सेज्जपपसियरस सस्सेज्ज पपसोगाढस्स दंन्वट्टयाए पणे अचरिमे

परिय द्रव्य (बहु बचन) चरिमांत प्रवेश द्रव्यार्थने प्रवेशार्थने तथा द्रव्यार्थमेद्वार्यपेन कौन २ से
 बल्य बहुत तुल्य विधेयाधिक हैं ! अतो भीतम ! सच से बोहे परिर्यवळ संस्थान के असंख्यात प्रदक्षिक
 संस्थान प्रदेवावसाह के द्रव्यार्थपेने एक अचरिय, उस स अनेक चरिय संस्थातमुनां, और अचरिय
 परिय दोनों विधेयाधिक, प्रदेवावसाहने सच से बोहे परिर्यवळ संस्थान असंख्यात प्रदेविक, संस्थात प्रदेवाव
 गादी परियान्त प्रदक्ष अचरिमांत संस्थातमुने और चरिमान्त प्रवेश अचरियान्त दोनों विधेयाधिक. द्रव्यार्थ
 प्रदेवावसाहने सच स बोहे परिर्यवळ संस्थान असंख्यात प्रदेविक संस्थात प्रवेश अचरिमां के द्रव्यार्थपेन

अचरिमतं पशुसा सखजगुणा, चारमतपशुसाय अचरिमतं पाप
 त्रिसताहिया ॥ एव जाय आयए ॥ १९ ॥ परिमढलस्सण भंते ! संठाणस्स असंखिज्ज
 पशुसियस्स असखज्ज पशुसोगाढस्स अचरिमत्थ चरिमाणय चरिमतं पशुसाणय अचरि-
 मतं पशुसाणय एवढट्टयाए पशुसट्टयाए एवढट्टपशुसट्टयाए कयरे २ हितो अप्पावा
 वद्धयावा तुल्लाना त्रिसिसाहियवा ? गोभया ! अहा रयणत्थमाए अप्पायधुय तद्देव
 निरनत्तस माणियन्त्र, एव जाव आयए ॥ २० ॥ परिमढलस्सण भंते ! संठाणस्स
 अणत्त पशुसियस्स सखेज्ज पशुसोगाढस्स अचरिमत्सय चरिमाणय चरिमतं पशुसाणय

एक अचरिया उस से चरिमा संख्यागुने और चरिय अचरिया दोनों विशेषाधिक चरिमत प्रदष्ट अच
 रिमत प्रदष्ट संख्यात गुने उस से चरिमत प्रदष्ट और अचरिमत प्रदष्ट विशेषाधिक एते ही यावत्
 आयत संस्थान तक कहता ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! चरिमेढल संस्थान अर्थरूपत द्रव्यात्मक असंख्यात
 प्रदष्टापगाही अचरिय एक चरिभबहुन चरिभान्त प्रदष्ट, अचरिपान्त प्रदष्ट, अचरिपार्यपने तथा द्रव्यार्थ प्रदे
 शार्थपत्त कौनद अन्वयबहुन तुल्य विषय है ? अहो गौतम ! भिस प्रकार रत्नप्रमाही अस्थाबहुत कही तेमाही निरावि-
 श्व पदार्थमी कहना और एते ही यावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! परिमढल संस्थान अन्त
 प्रदक्षिक संख्यात प्रदष्टावगाही चरमादि चारों में कौन २ अन्त उपादा विशेष है ? अहो गौतम ! भिसा

अचरिमत पणसाणय दन्वट्टयाण पणसट्टयाण दन्वट्टपणसट्टयाण कयेरे २ हितो
अप्पाया धट्टयाया तुह्याया निमेसाहियाया ? गायमा ! जहा सखेज पणसियस्स
सखेज पणसोगाढस्स नवर सक्रमण अणसगुणा, एव जाय आयए ॥ परिमढलस्सण
भते ! सटाणरस अणत पणसियस्स असखेज पणसोगाढस्स अचरिमस्सय चरिमाणय
चरिमन पणमाणय अचरिमस पणमाणय दन्वट्टयाण पणसट्टयाण दन्वट्टपणसट्टयाण कयेरे २
हितअप्पाया धट्टयाया तुह्याया निससाहियाया ? गायमा ! जहा रयणप्पमाए णवर सकमेण
अणतगुण॥ एव जाय आयण ॥ २ ॥ जीवेण भते ! गइचरिमण कि चरिमे अचरिम ? गोयमा !
सिय अचरिमे तसय अचरिमे एव निस्तर जाय विमणिया ॥ नरइयाण भत !

सत्यात प्रदीप्तक महणान प्रदद्यावगाही का कहा तेमा इत का भी कहना परंतु उस में इतना विषय
प्रदया पड़न में अनन गुना कहना, एव ही पावत् आयत संस्थान पर्यंत कहना अहो भगवन् ! परिमढल
भरणान अनन प्रदीप्तक असंग्यात प्रदद्यावगाही अचरिमादि धारों में कीन २ अन्व उपादा तुल्य निशया
विह रौ भरो गौतम ! प्रेसा रत्नप्रयाका कहा तेसा ही यही भी कहना परंतु उसमें इतना विषय संक्रमण क
स्यान अनन गुना कहना यों पावत् आयत पर्यंत कहना ॥ इति ॥ २१ ॥ अब जीवादि के चरिमा
चरिम का पूछते हैं ॥ अहो भगवन् ! भीष गति पपाय आश्रिय क्या चरिम है अर्थात् उस गति में

गोयमा ! सिय चरिम सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जात्र वमाप्पए ॥ १८५ ॥
 भते ! आप्पापाणु चरिमेणं किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरमावि अचरिमावि
 ॥ एव निरतर जात्र वेमाणिमा ॥ २६ ॥ नेरइएणं भते ! आहार चरिमेणं किं चरिमे
 अचरिम ? गायमा ! सियचरिमे सियअचरिमे ॥ एवं निरतर जात्र वेमाणिए ॥ नेरइयाणं
 भत ! आहार चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि एव

अहो गौतम ! चरिम भी है, अचरिम भी है एमे ही एकेन्द्रिय छोटकर यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना
 ॥ २५ ॥ आसोभावम द्वार अहो यगवन् ! नेरीये आसाआस आअिय वया चरिम है कि अचरिम है ! अहो
 गौतम ! चरिम भी है अचरिम भी है वो निरतर वैमानिक पर्यन्त कहना अहो भावव ! बहुत तरक
 के नेरीये आसोआस आअिय वया चरिम है कि अचरिम है ! अहो गौतम ! स्वात् चरिम भी है
 स्वात् अचरिम भी है ॥ २६ ॥ आहारद्वार अहो यगवन् ! नेरीये आहार की अपेक्षा वया चरिम है
 कि अचरिम है ! अहो गौतम ! स्वात् चरिम भी है स्वात् अचरिम भी है यो निरतर यावत् वैमानिक
 पर्यन्त कहना अहो भावव ! बहुत नेरीये आहार अपेक्षा चरिम है कि अचरिम है ! अहो गौतम !

निरतर जाव वेमाणिया ॥ २७ ॥ नरइएण भते ! माधचरिमेण किं चरिअ अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिम ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइयाण भते ! माध चरिमण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एव निरतर जाव वेमाणिया ! २८ ॥ नरइएण भत ! वण्ण चरिमण किं चरिमे अचरिमे ? गायमा ! मिय चरिम सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइयाण भते ! वण्ण चरिमण किं चरिमा अचरिमा ? गाथमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइएण भते ! गध चरिमेण किं चरिम अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एव निरतर जाव वेमाणिए ॥ नरइयाण भते ! गध चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरि

दीनों प्रकार क है यों वैधानिक कहना ॥ २७ ॥ माध द्वार अहो भगवन् ! नेरीये याव आश्रय चरिप है कि अचरिप है ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के हैं यों यावन् वैधानिक पर्यन्त कहना अहो भगवन् ! बहुत नेरीय मान (वणाधि पर्याय) आश्रय चरिप है कि अचरिप है ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार क है यों वैधानिक कहना ॥ २८ ॥ अहो भगवन् ! नेरीये वण आश्रय चरिप है कि अचरिप है ? अहो गौतम ! चरिप यी है अचरिप मी है एये हो बहुत जीवों आश्रय मी कहना

नेरइयाणं भते ! रस चरिमेण किं चोरिमा अचरिमा ! गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि। एवं निरतरं जाव वेमाणि। नरइयाणं भते ! फास चरिमेण किं चरिमे अचरिमे ? गोयमा ! सिय चरिमे सिय अचरिमे ॥ एवं निरतरं जाव वेमाणि ॥ नेरइयाणं भते ! फास चरिमेण किं चरिमा अचरिमा ? गोयमा ! चरिमावि अचरिमावि ॥ एवं निरतरं जाव वेमाणि ॥ संगहणि गाहा—गाइ ठिइ भवेअभासा, आपायाज चरिमेय बोचन्नेआहार भाव चरिमे, वण्ण गधरस फासेय ॥ इति पण्णवज्जाए भगवइए वसमं चरिमं पय समसु ॥ १० ॥

स्पर्ध आभिय मरिष धी हैं और अचरिस मी हैं अक इन ११ द्वार के नाम संव्रणी माफ कर कहवैं
१ गतिद्वार, २ स्थितिद्वार, ३ भवद्वार, ४ माषाद्वार, ५ असोभास द्वार, ६ माहाद्वार, ७ माषाद्वार,
८ र्वद्वार, ९ गषद्वार, १० रसद्वार, और ११ स्पर्ध द्वार यह चौबीस ही दृढक पर एक और आभिय
और अनेक नीच आश्रय, यो ४८ मुन करे हैं शति दृढय चरिम पद समाप्त ॥ १० ॥

से णूण भंते ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चित्तमीति ओहारणा भासा, अह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामीति ओहारिणी भासा, तह चित्तमीति ओहारिणी भासा ! मण्णामीति ओहारिणी भासा, चित्तमीति ओहारिणी भासा, अहमण्णामीति ओहारिणी भासा, अह चित्तमीति ओहारिणी भासा, तह मण्णामित ओहारिणी भासा, तह चित्तमीति ओहारिणी भासा ॥ १ ॥ ओहारिणी भते ! भासा, किं सच्चा मोसा सच्चाभासा, असच्चाभोसा ?

अब अत्थारइये पद में भाषा का वर्णन करते हैं अहो भगवन् ! निश्चय करके मैं मानता हूँ कि अबधारणी भाषा है, मैं चिंतवता हूँ कि अबधारणी भाषा है, अबोधोपाययूता अबधारणी भाषा मैं विशेष कर मानता हूँ, मैं विशेषकर चिंतवता हूँ, तेसे मानता हूँ कि अबधारिणी भाषा और चिंतवन करता हूँ कि अबधारणी भाषा है ! हाँ गौतम ! तू मानता है ऐसी अबधारिणी भाषा है तू चिंतवता है ऐसी अबधारणी भाषा है, विशेष मानता है कि अबधारणी भाषा है, विशेष चिंतवन करता है कि अबधारणी भाषा है, तेसे मानता है कि अबधारणी भाषा है तेसे चिंतवन करता है कि अबधारणी भाषा है ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! अबोधोपयूता अबधारिणी भाषा क्या सत्य है, असत्य है सत्य धृषा (धीश्र) है या अमत्य

गोयमा । सियसखा, सियमोसा, सियसखामोसा, सिय असखामोसा ॥ से केण्ट्रेण
 भते । एव बुधइ ओहारिणीण आसा सिय सखा सिय मोसा सियसखा
 मोसा सिय असखामोसा । गोयमा ! आराहणसिखा, विराहणी मोसा, आराहणी
 विराहणी सखामोसा, जेणव आराहणी तेणव विराहणी, तेणव आराहणविराहणी
 असखामोसा नाम सा खठरयी आसा, से तेण्ट्रेण गोयमा ! एव बुधइ ओहारिणीण

मृग (व्यवहार) मापा है ! ओ गौतम ! अबोध युता व्यवहारिणी मापा स्वात् सत्य है, स्वात् असत्य
 है, स्वात् सत्यमुपा है व स्वात् असत्यमुपा है ओ यतवत्त ! किस कारन ऐसा कहा है कि व्यवहारिणी
 मापा स्वात् सत्य, स्वात् असत्य, स्वात् सत्यमुपा व स्वात् असत्यमुपा है ! ओ गौतम ! सत्य वस्तु
 को स्थापन करने में सर्वप्रथम को अनुसरती होवे और जिस मापा से मोक्ष का स्थापन होमके वह सत्य
 मापा है २ जिन मापा से आरगुन की, सर्वज्ञ के रूपनकी व मोक्ष पयकी विरायना [माध] होवे वह असत्य
 मापा है, २ उक्त दोनों किष्करमीश्र होवे वर्णात् कुञ्ज आरापना करनेवाली होवे और कुञ्ज विरायना करने
 वाधी होवे सा सत्यमुपा, और ४ जो मापा एकाग्र आरापना करनेवाली होवे नहीं वेसे ही एकाग्र विरायना
 करनेवाली भी होवे नहीं वह असत्यमुपा कहाली है इसलिये ओ गौतम ! ऐसा कहा है कि व्यवहारिणी

भासा सियसबा सियमोसा सिय सबासोसा सिय असबासोसा ॥ १ ॥ अहण भते ! गाऊ,
मिया, पसु, पकखी पणवणीण एसा भासा, णएसा भासा मोसा ? हुता गोयमा ! गाऊ,
मिया, पसु, पकखी पणवणीण एसाभासापणवणी नएसा भासा मोसा ॥ ३ ॥ अह भते !
जाय इत्थियऊ, जाय पुमवठ, जाय अपुसगवठ, पणवणीण एसा भासा ण एसा
भासा मोसा ? हुता गोयमा ! जाय इत्थियऊ, जाय पुमवठ, जाय अपुसगवठ
पणवणीण एसा भासा, णएसा भासा मोसा ॥ अह भते ! जायइत्थी आपवणी,
जाय पुम आणमणी, जाय अपुसग आपमणी पणवणीण एसाभासा णएसा भासा

भासा स्यात् सत्य दे स्यात् प्रमत्य है, स्यात् सत्य मृग है, और स्यात् असत्य मृग है ॥ २ ॥ अहो
प्रमदन् ! गाय मृग, पशु (भन्ना) और पक्षी का अर्थ बताने वाली भाषा है वो क्या वह मृग भाषा नहीं
है ! अहो गौतम ! गाय मृग पशु व पक्षी का अर्थ बताने वाली भाषा है वह मृग भाषा नहीं है क्यों
कि गाय कहने से संपूर्ण गौजाति का ज्ञान होता है इस से तीनों छिगों का सम्यक्बोध होता है इस तरह
यथावस्थित अर्थ फरनेसे प्रज्ञा पनी भाषा कहलाती है ॥ ३ ॥ अहो यगवन् ! जो स्त्री बचन प्रतिपादिका जैसे गंगा,
पुरुष बचन प्रतिपादि का जैसे पर्वत और नपुंसक बचन प्रतिपादिका जैसे कुम्भादि; यह भाषा क्या मृग
नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री बचन प्रतिपादिका, पुरुष बचन प्रतिपादिका व नपुंसक बचन प्रतिपादिका

एसाभासा, णएसा भासा मोसा ॥ ७ ॥ अह भते ! जायति इत्था आणवणी,
जायति पुम आणवणी, जायति णपुसग आणवणी पणवणीण एसाभासा णएसा
भासा मोसा ? हुता गोयमा ! जायति इत्थी आणवणी, जयति पुम आणवणी,
जायति णपुसग आणवणी, पणवणीण ऐसा भासा णएसा मोसाभासा ॥ ८ ॥ अह भते !
जातीति इत्थी पणवणी, जातीति पुमपणवणी, जातीति णपुसग पणवणीण एसा-
भासा णएसाभासा मोसा ? हुता गोयमा ! जातीति इत्थी पणवणी जातीति पुमपणवणी
जातीति नपुसग पणवणीण एसा भासा णएसा भासा मोसा ॥ ९ ॥ अह भते !

पुरुष व नपुंसक जाति प्रतिपादिका माया मृया माया नहीं है ॥ ७ ॥ अहो मगधन् ! जाति में स्त्री
माननेवासी, जाति में पुरुष जाननेवासी, जाति में नपुंसक माननेवासी, मगधनी माया क्या मृया नहीं है ?
अहो गौतम ! जाति से स्त्री जानने वाली, पुरुष जाति माननेवासी व नपुंसक जाति माननेवासी माया
मृया नहीं है ॥ ८ ॥ अहो मगधन् ! स्त्री जाति के लक्षण बताने वाली, पुरुष जाति के लक्षण
बतानेवासी व नपुंसक जाति के लक्षण बतानेवासी माया मृया माया नहीं है ? अहो गौतम ! स्त्री जाति
के लक्षण बताने वाली, पुरुष जाति के लक्षण बताने वाली व नपुंसक जाति के लक्षण बताने वाली माया

मदकुमारवा मदकुमारियावा, जाणतिवयमाणे, धुयमाणा अहमसे धुयामि अहमेसे बुयामिति !
 गोयमा ! जोइण्टे समष्टे जण्यस्य सण्णो ॥ १० ॥ अह भते ! मदकुमारएवा
 मदकुमारियावा जाणति आहारं आहारमाणे अहमेस आहार माहारेमि अहमेसे
 आहार माहारेमिति ? गोयमा ! जोइण्टे समष्टे, जण्यस्य सण्णो ॥ ११ ॥ अह
 भते ! मदकुमारएवा, मदकुमारियावा, जाणति अयमे अम्मावियरो ? गोयमा ! जोइ-

मृपा नहीं है ॥ ९ ॥ अहा मगवन् ! मदकुमार अर्थात् मिस सब का अग्निज्ञान भेद है तत्वानादि
 क्रिया रहित है तैसे ही मदकुमारिका स्वयम्भू मया योस्य पुत्रस्यो ब्रह्मण कन बोसवा हुआ एस माने
 कि मैं बोसना हूँ, मैं यह बाछडा हूँ अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है यद्यपि मन पर्याप्ति से
 पपात है तथापि उन का मनःकरण प्रपतु है और उस में श्रुतज्ञान का सर्वोपक्रम भी मद है
 मय संज्ञी पचेन्द्रिय अवधि ज्ञानी व प्राति स्मरण ज्ञानी ज्ञान सके ॥ १० ॥ अहा मगवन् ! भेद-
 कुमार अथवा मदकुमारिका आहार करत हुए मैं आहार करता हूँ ऐसा करता हूँ ऐसा एया ज्ञानता
 है ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, अर्थात् नहीं ज्ञान सकता है, यात्र अर्थात् ज्ञानी व जाति
 स्मरण ज्ञानवाले संज्ञी ज्ञान सकत है ॥ ११ ॥ अहो मगवन् ! मदकुमार अथवा भेदकुमारिका एया
 ऐमा ज्ञान सके कि यह मेरे पात पिता है ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, यात्र अर्थात् ज्ञानी

जण्टे समेटे, गण्णत्य सण्णिणो ॥ १२ ॥ अह भते ! मंदकुमारएवा मंदकुमारियावा जाणति अयंमे मसिराउले अयमे मसिराउलेति ? गोयमा ! जो इणंटे समेटे गण्णत्य सण्णिणो ॥ १३ ॥ अह भते ! मंदकुमारएवा मंदकुमारियावा जाणति अयमे मसि दारए अयमे मसिदारिएति ? गोयमा ! जोइणंटे समेटे, गण्णत्य सण्णिणो ॥ १४ ॥ अह भते ! उहे, गाणे, स्वर, घोढए अए, एलए, जाणनि युपमाणे अयमे से बूयामि ? गोयमा ! जोइणट्टु समेटे, गण्णत्य सण्णिणो ॥ अह भते ! उह जाव एलए जाणइ आहोरमाणे अहमेसे आहारेमिति ? गोयमा ! जोइणंटे समेटे, गण्णत्य

॥ जाति स्मरण जाणोई जाा सवते हैं ॥ १२ ॥ अहा भगवन् ! मंद कुमार या मंदकुमारिका क्या ऐसा ज्ञान सक्रम है कि यह मेरा स्वामिफल है ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है, मात्र संझी, भवपि ज्ञानी व जाति स्मरण ज्ञानवाले ज्ञान सक्रम हैं ॥ १३ ॥ अहो गौतम ! गद ऊमार या मंद कुमारिका जानते हैं कि यह मेरे स्वामि का पुत्र है ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है मात्र संझी अशुचिज्ञानी व भाषि स्मरण ज्ञानवाले ज्ञानसक्रम हैं ॥ १४ ॥ अहो भगवन् ! उंट बैल, स्वर (गद) अन्ध, बकरी पकरा बोलते हुने जाने की ये घोसवा हैं ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है परंतु संझी प्रयत्न पुद्धिवाला ज्ञान सक्रम है अहो भगवन् ! उंट यावत् एलक आधार करता हुआ क्या जानता है कि ये अमुक

संजिणो ॥ अहंभते ? उहे गोणे खरे मोडए अए एलए जाणति अयमे अस्मा
पियरो ? गोयसा ! गो इण्हेंठुं समेट्ठे, जण्णस्य सण्णिणो ॥ अहंभते ! उहे जाव
एलए जाणति अय अतराउले ? गोयसा ! जाव जण्णस्य सण्णिणो ॥ अहंभते !
उहे जान एलए जाणति अयम भट्टिदरए ? गोयसा ! जाव जण्णस्य सण्णिणो
॥ १५ ॥ अहं मत ! मणुस्स महिसे आसे हट्थी सीहे वग्गे वगे दीविए अच्छे
सरच्छे परस्सरे सियाले विराले तुणए कोलए सुयर कोकलीण तसए चित्तए विच्छलण

प्रकार का आहार करता हूँ ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है, परंतु सही प्रपञ्च बुद्धिवाच, ज्ञान
सकता है अहो मगधन् ! छट बैस पारव एलक क्या ज्ञान सकते हैं कि यह मेर माव पिता है ! अहो
गौतम ! यह भः गाय नहीं हैं पाव सही प्रपञ्च बुद्धिवाच ज्ञान सकता है अहो मगधन् ! छट पारव
एलक क्या ज्ञान सकता है कि यह मेरे स्वामिका गृह है ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है परंतु
सही ज्ञान सकता है अहो मगधन् ! छट पारव एलक क्या ज्ञानसक कि यह मेरे स्वामी हैं ? अहो
गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है पाव सही ज्ञानसकता है ॥ १६ ॥ अहो मगधन् ! मनुष्य, पोहए, जण, हाथी
विह, व्याप, वरगहा, बिचा, रीछ, तरछ, प्रमर, गेहा, छुगाछ, बिहास, ज्ञान, कोला, मुमर काकही
सुरगोण, पित्रे, विट्ठकक, और भी इस प्रकार के जन्तुओं को क्या एक जन्तु कहना ? हां गौतम ! इन

जैयावण्ये तहप्यगारा सब्बासा एगवक ? हुता गोयसा ! मणुस्से जाव चिछलए
 जेपावण्ये तहप्यगारा सब्बासा एगवक ॥ अह मंते ! मणुरसा जाव चिछलया जेपा
 वण्ये तहप्यगारा सब्बसो बहुवक ? हुता गोयसा ! मणुस्सा जाव चिछलया
 सब्बासा बहुवक १९ ॥ अह मंते ! मणुस्सी महिती, विगळी विलवी, हसियणिया
 सीहीवण्यविगी पीविया अरथी, तरथी परभरी रासभी सियाली विरिली सुजिया कोल
 नूणिया कोळसिया सतिपा विचिया विछिलिया जायानणा तहप्यगारा सब्बासा
 इरथीवक ? हुता गायसा ! मणुस्सी जाव चिछलिया जेपावण्ये तहप्यगारा
 सन्नासहरीवक ॥ १७ ॥ अह मत ! मणुस्से जाव चिछलए जेपावण्ये तह

सब को एक बचन कहना अहो मगदन् ! बहुत मनुष्य पावत बहुत विछलक का क्या बहुबचन
 हाँ मोक्षम ! बहुबचन कहना ॥ १६ ॥ अहा मगदन् ! मनुष्यणी, पविणी, घोडो, इयनी, सिहनी,
 व्याघ्रनी, बागही, मछल रीछही, तीरछी गेहो, सबहो, मृगालनी मार्गोरी, कुपी, कोकवटी, बघडी,
 चित्तछी और भी इस ब्रह्म के क्या ही बचन में जानना ! हाँ मोक्षम ! मनुष्यणी पावत चित्तछी
 सब ही बचन में होते हैं ॥ १७ ॥ अहो मगदन् ! मनुष्य पावत चिछलक क्या पुरुष बचन में होते

प्यगारा सज्वासा पुमवठ ? गोयमा ! मणुस्से माहिसे आसे हट्थी सीहे धग्गे वग्गे
 वीविण्णु अत्थे तरत्थे पररसरे रासम नियाल विराले सुणए कोलसूणए कोकसतिण्णु
 ससण्णु विचए थिहुलए जेयावण्णे तहण्णगारा सज्वासा पुमवठ ॥ १८ ॥ कंस, कसोय,
 परिमंडल, सेल, थूम, जाल छाल, सारं, खं, अस्थिपज्ज, कुह, पठम, दुह, बहि,
 पवणीय, आसण, सभण, मधण, विमाज, लुत्त, वामरं, मिगार, अगण, निरगण,
 आमरणं, रयणं, जेयावण्णे तहण्णगारा सज्ज तं जणुसगवठ ? हुंता गोयमा ! कंसं
 जाव रयण जेयावण्णे तहण्णगारा त सज्ज जणुसगवठ ॥ १९ ॥ अह मते ! पुढवीति
 इदिथवठ, आठप्पिपुमवठ धण्णोत्ति जणुसगवठ, पण्णवणीण एसा मासा, ज एसा मासा

हे ! अहो गौतम ! मनुष्य जैरह सब पुरुष बचन में होते हैं ॥ १८ ॥ अहो भगवन् ! कांस्य, कास्वपाण्ड,
 परिमंडल, सेल, कुंभ, छाल, आल, तार, ख्य, अस्थिन्, पर्व, कुंड, यष्ट, दुग्ध, दधि, नवनीव, (मक्खन)
 आसम, वपन, मचन, विमान, छत्र, चपर, मृगार, अंगन, निरमन, आमरण, रत्न, और भी इस प्रकार
 के सब वया नपुंसक वचन में हैं ! अहो गौतम ! कांस्य वाक्य रत्न जैरह सब नपुंसक वचन में हैं
 ॥ १९ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वी को वचन, जप् पुरुष वचन और जन नपुंसक वचन प्रकल्पने वाली माया

मोसा ? इन्ता गोयमा ! पुढविसि इत्थीवठ, आठचि पुमवठ, धण्णेसि जपुंसगवठ,
पण्णवणीणं एसा मासा जएसा मासा, मोसा ॥ २० ॥ अह मंते ! पुढविसि
इत्थी आप्पमणी, आठचि पुम आप्पवणी, घणचि जपुसग आप्पवणी पण्णवणीण एसा
मासा, जएसा मासा मोसा ? इन्ता गोयमा ! पुढवीसि इत्थी आप्पवणी, आठचिपुम
आप्पवणी, धण्णेसि जपुंसग आप्पवणी पण्णवणीण एसा मासा, जएसा मासा मोसा
॥ २१ ॥ अह मंते ! पुढविसि इत्थी पण्णवणी, आठचि पुमपण्णवणी, धण्णेसि
जपुंसग पण्णवणी आराहणीण, एसा मासा, जएसा मासा मोसा ?
इन्ता गोयमा ! पुढविसि इत्थी पण्णवणी, आठचि पुम पण्णवणी, धण्णेसि जपुसग

दे बया यह मुपा मापा नहीं है ! अहो मोक्ष ! पृथ्वी स्त्री धवन अप् पुरुष धवन और धन नपुंसक धवन
यह मापा मुपा नहीं है ॥ २० ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीका स्त्री कहना, अप्को पुरुष कहना, और धनको नपुंसक
कहना यह भाषा क्या मुपा है ! अहो मोक्ष ! पृथ्वीका स्त्री कहना अप्को पुरुष कहना धनको नपुंसक कहना यह
भाषा मुपा नहीं है ! अहो भगवन् ! पृथ्वीको स्त्री प्ररूपना, अप्को पुरुष प्ररूपना, धनको नपुंसक प्ररूपना
पर क्या मुपा मापा नहीं है ! अहो मोक्ष ! पृथ्वीको स्त्री प्ररूपना, अप्को पुरुष प्ररूपना, धनको नपुंसक

अणुमयाओ॥१॥ सरीरपथभा भासा, दोहिंय समर्पहि भासईभास भासा धठ पगारा,
 दोक्षिय भासा अणुमयाओ॥२॥२४॥ कतिविधानं भते। भासा पण्णत्ता। गोयमा। दुविहा
 भासा पण्णत्ता तजहा। पज्जत्तियाय अपज्जत्तियाय ॥ पज्जत्तियाणं भते। भासा कतिविहा
 पण्णत्ता ? गोयमा। पुविहा। पण्णत्ता तजहा सद्धाय, मोसाया॥२५॥ सद्धाण भते। भासा
 पज्जत्तिया कतिविहा पण्णत्ता। गोयमा। दसविहा पण्णत्ता तजहा १ जणवयसद्धा, २ समय
 भाषा, सत्यमृता भाषा और असत्यमृता, भाषा रक्ता चार प्रकार की भाषा में से पात्र तस्य भाषा व
 व्यवहार भाषा ऐसी दो भाषा की अनुमति दी है ॥२६॥ अहो भगवन् । भाषा के कितने भद्र करे हैं ?
 अहो गौतम। भाषा के दो भद्र करे हैं, परोक्षिक सो पूर्ण और अपरोक्षिक सो अपूर्ण, अहो भगवन्। परोक्षिक
 भाषा के कितने भद्र करे हैं ? अहो गौतम। परोक्षिक भाषा के दो भद्र करे हैं १ तस्य और २ मृता॥२७॥
 अहो भगवन् ! परोक्षिक तस्य भाषा के कितने भद्र करे हैं ! अहो गौतम १ वृद्ध भद्र करे हैं — १ जन
 पद तस्य, आ भाषा भिन्न दश में भिन्न प्रकार बोलाती होने केने पिना, पाता, भाद भौगद,
 २ समय तस्य गुरु मनुष्यों जो बालते होते सो जैसे पद से उत्पन्न हुआ सो पैरुज, अन्य भद्रकादि
 पद से उत्पन्न होते हैं परंतु उसे पंक्रम नहीं करते हैं और कण्ठ काही पैरुज करते हैं, १ स्थापना तस्य
 पदत जन मिल किसी पद की स्थापना करे जैसे बोला, शेर, पायसी आदि ४ नम तस्य भिन्ना जो नाप

सञ्चा ३ ठवजासञ्चा, ४ नामसञ्चा, ५ रुचसञ्चा, ६ पदुषसञ्चा ७ वधहारसञ्चा,
८ भावसञ्चा, ९ जोगसञ्चा, १० ओवमासञ्चा ॥ गाढा ॥ जणयय सभुट्टियवणा
णामेह्यं पदुषसञ्चेया ॥ वधहार भावजोगे, इसमे ओवम्म सञ्चेय ॥ १ ॥ २५ ॥
मोसाण संते ! भासा पञ्चसिया कतिविहा पणत्ता ? गोयमा ! दसविहा पणत्ता

रहे उस नामके बारे मुनों इसमें होवे या न होवे, जैसे भवि को नैनमुल ५ रूपस्य-मिस प्रकार जिसका
व्यवहार देखने में आवे और हम में वे मुन नहीं भी पावे तो भी वह कहना सत्य है जैसे 'अष्टावारी को
साधु, श्री रूप में पुरुष, ६ प्रत्यय सत्य-एक की अपेक्षा अन्य को छाटा बड़ा करें जैसे पिता पुत्र
कनिष्ठा अनायिका से छोटी है बौरेरा ७ व्यवहार सत्य साक वाले वैसा बोले जैसे
जैसे इपन बलने को पूला बलना करना ८ मात्र सत्य जो प्रत्यक्ष में जैसा देखने में आवे वैसा बोले
जैसे तोता हरा, ईस नर, यद्यपि इस में पांच ही रंग पांठे हैं परंतु प्रत्यक्ष में मात्र हरा रंग दीखता है ९
जोग सत्य जैसा जिस की योग्यता होन वैसा बाले जैसे अमुक रामा के साल घोटे हैं कयी ज्यादा होवे
अबना पलुण्य सदित होवे सो भी साल घाटे ही कहान हैं और १० उपमा सत्य-किसी को किसी की
उपमादेवे उस के साकका कवन करे जैसे बन्नानी, मृगसाथनी पंगरह श्री को उपमादेवे यों दश प्रकार
की पंगरह सत्य भाषा कहीं ॥ २५ ॥ अहो मगबन् 'पर्याप्त प्रया' भाषा के कितने 'येद करे हैं ! अहो

तजहा—१ कोहणित्सिसया, २ माणणित्सिसया, ३ मायाणित्सिसया, ४ लोभाणित्सिसया, ५ पेज्जणित्सिसया, ६ दोसणित्सिसया, ७ हासणित्सिसया, ८ भयणित्सिसया, ९ अहक्खाइयणि रिसया, १० उवग्घायणित्सिसया ॥ गाहा ॥ कोहेमाने माया लोभे, पेज्ज तहेव दोसेप ॥ हास भए अक्खाइय, उवघाइय णित्सिसया दसमा ॥ २ ॥ २९ ॥ अप जचियाण भंते ! मासा कतिविहा पण्णत्ता ? गोयमा ! बुविहा पण्णत्ता तंजहा सच्चामोसाय, असच्चामोसाय ॥ सच्चामोसाणं भंते ! मासा अपज्जचित्थिया कतिविहा

गौतम ! मृषा मापा के दस भेद कहें ? क्राप की नेआय से मृषा बोलें, २ मान की नेआय से मृषा बोलें, ३ माया की नेआय से मृषा बोलें, ४ लोभ की नेआय से मृषा बोलें, ५ राग की नेआय से मृषा बोलें, ६ द्वेष की नेआय से मृषा बोलें, ७ हास्यकी निआय से मृषा बोलें, ८ भय की नेआय से मृषा बोलें, ९ आख्याय—कथित ग्रन्थादि की नेआय से मृषा बोलें और १० उपपात की नेआय से अर्थात् किसी का पात होवे वैसी मापा बोलें ॥ २९ ॥ अबो भगवन ! अपर्याप्त मापा के कितने भेद कहे रे ! अगे गौतम ! अपर्याप्त मापा के दो भेद कहे रे १ सत्य मृषा सो मोश्र और २ असत्य मृषा सो उपवहार इस में से सत्य मृषा मापा के दस भेद कहें १ उत्पन्न मीश्र—मैस आस गांव में दस का नाम हुआ है इस में कमी ज्यादा भी होव, २ विगत मीश्र इस नगर में दस मृत्यु हुआ, ३ उत्पन्न विगत

पणत्ता ? गावमा ! दसविहा पणत्ता तजहा १ उप्पणमिस्सिया, २ विगतामि
रिसया, ३ उप्पणमविगतमिस्सिया, ४ जीव मिस्सिया, ५ अजीव मिस्सिया, ६
जीवाजीव मिस्सिया, ७ अणत मिस्सिया, ८ पणित्तमिस्सिया, ९ अट्ठाभिमिस्सिया
अट्ठाभिमिस्सिया ॥ ॥ २७ ॥ असङ्घामोसाण भते ! आसा अयज्जचिया कइविहा
पणत्ता ? गोयमा ! दुवालसाविहा पणत्ता तजहा (गाहा) १ आमत्तणी २ आणमणी, ३
जावणी, ४ तह पुच्छणी, ५ पणत्तणी ॥ ६ पञ्चक्खणीमासा, ७ भासा इच्छाणु-

मिअ वत्त दोनों मापा समिलबोले, ६ जीव मीअ-पुत्त जीबोंका हग दलहर करे, यह सब मीनों हैं वस में काई
परे मी होवे ५ अजीव मीअ-कपरेका हगला दलहर यह सब मीनी है ऐसा करे, ६ जीवमीव मीअ वत्त
दनों सामिल बाले, ७ अनंत मीअ प्रत्येक को अनंत करे ८ पणित्त मीअ अनंत को प्रत्येक करे, ९ अट्ठा मीअ
आठ दिन दुवे होव वस बहुत करे, और १० अट्ठा मीअ जैसे अर्ध पर राने आई वस योदी रही करे,
॥ २७ ॥ अहा ममवन्त ! मसरप मृपा के कितने मद करे हैं ? अहा गौतम ! अमत्य मृपा (विषहार) क बारह
मैद करे हैं ? अर्धमणो किसी को सोलाना जैवे रे दवदव, २ अट्ठाणी किस को आदेश करना
जैम-ममक करा, ३ यावनी यापना करना जैमे अमुक देको, ४ पुच्छनी—जो किसी को पुछना,
पर कैसे है ? ५ प्रज्ञापनी—जोष भाव की प्रकथना करनी, ६ प्रत्याख्यानी—किसी कार्य का
विषय मर्गिकार करना, ७ इच्छातु गम—भय कर ऐसा भाप भी करे, ८ ज्ञासिद्धी—धर्म नहीं

लोमाय ॥ १ ॥ - अथाभिग हिंया भासा, ९ भासाय अभिगहमि बोधव्या, १० ससय कार
णीभासा ११ यागडा १२ अयेगडाच १ ॥ २ ॥ ॥ २८ ॥ जीवाण भते। किं मासगा अभा-
मगा? गोयमा! जीवा मासगात्रि अभासगात्रि ॥ से केणेट्ठेण भते! एव वुच्चइ जीवा भास
गात्रि, अभासगात्रि? गोयमा! जीवा दुव्विहा पण्णसा तज्जहा ससारसमायण्णगाय अस
सारसमायण्णगाय तरथण जे ते अससार समायण्णगातण सिद्धा, सिद्धाण अभासगा ॥
तरथण जेतो ससार समायण्णगा ते दुव्विहा पण्णसा तज्जहा-सेलसीपिड्विण्णगाय
असेलसीपिड्विण्णगाय, तरथण जे त सेलसी पड्विण्णगा तण अभासगा, तरथण

सपद्य १ पर भी जाने, ० अभिप्रही अर्थ समझता हुआ शाल १० ससय कारनी अनेक प्रयत्नाली माणा बोले,
११ वयक्त माणा दगट विस्तार सहित भाषा बोल और १२ अव्यक्त गर्भीर अधवाली सपद्यमें न आवे प्रमी
भाषा बोलें ॥ २८ ॥ अहा भगवन्! जीव क्या मापत है या अमापक है? अहा गौतम! जीव मापक भी है
और अमापक भी है अहो भगवन्! किम तरह जीव मापक भी है और अमापक मा है? अहो गौतम!
जीव क दो पेट करे है १ सुमार सभापन्न और २ अर्धसार सभापन्न ज्ञा में ते असंसार ममापन्न जीव
है व सिद्ध है और सिद्ध अमापक होत है भसार ममापन्न जीव है उन क दो पेट सेलसी प्रसिपन्न
और असेलसी प्रसिपन्न उय में ते जो सेलसी प्रसिपन्न है व अमापक है, और जो असेलसी प्रसिपन्न है

अते असेलेंसीपढिबणगा ते दुनिहा पणत्ता तंजहा एगिंदियाय, अणगोदियाय॥ कस्य
 जेते एगिंदिया तेण अमासगा, तत्थण जेते अणगोदिया ते दुनिहा पणत्ता तंजहा पज्ज
 गाय अपज्जत्तगाय, तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण अमासगा, तत्थण जेते पज्जत्तगा तेण
 मासगा॥ से तेणट्टेण गोयमा! एव बुच्चइ जीवा मासगावि अमासगावि ॥ २९॥ णेरइयाण
 भंते! किं मासगा अमासगा? गोयमा! नेरइया मासगावि अमासगावि॥ से कंणट्टेण भंते! एव
 बुच्चइ णेरइया मासगावि अमासगावि? गोयमा! णेरइया दुनिहा पणत्ता तंजहा पज्जत्त-
 गाय अपज्जत्तगाय ॥ तत्थण जेते अपज्जत्तगा तेण अमासगा, तत्थण जेते पज्जत्तगा

तन के दो भेद एकेन्द्रिय और अनेक इन्द्रिय बांछे उस में जो एकेन्द्रिय है वह अमापक है और अनेक
 इन्द्रिय बास है उन के दो भेद : पर्याप्त और २ अपर्याप्त उस में से जो अपर्याप्त है व अमापक है और
 पर्याप्त है वे मापक हैं अहो गौतम ! इसीविषय देसा कहा कि जीव मापक भी हैं और अमापक भी हैं
 ॥ २९ ॥ अहो समवन् ! नेरिये क्या मापक हैं या अमापक हैं ? अहो गौतम ! नेरिये मापक भी हैं
 और अमापक भी हैं अहो भगवन् ! किस तान से नेरिय मापक भी हैं और अमापक भी हैं ?
 अहो गौतम ! नेरिये के दो भेद कहे हैं : पर्याप्त और २ अपर्याप्त उस में जो अपर्याप्त है वे अमापक

तेण भासगा, सेतेणट्टेणं गोयमा ! एव एव बुद्ध जेरइया भासगावि अभासावि
 एव पगियिय अज्जाण निस्तरं भाणियव्व ॥ ३० ॥ कतिण भते !
 भास जाया पणत्ता ? गोयमा ! चचारि भासजाया पणत्ता तंज्झा सच्चमग
 भासजाय, वितियंमोस, तइय सच्चामोसं, चउत्थं असच्चामास ॥ ३१ ॥ लीवाण
 भते ! किं सच्चमास भासति, मोसमास भासति, सच्चामास भास भासति असच्च
 मोस मास भासति ? गोयमा ! जीवा सच्चवि मास भासति, मोसवि भास
 भासति, सच्चामोसवि भासं भासति, असच्चामोसपिमास भासति ॥ ३२ ॥

हे ३ और पर्याप्त है वे आपक हैं अहो गौतम ! इसलिये ऐसा कहा है कि नारदी आपक और अभापक
 दोनों हैं ऐसे ही ऐकन्द्रिय छारकर सब दृढक में कहना ॥ ३० ॥ अहो भगवन् ! मायाकी जात किन्ती
 करी है ! अहो गौतम ! माया की वार जाति करी है १ सत्य माया जाति २ मृषा माया जाति ३
 सत्य मृषा माया जाति और ४ असत्य मृषा माया जाति ॥ ३१ ॥ अहो भगवन् ! प्रीति क्या सत्य माया
 बोखते हैं, असत्य माया बोखते हैं, सत्य मृषा माया बोखते हैं या असत्य मृषा माया बोखते
 हैं ? अहो गौतम ! जीव तस्य माया भी बोखते हैं, मृषा माया भी बोखते हैं, सत्य मृषा माया बोख
 हैं और असत्य मृषा माया बोखते हैं ॥ ३२ ॥ अहो भगवन् ! नारदी क्या सत्य माया

॥३२॥ फेरइयाणं भंते! किं सर्वं मास भासति जाय किं असच्चा मोस भास भासति? गोयमा! सच्चपि मास भासति जाय असच्चा मोसपि भास भासति ॥ एवं असुरकुमारा जाय थणियकुमारा ॥ बइदिया तइदिया थठरिदिना णासच्च, णो मास, णासच्चा मोसं भास भासति अच्चा मोस भास भासति ॥ पच्चिदिय तिरिक्खजणियाणं भंते! किं सच्च भास भासति जाय किं असच्चा मोस भास भासति? गायमा! पच्चिदिय तिरिक्खजणिया णा सच्च भास भासति णो मास भास भासति णो सच्चा मोसं भास भासति एग असच्चा मोस भास भासति ॥ णणत्थ सिक्खा पुब्बग उच्चरगुण

बोवत् थोक्ख देग यमस्य मृषा माया बोलेने हैं! अरा गौतम! नारकी सत्य भाषा भी बोलत हैं यावत् असत्य मृषा माया भी बोलेने हैं एने ही। असुर कुमार यावत् स्वातिन कुमार पर्यंत जानना बइन्द्रिय, तइन्द्रिय व चतुरेन्द्रिय सत्य, मृषा व सत्य मृषा एसी तीन भाषा नहीं बोलेने हैं परंतु एक यमस्य मृषा (बबराग) बोलेते हैं अही यागवत्! नियेष पवेन्द्रिय तथा सत्य भाषा बोवत् हैं यावत् तथा असत्य मृषा माया बोलेने हैं! अही गौतम! अमस्य मृषा माया बोलेने हैं छेप तीन भाषा नहीं बोलने हैं, परंतु पिच्छेयमा इतनी कि इस मय में चित्ता ओकर दुरु पसी आदि और पर मय के ज्ञाने

लक्ष्म्या पटुच्च सद्यपि मास भासन्ति, मेसपि भासं भासति स्यामोसपि भास भ ति,
 असद्यामोसपि भास भासति ॥ मणुरस्य जाय वेमाणिषा एते जह्या जीया तद्वा माणि
 यस्या ॥ ३३ ॥ जीवाण भंत ! जाह् दन्वाइं मामचाए गेण्हति किं टियाइ गिण्हति,
 अठियाइ गिण्हति ? गोयमा ! टियाइ गिण्हंत जो अठियाइ गिण्हति ॥ जाह् भंत !
 टियाइ गिण्हति ताह् किं दद्याओ गिण्हति, खंचओ गिण्हति, कालओ गिण्हति,
 भावओ गिण्हति ? गोयमा ! ध्वत्तावि गिण्हति खंचओवि गिण्हति कालआवि
 गिण्हति भावओवि गिण्हति ॥ जाह् भंत ! ध्वत्तओ गिण्हति ताह् किं एगपदविधाइ

स्मरणदि ज्ञान मे भवग्रह हाने से मस्त्यादि (नन्दनमनीयार वा जीव घेहक की तरह) चारों प्रकार के
 भाषा बोलत हैं मनुष्य से वैमानिक पर्यंत समुच्चय जीव तैने चारों प्रकार की भाषा बोलते हैं ॥ ३३ ॥
 भद्र मगरन् ! जीव जो मुख्य मायापने ग्रहण करत हैं वह क्या स्थिर ग्रहण करते हैं या अस्थिर ग्रहण
 करत हैं ! भद्रो गौतम ! स्थिर ग्रहण करत हैं परंतु अस्थिर नहीं ग्रहण करत हैं जना स्थिर ग्रहण करत
 हैं तब क्या द्रव्य से ग्रहण करत हैं, क्षेत्र से ग्रहण करत हैं, काल से ग्रहण करते हैं या पात्र से ग्रहण
 करते हैं ? भद्रा गौतम ! द्रव्य से भी ग्रहण करत हैं, क्षेत्र से भी ग्रहण करते हैं, काल से भी ग्रहण

दुसमय ठिइयाइवि गिण्हइ जाव अससखसमय ठिइयाइ गिण्हइ ॥ जाइ
भावओ गिण्हइसाइ कि वणमंताइ गिण्हइ, गधमंताइ गिण्हइ, रसमंताइ गिण्हइ,
फासमंताइ गिण्हइ ? गोयमा ! वणमंताइवि गिण्हइ जाव फासमंताइवि गिण्हइ ॥ ३४ ॥
जाइ भावओ वणमंताइ गिण्हइ ताइ कि एगवणमंताइ गिण्हइ जाव पचवणम
ताइ गिण्हइ ? गोयमा ! गहणदव्वाइ पढुखएगवण्णाइवि गिण्हइ जाव पचवण्णाइवि
गिण्हइ सव्वगहण पढुख गियमा पंचवण्णाइ गिण्हइ संजहा-कालाइ, णीलाइ,
लोहिपण्ण, हालिदाइ, सुक्खिदाइ ॥ जाइण तेवणओ कालवण्णाइ गिण्हइ कि एग

ग्रहण करे यावत् असस्सात समय की स्थिति बाळा ग्रहण करवै, ! अहो गौतम ! एक समय की स्थिति
बाळा यावत् असस्सात समयकी स्थितिचा ग्रहण करते है मान से ग्रहण करे तो क्या वर्ष वाले, गधवाले
रसवाले या स्वर्ण वाल ग्रहण करते है ! अहो गौतम ! वर्ष गंध, रस व स्वर्ण वाल ग्रहण करत है ॥ ३४ ॥
अहो भगवन् ! जब माव से वर्ष वाले पुत्रल ग्रहण कर तब क्या एक वर्ष वाले ग्रहण करे

या पाँच वर्ष वाले द्रव्य ग्रहण करे ? अहो गौतम ! ग्रहण द्रव्य आग्नि व अर्थात् जिम । द्रव्य की ग्रहण
करने में योग्यता है तब आग्नि एक वर्ष वाले भी ग्रहण करते है यावत् पाँचो वर्ष वाले मो ग्रहण करते
हैं और सर्व ग्रहण आग्नि-निद्रिय स फासा, नीसा, रक्त, पीत व शुक्र ऐसे पाँचो वर्ष वाले ग्रहण
करते है मो कालावर्ष वाल ग्रहण करते है वे क्या एक गुन काला ग्रहण करते है यावत् अनंत गुन

गुण कालाद् गिण्हति जाव अणतगुण कालाद् गिण्हति ? गोयमा ! एगगुणकालाद् गिण्हति जाव अणतगुण कालाद् गिण्हति ॥ एव जाव सुकिलाद् ॥ ३५ ॥ जाद् भते ! भाषामो गधमसाद् गिण्हति किं एगगथाद् गिण्हति, दोगंधाद् गिण्हति, ? गोयमा ! गहणदन्वाद् पदुष एगगथाद् गिण्हति, दोगंधाद् गिण्हति ॥ सखगहण पदुष गियमा दोगंधाद् गिण्हति ॥ जइण भत ! गधतोसुखिमगथाद् गिण्हति ताइ किं एगगुण सुखिमगथाद् गिण्हति जाव अणतगुण सुखिमगथाद् गिण्हति ? गोयमा ! एगगुण सुखिमगथाद् गिण्हति जाव अणतगुण सुखिमगथाद् गिण्हति ॥ एवं पुब्बि-

दाळा प्रहण करते हैं ! अहा योतम ! एक गुण काला एवं साक्षा मी प्रहण करते हैं यावत् अनंत अनंत गुण काला मी प्रहण करते हैं एस ही दुल्ल एवं पर्वत कदमा ॥ १५ ॥ अहो मगरन ! तब माव स गंधवाल प्रहण करते हैं तो क्या एह गंधवाल प्रहण करते हैं या दो गंधवाल प्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! प्रहण द्रव्य आश्रिय एह गंधवाल प्रहण करते हैं व दो गंधवाल मी प्रहण करते हैं और सब प्रहण आश्रिय सुगंधीय व दुरधिगंध एस दोनों गंधवाल प्रहण करते हैं अहो मगरन ! तब गंधे सुगंधीय गंधाले प्रहण करे तब क्या एकगुण सुगंधीय गंध प्रहण करे यावत् अनंतगुण सुगंधीय गंधाले प्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! एक गुण सुगंधीय गंधाले प्रहण करते हैं यावत् अनंतगुण सुगंधीय गंधाले मी प्रहण

गहणदन्वाइ पदुच णोएगफासाइ गिण्हति दुफासाइ गिण्हति जाव चठपासाइवि गिण्हति,
 नोपचफासाइ गिण्हति जाव णोअट्टफासाइवि गिण्हति॥सत्त्वगहणं पदुच णियमा चठफासाइ
 गिण्हति तजहा सीतफासाइ गिण्हति, उसिणफासाइ गिण्हति, णिद्धफासाइ गिण्हति,
 दुक्खफासाइ गिण्हति ॥ जाइ फासओ सीतफासाइ गिण्हति ताइ किं पुगगुण
 सीत फासाइ गिण्हति जाव अणतगुण सीत फासाइ गिण्हति ? गोयमा ! एगगुण
 सीत फासाइवि गिण्हति जाव अणतगुण सीतफासाइवि गिण्हति ॥ एव उसिण, णिद्ध,
 दुक्खाइ जाव अणतगुणाइवि गिण्हति ॥ ३८ ॥ जाइ भते ! एगगुण कालाइ जाव

स्पर्शबाले पावइ चार स्पर्शबाले ग्रहण करे परंतु पांच यावत् आठ स्पर्शबाले ग्रहण कर नहीं सवें ग्रहण आश्रय
 नियमा चार स्पर्शबाल ग्रहण करे क्योंकि माया के पुत्रल चार स्पर्शबाले हैं भिन्न के नाम शीत स्पर्शबाले ऊष्ण
 स्पष्टबाले, मिश्र स्पर्शबाले और रस स्पर्शबाले अहो प्रगल्भ ! जब शीत स्पर्शबाले ग्रहण करते हैं
 तो क्या एक गुन शीत स्पष्टबाले ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शबाले ग्रहण करते हैं ! अहो
 नीतम ! एक गुन शीत स्पर्शबाले भी ग्रहण करते हैं यावत् अनंत गुन शीत स्पर्शबाले भी ग्रहण करते हैं
 परे ही ऊष्ण, मिश्र व रस पुत्रसों भर्तन गुणबाले ग्रहण करते हैं ॥ ३८ ॥ अहो प्रगल्भ ! जब एक गुन बाले

अणतगुण लुब्धकाइ वन्नाइ गिण्हति ताइकिं पुट्टाइ गिण्हति अपुट्टाइ गिण्हति ?
 गोयमा ! पुट्टाइ गिण्हति जो अपुट्टाइ गिण्हति ॥ जाइ भते ! पुट्टाइ गिण्हति ताइकिं
 ओगाढाइ गिण्हति अणोगाढाइ गिण्हति ? गोयमा ! ओगाढाइ गिण्हति जो अपो-
 गाढाइ गिण्हति ॥ जाइ भते ! ओगाढाइ गिण्हति ताइ किं
 अणंतरोगाढाइ गिण्हति परंपरोगाढाइ गिण्हति ? गोयमा ! अणंतरोगाढाइ गिण्हति,
 जो परंपरोगाढाइ गिण्हति ? जाइ भते ! अणंतरोगाढाइ गिण्हति, ताइ किं अणूइ
 गिण्हति, घादराइ गिण्हति ? गोयमा ! अणूइपि गिण्हति घादराइपि गिण्हति ॥

पावत् अनंत गुण रूप द्रव्य ग्रहण करते हैं वे क्या सर्वे हुवे ग्रहण करते हैं या बिना सर्वे हुवे ग्रहण
 करते हैं ! अहो गौतम ! सर्वे हुवे ग्रहण करत हैं परंतु बिना सर्वे हुवे नहीं ग्रहण करते हैं अहो
 भगवन् ! अब सर्वे हुवे ग्रहणकरते हैं तब क्या अवगाहकर ग्रहण करते हैं बिना अवगाहकर ग्रहण करते हैं ?
 अहो गौतम ! अवगाहकर ग्रहण करते हैं परंतु बिना अवगाह नहीं ग्रहण करते हैं अहा भगवन् ! अब अवगाहकर
 ग्रहण करते हैं तो क्या अंतर रहित पुत्रग्रहणकरते हैं या परपरा अवगाहित ग्रहणकरते हैं ? अहो गौतम ! अनंतर
 अवगाहित ग्रहण करत हैं परंतु परपरा अवगाहित नहीं ग्रहण करत हैं अब अनंतर अवगाहित ग्रहण करते
 हैं तब क्या मूल्य ग्रहण करते हैं या वादर ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! मूल्य ग्रहण करते हैं और वादर भी

आइ भंत! अणूइपि गिण्हति घाएराइपि गिण्हति ताइ किं उड्डुं गिण्हति अहे गिण्हति
तिरिय गिण्हति ? गोयमा ! उड्डुपि गिण्हति अहेविगिण्हति, तिरियपि गिण्हति ॥
आइ भते ! उड्डुपि गिण्हति अहविगिण्हति तिरियपि गिण्हति ताइकिं आवि गिण्हति
मखर गिण्हति पखवसाण गिण्हते ? गायमा ! आविपि गिण्हति, मखेवि
गिण्हति, पखवसाणेवि गिण्हति ॥ जाइ भते ! आविगिण्हति
मखविगिण्हति पखवसाणवि गिण्हति, ताइकिं सविसए गिण्हति, अविसए गिण्हति ?
गोयमा ! सविसए गिण्हति जो अविसए गिण्हति ॥ जाइ भते ! सविसए गिण्हति

ब्रह्म करते हैं। अहो भगवन् ! अब सुस्म व वाहर ग्रहण करते हैं तब क्या कर्त्तव्य, व भवो विद्या के ग्रहण करते हैं या तिर्यक विद्या के ग्रहण करते हैं ! अहा गौतम ! कर्त्तव्य, प्रबो व तिर्यक पों वीनों विद्या के ग्रहण करते हैं। अब कर्त्तव्य, अबो व तिर्यक विद्या के ग्रहण करते हैं, तब क्या आदि में ग्रहण करते हैं, मध्य में ग्रहण करते हैं या पर्यवसान (अंत) में ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! आदि मध्य व पर्यवसान में (अंत) में यों वीनों विद्या के ग्रहण करते हैं अहो भगवन् ! अब आदि मध्य व पर्यवसान में ग्रहण करते हैं तब विषय सहित ग्रहण करते हैं या विषय रहित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! विषय सहित ग्रहण करते हैं परंतु विषय रहित नहीं ग्रहण करते हैं। अब विषय सहित ग्रहण करते हैं तब अनुपूर्व से ग्रहण करते हैं या अनुपूर्व से ग्रहण करते हैं ! अहो गौतम !

साइकिं आणुपुण्ड्रि गिण्ढति अणपुण्ड्रि गिण्ढति ? गायमा ! आणपुण्ड्रि गिण्ढति
 णो अणपुण्ड्रि गिण्ढति ॥ जाइ मते ! आणपुण्ड्रि गिण्ढति ताइ किं तिदिसिं
 गिण्ढति जात्र छदिसिं गिण्ढति ? गोयमा ! गियमा छदिसिं गिण्ढति, ॥ (गाहा) पुट्टो, गाड,
 अणतर, अण य तह, चादरेय उट्टमहे, आदि विसयाणपुण्ड्रि, गियमातह छदिसिंचेव
 म १ ॥ ३८ ॥ जीवेण मते ! जाइ वब्बाइ भासत्ताए गिण्ढति ताइ किं सतरं
 गिण्ढति गिण्ढति ? गोयमा ! सतरंवि गिण्ढति निरतरंवि गिण्ढति ॥ सतरं
 गिण्ढमाणे जहण्णेण एगसमयं उक्खोसेण असस्सेजसमय, सतरं बहु गिण्ढति ॥

अनुपूर्वे स ग्रहण करते हैं परंतु अनानुपूर्वे से नहीं ग्रहण करते हैं अहो भगवन् ! मम अनानुपूर्वे से
 ग्रहण करने हैं नए क्या तीन दिशि स ग्रहण करते हैं या छ दिशि से ग्रहण करते हैं ! अहो गौतम !
 नियम्य छ दिशि के पुत्रल ग्रहण करते हैं क्यों कि भाषक जीवों साक की मध्य में हैं इस तरह स्वर्गति
 हुने, अवगाहित, धनंनर, सूक्ष्म व वादर, कर्ध, अयो, आदि, विषय, पूर्ण और नियमा छ दिशा के
 पुत्रनों भाषक जीव ग्रहण करते हैं ॥ ३८ ॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य प पापने ग्रहण करते हैं वे क्या
 अंतर सहित ग्रहण करते हैं या निरंतर ग्रहण करते हैं ! अहा गौतम ! अंतर सहित भी ग्रहण करते हैं
 और निरंतर भी ग्रहण करते हैं अंतर सहित ग्रहण करते जपन्य एक समय उत्कृष्ट असंख्यात समय,

भिरंतर गिण्हमाणे जहण्णेणं दोसमए उक्कोसेणं असंखेजसमए अणुसमय अशिरहिय
गिरतर गिण्हति ॥ ३९ ॥ जीवेण भते ! जाइ दब्बाइ भासचाए गहियाइ, गिसि
रति ताइ किं सतर गिसरति भिरतर गिसरति ? गोयमा ! सतराणिसरति जो गिरंतर
गिसरति ॥ सतराणिसरमाणे एगेण समएण गिण्हति एगण समएण, तेण गहण-
गिसिरणे वाएणं जहण्णेण दुसमय उक्कोसेणं असंखेज समइय, अंतोमुहुचगगहण
गिसरण उववाय करैति ॥ ४० ॥ जीवेण भते ! जाइ दब्बाइ भासचाइ गहियाइ
गिसरति ताइ किं भिण्णाइ गिसरति अभिण्णाइ गिसरति ? गोयमा ! भिण्णाइवि

अंतर रहित प्रहण करेते मफम्य दो समय उल्लुह असंख्याठ समय अतुपूषि मयय विरह रहित निरतर
प्रहण करेते हैं ॥ ३९ ॥ अहो भगवन् ! मायापने प्रहण कीये हुये पुत्रस को जो जीव नीकासते हैं वे क्या
अंतर सहित नीकासते हैं या निरंतर नीकासते हैं ? अहो गौतम ! अंतर सहित भी नीकासते हैं और
निरंतर भी नीकासते हैं अंतर सहित नीकासते एक समय व प्रहण करते एक समय यों जपन्य
वा समय उल्लुह असंख्याठ समय तथा अतुपूषि में भी प्रहण करना नीकासने का भी वयाय करते हैं
॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! जीव जो मायापने प्रहण कीये पुत्रसों नीकासते हैं वे क्या भेदाये हुए नीका
सते या भयिन्न नहीं भेदाये हुये नीकासते हैं ? अहो गौतम ! भेदाये हुये भी नीकासते

गिस्सरंति, अभिष्णाद्भि गिस्सरति ॥ तस्थण जाइ दब्बाइ भिष्णाइ गिसिरति, ताई अर्णतगुण परिबुद्धीए परिबुद्धमाणाई लीयतफुसति ॥ जाइ अभिष्णाइ गिसिरंति ताइ असंखेज्वाओ ओगाणहण, वगणाओगता भेदमावज्जति, सखेज्वाइ जोधणाइगता विहस मागच्छति ॥ ४१ ॥ एतेसिण मते! दब्बाण कतिविहे भेदे पण्णत्त? गोयमा! पंचविहे भेदे पण्णत्ते? तंजहा खण्डाभेदे, पयराभेदे, चुण्णियाभेदे अणुतादियाभेदे, उकारियाभेदे ॥ सेकित खण्डाभेद? खण्डाभेदे! जण्णं व्यखडाणवा, तउखडाणवा, तवखडाणवा, सीसाखडाणवा, रयणखडाणवा, जायरुवखडाणवा, खडएणे भेदे भवंति सेत खंडा

हैं और नहीं भेदाये हुये भी नीकाखते हैं, रोगी तथा मराबन्त की माया वस में जो भिन्न नीकाखते हैं वे अनंतगुण की वृद्धि पाते लाक क अंत में स्पर्धत हैं और अभिन्न नीकखते हैं वे असंख्यत अवगाहना वर्णवा में जाकर भेद को प्राप्त होते हैं और सख्यत योजन जाकर नाश को प्राप्त होते हैं ॥ ४१ ॥ अहो भगवन्! उन ब्रम्हों का भेद कितने प्रकार का कहा! अहो गौतम! पाँच प्रकार का भेद कहा तपसा १ खण्ड भेद २ प्रतर भेद ३ चुण्णिका भेद ४ अनुत्तरिक भेद और पंचकारिका भेद वस में खण्ड भेद किसे कहते हैं! अहो गौतम! जैसे छारे का खण्ड, तरुभाका खण्ड, ताम्बे का खण्ड, सीसे का खण्ड,

भेदे ॥ सेवितं पयराभेदे ? पयराभेदे जणं वसाणवा, जेलाणवा
 वंदलीथमाणवा, अममपडलाणवा, पयरण भेदे भवति सेतं पयामेदे ॥
 सेवितं चूर्णिवा भवे ? चूर्णिवाभेदे जणं तिल चूर्णिवाणवा मुगचुण्णाणवा, मास
 चुण्णाणवा, पिल्ली चुण्णाणवा, मरिय चुण्णाणवा, सिंगेर चुण्णाणवा, चुण्णयाए भेदे
 भवति सत चूर्णिवाभेदे ॥ सवितं अणुताडियाभेद ? अणुताडियाभेद जण्य अगडाणवा,
 तलागाणवा, नदीणवा, दहाणवा, वावीणवा, पुक्खणीणवा, वीहियाणवा,
 गजालिया वा, सराणवा, सरपतियाणवा, सरमरपतियाणवा, अणुताडियाभेद भवति ॥

रत्न का लोचन का स्वप्न, यों लोचन के भेद हुए प्रतर भेद के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम !
 बौध के प्रतर, लवा के प्रतर, फली के प्रतर, प्रवरक [मोहक] के प्रतर, गों प्रतर के भेद हुने, चूर्ण
 का भेद के कितने भेद हैं ? अहो गौतम ! तिलका चूर्ण, मुंगका चूर्ण, गेरुका चूर्ण, पिप्लका चूर्ण, मिरचीका चूर्ण,
 प्रवरकका चूर्ण, यों चूर्ण के भेद हुए अनुनादित क कितने भेद हैं अहो ! गौतम ! अनुनादित कि मो कुश, तलाव,
 नदी, गड, बावटी, पुष्करणी, दीपिका, गुमाबिका, मरोयर, सरावर की पंक्ति, यों अनुनादित के भेद
 कहे हैं गजालिका के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! मुंगकी फली, महुडकी फली, तिलकी फली, गेरुकी

सेत अणुतद्विधाभेद ॥ सेत अणुतद्विधाभेद ॥ उक्कारियाभेदे जण मूतगाणवा, महुंगाणवा, तिलसिंगिलीयाणवा, मुगसिंगिलीयाणवा, माससिंगिलीयाणवा, एरढीयाणवा, फुडिता उक्कारियाते भए भवति ॥ सेत उक्कारिया भेद ॥ ४२ ॥ एएसिण भत १ दव्वाणं खढा भेदण, पयराभेदण, चुण्णिया भेदण, अणुतद्विधा भेदण, उक्कारिया भेदणय, भिज्ज माण कयर २ हितो अप्पावा चतुयावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सव्व-
त्योवाइ दव्वाइ उक्कारिया भेदण भिज्जमाणाइ, अणुतद्विधा मदेण भिज्जमाणाइ अणतगुणाइ, चूणिया भेदण भिज्जमाणाइ अणतगुणाइ १ पयराभेदण भिज्जमाणाइ अणतगुणाइ, खंडा भेदण भिज्जमाणाइ अणतगुणाइ ॥ ४३ ॥ णरइएण भते ! जाइ दव्वाइ भासत्ताए गिण्हति

फली, व एरंहे के बीज यह सब उत्कारिक के भेद हुये पर सूरु जाने पर उस में से जाने लच्छकर बाहिर निकलते हैं ॥ ४० ॥ अहो भगवन् ! खंडा भद, प्रतर भेद, चुण्णिया भेद, अनुतादिव भेद व उत्कारिका भेद से द्रव्यों में कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशेषाधिक हैं ! अहो गौतम ! १ सब से पाहे द्रव्य उत्कारिका भद से भेदाये हुये, २ उस स अनुतादिव भेद से भेदाये हुये अनंत गुने, ३ उन से चुण्णिका भेद स भेदाये हुये द्रव्य अनंतगुन ४ उन से प्रतर भद से भेदाय हुये द्रव्य अनंतगुने और ५ उन से खण्डा भेद स भेदाय हुये अनंतगुने ॥ ४१ ॥ अहा भगवन् ! नारकी जा पुत्रक भापापने प्ररण करत हैं

ताइकिं ठियाइ गिण्हति, अठियाइ गिण्हति ? गोयमा ! एव खेव जहा जीवे
 वसन्त्वया भागिया तहा गेरइयस्सवि जाव अप्पाबहुय ॥ एवं पुगिदियवज्जं वडता
 जाव वेमाणिप ॥ ४४ ॥ जीवाण भंत ! जाइ दब्बाइ भासत्ताए गिण्हति ताइकिं
 ठियाइ गिण्हति अठियाइ गिण्हति ? गोयमा ! एव खेव पुहुत्तेणवि नेयन्व जाव
 वेमाणिपाण ॥ ४५ ॥ जीवेणं भत ! जाइ दब्बाइ सच्च भासत्ताए गिण्हति ताइकिं
 ठियाइ गिण्हति अठियाइ गिण्हति ? गोयमा ! जहा ओहिय दढओ तहा एसोवि,
 गवरं विगलिदिया णपुच्छिच्चति ॥ एव मोसाभासाएवि, सच्चांमोसाभासाएवि ॥ अत्त

वे क्या स्थित ग्रहण करते हैं या अस्थित ग्रहण करते हैं ? अहा गौतम ! वेसे जीव की वक्तव्यता करी
 वेसे ही नारकीकी अल्पावदुत्त पर्यंत जानना इसी तरह एकेन्द्रिय छोड़कर वैमानिक पर्यंत उभीस ही दंडक
 में जानना ॥ ४४ ॥ अब अनेक आश्रिय कहते हैं अहो मागवन् ! बहुत जीव जो द्रव्य यावापने ग्रहण
 करते हैं वे क्या स्थित ग्रहण करते हैं या अस्थित ग्रहण करते हैं ? अहो गौतम ! वेसे एक जीव आश्रिय
 कहा वेसे ही अनेक जीव आश्रिय का गानना यों वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ ४५ ॥ अहो मागवन् ! जीव
 जो द्रव्य सत्य मापापन ग्रहण कर व क्या स्थित ग्रहण कर या अस्थित ग्रहण करे ? अहो गौतम !
 स्थित ग्रहण करे परंतु अस्थित ग्रहण करे नहीं यों जैस औषिक दंडक का कहा वेस ही कहना इस में

सामोसाभासाएत्रि एवचेन णत्रर असच्चासोसाभासाए विगल्लिदिया पुच्छिज्वति ॥ इमेण
अभिल्लावेण विगल्लिदिएणं भते ! जाइ एव्वाइ असच्चासोसामासत्ताण गिण्हति, ताइ
किं ट्टियाइ गिण्हति, अटियाइ गिण्हति ? गोयमा ! जहा ओद्धियदढतो एव एतेएगच
पुहुत्थेण इसदडगा भाणियन्वा ॥ ४६ ॥ जीवेण भते ! जाइ एव्वाइ सच्चमासत्ताए गिण्हति
ताइ किं सच्चमासत्ताए गिसरति, मोस भासत्ताए गिसरति, सच्चासोस भासत्ताए निसरइ,
असच्चासोस भासत्ताए गिसरति ? गोयमा ! सच्चमासत्ताए निसरति, णो मोसभासत्ताए

विकलेन्द्रिय की दृष्टि नहीं करना क्यों कि वे मात्र व्यवहार माया बोल्ते हैं वेसे सत्य माया का कहा
वेसे ही मृषा, व सत्य मृषा का जानना असत्य मृषा का वेसे ही करना परंतु विकलेन्द्रिय भी यहाँ पर
ब्रह्म करना इस अभिसाप से विकलेन्द्रिय छोटकर जो द्रव्य असत्य मृषा मायापने ब्रह्म करते हैं वे
वया स्थित ब्रह्म करते हैं या अस्थित ब्रह्म करते हैं ? अहो गौतम ! वेसे औघिक दृढक का कहा
वेसेही एक जीव भास्त्रिय अनेक जीव भास्त्रिय के दृष्टदृढक जानना ॥ ४७ ॥ अहो भगवन् ! जीव जो द्रव्य सत्य
मायापने ब्रह्म करते हैं व वया सत्य मायापने नीकासते हैं, या मृषा मायापने नीकासते हैं, या सत्य मृषा
मायापने नीकासते हैं या असत्यमृषा मायापने नीकासते हैं ? अहो गौतम ! जीव या द्रव्य सत्य माया
पने ब्रह्म करते हैं वे सत्य मायापनेही नीकासते हैं परंतु मृषा सत्यमृषा, व असत्य मृषा मायापने

गिसरति णो सच्चाभोस भासत्ताए गिसरति णो असच्चाभोस भासत्ताए गिसरति ।
 एव एगिंदिय विगळिंदिय धज्जो दढओ जाव वेमाणिया ॥ एवं पुहुचणवि
 ॥ ४७ ॥ जीवेण भंत ! जाई दुव्वाइं मोसभासत्ताए गिण्हति ताइ किं
 सच्चाभासत्ताए गिसरति मोसभासत्ताए गिसरति, सच्चाभोसभासत्ताए गिसरति, असच्चा
 भोस भासत्ताए गिसरति ? गायमा ! नो सच्चाभासत्ताए गिसरति मोसभासत्ताए गिस
 रति, णो सच्चाभोसभासत्ताए गिसरति, णो असच्चा भोसभासत्ताए गिसरति ॥ एव सच्चा
 भोसभासत्ताएवि, असच्चाभोसभासत्ताएवि, एव धेव जवर असच्चाभोस भासत्ताए विग-
 लिंदिया तहेव पुब्बिज्जति जाएचय गिण्हति ताए धेव गिसरति ॥ एव एतेणगमेण एगत्त

नहीं नीकासते हैं, यों एकेन्द्रिय व बिकसलीन्द्रिय बर्नकर सब दृढक कहना जैसे एकआश्रिय कहा वैसी अनेक आश्रिय जानना ॥४७॥ अहो भागवत्! जीव आ द्रव्य मुया भाषापने ब्रह्मकरे बे क्या सत्य भाषापने नीकले, मुया भाषापने नीकले, सत्य मुया भाषापने नीकने याअसत्य मुया भाषापने नीककईअहे गौतमोमस्य भाषापने नीकने नहीं परंतु मुया भाषापने नीकले सत्य मुया व असत्य मुया भाषापने मी नीकले नहीं ऐसे ही सत्य प्रया व असत्य प्रया भाषा का जानना परंतु असत्य मुया भाषा में बिकसेन्द्रिय की पुज्जा करना

पुष्टिय अट्ट दंडया मार्जियन्वा ॥ ४८ ॥ कतिविहेण मंते । वयण पण्णत्त !
 गोयमा ! सोलसविहे वयणे पण्णत्ते तज्झा एगवयणे, दुववयणे, बहुवयणे,
 इत्थीवयणे, पुमवयणे, णपुसग वयणे, अस्सत्थवयणे, उवणीयवयणे, अवणीय
 वयणे, उवणीयअवणीयवयणे, अवणीयउवणीयवयणे, तीयवयणे, पट्ठपण्ण

मावत् निम लिये प्ररण कीये होवे उस लिये नीकाले यों एक अनेक के आठ दंडक काना ॥ ४८ ॥
 भयो मगवत्त ! वचन के कितने भेद कोरे हैं ? अहो गौतम ! मोलद प्रकार के वचन कोरे हैं ? एक
 वचन-वृत्त, छट्, पट् वगैरह, ७ द्वि वचन-यो वृत्त, यो घट्, यो हाय, १ बहु वचन तो बहुत घट्, बहुत वृत्त
 ४ स्त्री वचन-कन्या, शाला, ५ पुरुष वचन-सापु, आवक, छट्, पट्, ६ नपुंसक वचन-पाम, वैत्य, देवकुल,
 ७ अभ्यात्म वचन-वन में रही हुई बात कदापि प्रगट करना चारे नहीं परंतु बोलते सहेज नीकल आगे
 जैसे रुद्र का व्यापारी पानी मांगने के बरल रुद्र दो ऐसा बोले, ८ उपनीत वचन-गुनयुक्त वस्तु का कयन
 कोरे जैसे यह धर्मात्मा पुरुष है, विद्यावन्त है ९ उपनीत वचन-नंदा युक्त वस्तु का कयन कोरे जैसे यह
 पुरुष कुछसभी मूल्य पापी है १० उपनीत उपनीत वचन-अयम गुन फरके फीर अलग कोरे जैसे यह
 स्त्री रूपवती है परंतु व्यभिचारिणी है, ११ अपनीत उपनीत वचन-पारिसे दुर्मुन कहकर फीर गुन कोरे
 जैसे यह पुरुष कुरूप है परंतु सुशील है, १२ अतीत वचन भूतकाल का जैसे तीर्थकर हुए, १३ प्रत्युत्पन्न

क्षणायपणे, पचकस्वयणणे, परोक्स्वयणणे॥ ४९॥ एषेय भते! एगवयणवा जाव परोक्स्वयणवा
 घदमाणे पणवर्णीण एसाभासा जएसा मासा मोसा? हुता गोयमा! इषेय एगवयणवा
 जाव परोक्स्वयणवा वयमाणे पणवर्णीण, एसाभासा, जएसा भासा मोसा॥ ५०॥ कतिण
 भते! भासजाया पणत्ता? गोयमा! चत्तारिभासजाया पणत्ता तजहा सच्चमेग भासजाय,
 वीयमोसं भासजाय, तइय सच्चमोस भासजाय, चउटय असच्चामोसं भासजाय॥ ५१॥
 इषेयाइ भते! चत्तारिभास जायाइ भासमाणे किं छाराहए? विराहए? गोयमा!

(वर्तमान काळ का) बचन भेसे श्री सीमंजर स्वामी हे, १४ अनागत (भविष्य काळ) का बचन-भेसे पद्यनाम
 स्वामी तीर्थकर होंगे, १५ प्रसक्त्य बचन-जा दृष्टि सामने होवे, और १६ परोक्ष बचन बिना देखाही वस्तुका कहना
 ॥ ४९ ॥ अहो मगबन्! इसतरइ एक बचन बोलता हुआ याकत् परोक्ष बचन बोलता हुआ प्रज्ञापनी
 भाषा होव क्या यह भाषा मुषा नहीं है! अहो गौतम! एक बचन याकत् परोक्ष बचन बोलता हुआ यह प्रज्ञापनी
 भाषा है परंतु मुषा भाषा नहीं है॥ ५०॥ अहो ममपर्जभाषाकी कितनी जाति कही है! अहो गौतम! भाषाकी
 चार जाति कही है १ सत्य भाषा, २ मुषा भाषा ३ सत्य मुषा (मिश्र) और ४ असत्य मुषा व्यवहार, भाषा
 ॥ ५१॥ अहो मगबन्! इनचार प्रकार की भाषा बोलनेवाला क्या आरापक होता है या बिरापक होता है! अहो

इधेयाइ चचारि भासजायाइ आठचभासमाणे आराहए णो विराहए तेणपर
 असजय अविश्य अयडिहय अपचक्खायपावकम्मे सखंवा भास भासआ, मोसआ, सखा-
 मोसवा, असखा मोसआ भास भासओ नो आराहए विराहए॥५२॥ एतेसिण भते ! जीवाण
 सखभासगाण, मोसभासगाण, सखामोसभासगाण, असखामोस भासगाण अभासगाणय
 कयर २ हितो अप्यावा बहुआवा तुळावा विसेसाहियावा ? गोंयमा ! सन्वत्थावा जीवा सख
 भासगा सखमोस भासगा असखजगुणा, मोस भासगा असखजगुणा, असखामोस
 भासगा असखजगुणा, अभासगा अणतगुणा ॥ इति पणवणाए मगवईए

गीतम ' इन बार प्रकार की यापा में से उपयोग रखकर यथोक्त बोलनेवाला आराधक होला है; परंतु
 विराधक नहीं होता है उस से अन्यथा प्रकार से बोलता हुआ असेयति अबिरादि व मत्याख्यान से पाप
 कर्म का नाश नहीं करनेवाला है वह फीर चाहे मस्य यापा बोले, गुणा बोले, सत्य गुणा बोले या असत्य गुणा बोले
 वह आराधक नहीं परंतु विराधक है॥५२॥ अहो मगवन् ! सत्य भापक, गुणा भापक, सत्य गुणा भापक व असत्य गुणा
 भापक व अयापक ये स कौन किस से अख्य बहुत तुल्य व बिशयाधिक हैं ? अहो गौतम ! सब से थोडा जीव सत्य भापक,
 सत्य गुणा व पक जीव असंख्यातगुने, गुणा भापक जीव असंख्यातगुने, इससे अस्त्य गुणा भापक असंख्यातगुने

अणावयवे, पञ्चस्ववयवे, परोक्स्ववयवे ॥ ४९ ॥ इच्छेय भते ! एगवयणं वा जाव परोक्स्ववयवः ।
 वदमाने पणवणीण एसाभासा णएसा भासा मोसा ? हुता गोयमा ! इच्छेय एगवयवणा
 जाव परोक्स्ववयवणं वा वयमाने पणवणीण, एसाभासा, जएसा भासा मोसा ॥ ५० ॥ कतिण
 भते ! भासजाया पणत्ता ? गोयमा ! चत्तारिभासजाया पणत्ता तजहा सच्चमेग भासजाय,
 वीयमेसं भासजाय, तइय सच्चामेस भासजाय, चट्ठय असच्चामेसं भासजाय ॥ ५१ ॥
 इच्छेयाइ भते ! चत्तारिभास जायाइ भासमाने किं आराहए ? विराहए ? गोयमा !

(वर्ममन काल का) बचन जैसे श्री सीमंजर स्वामी है, १४ अनागत (भविष्य काल) का बचन जैसे पद्मनाभ
 स्वामी सीर्विकर होंग, १५ प्रदक्ष्य बधन-या शठे सामने शोधे, और १६ परोक्ष बचन बिना देखाही वस्तुका कहना
 ॥ ४९ ॥ अहो मगबन् ! इसतरह एक बचन बालठा हुआ यावत् परोक्ष बचन बोल्ता हुआ मझापनी
 मापा शोधे क्या यह मापा मृपा नहीं है ? अहो गौतम ! एक बचन यावत् परोक्ष बचन बोल्ता हुआ यह मझापनी
 मापा है परंतु मृपा मापा नहीं है ॥ ५० ॥ अहो ममबन् ! मापाकी कितनी जाति रही है ! अहो गौतम ! मापाकी
 पार जाति कही है २ सत्य मापा, २ मृपा मापा ३ सत्य मृपा (मिश्र) और ४ असत्य मृपा व्यवहार, मापा
 ॥ ५१ ॥ अहो मगबन् ! इनचार प्रकार की मापा बालनेवाला क्या आराधक होता है या विराधक होता है ? अहो

इच्छेयाद् चत्वारि भासज्वायाद् आलुचभासमाणे आराहणं विराहणं तेनपर
असजय अविषय अपदिहय अपचक्वायपात्रकम्मे, सधंवा भास भासओ, मोसवा, सधा
मोसवा, असधामोसवा भास भासओ नो आराहणं विराहणं ॥ ५२ ॥ एतेसिण भते ! जीवाण
सधभासगाणं, मोसभासगाण, सधामोसभासगाण, असधामोस भासगाण अभासगाणय
कपर २ हितो अप्यावा बहुआवा तुल्लावा विसंसाहियावा ? गोयमा ! सन्वत्यावा जीवा सध
भासगा सधमोस भासगा असखजगुणा, मोस भासगा असखजगुणा, असधामोस
भासगा असखजगुणा, अभासगा अणतगुणा ॥ इति पणवणणं भगवईणं

गौतम ! इन चार प्रकार की भाषा में से उपयोग रखकर यथोक्त बोल्नेवाला आराधक होता है; परंतु
विराधक नहीं होता है उस से अन्यथा प्रकार से बोल्ता हुआ असंयत्ति भविते व प्रत्याख्यान से वाप
कर्म का नाश नहीं करनेवाला है वह फीर चाहे मृत्यु भाषा बाछे, मृणा पाछे, सत्य मृणा बोछे या असत्य मृणा बोछे
वह आराधक नहीं परंतु विराधक है ॥ ५२ ॥ अहो भगवन् ! सत्य भाषक, मृणा भाषक, सत्य मृणा भाषक व असत्य मृणा
भाषक व अभाषक में स कौन किस से अल्प बहुत तुल्य व विशुद्धाधिक है ? अहो गौतम ! सब से बौद्धे जीव सत्य भाषक,
सत्य मृणा व पक जीव असंख्यातगुने, मृणा भाषक जीव असंख्यातगुने, इससे असत्य मृणा भाषक असंख्यातगुने

इग्यारेबे माया यद के १७ द्वार पांच स्थावर धर्मकर १९ दंडक और समुदाय जीपर

- १ स्वर्ण द्वार । प्रीय के प्रदक्षो माया के पुत्रल स्वर्ण कर प्रहेबिना स्वर्ण नहीं
- २ अवगाह द्वार । मिस आकाश प्रदक्षको जीव के प्रदक्ष अयगाह ये ही माया के पुत्रल अवगाह
- ३ अंतर्तर परस्पर प्रवगाह । अन्तर रहित जीव प्रदक्ष से लग्न इवे माया के पुत्रल है
- ४ सूक्ष्म बाहर द्वार । जीव मायापने सूक्ष्म बाहर दोनों प्रकार के पुत्रलों प्रवण कर
- ५ चर्चद्विद्या द्वार । चर्चद्विद्या में रहे मापक आत्मा तीनों दिशा के पुत्रल प्रवण करे
- ६ अर्धोद्विद्या द्वार । नीची विद्या में रहे मापक आत्मा तीनों दिशा के पुत्रल प्रवण करे
- ७ विच्छिन्निद्विद्या द्वार । विच्छिन्नि विद्या में माया बोसता तीनों दिशा के पुत्रल प्रवण करे
- ८ आदि द्वार । जीव माया बोसता शरीर के आदि पुत्रल प्रवण करे
- ९ पक्ष द्वार । प्रीय माया बोसता शरीर के पक्ष के पुत्रल प्रवण करे
- १० अंतिम द्वार । प्रीय माया बोसता शरीर के अन्त के पुत्रल प्रवण करे
- ११ स्वपरविषय द्वार । माया बोसता अपनी व्यक्ति से पुत्रल प्रवण करे अशक्ति से नहीं
- १२ अनूप्वी अनानुप्वी द्वारा शरीर संगत पुत्रल अनुक्रम में प्रवण करे बीच में छोड़कर नहीं
- १३ दिक्षा द्वार । माया बोसता दुरा नियमा छ ही दिक्षा के पुत्रल प्रवण करे

१४ स्वेदमन्त्रों द्वार	।स्वेदमन्त्र ३ और खूणिका ५ यों दोनों के ११ पुटस माषापने ग्रहण होते हैं
१५ अन्तर द्वार	।मत्त द्वार के १ मेद कर पुटस माषापन परिणमे
१६ अनुतदितमद	।अनुतदित ११ के मद कर पुटस माषापने पारणमे
१७ वक्कारयामेद द्वार	।वक्कारिक ३ मेदकर पुटस माषापने पारणमे

भासापण्ड इक्कारसम सम्मृत्ते ॥ ११ ॥

और इस से अमापक अनन्तगुने सिद्ध व स्यावर आश्रित यों सगवति प्रज्ञापना का अग्यारहवा भाषा पद सपूर्ण हुआ ॥ ११ ॥



● द्वादश शरीर पदम् ●

कातिण भते ! सरीरा पण्णसा ? गोयमा ! पच सरीरा पण्णत्ता तज्जहा ओरालिण्ण,
वठव्विण्ण, आहारण्ण, तेयण्ण, कम्मण्ण ॥ १ ॥ णेरइयाण भते ! कइ सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! तओ सरीरगा पण्णत्ता तज्जहान्वेठव्विण्ण, तेयण्ण, कम्मण्ण ॥ एव असुरकुमारणवि
जाव थायियकुमाराणवि ॥ पुढव्विकाइयाण भते ! कति सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा !

अब वारु वा शरीर पद काते हैं अहा भगवन् ! शरीर कितने करे हैं ! अहो गौतम ! शरीर
पांच करे हैं भिन के नाम—१ उदारिक-उदार प्रदान सीर्यकर चक्रवर्ती बस्त्रद्वय, वासुद्वय, केवली, साधु,
आमक लेंचरों आदि उदार पुरुषों को धारन करने योग्य मुक्ति प्राप्ति क हेतुभूत उसे उदारिक शरीर
करे हैं २ वैक्रय—एक रूप क दो तीन ऐश अनेक अच्छे बुर रूप होवे अथवा विशिष्ट क्रिया
बाला मो वैभ्रय शरीर २ आहारक शरीर साधु का होवे चतुर्दह पूर्व के पाठक, जीवादि सूक्ष्म विचारोंका
निर्णय करने के लिय केवली पास भेजे वह आहारक शरीर ४ तमस आधिभूत है तथा प्रकार के ग्रहण
कीये आहार के पुद्गलों को पाचन करने बाला त्रया तेजो लेइया प्रगट करने के कारनभूत तेजस शरीर है
और ५ कार्माण शरीर आठ कर्म के समुद्रय रूप एव शरीरोंकी उत्पत्ति के कारणभूत वह कार्माण शरीर है
॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नारकी को कितने शरीर करे हैं ? अहो गौतम ! नारकी को तीन शरीर करे

तथा सरारगा पण्णचा तजहा आरालिण्ण, तेअण्ण कम्मण्ण, एव वाउकाइय वज्ज जाव चठरिदियाण ॥ वाउकाइयाण भते ! कति सरारा पण्णचा ? गोयमा ! चचारि सरारा पण्णचा तजहा आरालिण्ण, वेठन्विण्ण, तेयण्ण, कम्मण्ण एव पचेदिय तिरिक्ख जोगियाणवि ॥ मणुस्साण भते ! कति सरारा पण्णचा ? गोयमा ! पच सरारगा पण्णचा तजहा ओरालिण्ण, वेठन्विण्ण, आहारण्ण, तेयण्ण, कम्मण्ण ॥ वाणमत्तर जोइसिय वेमाजियाण जहा नरगाण ॥ २ ॥ केवइयाण भते ! ओरालिय सरारा पण्णचा ?

हैं १ वैक्रय २ तेजस और ३ कार्माण ऐसे ही अमुरकुमार याबत् स्थिति कुमार पर्यस वृद्धों ही मवन पति देवों का वैक्रय, तेजस व कार्माण ऐसे हीनों शरीर कहें हैं अहो मगबन् ! पृथ्वीकाया का कितने शरीर कहें ? अहो मौतम ! पृथ्वी काया को हीन शरीर कहे हैं भिन के नाय १ उदारिक, २ तेजस और ३ कार्माण ऐसे ही अण्णकाय, वेठकाय, वनस्पतिकाय, वेदन्द्रिय, तेजन्द्रिय, और चतुरेन्द्रिय का आनना वायुकाया में उदारिक, वैक्रय, तेजस और कार्माण ऐसे चार शरीर पाते हैं तिरिय पंचेन्द्रिय में भी उक्त चार शरीर पाते हैं यनुष्य में पांचों शरीर हैं वाणव्येतर अयोविपी व वैमानिक में नरक भेस वैक्रय, तेजस व कार्माण ऐसे हीन शरीर पाते हैं ॥ २ ॥ अहो मगबन् ! उदारिक शरीर के कितने

गोपमा ! दुन्निहा पण्णत्ता संजहा बढेलगाय मुक्केलगाय ॥ तत्थण जे ते बंढेलगा
तेण अमंखेज्जा असखज्जाहि उसाथिणी ओसपिणीहीं अवहीरति कालओ खेचओ अस
खेज लोगा ॥ तत्थणं जे ते मुक्केलुगा तेण अणता, अणताहि उसपिणि ओवसपि
णीहि अवहीरति कालओ, खेचओ अणतलोगा, बन्वओ अमवसिद्धिपुहितो अणत
गुणा सिद्धाण अणत भागो ॥ केवतियाण भंते ! वेडन्वियसरीरगा पणत्ता ? गोयमा !

मद कह है ? अओ गौतम ! उदारिक खरीर क दा मेद कह है—बदेख्ख सा धारन कीया हुवा और
मुक्केख्ख सा धारन कर छाह वीया हुवा उस में बदेख्ख खरीर द्रव्य स अमख्यात है क्यों कि मनुष्य
विर्यच को ही उदारिक बदेख्ख खरीर है वे असंख्यात है बघपि निगोद में जीवों अनन्त है तद्यपि
खरीर अनन्त न है परंतु असंख्यात है; एक २ खरीर में अनन्त जीवों होते हैं काल से-असंख्यात अब
सर्विणी वस्त्रपिणी के बिछन समय होते हैं उस के एकैक समय में एकैक उदारिक खरीरका अपहरन करते
असंख्यात व्यवसर्पिणी वस्त्रपिणी काल व्यतीत है। भाये इतने हैं लेख से—असंख्यात छाक मरा भाव
वतने हैं मुक्केख्ख खरीर द्रव्य से अनन्त है काल में समय २ में एकैक अपहरन करते अनन्त अवसर्पिणी वस्त्रपिणी
व्यतीत होभावे वतने हैं, लेख से अनन्त लोक प्रमाण है अनन्त लोक के आकाश प्रदेशपर एकैक मुक्केख्ख उदारिक
खरीर रखते अनन्त लोक के तितने आकाश प्रदेश हैं वतने आकाश प्रदेश की राशि मिलने खरीर होजात है

दुविधा पणसा सज्जा—बन्देलगाय, मुक़्देलगाय, तत्थण जेतें बन्देलगा तेण अस-
खेजा असखेजाहि उसपिणि अत्रसापिणीहि अत्रहीरते, कालओ खेचओ असखजाओ
सेढीओ, पपरस्स असखेजइ भागो, तत्थण जेतें मुक़्देलगा तेण अणंता अणताहि

और भी द्रव्य से पान करते हैं—अमण्य से अनंतगुने और सिद्ध क अनंत वे भाग में हैं * अब वैक्रिय
शरीर का कहते हैं 'अहो भगवत्' वैक्रिय शरीर के कितने बन्द करे हैं ! अहा गौतम ! वैक्रिय शरीर के
दो बन्द करे हैं * बन्देलक और २ मुक़्देलक उस में बन्देलक द्रव्य से असंख्यात हैं काल से एकेक समय
में एक शरीर का अपहरन करते असख्यात अदसविणी व्यतीत होते, सत्र से असंख्यात ओणि
प्रमान हैं उस ओणि के जितने आकाश प्रदेश हैं उतने प्रमान में वैक्रिय शरीर क बन्देलक हैं अब

* यहाँ शिष्य प्रश्न करता है कि पदबाइ सम्यक दृष्टि भी अमण्य से अनंतगुने हैं और सिद्ध के अनंत वे भाग
में हैं तो क्या पदबाइ सम्यक् दृष्टि की राशि से त्याग भ्रष्ट, त्याग तुल्य या त्याग व्यक्त भी होते ! और भी
मुक्त शरीर अनंत हैं तो अनंत शरीर देखने दें नहीं आते हैं तो क्या अनंत खण्ड होकर परमाणु के भाव से
परिणमे हैं ! प्रत्यक्ष पक्ष में शरीर का अनंत काल रहना नहीं है और दूसरा पक्ष ग्रहण करें तो खण्ड २ ग्रहण
करने से कोई भाव ने उदारिक शरीर के पुरूल ही अनंत बक्त परिणमाकर छोड़े नहीं हैं इसलिये यहाँ सब पुरूलस्ति
काय में जो पुरूल हैं वे तो सब जीवों से अनंत गुने हैं. यह बचन किस्त तरह समझना ! उत्तर—मग्नत्वेन जो कजा है
वह निर्दोष है, उक्त दोनों पक्ष को हम भ्रमोत्पन्न नहीं कर सकते हैं ! हम ऐसा कहते हैं कि बोध रहित ओदारिक शरीर

अवसर्पिणी ओसापिणीहिं अवहीरति, कालओ जहा ओरालियस्स मुक्खेलाय तहेव
वेठव्वियस्सवि भाणियव्वा ॥ कथतियाण भते। आहारग सरीरगा पण्णत्ता? गोयमा ।
दुग्धिहा पण्णत्ता तज्जहा वक्खेलाय मुक्खेलाय तत्थण जेत वक्खेलागा तण सिय

मुक्खेलाक वैक्य शरीर द्रव्य से अनंत है, काल से अनंत अवसर्पिणी क समय चितने है वगैरह सब उदारिक
शरीर जैसे ही इस का कथन करना अहो भगवन् ! आहारक शरीर कितन कहे हैं ! अहो गौतम !
आहारक शरीर क दो घेव कहे हैं—वक्खेलाक और मुक्खेलाक उस में वक्खेलाक किसी काल में पाता है
और किसी काल में नहीं पाता है क्योंकि कि आहारक शरीर की सखि मात्र वक्खेला पूर्व के
पारि यों की होती है और आहारक शरीर का विरह भी उ पाय का होता है इस से विरह काल में

के अनंत लच्छ होते व वहाँ तक उस बीच का निष्पन्न कीया ओदारिक शरीर का परिणाम छेवकर पुन अन्य
परिणाम को प्राप्त न होवे वहाँ तक ओदारिक शरीर के अवयवने से अलगा ओदारिक शरीर कहना, जैसे गाम का
एक विभाग बढने स गाम अन्य कहा जाता है, पठ की छोटा विभाग बढने से पठ बला कहा जाता है, ऐसे ही
अवयव में सर्व सुमुणाय का उपचार करने से उदारिक शरीर कहना इसलिये एकक बीच के छोटे हुवे उदारिक शरीर
के अस्त भ्ते होते हैं वे अनंत भद्र अज्जा २ उस के अवयव में उपचार करने स एक बीच के मुक्त कीये उदारिक
शरीर क भी अनंत उरिक्क शरीर छोडे हुवे होते हैं, इसलिये यहाँ समुण्य उदारिक शरीर कहा है, विभाग
न अज्जा २ अग कहने

अस्य सियमस्थि, अह अस्थि अहृण्येण एकोवा दोषा, तिष्ठिमा, उक्कोसेण सहस्स पुहुत्ता तरण्य अ ते मुक्केलगाय तेणं अणता जहा मोरालिय सरीर मुक्कझगा तदेव भाणियन्वा ॥ केवइयाणं भते ! तेयग सरीरया एण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा एण्णत्ता तज्झा—बद्धेलगाय मुक्केलगाय ॥ तत्थयणं जेतो बद्धेलगाय तेण अणता, अणत्ताहिं उस्सप्पिणिअवसप्पिणीहिं अवहीरति कालत्तो, सेत्ततो अणतालोगा एव्वओ सिद्धएहिंतो अणतगुणा, सत्तव जीवाणत

बद्धेलक आहारिक क्षीर नहीं पाता है जब पाता है तब अथन्य एक दो तीन बत्कट्ट प्रत्येक इमार से अधिक नहीं होते हैं मुक्केलक आहारिक क्षीर का उदारिक ऐसा ही करना अहो भगवन् तेजस क्षीर के कितने भव करे हैं ? अहो गौतम ! तेजस क्षीर के दो भेद करे हैं बद्धेलक और २ मुक्केलक उस में से बद्धेलक अनंत हैं क्यों कि निगोद के प्रत्येक जीवों को अलग २ तेजस कार्पोण क्षीर होते हैं काठ से एक २ समय में एक एक अपहरन करते अनंत अवसप्पिणी उस्सप्पिणी व्यपहीत हो जाये और तेज से अनंत लोक प्रमाण हैं ऐसे ही द्रव्य से विशेष करते हैं द्रव्य से सिद्ध से अनंतगुने हैं और सब जीवोंसे अनंत वे प्राण क्रम हैं क्योंकि सिद्ध के जीवोंको तेजस कार्पोण क्षीर नहीं

भागूणा ॥ तरयण जेतो मुक्खलुगा तेणं अणताहि ओसपिणी उसपिणीहि
अयहीरति, फालतो खेचतो अणंता लोणा, एन्वओ सव्यजीवे हिंतो अणतगुणा, सन्व
जीव वग्गस्स अणतभागो ॥ केइविहाणेण भते! कम्मग सरीरगा पण्णत्ता ? गोयमा!
दुविहा पण्णत्ता तज्जहा ब्बेदलगाय मुक्खिलुगाय, एवं जहा तेयग सरीरा तहा कम्मग
सरीरानि भाणियन्वा ॥ ३ ॥ णेरइयाण भते! कयतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तज्जहा-ब्बेदलगाय मुक्खिलुगाय, तत्थणं जेतो ब्बेदलगा तेण

हे इस से मिद्ध राशि नितने तेजस शरीर सब जीवों स कय हो गये और मुखेसक इव्य से अनंत है काल में एक समय में एक-एक अपहरण करते अनंत ब्रह्मसर्पिणी उत्सर्पिणी व्यतीत हो जाये तबने हैं, क्षेत्र से अनंत मोक प्रमाण है, सब जीवों से अनंतगुण है और सब जीवों के बर्मसे अनंतवे भाग में है अहो भगवन् 'कार्माण शरीर के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ' कार्माण शरीर के दो भेद कहे हैं—' बद्धक और २ मुखेसक यो जैसे तेजस शरीरका कथन कीया हैसही सब कार्माणका कहना यह पाँचों शरीर की समुच्चय ब्रह्मस्यता हुई ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नास्ती को कितने उदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उदारिक शरीर कहे हैं ' बद्धेसक और २ मुखेसक उस में से बद्धेसक शरीर नरक में नहीं है

ओरालिया नरिथ, तस्थण जेतें मुकिलगा। तेंण अर्णता, जहा ओरालिय मुकिल्लया
तहा भाणियव्वा ॥ ४ ॥ णेरइयाण मंते ! केयतिया वेठान्णिय सरीरा पण्णत्ता ?
गोयमा ! दुविद्द ! पण्णत्ता तजहा वड्ढेस्सगाय मुक्किल्लगाय ॥ तस्थण जे ते वड्ढेलगा

क्यों कि वे वैक्रय शरीर धारण करनेवाले हैं, और मुद्वेष्टक अनन्त हैं क्यों कि नेरियोन गतकाल में अनन्त संसार का परिभ्रमण कर अनन्त त्वारिक क्षीर धारण कर छोड़ दीये हैं इस का कथन समुच्चय जीव आश्रित त्वारिक का कथा बैसे ही कहना ॥ ४ ॥ अहो ममवन् ! नारकी को वैक्रय शरीर कितने करते हैं ? अहो मौतम ! नारकी को वैक्रय शरीर दो प्रकार के करते हैं तथया-^१ बदेष्टक और २ मुद्वेष्टक उस में बदेष्टक असंख्यात हैं क्यों कि प्रत्येक मरक में व्यसंख्यात नेरियो हैं काल से-एक २ समय में एक का अपहरण करते असंख्यात अवतारिणी तत्सर्विणी व्यसीत हो जावे, तब मे असंख्यात अग्नि के मित्रने आकाश प्रदग्ध हैं उतने बदेष्टक वैक्रय क्षीरवाले नेरियो हैं ; अब वहाँ पर विवरण करते हैं मर के असंख्यातमे माग में असंख्यात श्रेणियों हैं, उस के भितने आकाश प्रदेश हैं उतने नारकी के बदेष्टक वैक्रय शरीर हैं वहाँ पर मर के असंख्यातमे माग में असंख्यात योमन की छोटी भी होये तो यहाँ असंख्यात योमन की छोटी में भिन्ने आकाश प्रदेश होवे वह अंगुल प्रमाण असंख्यात प्रदग्ध की श्रेणि है उस का तब घनकन लोक सात राजु प्रमाण सम्भा, चौदा व जाटा होता है वर यहाँ असंख्यात

नेण असख्वा अमखिजाहिं, उसपिणीहिं उससापिणीहिं अशहरति कलओ, खचओ !
असखेजाओ सेढीओ पयरस असखज भागो, तसिण सेढीण शिखभसई अगुल
पढमवगमूल धितीध वगमूल पहुपण अहण, अगुल त्रितीय वगमल धणप

प्रदेश की तारी अणि के जितने आकाश प्रदेश की राशि यह प्रथम वम मूल, उस को दूसरे वर्ग
मूल की साथ गिनने में मितनी अणी हावे ततनी अणी की विषय शूचि होवे इतनी अणी अंगुल प्रमान
सबसे जानना यहाँ एसा भी कोई करते हैं कि अगुल प्रमाण सब नादपने जानना यह अमत्य करण से
२५६ प्रदेश की अणी, इस का प्रथम वर्ग मूल १६ का हुआ दूसरा वर्ग मूल ६ का यों दोनों का गुणाकार
१६ होवे अर्थात् १६ प्रदेश का एक घन और एक नरक का एक प्रदेश के घन इतने सातों नरक के प्रदेश
यों मितने विदहम्म शूचि अंगुल आकाश प्रदेश के १६ प्रदेश के घन इतने सातों नरक के प्रदेश
वैक्य दरीर हैं अथवा दूसरा प्रकार अंगुल प्रमान मो नतरक्षत्रों असख्यात अणि का दूसरा वर्ग मूल पूर्वोक्त
चार की सुखा, वे चार रूप ठम के घन १६ रूप ततनी अणी यहाँ ग्रहण करना यों रूप करके दूसरा
भेद होता है यहाँ परंपरा से दो प्रकार के भेद हैं परंतु परमार्थ से एक ही होता है यों स्वकल्पनासे १६
प्रदेश रूप एक अणि का सद्माथ हावे, यों असख्यात चौसठ २ प्रदेशों को अणि, होद. यों प्रदेश
अणि की मो राशि हावे ततने नारकी को बखलक वैक्य दरीर होते हैं अर्थात्, अंगुल प्रमान माहा

भाण मेत्ताओ सेढीतो तत्थण जेतो मुक्खेसगा तेणं जहा उरालियस्स मुक्खेसगा तंहा
भाणियव्वा ॥ ५ ॥ जेरइयाण भते ! केवतिया आहारग सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा!
दुविहा पण्णत्ता तंजहा बढेलगाय मुक्खेसगाय एव जहा ओरालिय बढेलगा,
मुक्खेसगाय भाणिया तदेव आहारगाविभाणियव्वा ॥ तयाकम्माइ जहा एतिसिंचेव
वेठन्वियाइ दोवियाइ ॥ ६ ॥ असुरकुमाराण भते! केवतिया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता?
गोयमा! जहा जेरइयाण ओरालियसरीरा भणिया तहव एतिसिंचि भाणियव्व ॥ असुर

आकाश के प्रदूष है उस की दृष्ट कल्पना स ६४ प्रदूष की श्रेणी गिनना यों गिनत २ असंख्योन श्रेणि
की राशि शिषे मुक्खेसक शरीर का नारकी क उदारिक शरीर जैसे कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् !
नारकी को कितन आहारक शरीर करे है ? अहो गौतम ! नारकी का दो प्रकार के आहारक शरीर
करे है तथया १ बढेसक और २ मुक्खेसक यों जिस प्रकार भौतिक शरीर का कहा वैसी कहना क्योंकि
चबदइ पूर्ववारी पचचाइ हाकर नरक में जाते हैं और तेजस कार्माण का वैक्रेय शरीर जैसे कहना ॥ ६ ॥
अहो भगवन् ! भसुर कुमार को कितने औदारिक शरीर करे है ? अहो गौतम ! जैसे नेरिय के
उदारिक शरीर की ब्याख्या करो जैसे ही भसुर कुमार के उदारिक शरीर की ब्याख्या
कहना अहो भगवन् ! असुर कुमार को कितने वैक्रेय शरीर करे है ? अहो गौतम ! असुर कुमार को

कुमाराण भते ! केवइया वेठान्विय सरीरा पण्णमा ? गायमा पुविहा पण्णमा तंजहा
 बंछेहुगाय, मुक्खेहुगाय, तरयण जे ते बढेलगा तेण असखेज्जा असखेज्जाहि ठसपिणी
 ओसपिणीहि अचहीरति, कालता खेचतो असखेज्जाओ सेढीआ पयरस्स असखेज्जाति भागो
 तासिण सेढीण विक्खमसूई अगुल पढमधगमूळरम असखेज्जा भागो ॥ ततयण जे ते
 मुक्खेलगा तेण जहा ओरात्तियस्स मुक्खेखगा तहा भाणियब्बा ॥ आहारग सरीरा जहा
 दा वैक्खेव खरीर करे है भिन के नाय—१ बढेलक और २ पुळ्ळक तस में जा बढेलक है वे अस-
 ख्यात है क्यों कि असुर कुमार दूब भयल्यात है काल आअिय समय २ में एकेक इरन करते असख्यात
 अबसविणी चरमविणी ब्यहीत हो जाव और तब स असख्यात अणि गतर के भिने आकाश प्रदेश होवे
 तस प्रमाण में है नरक से इस में इतनी विद्युपटा है कि तस अणि के प्रमाण में भितने विक्कम्पने
 शुधि तस विस्तारपने अंगुल मात्र क्षत्र के प्रदेश की राशि सर्व वे प्रथम वर्ग मूल असख्यातवे माम मात्र
 है बर्वात ओ अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में भमत नदरना से २५९ प्रमाण है एसे प्रथम वर्ग मूल
 १९ की संख्या सप्तज इस का असख्यातवा भाग के भितने आकाश प्रदेश की अणि है तस अणि के
 भितने आकाश की शुधि असख्यात भाग कम है इस स्थिये नरक से असख्यातवे माम असुर कुमार है
 रत्तममा के भेरिय से असुर कुमार अधिक है परंतु सातों नरक के भेरिये से असख्यातवे भाग ही है

पतेर्सिचैव आराधित्या तदेव पुनिहा भाणियत्वा ॥ तेया कम्मग सरीरगा दुविहायि
जहा एतसिचैव यउच्चिय ॥ एव जाव थणियकुमारा ॥ ७ ॥ पुढवि काह्वाणं भत !
कवतिया ओरालिया सरीरगा पण्णसा ? गोयमा ! बुविहा पण्णचा तजहा बन्नेस
गाय मुक्कह्वाणाय, तथण जते यद्धेह्वा, तेण असखेज्जा असखज्जाहि उसप्पिणी
ओसप्पिणीहि अवहीरंति, कालतो खेचतो असखेज्जालोगा, तथणं जते मुक्कह्वा तण
अणता, अणंताहि उसप्पिणी ओसप्पिणीहि अवहीरंति, कालओ, खचताअणतालोगा,

अर्थात् १-६ प्रदेश की एक आणि और असुग कुमार का एक वैदलक शरीर यों करते २ शुचि अगुल
प्रमाण सब खासी होव इतने हैं जो मुक्कसक हैं तग की व्याख्या वदारिक मुक्कसक जैसे कहना दानो
प्रकार क आहारक शरीर का वदारिक जैसे कहना वेजन कार्पोण का वैक्रम जेत कहना जैसे असुर
कुमार का कयन कीया वैसे ही स्वनित कुमार पर्यंत दसों भवनपति का कयन करना ॥ ७ ॥ अहो
भगवन् ! पृच्छीक्या के कितने वदारिक शरीर कह हैं? अहो गौतम! दो प्रकारके वदारिक शरीर कह हैं
१ वैदलक और २ मुक्कसक सब में आ वैदलक है वे असख्यात हैं, तमप २ में एक अपहरन करते
असंख्यात अबसार्पिणी वत्सार्पिणी व्यतीत होजावे, सेश से असंख्यात साक प्रमाण हैं, जो मुक्कसक हैं वे
अनंत हैं अनंत अपसार्पिणी वत्सार्पिणी व्यतीत होजावे, सेशने अनंत लोक के आकाशप्रदेशकी राशिप्रमाण हैं

कुमाराण भते । कचइया घंठन्विय सरिरा पण्णत्ता ? गायमा दुग्धिहा पण्णत्ता सजहा
घट्टल्लगाय, मुक्केल्लगाय, तत्थण जेतं बद्धेलगा तेणं असस्खेज्जा असस्खेज्जाहिं उतप्पिणी
ओसत्पिणीहिं अवहरति, कालत्ता खेत्ततो असस्खेज्जाओ सेढीआ पपरस्स असस्खेज्जति भागो
सात्तिण सढीण विक्खभसूई अगुल पढमधगमूळस्स असस्खेज्जई भागो ॥ तत्थण जेतं ते
मुक्केल्लगा तेणं जहा ओरात्तिस्स मुक्केल्लगा तहा भाणियज्जा ॥ आहारग सरिरा जहा
हा वैक्केय छरीर कर है भिन के नाम—१ बद्धेल्लक और २ मुक्केल्लक तस में जा बद्धेल्लक है वे असं
ख्यात है क्यों कि असुर कुमार धव असख्यात है काल आश्रिय समग २ में एकेक इगन करत असंख्यात
अवसाविणी वरनपिणी व्यक्षित हो जाय और तत्र स असंख्यात अणि पत्तर के भिन्ने आकाश प्रवृत्त होवे
तम प्रमाण में है नरक से इस में इतनी विक्षेपता है कि तस अणि के प्रमाण में भित्तने विक्कम्भपने
शुधि इस बिस्तारपने अंगुल मात्र ६४ के प्रवृत्त की राशि सब वे प्रथम वर्ग मूल असंख्यातवे माम माय
है अर्थात् ओ अंगुल मात्र प्रदेश की राशि में असत् करदना से २५९ प्रमाण है एसे प्रथम वर्ग मूल
१९ की संख्या सप्तज उस का असंख्यातवा याग के भित्तने आकाश प्रदेश की अणि है उस अणि के
भिन्ने आकाश की शुधि असंख्यात याग कम है इस भिये नरक से असंख्यातवे माम असुर कुमार है
रत्नप्रभा के नेरिय से असुर कुमार अधिक है परंतु सातो नरक क भेरिबे से असंख्यातवे माम ही है

अमवसिद्धिपूर्वितो अणतगुणा, सिद्धाण अणत भागो ॥ पुढाविष्काइयाणें भंते !
 कयतिया वेडविय सरीरगा पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पणत्ता तजहा बढेलगाय
 मुक्कलगाय, तरथण जत बढेलगा तेण पार्था सरथण जेते मुक्कलगा तेण जहा
 एतेसिच उरालिया भाणिया तदेव भाणियन्व ॥ एव आहारग सरीरात्रि, तेया
 कम्मगा जहा एतेसि च उरालिया ॥ एव आडकाइया, तेडकाइयात्रि ॥ वाड
 काइयाण भंते ! केवतिया क्षारालिय सरीरा पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा, पणत्ता
 बढेलगाय मुक्कलगाय दुविहावि जहा पुढाविष्काइयाण क्षारालिया ॥ वेडविययाण पुच्छा ?

अमवसिद्धि के जीवों से अनंतगुने हैं और सिद्ध यगवन्त से अनंतवे मग में हैं अहो भगवन् ! पृथ्वी
 काया में वैक्लव्य शरीर किये हैं अहो गौतम ! दो प्रकार के हैं गिन के नाम-बद्धलक और मुक्कलक उसमें बद्धलक
 नहीं है और मुक्कलक का बर्दारिक शरीर नैसा जानना ऐसे ही व्याहारिक का भी कहना वे असकामोंन का
 बर्दारिक शरीर कैसे कहना जैसे पृथ्वीकाया का कहा वैसेही अप्काय ब तवकाय में कहना अहो भगवन् !
 बायुकाया के किते बर्दारिक शरीर करे हैं ! अहो गौतम ! दो प्रकार के शरीर कहा हैं शिव के
 नाम—' बद्धलक और ' मुक्कलक इन दोनों की वक्तव्यतां जैसी पृथ्वीकाय के बर्दारिक शरीर की
 करी वैसे ही कहना, वैक्लेय शरीर का प्रभ अहो गौतम ! दो प्रकार के करे हैं ' बद्धलक और मुक्कलक

गोयमा ! बुविहा पण्णत्ता तज्जहा बद्धेलगाय मुक्खेलगाय तत्थणे जेतै बद्धेलगा
तेण असखेज्जा समए समएण अवहीरमाणे २ पल्लिओवमस्स असखेज्जइ भागमेसेण
काटेण अवहीरति नो चेवण अवहारिया सिया, मुक्खेज्जगा जहा पुढविकाइयाण ।।
आहारयत्तया कम्मगा जहा पुढविकाइयाण तहा भाणियत्त्वा ।। णप्फइ
काइयाणं जहा पुढविकाइयाण णर तेयाक्कम्मगा जहा आहिया, तेया
क्कम्मगा ॥ ५ ॥ बइदियाण मते । कवइया ओरालिय सरीरा पण्णत्ता ? गोयमा ।
बुविहा पण्णत्ता तज्जहा बद्धेलगाय मुक्खेलगाय, तत्थणे जेतै बद्धेलगा तेण अस

इस में जो बढ़ेल्क है व असस्पात है, ममप २ में एक २ अपहरन करते पख्योग के असस्पातवे माग
मितन हाव यथापि वापुकाया असख्यान लोकाकाश प्रमान है तथापि स्वरूप बादर, पर्याप्त और अपर्याप्त
इन चार भद्र में ए मात्र पर्याप्त बादर बापुकाया में ही वैकेय शरीर पाता है अन्य में नहीं पता है
और मुखन्नक का पृष्ठीकाया का कहा वैसे ही कहना वनस्पतिकाया क बढ़ेल्क मुखन्नक ऐसे दोनों
शरीरों का पृष्ठीकाया का कहा वैस कहना परंतु तजस व कापौण का जैसा औधिक दूध में कहा वैसा
कहना भयात् नितने नीष है खतनही बढ़ेल्क शरीर है और मुखन्नक अनतगुने है ॥ ८ ॥ अहो मगवन् !
बान्द्रिय के किनेने वनारिक शरीर कहे हैं ! महा गौतम ! दो प्रकार के वनारिक शरीर कहे हैं निनके

सजा अससज्जाहिं उसपिणि उवस्सपिणीहिं अवहीरसि कालतो, खेतओ अससेज्जाओ
 सेढीआ पयरस अससेज्जइ भागो, तासिण सेढीण त्रिखममया अससेज्जाओ जोयण
 कोढाकोढीओ अससेज्जाइ सेढीवगमूलाइ, वैवियाण ओरालिय सरीरहिं थरेल्ल
 गेहिय पये अवहीरसी अससेज्जाहिं उसापिणीउस्सपिणीहिं, कालतो खेतओ
 अगुलपयरस आवसियाते अससज्जसिभाग पलिभागेण, तस्थण जते मुक्कल्लगा ते जहा
 नाम ? बदेवक और २ मुक्कल्लक, उस में बदेवक अससयात हैं काल से एकक समय में एकेक अपहरण
 करत अससयात अवसपिणी उसपिणी वधनीत हा जाव, सब से अससयात अणिक प्रवेश क तुल्य है
 अर्थात् प्रतर के अससयात वे भाग वहीं ओ अससयात अणि के जा प्रवेश राशि हाव उतने हैं इतनीही
 तरक के भी य वस्तु इस में विद्ययता यह है कि-प्रवेश के अससयातव भाग वहीं अणिकी विष्कम्भयुवि
 अससयात फाटा फोट योजन प्रमान है अर्थात् एक आकाश अणिके प्रवेश की राशि सदाव से
 अससयात बदल रूप है वस क अससयात वर्ग मूल है इतने प्रवेश की विष्कम्भ युधि है अन्त्रिय का
 उदात्तिक धार बदलक उस क प्रवेश से प्रतर के सब प्रवेश का अपहरन होवे, काल स अससयात
 अवसपिणी उत्सपिणी समय प्रमान होवे, सब से अंगुल प्रतर रूप सत्र का और आयुधिका रूप जो
 काल उस के अनुसयातया भागइय प्रसिभाग इस से युक्त है अर्थात् एक द्विन्त्रिय का क्षीर और प्रतर

आहिय ॥ ओरालिय मुकेलगा घेठान्निगा आहारगाय बंदेखगा नरिय मुकेलगा जहा
 ओहिया, ओरालिया, तेया कम्मगा जहा एतेसिचेय ठहिया, ठरालिया, एव जाव घठरिधिया
 ॥ ९ ॥ पंचिधिया तिरिक्ख जोगियाण एवं चेय, णवर वेठळिये सरीरसु
 इमो विसेसो — पंचिदिय तिरिक्ख जोगियाण भंते ! कयइया वेठळिय सरीरगा
 पण्णसा ? गोयसा ! दुविहा पण्णसा तजहा—बखलगाय मुकेलगाय, तटयण जंत
 यखेलगा तेम असखजा, जहा असुरकुमाराण, णवर तासिण सेठीण विक्खमसूची

हा एक भगुलका असख्यावये मागका ऊंच एकद आबळिकाके अर्मलगावभाग अनुक्रमसे अपहरन करते
 असख्यात अबमपिप्पी बत्सापिनी व्यतीत होजावे, मुल्लसक उदारिक शरीरकी व्याख्या औपिक जेमे कहना वैक्रेय
 का बदलक हम में नहीं है मुल्लसक का औपिक जैसे कहना तेमम कार्याण का हम केही औपिक
 जेमे कहना जेसे बहन्त्रिय का कहा तेसे ही तेइन्त्रिय य वतारन्त्रिय का कहना ॥ ९ ॥ विविध पंचेन्त्रिय
 का भी उपर्युक्त जैसे कहना परंतु वैक्रेय शरीरमें विखेयता इतनी है कि अहो भगरन् ! विविध पंचेन्त्रिय को
 कितने वैक्रेय शरीर कहें ! अहो गौतम ! दाप्रकारक वैक्रेय शरीर कहें तथया १ बंदेख ६ और २ मुल्लसक
 इस में जो बदलक है वे अमख्याव हैं वेस ही जेमे असुरकुमार का कहा जेमे ही कहना परंतु विरोधना
 यह है कि प्रतर क असंमय-वये भाग जितनी प्रदक्ष अर्णा की राशि होती है उस के तुल्य हैं, यों प्रत्यसे

अगुल पठमवगभूलस असखेज्जइ भागो मुकेलगा तहेव ॥ १० ॥ मणुस्साण भते !
 केवइया ओरालिय सरीरग पणत्ता ? गोयमा ! दुविहा पणत्ता तजह। बडलगाय
 मुक्खगाय, तरण जत बडलगा तेण सिय सखेज्जा, सिय असखेज्जा जहणपव
 संखेज्जा, संखेज्जाओ कोठाकोठीओ, एगुणतीसाहुणाइति जमल पयस्म उव्वरि चउजमल
 पयस्सइट्ठा, अहवण छट्ठावगो पचमवग पट्ठपणो अहवण छणो ट्ठाणगदयिरासी,
 असस्सात है काळ से असस्सात अवसाधेणी बटनपिणी के समय प्रपान है, तेव से प्रतर के असस्सात
 माग जा असस्सात श्रणो है उम की राशि तुय है मुक्खक वैस ही कहना ॥ १० ॥ अहो भगवन् !
 मनुष्य का कितन वदारिक शरीर कहे हैं ? अहो गौतम ! ने प्रकार के वदारिक शरीर कहे हैं जिनके नाम
 बदलक और मुक्खलक उत में जा बदलक है व स्यात् संस्थात है स्यात् भस्संस्थात है क्योंकि गर्भज मनुष्य के
 उच्चार मलमूत्रादि वदरइ स्थान में सम्मूच्छिप्त जीवों की उत्पत्ति होती है उस आश्रय अंतस्थात कहे
 हैं वे कदाचित्त होव हैं और कदाचित्त नहीं भी होते हैं क्यों कि उन की भर्तृमुहूत की स्थिति कही है
 और उन का बिरह कास चौपिस मुहूर्त का है इन स स्थात शब्द का प्रयोग कीया है और यी गर्भज
 मनुष्य मदैव संस्थात नहीं रहत हैं इन से वदारिक शरीर क बदलक भी स्यात संस्थात है, संस्थात
 काहा काही मनुष्य है मुच भील गुनतीस स्थानक जिस में आठ २० स्थान को प्रमल पद कहत हैं ऐसे

टक्कोसपदे आसिखेजा असखेजाहिं उस्सपिणिओसपिणीहिं अवहीरति कालओ, खेचओ
 रूप पक्खिचेहि, मणुस्सेहिं सेवोहिं अवहीरतिती से सेटोहिं अवहारो असेख्खाहिं उस्सपिणी
 उस्सपिणीहिं अवहीरति, कालओ खेचओ अगुलपटमधगमूलतइयवगमूलपडुपणा,
 तत्थण जते मुक्खेलगा ते जह। ओरालिया ओहिया मुक्खलगा॥ मणुस्साण भंता केवइया
 तीन जम्म पद का समाहार २४ होते, अर्थात् तथयपत् में २४ भक्त अितने गर्भज मनुष्य, और बार
 जमल पद का समाहार बचीस होने परतु यार्पर गुनतीस ही भक्त है इस से बाया जमल पद पूरा न होने
 टवने उत्कट मनुष्य हैं अध्या वर्ग को मी जमलपद की संख्या करी है तीन जमल अर्थात् छ वर्ग के
 उपर और बीया जमल अर्थात् बार पुगल वर्ग के अदर मनुष्य की संख्या होती है इस में गुनतीस
 भक्त होते हैं सो बताते हैं एक का वर्ग एक ही होने से संख्या आगे नहीं बढ़ सकती है दो का
 वर्म बार, बार को बारगुने करने स बार का वर्ग १६ हुआ अब तीसरा वर्ग १६ को सोसगुने करने से
 २५६ हुये, बीया का २५६ को २५६ गुने करने से ६५५३६ हुये, पांचवा का ६५५३६ को ६५५३६
 से गुना करने से ४२९४९६७२३ हुए छठा वर्ग १८४४६७४०७३७०९६६७३६३६ इस वर्ग को
 पूर्वोक्त पांचव वर्ग की साथ गुन कर ७१२२८४२५१४२६४३३७६०३५६३९६०३३३ इतने जमन्य
 पद में मनुष्य होने और मी प्रकारान्तर करते हैं किती भी बरी राशि को छन्नु वक्त छद्न स

मुक्तेलया ॥ आहारण सरीरा जहा ओहिया ॥ तेया कम्मणा जहा। एएसिचिव ओरा
लिया ॥ ११ ॥ वाणमतराण अहा नेरइयाण, ओरालिया आहारमाय वेठविय
सरीरगात्रि जहा सरइयाण णत्र तासिण सेटीणं विक्खममूई संखज जोयणस्तउवग्ग

१०२४ प्रवेश का सत्र खण्ड बाकी रह वहाँ के एक एक मनुष्य का शरीर हाँसे तों उस श्रेणि का खण्ड
पूरा होने परंतु वह एक शरीर नहीं है क्योंकि कि सर्वोत्कृष्ट एक स्थान गर्भज मनुष्य समूच्छिम मनुष्य
एतन्ही है, अधिक नहीं है मुख्यक शरीर का औधिक उदारिक शरीर जैसे जानना अबो मगवन् !
मनुष्य के वैक्य शरीर कितने को है ? अतो गौतम ! दो को है १ बद्धिक और २ मुख्यक
॥ में जो बद्धिक है वे संस्थाने हैं क्यों की समूच्छिम मनुष्य को वैक्य शरीर नहीं
है उन का एकैक समय में एकैक भपड़ान करे तो संख्यात काल में भपड़ान होवे,
वैक्य शरीर का मुख्यक उदारिक जैसे कहना आहारिक के बद्धिक व मुख्यक शरीर समुच्चय जैसे
जानना व अस कार्पाण ५ बद्धिक मुख्यक मनुष्य के उदारिक शरीर का कहा वेने ही कहना ॥ ११ ॥
वाणव्यंतर को नारकी जैसे कहना उदारिक व आहारिक के बद्धिक धर्मों है परंतु मरक से च्यतर के
शरीर असख्यातगुने अधिक हैं, इस में विषय शीघ्र से विक्षपत्व कहते हैं असख्यात खेणीबाला साव
रानु का जो मतर है उस का असख्यातवा भाग उस श्रेणिका विस्वार संख्याव योजन के सेंकदे का

पल्लभागे पयसरस मुक्कल्लगा जहा आहिया ॥ आगलिया तेया कम्मगा जहा
 पुरसिपंचेव वेठविया ॥ १२ ॥ जोइसियाण एव चेंव, पवर तासिण सेठ्ठाणं विक्ख
 मन्हुइवि छुय्यण्णगुलसयवगा पल्लिभागो पयसरस ॥ १३ ॥ वेमाषियाण पुब्बुडा ?

हर्ष हरे वहाँ एकेक स्वर्ग का क्षीर रत्न यों करते सात राजु का प्रहर पूरा होते, इतने संख्यात योजन
 में सेकड़ों का जा वर्ग उस रूप प्राप्ति भाग अर्ध रूप इस विभाग से एक २ व्यंजक का अपहरन करते
 सपूर्ण प्रहर सात्ती होजाय; इस प्रकार नारदी से स्वर्ग अर्धस्वर्गावतुने हैं और तिर्य्य पंचेन्द्रिय से स्वर्ग
 असंख्यावतुने कमी है क्योंकि पूर्वोक्त तिर्य्य की विच्छिन्न शक्ति असंख्याव मुने हीन मानना मुझे-
 छक का उदाहरक क्षीर जैसे कहना आहारक क्षीर का कल्प असुरकुमार जैसे करना तेमस व
 कार्माण क्षीर का जैसे वैज्येय क्षीर का ज्ञा ऐसे ही कहना ॥ १२ ॥ श्योविपी कः भी ऐसे ही
 कहना, परंतु इतना विक्षय कि असंख्यात यामन की विच्छिन्न शक्ति पूर्वोक्त विस्तार प्रमाने जानना
 स्वर्ग की विच्छिन्न शक्ति में श्योविपी की विच्छिन्न शक्ति संख्यावतुनी याविक है और वहाँ २५६ के
 वर्ग रूप प्रतिभाग अर्थात् सात राजु प्रहर का एकक अर्धमाना यथोक्त २५६ योग्य प्रमान एक
 अर्ध और एक श्योविपी यों अपहरते सात राजु का एक प्रहर पूरा होते अथवा २५६ अनुस के एककेक
 अर्ध में एकक श्योविपी की स्थापना करते पूरा प्रहर सात राजु का पूरा होते, मिथने सात राजु मान

गोयमा ! एव चैव तार्सीण २ सेठीणं त्रिक्खमसुई, अगुल वितीय वग्गमूल, तईय वग्गमूल पटुपण, अहयण अगुल तइय वग्गमूल घणपमाण मेत्ताओ सेठीओ सेस संचेय ॥ इति पण्ययणाए भगवईए सरिरपय वारसमं सम्मच्च ॥ १२ ॥

प्रवरवाले २८६ अगुल के भंड होत हैं उतने ज्यामिषा के वैक्य शरीर धंद्यक हैं अर्थात् अंतर से ज्योतिषी असस्यात गुने अधिक हैं ॥ १२ ॥ अहो मगवन् ! वैमानिक के चरीर कितने प्रकार के करे हैं ! अहो मोक्ष ! ज्योतिषी जैसा वैमानिक का जानना परंतु इतनी विशेषता कि तब से असस्यात ज्योतिषी का जो प्रवर है तब प्रवर के असस्यातव भाग आत इतने हैं मुनपति, अंतर व ज्योतिषी से वैमानिक असस्यात गुने कम हैं इस स विष्कम्म शुचि में विषय करते हैं तब आणि के विष्कम्मक अंगुल का जो दूसरा वर्ग मूल ४ तीसरा वर्ग मूल द्वा तस से इस तरह दूसरे वग मूल को बीसरे एव मूल से गुनेन स ८ हावे, यों यहाँ सद्भाव से असस्यात आणि की भी कस्याता आठ आणि २२५ बिस्तर को शुचि यहाँ ब्रह्मण करना अथवा प्रकारान्तर से तीसरा वर्ग मूल द्विती गुना अर्थात् एक आठ रूप का और एक दूसरा एक बदेलक वैक्य शरीर यों करते विषय शुचि जो अगुल प्रमाण ज्ञेय के जितने धन होवे इतन मदेमक का वैक्य शरीर वैमानिक के फरे हैं यों यहाँ सब विधि जानना अल्प सब शरीर मामि पूर्वोक्त ज्ञेय जानना यह बारवा शरीर पद संपात इवा

॥ त्रयोदश परिणाम पदम् ॥

कतिविष्टेण भते ! परिणामे पण्यते ? गोयमा ! दुर्विहे परिणामे पण्यते तजहा
 जीव परिणामेण, अजीव परिणामेय ॥ १ ॥ जीव परिणामेण भसे ! कतिविहे
 पण्यते ? गोयमा ! दसविहे पण्यते तजहा १ गति परिणामे, २ इन्द्रिय परिणामे, ३
 कसाय परिणामे, ४ लेस्तापरिणामे, जोग परिणामे, ५ उद्योग परिणामे, ६ धर्म
 परिणामे, ७ वंशज परिणामे, ८ वरिष्ठ परिणामे, ९ वेदपरिणामे ॥ २ ॥ गति-

अब देवदा परिणाम पद कहते हैं. सो गत काल में परिणाम, वर्तमान काल में परिणामते हैं और
 भव्याधिक काल में परिणामेन उस परिणाम कहते हैं. अहो मगबन् ! परिणाम कितने प्रकार के करते हैं ?
 अहो बीतय ! परिणाम दो प्रकार के करते हैं. भित के नाम—१ जीव परिणाम और २ अजीव परि-
 णाम १ ॥ अहो मगबन् ! जीव परिणाम के कितने भेद कर हैं ? अहो मोदय ! जीव परिणाम के
 दस भेद करते हैं उन क नाम—१ गति परिणाम, २ इन्द्रिय परिणाम, ३ कसाय परिणाम, ४ लेस्ता परि-
 णाम, ५ जोग परिणाम, ६ उद्योग परिणाम, ७ ज्ञान परिणाम, ८ वर्धन परिणाम, ९ वारिष्ठ परिणाम और
 १० वद परिणाम ॥ २ ॥ अहो मगबन् ! गति परिणाम के कितने भेद करते हैं ? अहो मोदय ! गति

परिणामभेद भते ! कतिविधे पणत्ते ? गोयमा ! चटाविहे पणत्ते—तंजह्य नरइय-
 राति परिणाम तिरिक्ख जेणिय गति परिणामे, मणुयगति परिणामे, देवगति परि-
 णामे ॥ ३ ॥ इदिय परिणामेण भते ! कतिविहे पणत्ते ? गोयमा ! पचविहे
 पणत्ते तजहा सोत्तिदिय परिणाम चक्खिदिय परिणामे, बाणदिय परिणामे जिहिम-
 दिय परिणाम, फासिदिय परिणाम, ॥ ४ ॥ कसाम पारणामण, भते ! कतिविहे
 पणत्ते ? गोयमा ! चटविहे पणत्ते तजहा कोह कसाम
 परिणाम जाव लोम कसाम परिणामे ॥ ५ ॥ लेरसा परिणामण भते ! कतिविहे

परिणाम के चार भेद कहें ? उन के नाम—१ नरक यानि परिणाम २ तिर्यक गति परिणाम ३ मनुज्य
 गति परिणाम और ४ देव गति परिणाम ॥ ३ ॥ अहा यवचन् ! इदिय परिणाम के कियेने भेद कहे हैं ?
 अहा गौतम ! इदिय परिणाम के पंच भेद कहे हैं—१ आञ्छिन्द्रिय परिणाम २ चक्षुइन्द्रिय परिणाम
 ३ प्राणइन्द्रिय परिणाम ४ श्रिगहोन्द्रिय परिणाम और ५ स्पृशेन्द्रिय परिणाम ॥ ४ ॥ अहा यवचन् ! कयाय
 परिणाम के कियेने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! कयाय परिणाम के चार भेद कहे हैं—१ क्रोध कयाय
 परिणाम, २ मान कयाय परिणाम ३ माया कयाय परिणाम और ४ लज्ज कयाय परिणाम ॥ ५ ॥ अहो

पण्णसे ? गायमा ! छवित्रिहे पण्णत्त तज्झा किण्हलेत्ता परिणामे, नात्थेत्ता परिणामे काटलत्ता परिणामे, तटलत्ता परिणामे, पम्हलत्ता परिणाम, सुक्कलत्ता परिणाम ॥ ६ ॥ जोग परिणामेण भते ! कतिविहे पण्णसे ? गोयमा ! तिन्निहे पण्णत्त तज्झा मणजोग परिणाम, मइजोग परिणामे, कायजोग परिणाम, ॥ ७ ॥ उअग परिणामण भते ! कतिविहे पण्णत्त ? गोयमा ! दुविह पण्णत्ते तज्झा सागाराअग परिणामे, अण्णाराअग परिणामय ॥ ८ ॥ णाण पारणामेण भते ! कतिविह पण्णत्त ? गोयमा ! पचविहे पण्णत्त तज्झा आभिण्णोहिण्णण परिणामे

भगवन् ! सद्य परिणाम के कितन भेद कह है ! अहो गौतम ! अद्या परिणाम के छ भेद करे हैं भिन के नाम—१ कृष्ण भेदया परिणाम, २ नील सद्य परिणाम, ३ कापुल सद्य परिणाम, ४ तज्जो सद्य परिणाम, ५ पच्च सद्य परिणाम और ६ सुल्ल भेदया परिणाम ॥ ६ ॥ अद्या भगवन् ! जोग परिणाम के कितन भेद कह है ! अहो गौतम ! आग परिणाम क तीन भेद कह है—१ पन योग परिणाम २ नचन योग परिणाम और ३ काया योग परिणाम ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! उदयग परिणाम के कितन भेद कह है ! अहो गौतम ! उदयग परिणाम के दो भेद कह है—साकरोपयाग परिणाम और अनाका रापयाग परिणाम ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! ध्यान परिणाम के कितन भेद कह है ! अहो गौतम ! ध्यान परिणाम

सुयुगाण परिणाम ओहिणाण परिणामे, मणपज्जवणाण परिणामे, केवल्लणाण परिणामे ॥
अण्णाण परिणामेण मते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! तिप्पिहं पण्णत्ते तज्जहा
मइअण्णाण परिणामे सुयु अण्णाण परिणाम, विमग्गणाण परिणामे ॥ ९ ॥ दसण
परिणामेण मते ! कतिविहे पण्णत्ते ? गायमा ! तिप्पिहं पण्णत्ते तज्जहा सम्मदसण
परिणामे मिच्छा दमण परिणामे, सम्मामिच्छादमण परिणामे ॥ १० ॥ चरित्त
परिणामेण मते कतिविहं पण्णत्ते ? गोयमा ! पच्चविहे पण्णत्ते तज्जहा सामाद्वय
चारित्त परिणामे, छदोवट्ठु णिय चारत्त परिणामे, परिहारविःखट्ठि चरित्त परिणामे,

के पाँच भेद करे हैं—१ आधिनिषेधिक ज्ञान परिणाम २ आ ज्ञान परिणाम ३ अर्वाधि ज्ञान परिणाम
४ मन रयव ज्ञान परिणाम और ५ केवल ज्ञान परिणाम अहो भगवन् ! अज्ञान परिणाम के कितने
भेद करे हों ? अहो गौतम ! अज्ञान परिणाम के तीन भेद करे हैं—१ मोक्ष अज्ञान परिणाम २ श्रुत
अज्ञान परिणाम आर विभंग ज्ञान परिणाम ॥ ९ ॥ अहो भगवन् ! दर्शन परिणाम क कितने भेद करे हैं ?
अहो गौतम ! दशन परिणाम के तीन भेद करे हैं—१ सम्पक्क दर्शन परिणाम २ मिथ्या दर्शन परिणाम
और ३ मीश्र दशन परिणाम ॥ १० ॥ अहो भगवन् ! चारित्र परिणाम के कितने भेद ? अहो गौतम !
चारित्र परिणाम के पाँच भेद करे हैं—१ सामागिक चारित्र २ छदोपस्थापनीय चारित्र ३ परिहार विमुद्ध

सुहुम सप्ताइय चरित्त परिणामे, अहम्स्वाय चरित्त परिणामे ॥ ११ ॥ वेदपरिणामे
मेण भंते ! कतिचिहे पण्णभे ? गोयमा ! तिचिहे पण्णत्ते तज्झा-इत्थीवेद परिणामे
पुरिसवद परिणामे, णपुसगवेद परिणामे ॥ १२ ॥ णेरइया गति परिणामेण निरय गतिया,
इदिय परिणामेण पंचिदिया, कसाय परिणामेण-कोह कसार्इवि जाव लाम कसार्इवि; लेरसा
परिणामेण कण्ह लेसावि तल्लेसावि काठलेसावि ॥ जोगपरिणामेण-मणजोग परिणामावि,
वइजाग परिणामावि कायजोग परिणामेवि, । उवमंगपरिणामेण सागारेवउत्तावि
अप्पारागेवउत्तावि । णणपरिणामेण अम्मिणवहियण्णीयि, सुयण्णीयि, आहिणा-

आरिष, सूक्ष्म रमय चरित्त और ५ यणस्स्यान चारिष ॥ ११ ॥ यहा यगबन्त ! वेद परिणाम के
कितने षट् कहें ? अहो गौतम ! वेद परिणाम के तीन षट् कहें—१ स्त्री वेद परिणाम २ पुरुषवेद
परिणाम और ३ नपुंसक वेद परिणाम ॥ १२ ॥ षट् चौथीम देवक पर परिणामों के षेठ उगारते हैं
नारकी क ओषों—गति परिणाम से नरक गतिवास इन्द्रिय परिणाम से पांचों इन्द्रियवास, कषाय
परिणाम से क्काय कषाय यावत् छोम कषाय यों चारों कषायवास, लइया परिणाम से कृष्ण
सदयावाले, नील सेइयावाले ५ कापात सेइयावास, योग परिणाम से मन योग परिणाम, बचन योग
परिणाम ५ काया योग परिणाम यों धीनों योगवास, उपयोग परिणाम से साकार बहुत
अनाकार बहुत दोनों उपयोगवास, ज्ञान परिणाम से आर्यमिनिबोधक ज्ञान, शून्य

जीवि १ अण्णाण परिणामेण भइअण्णाणिवि, सुय अण्णाणीवि, विभगणाणीवि,
देसण परिणामेण सम्मदिट्ठीवि मिच्छदिट्ठीवि सम्मामिच्छा दिट्ठीवि । चरित्त परि
णामेण नो चरिष्ठा नो चरिष्ठाचरित्त, अचरित्ता ॥ वेवपरिणामेण नो इत्थीवेवगा नो
पुरिस वेदगा, णपुसग वेदगा ॥ १३ ॥ असुरकुमारा एवच्च, जवरं वज्रगतिया,
कण्ठहेस्सावि जाव तेउलेसावि । वरपरिणामेण इत्थिवेदगावि, पुरिस वेदगावि ना
अपुसगवेदगा ॥ सेस तंचेव ॥ एव जाव धणिक्कुमारा ॥ १४ ॥ पुढवि काइया
गति परिणामेण तितिय गतिया, इत्थिय परिणामेण पुगिदिया सेसं जहा पारइया ॥

श्रुत ज्ञान व अर्थाणि ज्ञानबाल, और अज्ञान स पाति अज्ञान, अत अज्ञान व विभगजानपरिणाम बाल, इदंन परि-
णाम म सम्यक् दष्टोमो मिथ्यादृष्टि मी, मिथ्या ए मी, यो वीनो दर्शनबाल, वारिपरिणाम से पांचों
चारिण रहित अचारिणी है, और वद परिणाम से पात्र एक नपुंसक वेदबाले है
॥ १३ ॥ असुर कुमार का नारकी जैसे ही कहना पारंतु विषयता यह है कि इस में गति
स हत गतिबाल, सेवया से कृष्ण लक्ष्मी यावत् सेवा सेवो, और वेद परिणाम से ली वेद व
पुरुष ब्रह्म परंतु नपुंसक वेद नहीं है जिस असुर कुमार का कहा जैसे ही स्थिति कुमार पथित वदो
आति के प्रवचनपति दत्तो का ज्ञानना ॥ १४ ॥ पृथ्या काया गति परिणाम से विर्यव गति, इन्द्रिय परि
णाम से एकदिव एक सौमन्त्रिय, सेवया परिणाम स कृष्ण लक्ष्मी यावत् वज्रो सधी योग परिणाम स

ज्वर लेसा परिणामेण तठलसति, जोग परिणामेण कायजोगी जाणपरिणामो
 जसिय, अण्णाण परिणामेण भतिअण्णाणी सुयअण्णाणी, दंसण परिणामेण मिच्छा
 सिद्धी, सेस तवेव ॥ एव आठ वणफइ काइयाति ॥ तेठ चाठति एव चेव ज्वर
 लेसापरिणामेण जहा जेरइयाणं ॥ १५ ॥ बइसियां—गातेपरिणामेण तिरियगतिया,
 इदियपरिणामेण बइसिया, सेस जहा जेरइयाण, ज्वर जाग परिणामेण—वइजोगी काय
 जागी, पाण परिणामेण अमोनेवाहिय जाणीति सुयणाणीति । अण्णाण परिणामेण
 मइअण्णाणि वि सुय अण्णाणि, णां विमगणाणा ॥ दंसण परिणामेण—सम्महिद्धी,

काया चागी, ज्ञान नहीं है अज्ञान परिणाम स मति अज्ञान व क्षुत अज्ञान परिणाम, और दर्शन परि
 णाम से एक विध्याहृष्टि सेव सब नारकी जैसे जानना अण्कायाक व वनस्पति कायाका पुष्पी काया जेव
 कहना. ऐसे ही वर, वायु का जानना फलतु सेवया परिणाम से नारकी जैसे तीन सेवयाको कहना ॥१५॥
 समुद्रिय—यति परिणाम मे तिवेव गतिबाले, इन्द्रिय परिणाम स वेदन्द्रिय, योग परिणाम मे पचय योकी व
 काया योगी, ज्ञान परिणाम से आग्निबोधिक ज्ञानी व क्षुत ज्ञानी, अज्ञान परिणाम स मति अज्ञानी व
 क्षुत अज्ञानी, दर्शन परिणाम मे समग्रहृष्टि और विध्याहृष्टि, जेव सब नारकी जेमे कहना जेसे वेदन्द्रिय का

मिच्छादिद्विषयि, जो सम्प्राप्तिच्छादिद्विषयि, सेस तत्त्व ॥ एव जाय घटारिदिया
 नथर इदिय परिबुद्धी कायन्वा ॥ १५ ॥ पंचिदिय तिरिक्सजोबिया गति परिणामेण
 तिरिय गतिया, सेस जहा जेरइया, जयर लेस्सा परिणामेण जाय सुक्कलेस्सावि, चरिस्स
 परिणामेण जो चरित्ता अचरित्तावि चरिस्साचरित्तावि ॥ वेदपरिणामेण इत्थीवेदगावि,
 पुरिस वेदगावि, जपुंसग वेदगावि ॥ १६ ॥ मणुस्सा गतिपरिणामेण मणुयगतिया,
 इदिय परिणामेण पंचिदिया, अर्णदियावि, कसाय परिणामेण कोह कसाईवि जाय
 अकसाइवि, लेरसा परिणामेण कण्हलेरसावि, जाय अलेस्सावि, जोग परिणामेण

कहा केने ही वेइन्द्रिय व चोरोद्वेय का कहना परंतु वेइन्द्रिय के तीन इन्द्रिय व चतुरोद्वेय में चार इन्द्रिय
 जानना ॥ १६ ॥ तिरिय व चोरोद्वेय गति परिणाम से तिरिय गतिवाले, चोरोद्वेय सब नरक जैसे कहना
 परंतु सइया परिणाम में छ ही सइयावाल, चारिअ परिणाम से अचारिअ और चारित्राधारिअ, और
 वेद परिणाम स छी वदी, पुरुष बढ़ा और नपुंसक वदी जानना ॥ १७ ॥ मनुष्य-गति परिणाम स मनुष्य
 गावेवाले, इन्द्रिय परिणाम स पांचो इन्द्रियवाले व अनोद्वेयकी, कपाय परिणाम से चारो कपायी व अकपायी,
 सइया परिणाम स छी सेइयावाले सया अलअरी भी, योग परिणाम से तीनो योगी व अयोगी, उपयोग

ममजागीति जाव अन्तोर्गीति, उवओग परिणामेणं जहा जेरइया, जाणवरिणामेण
 आभिणिबोहिय जाणीति सुयग्राणीति जात्र केवलपाणीति, अण्णाण परिणामेणं
 तिण्णिति अण्णाणाः दसण परिणामण तिण्णिति दसणा, चरित परिणामण चरित्ताति
 अवचरित्ताति, चरिता चरित्ताति । वेद परिणामेण इत्थीत्रदगाति, पुरिस वेदगाति,
 नपुंसगवेदगाति अवेदगाति ॥ १८ ॥ बाणमतारा गतिपरिणामेण वेदगतिया, जहा
 असुरकुमारा ॥ एव जोइसियेति जवर लेस्सा परिणामेण तंठलेस्सा ॥ वेमाणियाति
 एव वव गवरं लेस्सा परिणामेण तंठलेस्साति पग्द लेस्साति, मुक्कलेस्साति ॥ तेचं
 जीव परिणामे ॥ १९ ॥ अजीव परिणामण मत्ता कसिर्विहं पण्णं १ मोंयमां ॥

परिणाम से हीनो ज्ययामद्यामे, इतन परिणाम से पांचा ज्ञानवाले, ज्ञान परिणाम से हीनो ज्ञानवाले,
 इतन परिणाम से हीनो ईर्ष्यावाले, चारित्र 'परिणाम' स-बंधो चारित्रवाले, बंधारिणी मी और चारि-
 त्वागिणी मी है-बद परिणाम से हीनो वेदवाले हैं और अवेदी मी हैं ॥ १८ ॥ बाणम्बंतर का असुर
 कुत्तर भेग कहना एत ही ज्वातिपी का भानना परतु सदा परिणाम से हीनो सेव्यावाले, वैकानिक
 का मी ऐसे ही कहना परंतु लब्धा परिणाम से तेजो, पच व मुक्त सेव्यावाले भानना वर बरिद परि
 णाम हुआ ॥ १९ ॥ अजो मंगवन् ! अजीव परिणाम के कियेमें येद फरे है ? अदो मोक्षव- ! अजीव

वसतिहि पण्णत्ते तज्जहा १ बंधपरिणामे, २ गंधपरिणामे, ३ सठाण परिणामे, ४ भद्रपरिणामे, ५ वण्णपरिणामे, ६ गेधपरिणामे, ७ रसपरिणामे, ८ कास परिणामे ९ अमुरुल्लहु परिणामे, १० सद्धपरिणामे ॥ २० ॥ यंधपरिणामेण भत्ते ! कतिविहि पण्णत्ते ? गोयमा ! दुत्तिहे पण्णत्त तज्जहा भिद्धवधण परिणामेय, लुक्खवधण परिणामेय, ॥समाभिद्धयाए बंधो ण होइ, समलुक्खयाएवि ण होइ, वंमायविद्ध लुक्ख च्चणेण बंधोस्सघाण । भिद्धत्तसणिद्धेण दुयाहिएण, लुक्खत्तस लुक्खेण दुयाहिएण,

परिणाम के दृष्ट भेद कह हैं—१ बंध परिणाम २ गति परिणाम ३ सेस्वान परिणाम ४ भेद परिणाम ५ बर्ण परिणाम ६ गंध परिणाम ७ रस परिणाम ८ स्पर्श परिणाम ९ अशुक्लपु परिणाम और १० द्रव्य परिणाम ॥ २४ ॥ अहो भगवन् ! बंध परिणाम के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! दा भेद कहे हैं—१ स्मिग्ध बंध और २ रुक्क बंध इन में किस तरह स्मिग्ध बंध हाता है और किस तरह रुक्क बंध हाता है ? सास्त्रे स्मिग्ध पुद्गल मोल जानते बंध नहीं हाता है जैसे पुद्गल तब इनका बंध नहीं होर, वैसे ही गरीले २ रुक्क पुद्गलों का भी बंध होय नहीं जैसे रास्त्राव पूरे, वैसे द्रिस्तुन स्मिग्ध से स्मिग्ध का बंध रहिये नहीं, वैसे ही द्रिस्तुन रुक्क से रुक्क का बंध होय नहीं परंतु स्मिग्ध व रुक्क दोनों का ६५

गिहस्तस रुक्मिणी उच्यते, जहस वज्रोत्तिसर्मा समाधा, ॥ २ ॥ गतिपरिणामेण ॥ नने !
कतिविधे पणचे ? गोयमा ! बुविह पणचे तजहा फुसमाण गति परिणामय
अफुसमाण गति परिणामेय ॥ अहम् । वीहगइ परिणामेय रहस्सगइ परिणामय ॥ सठाण
परिणामेण म्हे ! कतिविह पणचे ? गोयमा ! पचविह पणचे तजहा परिमडल सठाण
परिणामेव, जाव आयत सठाण परिणामय ॥ भेवपरिणामेण म्हे ! कतिविह पणचे ?
गोयमा ! पचविह पणचे तजहा खंहामेव परिणामे जाव उक्कारिया भेव परिणामे ॥ वण

होने से बच होता है भैया बिपय माथा पर । तु होने से बच होता है अथाह बरु वरमाणु द्विगुन क्षिप्र
हाथे और दूधरा चीन गुन क्षिप्र हाथे तब बच होत, वैसे ही कस में भी बिपय माथा हाथे सो बच जाता है
क्षिप्र व कस का भी बयम्य गुनबाज का बच नहीं जाता है परंतु एक द्विगुन क्षिप्र और बिगुन कस
तथा चीन गुन क्षिप्र एक दो गुन कस वैसे ही एक चीन गुन दूधरा द्विगुन यो समबिपय साथ भी बच
पड़े बर बच परिणाम कहा भयो मगबन् ! गति परिणाम के कितन मद् कहे हैं ? अहा नै लय !
गति परिणाम क दो भेद कहे हैं—स्पर्श गति परिणाम जैसे नाथ पानी को स्पर्श कर पकती है और
२ अस्पर्श गति परिणाम जैसे धूँ की पकती का हाथ कीये बिना आकाश में रह भयो मगबन् ! संस्थान क

परिणामेण भते ! कतिविह पणसे ? गायमा ! पचविह पणस, तजहा—कालवण्ण
 परिणामे जाय सुक्खिद्वयण परिणाम ॥ गघ परिणामेण भते ! कतिविह पणसे ?
 गोयमा ! दुविह पणसे तजहा—सुग्मिगघ परिणामे, दुग्मिगघ परिणामेय ॥
 रसपरिणामेण भते ! कतिविह पणसे ? गायमा ! पचविह पणसे तजहा तिचरस
 परिणामे, जात्र महुरसपरिणाम ॥ फासपरिणामेण भते ! कविह पणसे ?
 गोयमा ! अट्टविह पणसे तजहा कस्सवड फास परिणाम जात्र लुक्ख फास परिणामे

कितने भद कह है ! अहो गौतम ! सस्यान के पाँच भद कहे हैं—१ परिमल्ल-संस्थान, २ वृष संस्थान
 ३ ज्येष्ठ संस्थान, ४ चौरस संस्थान और ५ आयन संस्थान अहो भगवन् ! भेद परिणाम के कितने ! भद
 कह हैं ? अहो गौतम ! भेद परिणाम के पाँच भेद कहे हैं—१ खण्डा भद, २ पत्तर भेद ३ सुनिक्का भेद
 ४ अट्टाडित भेद और ५ उट्कारिका भेद इस का स्वस्स बारहवें पद में कहा है अहो भगवन् !
 वण परिणाम के कितने भेद कह हैं ? अहो गौतम ! वण परिणाम के पाँच भेद कह हैं कण्ण वर्ण परिणाम
 याचत्त शुक्ल वर्ण परिणम अहो भगवन् ! गंध परिणाम के कितने भद कहे हैं ? अहो गौतम ! गंध परिणाम
 के दो भद कहे हैं १ सुरभिगंध परिणाम व दुर्गन्धिगंध परिणाम अहो भगवन् ! रस परिणाम के कितने भद
 कह हैं ? अहो गौतम ! रस भेद कह हैं—तिक्त रस परिणाम याचत्त मधुर रस परिणाम अहो भगवन् ! स्वाद

अगुरु लघुपरिणामेण मते । कतिचिद् पण्यत् ? गायमा ! एगागारे पण्यत् ॥ सह-
 पग्गिणामेण भत । कतिचिद् पण्यत् ? गोयमा ! दुविह पण्यत् तजहा सुग्गिमह
 परिणामेय दुग्गिमसह परिणामय ॥ सत्त अज्जीव परिणामे ॥ इति पण्यवणाए
 भगवद्दुए परिणामाय तरसम सम्मत्त ॥ १३ ॥

परिणाम क हिंसे भद कहें ! भद्रा मौख्य ! स्वर्ण परिणाम क आठ भद कहें कर्कश स्वर्ण
 परिणाम बावत् स्वर्ण परिणाम को यमवन् ! अगुरु लघु परिणाम के कितने भद कहें !
 प्रहा गौतम ! एक ही भेद क्या है मर्धान् उदारिकादि सरीर के पुत्रल भाषा के पुत्रल तथा अमूर्तिक
 द्रव्य भाकाशादि अगुरुलघु परिणामि है अहा भगवन् ! शब्द परिणाम क कितने भद कहें ! अहो
 गतम ! अन्तर परिणाम के दो भेद कहें तुम शब्द परिणाम और अनुम शब्द परिणाम यों अजीव
 परिणाम क भद संपुन हुए यह वक्ताव्या पद का तरहवा परिणाम पद संपूर्ण हुए ॥ १३ ॥

॥ चतुर्दश कपाय पदम् ॥

कतिण भत ! कसाया पणत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पणत्ता तजहा कोह
कसाय माण कसाय, माया कसाय, लेम कसाय ॥ १ ॥ नेरइयाण भते ! कह
कसाया पणत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाया पणत्ता तजहा कोह कसाय जाव
लेम कसाय ॥ एव जाव वेमाणियाण ॥ कतिपतिट्ठिएण भते ! कोहे पणत्ते ?
गोयमा ! चउपइट्ठिए कोहे पणत्ते तजहा मायपतिट्ठिए, परपतिट्ठिए, तबुभय-
पतिट्ठिए, अयइट्ठिए ॥ एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण वडओ ॥ एवं मायेण वडओ ॥

अव चउदइवा कपाय पद करते हैं अहो भगवन् ! कपायों कितनी कही है ! अहो गौतम ! कपायों
चार कही है १ कपाय कपाय, २ मान कपाय, ३ माया कपाय, और ४ लाभ कपाय ॥ १ ॥ अहो
भगवन् ! नारकी को कितनी कपायों कही है ! अहा गौतम ! नारकी को चार कपायों कही है-कपो
कपाय यावन् लोम कपाय ऐस ही दैमानिक पर्यंत जानना अहा भगवन् ! कपो कितन स्यान प्रतिष्ठित
है ! अहो गौतम ! छाप चार स्यान प्रतिष्ठित है १ आत्म प्रतिष्ठित, २ पर प्रतिष्ठित, ३ तमय (दानों) में प्रतिष्ठित और
४ अग्र प्रतिष्ठित एस ही नारकी यावन् दैमानिक पर्यंत छाप चारों स्यानों में प्रतिष्ठित जानना जै प छोय का कहा है ॥

एव मायाय दृढां ॥ एव लाभेण दृढां ॥ २ ॥ कतिविहण भते! ठाणेहिं कोहुप्यत्ती
भवति ? गोयमा ! चउहिं ठाणेहिं कोहुप्यत्ती भवति तजहा खेच पबुध, धर्य पबुध
सरीर पबुध उरहिं पबुध ॥ एव गेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥ एव माणेणवि ॥
एव मायाएथि ॥ एव लाभेणवि॥ एव एतन्नि चतारि दृढगा ॥ ३ ॥ कतिविहण भत ! कोह
पणच ? गोयमा ! चउत्विह कोह पणच तजहा अणताणु यधीकोहिं, अय्यक्खाणवरण
कोह, पय्यक्खाणवरणे कोह, सजलणे कोह ॥ एव गेरइयाण जाव वेमाणियाण ॥

मान, माया व लाभ का कहना ॥ २ ॥ भरो भगवन् ! कितने प्यानु से क्रोध की उत्पत्ति होती है ! अशो गौतम !
चार स्थान से क्रोध की उत्पत्ति होती है— १ तत्र प्रत्यक्ष अर्थान् सुखो मयि सन्नादि से, २ वस्तु प्रत्य
क्ष भयात् इही मयि भरादिक के भयाग से, ३ शरीर प्रत्यक्ष अर्थान् शरीर के प्रयोग से और ४
उपधि प्रत्यक्ष भ्रष्टोपकरण १५ भूषणदिक के प्रयोग से, यों चारों प्रकार के क्रोध की उत्पत्ति
नारकी आदि चौबीस ही दृढक में पाती है ऐसे ही चारों प्रकार से मान की उत्पत्ति चौबीस ही दृढक
में होती है ऐसे ही चारों प्रकार की वाया की उत्पत्ति चौबीस ही दृढक में होती है, और ऐसे ही चारों
प्रकार के लोप की उत्पत्ति चौबीस ही दृढक में होती है ॥ ३ ॥ भरो भगवन् ! क्रोध के कितने भद
करे हैं ! भरो गौतम ! क्रोध के चार भेद कह दे १ अनतानुबन्धी, २ अप्रत्यास्यानी, ३ प्रत्यास्यानी

एव माण ॥ मायाए ॥ लाभणवि ॥ वचारि बढगा ॥ ४ ॥ कतिविहेण मते !
कोहे पणसे ? गोयमा ! बढाविहे पणस तजहा आभोगिअसिए, अणाभांग
निबसिए, उवसते अणुवसते एव जेरदयाण जाव वमाणियाण ॥ एव माणेणवि मायापवि
लोभणवि वचारि बढगा ॥ ५ ॥ जीवण मते ! कतिहि ठाणहि अटुकम्म पगडीओ
विर्गिसु ? गोयमा ! बढहिट्ठुण्हेहि अटुकम्मपगडीआ विर्गिसु तजहा काहण,
माण मायाए लाभण ॥ एव जेरदयाण जाव वमाणियाण ॥ जीवण मते !

और ५ सदस एने ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत चौबिसही दंडक में चारों प्रकार का क्रोध जानना
मेरे क्रोध का कटा वैस ही मान, माया व काम का जानना ॥ ४ ॥ भइ भगवन् ! क्रोध कितने प्रकार
का कहा ! अ । ऐसम ! क्रोध चार प्रकार का कहा ? आभाग प्रत्ययिक, २ अनाभाग प्रत्ययिक
३ उपगत प्रत्ययिक और ४ अनुगत प्रत्ययिक ऐसे ही नारकी यावत् वैमानिक पर्यंत जानना ऐसे ही
मान माया, व स्वेद में जानना ऐसे ही सोसद प्रकार का क्रोध चौबीस दंडक और एक
अनुगत जीव में पाता है; सब यीस ४०० भागें फाय के होते ऐसे ही चार सा मान क,
चारसा माया के ४ चारसो काम के होते यों सब मीलकर चारों कपायों के १४०० भाग हुए ५५५५ भइ
भगवन् ! मीकने कितने प्रकार में भावों कर्मकी प्रकृतियों को भीवी है (सधय) कीया ? भइ मीतम !

कतिहि ठाणेहि अटुकम्मपगढीओ विणति ? गोयसा ! चउहिं ठाणेहि उवविणति तजहा कोहुण, माणेणं मायाए लोभेण॥ एव नेरइयाण जाव वेमाणियण॥ ओत्राण मत ! कतिहिं ठाणेहि अउकम्मपगढीओ विणिस्सति ? गोयसा ! चउहिं ठाणेहि अटुकम्मपगढीओ विभिरमाति, तजहा—कोहुण माणेण मायाए लोभेण ॥ एव नेरइयाण जाव वसणियाथं ॥ १ ॥ जीउण भंते ! कतिहिं ठाणेहि अटुकम्मपगढीओ उव विणिसु ? गोयसा ! चउहिं ठाणेहि अटुकम्मपगढीओ उवविणिस्सति, तजहा ।

क्रोध, मान माया, व लाभ यों चार प्रकार से जीवने आठों कर्म प्रकृतियों का संवय करीया महा भगवान् ! और कितने प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का भवय करना है ? अहो भोक्तव्य ! छद्म, दान पाया व लोभ यों चार प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का संवय करना ? महा भौनम ! करना है अहा उगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का ववय करना यह सीतों का ल क्रोध, मान, माया व लाभ यों चारों प्रकार से आठों कर्म प्रकृतियों का ववय करना यह सीतों का ल आश्रित १२ काय कर्म भगव करन क समुत्तय जीव व चौबीस ईदक में पाते हैं यो १२५२६२३०० बोल हुए ॥ १ ॥ बदो भगवन् ! जीवने कितने स्थान स आठों कर्म प्रकृतियों को उव चीने हैं ? अर्थात् एवविण कीये हैं ? महा भौनम ! चार कारन से विन के नाश—क्रोध, मान, माया व लाभ, यों

कोहेण, माणेण, मायाण लोमण ॥ एव जेरइयाण जाव जेमाणियाण ॥ जीयाण भते ! कतिहिं ठाणेहिं अठकम्मप्यगडोओ उवचिण्णिं ? गोयमा ! चउहिं ठाणहिं उवचिण्णिं तंजहा-काहण जाव लोमण ॥ एवं जेरइया जाव जेमाणिया ॥ एव उवचिण्णिं सति ॥ ७ ॥ जीयाण भन ! कइठाणेहिं अठकम्मप्यगडिओ वंधिसु ? गायमा ! चउहिं ठाणहिं अठकम्मप्यगडोआ वाधसु, तजहा-काहण जाव लोमण ॥ एवं जेरइयाण जाव जेमाणियाण ॥ वधिसु ॥ वधिसति ॥ उदिरसु ॥ उदीरति ॥

नरकादि चौबीस दहक क जीवोंने कर्म पुत्रत्व उपजीने हैं अहा भगवन् ! जीव कितने प्रकार से आठों ही कर्म प्रकृतियों उपचिन्ता है ? अहा गौतम ! क्रोध, मान, माया व सोम ऐसे चार कारन से उपचिन्ता है यो नरकादि चारों के दहक के चौबीस चारों प्रकार से आठों कर्मों उपचिन्ता हैं अहा भगवन् ! जीव कितने कारन से आठों कर्मों उपचिन्ता ? अहा गौतम ! चार कारन से उपचिन्ता ? क्रोध, २ मान, ३ माया और ४ सोम येन ही नरकादि चौबीस ही दहक क चौबीसों कर्मों उपचिन्ता हैं यहाँ पर भी उक्त प्रकार से ३०० सोल हूय ॥ ७ ॥ भयो भगवन् ! जीवने किन्तने कारन से आठ कर्म प्रकृतियों का रूप कीया ? अरे गौतम ! मान, माया व सोम एम चार कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का रूप कीया भयो भगवन् ! जीव कितन कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का रूप करता है ? भयो गौतम ! उक्त आठों कारन से भयो भगवन् ! जीव किन्तने कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का रूप करता ? भयो गौतम ! उक्त चारों कारन से आठों कर्म प्रकृतियों का रूप करता इन सब पर भी ३००

उद्विस्सति ॥ वेदेसु ॥ वेदंति ॥ वेदस्सति ॥ निज्वरेसु ॥ निज्वरेति ॥ निज्वरेस्सति ॥
 एव एते जीवादिया वेमाणिय पज्जवसाणा अट्टारस दंढगा, जात्र वेमाणिया निज्वरेसु,
 निज्वरति ॥ निज्वरिस्सति ॥ ८ ॥ आयपइट्ठिया, खत्त भुद्ध अर्णताणुबधि, आभोगे, ॥
 चिण उवधिण, यध, उदीरण, वेद, तहनिज्वरा चेव ॥ १ ॥ इति पण्ययणाए
 भगवतीए कसाय पद सम्मच ॥ १४ ॥

गोल ज्ञानना एवे ही ३०० बाल उदीरणा के ३०० गोल वेदने क, ३०० बाल निर्जरन के सब मील
 कर १८०० बाल जानना यह १८०० एक बीव आश्रिय और अठारा सो बनेक मीव आश्रिय, मील
 का ३६०० हवे, उस में १६०० प्रथम क मीलान से २०० धनि चारों कपाय के होते हैं ॥ ८ ॥ अब
 समुच्चय कहत हैं आत्मविष्ठादि चार गोल क चौबीस दहक और समुच्चय बीव मीलकर वहीसगुने
 करने स १०० हुवे, वेस ही सत्र प्रत्ययादिक क १००, अनवानुषादि के १००, और धामोगादिक क
 मी १०० गों ४०० हुए विनन क एक बीव आश्रिय तीनों काल, बहुत बीव आश्रिय तीनों काल यों
 ३ हुए य चौबीस दहक और समुच्चय बीव यों २५ स्थान करते १५० हुए एसे ही त्वक्विन क
 १५० बंगने के १५०, उदीरने के १५०, वेदने क १५०, और निर्जरने क १५० सब मीलकर २००
 हुए और प्रथम के ४०० मीलकर १३०० क्राय के हुए, एते ही १३०० गान क, १३०० धाया के
 और १३०० श्रोम के हुए गब मीलकर ५२०० हुए यह पञ्चगणा सत्र का चौदहवा कपाय पद भपूर्व

✽ पंचदश इंद्रिय पदम् ✽

सठाण, बाहल्ले पौहत, कसिपदमओगाढे ॥ अप्याधहु, पुढ, पविट्टनि, विसय, परिमाण
अजगार आहारा ॥ १ ॥ अदाय, असीयमणी पुढ, पाणे, तेस, फाणिध वसाय ॥
कयल यूणा, धिगस, दंनि, बहि, लोण, अलांगय ॥ २ ॥ १ ॥ कतिण भते ।
इदिया पणपत्ता ? गायमा ! पंधिविया पणसा तजहा—सोतिविण, कविस्विदिण,
वार्णिदिण, जिग्मिदिण फासिदिण ॥ ३ ॥ सोतिविण भते । किसिठिण पणपत्ते ?

अब पदरहा इन्द्रिय पद कहते हैं प्रथम इसक द्वारों के नाम कहते हैं १ सस्यान द्वार, २ नार्हपन द्वार
३ वाहापना द्वार, ४ प्रवेश द्वार, ५ अन्तर्माहना द्वार, ६ पद्योंकी अन्तर्माहना द्वार, ७ प्रवेश स्वर्णद्वार २८
नोबिष्टद्वार ९ विषयद्वार, १० साधु आश्रय प्रभोचर द्वार ११ आहार द्वार, १२ नारीसा [काम] आश्रि
प्रभाचर, द्वार १३ सख आश्रय प्रभाचर १४ भानि आश्री प्रभोचर १५ बुग आश्री प्रभोचर १६ पानी आश्री
प्रभ चर १७ जेक का प्रभ १८ गुहका प्रभ १९ वरपीका प्रभ २० कबल का प्रभ २१ स्नेहका प्रभ २२
पगनका प्रभाचर २३ दीविकके प्रभाचर २४ समुद्रके प्रभोचर २५ मोकके प्रभोचर २६ अलोकके प्रभाचर
॥ १ ॥ महा भगवन् । इन्द्रियों कितनी कही है ? अहा गौतम ! इन्द्रियों लोक कही है—१ श्रोत्रिन्द्रिय २ चक्षु
न्द्रिय ३ घ्राणान्द्रिय ४ निगन्धन्द्रिय और ५ स्पर्शान्द्रिय ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! आनेन्द्रिय का क्या

+ पक्ष इन्द्रियों दो प्रकार की कही द्रुमोन्द्रिय और भोषेन्द्रिय, इस में से द्रुमोन्द्रिय के दो प्रकार अर्ध निवृत्ति

गोयमा! कलंकुया पुष्प सठाण सँठिए पण्णत्ते॥ चर्म्मिस्सविण्ण मत्ते! किं सठिए पण्णत्ते?
गायमा ! मसूरा च्चदसठाण सँठिए पण्णत्ते । धानिंविण्ण पुच्छा ? गोयमा ! अइमु
चगचद सठाण सँठिए पण्णत्त, जिर्म्मिभविण्ण पुच्छा ? गोयमा! सुरण्य सठाण सठिए
पण्णत्ते, फलसिंविण्ण पुच्छा ? गायमा ! नाणा सठाण सँठिए पण्णत्ते ॥ ३ ॥

सत्स्थान कहा है ? अहा गौतम ! आर्षेन्द्रिय का सत्स्थान कदम्ब वृक्ष के पुष्प समान है ? अहो मगधन् !
वसुधैन्द्रिय का क्या सत्स्थान है ? अहो गौतम ! मसूर की दाल अथवा अर्धे चंद्रमा के सत्स्थान है अहो
मगधन् ! घ्राणैन्द्रिय का क्या सत्स्थान है ? अहो गौतम ! घ्राणैन्द्रिय का अतिमुकुट पुष्प
वाका है अहो मगधन् ! शिरोन्द्रिय का क्या सत्स्थान है ? अहो गौतम ! शिरोन्द्रिय का
सुरभ का सत्स्थान है अहा मगधन् ! स्वर्धेन्द्रिय का क्या सत्स्थान है ? अहो गौतम ! स्वर्धेन्द्रिय के
के सत्स्थान अनक मुकुर कहें ॥ ३ ॥ अब काटवना द्वार अहो मगधन् ! ओर्ध्वेन्द्रिय किसनी बाही

और उपकारन निवृत्ति के दो अन्ध आम्बर निबन्धित हो उत्तम अंगु के अस्त्रप्रदेश-भाग प्रमान शुद्ध आत्मप्रदेश
नेत्रादि इन्द्रियके अस्त्ररूप होकर रहे सो पाप निवृत्ति और आत्म प्रदेशमें नाम कर्मोदय इन्द्रिय के परिणामे पुद्गल बह
आम्बर निवृत्ति उपकारक दा भई आम्बर उपकारन सो बाह्योमें कृष्णशुद्धिदि धेवल और बाह्य उपकारन
सो भीषण सम्पत्ति, भावइन्द्रिय के दो भेद स्थिति-सो तानावरणीय कर्म के उपयोग-से इन्द्रियों में प्राप्त
हुई शक्ति और उपयोग सर्वत्र क साक्षर्य स इन्द्रिय उसके विषय में प्राप्त में आये हो

फार्सिदिष्ट ॥ ७॥ एतेसिण मते ! सोइदिष्ट चाक्खुइदिष्ट घाणेदिष्ट जिभिम्मदिष्ट फ्फासिदिष्ट
याण ओगाहणट्टयाए पवेसट्टयाए ओगाहण पवेसट्टयाए कयरे २ हितो अप्पावा । बहुयात्ता
तुल्लावा त्रिसेसाहिथावा ? गोयमा । सम्बत्थाये चक्खिदिष्ट उगाहणट्टयाए, सोइदिष्ट
ओगाहणट्टयाए सस्सज्जगुण घाणिदिष्ट ओगाहणट्टयाए सस्सज्जगुणे, जिभिम्मदिष्ट ओगाह-
णट्टयाए सस्सज्जगुणे, फासिदिष्ट ओगाहणट्टयाए असस्सज्जगुणे ॥ पवेसट्टयाए
सम्बत्थोवा चक्खिदिष्ट पवेसट्टयाए, सोइदिष्ट, पवेसट्टयाए असस्सज्जगुणे, घाणिदिष्ट

श्रीश्रद्धाश्रय भस्सयात्त प्रदेश अवगाहकर रही है ऐसे ही स्वर्गोन्नय पर्यंत कहना ॥ ७ ॥ उक्त अस्या
बुद्धि द्वार करते हैं यथा मगबन् ! इन श्रीश्रद्धाश्रय चक्षुश्रद्धा, प्राणोन्नय, मिथोन्नय और स्वर्गोन्नय
की अवगाहना में और प्रदेशों की अवगाहना में कौन किस से मत्त, बहुत, तुल्य व विषयाधिक है ?
महो गौतम ! सब से छोटी १ चक्षुश्रद्धा की अवगाहना, २ इस से श्रद्धाश्रय की अवगाहना सत्स्यात्त
गुनी, ३ इस से प्राणोन्नय की अवगाहना सत्स्यात्त गुनी, ४ उस से मिथोन्नय की अवगाहना सत्स्यात्त
गुनी और ५ उस से स्वर्गोन्नय की अवगाहना भस्सयात्त गुनी अब प्रदेश ओश्रि करते हैं—सब से
छोटी चक्षुश्रद्धा की अवगाहना प्रदेश आश्रय २ उस से श्रद्धाश्रय, की अवगाहना प्रदेश आश्रय

पदसट्टयाए असखज गुणे जिर्मेभादए पदमट्टयाए असखेजगुणे, फासिदिए पदसट्टयाए
 असखजगुणे ॥ ओगाहण पदमट्टयाए-मन्वत्यत्रे खर्वेखादिए ओगाहणपदसट्टयाए,
 साइदिए आगाहणट्टयाए सखेजगुण घाणिावर आगाहणट्टयाए सखजगुण, जिर्मेभादिए
 आगाहणट्टयाए सखेजगुण, फासिदिए आगाहणट्टयाए असखेजगुणे पणत्ते ॥
 पासिदियस्स ओगाहणट्टयाएहिता खर्वेखादए पदमट्टयाए अणतगुणे, साइदिए
 पदसट्टयाए असखेजगुण, घाणिादिए पदसट्टयाए असखेजगुण, जिर्मेभादिए पदसट्टयाए

असंख्यात गुनी, १ तसम प्राणन्त्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी, ४ तसमे जिह्वान्त्रिय
 की अवगाहना प्रदेश आश्रिय असंख्यात गुनी, और ५ तम स स्पर्शान्त्रिय की अवगाहना प्रदेश आश्रिय
 असंख्यात गुनी अथ अवगाहना व प्रदेश की गाय प्रत्या वसुत कहन है १ मथ मे छाने वसुन्त्रिय
 की अवगाहना, २ तस से श्रोत्रान्त्रिय की अवग हना द्रव्य त संख्यात गुनी ३ तम से घ्राणान्त्रिय की
 अवगाहना द्रव्य से संख्यात गुनी, ४ तम स जिह्वान्त्रिय की अवगाहना द्रव्य त संख्यात गुनी और ५ तम
 से स्पर्शान्त्रिय की अवगाहना द्रव्य से असंख्यात गुनी, ६ तम से वसुन्त्रिय की अवगाहना प्रदेश से
 अनेतगुनी, ७ तस स आप्रान्त्रिय की अवगाहना प्रदेश से असंख्यात गुनी, ८ तम स प्राणान्त्रिय की
 अवगाहना प्रदेश से असंख्यात गुनी, ९ तम से जिह्वान्त्रिय की अवगाहना प्रदेश से असंख्यात

असखञ्जयणे फासिदिये पदेसट्टयाए असखेज्जगेणे ॥८॥ सोइदियस्सण भते ! केवइया कक्खट्टगुरुयगुणा पण्णसा ? गायमा ! अणता कक्खट्ट गुरुयगुणा पण्णत्ता, एव जाव फासिदियस्स ॥ ९ ॥ सोइदियस्सण भते ! कवइया मउय लहुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा ! अणता मउय लहुयगुणा पण्णत्ता, एव जाव फासिदियस्स ॥ १० ॥ एत्थिण भते ! सोइदिय चविस्वदिय घाणिदिय, सिर्णिमादय, फासिदियाण, कक्खट्ट गुरुय गुणाण मउय लहुय गुणाण, कक्खट्टगुरुयगुण मउयलहुययण्णय कयर २ हितो अप्पावा बहुयावा तुळावा त्रिसेसाहिया ? गायमा ! सन्वस्थावा चविस्वदियस्स

गुनी और १० उस में स्वर्गोन्मिय की अवगाहना प्रदेश में अस्तरुपात गुनी ॥ ८ ॥ भक् सातवा ककश गुर दार कहने हैं अहा मगभन् ! ओम्बेन्द्रिय का कितो ककश गुरुत्प कहें ? अहा गीतम ! अनस कर्कश गुरु इव्य कहे हैं ऐसे ही स्वर्गे न्य पर्यत नटना ॥ ९ ॥ अहा मगभन् ! ओम्बेन्द्रिय को कितने कीमत् समुद्रक्य कहें हैं ! अहो गीतम ! अन्त कीमत् समुद्रक्य कहें हैं यो पावत् स्वर्गोन्मिय पर्यत कहना ॥ १० ॥ अहो मगभन् ! इन ओम्बेन्द्रिय, चसुम्बेन्द्रिय, घ्राणन्त्रिय भिम्बेन्द्रिय, व स्पष्टोन्द्रिय, व कर्कश गुर, गुण, १ पट्ट पयगुण और कर्कश गुरु व मृदु सगु गुण में कौन किस से

घार्णिदियरस कक्खल्लगुरय गुणा अणंतगुणा, जिब्भिमदियस्स कक्खल्लगुरयगुणा
अणतगुणा, फासिदियरस कक्खल्लगुरय गुणा अणतगुणा फासिदियरस कक्खल्ल
गरुयगुणेहिंतो तस्सचेत्थ मत्थल्लगुरयगुणा अणतगुणा जिब्भिमदियरस मत्थल्लगुरयगुणा
अणतगुणा घार्णिदियरस मत्थल्लगुरय गुणा अणतगुणा साइदियरस मत्थल्लगुरय
गुणा अणतगुणा, चक्खिदियरस मत्थल्लगुरय अणतगुणा, ॥ ११ ॥ णेरइयाण
भंते ! कइ इदिया पणत्ता ? गोयमा ! पच्चिदिया पणत्ता ? तज्झा सोइदिए जाव
फासिदिए ॥ णेरइयाण भंते ! सोइदिए किं संटिए पणत्ते ? गोयमा ! कल्लवुया

अरपावडुव १ सब से थोड़े वसु इन्द्रिय के कर्कश गुरु २ वम से श्रवेन्द्रिय क कर्कश गुरु भनंतगुने
३ घ्राणन्द्रिय के कर्कश गुरु अनंतगुने, ४ वस से भिष्वेन्द्रिय के कर्कश गुरु अनंतगुने ५ वस से स्पृशे
न्द्रिय क कर्कश गुरु अनंतगुने ६ वस से स्पृशेन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने ७ वस म भिष्वेन्द्रिय के मृदु
लघु अनंतगुने ८ वम से घ्राणेन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने वत मे श्रावन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने और
१० वस से वसु इन्द्रिय के मृदु लघु अनंतगुने ॥ ११ ॥ अहा यगवन् ! नारकी का कितनी इन्द्रियों
करी है ! अहो गौतम ! नारकी को पांच इन्द्रियों करी है १ श्रोत्रेन्द्रिय, २ वसु इन्द्रिय, ३ घ्राण
न्द्रिय, ४ भिष्वेन्द्रिय, और ५ स्पृशेन्द्रिय अहो यमवन् ! नारकी के श्रोत्रेन्द्रिय का क्या संस्मान है ?

पुण्ड्रसताण सठिए पण्णस, एव जहा ओहियाणे वत्तय्या भाणिधा तेहेत्र केरइय)णपि
 जाव अप्पायहुबाणि दोण्णित्रि णवर केरइयाण भंते! फासिदियस कि सठिए पण्णसे ?
 गोयमा ! बुधिहे पण्णस तजहा भवधारणिज्येय उत्तरवटविषय सत्थण ज ते
 भवधारणिजे सेण हुसग सठाण, सठिए पण्णसे तत्थण जे त उत्तर वटविण्ण सेवि
 तेहेत्र सेस तथेव ॥ १२ ॥ असुरकमाराण भंते ! के इदिया पण्णत्ता ? गोयमा !
 पखिक्किया पण्णत्ता, एव जहा ओहियाण जाव क्षप्पावहुमाणि दोण्णित्रि णवर फासि
 दिए बुधिहे पण्णसे तजहा भवधारणिज्येय, उत्तर वटविण्णस्य, तत्थण जेसे भवधार

अहा मौतमा! कम्म वृत्तके पुष्पका वोगे नेसे औधिक का कहा वेसे ही काना, यावत् दोनों की वृत्त्या
 बहुत तक कहन परंतु विषयता यह है कि अहो भगवन्! नारकी को स्वर्गोन्मिष का क्या भंस्यान कहा है ?
 अहा मौतमा! नारकी का स्वर्गोन्मिष क मस्यान क हो यह कहै है ? भवधारणीय शरीर का और उत्तर
 वेसेय शरीर का, वत्स में उसे भवधारणीय शरीर है सा हुदक सस्यानश्या है और उत्तर वेसेय मी वृत्ता ही
 एतथाहे अर्थात् अयम नाम कर्मोदय स वे अक्छे रूप बनानो चाहते हैं ता भी तारावत् ही बनाना है
 ॥१०॥ अहो भगवन्! असुर कुपार को किसनी इन्मियों कही ? अहो गोमम' असुरकुपार को पांच इन्मियों
 कही यों जेव औधिक का कहा यों यावत् दोनों अत्यावृत्त कइना परंतु विशेषत यह है कि असुर

गोयमा ! अणत पदेसिए पण्णत्ते ॥ पुढविक्काइयाण भत्ते ! फासिदिए कतिपदे
सोगाटे पण्णत्ते ? गोयमा ! सखेज्जपदसोगाटे पण्णत्ते ॥ एतेसिण भत्ते ! पुढविक्काइयाण
फासिदियस्स आगाहणट्टयाए पदसट्टयाए कयर २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सन्व
त्थोवा पुढविक्काइयाण फासिदिए ओगाहणट्टयाए तहचव, पदेसट्टयाए अणतगुणे ॥
पुढविक्काइयाण नत्ते ! फासिदियस्स केवइया कक्खइ गुरुयगुणा पण्णत्ता ? गोयमा !
अणत्ता एव मउय लहुय गुणावि एतेसिण भत्ते ! पुढविक्काइयाण फासिदियस्स कक्ख
गुरुय गुणाण मउय लहुय गुणाण कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सन्वत्थोवा

नौतम ! शरीर प्रमाण जाही चौदाह १ पृथ्वीकाया की कही अहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की स्वर्दे
न्द्रिय को कितने प्रदेश को है ! अहो गौतम ! अन्त प्रदेश करे भहो भगवन् ! पृथ्वीकाया की
स्पर्शेन्द्रियन कितने प्रदेश प्रवर्गाह है ? अहो गौतम ! अर्सख्यात प्रदेश अबगाहकर रही है अहो
भगवन् ! पृथ्वीकाया क अबगाहना १ प्रदेश में कौन किस में अत्यबहुत्व थावन् विशेषाधिक है ? अहो
गौतम ! सब स पोट पृथ्वीकाया का स्पर्शेन्द्रिय अबगाहना आश्रिय उन से प्रदृष्ट आश्रिय बही अनंत
मने मरा भगवन् ! पृथ्वीकाया के कितने कर्कष गुरु गुन करे है ! अहो गौतम ! अन्त कर्कष गुरु
गुन करे है अहो भगवन् ! कितने पटु पयु गुन करे है ? अहो गौतम ! अनंत पटु सपु गुन करे है

पुठविकाइयाण फासिंदियरस कक्खवहगरुणुणा, तत्सत्त्वेण मउय लहुय गुणा अप्पत
गुणा ॥ एवं आउक्काइयाणत्ति जात्र वण्णप्फइ काइयाण, णवरं संठाणे इमो विसेसो
दट्ठवो, आउक्काइयाणं विबुगग्निषु संठाण सठिए, तेउक्काइयाण सूईकालात्र संठाण
सठिए, आउक्काइयाण पढागा सठाण सठिए, वणरसइ काइयाण णाणा सठाण सठिए
॥ १४ ॥ वेइंदियाण भंते ! कइ इदिया पणत्ता ? गोयमा ! दोइंदिया पणत्ता
तज्जहा जिंमिदिण्य, फासिंदिय, कोण्णवि इदियाणं संठाणं वाहुह पौहच पदेसलोगा
इणाय जह। ओइियाण भणिया तहा भाणियन्वा णवरं फासिंदिए हुंढ सठाण सठिए

अहो यमवन् इन पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन मृदु सपु गुन में कौन किस से भ्रत्य
बहुत मुह्य व विवेचयामिह है ? अहो गौतम ! सब मे योहे पृथ्वी काया की स्पर्शेन्द्रिय के कर्कश गुरु
गुन बस से मृदु कयु गुन भनत गुने ऐसे ही अप्काया यावत् वनस्पतिकाया का मानना परंतु अप्काया
का सस्यान पानी के कुदबुद का, तरकाया का सस्यान भूचिकसाप (सूई की मारी) वायु का
सस्यान शमा पताका और वनस्पति काया का सस्यान विविध प्रकार का ॥ १४ ॥ अहो यमवन् ?
शेन्द्रिय को कितनी इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! पशेन्द्रिय को दो इन्द्रियों कही है ? शिखेन्द्रिय और
२ स्पर्शेन्द्रिय, दोनों इन्द्रियों का सस्यान, वाहयन, बोधापना, पदेष्ट व अशगाहना औचित्त जैसे मानना

पणसे इमो त्रिससो एतसिर्ण-भते। बेदियाण जिर्भदिय फासिदियाण ओगाहणट्टयाए
पएसट्टयाए आगाहणपएसट्टयाए कयर ६ हिंत्तो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवे
बइदियाण जिर्भदिए आगाहणट्टयाए फासिदिए ओगाहणट्टयाए असखेज्जगुणे
पएसट्टयाए सव्वत्थोवे बेइदियाण जिर्भदिए पएसट्टयाए, फासिदिए पएसट्टयाए
असखेज्जगुणा, ओगाहणा पएसट्टयाए सव्वत्थोवे बइदियस्स जिर्भदिए ओगाहणट्टयाए
फासिदिए ओगाहणट्टयाए असखेज्जगुण । फासिदियस्स ओगाहणट्टयाए हिंत्तो
जिर्भदिए पएसट्टयाए अणत्तगुणे, फासिदिएयस्स पएसट्टयाए असखेज्जगुणे॥ बेइदियाण

परंतु स्वर्गोन्मिय का हुंर सप्रान जानना आ। मगवन् ! बेइन्ट्र की इन मिर्गेन्ट्रि ब' स्वर्गेन्ट्रि की
अवगाहना, प्रदेश और अवगाहना प्रदेश में कौन किस से अस्व बहुत तुल्य ब' विद्यवापिक है । अहो
गोवध ! सब से छोटी बेइन्ट्रि की मिर्गेन्ट्रि की अवगाहना, इस स स्वर्गेन्ट्रि की अवगाहना अससपाठ
गुनी प्रदेश आश्रय सब म छोटी मिर्गेन्ट्रि की अवगाहना हम से स्वर्गेन्ट्रि की अवगाहना अस
म्यात्त गुनी अवगाहना प्रदेश आश्रय सब से छोटी मिर्गेन्ट्रि की अवगाहना हम से स्वर्गेन्ट्रि की
अवगाहना असंस्पात्त गुनी हम में जिब्बाहन्ट्रि की अवगाहना प्रदेश आश्रय अन्त गुनी और इस से
स्वर्गेन्ट्रि की अवगाहना प्रदेश आश्रय असंस्पात्त गुनी अहो धावन् ! बेइन्ट्रि की मिर्गेन्ट्रि की

मंने । जिह्वामदियस्त केन्द्रिया कक्खड गरुयगुणा पण्यत्ता । गोयमा । अणंता,
एव फासिदियस्तसि एव मउयलहुयगुणावि ॥ एएसिणं भते । बेइदियाण
जिह्वेमरिय फासिदियाणं कक्खड गरुयगुणाण, मउयलहुयगुणाण, कक्खड
भरुयगुण मउयलहुयगुणाणय कयरे २ हिंनो अप्पावा ४ ? गोयमा । सम्बस्थोवा
बेइदियाण जिह्वेमदियस्त कक्खड गरुयगुणा, फासिदियस्त कक्खड गरुयगुणा
अणतगुणा ॥ फासिदियस्त कक्खड गरुयगुणेहिंनो तस्सचेव मउयलहुयगुणा अणत-
गुणा, जिह्वेमदियस्त मउयलहुयगुणा अणतगुणा ॥ एव जाव चउरिदियाण, जवर

कितने कर्कश गुरु कह ! अहा गौतम ! अनंत करे ऐसे ही स्पृशेन्द्रिय का जानना और ऐसे ही
मृदु लघु का भी कहना भरो भावन् ! वेदन्द्रिय की मिश्रेन्द्रिय, स्वर्शेन्द्रिय के कर्कशगुरु, मृदुल्य व
कर्कश गुरु मृदु लघु में कौन किस से अल्प बहुत गुरु व विश्वेवाधिक हैं ? -- अरो गौतम ! सब से पोरे
वेदन्द्रिय की मिश्रेन्द्रिय क कर्कश गुरु गुन, इस से स्पृशेन्द्रिय के कर्कश गुरु गुन अनंतगुने इस से निम्ने
न्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने और उस स स्पृशेन्द्रिय के मृदु लघु गुन अनंतगुने, ऐसे ही श्वरेन्द्रिय
पर्वत कहना परंतु परेक इन्द्रिय यद्वाना, तेशन्द्रिय में सब ने पावे प्राणेन्द्रिय और चतुरेन्द्रिय में चतु

इदिय परिबुद्धीकायञ्चा । तेहदियाण घाणिदिपु योत्रे, वसरिदियाणं चर्विसदिपु याव, सेसं
 संचये ॥ १५ ॥ यैचिदिय तिरिक्ख जोगियाणं मणूसाणय जहा गेरइयणं, जवर फासिदिपु
 छन्दिपु संटाण संटिपु पणसे तजहा समचउरसे, णिगोइ परिमढळे, सारि, खुजे,
 वामये, हुढे ॥ वाणमतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा असुरकुमाराण ॥ १६ ॥
 पुट्टाइ मंते ! सदाई सुजेइ अपुट्टाइ सदाइ सुजेइ ? गोयमा ! पुट्टाइ सदाइ सुजेति
 जो अपुट्टाइ सदाइ सुजेति ॥ पुट्टाइ मंते ! स्वाई पासइ, अपुट्टाइ स्वाइ पासइ ? गाथमा !
 जो पुट्टाइ स्वाइ पासइ अपुट्टाइ स्वाइ पासइ ॥ पुट्टाइ मंते ! गथाइ अमघाति

शब्दिय गोप सब बैने ही ॥ १५ ॥ तिरिय पचेन्द्रिय और अनुप्य का मारकी जैसे कहना परंतु संस्थान
 छ प्रकार के कहना जिन के नाब-सपवसुस, 'पगोष परिमहल, वापन, कुठन भीर हुढक बाजध्यतर,
 वपोकिपी व दैमानिक क अमुर कुमार जैसे कहना ॥ १६ ॥ गही मगपन् ! जीव क्या स्वर्गे हुवे छब्द
 सुनते हैं या बिना स्वर्गे हुए, जवर सुनते हैं ! अहो गौतम ! स्वर्गे हुए छब्द सुनते हैं परंतु बिना
 स्वर्गे हुए छब्द नहीं सुनते हैं अहो मगपन् ! जीव क्या स्वर्गा हुआ रूप देखते हैं या बिना स्वर्गा हुवे
 रूप देखते हैं ? अहो गौतम ! एतथा हुआ रूप नहीं देखता है परंतु बिना स्वर्गा हुआ रूप देखावा है

अमुद्गाह गगाहं अगधाति ? गोयमा ! पुट्टाहं गंधाह कमघाति जो अपुट्टाह गंधाह
अगधाति ॥ एव रसाणयि, फासाणयि, जवर रसाह आसाएति, फासाहं सवेवेति
अमितामो कायवो ॥ १७ ॥ पविट्टाह भते ! सदाहं सुनेह अपविट्टाहं सदाह
भुणह ? गायमा ! पविट्टाह सदाहं सुनेह जो अपविट्टाह सदाह सुनेह, एवं जहा
पुट्टाणि तद्वा पविट्टाणि ॥ १८ ॥ सोहं वियस्सण भते ! केवइए विसए पण्णस ?
गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स असखेज्ज मागे उक्कोसेण बारसहिं ओयणे हितो

अहो भगवन् ! क्या स्वर्गाये हुवे गेय के पुत्रसूखांते हैं वा पिना स्वर्गाये हुवे सुखांते हैं ! अहो गोतम !
स्वर्गाय हुवे सुखांते हैं प्रत्यु बिना सखाय हुवे सुखांते हैं, ऐसे ही रस व स्वर्ग का जानना, परंतु रस में
आस्वादन और स्वर्ग में वदनका करना ॥ १७ ॥ अहो भगवन् ! क्या श्रीश्रोत्रिय प्रवेश कराये हुवे शब्दों सुनाते
हैं या बिना प्रवेश कराये हुवे शब्दों सुनाते हैं ! अहो गोतम ! प्रवेश कराये हुवे शब्दों सुनाते हैं परंतु
पिना प्रवेश कराये शब्दों नहीं सुनाते हैं यों जैसे स्वर्ग का कहाँ तैल प्रवेश को जानना ॥ १८ ॥ अहो
भगवन् ! श्रोत्रोन्मय का कितना विषय कहा ! अहो गोतम ! अर्थात् अंगुल का अर्थ स्यावशा याग वस्तुष्ट
पार योजन स आन्तरिक स्वर्ग हुवे व प्रवेश कीये हुवे शब्द सुनाते हैं, बारह योजने तक का गर्भारण

१. यहाँ वालन का प्रमाण जिस समग्र जो मनुष्य होने से उन के आत्म अंगुल के प्रमाण से जानना

समोदयस्य जे चरिमा निजरा पागला सहमाण त पागला पण्णा समणाठसो !
 सन्धलोगापियेण तेउगाहिचाण चिट्ठति ? हतागोयमा ! अणगारस्सण भावियप्पणो
 मारणासिय समुग्धाएण समोदयस्स जे चरिमा निजरा पागला, पण्णा समणाठसो !
 सन्धलोगापियेण तेउगाहिचाण चिट्ठति ॥ छठमरवेण भत्त ! मणुरसे तेभि निजरा
 पोरगलाण किंचि आणतत्वा णाणत्तत्वा, उम्मत्तत्वा, तुच्छत्तत्वा, गरुयत्तत्वा लह्यत्तत्वा
 जाणति वासति ? गोयमा ! णा तिण्हु समट्ठे ॥ सेकेणट्ठण भत्ते ! एय बुद्धह छउमत्तेण
 मणुरस तभि निजरा पागलाण णा किंचि आणत्तत्वा णाणत्तत्वा उम्मत्तत्वा तुच्छत्तत्वा

महो भगवन् ! भावितात्मा साधु मारणाधिक समुदात करने से अतिम छेलेही काल के जो निर्जरा के
 पुत्रल है वे लक्ष हैं भरो आयुष्मन् श्रवण ! यथा व सब लोक को स्पर्श कर रहते हैं ? महो गौतम !
 भावितात्मा अनगार के मारणाधिक समुदात के अतिम जा निर्जरा के पुत्रल हैं वे सब लोक को स्पर्श कर
 रहत हैं महो भगवन् ! छषस्य मनुष्य उन निर्जरा के पुत्रलों को किंचिन्मात्र अछा २ माय से परस्पर
 वण देक की पयाय स, हीनपन, गुरुस्वप्ने वं सुदुरवयने यथा जानते हैं वस्तुत हैं ? महो गौतम ! यह
 अर्थ सम्य नहीं है अहा भगवन् ! किम फारन स एया क्ख कि उक्क निर्जरा के पुत्रलों को छषस्य
 मनुद्य किंचिन्मात्र मर्दों स वर्णादि से पूर्णता कर, हीनता स, गुरुता स, लघुता स नहीं जान सकते हैं व

गुरुयन्त्रं वा लहृयन्त्रं वा नाणति पासति ? गोयमा । देशे विपणं अर्थे गति ए औषं तमि निज्वरं
 पोगलानं णो किं चि आणत्तं वा उम्मसं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहृयत्तं वा
 जाणति पासति, से तणट्ठण गोयमा ! एउ वुध्धति, छठमत्थेण मणुस्से तेसिं निज्वरं ।
 पागलाण्ण णो किं चि आणत्तं वा जाणत्तं वा उम्मसं वा तुच्छत्तं वा गरुयत्तं वा लहृयत्तं वा
 जाणति पासति, एउ सुहुमानं ते पोगला पण्णत्ता समणादसो ! सम्बलोगं विपण ते
 ओग्गाहिच्चाण चिद्वति ॥ जेरइयाण भंसे ! ते निज्वरा पोगला जाणति पासति
 आहारति उदाहु जजाणति पाजाणति पपासति णआहारोति ? गोयमा ! जेरइयाणं

नहीं देख सकते हैं ! अहो गौतम ! ऐसे ठिठनेक देवता भी हैं वे भी उक्त निर्धराके पुत्रोंको किंविन्मात्र अलग-
 मद में, वर्णादि से, हीनता से, गुरुता से, व समुता से नहीं जान सकते हैं व देख सकते हैं अहो
 मायुष्मन् श्रमकों ! देवे मूख पुत्रों हैं तथावि मर लोक को स्पष्ट कर रहे हैं अहो भगवन् ! नारकी
 क्या उन निर्जरा पुत्रों का भावते हैं दम्बने हैं या आहार करते हैं भयवा नहीं जानते हैं, नहीं देखते
 हैं या नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! नेरीये उक्त निर्जरा पुत्रों का नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं
 परंतु आहार करते हैं + जैसे नारकी का कपन कीया वैसे ही विर्यिच पंचेन्द्रिय पर्यंत कहना अथा भग-

+ मर वे निजग पुत्रों लोक व्यापी होते हैं तब ऐसे आहार की साथ परिणाम है

ते निजरा पौरगत्या न जानाति न पासति आहारति, एव आव पचि वेय तिरिक्ख ज्ञापियानं। मणूस्साणं भते । ते निजरा पौरगले किं जाणति पासति आहारति, उदाहु न जाणति न पासति आहारति? गोयमा । अत्येगतिपाण जाणति पासति आहारति, अत्येगतिपा जाणति न पासति आहारति, से कणट्टेण भते । एव बुद्ध अत्येगतिपा जाणति पासति आहारति, अत्येगतिपा न जाणति न पासति आहारति? गोयमा । मणूस्सा दुविहा पणचा तजहा—सण्णिसूयाय ससण्णिसूयाय, तत्थणं ज ते असण्णिसूयाय तेन जाणति न पासति आहारति, तरथण ज ते सण्णिसूया ते दुविहा पणचा तजहा-

ननु ! मनुष्यों को निर्मरा फुलों को क्या जानते हैं देखत हैं वा आहार करते हैं सम्मत् नहीं जानत हैं, नहीं दस्त है वा नहीं आहार करते हैं? महा गौतम ! कितनेक जानते हैं, दस्त है व आहार करते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं, नहीं देखते हैं व आहार करते हैं अतो मगणन् ! किम कारण मे एमा कथा गवा कि कितने जानत हैं, दस्त हैं न आहार करते हैं और कितनेक नहीं जानते हैं, नहीं दस्त है व आहार करते हैं ! अतो गौतम ! मनुष्य दो प्रकार के कहे हैं । सही मून और असही मून इस ये अपमंसी मून नहीं जानत हैं, नहीं दस्त है परंतु आहार करते हैं गो तृतीयं है तज के दो मत , अथपेण पुक्क पर्पास अपर्पास-ज्ञान के धारक और सक्योग रहित अशानि आदि ज्ञान के धारक

उवउत्ताप अणुवउत्ताया, तरथण जे ते अणुवउत्ताय तेण नजाणति नपासति आहारेंति,
तरथण ज ते उवउत्ता तेण जाणति पासति आहारेंति से तेणट्ठण गोयमा ! एव
बुद्धति अरथेगतिया नजाणति नपासति आहारेंति, अरथेगतिया जाणति पासति
आहारेंति ॥ दाणमतरा जोइसिया जहा णेरइया ॥ वेमाणियाण भते ! निज्जरा वोगल्ल
किं जाणति पासति आहारेंति उदाहु पुच्छा ? गोयमा ! जहा मणुस्सा नवर वेमाणिया
दुविहा पण्णात्ता तज्जहा-माईमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय, अमाइ सम्मदिट्ठी उववण्णगाय,
तरथण जे त माईमिच्छादिट्ठी उववण्णगाय तेण नजाणति नपासति आहारेंति, तरथण

जस में उपयोग रहित है वे उन पुत्रकों को नहीं मानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और
नो उपयोगवंत हैं वे जानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं इस सिद्धे अहो भगवन् !
अहा गौतम ! एना कहा कि कितनेक नहीं मानते हैं, नहीं देखते हैं परंतु आहार करते हैं और कितनेक
मानते हैं, देखते हैं व आहार करते हैं बाणध्यतर ब्योतिपी का नारकी जिस कहना अहा भगवन् !
वैमानिक उन निर्भरा पुत्रकों का क्या मानते हैं, देखते हैं आहार करते हैं अथवा नहीं मानते हैं, नहीं
देखते हैं व नहीं आहार करते हैं ? अहो गौतम ! जैसे मनुष्य का कहा वैतेही कहना परंतु वैमानिक के दो
मेद १ मायी मिथ्या दृष्टि उतरन और अभायो समदष्टि उत्पन्न, इन में जो मायी मिथ्या दृष्टि उत्पन्न है वे

जं ते अमार्हं सम्मदिष्टि उववण्णमा ते दुविहा पण्णत्ता तज्झा—अणतरावधण्णगाय
 परंपरोवधण्णगाय ॥ तत्थण ज ते अणतरोवधण्णगा तेण णजाणति णपासति आहा-
 रंति तत्थणं ज ते परपरोवधण्णगा, ते दुविहा पण्णत्ता तज्झा—उववत्तगाय अपज्ज
 गाय, तत्थण ज ते अपज्जत्तगा ते णजाणति णपासति आहारंति ॥ तत्थणं ज ते
 पज्जत्तगा ते दुविहा पण्णत्ता तज्झा—उववत्तगाय अणुवत्तगाय, तत्थणं ज ते अणुवत्तगा
 त ण जाणति, ण पासति आहारंति, तत्थणं ज ते उववत्तगा ते जाणति पासति
 आहारंति, से तेणहेणं गोयमा ! एव वुच्चति अत्थगतिया जाणति जाय अत्थगतिया

नहीं जानते हैं नहीं देखते हैं परंतु आहार काव हैं और अमायी सम्यक् इष्ट क दा भेद भनंतरोत्पन्न और
 वांछा उत्पन्न उसमें जो अंतर उत्पन्न है वे जानते देखते नहीं हैं और आपसपरा उत्पन्न है उन के वा मद
 पयास और मपर्यास उस में आ मपर्यास हैं वे मानते देखते नहीं हैं परंतु आहार करते हैं और जो पयास
 है उनका दा मद उपपाणयुक्त और उपयोग रहित था उपयोग रहित है वे जानते देखते नहीं हैं परंतु
 आहार करते हैं और जो उपयोग वाले हैं वे जानते देखते हैं और आहार करते हैं अहा गोचर ! इस
 लीये ऐसा कहा गया है कि कितनेक वैयधिकद्वय जानते हैं यावत् किमनं वैयानिकद्वय आहार

आहारोति ॥ २० ॥ अदाय वेदमार्गं मणुरस किं अदय वेदति अत्तौण पदति पलि
माग पदति १ गोयमा । जो अदायं वेदति जो अत्तौण पदति पलिभागं वेदति, एव
एतण अभिजादेण अस्ति मणि, दुच्छ पाणं, तेछ, फाणियं, रस, वस, ॥ २१ ॥
कवल साहवण भत । आयदिय परित्रेदिण समण जावतिव उवासर पुसिप्पानं चिट्ठति
त्रिरह्णप्रियण समणे तोयइयचेव उवासरं फुसिप्पान चिट्ठइ ? हता गोयमा ।
कवल साहवण आवेदिय परित्रेदिण समणे जावतिव तंयव चिट्ठति ॥ २२ ॥ यण्णं भते!

कवल है ॥ २० ॥ अरिमा का प्रभातर—प्रभा ममरु ! अरिमा-काच को देखता हुआ क्या
अरिमा दम्बता है, आत्मा दम्बता है या शरीर विषम देखता है ? अहो गौतम ! मनुष्य अरिसे में देखता
हुआ अरिमा नहीं देखता है केम ही आत्मा भी नहीं देखता है परन्तु शरीर विषम दम्बता है जैसे कवि
में दत्तने का प्रभातर कहा कैसी मरफार में, दुधमें, पानी, में तेल में, पतल मुद में, किसी प्रकार के रस में
य पराही में अपने शरीर का प्रतिबिम्ब देखता है उसका भी प्रभातर कहना ॥ २१ ॥ अहो ममरु ! यही
कीपाहुता मरण हुआ कम्पवपट जिनन आकाश पश्य अगाहता है तबने आकाश प्रदर्शयितुन कीपाहुता
फराया हुआ कम्पवपट क्या अवगाहता है ! अहा गौतम ! तबने आकाश प्रदर्शयितुन कीपाहुता कम्पव
पट अवगाहता है तबने ही आकाश प्रदर्शयितुन कीपाहुता कम्पवपट अवगाहता है ॥ २२ ॥ अहो

उहूँ उसिया समानी जात्रइय खेच उगाहिचाण चिहुँति सिरिय त्रियण आप्पता समानी
 तावइयखेच खेच उगाहिचाण चिहुँति?इता गोयमा!यूगाण उणुठसिया तंयच चिहुँति
 ॥ २३ ॥ आगासयिगलेण भते ! किण्णा फुडे, कइहिं वा कारुहिं फुडे किं धम्म
 रियकाएण फुड, धम्मरियकायरस देसेण फुडे धम्मरियकायस्स वदेसेहि फुडे, एव
 अधम्मरियकाएणं, आगासरियकाएणं पूरणं भेवेण जाव किं पुठविकाएण फुडे,
 पगवन् ! खहा कीया स्वम जितने आकाश मदेश भवगइता है उतने आकाश मदेश सम्म वीज्जो
 कीया हुआ स्वम क्या अवगइता है ? अहो गौतम ! खहा कीया हुआ स्वम जितने आकाश मदेश
 भवगइता है उतनेही आकाशमवग मग्ग वीज्जो कीया हुआ स्वम अवगइता है॥२३॥ अहा भगवन् ! आकाश
 वा चिमडा (लोकाकाश) किस का स्पर्श कर रहा है ? किन्ती काया से स्पर्शा हुआ है ? क्या
 पर्मास्तिक्काया को स्पर्श हुआ है, पर्मास्तिक्काया के दृष्ट को स्पर्श हुआ है कि पर्मास्तिक्काया के मदेश
 को स्पर्श हुआ है, ऐसे ही अपर्मास्ति काया अपर्मास्ति काया के देख व मदेश को स्पर्श कर रहा
 है, ऐसे ही आकाशास्तिक्काया यावत् पृथ्वी काया यावत् जलकाय से स्पर्श कर रहा है या अग्नि समय
 (काल) को स्पर्श कर रहा है ? अहो गौतम ! आकाश का वेगला पर्मास्तिक्काया को स्पर्श कर रहा है,
 परंतु पर्मास्ति काया के दृष्ट को नहीं स्पर्शा है क्यों कि पर्मास्ति काय का पृथक् विभाग होता है और

किंण्णाफुडे कइहि या काएहि फुडे किं धम्मसत्थिकाएण जीव आगासत्थिकाएण फुडे
 गोयमा! गो धम्मसत्थिकाएण फुडे, धम्मसत्थिकायस्स पसेण फुडे, धम्मसत्थिकायस्स पसेसेहि
 फुडे एवं अधम्मसत्थिकायस्सत्ति, आगासत्थिकायस्सत्ति, पुटत्रिकाएण फुडे जाव वणस्सइ
 काएण फुडे, तसकाएण सियफुडे, सिय गो फुडे अट्ठासमएण फुडे ॥ एवं लवण
 समुदे, धायसि खट्ठदीव, काल दइ समुद, अर्हेमत्तर पुक्खरट्ठ, बाहिरं पुक्खरट्ठ
 एवं वव जप्पर अट्ठासमएण गोफुडे, एवं जाव सयमूरमणममुदे

जम्बूद्वीपकिस को स्वर्ण कर रहा है किठनी काया को स्वर्ण कर रहा है ! क्या धर्मास्त्रिकाया को स्वर्ण कर रहा है
 यावत् क्या आकाशादिकाया को स्वर्ण कर रहा है ! अहो गौतम ! धर्मास्त्रिकाया का स्वर्ण कर महीं रहा है
 परंतु धर्मास्त्रिकाया के दण्ड व मयूख का स्वर्ण कर रहा है ऐन ही अवर्णस्त्रिकाया व आकाशादिकाया का
 ज्ञानता पृथ्वीकाया यावत् धनस्पतिकाया को स्वर्ण कर रहा है वतकाया को वचवित् स्वर्ण कर रहा है
 और वचवित् स्वर्ण कर नहीं रहा है और काल से स्वर्ण कर रहा है ऐसे ही लवण, मुद्ग, पातकी स्पष्टद्वीप
 कासो, मि, मुद्ग और आभ्येतर पुट्ठकरार्थ द्वीपका ज्ञानता रास पुट्ठकरार्थ द्वीपका भी वैसे ही कहने परंतु
 इस में काल नहीं है इन ही प्रकार भ्रमे आग गाथा में कहा वैसे जानना १ जम्बूद्वीप -- २ लवण समुद्र

का प्रमान
दीपसमूहों

१९	सुणदीप	२३७१४६०००००	१९	सुणदीप	२३७१४६०००००
२०	सुणोदीप	५२४२८०००००	२०	सुणोदीप	५२४२८०००००
२१	बायुदीप	१०४८५७३०००००	२१	बायुदीप	१०४८५७३०००००
२२	बायुदीप	२००७१५२००००००	२२	बायुदीप	२००७१५२००००००
२३	कुलदीप	३१५६३४००००००	२३	कुलदीप	३१५६३४००००००
२४	कुलदीप	८३८८६०८००००००	२४	कुलदीप	८३८८६०८००००००
२५	दीपदीप	१४७७७२१६००००००	२५	दीपदीप	१४७७७२१६००००००
२६	दीपदीप	३३५५६४३३२००००००	२६	दीपदीप	३३५५६४३३२००००००
२७	दीपदीप	४७१०८८६६००००००	२७	दीपदीप	४७१०८८६६००००००
२८	दीपदीप	१३६२१७७३८००००००	२८	दीपदीप	१३६२१७७३८००००००
२९	सुमंगदीप	२३८४३५६२६००००००	२९	सुमंगदीप	२३८४३५६२६००००००
३०	सुमंगदीप	५३६८३००१२००००००	३०	सुमंगदीप	५३६८३००१२००००००
३१	कुनदीप	१०७३७६१८३६००००००	३१	कुनदीप	१०७३७६१८३६००००००
३२	कुनदीप	६७४८३३६८००००००	३२	कुनदीप	६७४८३३६८००००००
३३	कुनदीप	६२०६७७२९३००००००	३३	कुनदीप	६२०६७७२९३००००००
३४	कुनदीप	८५८९९३६५०००००००	३४	कुनदीप	८५८९९३६५०००००००
३५	दीपदीप	१७१७९८६९१८४००००००	३५	दीपदीप	१७१७९८६९१८४००००००
३६	दीपदीप	३३५५६४३३२०००००००	३६	दीपदीप	३३५५६४३३२०००००००

पूसा परिवाही इमाहि गाहाहि अणुगंतव्या तंजाहा जेनुईवि लत्रणे, धायइ, कोलोदए,
 पुक्खरे, वरुणे ॥ खीर, घय द्रक्खोय, णदिय, अरुण, रुणवर, वाठ, कुंढले, सख,
 रूपग ॥ १ ॥ कुस, कुच, आभरण, वरय गंधे उण्यल तिलएय पठम, पुढावि, णिहि,
 रयणे, भासहर, वह, णपीओ, विजया वक्खार, कण्विदा ॥ २ ॥ कुरु मरि, आवासा,
 फूहा, णक्खत्त, च्चद, सुराय, देवे, नागे जब्बल भूएय, सयभरमणेय ॥ ३ ॥ पव जहा

१ पातकी लण ६ काळोवधि समुद्र, ५ पुण्डर द्वीप ६ पुण्डर समुद्र ७ वरुण द्वीप ८ ब्रह्म समुद्र
 ९ क्षीर द्वीप १० क्षीर समुद्र ११ पुत द्वीप १२ पुत समुद्र १३ इलुद्वीप १४ इलु समुद्र १५ नंदीवर द्वीप
 नंदीवर समुद्र १७ अरुणवर द्वीप १८ अरुणवर समुद्र १९ कन द्वीप २० कन समुद्र २१ वायु द्वीप
 २२ वायु समुद्र २३ कुंडल द्वीप २४ कुंडल समुद्र २५ उल्ल द्वीप २६ उल्ल समुद्र २७ रुक्क द्वीप २८ रुक्क
 समुद्र २९ मुर्मम द्वीप ३० मुर्मम समुद्र ३१ कुश द्वीप ३२ कुश समुद्र ३३ ऐसे ही आगे आमरण के
 नाम के नीम-कनकावली, रत्नावली, मुक्तावली कपुरादि ऐसे ही आगे द्वार द्वीप द्वार समुद्र, द्वारवरद्वीप,
 द्वारवर समुद्र, द्वारवरमास द्वीप, द्वारवरमास समुद्र ऐसे ही अर्ध द्वार के नाम क नीन, रत्नावली के नीन, कन
 कावली के नीन, ऐसे ही बरसे के नाम के नीन, गव क नाम क नीन, रुस्तरी, उत्पलाधि कबल, तिमक, पद्म, पृच्छी, नव
 निधान, घोदद रत्न, धूलमन्तादि छ वर्षधर के नाम क, पयोऽि ईद के नाम से, गङ्गादि नदी क नामक,
 मारपर्यंत वसस्कार क, मौर्यादि देवराक क, नरुदि इन्द्र क, धरुर्धन क पररादि सेव के नाम से कुंठ
 के नाम से, नक्षत्र के नाम से शत्रु क नाम म, सूर्य के नाम से, रुच के नाम से, वाम क नाम से, भूत क

पाहिर पुक्खरन्ध्र भणिए तहा जाव सयभूमण समुद जाव अन्नासमएण ना फुड
॥ २५ ॥ लोणेण भते । किण्णाफुडे कतिहिंवा काएभिंवा अहा आगासस्थिगिस्सि
॥ २६ ॥ अलाएण भत । किण्णाफुड कतिहिंवा काएहि पुच्छा ? गोयमा ! जो
धम्मस्थिकाएण फुडे जाव जो अगासस्थिकाएण फुडे जाव आगासस्थिकायरस
दसेण फुडे अगासस्थिकायरस पवमेहि फुड जो पुढवि काएण फुडे जाव ना अन्नासमएण
फुड, एणे अजीव दववदेसेण अगुरुलहुए अणतहि अगुरुलघुगुणेहिं सजुचे, सज्वागासे अणत

नामसे भर्त्सल्ल्याह द्वीप समुद्रों हैं यो यावत् भविष्यत् स्वयम् रमण समुद्र है इनका सप्त अधिकार बाहिर कपुणहरार्थ
द्वीप का कहा वैसे ही कहना यावत् सप्त वर्णास्तिकाया अपर्णास्तिकाय व आकाशास्ति काया क
द्वय व प्रदेष्ट मे स्थिति है परंतु काल स्थिति नहीं है ॥ २५ ॥ अथा मगवन् ! लोढ किस को स्थिति का
रहा है व कितनी काय को स्थिति कर रहा है ! अहो गौतम ! जिस आकाशास्ति काया का कहा वैसे ही
कहना ॥ २६ ॥ अहो मगवन् ! अलोक किस को स्थिति कर रहा ! और कितनी काया की साथ स्थिति
हुआ है? अहो गौतम ! वर्णास्तिकाय स पापत् आकाशास्ति काया से स्थिति हुआ नहीं है फक्कएक आकाशा
स्तिकाया के देष्ट व प्रदेष्ट स स्थिति हुआ है तैत्तेरी पृथ्वी काया से यावत् काल सभी स्थिति हुआ नहीं है मात्र
एक मनोव के स्थिति है वर अगुरु लघु अनंत द्रव्यात्मक है अगुरु लघु गुण सयुक्त है एक २

म गणे ॥ पणमणाण मगनईण इदियपयस्स यत्तमो उद्वेसगो मम्मसो ॥ १५ ॥ १ ॥
 (गाहा) इदिय उवचय, निवसुणाय, समयामेवे, असखेजा, लक्खी, उरमागद्धा, अप्पायहुए
 विसमाहिया ॥ १ ॥ उगाहणा अशा ईहा तह यजणोगाहचेत्र, दन्निविम, भावि
 दि, तीया बद्धा पुरे कडियाय ॥ २ ॥ १ ॥ कहन्निहेण मते ! इदिय उवचए
 पणत्ते ? गायमा ! पचाचिहे इदिय उवचए पणत्त तजहा माहदिय उवचए
 चक्षिस्वदिय उवचए घणिदिय अउवचए जिन्निदिय उवचए फांनिदिय उवचए ॥
 जरहुयाण भत्त ! कतिचिहे इदिय उवचए पणत्त ? गोयया ! पचविह इदिय उवचए

आशाधार भत्त भगुरु उयवर्गण है मय भाकाठ में अनंत मात कम है (काफाळ का) यह मगवती पञ्चपणके
 इन्द्रियपद पञ्चरश्मि का परिष्ठा ब्रह्मा संपूर्ण हुआ ॥ १२ ॥ १ ॥

अत्र दूसरा उद्देशा कहने है उन के द्वार क नाम— १ इन्द्रिय उपचय द्वार, २ निवृत्ति द्वार, ३ इन्द्रिय
 निवर्तन क समयक असंस्थान मत ४ इन्द्रियोंकी सन्धि, ५ इन्द्रियोंका उपयाग, ६ मरणा बहुत द्वार, ७
 भ्रमणादना द्वार, ८ भ्रमग्रह द्वार, ९ ईहाद्वार, १० अशायद्वार, ११ वृक्ष्यान्त्रय द्वार, १२ मायोन्त्रय द्वार, १३
 ग १ ६ स यनमान हात व अनागत कास द्वार यह १३ द्वार कहत है ॥ १ ॥ मरने मगवन् !
 इन्द्रिय हा उपरय किन्ना कहा है मया गीतमोवाच मकारका इन्द्रियहाउपचय कहा है मिनके नाम १ श्रीमोन्त्रय

पण्णत्त तज्झा! सौइदिए उच्चयं जात्र फासिदिण उच्चए एव जात्र वेमाग्निमसं सक्क
 सरस जइ इदिया तरस तइविहोणं इदिय उच्चयाओ भाणियच्चो ॥ २ ॥ कसिदिहोण भत्ता!
 इदिया निवत्तणं पण्णत्ता ? गोयमा ! पच्चविह्व इदिय निवत्तणं पण्णत्ता तज्झा
 सोइदिय निवत्तणं जात्र फासिदिण निवत्तणं ॥ एव पेइयाण जात्र वेमाग्नियाण, जइ
 जस्स जइ इदिया अत्थि तरस तयविह्व निवत्तणं भाणियच्चो ॥ ३ ॥ सोइदिय निवत्त-
 णाण कइसमया पण्णत्ता ? गोयमा ! असस्सज्जा समया संतोमुहुत्तिया पण्णत्ता ॥ एव
 जात्र फासिदिण निवत्तणं ॥ एव पेइयाण जात्र वेमाग्नियाणं ॥ ४ ॥ कतिविह्वण

अहो भगवन् नारकी को कितने इन्द्रिय उपचय करे है? अहो मौलम' नारकी को पांच इन्द्रिय उपचय करे है
 आश्चर्य, उचय पादव स्पष्टेन्द्रिय पठचय ऐसे ही वैमानिक पर्यटन भिनकी भिनकी इन्द्रियों द्वारा उनको उतने
 इन्द्रिय उपचय करना ॥ २ ॥ अहो भगवन् ' इन्द्रिय निर्बतना कितने प्रकार करी ? अने मौलम ! पांच प्रकार
 की इन्द्रिय निर्बतना करी आश्चर्य निवर्तना पादव स्पष्टेन्द्रिय निर्बतना नारकी स वैमानिक पर्यटन ऐसे ही
 करना परंतु भिनकी भिनकी इन्द्रियों द्वारा उनको उतनी करना ॥ ३ ॥ काल द्वार-अहो भगवन् ! आश्चर्य
 निर्बतना के कितने समय करे ? अहो मौलम ! अतल्यात सप्तम राधा भंतमुद्रा कर दे ऐसे ही
 स्पष्टेन्द्रिय पर्यटन करना ऐसे ही नारकी पादव वैमानिक पर्यटन जानना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! कितनी

सियाए उवओगन्दाए कयरे २ हिं तो अप्यावा ४ ? गोथमा ! सन्वत्यथावा चर्विस्वदियस्स जह
 णिया उवओगन्दा सोइवियस्स जहम्मिया उवओगन्दा विसेसाहिया घाणिदियस्स जहम्मिया
 उवओगन्दा विसेसाहिया, जिर्भदियस्स जहम्मिया उवओगन्दा विसेसाहिया फल्लिदि
 यस्स जहम्मिया उवओगन्दा विसेसाहियाए, उक्कोमियाए उवओगन्दा सक्कत्थावा
 चर्विस्वदियस्स उक्कोमिया उवओगन्दा, सोइवियस्स उक्कोमिया उवओगन्दा विसेसाहिया
 घाणिदियस्स उक्कोमिया उवओगन्दा विसेसाहिया, जिर्भदियस्स उक्कोमिया उव
 ओगन्दा विसेसाहिया, फासिदियस्स उक्कोमिया उवओगन्दा विसेसाहिया ॥ जहम्म
 कोमियाए उवओगन्दा सन्वत्यथा चर्विस्वदियस्स जहम्मिया उवओगन्दा सोइवियस्स

कौन किन म भग्न बहुरूप व विशेषाधिक है ! अहा गौतम ! १ मय स थाहा वस्तुनिद्रय का अपन्य
 उपयोग काल उन स आग्निनिद्रय का अपन्य उपयोग काय विषयाधिक २ इसमें प्राणीनिद्रय का अपन्य
 उपयोग काल विशेषाधिक ४ वस से जिह्वानिद्रय का अपन्य उपयोग का काल विषयाधिक और ५ वस स
 स्त्रीनिद्रय का अपन्य उपयोग काल विषयाधिक अब उत्कृष्ट उपयोग का करने हैं १ मयम योहा वक्षान्द्रिय
 का उत्कृष्ट उपयोग काल, २ ओत्रीनिद्रय का उत्कृष्ट उपयोग काल विषयाधिक ३ इस से प्राणीनिद्रय का
 उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ४ इस से जिह्वानिद्रय का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक और इस
 म स्त्रीनिद्रय का उत्कृष्ट उपयोग काल विषयाधिक अब अपन्य उत्कृष्ट उपयोग आग्नि करे हैं १ सव

जहणिया उवओगढा विसेसाहिया, घणैदियरस जहणिया उवओगढा विसेसा
हिया, जिर्मिदियरस जहणिया उवओगढा विसेसाहिया, फासिदियरस, जहणिया
उवओगढा विसेसाहिया, फासिदियरस जहणिया उवओगढाहि तो चार्किदियरस
उक्कासिया उवओगढा विससाहिया, साइदियरस उक्कासिया उवओगढा विससाहिया,
घाणिदियरस उक्कासिया उवओगढा विससाहिया, जिर्मिदियरस उक्कासिया उवओ-
गढा विससाहिया, फासिदियरस उक्कासिया उवओगढा विसेसाहिया, ॥ ७ ॥
कईविहेण भते ! इविय उगगहे पणसे ? पचविहे इदिय उगगहे पणसे तजहा

तथा वाह्य बहुश्रुतिरूप्य का तदन्य उपयोग काल २ उन से प्राप्तिरूप्य का मध्यम उपयोगकाल विशेषाधिक ३ इस न पार्वतिरूप्य का मध्यम उपयोग काल विशेषाधिक, ४ इस न मितिन्द्रिय का लघन्य उपयोग का विशेषाधिक ५ उन से स्वर्णरूप्य का लघन्य उपयोग काल असंख्यगुना ६ उन स बहुश्रुतिरूप्य का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक इससे ७ आश्रितरूप्यका उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक ८ इस मद्रूप्य का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक ९ तमस मितिन्द्रिय का उत्कृष्ट उपयोगकाल विशेषाधिक और १० इससे स्वर्णरूप्य का उत्कृष्ट उपयोग काल विशेषाधिक ११ ॥ अतो मगधनु' इन्द्रिय अवग्रह कितन प्रकार का कहा

सोईदिय उगगेहे, जात्र फासिदिय उगगेहे एव नेरइयाणं जात्र वेमाणिमाण, जवर
 जरस अई इदिया अस्थि ॥ ८ ॥ कइविहेण भंते ! इदिय अत्राए पण्णसे गोयमा !
 पचविहे इदिय अत्राए पण्णस तजहा साइविथ अत्राए जात्र फासिदिय अत्राए ॥ एव
 भरइयाण जात्र वेमाणिमाण, जवर जरस जतिया इदिया अस्थि ॥ ९ ॥ कइविहाण
 भंते ! ईहा वण्णसा ? गोयमा ! पचविहा ईहा पण्णसा तजहा सोइदियइहा जात्र
 हे ! अही गौतम ! पांच प्रकार क अवघोरे कह है आअन्निय का अवग्रह यावत् सार्द्धेन्द्रिय का अवग्रह
 यो नारकी से वैमानिक पर्यंत कइना परंतु इतना विषय कि मित्र स्थान जितनी इन्द्रियों होवे तवनी
 प्रवच करना ॥ ८ न अही यावत् ? कितने प्रकार का इन्द्रिय का अत्राए कहा ? अही गौतम ! पांच
 प्रकार का इन्द्रिय अत्राए कहा ? अक्षेन्द्रिय अत्राए यावत् सार्द्धेन्द्रिय अत्राए यो नारकी से समाकर
 विमानिक पर्यंत चौबीसही वृत्तक र्थे जिन का जितनी इन्द्रियों होवे तवनी इन्द्रियों कहना ॥ ९ ॥ अही
 यावत् ! कितने प्रकार की इन्द्रिया की ईहा कही ? अही गौतम ! पांच प्रकार की

१. भंते कोई निद्रस्थ मनुष्य है उस को किसीने पुकारा उस को शब्द यह सामान्य पना से ग्रहण कर कि मुख
 कोइ पुकारता है यह अवग्रह, तौन मुखे पुकारता है ऐसा विचार करे यह ईहा, अमुक मुखे पुकारता है ऐसा निश्चय करना मो
 अत्राए, और बहुत बरल व्यतीताहुए पीछे यादनामा कि अमुकअं मुखे पुकाराया यह धारणा यहा बोधा भेद नहीं अत्राए

फासिदियइहा मूव जाव धेमानियाणं पत्रर जस्स जइ इदिया अरिथ ॥ १० ॥
 कइविहेण भते ! उगहे पण्णत्ते गायमा ! इविहे उगहे पण्णत्ते, तजहा अरोगा-
 हेय, धजजोगहे ॥ धजजोगहेण भत ! कइविहे पण्णत्ते ? गोयमा ! चउविहे
 पण्णत्ते तजहा सोइदिय धजजोगहे, धाणिदिय धजजोगहे, जिम्भदिय धजजोगहे
 फासिदिय धजजोगहे ॥ अरयागाहण भत ! कइविहे पण्णत्ते ? छन्निहे पण्णत्ते
 तजहा साइदिय अरयोगहे, चक्खिदिय अरयोगहे, धाणिदिय अरयोगहे जिम्भदिय-
 खत्थोगहे, फासिदिय अरयोगहे, जो इदिय अरयागाह ॥ गेरदयाण भते ! कइविहे

इन्द्रिय की ईश करो आश्रित्य पादत् स्पर्शेन्द्रिय की ईश पों मास्की से वैमानिक
 पर्वन्त चौबीस ही दंडक में भिन को त्रितनी इन्द्रियों हाथ बन को वतनी इन्द्रिय की ईश करना ॥ १० ॥
 अहो मगबन् ! अवग्रह कितने प्रकार का करा ! अहो गौतम ! दो प्रकार का अवग्रह करा—१ अ
 पावग्रह सो दूर रही वस्तु ग्रहण करें, और २ व्यजनावग्रह सो वस्तु का स्पर्श कर ग्रहण करे अहो मग
 बन् ! व्यजनावग्रह क कितन भेद कहे ? अहो गौतम ! व्यजनावग्रह के पचि भेद कहे—१ श्रोत्रेन्द्रिय
 व्यजनावग्रह, २ घ्राणेन्द्रिय व्यजनावग्रह, ३ जिह्वेन्द्रिय व्यजनावग्रह, और ४ स्पर्शेन्द्रिय व्यजनावग्रह
 अर्थावग्रह के कितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! अर्थावग्रह के छ भेद कहे हैं—१ श्रोत्रेन्द्रिय का

उगमाहे ? गोपमा ! बुद्धिहे पण्णत्ते तंजहा अरथोगगहे, वंजणोगगहे पंथ
अतुरकुमाराण जाय धणिय कुमारानं ॥ पुढविकाइयाणं भते ! कइविहे उगगहे
पण्णत्ते ? गोपमा ! बुद्धिहे उगगहे पण्णत्ते तंजहा अरथोगगहे वंजणोगगहे ॥ पुढवि
काइयाण भतकइविह वंजणोगगहे पण्णत्ते ? गोपमा ! एगे फासिदिय वंजणोगगहे पण्णत्ते ॥
पुढवि काइयाण भते ! कइविह अरथोगगहे पण्णत्ते ? गोपमा ! एगे फासिदिय अरथोगगहे
पण्णत्ते ॥ एवं जात्र उगसतइ कायाणं ॥ एवं वेवियाणवि, जवर बेइदियाण वंजणो

अर्यावप्रद २ चक्षुःशब्द का अर्थावप्रद, ३ श्रावणशब्द का अर्थावप्रद ४ श्रिगेन्द्रिय का अर्थावप्रद
५ शब्दश्रिष्टि का अर्थावप्रद और ६ नो शब्द नन का अर्थावप्रद अहा भगवन् ! नारकी को कितना
अवप्रद कहा है ? अहो गौतम ! नारकी का दो अवप्रद कहा है १ अर्थावप्रद और २ व्यंजनावप्रद
ऐस ही अमर कुमार गायन् म्बनित कुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वी कापा को कितन
आप्रद ! अहा गौतम ! पृथ्वी कापा को एक स्पेर्शेन्द्रिय का व्यंजनावप्रद कहा अहो
भगवन् ! पृथ्वी कापा को कितने अर्थावप्रद कहा ? अहो गौतम ! एक स्पेर्शेन्द्रिय अर्थावप्रद
कहा एम ही वनस्पति कापा पर्यंत जानना एम ही ब्रह्मण्य का कहना परंतु अर्थावप्रद ५ व्यंजनावप्रद

गह दुविह पणत्ते ॥ एवं आय तेइरिय चउरिरियाणवि, जयर इदिय
परिवुद्धी कायवत्ता, चउरिरियाण वजजोगह तिचिहे पणत्ते अत्थोगहे चउन्विहे
पणत्त सेसाणं जहा जेरईय्येणं जाय वमाणियाण ॥ १५ ॥ कइविहाणं
भत्ते । इंदिया पणत्ता ? गायमा! दुविह। पणत्ता तजहा वडिअरियाय भाविदियाय ॥
कइण मन । दल्लिदिया पणत्ता ? गोयमा ? अहु वडिअरिया पणत्ता तंजहा
दोसोत्ता, दोणत्ता, दोघाणा, जीहा, फत्ते ॥ जेरइयाण भत्ते! कइ दल्लिदिया पणत्ता ?
गोयमा । अहु, एत्ते चेय, एय अरकुमाराण जाय थनियकुमाराणवि ॥ पुढविक्काइयाण

दानों प्रकार के जानना ऐसे ही तेशेत्रेय व चतुरेन्द्रिय का जानना परंतु एतैक इन्द्रिय की 'वृद्धि'
करना चतुरेन्द्रिय का व्यवसनादप्रद तीन प्रकारका कहा और अर्थवत्प्रद चार प्रकारका कहा, ये चैमानिक
पयन का नारकी मैस कहा ॥ ११ ॥ अहो मगयन् ! इन्द्रियों कितन प्रकारकी कही ? अहो गौतम ! इन्द्रियों
को प्रहासी करी सस्यया ॥ १२ ॥ वृद्धयेन्द्रियम - भावेन्द्रिय अहो मगयन् ! द्रव्येन्द्रियों कितनी कही ? अहो गौतम ! आठ
ग्रण्येन्द्रियों कही भित्तके नागन्दा आत्र [कान] दान्ध (आल) दो घ्राण (नासिका) जीष्हा और स्वश अहो
मगयन् ! नागकी को कितनी ग्रण्येन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! आठ ग्राहकी को आठ ग्राह्येन्द्रियों कही ।

भंते ! कइ दल्विदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! एगे फासिदिए पण्णत्ते, एव जाव नणम्मइ
 फाईयाण ॥ वेइदियाणं भत्ते ! कइदल्विदिया पण्णत्ता ? गोयमा ! दो दल्विदिया
 पण्णत्ता तज्झा फासिदियय जिडिभादिएय, तइदियाण पुच्छा ? गोयमा ! घत्तारि
 दल्विदिया पण्णत्ता तज्झा दोघाणा, जिहा, फात्ते ॥ चठरिदियाणं पुच्छा ? गोयमा !
 छ दल्विदिया पण्णत्ता तज्झा दाणत्ता, दोघाणा, जिहा फात्ते ॥ सेसाण जहा नेरइयाण
 जाव वेमाणियाण ॥ १२ ॥ एगमेगत्तसण भंते ! नेरइयत्त केवइया दल्विदिया
 अतीता पण्णत्ता ? गोयमा ! ठणत्ता, केवइया च्छेलगा ? गोयमा ! अट्ट, केवइया

बेसेही मनुरकुमार पावत् स्पनिठकुमार पर्यंत कहना अहो भगवन् ! पृथ्वीकापात्रो कितनी इन्द्रियों कही ? अहो
 मोक्षम ! पृथ्वीकापात्र को एक स्पष्टेन्द्रिय है ऐगे ही वनस्पति कापा पर्यंत कहना अहो
 भगवन् ! वेन्द्रिय को कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ! अहो मोक्षम ! दो द्रव्य इन्द्रियों कही—
 १ मिश्री और २ समर्थ वेन्द्रिय का पात्र, दो घाण, १ एक मिश्री और एक स्पष्ट वस्तुगुण्य को
 ठहा मत्त, दो घाण एक मिश्री और एक स्पष्ट द्रव्य सब वैमानिक पर्यन्त नारकी जैसे कहना ॥ १२ ॥
 अहा भगवन् ! एक २ नारकीने द्रव्य इन्द्रियों अतीत काल में कितनी की ? यहा मोक्षम ! एक २
 नारकीने मत्त काल में अनंत द्रव्य इन्द्रियों की ? क्यों कि मेरिय के मीबने मत्त काल में अनंत संसार परि

पुरक्खडा ! गोयमा ! अट्टवा सोलसवा, सतरमवा सखेज्वावा असखेज्वावा अणतावा ॥

पुग्गेमगरसण मते ! असुरकुमारस्स केइया वल्लियदिया अतीता पणसा ! गोयमा ! अणता,

केइया यद्धस्रगा पणसा ! गोयमा ! अट्ट, केइया पुरक्खडा पणसा ! गोयमा ! अट्टवा,

नयाय, सखिज्वावा, असखज्वावा अणतावा एवं जाय थणियकुमारण ताव भाणियज्ज ॥ एव

पुढविकाइया आठकाइया वणस्सइकाइयस्सवि, णवर केइया वद्धस्रगत्ति पुच्छा ! एव उंचर

धम्म कीपा रे मया भगवन् ! एक नारकी पर्वमान काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों का बंध कर

रहा है ! अहो गौडम ! आठ द्रव्य इन्द्रियों अहो भगवन् ! नारकी अनागत काल में कितनी

द्रव्य इन्द्रियों करेगा ! मया गौडम ! आठ, सोलस, सतर, अथवा संख्यात असंख्यात व अनंत करेगा

बवों कि नारकी नीकस का मनुष्य हाकर यास जानेवाला जोष आठ ही मनुष्य संबंधों द्रव्येन्द्रिय करेगा

तिर्यंच का मम बीच में करके मनुष्य होकर मास जावेगा वह सालह द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा, नरक से

नीकस का तिर्यंच पनेन्द्रिय होकर पृथ्वी काया में उत्पन्न होकर मनुष्य में स मोक्ष माने वह सतर

इन्द्रियों का बंध करेगा संख्यात काल भसार परिभ्रमण करेगा तो संख्यात द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा

ममंभ्यात काल तक परिभ्रमण करेगा तो असंख्यात द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा और अनंत

काल तक परिभ्रमण करेगा तो अनंत द्रव्य इन्द्रियों का बंध करेगा यथा भगवन् ! भस्मरूपारन

पग फासिदिए ददियारिए ॥ एव तलकद्वय गारकाइयससनि गवर पुरखखडा, गववा
 वसवा एव वइदिय'णमि गवर वदखगग पुच्छा ? गोयमा! दपिंग, एव तेइदियससनि
 गवर बंदेछुगा खलारि, एव चउरिदियससनि, गवर बंदलगग ? गोयमा! छवा ॥ पविदिय
 निरिखखोजिणिय मणुसमा वाणमतरा जातिसया सोइमोसाणग दवरस जहा अनुर
 कुमारस गवर मणुसस पुरखखडावरसइ अथि करसइणालि, जरसअथि अटुवा

कितनी द्रव्य इन्द्रियों अहीन काह में की ? अवा यौतम ! अर्नत न्य इन्द्रियों की वर्तमान काल में
 कितनी द्रव्य इन्द्रियों का बच कर बैठ है ? अवा मोलस ! आठ द्रव्य इन्द्रियों का बच कर बैठ है
 मनागत काम में कितनी करेग ? अवा गौनम ! आठ, नव, गख्यात असेखयात व अनन द्रव्यइन्द्रियों
 का बच करेये असुकुमार का जीव पृथ्वी वाया में रहना हुवा मनुष्य हाकर मोस में जाव उस डा
 अथि नव एम ही स्यनित कपार परेत काना एम ही पृथ्वीकाया, अष्टकाया व बनस्पतिहाया का
 कहना परतु इन में वर्तमान काल माथिय एह सौंन्द्रिय का बच करन है एमे ही तेठकाया व
 पाउकाया का कहना, परतु पुराकृण नव तथा दस कहना; क्योंकि तेउ, वायु हा निकला मनुष्य नहीं। हा। ते
 तिप्रैव ही हाता है, इसलिय एक मवपृथ्वीकाया का करके मनुष्य में जाकर मोस में जाव एम ही बेई द्रव का
 मानता परतु इन में वर्तमान काल माथिय वा इन्द्रियों का बच करते हैं तइ द्रव का भी बिस हो। कहना

नवया मुखज्वा अमखज्वा अणतावा सणकुमार माहिंद धम लताग सुंके सहसरार
जाणय पाणय आरण अच्युय गविजग दवरसय जहा नरहरसर ॥ पगमगास्सण
भन ! विजय यजयत जयत अपराजिय दवरस कवइया दठिवाडिया अतीता पणसा?
गाथमा ! अणता कवइया बरलगा ? अट्ट कवइया पुरेवडा ? गोयमा ! अट्टवा
रसमवा घायामवा सखज्वा ॥ सववट्टसिद्धग देवाण भन ! कवइयो दोले
परंतु वार इज्जो का धय यत्थान भाआ करत ट वमुरन्दिप पे वत्तमान आश्री ७ इल्लियो का धय
काम है निरय पचेन्द्रय स्तुप्य बाणव्यनर ज्योतिपि सार्थम वइआन दवलोक का अक्खु जुवार जम
वह ! कत स्तुप्यका मवेव्यक्काळ भाश्रिय कितनको नई हाता है और कितनको हाता है आ मास
चतन ट ताका म ! गत काळआथयइज्जो इज्जो नई है ती है जिनको हाती है वा थाठ, नइ सख्खात,
ध रस म अथवा पनन हाती है मररकमर, माहन् वप्पलाग लोभक, पाणुक्क सहसार, आणत माणत,
३। ७ भवपु १ पत्रेयक्का ७रको जववडा अओ मग नु' एक विजय, वजयत जयत प मपरार्जितव
४। ७ भाति काप म कितनी द्रव्य शान्त्या कही ! अहा गीतम ! अन्त दुग्ग इन्द्रियो कही अहा मगवन् !
कितनी का धय करगहन ह ? अहा मोक्षप' आठ और कितनी का धय करगो ? अओ गीतम ! आठ, सोलह
प द म धय ॥ १० यान एवो की य दयता सरयात मइ करक मिद्ध हाते हैं परंतु अहस्वपात भव

केवइया पुरकडा ? गायमा ! असंखजा ॥ सखटुग सिद्धाण पुच्छा ? गोयमा !
अतीता अणता, कवइया वद्धलुगा पण्णत्ता ? गोयमा ! सखेजा केवइया पुरकडा ?
गायमा ! सखेजा ॥ १४ ॥ एगमगस्सण भते ! जेइयस्स जइयत्ताए कवइया
दइयइया असीता ? पण्णत्ता गोयमा ! अणता, कवइया वद्धलुगा पण्णत्ता ?
गायमा ! अट्ट केवइया पुरेकडा पण्णत्ता ? गायमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ जत्थि
जस्सअत्थि अट्टवा सालसवा, चठवीसवा सखजावा असखजावा अणतावा ॥
एगमगस्सण भते ! जइयस्स असुरकुमारत्ताए केवइया वड्ढिदिया असीता पण्णत्ता ?

धनुज्य भवंत्यते हैं विभय विगर्हत, जयंत व अपराजित के देवोंने असीत काल में अनंत की, वर्तमान में
अवस्थात हैं, और भनागत में अवस्थात करेंगे सवार्थ बिद्ध की पृच्छा ? अहो गौतम ! असीत काल में
अनंत की, वर्तमान में संख्यात हैं और अनागत में भी संख्यात करेंगे ॥ १४ ॥ अब एक मीर आश्री परस्पर
गोवीस दंडक पर उतारते हैं अहा भगवन् ! एक २ नारकीने नारकी पने असीत काल में कितनी द्रव्य
इन्द्रियों की ! प्रहा गौतम ! अनंत न्य इन्द्रियों की कितनी वची हुई है ? अहो गौतम ! आठ
और कितनी का बय करेंगे ? अहा गौतम ! कोई करेगा और कोई नहीं करेगा अर्वात्
नो नरक में से नारककर पुनः नरकमें नहीं जावेगा और यास में जावेगा उस आश्रय और जा करेगा ता

गायमा ! अणता केवइया वरुहगा पणत्ता ? गायमा ! जत्थि कवइया पुरकडा
पणत्ता ? गायमा ! कस्तइ अत्थि कस्तइ जत्थि, जस्तअत्थि । अट्टा सोअसथा
थउयीम्या सखजावा असखेजावा अणतावा एय जात्र थणियकुमारात्ति ॥ एगमेग
रसण भत्त ! जणइयस्स पठत्ति काइयेत्ताए केवइया वैव्विदिया अतीता पणत्ता ?
गायमा ! अणता कवइया वरुहगा पणत्ता ? गायमा ! जत्थि, कवइया पुरकडा ?
गायमा ! कस्तइ अत्थि कस्तइ जत्थि जस्तअत्थि, एक्कोवा वैवा तिण्णिवा सखजावा
असखेत्त । थणतावा ॥ एव जात्र वणप्पइ काइयात्ति एगमेगरसण भत्त ! जेरहयस्स

आठ माया चैंग, ससपात, असस्यात पे अनत करग अहो भगवन् ! एक २ नारकीने अमुर
कुमारपन अतीत बाल मै कितनी द्रव्य इन्वियों की ! अहो गौतम ! अनत की वषट्क नहीं है
भोर पुराकत कोई द्रव्य कोई नहीं करगा यदि करगा सा अठ, ताउह, वीक्षीग ससपात अमस्यात व
अनत करेगा एने ही स्यन्तित कुभार पयन्त कहना अहा भगवन् ! एक २ नारकीने अतीत फाल
आश्रिय कितनी द्रव्य इन्द्रियों पृच्छीकाया पे की ? अहा गौतम ! अनती की वषट्क नहीं है और
पुराकत कोई करगा कोई नहीं मी करेगा यदि करगा सा एक, दो, तीन, ससपात, अमस्यात, व
सन्त करगा एन ही वतव्यनिकाया पवेष जानना अहा भगवन् ! एक ३ नारकीने बर्द्धपयने अतीत

येइदियत्ताए केवइया दन्विय्या अनीता पण्णात्ता ? गोयमा ! अणता, कइया
 वद्धहुगा गायमा ! णरि, कवइया पुरकडा पण्णात्ता ? गोयमा ! करमइअत्थि करसइ
 णत्थि जस्सअत्थि दाया चत्तारिया छया सखेज्जाया अणतात्ता, एय
 तइदियत्ताएणि णवर पुरकडा चत्तारिया, अट्टुत्ता, बारसत्ता, सखेज्जाया, अस
 खज्जाया अणतात्ता ॥ एय चउरिदियत्ताएणि णवर पुरकडा छया बारसत्ता अट्टारसत्ता,
 सखज्जाया असखज्जाया अणतात्ता पधियि तिरिक्खज्जाणिसत्ताएणि जहा असुरकुमार
 ताए, मणुरसत्ताएणि एवचव णवर कवइया पुरकडा ? अट्टया सोलसत्ता चउत्रीसत्ता

काल में कितनी दृश्य है ? अहा गौतम ! अनंत दृश्य इन्हीं की बद्धक नहीं है और
 पुण्य की किमी की है और किमी को नहीं है जिस का है वन को द्य, चार छ संख्यात, अमल्यत
 व अनंत होगा एसे ही तद्दृश्य का जानना परंतु पुण्य का अर, अठ, धार, संख्यात, असंख्यत व
 अनंत जानना वसुन्धि का भी वैसा ही जानना पातु पुण्य छ, चार, अठ, संख्यात, संख्यात अस
 ल्यत व अनंत जानना भिन्न ॥ १२२ का अपर काल अर छ ॥ मनुष्य का भावो ही कहना परत
 इसमें पुरातु भाठ माल, सोबीस संख्यात असंख्यत व अनंत केगा एसा कहना मनुष्य वर्ज हर सत्तहको के
 जीवों का मनुष्य ११ काइ करगा काइ नहीं करगा वैसा नहीं कहना धाणन्यवर उपातिथी, से यव

तस्मैज्वात्रा असस्मैज्वात्रा अणताया, सध्वोऽसि मणुरसध्वजाण पुरेकडा मणुरसत्ताए करसइ
अत्थि करसइणत्थि एवं नवुध्वइ ॥ वाणमतर जोइसिया सोहम्मग जात्र गत्रज्जगा
दवत्ताए अतीता अणता, धंढस्सगाणत्थि, पुरेकडा कस्सइअत्थि करसइणत्थि,
जस्सअत्थि अट्ठवा साल्लमवा घट्ठीसत्ता सस्मैज्वात्रा, अमल्लजात्रा, अणतावा ॥ एग
मेगरसण भत्ते ! णरइयस्स विजय वेजयत जयत अपराजिन दधत्ताए केवइया
दधिवदिया अतीता पणत्ता ? गायमा ! णत्थि, कवइया बद्धस्सगा पणत्ता ?
गोयमा ! णत्थि कवइया पुरेकडा पणत्ता ? गोयमा ! करसइ अत्थि करसइ णत्थि
जस्सअत्थि अट्ठवा साल्लमवा ॥ सव्वट्ठग सिद्धग दधत्ताए अतीता णत्थि, बद्धस्सगा

बाबत प्रेषक पर्वत में अतीत काय में अनत द्रव्य इन्द्रियों की, बदलक नहीं है और पुराकन किसी को नहीं है और किसी का है जिस को है वह आठ, सास्रह, चौबीस, संख्यात, प्रसख्यात व अनेक करेगा अहा भगवन् ! एक २ नारकीने विमय, वैमर्यत, जयत व अपगभिष में कितनी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काय में कीं प्रशो गै तम ! नहीं की, बदलक नहीं है, और पुराकन किसी को है किसी का नहीं है यदि किसी का है तो वह आठ तथा सास्रह करेगा क्यों की बार अनुषर विमान के हो यह कहते हैं मयार्यसिद्ध कटेवनापने अतीत काय में नहीं की बदलक भी नहीं है और पुराकन किसी को है किसी को

णत्थि, पूरेकढा कस्सइअत्थि कस्सइणत्थि जरसअत्थि अट्ठत्ता ॥ एवं जहा जेरइ
 वंदओनीतो तहा असुरकुमारेणत्थि नयव्वो, जाव पंचिदिय तिरिक्खजोणियाण जवर
 जरससट्ठाने जति वट्ठेलुगा तस्स तइभाणियव्वत्ता॥ एगमेगेस्सण संता मणुसस्स जेरइयत्ताए
 केवइया वट्ठिदिया अतीता पणत्ता ? गोयमा ! अणता, कवइया वट्ठेलुगा पणत्ता ?
 गायमा ! णत्थि केवइया पूरेकढा कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जरसअत्थि अट्ठत्ता
 सोल्लसत्ता चट्ठीसत्ता सखेत्तावा असखेत्तावा अणत्तावा एव जाव पंचिदिय तिरिक्ख
 जोणियत्ताए, जवर एगिदिय त्रिगल्लिदिएसू जरसजइ, पूरेकढा तस्स तत्तिया भाणि-
 यव्वत्ता, एगमेगस्सण भंते ! मणुसस्स मणुरसत्ताए केवइया वट्ठिदिया अतीता पणत्ता

नहीं है जिसको है वह आठ बरोगा जैसे नारकी का दहक रहा जैसे ही असुर
 कथारादि दह भयनपति, बात स्यावर, तीन विरुसेन्द्रिय व तिर्यक्
 पक्षेन्द्रिय पर्यंत कहना परंतु जहां अितनी इन्द्रियों होवे वहां वतनी इन्द्रियों कहना अहो ममबन् ! एक
 अनुव्यने नारकीमें गवीण कासमें कितनी प्रभ्य इन्द्रियों की ? अहो गौसम ! अनन्त प्रभ्य इन्द्रियोंकी बहुव्रक
 नहीं है और पुराकृत किमी का है किसी को नहीं है यदि जिसको है वे आठ, सोल्ल चोरीस, संख्यात
 ब्रह्मसंख्यात व अनन्त करेगा ऐसे ही विविध पञ्चन्द्रिय पर्यंत में इन्द्रियों आश्रिय कहना परंतु पुरुषन्द्रिय में

गोयमा ! अणता केवइया वंछेहूगा पणत्ता ? गोयमा ! अट्ट केवइया पुरेकडा पणत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जरसअत्थि अट्टया सोलसवा चउत्रीमथा सखेज्जाथा र्मसखज्जावा अणताया ॥ याणमेतरा जोइसिया जात्र गेवेज्जग पवत्ताए जेहा णेरइयैपाए ॥ एगमेगरसण मते ! मणुस्सरस विजय वेजयत जयत अणराजित देवत्ताण केवइया धम्मिदिया अतीता पणत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि जरसत्थि अट्टया सालेस्सवा, कवइया वंछेहूगा ? गोयमा ! णत्थि कवइया पुरेकडा ? गाबगा ! कस्सइ अत्थि कस्सइ णत्थि, जरसत्थि अट्टसत्ता सालेत्ता ॥ एगमेगरसण मत ! मणरस सव्वट्ट सिद्धगदेवत्ताए केवत्तिता धम्मिदिया

अतन पुराकृत होव उनको गतनी कइता महा भगवन् ! एह पणुप्येदे धनुज्येने किनी द्रव्य शिंदयो भवीत कालमे की ! अहो गौतम ! अनन बदकक आठ, पुराकृत किसी को है किसी को नहीं है, जिसको है उस को आठ, सोलह चौबीस, सत्सपात, अत्सत्पात व अनत्त है धार्णवत्तर, शंयात्तिपी, चारम् ध्रैयेयक तट्ट मे नारकी जैसे कहना महा भगवन एक २ पणुप्येदे अनीत काल मे विजय, वैजयंत, जयंत प भाराजित मे कितनी द्रव्य शम्भियों की ! महा गौतम ! किसीने की और किसीने नहीं मी की अमन की उमेने आठ प साछर की देवकक नहीं है पुराकृत किमी का है और किसी को नहीं है यदि है

अर्त्तीता पणचा ? गोयमा! करसइ अरिथ करसइ णरिथ, जरसरिथ अट्ट, केवइया-
 वडेलुगा ? गोयमा ! णरिथ, केवइया पुरेवसवा ? गोयमा ! करसइ अरिथ करसइ
 नरिथ, जरसरिथ अट्ट ॥ धाणमतरा जौइसिया जहा णेरइया, सोइम्मग देवेवि जहा
 णेरवते, णवर सोइम्मग देवस्स ॥ विजय वेजयत जयत अपराजियदवसे केवइया
 वडिदिया अर्त्तीता पणचा ? गोयमा! करसइ अरिथ करसइ णरिथ, नस्सरिथ अट्टवा, सोलसवा
 केवइया वडेलुगा ? गोयमा! णरिथ, केवइया पुरेकटा ? गोयमा! करसइ अरिथ करसइ
 णरिथ जरसरिथ अट्टवा सोलसवा, सव्वट्टसिद्धग देवचाए जहा नेरइयरस्स,
 एव जाव नेवेज्जगदेवरसवि सव्वट्टसिद्धय देवचाए ताव णेयव्व ॥ एगमे

तो भाठ व सोलर है एक ७ मनुष्यने सर्गवै सिद्धाने भतीसकाठ माश्रिय किदनी ब्रह्म इन्द्रियो की ?
 महा गीतम ! कितीन की और कितीने हैं की. यदि की ता भाठ की, क्यों की सर्गवै
 सिद्ध का एकही भव करत है ब्रह्मलोक नहीं हैं पुराकृत किमी को है, किसी को नहीं है, यदि होवे तो भाठ
 है बाणप्यंतर उपोत्तिपी का नारकी नैसे कहना सोपर्व देवसाक का भी नरक नै कहना. परंतु सोपर्व
 दवलोक के किसी दवलाने यतीत कल में विनय वैमयत, अथव व अराजित देवपने ब्रह्म इन्द्रियों की है
 और कितीने नहीं भी की है अथ की है तब भाठ की है पदेयग नहीं है, और पुगकृत किमीको है किंस

गरुडभते! विजयवज्रयुत जयत अग्राजित एवरस नेरइयसे केवइया दन्विदिया
 उत ता पणत्ता ? गोयमा ! अणता, कवइया बद्धेत्तगा ? नत्थि, केवइया पुरेकढा ?
 नत्थि एव जाव पच्चिय सिरेक्ख जेणियसे मणस्सत्ते अणता अतीता बद्धेत्तगा
 नत्थि, पुरेक्खढा! अट्ठवा सालसवा चट्ठीसवा सखेत्तगा ॥ वाणमतर जोइसियत्ते
 जहा नेरइयत्ते, सेहम्मग ववत्त अतीता अणता, बद्धेत्तगा नत्थि, पुरेकढा
 कस्सइ अत्थि कस्सइ नत्थि जस्स अत्थि अट्ठवा सालसवा चट्ठीसवा सखेत्तगा
 एव जाव नेवेज्जग ऐवसेवि, विजयवज्रयुत जयत अपराजितत्ते अतीता कस्सइ
 अत्थि कस्सइ नत्थि जस्सत्थि अट्ठ, केवइया बद्धेत्तगा! अट्ठ, केवइया पुरेक्खढा?

को नहीं है, जब है तब भाठ व सोलह है सर्वार्थसिद्ध द्रवता में नारकी जैसे कहना जैसे सौधर्म दबलो
 का कहा वैसा ही प्रियकर पर्यंत सब द्रवताओं का जानना सर्वार्थसिद्ध में वैसा ही इन्द्रियों का बहना
 मही मगयन् ! एक २ विप्रय, वैमर्षत, अयंत व अपराजित द्रवोंने अतीत कास्में नारकी में कितनी द्रव्य
 इन्द्रियों की ! मही गौतम! अनंत द्रव्य इन्द्रियों की बद्धेत्तक नहीं है और पुराकन भी नहीं है ऐसे ही विर्यच
 वैवेन्द्रिय पर्यंत कहना अनुपम में अतीत अनंत, बद्धेत्तक नहीं है और पुराकृत भाठ, सोलह संख्यात
 है वाचस्पतर बभोविपी का नारकी जैसे कहना सौधर्म देखने अतीत कास्में अनंत, बद्धेत्तक नहीं है

कस्सइ अरिय कस्सइ णरिथ जस्स अरिथ अट्ठ ॥ एगमेगस्सण भत्ते !
 विजय विजयंत जयत अपराजिय देवस्स सव्वट्ठसिद्ध देवत्ते कवइया दट्ठिविदिया
 अतीता ? गोयमा ! णरिथ केवइया बट्ठेलगा पणत्ता ? गोयमा ! णरिथ कवइया
 पुरेकट्ठा वणत्ता ? गोयमा ! कस्सइ अरिय कस्सइ णरिथ जस्सस्थि अट्ठ एगमेग-
 रस्सण भत्ते ! सव्वट्ठसिद्ध देवस्स जेरइयत्ते केवइया दट्ठिविदिया अतीता पणत्ता ?
 गोयमा ! अणत्ता, केवत्तिया बट्ठेलगा, पणत्ता ? गोयमा ! णरिथ, कवइया पुरेकट्ठा
 गोयमा ! णरिय ॥ एव माणस्सवज्ज जात्र मेवेज्जग वत्ते ॥ जत्तर मणुस्सत्ते
 अतीता अणत्ता, केवइया बट्ठेलगा ? गोयमा ! णरिथ, कवत्तिया पुरकट्ठा ? गायमा !

और पुराकृत किसी को है किस को नहीं है, जिस को है उन को आठ, तोछा चौबीस व संख्यात है
 ऐसे ही प्रत्येक देव वर्णत कहना विजयवेजयत सर्वत व अपराजित में अतीत किसी का है और किसी को
 नहीं है जिस को है उस को आठ बट्ठयक आठ है, पुराकृत किसी का है किसी को नहीं है, जिस
 को है उस को आठ है एक २ विजय वेजयंत, जयन प अपराजित को सर्वार्थ सिद्धपन अतीत काछ में
 द्रव्य इन्द्रियों नहीं है, बट्ठयक नहीं है और पुराकृत किसी को है, किसी को नहीं है जिस को है उसको
 आठ है अशो मगरन् ! एक २ सर्वार्थ सिद्ध दरो मारकीपने किननी द्रव्य इन्द्रियों अतीत काछ में

अट्ट ॥ विजय विजयत जयंत, अग्राजित पेशे केवइया पश्चिमिया अतीता
 पण्णसा ? गोयमा ! करसइ अरिय कस्सइणरिय, जस्सरिय अट्ट, केवतिया बदेसगा
 पण्णसा ? गोयमा ! जरिय केवइया पुरक्खडा पण्णसा ? गोयमा ! जरिय ॥ एण
 मेगस्सणे भत ? सव्वट्टसिद्धादयरस सव्वट्टसिद्धगदवस केवइया पश्चिमिया अतीता
 पण्णसा ? गोयमा ! जरिय, केवतिया बद्धुगा पण्णसा ? गोयमा ! अट्ट, केवइया
 पुरेक्खडा ? गायमा ! जरिय ॥ १५ ॥ जेरइयत्ते कयतीया पश्चि-
 मिया अतीता पण्णसा ? गोयमा ! अणता पण्णसा, केवइया बदेसगा पण्णसा ?

हो ! अहो गौतमी ! अनेत द्रव्य इन्द्रियोंकी बद्धलक नहीं है और पुराकृत नहीं है ऐसे ही मनुष्य छाहकर
 प्रेमेयक देव पर्यंत कहना मनुष्य में अतीत काल में अनंत, बद्धलक नहीं है और पुराकृत आठ, विजय,
 देवयत, जयत व अपराजितमें अतीतमें किसीका और किसीका नहीं है जिसको है उसको आठ, बद्धलक
 नहीं है पुराकृत नहीं है सर्वार्थ सिद्ध कदम्बम सर्वार्थ सिद्ध के देवपने अतीत कालमें इन्द्र्येन्द्रिय नहीं की बद्धलक
 आठ और पुराकृत नहीं करेगा ॥ १५ ॥ यव बहुत जीवों आश्रित प्रभ करतें हैं अहो मगधन् ! बहुत नारकीका
 नारकी प्रने अतीत काल में कितनी द्रव्य इन्द्रियों करी ! अहो यौतप ! अनन कहीं अहा यौतप ! कितन

गोयमा ! असखेज्जा केवतिया पुरेफडा पणत्ता ? गोयमा ! अणता ॥ णेरइयाणं
 मत ! असुरकुमारचे कवासिया दन्विदिया अतीता पणत्ता ? गोयमा ! अणता, अणता,
 १ । चट्टुगा, ? गोयमा ! णरिथ, केवतिया पुरेखडा पणत्ता ? गोयमा !
 अणता एव जाय गेज्जवचे ॥ णेरइयाणं मत ! विजयेजयतजयत,
 उपराजित दवचे केवइया दन्विदिया अतीता पणत्ता ? गोयमा ! णरिथ, कवतिया
 चट्टुगा पणत्ता ? गोयमा णरिथ, कवइया पुरेखडा ? गोयमा ! असखेज्जा एवं सवट्टु-
 निहगदवसेयि ॥ एव ज व पंचिदिम तिरिक्खजोणिमाण सवट्टुवेवचे खाणियल्ल, णवर

ददल्लक ? ! अहो गातम ! भसरूपात अहो मगरन ! कितने पुगकुत फॅय ! अहो गौतम ! अनत अहो
 मगपन् ! बहुत नारकी की का असुर कुभार पने अतीत कासमे कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ! अहो गौतम !
 अनत, ददल्लक मई ६, अं र पुगकुत अनत ऐस ही त्रेयरु दसवा पने गल्ल सातवा अहो मगवन् !
 नारकी का बिगपाणि पार अनुरर विमान पने अतीत काळ मे दितनी इय्य इन्द्रियों की ? एहो गौतम !
 तई ६ ददल्लक - ई है, और पुगकुत असरूपात एते ही सर्वार्थ सिद्ध का जानना भैसे नारकी का कहा
 भैम ही निर्दिष्ट पंचेन्द्रिय पर्यंत सर्वार्थ सिद्ध पने का जानना भिस मे इतनी विशेषता कि वनस्पति काया

गन्धि कवइया पुरेकडा ? गोयमा ! सिय सखेजो। सिय असखेज्जा, एये सख्खट्टु
सिद्धग देवत्तेये, धाणमतर जोइमिय देवाण जहा णेरइयाण, सोहम्मग देवाण
एय चेव णवर विजय वेजयन जयत अपराजित देवस अतीता असखेज्जा, बद्धेल्गा णरिय
पुरेकडा असखिज्जा सख्खट्टु सिद्धदेवत्ते अतीता गन्धि बद्धल्गा गन्धि पुरेकडा असखिज्जा
एव जाव गेरेजग देवाण, विजय वेजयत जयत अपराजित देवाण भंते ! णेरइयत्ते
केवत्तिया धन्निवदिया अतीता णणत्ता ? गोयमा ! अणता, केवइया बद्धेल्गा ?
गन्धि, कवइया पुरेकडा ! गन्धि, एव जाव जोइसियत्ते, णवर एस्सिमणुस्सत्ते
अतीता अणता, केवत्तिया बद्धल्गा ? गोयमा ! गन्धि, पुरेकडा असखेज्जा, एव

स्याव् अनस्यात : ऐसे ही सर्वाथ सिद्ध देवता का भी जानना वागव्यतर ज्याविषी का नारकी जैसे
सौषर्मे देवसाक का भी वेत ही परंतु बिजयादि चार में अतीत असंख्यात ऐसे ही द्वैषेयक द्वा पर्यन्त
कहना अहा भगवन् ! विजय, वैजयंत, जयत व अपराजित देव को अतीत काल में नारकीयने किठनी
द्रव्य इन्द्रियों की ! अहा गीतम ! अनंत बद्धेत्तक नहीं है और पुराकृत अमस्यात एस ही ज्यातिपी
पयन्त कहना मनुष्य में अतीत अनंत बद्धेत्तक नहीं है पुराकृत अमस्यात ऐसे ही प्रवेयक देव तक
करना स्वरूपान भाश्रिय अतीत अमस्यात, बद्धेत्तक अमस्यात, और पुराकृत असंख्याव सर्वाथ सिद्ध

जगत्तु गेवज्जग देवत्ते, सट्ठाणे अतीता असस्सेज्जा, केवइया बट्टेलगा ? मोक्खमा !
 असस्सेज्जा, केवइया पुरेकहा ? गोयमा ! असस्सेज्जा, सव्वट्टुसिद्धग देवत्ते अतीता
 णत्थि, बट्टेलगा णत्थि पुरकहा असस्सेज्जा, सव्वट्टु सिद्धग देवाण भते ! णेरइयत्त
 केवत्तिया वट्ठिवत्तिया अतीता एणत्ता ? गोयमा ! अणत्ता, केवइया बट्टेलगा
 एणत्ता ? गोयमा ! णत्थि केवइया पुरेकहा ! गोयमा ! णत्थि एव सणुस्स
 देवज्ज जाण मत्तेज्जग देवत्ते, मणुस्सत्ते अतीता अणत्ता बट्टेलगा णत्थि, पुरकहा
 सस्सेज्जा, त्रिजय विजयत्त जम्मत णपराजित केवत्तु केवइया वट्ठिवत्तिया अतीता।

देव में अतीत काल में नहीं है, बट्टेलक नहीं है व पुराकृत अस्तित्वात् है अहो मणुस्स ! सर्वार्थे सिद्ध देव को
 नारकी में अतीत काल आश्रित्य कितनी द्रव्य इन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अनन्त पट्टेलक नहीं है,
 पुराकृत नहीं है ऐसे ही मनुष्य वर्षेकर श्रेयस्क देव एवम्त कहना मनुष्य में अतीत काल आश्रित्य
 अ-१६, बट्टेलक नहीं है व पुराकृत सत्त्वात् विजय विजयत्त जम्मत अपराजित-में द्रव्योन्मय अतीत
 काल में सत्त्वात् है, इत्थेक नहीं और पुराकृत नहीं अहो मणुस्स ! सर्वार्थे सिद्ध देव को सर्वार्थ
 सिद्ध देवपदे महीन काल में कितनी प्रत्येन्द्रियों कही ? अहो गौतम ! अतीत आश्रित्य द्रव्योन्मय नहीं,

पण्णत्ता ! गोयमा ! सखजा, केवइया वडेखंगा पण्णत्ता ? गोयमा! जल्लिंथ केवइया पुरकडा पण्णत्ता ? गोयमा जल्लिंथ ॥ सववट्ठु सिद्धा देवाण भंत ! सववट्ठुसिद्धा देवत्ते केवइया दडिअदिया अतीता ? जल्लिंथ, केवइया बडेलगा ! सखेमा, केवइया पुरकडा ? जल्लिंथ ॥ १६ ॥ कइण भंते ! भाविदिया पण्णत्ता ! गायमा ! पचम ! वाद ! पण्णत्ता ! तज्जहा सोइदिण जाव फासिदिण भंते ! कति भाविदिया पण्णत्ता ! गोयमा ! पेच भाविदिया पण्णत्ता तज्जहा सोइदिण जाव फासिदिण, एवे जस्स अइदिया तस्स ततिया भ गियव्वा जाव वेमाणिमाणं ॥ १७ ॥ पगमगरस्स भंते ! नरइयरस केवतिया भाविदिया अतीता पण्णत्ता ! गोयमा !

हे, बडेलक संख्यात और पुराकृत नहीं है ॥ १३ ॥ भहा भगवन् ! भावेन्द्रिय कितनी कही ! अहो गौतम ! भावेन्द्रिय पाँच कही जिन के नाम—श्रावोत्रिय यावत् श्रोत्रोत्रिय अहो भगवन् ! नारकी को कितनी भावेन्द्रिय कही ! अहा गौतम ! नारकी को श्रावोत्रिय यावत् श्रोत्रोत्रिय यों पाँच भावेन्द्रिय कही एम ही वैमानिक वर्धन कहना ॥ १७ ॥ भग्न एक मीन भाविग्रिय समुत्थय चौधीस वंढक पर भग्न करते हैं अहो भगवन् ! एकेक नरिबेन अमीन फाल में कितनी भावेन्द्रिय की है ? अहो गौतम ! भग्न की है बडेलक जिननी है ? पाँच है, बार पुराकृत जिननी करेग ! अहो गौतम ! पाँच, दस,

अगता यणत्ता, केवइया धंढत्तगा पणत्ता? गोयमापन्नं चइया पुरेकहा पणत्ता? गोयमा
पेनवा दसथा, प्पधारसत्ता सखेज्जावा असखेज्जावा अणत्ता एव असुरस्सत्ति णर पुरकहा
एव च छथा सखेज्जावा असखेज्जावा अणत्ता, पच्च जाय थणिय कुमारस्सत्ति ॥ एव
पुट्ठथिमाइया, आउकाइया यणस्सइकाइयरमत्ति, वेद्धियत्तेइदियच्चउरिदियस्सत्ति
तेउकाइय वाठकाइयरमत्ति एव च णर पुरकहा छथा सतसत्ता सखेज्जावा अस
खेज्जावा, अणत्तावा ॥ पंचिदिया तिरिस्सवजाणियस्स जाव ईसाणरस जहा असुरकुमा,
ररस, णर मणुस्स पुरेक्खहा कस्सइअरिथ करमइणत्थि माणियच्च ॥ सणकुमाररस
जाव गेवेज्जरस जहा प्पेरइयरस ॥ थियय थिययत जयत अणालिय दवरस अतीता

इदमाह, संस्त्यात् अमलवात् य मर्नेत करेण अमुर कुमार का एमेही जानना; परंतु वे पाँच, छ, मलयात् अममयात् य मर्नेत करेण एमेही स्थित कुमार का जानना पृथीकाया, अप्काया, वनस्पतिकाया, वइत्तिय, तेइत्तिय, व वतुइत्तिय का येम ही करना तेउ थायु का यते हो जानना परंतु पुराकृत छ, मात, मातगत अममगत व अनम मानना त्रियैव पचेत्तिय वनुत्तिय, गणत्तिय, उयात्तियी, मौयर्व व इत्तान न्वचोक्त का अमुर कुमार जो जानना विंशयना इन में यह है कि वनुत्तिय में पुराकृत किमी को है और किमी को नहीं थी है मनस्कुपर द्वय म व ग्रैयैक द्वय गर्थ का नारकी अये करना विजय,

अणता, बद्धाणा पच, पुरेकडा पच, पुरेकडा पच, पुरेकडा पच, पुरेकडा पच, सन्वट्टसिद्धा
देवस्स अतीता अणता, बद्धाणा पच, केवइया पुरेकडा पच ॥ १८ ॥ नेरइयाण भते !
केवतिया भाविदिया अतीता वण्णत्ता ? गोयमा ! अणता केवइया बद्धाणा पण्णत्ता ?
गोयमा ! असस्वत्ता पण्णत्ता, केवइया पुरेकडा अणता एव जहा दान्नादिएसु पोहत्तेण
दंडओ भाणिअ ! नहा भाविदिएसुयावि पाहसेण दडआ भाणियन्वो, णत्तर वणस्सइ
काइयाण बद्धाणाणि अणता ॥ १९ ॥ एगमगरसण भते ! नेरइयस्स पारइयत्ते
केवइया भाविदिया अतीता वण्णत्ता ? गोयमा अणता पण्णत्ता, केवइया बद्धाणा

नैऋत्यं, ज्येष्ठं च अदरान्जितं मे अतीतं अनन्तं, बद्धेल्लक पांच, व पुराकृत पांच, दश, पञ्चदश च संसृपात-
 प्रानना सर्वाँर्षि सिद्ध मे प्रतीतं अनन्तं, बद्धेल्लक, पांच, व पुराकृत पांच ॥ १८ ॥ अब बहुत भीष
 भ्रात्रिय प्रसन्न करत हैं अहो मगधन् ! बहुत नारकीन कितनी मावन्द्रिय असीत काल मे की ! अहो गौतम !
 बहुत नारकीन अनन्त भाषन्द्रिय असीत काल की है ॥ मगधन् ! कितने बद्धेल्लक ! अहो गौतम !
 असंख्य, किन्तु पुराकृत ! अहो गौतम ! अन्तरे यों द्रव्यन्द्रिय का बहुवचन आश्रिय दंडक कहा या
 देत हो मावन्द्रिय मे सब कहना पाते बनस्पति काया मे अनंत बद्धेल्लक मानना ॥ १९ ॥ अहो मगधन् !
 एक ॥ नारकीने नारकी पने कितनी मावन्द्रिय असीत काल मे की है अहो गौतम ! अनन्त मावन्द्रिय की

लेपुरस्वदत्तु गतव्या, चटर्धगमाजहृष दन्विदियाजात्र सख्यद्वोसिद्धगधेषाणं, सम्वद्वमि-
 दुर्ग देवसि कवर्तिया भोत्रिविया अतीतां पण्णसी ? गोपदो ! जत्थि, कवर्तिया
 धवर्तिया पण्णसी ? गोपदो ! सख्यद्वोसिद्धगधेषाणं ? गोपदो ! जत्थि
 इति पण्णविजां सगर्तुं पण्णरसिद्धगधेषाणं ॥ १५ ॥

इतिन्द्रिय तैले सख्यद्वोसिद्ध गप पर्वते कवर्तिया भोत्रिविया अतीतां पण्णसी ? गोपदो ! जत्थि, कवर्तिया
 धवर्तिया पण्णसी ? गोपदो ! सख्यद्वोसिद्धगधेषाणं ? गोपदो ! जत्थि
 इति पण्णविजां सगर्तुं पण्णरसिद्धगधेषाणं ॥ १५ ॥



॥ पौंडश प्रयोग पदम् ॥

कतिविद्हेन भत ! वआगे पण्णत्ते ? गोप्येसिद्ध पण्णरसविह पण्णत्ते तंजहा-संखमण
 ध्वओगे, मोसर्मणप्पओगे, सच्चामोसं मणप्प्यओगे, असच्चामोस मणप्प्यओगेवि एवं
 वड्ढप्पओगे चउहा ॥ ओराण्हियसंरीरकायप्पओगे, ओराण्हियसंरीरकायप्पयोगे,

अब सोचना प्रयोग पद कहते हैं जिस कर अन्य के साथ सम्बन्ध होने उसे प्रयोग कहते हैं अर्थात्
 मगवत्त ! प्रयोग कितने प्रकार के करते हैं ? अर्थात् गौतम ! पम्परे प्रकार के प्रयोग करते हैं वे जिस
 प्रकार हैं उन प्रकार कहते हैं—१ मत्स्य धन प्रयोग होते पक्षि का स्वभाव होने यथावस्थित वस्तु के
 स्वभाव की चितवना करे वह मत्स्य धन प्रयोग, २ अश्वत्थ धन प्रयोग मत्स्य के विपरीत जानना, ३ मत्स्य
 मृगा [मिश्र] धन प्रयोग उक्त दोनों प्रकार को एकत्र कर चितव और ४ अमत्स्य मृगा (व्यर्थहीन)
 धन प्रयोग जो मत्स्य की नहीं हैस अपत्स्य भी नहीं ऐसा चितने के समाना तेज व बली है और चितने
 की शीघ्रता अस्मिता है इत्यादि व्यर्थधार धन प्रयोग, ऐमेही बार धन के प्रयोग जानना यथा ५ सूर्य धन
 प्रयोग, ६ मत्स्य धन प्रयोग, ७ मिश्र धन प्रयोग, ८ व्यर्थधार धन प्रयोग, ९ साव कावा के ६ औदारिक
 धरीरकावा का प्रयोग वह धर्यासि धनुष्य तथार्थ तिर्विकको धरीर जानना, १० औदारिक मिश्र धरीर काया
 प्रयोग वह मत्स्य होते तो धर्मन के साथ मिश्र जानना और वेक्यं वड्ढे धरक धनुष्यत्रया -तिर्विक

शठण्डियसरीरकायप्यओगे, वेडण्डिय मौसग सरीर कायप्यओगे, ओहिरम सरीर कायप्यओगे आहारगमीसग सरीर कायप्यओगे कस्मासरीर कायप्यओगे ॥ १ ॥
जीवाण भते ! कतिथिह्येप्यओग पण्यचे ? गोयभा ! पणरसनिह्येप्यओगे पण्यचे

बचेण्डिय और वायुताय वैक्रय शरीर करे तथा वोछा समावे सब, केवल समुदात के वीचे पांचवे समय मे औद्धारिक वैक्रय की मिश्रता गानना, ११ वैक्रय शरीरकाया प्रयोगपगोस दत्ता मारकीका करीर तथा लखियत मनुष्य तिवर वैक्रय किया शरीर १२ वैक्रय मिश्र शरीर काया प्रयोग वह देवता मारकी के अपर्याप्त अवस्था म देव ठलर वैक्रय करे तत्र वैक्रय का मिश्र होवे, तथा मनुष्य तिर्यच वापु वैक्रय करे वह भी वैक्रय औद्धारिक क साथ मिश्र होवे, १३ आहारक शरीर प्रयोग—वौदरपूर्वधर मुनि संराय की निवृत्ति के लिये आहारक शरीर पूतछा बनावे वह, १४ आहारक मिश्रकाया प्रयाग आहारक शरीर करते तथा सुभावते औद्धारिक के साथ आहारक की मिश्रता रहे और १५ कर्माणि शरीर काया प्रयाग सब यद् विप्रसंगति (रास्ते चलते मर्यात् एक शरीर छोड अन्य शरीर मे जाते) ममन करना तथा कलल समुदात के वीचे पांचव समय मे पाता है ॥ १ ॥ अहो मगवत् ! मीव के कितने प्रकार क प्रयोग कहे हैं ! अहो गौतम ! पन्धुर ही प्रकार के प्रयाग कहे हैं तथाया—
१ सरय वन प्रयोग २, वास १ कर्माण शरीर काया प्रयाग वैध अहो मगवत् ! नेति के कितने

कर्मयत्नयोग ॥ एवं जातः यत्नः कर्मयत्नः काङ्क्षयाजः, जन्तुः वातकाङ्क्षयाजः पञ्चविधे पञ्चयोगे, एष्यते तज्ज्ञा आरात्य सरीर कायपञ्चयोगे, ओरात्य मीस सरीर कायपञ्चयोगे, धेठविशेषि कुविह, कर्मासरीभिकायपञ्चयोगे ॥ बाङ्क्षियाज पुच्छा ? गोयमा ! चउविह पञ्च पण्येः तज्ज्ञा—असत्त्वामास वद्विह आङ्क्षियाज ओरात्य सरीर कायपञ्चयोगे ओरात्य मीस सरीर कायपञ्चयोगे, कर्म सरीर कायपञ्चयोगे ॥ एय जात चउरिन्दियाज ॥ बाङ्क्षियाज तिरिक्खजेणियाणं पुच्छा ? गोयमा !

पर्यन्त हो तोना प्रयेग-बन्ध है, जिय में इसना विधिप कि—गायु काया के पांच प्रकार के प्रयोग—यस हाथे १० हीन उच्छाधीर, ४ वैक्कपशीर (क्यापण्योके बन्ध तथा ५ वैक्कप विच्छाशीर काया प्रयागञ्चय बन्धिय कः प्रश्न ! कदा गोयमा ! बार प्रदाह द्वा प्रयोग बन्ध कदा है उच्यते—असत्त्वामास (बन्धवार) बन्धन प्रयोग, २ औदारिक शरीर काया प्रयोग, ३ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोग, ओर ४ कार्पाण शरीर काया प्रयोग ए-ही तद्विद्वत् वाङ्क्षियाज हा भी आत्ता पनेन्द्रिय तिरिय पाणिकका प्रश्न ही कदा गोयमा ! तर प्रदाह के प्रयाग-कदे है—तद्विद्वत् सत्य धन प्रयोग, २ धनपत्य धन प्रयोग, ३ मिश्र धन प्रयोग, ४ दयनदार धन प्रयाग, ५ सत्य बन्धन, ६ असत्त्वामास, ७ मिश्र बन्धन,

तेरमविष्टेप्यओग वण्णच्च तजहा सच्चमणप्यओगे, भोसमणप्यओगे, सच्चामोसमणप्यओगे,
असच्चामोसमणप्यओगे, एव यईप्यओगेवि, आरालिय सररीरकायप्यओगे, ओरालिय मोस
सररीर कायप्यओगे, वेठविजयसररीर कायप्यओगे, वेठविजय मोस सररीर कायप्यओगे, कम्मा
सररीर कायप्यओगे ॥ सणुसाण पुच्छा ? गोयसा ! पन्नरसविहे पण्णको तजहा सच्च,
समणप्यओगे जाव कम्मासररीर कायप्यओगे ॥ वाणसंतर जोइसिय वेमाणियाणं जहा
सेरइयाण ॥ ३ ॥ जीवाण भवे ! किं सच्चमणप्यओगी, ज्ञाव किं कम्मासररीर
व्यवहार वचन, १ औदारिक शरीर प्रयोग, १० औदारिक विभ्र शरीर काया प्रयोग, ११ वैभ्र
शरीर काया प्रयोग, १२ वैभ्र विभ्र शरीर काया प्रयोग और १३ कार्पाण शरीर काया प्रयोग अनुव्यं
का प्रश्न ! अहा गौतम ! पट्टरे ही प्रकार के प्रयोग कहे हैं तथ्या—१ सत्य मन प्रयोग, २ असत्य
मन प्रयोग, ३ विभ्र मन प्रयोग, ४ उपवहार मन प्रयोग, ५ सत्य वचन, ६ असत्य वचन, ७ विभ्र वचन,
८ व्यवहार वचन, ९ औदारिक शरीर प्रयोग, १० औदारिक विभ्र शरीर काया प्रयोग, ११ वैभ्र
शरीर प्रयोग, १२ वैभ्र विभ्र शरीर काया प्रयोग, १३ कार्पाण शरीर काया प्रयोग और १४ आहारक विभ्र शरीर
काया प्रयोग और १५ कार्पाण शरीर काया प्रयोग वाणप्यंतर वयोसिणी और वैपानिक के विना
नेरीया का कर्पा तेषा कइना सच्च ये इतरार प्रयोग हैं ॥ २ ॥ अहो योगवन् ! सच्च ओरो क्वां नस्य मनं

द्वितीयो गी ४ भाग

आहारक	विपत्र
१	२
२	३
३	४
४	५

कायप्यअग्नी ? मायसा ! जीवा सन्नेत्रि ताव होजा, सखम
जप्यअग्नीत्रि जाव वेठविषय सिस्त सरीर कायप्यअग्नीवि कम्मा
सरीर कायप्यअग्नीवि॥अहवेगेय आहारग सरीर कायप्यअग्नी,
अहवेगय आहारग सरीरकायप्यअग्नीगेमा॥अहवेगय आहारग
सिस्त सरीर कायप्यअग्नीवि, अहवेगेय आहारग मीसग सरीर
कायप्यअग्नीगेय ॥ चव भागे ॥ अहवेगेय आहारग सरीर
कायप्यअग्नीय आहारग मीस सरीर कायप्य अग्नीय, अह
वगय आहारग सरीर कायप्यअग्नीय, आहारग मीस सरीर

प्रयोग है कि वास्तव क्या सः जीवों कार्माण शरीर काया प्रयासि हैं ! अने गौतम ! जीम सब का मी
हैस ही कहना प्रत्य मन प्रयागी भी हैं वास्तवैक्य विश्व शरीर काया प्रयागी भी हैं और कार्माण
शरीर प्रयागी भी है क्यों कि स्वार्थों में विप्रागतिवाक्य बहुत पाते हैं इस विषय इन का मी लक्ष्य
सद्वान है इन यागों का विरह नहीं है परंतु आहारक शरीर प्रयोगों किसी वस्तु मिश्रते हैं किसी वस्तु
नहीं भी मिश्रते हैं क्यों कि वस्तुएँ छ परीना का अन्तर पड़ता है, और मिश्रते हैं तब मध्यम एक, दो, को,
तीन वस्तुएँ पृथक् पृथक् मिश्रत है इस सिद्धे आहारक शरीर के १३ भागों होते हैं जिम में से एक

कायप्यभ्यागिणीय अहवेगीय आहारगं सरीरं कस्यप्यभ्यागिणीयम्
आहारगं मीसं सरीरं कस्यप्यभ्यागिणीयम्; अहवेगं आहारगं सरीरं
कायप्यभ्यागिणीयम्, आहारगं मीसं सरीरं कायप्यभ्यागिणीयम्;
एष जीवाण अहू भगा ॥ १॥ नेरह्यमण भते! किं सखंम-
ण्यभ्यागी जाव किं कम्मा सरीरं कायप्यभ्यागी? गियमा! नेरह्यमा
खवेति ताव होज्जा, सखमण्यभ्यागीति जाव वेठविज्ज मीससा
सरीरं कायप्यभ्यागीति; अहवेगीयं कम्मा सरीरं कस्यप्यभ्यागीयं;
अहवेगीयं कम्मा सरीरं कायप्यभ्यागिणीयम् ॥ एवम् अ २५

एक संयोगी ८ भाग

१ भौतिक मिश्र एक	२ भौतिक मिश्र द्वादश	३ आहारक एक	४ आहारक द्वादश	५ आहारक मिश्र एक	६ आहारक मिश्र द्वादश	७ साधन एक	८ कार्वाण द्वादश
------------------	----------------------	------------	----------------	------------------	----------------------	-----------	------------------

संयोगी ८८ आहारक शरीरवाक्का एक, २ आहारक शरीरवाक्के बहुत, १ आहारक मिश्रवाक्का एक, और ४ आहारक मिश्रवाक्के बहुत द्विसंयोगी मी ८ भाग १ आहारक एक, आहारक मिश्र एक, २ आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, १ आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक, और ४ आहारक शरीर काया प्रयोगी भी बहुत और आहारक मिश्र सरीर काया प्रयोगी भी बहुत यों सख आहारक शरीर के भाव मांग हवे ॥ १ ॥ मी भगवन्! नरीये यथा सस्य मत प्रयोगी १ किं यावत् यथा कार्वाण मन् प्रयोगी २? अहा गानम! नरीये सुप बेस ही है भर्वात्तुनरसमे कार्वाण जेठकर दश योग सदैव पसे है

आगीति, कम्मा सरौर कायप्यओगीति, एवं जाय वणफ्फकाईयान्, पन्धरे
वाउफ्फाइया घेउळिथ्य सरौर कायप्यआगीति, वेउळिय मिस सरौर कायप्यओगीति
वेइदियाण भंत ! किं ओरालिय सरौर कायप्यआगी जाव कम्मासरीगन्धिय्य
ओगी ? गायमा ! वेइदिया सन्धति ताव होजा, असच्चामासवइअओगीति,

काया प्रबोधन यहदा व्याशरणे से वाच योग्यात है अहो भगवन्' वेइन्द्रिय औदारिक शरीरकाया प्रबोधि,
हे, औदारिक पित्र सरौर काया प्रयोगी हे वाचन कार्याज शरीरकाया प्रयोगी हैं ! अहो गौतम ! वेइन्द्रिय
भी त्वत् पूर्वोक्त प्रकार ही हैं अर्थात् असत्य युवा [छयवहार] बचन प्रयोगी भी हैं, औदा-
रिक शरीर काया प्रयोगी भी हैं, औदारिक पित्र शरीर काया प्रयोगी भी हैं, और कार्मण्य शरीर काया
प्रयोगी भी हैं, यह चारों में तीन भोगवासे सदैव बहुत विपत्ते हैं यद्यपि वेइन्द्रिय के उत्पन्न होने का
अन्तर मुहूर्त का विशद है तथापि वह अन्तर मुहूर्त छत्रा है और औदारिक का विश्र का अन्तर मुहूर्त
बड़ा है, इसविषये सदैव पाने हैं और कार्मण्य प्रयोगी फदाचिन् प्राप्त हैं, कदाचिन् नईद भी पाने हैं अब
पाते हैं त्वत् अपन्य एक दा तीन छत्तुए आख्यात प्राप्त हैं इसलिये इन में भी दा भोग पाते हैं
औदारिक प्राप्त बहुत कार्मण्य प्राप्त एक, २ औदारिक प्राप्त भी बहुत अन्तर पाते भी बहुत अन्तर ही

ओरालिय सरिर कायप्यओगीवि, ओरालिय भीस सरिर कायप्यओगीवि, अहवेगेय
 कम्मो सरिर कायप्यओगीवि, अहवेगेय वम्मो सरिर कायप्यओगीवि, अहवेगेय
 कम्मो सरिर कायप्यओगीवि, पुन जात्र पठरिदिय ॥ पंधिदिया तिरिक्खं ओणिया।
 जहा नेरइया, जवर ओरालिय सरिर कायप्यओगीवि, ओरालिय भीस सरिर
 कायप्यओगीवि अहवेगेय कम्मो सरिर कायप्यओगीवि, अहवेगेय कम्मो
 सरिर कायप्यओगीवि ॥ ४ ॥ मणुस्सां भंते । किं संबंमण्यप्यठेगी।
 ज्ञात्र किं कम्मोसरिर कायप्यओगीवि ? गोधमा ! मणुस्सां सव्वेवि तावं होज्जं

बोन्दिक्क तत्तु मानना पवेन्दिक्क तिण्ण यानिक का कैमा नेरीय का क्हा तैसे कहना परंतु एवमा विद्वेष की
 १ फल क १ वचन के १ ओदारिक, २ ओदारिक मित्र, १ वैक्य, और १ वैक्य मित्र इन १२ योगबाले
 सदैव बहुत मित्र हैं और कामन करीर काय प्रयोगी कभी पिलेते हैं कभी नहीं मित्र हैं, सब मित्र
 हैं तब अथेन्ध एक दो तीन उत्तु अथेन्ध पिलेते हैं इसलिय इससे भी ठेककर के दोही भगिपति हैं,
 ओदारिक बहुत कामन का एक, और ओदारिक केपी बहुत और कामन कापी बहुत ॥ अहो भनवन् पनुप्य
 २१ वया ससपमन प्रयोगी है कि यावत्तु मया प्रयोगी करि काया प्रसोमी है? अहो गौतय । सप पनुप्योका प्रोक्त

प्रसय नीं ८

१ उद्गारिक मिश्र	१
२ उद्गारिक मिश्र	२
३ आहारक	१
४ आहारक	२
५ आ० मि०	१
६ आ० मि०	२
७ कार्मण	१
८ कार्मण	२

उद्गारिक मिश्र
आहारक के ४ भागे

३० मि०	आहार०
१	१
१	२
२	१
२	२

जोयाणतं अट्ट भगा पत्तेय ॥ अह्वेगेय उरालिय
मीससरीर कायप्पओगीय, आहारग सरीर कायप्प
ओगीय अह्वेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्प
योगीय अहारगसरीर कायप्पयोगिणोय अह्वेगेय
ओरालिय मीस सरीर कायप्पओमिणाय, आहारग,
सरीर कायप्पओगीय, अह्वेगेय ओरालिय मीससरीर
कायप्पओमिणोय, आहारग सरीर कायप्पओमिणोय,

आहारक मिश्र काय प्रयोगी बहुत ७, कार्मण सरीरकाया प्रयोगी एक, और ८ कार्मण सरीरकाया प्रयोगी
बहुत अब द्विभयोगी २६ भागे करते हैं जिस में उद्गारिक के मिश्र से और आहारक से द्विभयोगी
भागे ६ होते हैं यथा— १ औद्गारिक मिश्र काया प्रयोगी एक, आहारक काया प्रयोगी एक, २ अंपवा
औद्गारिक मिश्र काया प्रयोगी एक, आहारक बहुत, ३ औद्गारिक काया प्रयोगी बहुत, आहारक एक
और ४ औद्गारिक मिश्र काया प्रयोगी भी बहुत आहारक भी बहुत अब औद्गारिक मिश्र और आहारक
मिश्र क माप चार भागे औद्गारिक मिश्र ७६, आहारक मिश्र ७६, ७ औद्गारिक मिश्र एक आहारक

सरीर कायप्पओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा
 सरीर कायप्पआगीय, अहवेगेय ओरालिय मीम सरीर कायप्पओगिणोय, कम्मा
 सरीर कायप्पओगिणाय ॥ एवं चत्तारि भगा ॥ अहवेगेय आहारग सरीर कायप्प
 ओगीय आहारग मीस सरीर कायप्पओगीय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्पओ

आहारक
 मीस मे ६ भगे

आ०	मा०	वि०
१	१	१
१	१	१
२	१	१
२	१	१

गीय, आहारग मीस सरीर कायप्पओगिणोय अहवेगेय आहारग
 सरीर कायप्पओगिणोय, आहारग मीस सरीरकायप्पओगीय,
 अहवेग आहारग सरीर कायप्पओगिणोय आहारग मिस्स सरीर
 कायप्पओगिणोय एते चत्तारिभगा ॥ अहवेगेय आहारग सरीर
 कायप्पओगीय, कम्मासरीर कायप्पआगीय, अहवेगेय आहारग
 सरीर कायप्पओगीयकम्मासरीरकायप्पओगिणोय, अहवेगेय आहारग

वीथगी अत्र आहारक और आहारक के मिश्र के चार भगे रहते हैं—१ आहारक शरीर काया प्रयोगी
 एक, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक, २ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक, आहारक मिश्र शरीर
 काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत, आहारक मिश्र काया प्रयोगी एक और ४ आहार

वैद्यारिक मिश्र आ
वैद्यारिक मिश्र ४ ६ मी

व०।प०	आ	पि०
२	१	
१	१	
१	२	
१	३	

वैद्यारिक मिश्र
कार्माण की साथ
६ मी

व०।प०	का०
१	१
१	२
१	३
१	४

अहवेगेय ओरालिय मीस सरिर कायप्यओगीय
आहारग मीस सरिर कायप्यओगीय, अहवेगेय
ओरालिय मीस सरिर कायप्यओगीय, आहारग
मीस सरिर कायप्यओगीय, अहवेगेय ओरालिय
मीस सरिर कायप्यओगीय, आहारग मीस
सरिर कायप्यओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस
सरिर कायप्यओगीय, आहारग मीस सरिर

कायप्यओगीय, चत्तारि मगा ॥ अहवेगेय ओरालिय मीस सरिर कायप्यओगीय,
कम्मासरिर कायप्यओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरिर कायप्यओगीय, कम्मा

मिश्र बहुत, १ औदारिक मिश्र बहुत आहारक मिश्र एक, और ६ औदारिक मिश्र मी बहुत आहारक
मिश्र मी बहुत यह दूरी वीर्यगी इर अर औदारिक मिश्र और कापण क माय चार भाग करन है—
१ औदारिक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी एक, २ औदारिक मिश्र शरीर
काया प्रयोगी एक कार्माण शरीर काया प्रयोगी बहुत, ३ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी बहुत, कार्माण शरीर
काया प्रमाण एक और ४ औदारिक मिश्र काया प्रयोगी भी बहुत, कार्माण काया प्रयोगी भी बहुत यह तीसरी

सरीर कायप्यओगिणोय, अहवेगेय ओरालिय मीस सरीर कायप्यओगिणोय, कम्मा
 सरीर कायप्यओगीय, अहवेगेय ओरालिय मीम सरीर कायप्यओगिणोय, कम्मा
 सरीर कायप्यओगिणाय ॥ एवं चत्तारे भगा ॥ अहवेगेय आहारग सरीर कायप्य

ओगीय आहारग मीस सरीर कायप्यओगीय अहवेगेय आहारग सरीर कायप्यओ

गीय, आहारग मीस सरीर कायप्यओगिणोय अहवेगेय आहारग
 सरीर कायप्यओगिणोय, आहारग मीस सरीरकायप्यओगीय,
 अहवेग आहारग सरीर कायप्यओगिणोय आहारग मिस्स सरीर
 कायप्यओगिणोय एते चत्तारिभगा ॥ अहवेगेय आहारग सरीर
 कायप्यओगीय, कम्मासरीर कायप्यओगीय, अहवेगेय आहारग
 सरीर कायप्यओगीयकम्मासरीरकायप्यओगिणाय, अहवेगेय आहारग

आहारक
 मीम ते ४ योगे

आ०	आ०	मि०
१	१	१
१	१	१
२	१	१
२	१	१

चीमगी भव आहारक और आहारक के मिश्र के चार योगे कहते हैं—१ आहारक शरीर काया प्रयोगी
 एक, आहारक मिश्र शरीर काया प्रयोगी एक, २ आहारक शरीर काया प्रयोगी एक, आहारक मिश्र शरीर
 काया प्रयोगी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयोगी बहुत, आहारक मिश्र काया प्रयोगी एक और ४ आहार

आहारक कार्योण
स ४ मणि

आ० पि०	का०
२	२
२	२
२	२
२	२

आ० पि०	का०
२	२
२	२
२	२
२	२

सरीर कायप्यआगिणीय, कम्मासरीर कायप्ययोगीय, अह्वेगेय आहारग सरीरकायप्यआगिणीय कम्मासरीर कायप्यओगिणीय चठरोमगा अह्वेगेय आहारग मसि सरीर कायप्यआगिनि, कम्मा सरीर कायप्यओगीय अह्वेगेय आहारग मसि सरीर कायप्यओगीय, कम्मा सरीर कायप्यओगीय, अह्वेगेय आहारग मसि सरीर कायप्यओगीणीय, अह्वेगेय आहारग

सरीर कायप्यआगिणीय 'कम्मासरीर कायप्यओगीय अह्वेगेय आहारग मसि सरीर कायप्यओगिणीय कम्मा सरीर कायप्यआगिणीय चठरिमगा' ॥ एव

एक शरीर मी बहुत आहारक मिश्र शरीर काया प्रयागी मी बहुत एव चौथी चौथगी अथ आहारक मीर कार्मण के साथ चार मणि कहते हैं—' आहारक शरीर काया प्रयोमी एक कार्मण शरीर काया प्रयोमी प्रक, २ आहारक शरीर काया प्रयागी एक कार्मण शरीर काया प्रयोमी बहुत, ३ आहारक शरीर काया प्रयागी बहुत और कार्मण शरीर काया प्रयोमी एक, और ४ आहारक शरीर काया प्रयोमी मी बहुत और कार्मण शरीर काया प्रयागी मी बहुत एव पाँचवी चौथगी अथ आहारक मिश्र और कासाय के साथ छठी चौथगी कहते हैं—' आहारक मिश्र एक कार्मण एक, २ आहारक मिश्र एक

उद्गारिक प्रारम्भिक
१ आहारक मीथक

८ भाग

क्र.	भा.	मी.
१	१	१
२	१	१
३	१	१
४	१	१
५	१	१
६	१	१
७	१	१
८	१	१

कामाक्षी यदुक्त, १ आहारक मीथक एक और ४ आहारक मीथक की बहुत कामाक्षी की
१२१ यह ११ पात्रमा से द्विसंयोगी २४ भागि हुवे सब प्रिययोगी ३२ भाग कहत हैं जिन में औदा
१२२ दिश्र माहारक मीथक इन मीनों के संयोग के ८ भाग—यथा—३ औदारिक मीथ
२३ आहारक एक, आहारक मीथक एक औदारिक मीथक एक आहारक मीथक बहुत

गिगय, आहारग सरीर कायप्यओगीय, आहारग मीसगसरीर कायप्यओगीणोय,
 अहवेगय ओरालिय मीसगसरीर कायप्यओगीणोय आहारग सरीर कायप्यओ
 गिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्यओगीय, अहवेगय ओरालिय मीसग
 सरीर कायप्यओगीणोय, आहारग मरीर कायप्यओगीणोय, आहारग मीसग
 सरीर कायप्यओगीणोय एते अट्ट भगा ॥ अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर
 कायप्यओगीय आहारग सरीर कायप्यओगीय, कम्मासरीर कायप्यओगीय, अहवेगय
 ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओगीय, आहारग सरीर कायप्यओगीय, कम्मा सरीर
 कायप्यओगीणोय अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओगीय आहारग सरीर
 कायप्यओगीणोय, कम्मा सरीर कायप्यओगीय अहवेगय ओरालिय मीसग सरीर
 कायप्यओगीय, आहारग सरीर कायप्यओगीय कम्मा सरीर कायप्यओगीणोय,

१ यौदारिक मित्र एक, आहारक बहुत, आहारक मित्र एक, २ यौदारिक मित्र एक, आहारक बहुत,
 आहारक मित्र मी बहुत ५ यौदारिक मित्र बहुत, ६ आहारक एक, आहारक मित्र मी एक, ७ यौ
 दारिक मित्र बहुत, आहारक एक आहारक मित्र बहुत, ८ यौदारिक मित्र बहुत आहारक बहुत, आहार
 क मित्र एक यौदारिक मित्र बहुत, आहारक बहुत और आहारक मित्र मी बहुत यह प्रथम

उद्धारक मीश्र के
प्राथमिक कार्या
की तीन सप्ताहों
साथ याद में

दि.	प्रा.	का.
१	१	१
२	२	२
३	३	३
४	४	४
५	५	५
६	६	६
७	७	७
८	८	८
९	९	९
१०	१०	१०

अह्वेग्य ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओगिणोय, आहारग सरीर
कायप्यओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्यओगिणोय अह्वेग्य ओरालिय मीसग
सरीर कायप्यओगिणोय आहारग सरीर कायप्यओगिणोय, कम्मा
सरीर कायप्यओगिणोय अह्वेग्य ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओ
गिणोय आहारग सरीर कायप्यओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्यओगिणोय,
अह्वेग्य ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओगिणोय, आहारग सरीर
कायप्यओगिणोय कम्मा सरीर कायप्यओगिणोय । अह्वेग्य ओरालिय
मीसग सरीर कायप्यओगिणोय आहारग मीस सरीर कायप्यओगिणोय,
कम्मा सरीर कायप्यओगिणोय, अह्वेग्य ओरालिय मीस सरीर कायप्य
ओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्यओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्यओ
गिणोय, अह्वेग्य ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओगिणोय आहारग

अष्टमिनी अथ औदारिक मिश्र प्राथमिक और क माण क साथ ८ भागे कहत है— १ उद्धारक मिश्र
एक, आहारक एक, २ उद्धारक मिश्र एक, आहारक एक कार्याण बहुत, ३ उद्धारक
मिश्र एक आहारक बहुत, ४ उद्धारक मिश्र एक, आहारक बहुत, कार्याण बहुत, ५ उ

उद्दीर्घ मञ्ज क
भाहिर दात्र
न दवाण्य की
साय आठ भोग

१०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
----	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

मम सरीर कायप्यआणिणात्र कम्मा सरीर कायप्यआणीय, अह्वंगेय
आरालिय मीसग सरीर कायप्यओगिणीय, आहारग मीसग सरीर कायप्य
आणिणाय कम्मा सरीर कायप्यओगिणीय, अह्वगय आरालिय मीसग
सरीर कायप्यआणिणीय अहारग मीसग सरीर कायप्यओगीय कम्मा
सरीर कायप्यआणीय अह्वंगेय आरालिय मीसग सरीर कायप्यआ
णिणाय आहारग मीसग सरीर कायप्यआणीय, कम्मा सरीर
कायप्यआणगोय, अह्वगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्यआणिणीय,
आहारग मीसग सरीर कायप्यआणिणाय, कम्मा सरीर कायप्यओगीय,
अह्वगय ओरालिय मीसग सरीर कायप्यआणिणाय, आहारग मीसग
सरीर कायप्यओगिणीय, कम्मा सरीर कायप्यआणिणीय । अह्वगय
आहारग सरीर कायप्यआणीय आहारग मीसग सरीर कायप्यआणीय,

रह। मध्य बहुत, माहुरक एक, सामान एक ३ औदारिक मिश्र बहुत आहारक एक, कार्माण बहुत
 ७ प्राद्वारिक मिश्र बहुत, आहारक बहुत कार्माण, बहुत, और ८ औदारिक मिश्र बहुत आहारक बहुत
 और कार्माण में बहुत यह दूसरा चोपगी हूँ। अब तीसरी औदारिक मिश्र और कार्माण, साथ साथ

कायप्यओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्यओगीय अह्वेगय आहारग सरीर काय-
प्ययोगीय आहारग मीसग मरीर कायप्यओगिणोय, कम्मा सरीर कायप्यओगिणाय,
अह्वेगेय आहारग मरीर कायप्यओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्यओगीय
कम्मा सरीर कायप्यओगीय, अह्वेगय आहारग सरीर कायप्यओगिणाय, आहारग मीसग
सरीर कायप्यओगीय, कम्मा सरीर कायप्यओगिणोय अह्वेगय आहारग सरीर कायप्य-
ओगिणोय, आहारग मीसग सरीर कायप्यओगिणाय, कम्मा सरीर कायप्यओगीय
अह्वेगेय आहारग सरीर कायप्यओगिणोय, आहारग मीस सरीर कायप्यओगिणाय

८ आहारक क्षीर प्रयोगो बहुत आहारक मिश्र क्षीर प्रयोगी भी बहुत और कामान क्षीरकाय प्रयोगी भी बहुत यों चार आठ मर्गी क ३२ मीग प्रयोगी हुवे अब औदारिक मिश्र, आहारक, आहारक मिश्र, और कार्माण इन चार तयाग से १३ मीग होते हैं यथा— १ औदारिक मिश्र एक, आहारक एक, आहारक मिश्र एक कामान एक, २ औदारिक मिश्र एक, आहारक एक, आहारक मिश्र एक बहुत, ३ औदारिक मिश्र एक आहारक एक आहारक मिश्र बहुत, कामान एक, ४ औदारिक मिश्र एक, आहारक एक आहारक मीश्र बहुत कार्माण बहुत, ५ उर्गारिक मिश्र एक, आहारक बहुत आहारक मिश्र एक कामान एक, ६ औदारिक मिश्र एक, आहारक बहुत, आहारक मिश्र एक कामान बहुत ७ औदारिक

ओगिणोय, आहारग सरीर कायप्यओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्यओगीय,
 कम्मग सरीर कायप्यओगीय ॥ १० अहवेगे ओरालिमीसग सरीर कायप्यओगिणोय,
 आहारग सरीर कायप्यओगीय, आहारग मीसग सरीर कायप्यओगीय, कम्मग सरीर कायप्य-
 ओगिणोय, ११ अहवेगेय ओरालियसरीर कायप्यओगिणोय आहारगसरीरकायप्ययगीय
 आहारग मीसग सरीर कायप्यओगिणोय, कम्मगसरीर कायप्यओगीय, १२ अहवेगेय आरा-
 लिय मीसगसरीर कायप्यओगिणोय आहारग सरीर कायप्यओगीय, आहारग मीसगसरीर
 कायप्यओगिणोय कम्मग सरीर कायप्यओगिणोय, १३ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर
 कायप्यओगिणोय आहारग सरीर कायप्यओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्य-
 ओगीय, कम्मग सरीर कायप्यओगीय, १४ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओ-
 गिणोय आहारग सरीर कायप्यओगिणोय आहारग मीसग सरीर कायप्यओगीय, कम्मग सरीर
 कायप्यओगिणोय, १५ अहवेगेय ओरालिय मीसग सरीर कायप्यओगिणोय आहारग सरीर ।

विश्व बहुत कार्माण फल और १६ औदारिक विश्व शरीर काया प्रयाग बहुत, भावार्क
 शरीरकाया प्रयोगी भी बहुत, भावार्क विश्व शरीर काया प्रयोगी भी बहुत, और कार्माण शरीर काया,

कायप्यभोगिणीय, आहारग मीसंग सरीर कायप्यभोगिणीय कम्मा सरीर कायप्यभोगिणीय,
१६ प्रहृष्टगे ओराहिय मीस सरीर कायप्यभोगिणीय, आहारग सरीर कायप्यभोगिणीय, आहारग
मीसग सरीर कायप्यभोगिणीय कम्मा सरीर कायप्यभोगिणीय ॥ अठसजोएणं सोलस
भगममती॥ सल्लेखिण सपिण्डिया असीईमगा मयति॥ ५॥ बाणभतर आइसिया वेमाकिया
जहा नमुकुमारा ॥ ६॥ कईविहेण मते! गइप्पवाए पण्णसे? गोयमा! एवविहे गइप्पवाए
पण्णत्त तज्जहा-भमोगात्ती, तंतमती, नवणत्तेइगती, उववायगती विहायगती॥ सेकिंतं

अयोगी भी बहुत या बहुत योगी १३ मणि होते है यों अयोगी यों ८, दीसयोगी २६, त्रिदयोगी
१२, और बहुतसामी १६, सर्व मिलकर ८० मीम बार प्रयोग के अनुष्ठान में होते हैं ॥ ५-॥ और
बाणभतर एयोविपी तथा वेमानिष्ठ का भेमा असुर कुमारदेव के हगारे प्रयोग में से एक कार्मण के
साथ हो मणि कहे, हेमा सि इन सब में दो योग ही करना ॥ ६॥ प्रयोगकर श्री ६ मजीबकी
गति होती है इसलिये भागे गति प्रयोग का प्रसङ्ग है अहो भगवत् १ कितने प्रकाश के कति
प्रमाण कहे हैं? अहो गौतम १ वाप्य प्रकार के गति प्रयोग का है तयका—१ प्रयोग-गति तो
तो भी १५ योगों के पुत्रों का ग्रहण कर जीव के व्यवहारने प्रवर्त बा, २ संवगति
प्रयोग सा श्रमादि गमन करना ३ ५५ धर्तनगति सो जीव, शरीर रूप, कर्म को छोड़कर

पओगगती? पओगगती पण्णरसविहा पण्णत्ता, तँजहा-सच्चमणप्पओगगति एयं जंहा पओमो
 भणितो तहा एसोधि भाणियव्वो, जाव कम्मा सरीर कायप्पओगगती ॥७॥ जीवाण भते!
 कसिविहा प्यओगगती पण्णत्ता? गोयमा! पण्णरसविहा पण्णत्ता तजहा सच्चमणप्पओगगति,
 जाव कम्मा सरीरकाय प्यओगगति ॥८॥ येरइयाण भते! कइविहा पओगगती? गोयमा!
 एक्कारसविहा पण्णत्ता तजहा-सच्चमणप्पओगगती एयं उवठजिक्कण जस्स जतिविहा
 तरस ततिविहा भाणियव्वो, जाव वेमाणियाण ॥ ९ ॥ जीवाण भते! किं सच्चमणप्प

ज ३ एसी, ४ अनुगवाव गति सो जीव अन्य गति में उत्पन्न होने बाद और ५ विहायगति आकाश में
 गमन करे अहो भगवन्! प्रयाग गति के कितने भेद करे हैं? अहा गीतव! पदरे भेद करे हैं, तर्पथा,
 सत्य मन प्रयोग गति यों पुरोक्त योगोंका सेव कथन पदों में कहना यावत् शीव दामोण क्षीर काय
 प्रयाग गति ॥ ३ ॥ अहो भगवन्! नीच का कितने प्रकार की प्रयोग गति करी है? अहो गीतव! पन्दर
 प्रकार करी है तथया सत्यमन प्रयोग गति यावत् कार्माण क्षीर काय प्रयोग गति ॥ ८ ॥ अहो भगवन्!
 नेरीवको कितने प्रकारकी प्रयोग गति करी है! अहो गीतव! इग्यार प्रकारकी प्रयोग गति करी है. तथया
 सत्यमन प्रयाग यावत् कार्माण क्षीर काय प्रयाग योइस प्रकार भित के जितन योग हैं उतने उतने प्रकार
 वेपानिक पपेन करना ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! जीव की क्या सत्यमन प्रयोग गति होते कि यावत्

कायप्ययोगिण्याव, आहारग मीसंग सरीर कायप्ययोगिण्योय कम्मा सरीर कायप्ययोगीय,
११ अह्वयगे ओगालिय थीस सरीर कायप्ययोगिण्योय, आहारग सरीर कायप्ययोगिण्योय, आहारग
मीसंग सरीर कायप्ययोगिण्योय कम्मा सरीर कायप्ययोगिण्योय ॥ चउसजोएणं सोलस
भगामवति॥ सव्वेविण सपिडिया बसीईभगा भवति॥ ५॥ वाणमत्तर आइसिया वेमाप्पिया
जहा प्रमुक्कुमारा ॥ १॥ कईविहेण भंते! गइप्पक्वाए एण्णसे? गोयमा! पवविहं गइप्पक्वाए
एण्णउ तज्जहान्मभोगमत्थी, ततगती, बवण्णउदनगती, उववायगती. विट्ठायगती॥ सेकिंते

मयोगी मी बहुत यह खुशयोगी ११ यक्ति होते है यों अर्थयोगी मणि ८, हीसयोगी २८, अत्रयोगी
३२, और खुशयोगी ११, सर्व मिलकर ८० भाग बार प्रयोग के समुप्य में पाते हैं ॥ ५॥ और
वाणमत्तर स्पेक्टिपी तथा वैमानिक का पैसा समुद्र कुभारदेव के हथोर प्रयोग में से एक कार्मण के
भाष दो मणि को, हैना ही हव सब में दो भाग ही करना ॥ ५॥ प्रयोगकर जीव अभीवकी
नति हावी है इसलिये आगे गति प्रयोग का प्रभुपुत्र है अहो भगवत् ॥ किने प्रकाश के मति
प्रकाश को है ॥ यही गौतम ॥ पाप प्रकार के मति प्रकाश कर है तथ्या—१ प्रयोग-मति तो
को भी १५ योगों के पुत्रों का ग्रहण कर जीव के व्यवहारपने प्रवर्तें यह, २ त्रिगति
प्रयोग सा ब्रह्मादि गुप्त करना ३ यव छत्रतगति तो भी, बरीर काय पन्थ को छोड़कर

पञ्चमोगती? पञ्चमोगती पण्णरसविहा पण्णत्ता, तं जहा सर्वमण्यप्यओग गति एयं जेहा पञ्चमो
मणितो तहा एसोधि माणियव्वो, जाय कम्मा सरीर कायप्यओगगती ॥७॥ जीवाण भते।
कसिविहा पञ्चमोगती पण्णत्ता? गोयमा! पण्णरसविहा पण्णत्ता तजहा सर्वमण्यप्यओगगति,
जाय कम्मा सरीरकाय प्यओगगति ॥८॥ णेरइयाण भते! कइविहा पञ्चमोगती? गोयमा!
एक्कारसविहा पण्णत्ता तं जहा—सर्वमण्यप्यओगगती एयं उवठजिऊण जस्स जतिविहा
तस्स ततिविहा माणियव्वो, जाय वेमाणियाण ॥ ९ ॥ जीवाण भते! किं सर्वमण्यप्य-

ज १ एसी, ४ मनुष्याद गति सा जीव अन्य गति में उत्पन्न होने जाव और ५ विहायगति आकाश में
गमन करे अहो भगवन्! प्रयाग गति के कितने मेद करे हैं? अहा मोक्ष! एकर भेद करे हैं, वयवा
सत्य मन प्रयाग गति यों पूर्वोक्त योगोंका साथ कथन यही भी कहना यावत् श्री कर्मण क्षीर काय
प्रयाग गति। ३ ॥ अहो भगवन्! नीचे का कितने प्रकार की प्रयोगों गति करी है! अहो गोतम! एन्दर
प्रकार करी है वयवा सत्यमन प्रयोग गति यावत् कर्मण क्षीर काय प्रयोग गति ॥ ८ ॥ अहो भगवन्!
नेरीवको कितने प्रकारकी प्रयोग गति करी है! अहो गोतम! इग्यार प्रकारकी प्रयोग गति करी है वयवा
सत्यमन प्रयाग यावत् कर्मण क्षीर काय प्रयाग योगों के जिन प्रकार हैं उन्हे उतने प्रकार
वेपानिक बर्णन करना ॥ ९ ॥ अहो भगवन्! नीचे की वया सत्यमन प्रयोगों गति होने कि यावत्

धोगमती जात्र कम्मग सरीर कायप्पयोगगती ? गोयमा ! जीवा सर्वेपि ताव होजा,
सच्चमणप्पथोगमतीवि एव तच्चेव पुत्थमाणियं भणितव्यं, मगा तद्देव आधवेमाणियाणं॥
सेतं पयोगमती ॥ १० ॥ सेकिंत ततगती ? ततगति ! जेण जं गाम वा जाव सण्ण
वेसवा संपट्टिते असपत्ते अतराहेव वट्ठति सेत ततगति ॥ ११ ॥ सेकिंत बंधण
छेदनगति ? जीवोवा सरीरावो सरीरा जीवावो, सेतं बंधण छेदणगती
॥ १२ ॥ सेकिंत उववायगति ? उववायगति ! तिच्चिहा पण्णचा तज्झा—संघोत्त
वायगती भवोववायगती, जोमवोववायगती, सेकिंत सचोववायगति ?

कार्मण्य क्षरीर प्रयोग गति हावे ! अहो मोक्षम ! समुच्चय भीवे में ठेमे ही होता है, सत्यमन प्रयोजन गति
परमेश्वर पहिले कहा हैसा कहना और मार्ग भी पूर्वोक्त प्रकार कहना यास्त वैमानिक पर्वत यह प्रयोगति
के भद्र कहे॥ १०॥ अहो मगरन् ! ततगति के, कितन भद्र कहे है ! अहो मोक्षम ! ततगति के जो अमित्रमको यावत्
सन्निपत्तको जानके सिय मार्ग में गमनकरे तस ब्राम्हणादिको प्रप्त नहाये अन्तरिक मार्गमें बर्तिरा है तसे वतनति
प्रयाग कहना॥ ११॥ अहो मगयन् ! वपनछद्मगति के कितने भद्र कहे है ! अहो मोक्षम ! वपनछद्मगति सो जीव प्रयम के
क्षरीरको छोड़े और क्षरीर भीष को छोड़ वह रूप छद्मन गति॥ १२॥ तपपातगति के कितने भद्र कहे है ! तपपातगति क
नीन भद्र तपया १ तपोन्यातगति, २ यपोस्थातगति और ३ नो यपोस्थात गति तपोस्थातगति के कितन भद्र !

स्वभाववायगति ! पञ्चविहा पण्णत्ता तज्जहा जेरइया खेत्ताववायगती तिरिक्खजोणिय
 खत्तोववायगति, मणुरस खेत्तोववायगती, देवखत्तोववायगती, सिद्ध खेत्तोववायगती ॥
 सेकिंत्त जेरइय खत्तोववायगती ? जेरइय खत्तोववायगती सच्चिदा पण्णत्ता तज्जहा
 रणणप्पमा पुढवी जेरइय खत्तोववायगती आथ अहेसत्तमा पुढवी जेरइय खेत्तोववाय
 गती सत्तं जेरइय खत्तोववायगती ॥ सेकिंत्त तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगति ?
 तिरिक्ख जोणिय खत्तोववायगती पञ्चविहा पण्णत्ता तज्जहा एकिंदिय तिरिक्ख जोणिय
 खत्ताववायगति जात्र पक्खिंदिय तिरिक्ख जोणिय खेत्तोववायगती सेत्त तिरिक्ख

तोत्र त्याग गति के पांच भेद कहे हैं यथा-नरीये क सत्तमं उत्पन्न हाने की गति, २ तिर्यच योनिक के क्षेत्र में
 उत्पन्न होने की गति, ३ मनुष्य के सत्तम में उत्पन्न होने की गति, ४ देवता के सत्तम में उत्पन्न होने की
 गति ५ ६ भिक्षुक्षेत्र में उत्पन्न होने की गति ७ नरीये क्षत्रात्तागति के कितने भेद कहे हैं? प्रश्नो गौरव! साठ
 भेद कहे गये— १ रत्नममा पूर्णा में नरीये पने उत्पन्न हान की क्षत्रात्तागति यावत् नीच सावरी
 पूर्णा में नरीय पत उरग्न हाने की क्षत्रात्तागति यह नरक क्षत्रात्तागति के भेद कहे हैं तिर्यच योनिक
 क्षत्रात्तागति ८ कितने भेद कहे हैं ! तिर्यच योनिक क्षत्रात्तागति के पांच भेद हैं तथ्या— १ एकेन्द्रिय
 तिर्यच योनिक क्षत्र में उत्पन्न हाने की गति यावत् पञ्चैन्द्रिय तिर्यच योनिक क्षेत्र में उत्पन्न हाने की गति,

जे अथ स्वेतोववायगति ॥ सेकित मणुस्स स्वेतोववायगती ३ मणुस्स स्वेतोववायगती
 दुविहा पण्णचा तज्जहा समुत्थिमणुग स्वेतोववायगती, गम्भयकतिय मणुस्स स्वेतो-
 ववायगती मेत मणुस्स स्वेतोववायगती ॥ सेकित दवस्वेतोववायगति १ देवस्वेतो-
 ववायगति सउत्तिहा पण्णचा तज्जहा मन्थनवइ स्वेतोववायगति जाव वेमाणिय स्वेतो-
 ववायगति सत्त पथस्वेतोववायगती ॥ सेकित सिद्ध स्वेतोववायगती १ सिद्ध स्वेतो-
 ववायगती अणेगविहा पण्णचा तज्जहा जबुद्धिने पति भरहस्य वासरस सपक्ख
 सपडिदित्त सिद्ध स्वेतोववायगती जबुद्धिने च्छहिमवत सिद्धरीवासहर पक्कय
 सपडिदित्त सिद्ध स्वेतोववायगति, जबुद्धिने हेमवय पुरणवयवात सपक्ख
 पट्ठिर्पिन गति की क्षोत्तगान गति कही मनुग्ग सवोत्तान गति के कितने भेद करे हैं ! मनुज्य सेओ
 दान गति के दो भेद करे हैं तथया— १ समुत्थिम मनुज्य क स्थान में उत्पन्न होने की गति और
 गमय मनुज्य क्षत्र में उत्पन्न होने की गति यह मनुज्य क्षेत्रमें उत्पन्न होने की गति का नष्ट देव क्षेत्र में
 उत्पन्न होने की गति के कितने भेद हैं ! देव क्षेत्रोत्पन्न होने के चार भेद करे हैं तथया— १ प्रथम
 वासी दत्ता क्षेत्र में उत्पन्न होने की गति यापत् यमानिक देवता क क्षत्र में उत्पन्न होने की गति यह
 देव गति में उत्पन्न होने क सवात्पत्त गति के भेद हुने सिद्ध क्षत्र में उत्पन्न होने की गति के कितने
 भेद करे हैं १ सिद्ध क्षत्र में उत्पन्न होने की क्षोत्तपत्त गति के अनेक भेद करे हैं तथया— मन्त्रोक्त

जबूदीवदीव मदरस पन्वयस्स सपर्विस्स सपडिदिस सिद्धस्सोववायगती लवणसमुद्धरस
सपर्विस्स सपडिदिस सिद्धस्सोववायगती, धायतिसद्धदीवे पुगत्थिम पच्छिमद्ध जाव मदर
पन्वयस्स सपर्विस्स सपडिदिस सिद्धस्सोववायगती, कालायसमुद्ध सपर्विस्स सपडिदिस
सिद्ध स्सोववायगती पुक्खरवरदीवदु पुरच्छिमद्ध भरहेरवय वास सपर्विस्स सपडिदिस सिद्ध
स्सोववायगती, एव जाव पुक्खरवरदीवदु पच्छिमद्ध पुरिमद्ध मदरपन्वय सपर्विस्स
सपडिदिस सिद्धस्सोववायगती, सेत सिद्धस्सोववायगती ॥ सेत स्वेत्ताववायगइ ॥
सेकिंत माववायगती ? भवाववायगती ? च्छठन्विहा पण्णत्ता तंजहा णेरइय जाव

निपच और नीलरत्न पर्वत पर से, जम्बूद्वीप के पूर्व महा विदेह और पश्चिम महा विदेह क्षेत्र से जम्बूद्वीप के
 मेरु पर्वत पर से सम आग्नि यावत् सिद्ध का उपपात होता है ऐसे ही लवण समुद्र में से समश्रेणि यावत् सिद्ध
 का उपपात होता, चातकी लण्डद्वीप के पूर्व पश्चिम के विभाग से जम्बूद्वीप के मैस ही क्षेत्र पूर्वतो से यावत्
 दोनों मेरु पर्वत से समश्रेणि यावत् सिद्ध का उपपात होता है, कालोन्नवि समुद्र से समश्रेणि यावत् सिद्ध का
 उपपात होता है, पुष्करार्थ द्वीप के पूर्व पश्चिम के विभाग से जम्बूद्वीप के मैस ही क्षेत्र पूर्वत से यावत्
 दोनों मेरुपर्वत से समश्रेणि दिशा विदिक्षा में बराबर सिद्ध का उपपात होता है, यहाँ से आ सिद्ध होत वह सिद्ध
 क्षेत्रोत्पात गति वह सिद्ध के उपपात होता ही गति कही जाता है गति के कितने भेद होते हैं? यतोत्पात गति के

देवमन्त्रोवापगती॥संकिंते नरइय भवोवापगती॥नेरइय भवोवापगती॥सत्तविहा पणसा,
एव सिद्धयजो मेदो मापियन्वो, जो चव स्वत्तावापगतीए सोचय भवोवापगती,सेत
भवोवापगती॥से किं त जा भवोवापगती॥जोभवोच ।एगति दुविहा पणसा तजहा
पोगलणो भवोवापगतिप,सिद्ध ना भवोवापगतीप॥सेकिंत पागल भवोवापगती?
पोगल जो भवोवापगगन । जण परम,जु पोगल लोगस पुरच्छिमिह्माओ चरिमं
ताओ पच्छिदिमिह्मा चरिमत पगसमएण गच्छति, पच्छिमिह्माओ चरिमताओ
उत्तरिह्मा चरिमत पगसमएण गच्छति, दाहिणिह्माओ चरिमताओ उत्तरिह्मा

चार भेद कर हैं तपसा नरकगतिमें मरे रता गीत यावत् दूबगति में मरोतातगीन नरकगति में मरताथाद
मति के कितन भेद करे ! नरकगति में मरोत्थागतीन के मत भर कर हैं ऐसे ही सिद्ध गति का छोट
कर यावत् चारों गति क घेद आ स्वोत्थागति के कह रे ही सब यहाँ भी कहना यावत् देवोत्पन्न की
गतिमें वत्सवाह बर पर्यंत कहना यह परोत्पन्नगतिमें भेद करे नोपवात्थागति क कितन घेद करे हैं नो मरोत्पन्न
गति के ना भेद करे हैं तपसा १ पुत्रलकी नो परोत्पन्न गति और २ सिद्धकी नो भवदरागति पुत्रलकी
नो पवत्पन्न गति के कितने भेद करे हैं ! पुत्रल की नो मरोत्पन्न गति नो परमाण पुत्रल लोक के
वर्ग के परमन्तस गीत के चरिमान्त पर्यंत और पौष्य के चरमान्त स पूर क चरमान्त पर्यंत एक सप

અધરિમત પૂર્ગસમપૂર્ણ ગચ્છંદુ, એવ ઉચ્ચરિછાઓ વાહિણિજ્ઞ, ઉત્તરિદુષ્ણાઓ હેટિઘં હેટિ-
 છાઓ ટથરિહુ, સેત પોમ્મલ જો મન્નોવવાયગતી ॥ સેકિત સિદ્ધ જો મન્નોવવાયગતી ?
 સિદ્ધ જો મન્નોવવાયગતિ હુવિદ્ધા પળ્ણસા તંજહા અર્ણતરસિદ્ધ જો મન્નોવવાયગ
 તીય પરંપર સિદ્ધજોમન્નોવવાયગતી ॥ સર્કિત અળતર સિદ્ધ જો મન્નોવવાયગતી ?
 અળતર સિદ્ધ જા મન્નોવવાયગતી પળ્ણરમવિદ્ધા પળ્ણસા તંજહા તિરય સિદ્ધ
 અર્ણતર જો મન્નોવવાયગતીય જાવ અર્ણગસિદ્ધ જો મન્નોવવાયગતી ? સેકિત
 પરંપર સિદ્ધ જો મન્નોવવાયગતી ? પરંપર સિદ્ધ નો મન્નોવવાયગતી અળગવિદ્ધા પળ્ણસા
 તંજહા અપ્પઠમ સમય સિદ્ધ નો મન્નોવવાયગતી દુસમય સિદ્ધ નો મન્નોવવાયગતી જાવ

में जाये तब ही दाक्षिण के परमान्त से ऊपर के परमान्त तक और ऊपर के परमान्त से दाक्षिण के परमान्त तक एक समय में जाये उस ही ऊपर के परमान्त से नीचे के परमान्त तक और नीचे के परमान्त से ऊपर के परमान्त तक एक समय में जाये वह पुष्टास्तगति यदपुत्र्योत्पत्तगति के यदपरे सिद्ध की परास्तगति के किन्तु भेद करे है^{१०} सिद्ध की मा भव अस्तगति के दो भेद करे है तथया १ अनंतर सिद्ध ही भव अस्तगति, और २ परम्परा सिद्ध की भव अस्तगति अनन्तर सिद्ध की भव अस्तगति के किन्तु भेद करे है ! अनन्तर सिद्ध की भव अस्तगति के पक्षर यद करे है ? तथया—तीर्थ सिद्धा अनन्तर सिद्ध की भव अस्तगति, यात्रु भाक धिद्ध की भव अस्तगति परम्परा सिद्ध की भव अस्तगति के किन्तु भेद करे है ! परम्परा सिद्ध की भव अस्तगति के किन्तु भेद करे है, तथया—प्रथम भव भिद्ध [भवेन

समयः सिद्धो भवेद्यथायगती, संच सिद्धो भवेद्यथायगती, ॥ संचो णोमयेव
 वायगती ॥ सेन उवायगती ॥ १३ ॥ सेकित विहायगती विहायगती
 सतरस विहा पणत्ता तजहा—१ फूममाणगती, २ अफूममाणगती, ३
 उवसपजमाणगति, ४ अणुवयसपजमाणगती, ५ पोमगलगती ६- संबूयगती, ७-
 णमवगती, ८ जयगती, ९ च्छायगाइ, १० छायाणुवातगई, ११ लेस्सागती, १२
 लेस्साणुवातगती, १३ उदेसीय पविमचगती, १४ चठपुरिस पविमचगती, १५-

को ब्रह्मण हुये दो समय यदि अधिक छाय हुआ ऐसे) की ना यथोत्पन्नगति, ऐसे दो समय के सिद्ध
 की नो मवात्तागति, यावत् अनव समय क पिदकी नो यथोत्पन्नगति यह सिद्ध की ना यथोत्पन्न के मेद
 हुये ॥ ११ ॥ विहाय (आकाशमगमन करने की) गति के कितन भेद कहें हैं ! विहायगति के १७ सतर
 भेद कहें हैं तथ्या— १ स्पष्ट कर चले यह गति और २ अपर्ये चले यह गति, ३ भंगीकारकरके चले
 यह गति, ४ बिना भंगीकार किये चले यह गति, ५ पुद्गल की गति, ६ मेदस की गति, ७ चाय की गति
 ८ ताप धूप की गति, ९ छाया की गति, १० छाया अनुपात की गति, ११ संध्या की गति, १२ क्षेत्रयानु-
 गत की गति, १३ उदयकर प्रत्यनीयगति, १४ चार पुरुष की पथियनगति, १५ वक्रगति, १६ कर्मय
 की गति, और १७ ब्रह्मन विरोधत गति। अब इन १७ गति का अर्थ कहें हैं फुसमानगति। किस कहें

यकगती, १६ पकगती, १७ वधण विमोयणगती ॥ सेकिंत फसमाणेगई ? फूसमा
णगई जण परमाणु योगले दुपपसिए जाव अणतपएसियाण खघाणे अणसमणे
फुसिचाण गती पयिचइ सतं फूसमाणगती, ॥ सेकिंत अफूसमाणगती ! जेण एते
सिचैव अफुसिचाणगतीए पयिचइ सेतं अफूसमाणगई ॥ सेकिंत उवसपज्जमीणगती ?
उवसपज्जमाणगती जण रायत्रा जूवरायत्रा ईसरवा सळवरवा माळवितवा कांनुबियंवा
इवमवा सेट्टिवा सेणावइवा सत्यवाइवा, उवसंपज्जिचाणं गच्छइ सेत उवसपज्ज

हे ? स्वर्धमानगति ! जो प्रमाण पुद्गल, द्विपदीक स्वरूप यावत् धर्मसमर्पेदिक स्वरूप परस्पर ऐक्य को एकक
सर्वकार छीकर पल पर स्वर्धमानगति, २ अस्यर्धमानगति किसको कहते हैं ? अस्यर्धमानगति जो प्रमाण पुद्गल
यावत् अनंत पदीक स्वरूप परस्पर विना स्वर्धगति करव अस्यर्धमान गति १ स्वर्धमान गति नति किस
का कहते हैं ? उवसपमान गति आ राजा पुवरराजा इतर—मामान्यराजा, सळवर-पटव-क, मोदविक
राणी, कोटुम्बिक कुम्भ्यापिपति, इव्य सठ-गमाव सस्वीवन, सठ—जवर केठ, सेनापति, सार्दारी,
इत्यादि जो को यात्रय अमीकार कर इनके पीछ बसे पर स्वर्धमानगति ॥ ४ अनुवर्धमानगति
किस को कहते हैं ? अहो गोवंष ! उक्त राजा कोवि किसी को भी अमीकार किये बिना
स्वर्धमान से विपर पर अनुवर्धमानगति, ५ पुद्गलगति किस को कहते हैं ? पुद्गलगति जो प्रमाण यावत्

माणगती ॥ सकिंत अणुवसंपजमाणगती ? अणुवसंपजमाणगती ! जण पुरोसिचेव
 अणमण अणुरसपजिचाण गच्छति, सेत अणुवसपजमणगती ॥ सेकित पोगल
 गती ? पोगलगती जण गरमाणु पागलानं जात्र अणत पदेसियाण स्वधाणगती
 पचति, सत पोगलगती ॥ सेकित मडूगती ? मडूगती जण मडू लपडि
 चार गच्छति, सत मडूगती ॥ नेकिंत जावागती ? जावागती जण जावा पुवत्रे
 तालीउवा दाहिणस्तालि जलप्रहण गच्छति, दाहिणवेतालिउवा अप्रेवेतलि

मनत प्रवेशक ॥ हण गति को मर्मत है ॥ प्रकृति ॥ मडूक गति किते कहने है ! मडूक मति
 मिम प्रकार मडूक वल का चलता है तेस वल वरमडूक गति ॥ ७ ॥ नावामति किसे करते है ? तेसे नाव
 नदी आदि क पूर के किनार ते दाहिण क किनारे को जावे, दाहिण के किनार से पश्चिम क किनारे को
 जावें यों किभी भी दिशा से किसी भी दिशा में भावा पानी के ऊपर चलपव में गमन करे ॥ नावा
 गति ॥ ८ ॥ नपगति किस को करते है ? नपगति के ताव भेद—१ नैगमनय समुचय अर्थ का करने
 बाला, २ नप्रह नप-विस्तृति अर्थ का करने बाला, ३ नपवदारनय प्रत्यक्ष रूपका बसाने बाला, ४ अणुसंघ नय
 मुरल मुपका करने बाला ५ अणुनय विगमनय भव नहीं रतने बाला, ६ समपिकर नय विगमनय क्यमिचार

जलपदेण गच्छति, सेत जायागती ॥ सेकितं जयगती ? जयगती ! जय्णं जेगमसंगह
 यवहारउज्जुमुयसइसममिस्सुएवमयाणंजा गती, अहवा सत्त्वजयाणविज इच्छति
 सेतेजयगती ॥ सेकित छायागती ? छायागति जेणं हयच्छायवा गयच्छायवा गरच्छायवा
 किरणरच्छायवा, महारग च्छायवा, गंधव च्छायवा, उतसम च्छायवा, रहच्छायवा
 उत्तच्छायवा उवसपजितानं गच्छति सेतं जायागती ॥ सेकित छायाणुजायगती ? छायाणुजाय
 गति जेण पुरिसच्छाया अणुगच्छति, जो पुरिसच्छापं अणुगच्छति सेत छायाणुजायगती ॥

काइकरनेबाना, औरउएवंभूतनय सार्यकका कहनेबासा इनछाओं नयको जो उतारनेकी रीत है वह नयगती
 तथा एकनय ब्रह्मणकर वमके विशेषमद करें जपका विषय भेद नहीं करें वह नयगति जाया गति किसे कहते
 हैं ! छाया गति सा दोहेकी छाया, हाथीकी छाया, मनुष्य की छाया, दिक्कर की छाया, महारग की
 छाया, मेघर्ष की छाया, बैल की छाया, रथकी छाया, छत्रकी छाया, इन का अंगीकार कर बछने वाला
 जो छायागति छायाणुजायगति किसे कहते हैं छायाणुजायगति जो पुरुष एक धारतकर बछे वह छायाणुजाय
 गति सशयानुगति किसे कहते हैं ? जो कुण्डलेदया क द्रव्य नीलमेदयाके द्रव्यपदेक परिचये, उतसक पने, वस
 वर्णपन, वसर्गपपने उत्तरमुपने तम सार्यने चरकर परिचये, येसेही नीलमेदया के द्रव्य कापुन केव्यापने,

सौक्यं लेखसाधुगती ? लेखसागती जण्यै काण्डलेखा नौलखरसप्य तास्वैचापे तावे-
 ण्यसाधु सागर्धसाधु सारमचाण साफासचाप मुञ्जा रपरिणमति, एव नलिलेखा काठ
 लेखसप्य तास्वैसाधु जाय फासचाप परिणमति एवकाठलेखा तउलेख तउलेखवि
 पम्हलेखं पम्हलेखावि सुखलेखसप्य तास्वैचाप जाय परिणमति संत लेखसागति ॥
 सकित लेखसाधुगती ? लेखसाधुगति ओ लेखसाधु वन्याई परिताइती कोलैकरेई
 तखरससु उववज्जति तजहा--कण्डलेखससुवा जाय सुखलेखससुवा ॥ सेत
 लेखसाधुगती ॥ सकितं उदिन पविमचगती ? उदिस पविमचगती जण्य

कापू लखपाटा लेखा लेखा से कहना, वेओ लखो पचलेखा ते कहना, पचमइया से मूल लखपा
 का कहना, र्पिने यात्रा स्पर्ध वेने परिणमता है यः लेखागति करी ॥ लेखानुवागति किस का कहने
 है ? लेखानुवागति ओ लेखा के द्रव्य है तम ग्रहन कर के भागुद्व्य पूर्णकरे पुनः इसी सूर्या के
 स्थान में जाकर उदयम इति, तपना कृष्ण सूर्या के द्रव्य आपुण्य क अन्न में प्ररण कर कृष्ण छदयो
 के स्थान में उदयम होय यापते मूल लखपा के द्रव्य प्ररण करके शुक्ल लेखा के स्थान में उत्पन्न होते, इस
 सूर्यामेवात् गीते कहना ॥ उदिव प्रवृत्ति गति किससे कहने ? उदिव प्रवृत्ति गति ओ साधारण के, उपाध्याय
 के, स्पीर क, प्रवृत्ति के, साधु के यम वेध में प्रवर्धनवाले, जे ज-जन प्रवृत्ति के योनि मन्त्र

उत्कृष्ट पकगती! से जहा नाम फट् पुरिते सेयसिवा उदयसिवा काय उद्विहिता गच्छति,
 से सं पकगती ॥ नर्कित घघण विमोयणगती? यधन विमोयणगती! जज्ञ अत्राणया, अत्राड
 गणया सी प्रागाणया लुगाणया, मातल्गाणया, विलूगाणया, कविट्टाणया, भद्धानया,
 फणसाणया, दालिमाणया, पारवराणेया अक्खोलाणया चाराणया अराणया, सिंदुया
 णया पक्काणं परिगागयाण यधगाता विमुक्काण निब्बाथातण अहविमसाणगती
 पव्वत्तइ, सचं वंघण विमोयणगती ॥ इति पण, उणाए योगपय सालसम समसत् ॥ १ ६ ॥

धुगिर दा अदर त्नुवाता हुवा गवन कर यह एक गति पधत विमोचन गति किते करते हैं? वंघत विमो
 चन गति आम्र के फल, अम्राड फ फल, दंताफल, वंगफल, पीतोर के फल, नीव के फल,
 दईर के फल दस के फल, फणस फ फल, दाइम (अनार) के फल, अक्षालन फल, चारोली
 'चिती' के फल, बैर के फल, टिमर के फल, इत्यादि जानि के फल पधत हाकर स्वस्थान स
 वंघत न छूटत पीव में किमी प्रहार की घान को नहीं मस हात हुवे नीव पधन के स्वभाव से ना
 ग ने हाकी इ डत व वन विमोचन गति करते हैं यह विमोचन गति क सवरा भट्ट हुव इति पक्काणया भगा
 वती का प्रयाग नामक सालया पद संपूर्ण हुवा ॥ १३ ॥

आयरियत्रा उवञ्जायना धरवा पवित्रिचा गजिया गणहरया गणावच्छेवत्रा उहि
सिय २ गच्छति सेतं उहिसिय पविमत्तगती ॥ सेकिं चउपरित पविमत्तगती ?
चउपुरिसपविमत्तगति सजहा नामए चत्तारि पुरिसा समग पब्बज्झट्टिया समग पट्टिना
समगं पज्जज्झट्टिया तिसम पट्टिया । त्र १ म पज्जज्झट्टिया तसम पट्टिया तिसम पज्जज्झट्टिया
तिसम पाट्टिया सेत चत्तारि पुरिसा पविमत्तगती ॥ सेकिं चउगती ? चउगती !
चउत्तिवहा पण्णात्ता तजहा घट्टणया धमणया, लेसणया, पवसणया सेत चउगती ॥

गणावच्छेदक गच्छमे वस पात्रादिह विभाग के करन वाले, इन नेष्ट पुरुषोंमेंसे किसी की भी
ब्रह्म प्रदत्त में प्रवेश नह उद्देशिक पविमत्तगति ॥ चार पुरुष पविमत्तगति कौनभी करी है ? चार पुरुष
पविमत्तगति यथा ह्युक्तं चार पुरुष साथ ही जाते हुये आगे के ग्राम को माय हो प्राप्त हुये,
२ चारों माय ही रास्ते में गमन क्रिया, और चारों आग पीछे ग्राम का प्राप्त हुये, १ चारों आगे पीछे चल
और साथ ही ग्राम का प्राप्त हुये, और चारों ही आग पीछे चले और आग पीछे ही ग्राम को प्राप्त हुये
चर चार पुरुष की पविमत्त गति कहना चक्रगति किमी को कहते हैं ? चक्रगति के चार मत—
१ संगराता हुआ चक्र, २ घुटने से चल, ३ कुटन के चारों ओर का चले, और ४ पट्टा २ चल चले चक्रगति
कहना चक्रगति किसे कहते हैं ? चक्रगति यथाव्याप्त कोई पुरुष अवाल में, कदम में पानी में पौनारि

भते! सखे समझणा? गोयमा! जो झण्टु समझे। से केणटुण भते! एव सुखइ नेरइया
णा सखे ममझणा? गायमा! नेरइया दुविहा पणत्ता तजहा पुब्बोवण्णगाय पच्छी
यवण्णगाय तथेणजतपुब्बोवण्णगतेण विसुद्धवण्णस्सातरागा, तथेणजत पच्छावधण
माय तण अविमुद्धवण्णतरागा। स तेणटुण गोयमा! एव नुच्चति नेरइया। जो मध्येसमवण्णा
एवं जहव वप्पेण अणिया सदेय स्सरसाम्भवि-रितुद्धलस्सातरागा अविमुद्धेस्सातरागाये
भाणियत्त्वा ॥ ४ ॥ नेरइयाण भत ! मनेवे समवेयणा ? गोयमा ! पाइणट्टे समट्टे,

बात है ? परो नीतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ? अहो भगवन् ! किम क्खन एमा फरमाते वो
तर नेरीये । ने । नहीं है अहा न नम ! नेरीय दा प्रकार क कह है, तथया—? पहिल तरास हुवे
और वधात् उत्पन्न हुवे इस में आ प्रथम उत्पन्न हुवे वे विमुद्ध वणराले हैं क्योंकि उनन कर्म
मागव कर वहुन मनुम वण क पुत्रकों की निमग ०४ थी है, और सो वीछ उत्पन्न हुवे व अविमुद्ध
(सराव) वर्णवाल क्योंकि ३। म ए १११ वर्ण ५ पुत्रल माग न धातो रह हैं यह मेवणा द्वर-
जैमा वर्ण का कहा मैसा ४। तदथा ८ नी कहना अथत्ता जा प्रथ उत्पन्न हुवे वे विमुद्ध लययावाल है
क्यों कि वहुन दुःस भ गवन मे परिणाम की करा मुद्ध रागइ व और आ पीछे तरास हुवे वे अविमुद्ध
वधयावत्ते हैं क्योंकि परिणाम की पारा पहा लोचित है ॥ ४॥ सावका बदना द्वार—अहा भगवन् ! क्या

बुधइ णरइया णो सन्वे समाहारा णा सन्व समसरीरा, नो सन्वे समुरसासणि
रमागमा ॥ २ ॥ णरइधानं भंत । सन्वे समकम्मा ? गोयमा ! णो इणट्टममेट्टे ॥
स केणट्टण भते ! ए१ बुधइ णरइया णो सन्वे समकम्मा ? गायमा ! णेरइया
दुधिहा पण्णसा तज्जहा पुत्तगण्णगाय पच्छवत्तणगाय, तस्थण जंते पुत्तवत्तणगा
तेण अप्पकम्मत्तरागा तस्थण जन पच्छवत्तणगाय सण महाकस्मतरागम,
सेतेणट्टण गोयमा । एवं बुधइ णेरइया णो सन्वासमकम्मा ॥ ३ ॥ णेरइयाण

नेरीय मव मराय भाहारनाछे नहीं है, सरीख नरीयाल नहीं है, सब मराख नामाभासवाले नहीं हैं ॥२॥
बौधा कमट्टार—अहा भगवन् ! क्या सब नरीय मरीख कण्ठाल हैं ? अहा मौतम ! यह अर्थ समझ
नहीं है, किस कानन ? अहा भगवन् ! क्या कहा कि सब नेरीये मरीख कर्पवाले नहीं हैं ? अहो
गौतम ! नरीय का प्रकार के करे ? अथवा—? मयम दहाण हुये और २ पीछ म दहअ हुये, इस में
ओ मयम उल्लस हुये व अरु कर्पवाल है क्यों कि उज्जोने बहुत कम मोगय लिया है और ओ पीछ स
वररप हुये वे महा कपूसास व क्यों कि उन के बहुत कम मागवने पाकी रहे हैं, 'यह उल्लस सम स्थिति
बाद भाग्रिय है परंतु बिपम स्थितिनाल आग्रिय नहीं है' इस बिग अहा गौतम ! एसा कहा कि सब
नेरीये गरीले कर्पवाले नहीं है ॥ ३ ॥ पांचवा यणद्वार—अहो भगवन् ! क्या मय नेरीये मरीखे वन

गोयमा ! जो इष्टदे सप्तदे, से कण्ठेण भते । एव वृषह नेरइया जो सन्वेसमकि-
रिया । गोयमा! नेरइया तिविहा पणसा तजहा सम्मदिट्ठी मिण्छादिट्ठी समामिण्छा
दिट्ठी । तथ्यं जेने सम्मदिट्ठी तेसिणं चत्तारि किरियाओ कज्जति तजहा आरभिया,
परिगहिया, मायावत्तिया, अपचक्खणाकिरिया, तदणं जे ते मिण्छादिट्ठी जे सम्म-
मिण्छादिट्ठी तेसि भियमा ताआ पंचकिरियाओ कज्जति तजहा आरभिया, परिग-
हिय, मायावत्तिय, अपचक्खणिय, मिण्छांसणवत्तिया ॥ से तेण्ठेणं गोयमा !
एवं वृषति नेरइयाण जो सन्वे समकिरिया ॥ १ ॥ नेरइयाण भते ! सन्वे समज्जमा

अहो गौतम ! यह अर्थ पोय्य नहीं है? किस कारण भरो मगरन्! सब नरीयेसरीसी क्रियासन्ने नहीं है? अहो
गौतम ! नेरीये तीन प्रकार के कहे हैं तथा—१ सम्पक्खणी विट्ठणहट्ठी २ और ३ समपिठ्ठणहट्ठी—इय में जो
मध्यक्ख हट्ठी है उन को पारु पिय्या समती है तथा—१ आरभिकी, २ परिगहिकी ३ मायावत्तयिये,
की ४ अपचक्खणाणीकी और जो विट्ठण हट्ठी तथा समपिठ्ठण हट्ठी है उने पंचोक्खण सगती है चारतो
रत्त और पंचोक्खी मिठ्ठणस वृत्तन नत्थापिकी इमसिये आह गौतम ! वेत्ता करा कि सब नेरीय सपोक्खया
बाल नहीं हैं न १ न नववा स्थितिद्वार भरो मगरन्! मच्च, नेरीये सरीले पापुज्य बाल है क्या! अहो गौतम!

સે કેન્દ્રેષ્ટેણ ભતે ! પૂનઃ કુચદ ળેરહયા ળો સઠ્ઠેસમયેષગા ? ગોયમા ! ળેરહયા દુત્રેહા
વળ્ણસ્તા તંજેહા સળિગમૂતાય અવળિગમૂનાય ॥ તસ્યગ ળે તે સળિગમૂનાય તેળ મહા
યદગસરાગા તસ્યળ ળે સ અસળિગમૂતાઃવ તળ અવળેયળતરાગા ॥ સ તેષ્ટ્રેણ ગોયમા !
‘પૂનઃ કુચેતિ ળેરહયા ળો સઠ્ઠઃ ગમવયળા ॥ ૫ ॥ ળેરહયાળ ભત ! સઠ્ઠેસમયકિરિયા ?

नव नेरीये मरीली वेदनाशाल है ! अहा गौतम ! नेरीय दा प्रकार क कह है नखथा-१ लक्ष्मीभू और २ अर्धश्रीभू इन में ओ संक्षीभू है व महा बदना भोगबने है आइ अश्रीभू है व भय वद । बद है, क्यों कि असंक्षी निर्णय पर कर प्रथमे नरक में ही जात है व पश्योपय क असस्यगतये भाग ही प्राप्त है । इस से ये अल्प वेदनायास है और संक्षी सातवी नरक लक्ष साथ है व तेनीस सागरा- पेन तक का मायुले जाने है, इस से य महा वेदनाशाल है तथा अर्धश्रीभू भयर्पाप्त नेरीये को कहते है वे अल्प वेदनावाचे है और भक्षीभू वयाप्त नरीये को कहत है वे महा वेदनावाचे है तथा अर्धश्रीभू प्रमेय अर्धश्रीभूवा है व ज्ञान का आचरण ज्ञान से पूरी बदना वेद मुक्त नहीं है और संक्षीभू सचत न अस्वेषा में बदना का पुरा अनुमयी ज्ञान से अधिक वेदना घटत है तथा अर्धश्रीभू पियधारवी नेरीय का कहते है व कम फल का अक्षोत हो अल्प वेदना वेत है और शक्षीभू सम्यक् दृष्टो को कहत है वे रूप फल क ज्ञान हा पय नापयुक्त महा वेदना वेदते है इस कारण अगे गौतम ! ऐसा कहा कि स नेरीयो मरीयो बदना भई बदते है शाश्वत भाठवा किना हार—इहे अगस्त ! सब मरीये लगीली किनावावे है भया !

अनुमारा दुयिह। पणत्ता तजहा पुव्योववणगाय, पच्छोववणगाय, तरेण जे ते
वणगा तेण महाकसमतारागा, तरेण जे ते पच्छोववणगा तेण अप्पकम्म

गा, से तेणट्टेण गोयमा ! एवं बुधइ असुरकुमारा णो सव्वे समकम्मा ॥ १५५

वण्णी, हेरसाए पुच्छा। तरण जे ते पुव्योववणगा तेण अविस्सु वणत्तरागा, तरेण जे
दे इस का उत्तर नेरीये का दिया बैसा ही यहाँ भी देना, यहाँ अरेर अबगाटना प्रचारनीय श्रित
ही आपेसा कयप अगुम के बसख्यावे भाग उत्कृष्ट साठ हाथ की जानना उत्तर वैक्रयकी अपेसा
नस्प अगुम के अस्स्यावध भाग उत्कृष्ट कसवोमन प्रमोन मानना इसलिये महा शरीर बाले बहुत पुष्ट
हा आहार कर और छोटे शरीर वाले धाँरे पुष्ट का आहार करे, यह देवसम्पत्ती मनोमन्सी लक्षण
आहार जानना उत्कृष्ट इमार वर्षान्तर आहार की इच्छा हावे, वेसे ही श्वासोश्वास भी जानना अर्ध
गवन् ! असुरकुमार देखता सब सरील कर्म वाले हैं ? अहो गौतम ! यह अर्ध योग्य नहीं
अहो मगवन ! किस कारण यह अर्ध योग्य नहीं है अहो गौतम ! असुर कुपार दधता दो प्रकार के
हो हैं १ पुत्तस्सम और वध्यात् उत्पन्न, इस में पुत्तस्सम हैं वे माकर्म वाले हैं और पीछ उत्पन्न हुए न
नल्य कर्म वाले हैं, क्योंकि कि प्रथम उत्पन्न हुये उन्होंने पुमकर्म भोगन लिये इस से अशुभ कर्म बहुत पैगये

पुढीकाइया सन्धे असणी अमणीभते, आणदायदण त्रयात। स तणहुण गायमा।
 पुन बुधइ पुनत्रिकाइया सन्धेसमवेदण ॥ पुढीकाइयाण भंते ! सन्धेसमकिरिया ?
 ईता गायमा ! पुढीकाइया सन्धे समकिरिया॥संकेणट्टणं भत ! एव बुधइ ? गायमा।
 न्य, सन्धेमाई मिच्छादिट्टी, सत्तिणिगताआ एचकिरियाओ कज्जति तंजहा आरं

गाहिया मायात्रासिधा, अपचक्खणकिरिया, मिच्छावसणत्रासिधा पत्रं जाण चउ
 ॥ ९ ॥ पंचिदिया तिरिक्खजोणिगता जहा परइया जवरं किरियाहिं सम्मदिट्टी

व्यक्त वेदना बढ़ते है इस स्थिति अहा गौतम ! एसा कहा है कि पृथ्वीकाया सब सम्बन्धनाशाले है
 तो मगरन् ! क्या पृथ्वीकाया मब नरीत्ती क्रियावाउ है ! हा गौतम ! पृथ्वीकाया मब सरीत्ती
 त्यादाउ है अहा मगरन् ! किस कारन ऐसा कहा ! अहा गौतम ! पृथ्वीकाया मब एक मायी
 ध्याइती है इस लिये उन का सदैव नियमा पाँचों प्रकार की क्रिया कर्त्तवी है तथया—“ आरंभिकी,
 परिग्रहीकी, ३ माणा प्रत्ययी, ४ अवसास्यानी, और ५ विध्याएय दर्शन प्रत्ययी जेसा पृथ्वीकाया का
 हा तेसाही पाँचों स्थार तीनों बिरुद्धेद्वेष का कठना, (विरुद्धत्रिष अपर्याप्ति अवस्था में निषिद्धकाउ
 १५ ती सम्पत्की रहने है वस्तु धर यही ग्रहण नहीं दिया) ॥ ९ ॥ पंचेद्विष तिर्यक् यानिक का जेले
 ॥ १० ॥ कहा तेस की कहना वस्तु उस में इतना बिशेष कि उस में सम्पत् रहने विध्याइती सम

ति पञ्चात्रयभ्यां तेन त्रिसुख वष्णतरागा, से सेणट्टेणं गोयमा ! एव वुच्चति अमुर
कुमारा णो सव्वे समवण्णा, एव लेस्साए वेदप्पाए, जहा णेरइया अशसेस जहा
णेइयाण, एव जाग यणियकुमारा ॥ ८ ॥ पुढविकाइया आहार कम्म णण लेस्साहिं
जहा णेरइया ॥ पुढविकाइयाण भत्ते ! सव्वे समवेदणा ? हुता गोयमा ! सव्वे सम
वेदणा ॥ से कम्मट्टेण भत्ते ! एवं बुधइ पुढविकाइया सव्वे समवेदणा ? गोयमा !
त्रिम से व योडे काढ मे आयुप्प पुण्णर पुण्णर पुण्णर गति मे उत्तम गो गत्तं भीर ओ पीछे उत्तम
दुवे वे मल्ल भत्तम कर्णी दे, अगे भौत्तम ! इसिन्धे येमा फा कि मव असुर कुमार सरीसे
कम शान्ते नहीं है इस प्रकार ही वर्ण का प्रसोत्तर कहना, अर्थात् जो पूर्णोत्पन्न है
वे अचिन्तद्वय शान्ते है और पद्मान शयन दुवे है विपुलवर्ण शान्ते है, अग भौत्तम ! इसिन्धे
इसा कहा कि मव असुर कुमार दत्ता मरीस वर्ण शान्ते नहीं है इस प्रकार ही लम्बा का, वेदना आदि
मव शान्ते का जैसा नर्तक का कहा तैसा कहना, और भौत्तम असुर कुमार फा फा हैस ही यावत् स्थानित
कुमार पर्यन्त कहना ॥ ८ ॥ पृथ्वीकायका मी आहार कर्म वज्र लक्ष्या विप्रकार नेरइये क करे हमही प्रकार
कहना भवो भगवन् ! कय पृथ्वीकाया वज्रमरीची वेदनाशान्ते है ? भौत्तम ! मव लक्ष्मीकाया सरीसी वेदनाशान्ते
है वरा भगवन् ! किम काएल एसा कहा ? भवो भौत्तम ! पृथ्वीकाया वज्र लक्ष्मीकाया

मिच्छादिद्वी सम्मामिच्छादिद्वी, तत्स्थण जेतं सम्मामिच्छादिद्वी ते बुविहा पण्णांता तज्जहा असज्जाय, सज्जासज्जाय तत्स्थणं जेत सज्जासज्जा तत्स्थणं तत्स्थिण किरियाओ कब्बति तज्जहा आरामिया, परिग्गहिया, मायावत्थिया तत्स्थण जेत असज्जा तत्स्थिण वत्थिरि किरिया कब्बति तज्जहा आरामिया, परिग्गहिया, मायावत्थिया, अपच्चक्खाणि किरिया, तत्स्थण जेतं मिच्छादिद्वी जेय सम्मामिच्छादिद्वी तत्स्थिण णियमाओ पच्च कि रियाओ कब्बति तज्जहा आरामिया परिग्गहिया-मायावत्थिया अपच्चक्खाणिप, मिच्छादस णवत्थिया, तेसं तंचव ॥ १० ॥ मणुस्साण भते ! सन्ने समाहारा पुच्छा ? गायमा

विध्याद्वी वीनों दहीबाले हैं उस में जो सम्यक् दही हैं वे दा प्रकार के हैं तथया— असंयति और २ सयतासवति इस में जा सयतासयती हैं उन का तीन क्रिया लगती हैं तथया— आरामिकी, २ परि ग्रही की और ३ मायाप्रत्ययी, और जा समयति हैं उन का चार क्रिया लगती है तथया— आरामिकी, २ परिग्रहिकी, ३ माया प्रत्ययी और ४ अपत्यास्थानी और विध्यात्त्वद्वी तथा समविध्या द्वी हैं उन का निष्सा पांचों क्रिया लगती हैं तथया— आरामिकी, २ परिग्रहिकी ३ मायाप्रत्ययी ४ अपत्यास्थानी और ५ विध्यादर्शन प्रत्ययी छाप वेसाही कहभा ॥ १० ॥ कहो भगवन् ! यथा

जो इष्टं समष्टे ॥ सेकेष्टेण भते ! एव बुद्धिः ? गोयमा ! मनुस्सा दुविहा-
पणत्ता तज्झा महासरीराय अप्पासरीराय तत्थणं अते महासरीरा तेणं बहुतराए
पोग्गले आहारैति जाव बहुतराए पोग्गलेणीससति, आहृच्च आहारैति जाव आहृच्चणीस-
सति, तत्थणं जत अप्पसरीरा तेण अप्पतराए पोग्गले आहारैति जाव अप्पतराए,
पाग्लेणीससति, अभिक्खण २ आहारैति जाव अभिक्खण २ णीससति, सेतेण
ट्टण गोयमा ! एव बुद्धिः मनुस्सासन्वे जो समाहारा सेस जहा णेरइयाण, णवर

सब मनुष्य मरीति आहारवाले हैं ! इत्यादि पूर्वोक्त प्रकार प्रश्न मानना ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य
नहीं है अहा मगबन् ! किस कारण ऐसा कहा ! अहा गौतम ! मनुष्य का प्रकार के कोई है, तथा-
महा शरीरवाला और अन्य शरीरवाले, ठम में जो महा शरीरवाले हैं व बहुत पुद्गलों का आधार
करते हैं यावत् बहुत पुद्गलों का आवासवाला होते हैं कदाचित् आधार करते हैं कदाचित् आवास लेते
हैं पर पाठ दृश्यते उत्तरकुरु क महा शरीरी मनुष्य आश्रित है, क्योंकि उन की तीन कोष्ठ की अब
गारवा है और व सष्टमक में (तीन दिनों में) आधार ग्रहण करते हैं, और २ उस में जो अन्य मरी
रवाला मनुष्य तथा सप्तिन्धम मनुष्य हैं व अल्पपुद्गलों का आधार करते हैं यावत् अन्य ही पुद्गलों का आवास

किरियाहिं मणूमा त्रिविहा पण्णत्तं तज्जहा मम्मदिट्ठी मिच्छादिट्ठी सगमादिट्ठी;
तत्थण जेतं सगमादिट्ठी ते त्रिविहा पण्णत्ता तज्जहा मजया, मजयासजया,
तत्थण जेतं सजता ते पुविहा पण्णत्ता तज्जहान्तराग सजयाय, वीयरग मजयाय,
तत्थण जेतं वीयरग सजता तेणं काकिरिया, तत्थण जेतं मरागसंजया त पुविहा
पण्णत्ता तज्जहा पमस सजयाय अपमत्त सजयाय, तत्थण जेतं अपमत्त संजया त्ति
पुगा मायावत्तिया किरिया कज्जति, तत्थण जेतं पमत्त सजया त्ति वो किरियाओ
कज्जति तज्जहा आरमिया मायावत्तिया तत्थण जेतं संजयामजया तेसिं तिप्पि कंरया

भय लव है, बारम्बार आहार करते हैं बारम्बार स्वासोन्वास, स्नान हैं, इस मिये यही गौतम ! ऐसा
करा मनुष्य सब सर्वस्व आहारगले नहीं दे देय कवन नरीये जैसे करुणा, भिक्षु में इतना विशेष कि
मनुष्य तीन प्रकार क करे हैं, तथया—सम्पत्क इष्टी, मिच्छादष्टी, व समधिध्यादष्टी इम में
ओ मध्यक् इष्टी हैं व तीन प्रकार के करते हैं तथया—१ तथया—२ असंयति और ३ संयतासंयति
इम में जो संयति हैं वे दो प्रकार के करते हैं तथया—१ राग अति उत्त गुणस्या न—२ दुःख गुणस्या न—३ भय गुणस्या न—४
विराग संयति ऊपर के गुणस्वान के इसमें सो विरामाभयति व दो प्रकार हैं धोर भा—१, ग से—२
व दो प्रकार के हैं तथया—ममत्त संयति छोड़े मुन स्थान के जोर अपमत्त संयति सातव से व छोड़े गुणस्वान

मिच्छादिष्टी उववण्णगाय, अमाई सम्मादिष्टी उववण्णगाय; तत्थण-जेते माईमिच्छ-
दिष्टी उववण्णगा तेणं अण्येदणतरागा, तत्थणं जेते अमाई सम्मादिष्टी उववण्णगा
तेण महावेदणतरागा, सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव बुध्धति सेस तहेव ॥ १२ ॥ सले
स्साणं मते ! जेरइया सव्वेसमाहारा सव्वेसमसरीरा, सव्वेसमुत्तास नीत्तासगा
सव्वेव पुच्छा ? गोयमा ! एवं जहा ओहिओगमओ तहासलेस्स गमओवि- निरवि-
सेस भाणियव्वो जावु वेमाणिया॥कण्हलेस्साण भते। जेरइया सव्वेसमाहारा समसरीरा

तथा—' मायी मिथ्या इष्टि उत्पन्न और अमायी सत्यक इष्टी उत्पन्न इस में, जो मायी
मिथ्याइष्टी है वे अत्य वेदना वाले हैं और जा अमायी सत्यकइष्टी है वे पहावेदना वाले हैं यहाँ
ज्ञानवेदनी की अपेक्षा ग्रहण करना इसलिय अहो गौतम ! ऐसा कहा, छप तैसा ही कहना
यह चौबीस ही दहक का औपिक औपिकार कहा ॥ १५ ॥, अब इन १५ओं का कथन चौबीस दहक पर
सेत्रपा आश्रय दइत है अहो भगवन् ! क्या सकेशी नारकी सब समान आहार धार, समान शरीर वाले
ब समान उन्मास निश्वास वाले हैं ? अहो गौतम ! जेते औपिक गया कहा तने सेवपाका गया मित्रिण्य
देवाभिरु रचित कहना अहो भगवन् ! कुण्डलाशिक नेरीया सब सरीस्ते आहारखाते हैं क्या इत्यादि प्रभा !
त्रेमा औपिक का करार तेमे ही कहना मिल में इतना, विशेष, मारकी में वेदना व्याप्रिय मायी मिथ्यात्व

सन्वेव पुच्छा? गोयमा! जहा ओहिया, णवरं णेरइया वेदणाए माईमिच्छादिट्ठी उववण्ण
गाय अमाइसम्मादिट्ठी उववण्णगाय माणियब्बा, सेस तहेव जहा ओहिताण
असुरकुमारा जाव वाणमतरा एत जहा ओहिया णवर मणसाण, किरियाहिंविसेसा,
जाव तत्थण जत सम्मादिट्ठी त तिंविहा पणत्ता तजहा सजया, असजया संजया।
सजया जहा आहियाण जातिसिय वेमाणियाण आदिक्षियासु तिसुलंसासु णपुच्छिज्जति
एव जहा किण्हलस्सा उच्चारिया तहा णील्लस्सावि उच्चारयब्बा, काडलंस्सा णरइए
हिंता आरुम जाव वाणमतरा णवर काटलंस्साए णेरइया वेदणाए जहा आहिया ॥

हृष्टी और अपायी सम्यक् हृष्टो उत्सव होनका कहना, श्रेय तेसे ही कहना औषिक-समुषय की कहा हैस अमुरकुमारादे दशों ही मदनपातदेय वाच स्वावर तीनों बिठ्ठलान्त्रय तिर्दश पौषिद्रिय मनुष्य और राजग्यन्तर का भी कहना, मिस में इतना विशय मनुष्य में क्रिया का विञ्चपल जानना याबत् उस में जा सम्यक् हृष्टी है वे तीन प्रकार क कह है तथया—' वेयति, 'वे' मतयति और 'मयतामयति' इन का भी औषिक में कहा हैसा हो कहना और उपाधिपी देवानिक में पहिल की (कुण्जनील कापुन) तीन सख्या नहीं है उस का प्रश्न नहीं पुछना यों मिस प्रकार कुण्ज लक्षणा का प्रिकार कहा हैसा ही नील लक्षणा का भी कहना, कापुनछेयोंका नेरीय से योपित बाण्ज्यन्तर देवता तक

तेतलेस्माप्यं मते ! असुरकुमाराण ताओचंच पुच्छा ? गोयमा ! नहेय ओहिषा सहैव
 नश्ये नदणाए जहा जाइसिया ॥ पुढाविआठ । नरसङ्ग पचिदियतिरिक्खजाणिया
 मणस्सा जहा आहिया, तहेव भाणियन्वा, नवर मणस्सा किरियाहिं असजया ते
 पमसाय अपमत्ताय भाणियन्वा, सरागा धीतरागा नरिथ ॥ वागमतरा तेतलेस्साए
 जहा असुरकुमारा पुत्र जोइसिया वसाणियावि, सेस तच्च ॥ एव पम्हलतावि
 भाणियन्वा, पवरे जसि अरिथ सुक्खिस्मावि तहेय जीसि अरिथ सच्च तहेव जहा

कहना त्रिम में इतना विजय काणून सही नरण्या में भेसा औपक का कहा तैसे ही कहना भरो
 मगवन् ! तनालदया अमुकुमार की उक्त प्रकार की ही पृच्छा ! भरो गौतप ! जे॥ औपक का
 कहा तैसा हा कहना परंतु इतना विशेष वेदना माश्रय नैसा उपात्ती का कहा तैसा कहना अर्थात्
 भेदी ही कहना परंतु भसक्ती नहीं कहना पृच्छी, पानी, इनस्यानि, पनेइय निर्वच व पनुत्पका जैसा औपिक
 का कहा तैसा कहना त्रिम में इतना विशेष पनुत्प का क्रिया क भायिकार में मयति क कवन
 पपण भमपण कहना परंतु मगगी गीतरागी नहीं कहना क्यों कि वातरागी में नेमो लदया नहीं हे
 पाणमयरार का नेमान्दया का जैसा असुर कुमार का कहा तैसा कहना ऐसे ही व्येतिपा का भी
 कहना वेसाविक का भी कहना, जब नेमा ही जानना एत ही पणकण्या का भी कहना जिस में तेजा

ओहियाण गणओ, जत्र पम्हलस, सुकलेस्साओ ॥ पार्चिय सिरिक्ख
 जाभिय मणुरम वेमाणियाण स्यन यसाणति ॥ पणवणा लस्सा पदे पढमो
 उदेमा सम्मचो ॥ १७ ॥ १ ॥
 कतिण भत' लरसाआ पणचाआ' गायमा ! छलेस्सामो पणचाओ तजहा कम्हलेस्सा
 णीळलेस्सा, काठलेस्सा, तेठलस्सा पम्हलस्सा, सुक्खलेस्सा ॥ गेरइयाण भंते !
 कइलस्साआ पणचाओ ? गोयमा ! तिण्णि तजहा किण्ह नील काठलेस्सा ॥

सङ्ग हावे उम का करना और थुल छेवपा का भी ऐसा ही करना पगु बिस में होवे उम में करना
 प्राप्ति का कहा, मर नैसा हो जानना जैसा मित्र में इतना विषय १४ वषा थुल सङ्ग पंचेदिय तिर्यच
 मनुष्य और वैमानिक में ही जाती है इति सङ्ग पद का मयकाइया सपूर्ण पुरा ॥ १७ ॥ १ ॥

अहा भगवन् ! कितनी छेवपा करी है ! अहो गीम ! छ सङ्ग करी है तथय—' कुण्डवषा,
 १ नीम सङ्ग, २ कापुन सङ्ग, ३ मेजा सङ्ग ५ पष वेवपा और ६ मुल्लवणा अहो भगवन् ! नरक
 में कितनी सङ्ग करी है ! अहा गीम ! तीन सङ्ग करी है तथय—' कुण्ड सङ्ग, २ नीम वेवपा,
 और ३ कापुन सङ्ग, इस में पहिला दूसरी नरक में एक कापात सङ्ग, तीसरी, य कापुत सङ्ग पाते

तिरिक्ख जोगियाण भते! कइलेस्साओ पण्णात्ताओ? गोयमा! छलेस्साओ पण्णात्ताओ तजहा कण्हलस्सा जाव सुक्कलस्सा ॥ एगिदियाण भते! कइ लेस्साओ पण्णात्ताओ? मायमा! वचारि लेस्साओ पण्णात्ताओ तजहा-कण्हलेस्सा जाव तउलेस्सा ॥ पुढात्रि काइयाण भते! कइलेस्साओ पण्णात्ताओ? गोयमा! एव चव, आड वणस्सइ काइयाणवि एव तउवाड वेइदिय तेइदिय चउरिदियाण जहा गेरइयाण ॥ पविदिय तिरिक्ख जागियाण पुण्णा? गोयमा! छलेस्सा कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेस्सा ॥

बहुन नीन मेइया! काले चार वीथी में एक नील लइया, पांचवीं में नील सेइया-वाले बहुत और कुण्ण मेइया व थोड़े छठी में कुण्ण लइया और सातवीं में एउप कुण्ण लइया भानना भो पगवन् तिर्यवपोनिकमे- कितनी सेइया कही है! अहा भोगन! छ सेइया कही है तइया! कुण्ण लेइया पावत् गुक्कलइया भो पगवन्! एकेन्द्रिय में कितनी लइया कही है! अहा भोगन! वारलइया कही है कुण्णलेइया पावत् तेमोलेइया अहा पगवन्! पुण्णिकीया में कितनी लइया कही है! अही भोगन! ऐसे ही चार लइया कही है; ऐसे ही यएस्साय में और वनस्पतिकीय में भी चार ही सेइया कही है वजस्साय बाऊस्साय वेइन्द्रिय वेइन्द्रिय वीतिन्त्रिय में नरक के जेम तीन सेइया कही है तिर्यव पोमिन्द्रियकी, पुण्णा? भो भोगन! छ लइया कही है भूटन मेइया पावत् भुक्कलइया, भूयस्सुण्ण पोमिन्द्रिय तिर्यव पोनिक की पुण्णा? अही भोगन! ऐसे

तजहा कण्ठलेरसा जाव तेउलेस्सा ॥ भवणवासीण भते ! देवाणं पुच्छा ? गोयमा !
 एव चेव ॥ एव भवणवासीणीणवि ॥ वाणमतर देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! एवचेव ॥
 एव वाणमतरणीणवि ॥ जोइसियाण पुच्छा ? गोयमा ! एगातेउलेरसा ॥ एव जोइमि
 णीणवि ॥ वेमाणियाण पुच्छा ? गोयमातिणि तजहा तेउलेस्सा यम्हलेस्सा सुक्कलेस्सा
 वेमजिणीण पुच्छा ? गायमा ! एगा तेउलेस्सा ॥ १ ॥ एतेसिणं भते !
 जीवाण सलेरसाण कण्ठ लेस्साण जाव सुक्कलेस्साण अलेस्साणय

देवीमें मी एक वेनो जेइया, वैमानिक की पूछा ? अहो गौतम ! वीन सइया कही है तथया ? वेमा, २
 पद और १ झुक पहिले दूसरे दबलोक में एक देमो, हीसरे, बोबे, पांचवे, दबलोक में एक
 पद लेइया और ऊपरके दबलोक में एक झुक लेइया वैमानिक की देवी की पूछा ! अहो गौतम ! एक तेजो
 सइया क्योंकि-देवीयों की इस्पति फक्त पाइले दूर दबलोक में ही है यह चौबीस ही दहक में लइया का
 कवन हुवा ॥ १ ॥ अब चौबीस ही दहक की सइया की अलग २ अलगइइय करे है अहो मगवन् !
 इन १ सलेडी कुल्ल सही यावत् अल्लेडी और अल्लेडी नीबों में कोन २ कपादा कय है ! अहो गौतम !
 सब से थोड झुक सइया बाले क्यों कि मनुष्य तिर्यच में तथा लोकि ऊपर के दबलोक देवों में ही पाती
 है २ तम से पद सइया बाले ससपात गुने क्योंकि मनुष्य तिर्यच और सनसुपारादि तीन दबलोक में
 पाती है इस देमो सइया बाळ असेइयातगुने क्योंकि पट्टी पानी बनस्पति के जमपांस में मनुष्य तिर्यच

कयरे २ हितो अप्पावा ४? गोयमा! सव्वयोवा जीवा सुद्धलेस्सा, पम्हलेस्सा सखेज्जगुणा,
तेउलेस्सा सखेज्जगुणा, अलेस्सा अणत गुणा, काउलेस्सा अणत गुणा, णिल्लेस्सा
विसेसाहिंया, कम्हलेस्सा विसेसाहिंया सलेस्सा विसेसाहिंया ॥ २ ॥ एतेसिणं
भते ! णेरइयाण कम्हलेस्साणं णिल्लस्साणं काउलेस्साणय कयरे २ हितो अप्पावा
४? गोयमा ! सव्वयोवा णेरइया कम्हलेस्सा, णिल्लस्सा असखेज्जगुणा, काउलेस्सा

और चारों आति क दवों में पाती है, ६ उस में अछेडी अनवगुने सिद्ध भगवत् आश्रय, ५ उस से
कापुत्त सखी भ्रन्तवगुने क्योकि वनस्याति में पाती है ६ उस से नील लेखी वाले विद्येपाथिक क्यों कि
पावपी नरक तक पाती है, ७ उस से कृष्ण खडी विद्येपाथिक क्यों कि मातपी नरक तक पाती है
तथा सक्किट परिणामी जीव पणुत हैं और ८ उससे सखेडी विद्येपाथिक क्यों कि इस में छडी लेख्या
वाले का समवेद्य होता है यह समुचय भीनश्रिय अत्यावदुत करी ॥ २ ॥ अब बोधीस ददक आश्रय
करते हैं प्रथम नरक की पृच्छा अहो भगवन् ! १ कृष्ण लेखी, २ नील लेखी, और ३ कापुत्त लेखी नेरीये
में कीनरकपी जयादा तुल्यविषय हैं? अहो गौतम ! सब से बोट नेरीये कृष्ण लेख्यावाले क्योकि छडी सातवी नरक
वे ही यह होती है, चौथे वहाँ का साथ योहा होने से मरीय बोट हैं, उसमें नील लेख्यावाले असंख्यावगुने क्योकि
पावपी नरक में पाती है, और क्षेत्र भी बड़ा है, उस से कापात्त लेख्यावाले नरीय असंख्यावगुने क्योकि

अमरवज्रगुणा, ॥ ३ ॥ एतसिण भते ! तिरिक्खज्जाणिघाणं कण्हलस्साण जाव
सुक्खलस्साणय कयर २ हितो अप्पावा ४ ? गायमा ! सस्वरथोवा तिरिक्खजोपिया
सुक्खलेस्सा एव जहा अहिया, अयर अलस्सापजा भाणियन्वा ॥ एतसिण
भत ! एगिधियाण कण्हलस्साण जाव तेउलस्साणय कयर २ हितो अप्पावा ४ ?
गोयमा ! सस्वरथावा एगिधिया तेउलस्सा काउलस्सा अणत्तगुणा, णाल्लेस्सा
विससाहिया, कण्हलस्सा विससाहिया ॥ एतसिण भत ! पुढविकाइयाण कण्हलस्साणं

यह भी दूसरी नरक में पाती है इस का क्षेत्र भी बड़ा है ॥ ३ ॥ अब तिर्यच यानिक की अस्यावदुत्व
करन है ? महा भगवन् ! कृष्ण लक्ष्मी यावत् दुख नेत्रशाल तिर्यच में कान किम स याद क्यादा है ?
अहो गीतम ! तब से धाद त्रिर्ध्व यानिक नरक सुदयायाल यो गिम प्रकार औषिक अस्यावदुत्व कही
बेमे हो यरं भी कहना परतु यहा इता विप्रप कि इरा में बलक्ष्मी नर्को कहना क्यों कि बलक्ष्मी वनद्वे
गुभस्पावनाल भेतें हैं और त्रिर्ध्व पात्र गुणस्थान छद् ॥ तात हैं अहो यगवत्त ! कृष्ण छेपा पावत
तमा छप्पासल पक्षेद्रिय में कौन २ थोड़ उपद्र ६ ? अदा गीतम ! सब म बाद पक्षेद्रिय तेजोलदया
पम, यो कि फक्त यादर प्रत्यक पृथ्वी पानी वनस्पति के अपर्षासु में ही पाती है, हम से कापुल
मन्त्रासाल भर्ननगुने, क्यों कि प्यास भवस्या में तथा मृश्य साधारण प्रत्यक सब में पाती है, हम से

तेइंदिय चठरिंदियाणं जहा तठकाइयाण ॥ १ ॥ एतसिण भंते ! पंचिंदिय
तिरिक्ख जोगियाण कण्डलेंसाण जात्र सुक्खलेंसाणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ ?
गोयमा ! जहा आहियाण, तिरिक्ख जाणियाणं गवर काउलस्सा असखेज्जगुणा ॥ २ ॥
समुच्छिम पंचिंदिय तिरिक्ख जोगियाण जहा तेउकाइयाण ॥ ३ ॥ गम्भवक्कतिय पंचिंदिय
तिरिक्ख जाणियाण, जहा ओहियाण तिरिक्ख जोगियाण गवर काउलस्सा असखे
ज्जगुणा, ॥ ४ ॥ एव तिरिक्ख जोगिणीणवि ॥ ५ ॥ एतसिण भंते ! समुच्छिम पंचिंदिय

की अरया बहुत ठेककाय जैसी कहना अत्र पंचेन्द्रिय तिर्यक् की कहते हैं अशो भगवन् ! कृष्ण छेड्या
पारत तेना लेइयाबाले तिर्यक् पंचेन्द्रिय में कौन २ ब्यादा कर्मा हैं ? अशो गोतम ! जिस प्रकार औधिक
तिर्यक् की कही वम ही प्रकार कहना परंतु इतना विशेष कि यहाँ कापोठ लेइयाबाले असंख्यातगुने
कहना ॥ १ ॥ समुच्छिम पंचेन्द्रिय तिर्यक् यौनिक की अस्यायुतत्व सेवकाया जैसी कहना ॥ २ ॥ गर्भम
तिर्यक् पंचेन्द्रिय की अस्यायुतत्व औधिक तिर्यक् के जैसी ही कहना परंतु इतना विशेष कापोठ छेड्याबाले
भगस्पात गुना कहना ॥ ३ ॥ ऐसे ही तिर्यक्नी की भी अल्प बहुत कहना ॥ ४ ॥ अशो भगवन् !
इत कृष्णहत्या पाव भूमिधूम्य तिर्यक् व गर्भम तिर्यक् पंचेन्द्रिय पावत् शुक्ल छेड्या बाले में कौन २ कभी
गयादा हैं ? अहा गोतम ! सब स पाइ गभन तिर्यक् शुक्ल छेड्या बाले वस से पत्र केइया बाले

तिरिक्ख जोणियाण गम्भयक्कीत्तिय पच्चिदिय तिरिक्ख जोणिय कण्हलेस्साण जाय सुकालस्साणय कयरे २ हिंतो अध्वावा बहुया? गोयमा! सन्वरथोवा गम्भवक्कत्तिय पच्चिदिय तिरिक्ख जोणिया सुकलेस्सा, पण्हलस्सा सखेज्जगुणा, तेल्लेस्सा सखज्जगुणा, काठलस्सा सखेज्जगुणा, नील्लेस्सा विसेसाहिंया, कण्हलेस्सा विसेसाहिंया काठलेस्सा समुच्छिम पच्चिदिय तिरिक्ख जोणिया असखेज्जगुणा नील्लेस्सा विसेसाहिंया कण्हलस्सा विसेसाहिंया ॥ १ ॥ एतेस्सिणं भते! समुच्छिम पच्चिदिय तिरिक्ख

संस्तयातगुणे, उस मे वजा लइया पास गरुपातगुन, उस मे कापोत लइया वाले सरुपातगुने, उस स नील लइया वाले, विरोपापिक, उस स कुण्ड लइयावाले सरुपातगुन ॥ ५ ॥ भइो भगवन्! समुच्छिम पच्चिदिय विर्येव यानीक और विर्येवनी इन मे कुण्ड लइया वाले यापत् थुलु लइया बात मे कीन २ जयादा कमी है? भइो गौतम! जैसी पचमो भट्ठा बहुत करी तेसी छोटी भी कहना ॥ १ ॥ भइा भगवन्! गर्भज त्रिपच पंचेन्द्रिय और विर्येवनी इन मे कुण्ड लइया वाले यावत् थुलु लइया वाले कीन २ कमी जयादा विरोपापिक है? भइो गौतम! सब से थोर थुलु लइया वाले गर्भज विर्येव पंचेन्द्रिय २ उससे थुलु लइया वाली विर्येवनी संख्याय गनी, ३ उस स पच लइया वाले गमन विर्येव पंचेन्द्रिय संख्यातगुने, ४ उस से पद लइया वाली विर्येवनी संख्यातगुनी, ५ उस स तेमो लइया वाले विर्येव संख्यातगुने, १ उस स

जोगियाण तिरिक्ख जोगिणीणय कण्हलेरसाण जाय सुक्खलरसाण कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! जहव पचम तहा इमपि छट्ठ भाणियन्ध ॥ ७ ॥ एतेसिण मते ! गम्भयक्कतिय पच्चिदिय तिरिक्खजोगियाण तिरिक्खजोगिणीणय कण्हलरसाण जाय सुक्खलरसाणय कयरे २ हित्ता अप्पावा ४ ? गोयमा ! सन्वदोवा गम्भयक्कतिय पच्चिदिय तिरिक्खजोगिया सुक्खलरसाओ तिरिक्खजोगिणीओ सखेज्जगुणओ, पम्हलेसा गम्भयक्कतियपच्चिदिय तिरिक्खजोगिया सखेज्जगुणा, पम्हलरसाओ तिरिक्खजोगिणीओ सखेज्जगुणओ तडलरसा सखेज्जगुणा, तडलेरसाओ सखेज्जगुणाओ, काडलेरसा सखेज्जगुणा नीललरसा विसेसाहिया कण्हलरसा विसेसाहिया,

तमो हे श्वा वास्ते तिर्यच सरुपासगुने, ७ वस मे कापुठ लक्ष्या वास्ते तिर्यच सरुपासगुने, ८ वस मे कापुठ लक्ष्या वास्ते तिर्यच विज्ञपाधिक, ९ वस मे कृष्ण लेखा वास्ते तिर्यच विज्ञपाधिक, १० वस मे कापुठ लक्ष्या वास्ती तिर्यवनी भरुपास गुनी, ११ वस स नील लक्ष्या वास्ती तिर्यवनी विज्ञेपाधिक, १२ वस स कृष्ण सेरया वास्ती तिर्यवणी विज्ञेपाधिक॥ ७ ॥ अहा मगयन् । समूर्च्छाम पसान्द्रय-निर्यच योनिक गमम पचान्द्रिय तिर्यच योनिक, गमम पचेन्द्रिय तिर्यवनी दृष्ट्य सेक्या बाल यावत् शुक्रद्वरा बाल में रौन र कपी गयादा तुदप है । अहा नौतम । १-सह मे घोडा गभज पंचेन्द्रिय तिथय यानिक प्रलु स्तरया पाछ,

काउलरसाओ सखजगुणाओ, णील्लरसाओ विभेसाद्विआओ, कण्ठलेस्साआ विसेसा
द्विआओ ॥ ८ ॥ एतस्मिन् भवे ! समुच्छिद्य पञ्चदिय तिरिक्ख जाणियाण, गम्भय
क्षतिय पञ्चदिय तिरिक्ख जाणियाण, गम्भयक्षतिय पञ्चदिय तिरिक्ख जाणियाण
कण्ठलेस्साण जाय सुखल्लरसाणय कयर २ हितो अप्यावा ४ ? गोयमा! सवइस्योवा
गम्भयक्षतिय पञ्चदिय तिरिक्ख जाणिया सुखल्लरसाओ सखजगुणाओ,
पम्हलेस्सा गम्भयक्षतिय पञ्चदिय तिरिक्ख जाणिया सखजगुणा, पम्हलेस्साओ
तिरिक्ख जाणियाओ सखजगुणाओ तउल्लरसा गम्भयक्षतिय पञ्चदिय सखजगुणा
तउल्लरसाओ तिरिक्ख जाणियाओ सखजगुणाओ काउल्लरसा गम्भयक्षतिय तिरिक्ख
जाणिया सखजगुणा णील्लरसा विभेसाद्विआ, कण्ठलेस्सा विसेसाद्विआ, काउल्ल

૨૩૫ ૧૧ યુક્ત સંધ્યા ચાલી ૧૦ જાની મત્સ્યાત્રગુની ૨૨ રસ સ ૧૬ શ્લેષ્ઠા પાસ ગર્ભજ ત્રિયંબ મહાચાત્રગુને,
૨૩૫ ૧૨ વૃષ્ટ સંધ્યા ચાલી ૧૦ જાની મત્સ્યાત્રગુની, ૫ ક્રમ સે મેઝા શ્લેષ્ઠાચાટે ગમજ ત્રિયંબ સસ્યાત્રગુન,
૨૩૫ ૧૩ મેઝા સંધ્યા ચાલી ત્રિયંબની સસ્યાત્રગુની, ૭ રમ સે કાપુત સ્થાના ચાંદ ગમમ ત્રિયંબ
સસ્યાત્રગુને, ૮ રસ સ નીસ સ્થાના ચાંદ ગર્ભજ ત્રિયંબ ચિત્રપાષિક, ૯ રસ સ કુલ્લ શ્લેષ્ઠાચાલ ગર્ભજ
ત્રિયંબ ચિત્રોપાષિક, ૧૦ રમ સે કાપુત લગ્નાચાલી ત્રિયંબની સસ્યાત્રગુની ૧૧ રસમ નીસ સસ્યાચાલી

स्ताओ सखेजगणीओ, णील्लेस्ताओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्ताओ, विसेसाहियाओ, काठलेस्ता समुच्छिम पंचिदिय तिरिक्ख जाणिया, असखेजगुणा, णील्लेस्ता विसेसाहिया, कण्हलेस्ता विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिण मते ! पंचिदिय तिरिक्ख जोणियाण तिरिक्ख जाणिणीणय कण्हलसाण जाव सुक्खलेस्ताणय कयर २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सन्वत्योवा पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्खलेस्ता, सुक्खलस्ताओ सखेजगुणाआ पण्हलेस्ता सखेजगुणा, पण्हलेस्ताओ सखेजगुणाओ तेठलेस्ता सखेजगुणा तेजोलेस्ताओ सखेजगुणाओ, काठलेस्ता सखेजगुणा णील्लेस्ता विसेसाहिया कण्हलेस्ता विसेसाहिया काठलस्ताओ सखेजगुणाओ, नील्लेस्ताओ विसे-

वियचनी विसेपाधिक ११ वस से कापुन सेव्यावाले समुच्छिम तिरिय पंचेन्द्रय असख्यातगुने, १४ वस से नील सख्यावाले समुच्छिम तिरिय पंचेन्द्रय विसेपाधिक, १५ वस स कृष्ण सेव्यावाले समुच्छिम तिरिय पंचेन्द्रय विसेपाधिक ॥ ८ ॥ षडो मगधन् ! पंचेन्द्रय तिरिय योनीक और तिरियचनी कृष्ण सेव्यावाले शुक्ल सेव्यावाले इन्ने कौनरकभी ज्यावा होमहो गौतम ! सब स याट पंचेन्द्रय तिरिय यानिक शुक्लसेव्यावाले शुक्ललक्ष्यानासी तिरियचनी संख्यातगुनी, १५ वस सेव्यावाले तिरिय सख्यातगुनी ६ पणसेव्यावासी तिरियचनी संख्यातगुनी, ५ वस सेव्यावाले तिरिय संख्यातगुने, ११ वस सेव्यावासी तिरियचनी संख्यातगुने.

साद्विद्याया कण्डलेस्साओ त्रिसेसाद्विद्याओ ॥ १० ॥ एतेसिण भते । तिरिक्ख जोगि
याणे तिरिक्ख जाणिर्णिय कण्डलेस्साण जाव सुक्कलस्साणय कयरे २ हितो
अप्पाधा बहुआधा तुहावा विससाद्विद्यावा ? गोयमा ! जहेव जम्म अप्पावहुग तहा
इमपि, जवरं काठलस्सा तिरिक्ख जोगिया अणतगुणा ॥ एउ एते वस अप्पावहुगा
तिरिक्ख जोगियाण ॥ एव मणुस्साणवि अप्पावहुगा माप्पियन्वा, जवर पच्छिमगं
अप्पावहुगा जत्थि ॥ ४ ॥ एतेसिण भते ! दवाण कण्डलेस्साण जाव सुक्कलस्साणय

गुनी, ० कापून् खेरपाछे तिरिच सख्यातगुने, ८ नील्लेखपा वाले तिरिच विस्वपापिक, ९ कुण्णेल्लेखा
बानी तिरिच विस्वपापिक १ उस स कापून् खेरपाबाली तिरिचनी सख्यातगुनी, ११ उस से नील्लेखपा
बाली तिरिचनी विस्वपापिक और ठम म कुण्णेल्लेखा बाली तिरिचनी विस्वपापिक ॥ ० ॥ अहा भगवन् !
तिरिच पवेन्द्रिय और तिरिचनी में कुण्णेल्लेखा वाले यावन् सुक्कल्लेखा बाल इन में कमी क्यादा कौन ?
है ! अहो गौतम ! भिसप्रकार भवमी अथवा बहुत्व कही उसीप्रकार दशवी भी कहना जिसमें इतना विषय कापून्
सही तिरिच यानिक अनंतगुने कहना यों इस प्रकार दश अस्या बहुत तिरिच योनिक की इह भिस
प्रकार दश अस्या बहुत तिरिच योनिक की कही उस ही प्रकार मनुष्यों की भी अथवा बहुत कहना
जिस में इतना विस्वपापिक की अस्या बहुत नहीं कहना क्यों कि मनुष्य अनंत नहीं है ॥ १० ॥ अब

स्साओ सखेजगणीओ नीललेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ विसेसाहियाओ,
काठलेस्सा समुच्छिम पंचिदिय तिरिक्ख जाणियाः असखेजगुणा, नीललेस्सा विसे
साहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिण भते ! पंचिदिय तिरिक्ख
जोणियाण तिरिक्ख जाणिणीणय कण्हलसाण जाव सुक्खलेस्साणय कयर २ हितो
अप्पाभा ४ गोयसा ! सन्वत्थोवा पंचिदिय तिरिक्ख जोणिया सुक्खलेस्सा, सुक्खलेस्साओ
सखेजगुणाओ पण्हलेस्सा सखेजगुणा, पण्हलेस्साओ सखेजगुणाओ तेठलेस्सा
सखेजगुणा तेजोलेस्साओ सखेजगुणाओ, काठलेस्सा सखेजगुणा नीललेस्सा विसे
साहिया कण्हलेसा विसेसाहिया काठलेस्साओ सखेजगुणाओ, नीललेस्साओ विसे-

तिरिक्खनी चिन्नेपाधिक ११ उर से कापुन सेइयावाळे समुच्छिम तिरिक्ख पंचेन्द्रय असख्यातगुने, १४
इम से नील सइयावाळे समुच्छिम तिरिक्ख पंचेन्द्रय चिन्नेपाधिक, १५ उर स कुण्ड सेइया वाळे समुच्छिम
तिरिक्ख पंचेन्द्रय चिन्नेपाधिक ॥ ८ ॥ पढो मगवन् ! पंचेन्द्रय तिरिक्ख योनीक और तिरिक्खनी कुण्ड
सेइया वाळे शुक्ल सेइया वाळे इनये कीनरक्की ज्याता हो भरो गोतय ! सब स पाट पंचेन्द्रय तिरिक्ख योनीक
सुखदेव्या नाल रसुअइयावासी तिरिक्खनी सख्यातगुनी, १५ सेइयावाळे तिरिक्ख असख्यातगुनी, ४ पंचेन्द्रय
पाओ नियवनी संख्यातगुनी, ५ उर सेइयावाळे तिरिक्ख असख्यातगुने, ६ उर सेइयावाळे तिरिक्खनी संख्यात-

साहियाआ कण्ठलेस्साओ विससाहियाओ ॥ १० ॥ एतेसिण भते । तिरिक्ख जोणि
 याणं तिरिक्ख जाणिर्णय कण्ठलेस्साण जाव सुकलस्साणय कयरे २ हितो
 अप्पावा बहुआवा तुल्लावा विससाहियावा ? गोयमा ! जहेव जवम अप्पावहुग तथा
 इमये, जवरं काउलरसा तिरिक्ख जोणिया वणतगुणा ॥ एव एते दस अप्पावहुगा
 तिरिक्ख जोणियाण ॥ एव भणुस्साणवि अप्पावहुगा भाणियव्वा, जवर पच्छिमम
 अप्पावहुग जस्थि ॥ ४ ॥ एतेसिण भते ! दवाण कण्ठलेस्साण जाव सुकलरसाणय

गुनी, ७ कापून छेदशराहे तिरिय सख्यातगुने, ८ नीसछेदशरा वाले तिरिय विद्यपाथिक, ९ कृष्णछेदशरा
 वाली तिरिय विद्येपाथिक, १० तस स कापून सख्यावाली तिरियनी सख्यातगुनी, ११ तस से नीलसदशरा
 वाली तिरियनी विद्यापाथिक और तम स कृष्णछेदशरा वाली तिरियनी विद्यपाथिक ॥ ० ॥ अहा भगवन् !
 तिरिय पवेन्द्रिय और तिरियनी में कृष्णछेदशरा वाले यावत् शुरुसदशरा वाल इन में कमी उपादा कोन =
 है ! अहो गौतम ! जिसप्रकार नयनों अस्यावस्तुव की वसीप्रकार दृश्यी भी कहना जिसमें इतना विद्याकापूत
 लगी तिरिय योनिक अनतगुने कहना यों इस प्रकार दृष्ट अस्या बहुत 'तिरिय योनिक की दूर जिस
 प्रकार दृष्ट अस्या बहुत तिरिय योनिक की कही सा ही प्रकार मनुष्यों की भी अस्या बहुत कहना
 जिस में इतना विद्येप पीछ की मन्दा बहुत नहीं कहाना क्यों कि मनुष्य अनत नहीं है ॥ १० ॥ अथ

रसाओ सखेजगणीओ णील्लेस्साओ विसेसाहियाओ, कण्हलेस्साओ, विसेमाहियाओ,
काउलेस्सा समुंछिम पचिदिय तिरिक्ख जाबिया, असखेजगुणा, णील्लेस्सा विसे
साहिया, कण्हलेस्सा विसेसाहिया ॥ ९ ॥ एतेसिण भते ! पचिदिय तिरिक्ख
जोणिपाण तिरिक्ख जाणिणीणय कण्हलसाण जाव सुक्खलेस्साणय कयर २ हितो
अप्याथा ४ ? गोयमा ! सव्वत्थोवा पचिदिय तिरिक्ख जोणिपा सुक्खलेस्सा, सुक्खलेस्साओ
सखेजगुणाभा पण्हलेस्सा सखेजगुणा, पण्हलेस्साओ सखेजगुणाओ तेउलेस्सा
सखेजगुणा तेजोलेस्साओ सखेजगुणाओ, काउलेस्सा सखेजगुणा भील्लेस्सा विसे-
साहिया कण्हलेसा विसेसाहिया काउलस्साओ सखेजगुणाओ, नील्लेस्साओ विसे-

तियचनी विशेषाधिक ११ वस से कापून सेदयावाले समुंछिम तिरिय पचोदिय असख्यातगुने, १४
वस से नील सेदयावाले समुंछिम तिरिय पचोदिय विशेषाधिक, १५ वस से कुण्व सेदया वाले समुंछिम
तिरिय पचोदिय विशेषाधिक ॥ ८ ॥ महो मगरन् ! पचोदिय तियच योनीक और तिरियचनी कुण्व
सेदया वाले शुक्क सेदया वाले इनये कीनर कमी ज्यादा हो भवो गोतम ! सब स घाट पचोदिय तिरियच योनीक
गुण्ठेदया वाले २ शुक्कसेदयावाली तिरियचनी संख्यातगुनी, ३ पण्ठसेदयावाले तिरियच सख्यातगुनी ४ पण्ठसेदया
वाली तिरियचनी संख्यातगुनी, ५ तजो सेदयावाले तिरियच सख्यातने, ६ तजो सेदयावाली तिरियचनी संख्यात-

साहियाओ तेउलेस्साओ संखजगुणाओ ॥ २ ॥ एव एतसिणं भते । देवानं देवर्णिप
कण्हलेस्साण जाव सुक्कलस्साणय कयरे २ हितो अप्पत्ता ४ ? गोयमा! सव्वरयोवा
देवा सुक्कलेस्सा, पम्हलस्सा असस्यजगुणा, काउलेस्सा अससंखजगुणा, नील्लस्सा
वित्तिसाहिया, कण्हलेस्सा वित्तिसाहिया, कउलेस्साओ देवीओ सखेजगुणाओ, नील्ल-
लेस्साओ देवीओ विससाहियाओ, कण्हलेस्साओ वित्तिसाहियाओ, तउलेस्सा देवा

१ उस से कृष्ण लक्ष्मी वाली विधेयाधिक है क्यों कि एक कारन, से ४ उस से वेमा छेदयावाली देवी
विधेयाधिक है क्यों कि भवनपति बाजब्यन्तर उपाधिप देयानिक में मूणी है ॥ २ ॥ ओओ भगवन !
कृष्ण लक्ष्मी यावत् तुलु लक्ष्मी देवी में कोन २ कपी उगदा है ? अहा गोमम ! सब
से पाद देवता अरुलक्ष्मी, २ उस से वल्लेक्ष्मी असस्यातगुने, ३ उन से बापुड लेखी दत्ता
असस्यातगुन, ४ उस से नील लक्ष्मी देव विधेयाधिक, ५ उस में तुण्लक्ष्मी देव विधेयाधिक, ६ उस से बापुड लेखी दत्ता
देवीयो संस्यातगुनी, ७ उस स नील छेदयावाली देवीयो विधेयाधिक, ८ उस से कृष्ण लक्ष्यावाली देवीयो
विधेयाधिक, ९ उस स त्त्त्वा लेखपा बासे देवता भस्यात गुने और १० उस से वेमा छेदयावाली देवीयो

कयैर २ हितौ अप्याया ४ १ गोयमा । 'सन्वत्योत्रा दवा सुकलरसा
पम्लरसा अमस्वेज्जगुणा, काठलेस्ता असस्वेज्जगुणा, नीलरसा त्रिससाहिया,
कण्ठलेस्ता विससाहिया, तेउलरसा ससज्जगुणा ॥ १ ॥ एतेसिण

देवता की प्रशंसा बहुत करते हैं अगो मगन्तु ! भवता मे कुण्डलश्या बाल यावत् सुकुम्भश्या बाले मे
 कैल २ कभी गयादा है ! अथा गोतम ! मम मे पोहे देवता सुक लंघयाबाल है क्यों कि छत्र देवलोह के
 अंग के हवों में ही पानी है, २ तम स पद्मश्रुत्या बाल देवता असस्यावगुने क्यों कि सनत्कुमार महन्द्
 और श्रम देवलोह में पानी है ३ तस से कापूत लेषयाबाल दयता असस्यावगुने, क्यों कि भवनपति
 बाणभ्यन्तर देव मे यह पाती है ४ तस से नीम लंघया बाले देव विद्येपात्रिक, भवनपति बाणभ्यन्तर
 देव मे ही मनुम परिणाम बाल अपिह है, ५ तम स कुण्डलश्री देवता विद्येपात्रिक सक, और अस से
 नेत्रा लेटी देव भम्प्यावगुने है क्यों कि भवनपति बाणभ्यन्तर व्योतिषी और सोपर्म इष्टान देवलोह मे
 पाती है ॥ २ ॥ अहो भयवन् ! देवी मे कुण्डलश्याली यावत् तजो लङ्गयावली मे कोन २ कभी गयादा
 है? अहो गौमर्मास मे बोरी देवी कावोत लेषयावली है क्यों कि भवनपति व्यन्तर की देवी मे ही कल्पोत
 केन्या पानी है, २ तम से भीक लङ्गया वाली विद्येपात्रिक है क्यों कि बाणभ्यन्तर परिणाम वाली विद्येपात्रिक है

भत ! देवाण कण्हलरसाण जात्र तउलरसाणय कयरे १ । इता अप्पया ४ । गापया ।
सन्वयोवाओ देवीओ काठलरसाओ, नीलरसाओ, त्रिसेसाहियाओ कण्हलरसाओ । त्रिसे
साहियाओ, तेउलेरसाओ संखजगुणाओ ॥ २ ॥ एव एततिणं भते ! देवाणं देवीणय
कण्हलरसाण जाव सुकलरसाणय कयरे २ । हिता अप्पया ४ । गोयमा ! सन्वयोवा
देवा सुकलेरसा, कण्हलरसा अससजगुणा, काठलरसा असखजगुणा, नीलरसा
त्रिसेसाहिया, कण्हलेरसा त्रिसेसाहिया, काठलरसाओ देवीओ सखजगुणाओ, नील-
लेरसाओ देवीओ त्रिसेसाहियाओ, कण्हलरसाओ त्रिसेसाहियाओ, तेउलरसा देवा

१ उस से कुल्ल सदा वाली विशेषाधिक है क्यों कि उक्त कारण, से ४ उस से देवा लेख्यावाली देवी
विशेषाधिक है क्यों कि भवनपति बाणव्यन्तर ज्यातिप वैश्वानिक से वाली है ॥ २ ॥ अगे भवन !
कुल्ल सदी पावत् नुल्ल सदी दवता देवी में कौन २ कवी रयादा है ! अहा गौतम ! सब
से पाह दवता नल्लसदी, २ उस से पयनेओ अससयातगुने, ३ उस से बापुन सेपी दस्ता
असल्यातगुने, ४ उस से नील सदी देव विशयाधिक, ५ उस से कुल्लसदी देव विशेषाधिक, ६ उस से बापुनसदी
देवीयो सल्यातगुनी, ७ उस से नील लेख्यावासी देवीयो विशयाधिक, ८ उस से कुल्ल लेख्यावासी देवीयो
विशयाधिक, ९ उस से तमो लेख्या बाके देवता अस्यत्त गुने और १० उस से तेमो लेख्यावासी देवीयो

सखेजगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ सखेजगुणाओ ॥ ५ ॥ एतेसिण भते ! भवणवासीण देवाणय कण्हलेस्साणे जाव तउलस्साणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवययोथा भवणवासीदवा तेउलस्सा, काउलेस्सा असखेजगुणा, णीलस्सा त्रिसे साहिया कण्हलेस्सा त्रिसेसाहिया ४ ॥ एतेसिण भते ! भवणवासीण देवीणे कण्हलेस्सा जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! एवं भव ॥ ५ ॥ एतेसिण भते ! भवणवासीण देवाण देवीणय कण्हलेस्साण जाव तेउलेस्साणय कयरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवययोथा भवणवासी दवा तेउ

संख्यावगुनी ॥ १ ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! इन भवनपति देवता में कुछ खेपसबाके यावत् तेनो खेपसबाके में कमी ज्यादा कौन २ है ! अहो भगवन् ! सब मे पोरे भवनपति देवता तयो खेपस, इस स कापुवलेछी दब अनण्यात गुने, १ इन से नीस्केछी दब बिन्नेषाधिक, २ इन मे कुछ खेपस देव बिन्नेषाधिक ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवीकी कुछ लक्ष्या वाली यावत् तया खप्या वाली इन में कमी ज्यादा कौन २ है ! अहो भगवन् ! जिस प्रकार देवता की अत्या बहुत कही तैसी ही देवी की भी कहना ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवता भवनपति की देवी इनमें कुछ लक्ष्या वाले यावत् कुछ खेपस वाले में कौन २ कही ज्यादा है ! अहो भगवन् ! सब स पोरे भवनपति देवता तयो खेपस बाके, १ इन से भवनपति

लेस्सा, भवणवासिणीओ तेउलेस्साओ संखेजगुणाओ, काउलेस्सा भवणवासीदेवा
 असखेजगुणा, नीलेलेस्सा त्रिससाहिया कण्वलेस्सा त्रिससाहिया, काउलेस्साओ
 भवणवासिणीओ संखेजगुणाओ, नीलेलेस्साओ त्रिससाहियाओ, कण्वलेस्साओ,
 त्रिससाहियामा ॥ ६ ॥ एव वाणमतराणत्रि तिण्णव अप्पावहुणा अहेव भवणवा-
 सीण तहेव भाणियन्वा ॥ ७ ॥ एतेसिण भत ! ओईसियाण वेवाणं देवीणय तउ
 लेस्साणं कयरे २ हिंतो अप्पावा ४ ? गायमा ! सन्वरयोवा ओईसिया देवा तेउ-

की देवीयों तेओ लेखनावासी विवेकाधिक, २ इन से कापुत लेखना वाले भवनपति देवता समख्यातगुने,
 ४ इन में नीक लेखना वाले भुवनपति देवता विवेकाधिक, ५ इन स कुल्यलेखी देवता विवेकाधिक,
 ६ इस से कापुत लेखना वाली भुवनपति की देवी भस्वातगुनी, ७ इनस मीम लेखनावाली देवी विवेकाधिक
 ओर ८ इन में कुल्यसदया वाली देवी विवेकाधिक ॥ ६ ॥ अिस प्रकार भवनपति की तीन व्यथाबहुत
 की तेउ ही वाणकपन्तर देवता की भी तीनों व्यथाबहुत कहना (देवता देवीकी भस्मी
 गिनने स तीन व्यथा बहुत हाती है) ॥ ७ ॥ अबो भगवन् ! क्यातिनी देवता देवी में तेओ लेखना वास
 में कौन = कवी उपादा हैं ! अवा गोमय ! सब स मोटे ज्योतिषी देवता तेओ सख्या पावे, ज्योते

सखेजगुणा, तेतलेस्साओ देवीओ सखेजगुणाओ ॥ ५ ॥ एतंसिण भते ! भवणवासीण देवाणय कण्डुलेस्साणं जाव तउलस्साणय कयर २ हित्तो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवययोवा भवणवासीदवा तेतलस्सा असखेजगुणा, णीलस्सा विसे साहिया कण्डुलस्सा विसेसाहिया ४ ॥ एतंसिण भते ! भवणवासीणय दवीण कण्डुलस्सा जाव तेतलेस्साणय कयरे २ हित्तो अप्पावा ४ ? गोयमा ! एव एव ॥ ५ ॥ एतंसिण भते ! भवणवासीणं देवाण देवीणय कण्डुलस्साण अत्र तेतलेस्साणय कयरे २ हित्तो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सवययोवा भवणवासी दवा , तेउ

संस्त्यावगुनी ॥ ३ ॥ ५ ॥ अहो मगवन् ! इन भवनपति देवता में कृष्ण केष्ट्यावाके यावत् तेमो छेष्ट्यावाके में कमी क्यादा कोन् २ है ! अहो मौत्तम ! सब से बोदे भवनपति देवता तेमो छेष्टी, इस स कापुवलेष्टी देव अनुरयात गुने, ३ इन से नीलसेष्टी देव विष्टेपाधिक, ४ इन से कृष्ण छेष्टी देव विष्टेपाधिक ॥ ६ ॥ अहो मगवन् ! भवनपति देवीकी कृष्ण लक्ष्या वाली यावत् तेमो सष्ट्या वाली इन में कमी क्यादा कोन् २ है ! अहो मौत्तम ! जिस प्रकार देवता की अस्या बहुत कमी तैसी ही देवी की भी करना ॥ ५ ॥ अहो मगवन् ! भवनपति देवता भवनपति की देवी इनमें कृष्ण लक्ष्या वाले यावत् अहो मगवन् ! कमी क्यादा है ! अहो मौत्तम ! सब से बोद भवनपति देवता तेमो छेष्ट्या वाके, १ इन से भुवनपति

सखेज्जगुणाश्चो ॥ ३ ॥ एतेसिण भंते! भवणवासीणं देवाणं, वाणभतराण, ज्जोइसियाण
वेमाणियाणय देवाणय कण्डलस्साण जाव सुक्खलेस्साणय कयरे २ हितो अप्पात्रा ४?
गोयमा ! सन्दरथोवा वेमाणिया देवा सुक्खलेस्सा, पण्डलेस्सा असखज्जगुणा, तेठ-
लेस्सा असखेज्जगुणा, तेठलेस्सा भवणवासीदेवा असखेज्जगुणा, काठलेस्सा असखे
ज्जगुणा, णिलेस्सा भिसेसाहिवा, कण्डलेस्सा भिसेसाहिवा तेठलेस्सा वाणभतरादेवा
असखज्जगुणा काठलस्सा असखेज्जगुणा, णिललस्सा भिसेसाहिवा ॥ कण्डलेस्सा
! भवसाहिवा तेठलेस्सा ज्जोइसिया देवा सखज्जगुणा ॥ एतेसिण भंते ! भवणवासीण

२३ गुल्फस्सा वास मे कोन २ स थारे उपादा है ? अहा गौतम ! सच स थारें वैमानिक देव मुक्त
न्या दान २ उन मे पद्धतयो अभस्यतगुने, ३ उन से तेमो लक्ष्या वाले वैमानिक भवसातगुने, ४
१ स मनो म्दया फल भवनपति दत्ता भवसातगुने, ५ उनम कापुत लक्ष्यावाले भवनपति वसंत्त्याव
६ उन स नीम लक्ष्या वाल भवनपति विशयाधिक, ७ कृष्ण लक्षी विशयाधिक, ८ वन से तेमो
१० वाणव्यन्तर दूध असंत्त्याव गुने, ९ उन मे कापुत लक्षी वाणव्यन्तर असंत्त्याव गुने १० उन मे नीम
नी वाणव्यन्तर दूध विदयाधिक, ११ उन से कृष्ण लक्षी वाणव्यन्तर दूध विदयाधिक, १२ उन से
ता लक्ष्या वाले ययाविपी दूधता सत्त्यावगुने ॥ १ ॥ अहा भगवन् ! इन भवनपति वाणव्यन्तर ज्योतिषीव

ત્રાગમતરીણ જોશુંસિર્ણિં શ્રેમાભિર્ણિય ક્ષહલેસ્સાખ્ય જાત્ર તેહલેસ્સાખ્ય કયર ૨
 હિતા અપ્પાશ ૪ ? ગોયમા ! સન્વયયોધીઓ દેવીઓ વેમાણર્ણઓ તેહલસ્સાઓ
 મવળશ્રિતિર્ણીઓ તેહલસ્સાઓ અસલેજગુણાઓ કાટલેરસાઓ અસલેજગુણાઓ
 બીલ્લેરસાઓ ત્રિદેશાહિયાઓ ક્ષહલેસ્સાઆ ત્રિસેસાહિયાઓ, તેહલેસ્સાઓ વાળમતરીઓ
 દેવીઓ ક્ષસલેજગુણાઓ કાટલેરસાઓ અસલેજગુણાઓ, નીલ્લેસ્સાઓ ત્રિસેસાહિયાઓ,
 ક્ષહલેસ્સાઓ, વિસસાહિયાઓ તેહલેસ્સાઓજોશુંસિર્ણિઓ દેવીઓ સલેજગુણાઓ॥૨૧૦૧૧

वैमानिक दब की देवीयो कृष्ण स्रज्या वाली यावत् तेजो स्रज्या वाली में कौन २ क्यादा कभी है !
 महो गौतम ! सब स याही वैमानिक देवी तेजो स्रज्या वाली, २ इन से भवनपति की देवी तेजो स्रज्या
 वाली असंख्यात गुनी, ३ इन से कापुत स्रज्या वाली भुवनपति की देवी असंख्यात गुनी, ४ इन से नील
 स्रज्या वाली देवी विशेषाधिक, ५ इन से कृष्णस्रज्या वाली देवी विशेषाधिक, ६ इन स तेजा स्रज्या वाली बाज
 व्यन्तरी देवी असंख्यातगुनी, ७ इन से कापुत स्रज्या वाली व्यन्तरी देवी असंख्यातगुनी, ८ नील स्रज्या
 वाली व्यन्तरी देवी विशेषाधिक, ९ कृष्ण स्रज्या वाली व्यन्तरी देवी विशेषाधिक, १० इन से तेजोस्रज्या
 वाली उयोतिनी देवी संख्यातगुनी ॥ २ ॥ अहो भगवन् ! भवनपति देवता यावत् वैमानिक देवता देवी
 कृष्ण स्रज्या वाले यावत् बुद्ध स्रज्या वाल इन में कौन ३ बोदे क्यादा है ? ३ जो गौतम ! ३ सब से जोर

भयणवासीण जाव वैमाणीयाण वैवाणय देशीणय कण्ठलेस्साण जाव सुक्कले-
साण कयर २ हित्तो अप्पावा ४ ? गोयमा १ सत्त्वत्थोवा वेमाणिया देवा सुक्कलस्सा
पम्हलेस्सा असस्खेज्जगुणा तटलेस्सा असस्खज्जगुणा, तेउलेस्साओ देवीओ वेमाणिणीओ
सस्खज्जगुणाआ, तेउलस्सा भयणवासी देवा असस्खेज्जगुणा, तेउलेस्साओ भयणवा
सिणीओ संस्खेज्जगुणाओ, काउलस्सा भयणवासी असस्खेज्जगुणा नीललस्सा त्रिसेसाहिआ
कण्ठलस्सा त्रिसुसुहिआ कावलेस्साओ भयणवासीणीआ सस्खेज्जगुणाआ, नीललेस्साओ
त्रिसेसाहिआओ, कण्ठलेस्साआ विभेसाहिआओ, तेउलेस्सा वाणमंतरा देवा असस्खज्ज
गुणा, तेउलेस्साआ वाणमंतरीआ देवीओ सस्खेज्जगुणाआ काउलेस्सा वाणमंतरा

वैमानिकदेवता मुल्लेइयावास, २४ वनस पय ययाथाळ वैमानिक भयस्यातगु १, २ वनस वज्रासदवाचाल वैमानिक
असंस्थितगुने, ६ वनेसे तजोछदगावासी वैमानिककी देवीयो भल्यातगुनी ५ वनेसे वन, छेदगावाळ यवनपति
देवता असंस्थितगुने, १ वन म तजा मयगावाष्टी मदनपति देवी संस्थितगुनी, ७ वनस कापुतलत्री मयनपति
देवता असंस्थितगुन ८ वने स नील छदया गाउ यवनपति वव विशयापय ६, ७ वन स कृष्ण लक्षयाशाल
मुयनपतिदय विरयापिक, १० कायात लेखी यवनपति देवी सख्यातगुन, ११ वन से नील लेखा यवनपति
की देवी विशयापिक १२ वन से कृष्णलक्षी मुयनपति की देवी विशयापिक, १३ वन स वेतो लक्षो
वाणप्यन्तर देवता असंस्थितगुन, १४ वन से तेओ छेदया वासी वाणप्यन्तर की देवी सख्यातगुनी, १५

महिष्या ॥ सत्त्वगुण रसनाय नमः ॥ सत्त्वगुण रसनाय नमः ॥ एते
सिंहा मते । गेरुयाणं कण्ठलेखाणं नीललेखाणं काठलेखाणं कयरे २ हितो
अप्यङ्गुयाया महिष्याया १ गोयमा ! कण्ठलेखोहितो नीललेखा महिष्या,
नीललेखाहिना काठलेखा महिष्या, ॥ सत्त्वगुण रसनाय नमः ॥
सत्त्वगुण रसनाय नमः ॥ काठलेखा ॥ एतसिंहा मते । तिरिक्त्वा जंघियाणं कण्ठलेखाणं
जाय सुकलेखाणं कयरे २ हितो अप्यङ्गुयाया महिष्याया १ गोयमा जहा जीवा ॥

कापून् सेन्धी स तन्नी सेन्धी महाश्रद्धिक है तन्नी सेन्धी स ११ तन्नी महाश्रद्धिक है और पञ्चमेन्धी स
मुक्तसेन्धी महाश्रद्धिक है अर्थात् सब स सत्त्वगुण रसनाय नमः ॥ और सत्त्व से अधिक
श्रद्धि वाले मुक्तसेन्धी वाले हैं ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नरीये में कुण्ठलेखा वाले में पावन्
कापात मशी वाले में ज्यादा कमी श्रद्धियाया कोन २ है ! अहो गौतम ! कुल सेन्धी नरीये
स नीललेखा नरीया महाश्रद्धिक है, नीललेखा नरीय स कापात महाश्रद्धिक है, सब स सत्त्व
श्रद्धिवाले कुण्ठ सेन्धी नरीय और सत्त्व महाश्रद्धिक कापात ॥ २ ॥ महा भगवन् ! तिरिक्
यात्रिक में कुण्ठ सेन्धी में पावन् मुक्त तन्नी में कान २ अल्पश्रद्धिक व महाश्रद्धिक है? अहो गौतम ! भिप

प्रतीति मते १ पूर्णविय तिरिक्ख जोणियाणं कण्हलेस्साण आव तेउलेस्साणय
 कयर २ हितो अप्पिहियाया महिद्वियावा ? गोयमा ! कण्हलेस्सेहितो
 पूर्णविय तिरिक्ख जोणिए हितो नीललेस्सा महिद्विया, नीललेस्से हितो कऊ
 लेस्सा महिद्विया, कऊलस्सहितो तेऊलस्सा महिद्विया ॥ सन्व अप्पिहिया पूर्णविया
 तिरिक्खजोविया कण्हलेस्सा, सन्वमहिद्विया पूर्णविया तेऊलस्साएव पुढाविकाइयाप्पवि॥
 एव एतेण अभिलक्षेण जहेव लेस्साओ मावियाओ तहेव जेयस्व जाध चउरिदिया ॥
 पक्खिय तिरिक्ख जोणियाण, तिरिक्ख जोणियाण समुच्छिमाण गग्गवक्कतियाणय

प्रकार समुच्चय जाध का कहा इस ही प्रकार विर्यव का करना ॥ १ ॥ अतो मागवन् ! एकेन्द्रिय विर्यव
 योनि कुण्डल कधी यावत् तेजा सेधी में कोन २ कमी ब्यावा अदि वाके हैं ! अतो गीतव ' कुण्डल सेधी
 एकेन्द्रिय से मीस सेधी एकीन्द्रिय अक्षयिदि हैं, मीस सेधी से काण्ठ कधी महाअदि हैं और काण्ठ
 सेधी से तेजा सेधी महाअदि हैं, सब अक्षयिदि वासा कुण्डल कधी एकेन्द्रिय और सब से महाअदि
 नमो सेइया एकेन्द्रिय इस प्रकार ही पाँच स्वावर तीन विकलभिय, विर्यव, पक्खिय, विर्यवनी संयुक्त
 गर्भज सब का करना विषयमें जिसमें बितनी लक्ष्या हो उसकी अक्षयवत्त्व करनी प्रथम छेपवावाक्य जस्य

अमर्माहिषा ॥ सेणूण भंते ! कण्हलेस्से पुढविकाइए कण्हलेस्सेसु पुढवि
काइएउ उववज्जंति कण्हलेस्से उववहंति जहेसेसु उववज्जंति तहेसेसु उववहंति ?
इता गोयमा ! कण्हलेस्से पुढविकाइए कण्हलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जंति,
सिय कण्हलेस्से उववहंति, सिय भीललेस्से उववहसि, सिय काउलेस्से उववहंति सिय
जहेस्सेसु उववज्जंति सिय तहेसेसु उववहंति ॥ एवं नीलकाउलेस्सासुवि ॥ सेणूणं
भंत ! तेउलेस्से पुढविकाइए तेउलेस्सेसु पुढविकाइएसु उववज्जंति ? पुच्छा ?

उम्पर रहती है और उस ही केव्या में मरता है, ऐसे ही जो भील केव्या में उत्पन्न होता है वह
नील केव्या सारिव ही मरता है और कापोव केव्या में उत्पन्न होता है वह कापोव केव्या सारिव ही मरता
है ऐसे ही बसुर कुमारादि वरु ही मदनपति देव का फटना परेसु मिस में इतना विषय मुदनपति देव में
हेनोकेव्यापने भी उत्पन्न होता है और तेनो केव्यापने ही मरता है वह चौथी केव्या वहो अधिक बावी है
बरो मगवन् ! निमयसे कण्ण केव्ही पृथ्वीकाया कण्ण केव्ही पृथ्वीकायापने ही उत्पन्न होती है और कण्ण
केव्हीपने ही पीठी निकसती (मरती) है और मिस केव्यापने उत्पन्न होती है वह ही केव्यापने पीछे निकसती है
बया ! अतो गौतम ! कण्ण केव्ही पृथ्वीकाया कण्ण केव्ही पृथ्वीकायापने भी उत्पन्न होती है स्यात् कण्ण
केव्ही पृथ्वीकायापने भीकसनी है सेव्या का पड्या - होने से, नील केव्यापने भी निकसती है स्यात्

ईता गोपमा ! तेउलेस्से पुढविकाइए तेउलेस्सामु पुढवि काइएसु उववज्जति सिय
कण्हलसेसु उववहति, सिय नीलेस्समु उववहति, सिय काउलसेसु उववहति णो
वेवणं तेउलस्सेसु उववहति ॥ एव आउकाइय वणस्सईकाइयावि, तेउवाउवि, एव
विय गवर एतासि तेउलस्सानलिय, वि सिय चउरीविया एव वव, तिसुलेस्सामु पंचि
विय तिरिक्खजोणिया मणुस्सा जहा पुढविकाइया, आदिछियासु तिसुलेस्सामु
मणिया, तहा उवुवि लस्सामु माणियठ ।, गवरं छपिलेस्साओ उवारेयव्वाओ, वाणमंतरा

कापोत लेखी होकर भी निकलती है अर्थात् कदाचित तो भिस लेख्यापने उत्पन्न होगी है उस ही लेख्यापने निकलती है और कदाचित अन्य नीस कापोत लेख्या होकर भी निकलती है अहो भगवन् ! निम्न्य पृथ्वीकाया तजा लक्ष्यापन उत्पन्न हो पुनः तमो नैश्यापन ही निकलन है क्या ! अहो गौतम ! तेजा लेखी पृथ्वीकाया नेत्रो लक्ष्यापने उत्पन्न होवे कदाचित् कृष्ण लेखीपने निकलती है कदाचित् नीस लेख्यापने निकलती है स्यात् कापोत लक्ष्यापन भी निकलती है परंतु तेमो लेख्यापने पीछी नहीं निकलती है क्या कि पृथ्वीकाया की प्रपयत्त भरस्या में ही याद काल ही तेजालक्ष्या पाती है इस प्रकार ही अप्रकाया वनस्पतिकाया का पदना एते ही तेजकाया वायुकाया का भी करना परंतु इनका विक्षय कि परी तेमोलेख्या नहीं करना ऐसे ही वैश्वित्र्य तेजस्त्रिय बीरित्रिय के भी सीमो लेख्या करना तिर्यक

जह। असुरकुमारा ॥ सेणूण भंते ! तेउलेस्से जोइसिए तेउलेरसेसु जोइसिएसु
उववज्जति, जहेव असुरकुमाराण, एव वेमाणियाणवि, जवरं वोण्ढवि षयति
अभिलाधो ॥ ३ ॥ सेणूण मत ! कण्हलस्से नीललेस्से काउलरसे नेरइए
कण्हलेस्सेसु नीलस्सेसु काउलेस्सेसु जरइएसु उववज्जति, कण्हलेस्से नीललेस्से
काउलेस्से उववहात जहेस्सेसु उववज्जति तहेस्सेसु उववज्जति ? हुता गोयमा !
कण्हलस्से नीललेस्से काउलेस्से उववज्जति, जहेस्सेसु उववज्जति तहेस्सेसु उववज्जति ॥

पंचेन्द्रिय और मनुष्य का पृथ्वीकाया भेसा ही पारेछे की तीन छाया रस्वन्धी कहना परतु इतना बिचेप
कि विर्यच पचेन्द्रिय व मनुष्य में ए ही लक्ष्यापने आकर उत्पन्न होता है और छ ही छेद्यापने अलग २
निकलवे भी हैं वायव्य-उर दक्कनाका असुरकुमार भेसा कहना अइ मगरन् ! तेजो लक्षणायाका योविधि
तेजालक्षणागळे योविधिपने उत्पन्न होता है यावत् तमो लक्ष्यापने ही निकलता है ? अहो गीतम ! भेसा असुर
कुमार दक्क का कहना हो कहना परे ही वैमानिक दक्क का भी कहना परतु योविधि वैमानिक का
परन का कहना ॥ ३ ॥ अहो यगान् ! निम्नय स कृष्ण सेधी नील सेधी कापात सेधी नेरीये कृष्ण
सडी नील सडी कापोत सेधी नरीय में उत्पन्न होकर पुनः कृष्णलक्षी नील सेधी यापोत सेधीपने ही निक
लता है क्या ! अर्थात् जिस लक्ष्या में उत्पन्न होता है उस ही लक्ष्या से निकलता है क्या ? अहो गीतम !

सेषणं भन्ते । कण्वलेस्ते जाव तेउलेस्ते असुरकुमारे कण्वलेस्ते जाव तेउलेस्तेसु असुर
 कुमारेसु उववज्जति, ? एव जहेव नेरइए ताहा असुरकुमारेवि जाव थाणिय कुमारेवि ॥
 सेषणं भन्ति ! कण्वलेस्ते जाव तेउलस्ते पुढविकाइए कण्वलेसेसु जाव तेउलेस्तेसु पुढवि
 काइएसु उववज्जति, एवं पुष्ठा जहा असुरकुमाराण ? इता गायमा । कण्वलेस्ते जाव
 तेउलेस्ते पुढविकाइए कण्वलेसेसु जाव तेउलेस्तेसु पुढवीकान्नएसु उववज्जति, सिय
 कण्वलेस्ते उववहति सिय णीळलेस्ते उववहति, सिय काउलेस्ते उववहति, सिय जछेसे
 उववज्जति तछेस्तेसु उववहति तेउलेस्ते उववज्जति नो वेवण तेउलेस्ते उववहति ।

कुल्लकेची नीलकेची कपोत केची मारकी बिस केसपापने उत्पन्न होते हैं उस ही केसपापने निकलते हैं । अहां मयबन् ! निम्न कुल्ल केची यावत् तेमोकेची असुर कुमार कुल्ल केसपापने बावत् तेमोकेसबाबले असुर कुमारपने उत्पन्न होते हैं ! अहां गौतम ! वैसा मेरियों का कहा वैसा ही असुर कुमार का भी कहना यावत् स्यन्ति कुमारवत् इस ही प्रकार कहना अहो मयबन् ! निम्न कुल्लकेची यावत् तेमोकेची पुष्पीकाका कुल्लकेची यावत् तेमोकेची पुष्पीकापापने उत्पन्न होते हैं । इस्यादि प्रश्न ! वैसा असुर कुमार का, इस वैसा ही करना अहो गौतम ! कुल्ल केची यावत् तेमोकेची पुष्पीकापापने उत्पन्न होते हैं उत्पन्न होकर स्यात् कुल्ल केसपापने निकलते हैं स्वाष्ट्र मीन केसपापने निकलते हैं स्वाष्ट्र कापोत केसपापने निकलते हैं

आणिपू कण्हले सेसु जाव सुकलेस्सेसु पंधिविय तिरिक्खस जोणिपूसु उववज्जइ
पुष्ठा ? हुता गोयमा ! कण्हलेस्से जान मुकलस्से पंधिवियतिरिक्खसजोणिपू
कण्हलेसेसु जाव सुकलेस्सेसु पंधिविय तिरिक्खस जोणिपूसु उववज्जइति सिय कण्हलेस्से
उववज्जइति जाव सिय सुकलेस्से उववज्जइति सिय जल्लस्से उववज्जइति सल्लस्से उववज्जइति॥एव
मणूसेवि ॥ बाणमतरे जहा असकुमार, जाइसिय वेमाणिपूवि एव चेत्र पवर
ऊरस जल्लस्सा । दाग्वि चयति माणियज्ज ॥ ९ ॥ कण्हलेस्सेण मंते ! णेरइपू
कण्हलेस्स णरइय पणिहाय आहिणा सज्जओ समता समभिलोयमाण २ केवतिय

बुल्लु लखी पंचेन्द्रिय विर्वच योनिकपने उत्पन्न होवे इत्यादि पृष्ठा ! यही गौतम ! कृष्ण लखी बाबल
ल्लु लखी पंचेन्द्रिय विर्वच यानिक कृष्ण लखी बाबल बुल्लु लखी पंचेन्द्रिय योनिकपने उत्पन्न
होकर स्यात् कृष्ण लखी हो निकळ स्यात् नीळ लखी हा निकळे यावत् स्यात् बुल्लु लखी हो निकळे,
स्यात् भिम लक्ष्या में उत्पन्न होवे इस ही हेइवापने निकळ ऐसे ही मनुष्य का भी कहना बाणक्यन्तर
क्याविपी वैमानिक का नैसा अतुरकुमारका कहा तेसाही कहना परसु इतना विद्याप जिनमें जो लक्ष्या हा प्रद कहना
मोर चबने का आकाशक कहना ॥ ४ ॥ अब अवधि ज्ञान की लक्ष्या (विषय) कहते हैं यही भगवन् ! कृष्ण लक्ष्या
बासा मेरीया कृष्ण लक्ष्या बाके नरीये को प्रपान अवधिज्ञानकर सर्व पारो वरक सम्पक् प्रकार देल्ला

खेच जाणति केवइयं खेचं पासति ? गोयमा ! जो बहुतयं खेच जाणइ जो बहुतयं खेच पासति जा वूरं खच जाणति जो दूरखेचं पासति, इत्थिरिय मेव खेचं जाणइ इत्थिरिय मय खेचं पासइ ॥ सेकण्टेण भते ! एवं बुध्ति कण्हलस्सेण गरइए तच्च जाय इत्तारये मयखेच पासते ? गोयमा ! सेजहा जामए कदपुरिस बहुममरमणिज्ज भूमिमागसिद्धिंसा सम्मओ समता सममिलाएज्जा तएण स पुरिस धरणिंतलगए पुरिसे पणिहाए सच्चआ समता सममिलाएमाण २ जा बहुतय खच जात्र पासति

इहा कितना जानवा है किठना देखवा है ! अओ गौतम ! बहुत सेत्र जानता नहीं है बहुत सेत्र देखवा भी नहीं हो, वेस ही बहुत दूर सेत्र जानता नहीं है बहुत दूर देखवा नहीं है वोडा सेत्र जानता है याडा सेत्र दन्ता है यओ विदुज्ज लइया की आपणा से अविणुज्ज वाला याडा तार जानवा दन्ता है अविणुज्ज लइयाकी आपणा विणुज्ज छेउयावाडा किंचित अधिक सेत्र दन्ता है परंतु ज्पादा वूर जानवा देखवा नहीं है । सातवी नरक वाले समय बाधा कोठ उत्कृष्ट एक काम, छवी वाल अयन्य पद काष्ठ, उत्कृष्ट दह काष्ठ पाँचवी वाल अपन्य देह कोष्ठ उत्कृष्ट दा फोष, चौथी वाल प्रथम्य दो कोष्ठ उत्कृष्ट अठार कोष्ठ तीसरी वाल अयन्य अठार कोष्ठ उत्कृष्ट तीन कोष्ठ, दूसरी वाले अपन्य तीन काष्ठ उत्कृष्ट सादी तीन कोष्ठ, और पहिलीवाल अपन्य सादी तीनकाष्ठ उत्कृष्ट चारकोष्ठ सप्त अवधीज्ञान में जानवे देखवे है। अओ

अभिभागाओ पश्यं दुरुहिता २ सव्यतोसर्मता समभिलोएजा, तएवं से पुरिसे
धरभितलत्रये पुदसे पणिहाय सव्यतो समता समभिलोएमाणे २ बहुतरागं सेव
जाणति जात्र विसुद्धतरागं सेवंच पासति संतेणट्टेणं गोयमा ! एवं बुधइ णिल्लेस्से
जेरइए कण्डुलेस्सं जात्र विसुद्धतरागं सेव पासइ ॥ काउलेस्सेण भंते ! जेरइए णिल्लेस्स
जेरइयं पणिहाय ओहिणा सव्यतो समता समभिलोएमाणे २ कंवरइय सेवंच जाणइ ? कंवरइय
सेव पासइ गोयमा ! बहुतरागं सेवंच जाणइ जात्र विसुद्धतरागं सेवंच पासइ ॥ से केणट्टेणं

भवेता करके मयान अवापिहाम से चारों तरफ अवलोकन करता हुआ कितना क्षेत्र जाने कितना क्षम
हले ! अरो गीतय ! बहुत क्षत्र माने, बहुत क्षेत्र देख दूर का क्षेत्र का माने, दूर का क्षेत्र देख, विविध
निर्मल क्षत्र माने विविध-निर्मल क्षत्र देखे, विमुद्ध क्षत्र माने विमुद्ध क्षेत्र देख अरो भगवन् ! किस कारण
ऐसा कहा नील क्षेत्रपाशा नील कृष्ण क्षेत्रपाशा नेरीये मे मयान क्षान का चारक पावत्
विमुद्ध क्षत्र देख ! अरो गीतय ! यथा दृष्टान्त कोई पुरुष बहुत समरमर्णिय भूमि मागके ऊपर पर्वतपर
पहकर चारों तरफ सम्यक् प्रकार अवलोकन करे, तब वह पुरुष पर्वती पर रहे पुरुष की अपेक्षा मयान
सर्व चारों तरफ सम्यक् प्रकार अवलोकन करता हुआ बहुत क्षेत्र को जाने पावत् विमुद्ध क्षेत्र को देखे
इस छिंदे अरो गीतय ! ऐसा कहा नील क्षेत्रपाशा नेरीये कृष्ण क्षेत्रपाशा नेरीये से बहुत क्षेत्र माने पावत्

[illegible]

अहो भगवन् ! कापूत सखी नेरीया नीब खेची नैसिने प्रथान अवधिमानकर
 जोफन करता हुवा कितना सभ जाने, किनना सेवइ लु ? अहो गौतम ! बहुत सभ
 : सेव जान देसे अहा भगवन् ! किमकात्त देगा कहा कापूत खेची नेरीया पारन
 म ! यया इष्टान्त कोइ पुरुष बहुत भावरणीय यूमी के बिभाग से छपर परतपर
 याकर कर सभ वारो तरफ सम्पक् प्रकार अवसाकन करता हुवा सभ बट पुरुष
 भेत्तक रहा छन दोनो पुरुषो से मथान चारो तरफ सम्पक् प्रकार बहुत सभ जाने
 छ सभ देसे इसकिये अहो गौतम ! देला कहा की कापूत खेची नेरीया नीब खेची

विशुद्धचराणं श्रेष्ठं पातसि ॥ ५ ॥ कण्ठलेस्तेनं मते । जीवे कद्रुसुगणिसु होजा ?
 गोयमा । दोसका तिवुवा चउसुवा णाणसु होजा, दोसु होज्जमाणे आभिणिचोहिय
 णाणि सुतणणसु होजा, तिसु होज्जमाणे आभिणिचोहियणण सुयणणे ओहिय-
 णाणेसु होजा अहवा मीसु होज्जमाणे आभिणियाहियसुयणणे मणपज्जणणिसु
 होजा, चउसुहाज्जमाणे आभिणिचोहियणणे मुयणणे आहिणणे मणपज्जणणिसु
 होजा ॥ एवं जाव पम्हलसे ॥ सुक्कलसेनं मते । कद्रुसु गणिसु होजा ? गोयमा !

मेरीये से प्रमान यावत् भित्तम सप्र दत्ते ॥ ५ ॥ अब ज्ञान आश्रया पूछते हैं—अबो मगरत् ! कृष्ण
 लखी जीव भित्ते ज्ञान का धारक होता है ! अबो गौरव ! दा ज्ञान बाला भी होता है, तीन ज्ञानबाला
 भी, चार ज्ञान बाला भी होता है, दो ज्ञानबाला होता है वा यदि और श्रुति ज्ञान
 बाला होता है तीन ज्ञान बाला होता है वा यदि श्रुति और अपरि ज्ञानबाला होता है
 तथा यदि श्रुति और मन पर्यव ज्ञान बाला होता है, चार ज्ञानी होता हुआ यदि श्रुति अवाधि
 और मनःपर्यव ज्ञानी होता है [मनःपर्यव ज्ञान विमुद मेर्या बाल कोही हाता है कृष्ण देख्या के
 संसयात स्यान्ते भित्त में ऊपर के स्थान विमुद अप्यवसाय बालों का मनःपर्यव ज्ञान होता है तथा उत्पन्न
 होते विमुद सम्या होती है] अथ मकार कृष्ण सेमी नीच में वार ज्ञान पाते हैं एव ही मकार नीच

योसूत्रा तस्मिन्ना वदसुवा एगोमिया होजा, दोसु होजमाने आभिनिबीहयणाने एवं
अहेव कण्हलेस्साण तहेव भाणियव्वं जाव वउहिं, एगस्मि होजमाने एगस्मि केव
लुभाणेसु होजा ॥ पण्यवण। भगवईए लेस्सापव तइओ उदेसा सम्मत्तो॥ १७ ॥ ३॥
परिणाम वण्णे रसगव सुद अण्यसत्थ संकिलिण्ण गति परिणाम पदेसोयगाठ
अग्गमाह ठाणाण मण्यावतु ॥ १ ॥ कर्ण मते ! लेस्साओ पण्णाओ ? गोयमा !
छल्लस्साओ पण्णाओ तंजहा कण्हलेस्सा जाव सुकलेस्सा, सेणुण मते ! कण्हलेस्सा

अपोव तेनो पव केही में मी चार ज्ञान पावे हैं अओ मगरव ! छल्लेस्सी जीव में कितने ज्ञान पावे हैं ?
अओ गोवम ! दा मी पाव हैं, तीन मी पावे हैं, चार मी पावे हैं और एक मी ज्ञान ज्ञाता है वो होवे
तो माव और खुति दो कृष्ण केसा केसा और विषेव में ओ एक ज्ञान होवे तो एक केवल ज्ञान
होवे क्योंकि सकेही केवलज्ञानी को एक छल्लेस्सा ही होवी है इति केसा पद का वीसर होवा ॥ ३ ॥
बीचे पद के हाँसे के नाम ? परिणाम द्वार, २ वर्षद्वार, ३ रसद्वार, ४ मयद्वार, ५ बुद्धद्वार,
६ जयवस्तु द्वार, ७ संक्रिष्ट द्वार, ८ उच्छ्वनाद्वार, ९ गतिद्वार, १० परियाणद्वार, ११ भवेद्वार,
१२ जयनाहमाद्वार, १३ स्यामद्वार, और १४ अन्त्या वसुध द्वार ॥ १५ ॥ अओ
मगरव ! कितने मकर की केसा करी है ? अओ नीलनी के मकर की केसा करी है सक्का २ कृष्णकेसर

[illegible]

यावत् शुक्लसेत्रया को प्राप्त होवे इत्येव तस्य ह्यपने उक्त वर्णपने उक्त गंधपने उक्त स्पर्शपने उक्त वायुस्वार पारि
जयते है किंस करन अहो भगवन् ! यसा कश्च कुप्य सेषया क द्रव्य नीलसेत्रया यावत् शुक्लसेत्रया को प्राप्त
हो यावत् वाय्वार परित्यजेत है ! अहो गोवाम् ! निस प्रकार देदूर्य धर्मि (काष्ण) के धर्मिये में काकारंग
का दोरावात्मने से वह कुप्य वध्य देखाता है, हारागका योगवाक्यने से वह हरा देखाता है, साकरंग का
होमावाक्यने से सासदेखाता है, पीसेरंग के सारेसे पीछा देखाता है और श्वतरंग के बारे से श्व देखाता
है, निस रंगकी वस्तु में जैसे स्वापन करते हैं उस ही रंगमय वह बन जाता है, उस वस्तु से दूर करने से
वह अर्धरेण में आजाता है भिनाया बैसा बन जाता है, इस ही प्रकार अहो गोवाम् ! ऐसा कहा है कि
कुप्य सेत्रया के नील सेत्रया को यावत् शुक्ल सेत्रया के प्राप्त अभ्य उक्त ह्यपने वर्ण गंध रस स्पर्शपरिपने

नीललसता किण्हलस जात्र मुक्कलस पप्य तास्सेचाए जात्र भुजो २ परिणमति ?
 इता गोयमा ! एव चेव ॥ एव काठलेसा, किण्हलस नील तेठ पम्ह सुक्कलस एव
 तेठलसता किण्हलेसा नील काठ पम्ह सुक्कलस, एव 'पम्हलेसा कण्ह नील काठ
 तेठ पम्ह मुक्कलस पप्य जात्र भुजो २ परिणमति ? इतो गोयमा ! तंचेव ॥ सेणन
 मत ! सुक्कलसता किण्ह नील काठ तेठ पम्हलस पप्य जात्र भुजो २ परिणमति ?
 इता गोयमा ! तंचेव ॥ ३ ॥ कण्हलेसाण सते ४ खणेण करिसिया पणत्ता ?

बारम्बार परिणमत है ॥ अहो भगवन् ! नीललसता के कुल्ल लसता पने योबंते कोपूत लसता 'पन पावत
 मुक्कलसता मास इव्य पने उता रूपने पावत लसता पने बारम्बार परिणमत है क्या ! अहो यौतम !
 परिणमते है जस प्रकार ही परिणमत है ॥ एस ही कापूत लसता क भी इव्य नीललसतापने ठेखा लेइयापने
 पावत मुक्कलसता पन परिणमत है, ऐसे ही तेमो लसता भी कुल्ल, वील, कापूत, पच, कुल्लपने परिणमे,
 ऐसे ही पच लसता भी कुल्ल नील कापूत तमो कुल्ल पने परिणमत अहो भगवन् ! कुल्ल लसता के इव्य
 कुल्ल लसतापन, नीललसतापने, कापोतलसतापने, तमो लसतापने, पच लसतापने बारम्बार परिणमत
 है क्या ! ही गीतप ! उम प्रकार ही कहना ॥ ३ ॥ अब दूमरावण द्वार कहत है ॥ अहो भगवन् !
 कुल्ल लसता का वण किस प्रकार का है ? अहो गीतप ! जेना बाकीका वराजप भजन लसत

गोयमा ! सेजहा नामए जीमूनेतिवा अजनेतिवा खजनेतिवा कजलेतिवा गजलेतिवा
 गजलधलइएवा अनूपलतिवा मुद्दाअरिट्टएतिवा, परपुट्टतिवा, भमरेतिवा, भमरावली
 तिवा, गयकलमेतिवा, किण्ड करसरंतिवा, आगासधिगालेतिवा, किण्णासांगतिवा
 किण्ड कणवीरपतिवा। किण्ड ययु जीवाइवा भवेतास्ते ? गोयमा ! जो इणट्ट समट्टे,
 कण्डहेरसानं एत्तो अणिट्ट तरिया, च अकततरिया चेव अप्पियतरियाचेव अमण्णण्य
 तरियाचेय, अमणामततरिया च वण्णेणं पण्णात्ता ॥ नील्लेस्साणं भंते !
 हेरिसिया वण्णण पण्णात्ता ? गोयमा ! से जहा नामए भिंगेतिवा भिंगपचेतिवा

(गाहोके वादक योगन) भयर पक्षी, भ्रमरकीपक्षि, हाथी का पक्ष, काष्ठवाल, आकाश,
 कृष्ण भासाक कृष्ण कण्ठ, कृष्ण बन्धु जीवका वर्ण होता है इस प्रकारका है क्या ? अहा गीतम ! यह अर्थ
 योग्य नहीं। परंतु, कृष्ण लक्षणा का इस से भी अधिक अनिष्टकारी, भक्तवत्सली, अमियकारी, अमनोष्ठ, अम
 म्म अनुगाता वर्ण, कहा है अयो भगवन् ! नील लक्षणा का किस प्रकार का वर्ण है ? अहो गीतम !
 या एतन्—धर्मा, भंगिपक्ष, चांस पक्षी, चांस पक्षी की पाल, सोता, तोते की पाल, सामाधान्य, व
 भी रंगित्वाया, इसी चालीकालत, पररा कपूर की प्रीति, मयूर की प्रीति, हलधर (पलमट्ट) के पक्ष,

विदाइतिवा, बाधगानि कुसुमेतिवा, कोइलत्या कुसुमेतिवा, जवासाकुसुमेतिवा, कल्ल
कुसुमेतिवा, मधतास्वे ? गोयमा ! जो इण्ठे सम्भे, काठलेस्साणं एतो अण्ठि
तरिया जाव ठमणाम तरिया चेव वण्णेणं पण्णचा ॥ तेठलेस्साण भंते ! केरिसिया
वण्णेणं पण्णचा ? गोयमा ! से जहा णामए ससरहिरैतिवा, उरुमरुहिरैतिवा,
घराहरहिरैतिवा, सधरुहिरैतिवा, मणुस्सरुहिरैतिवा, बाल्लिगोवेतिवा, बाल्लिवा-
यंरैतिवा, सज्जरुमरागेतिवा, गुजहरागेतिवा, जातिहिगुल्लुएतिवा, पत्ताल्लुकुएतिवा,
लक्खारसेतिवा, लाहियक्खमणीतिवा, किमिराग कवलेतिवा, गयताल्लुएतिवा,

अमणाय वर्ण कहा है अहो मगवम् ! तेजो छेन्ना का वर्ण किस प्रकार का कहा है ! अहो गौतम !
यथाइयान्त्त मेस का रंषि, बकरे का रंषि, मून्तर का रंषि, सांवर का रंषि, म्मुप्प का रंषि, इन्द्र
गोप जीवि बालमवस्यावासा, उदय होवा मूर्ध, सध्यारात, चिरवी का भाषा विभाग, जातिबंध विगुल्ल,
मरास का कुपल, स्यास का रस, सारीतास पनी, क्रिपी रग की कम्बल, हाथी का ताम्बूवा, धिनोठी का
दगला, धरीमास के फूल, नामु पुल क फूल, केमुडे (सांखरे) के फूल, रकोस्स कम्पल, रकाओकपुल,
रक्करुत, रक्कपन्नु नीद, एव प्रकार का वर्ण है क्या ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है तेजो छेन्ना का

चीणविट्टरासीतिवा, परिजाय कुसुमेतिवा जामुमण कुसुमेतिवा, किं सुयपुष्परसितिया,
रतुप्यलेतिवा, रचासंगेतिवा, रत्नकनवीरएतिवा, रसध्रुयजीवएतिवा, भवेतारुवे ?
गायमा ! जो तिणट्टे समट्टे, तेउलेस्साण एत्थो इट्टतरियाचिच्च जात्र मणोमयरिया चेव
वण्णेण वण्णत्ता ॥ पम्भलेस्साण भत्ते ! करिसया वण्णेण वण्णत्ता ? गोयमा ! से
ज्झा णामए चपेतिवा चरत्तालिएतिवा चपभेदेतिवा हालिदातिवा हालिदगुलियातिवा,
हालिदाभदियातिवा, हरियालेतिवा, हरियालगुलियातिवा, हरियाल्लभेदेतिवा,
त्रिउरतिवा, चिउररत्नोतिवा, सुवण्ण सिण्यातिवा, वरकणगणिहसेतिवा, वरपुरिसव-

रण एत ये भी अपिठ इष्टकारी भिन्नकारी यावत् मनो है अगो भगवन् ! पण, सेवया क्य किम् प्रकार
का वर्ण है ? अगो गौतम ! यथाष्टान्त पद्मक वृक्ष, वस्त्रा की छात्र, वस्त्रा का चन्द्र का, काष्ठ
हस्त्री, हस्त्री की गान्धी, हस्त्री का यन्त्र का गर्व, हरीताल, हरीताल की गोली, हरीताल का चन्द्र
का गय, विदूर, विदूर भिन्नकारी की गोली, सान की वीप उत्तम मुखर्ण घटा हुआ, उत्तम पुरुष (वामुदेव) के वस्त्र
भाष्टिकाका फूल, वस्त्रा के फूल, कणर के फूल कोहमा के फूल, सुवर्ण जड़ी सुवर्ण कृतीका कोरट
पुल के फूल की पात्र, वीसा आणोका पुल, वीसा कणर वीसा वस्त्राका वर्ण है क्या ? जहाँ

समेतिवा, अक्षइ कुसुमेतिवा, चपयकुसुमेतिवा, कणियरकुसुमेतिवा कुहंठि कुसुमेतिवा
सुवण्णजुहियातिवा, सहिरणिया कुसुमेतिवा कोरुमल्लदामेतिवा, धीतासागेतिवा, पीत
कण्णीरएतिवा, पीतधंजूजीवएतीवा, भवेताम्बे ? गोयमा ! णा इण्हं समहे, पम्हल
रसानं एत्ता इट्टतरिया चैय जाव मणामयरिया चैय वण्णण वण्णणा सुक्कलस्साण भत्त!
केरिसिया वण्णेणं पण्णत्ता ? गोयमा ! से जह्वाणामए अकेतिया सखेतिवा चदेतिवा कुद
तिवा दगेतिवा दगरएतिवा, दधितिवा दधिघणतिवा, म्मीरोतिवा, खीरपरएतिवा सुकह्य
वाडियातिवा पिहुणामेजियातिवा, घत्ताधोयम्बपट्टेतिवा, सारयंमलाहएतिवा, कुम्भयदलेति
वा, पोंडरीयदलेतिवा, सान्धिपिट्ठरासीतिवा, कुडगपुप्फरासीतिवा सिदुवारवरमल्लदामतिवा

गौतम ! इस स भी अधिक इष्टकारी यावत् मनोऽपि पद्म सेवया का वण है अहो मगवन ! मुक्त छेदया का किम प्रकार का वर्ण है ! अहो गौतम ! यथाहृष्टान्त अंक रत्न, शंख, वज्रपा, वज्रद्वर के फूल पानी, पानी के फणिय, दही, दही का गासा, तारि-दूध, दूध पुरित अंस, निष्ठादि की मुकी छाल, पोषन की मीमी आद्य में तेषांकर हृष्ट इ स याया स्या क पाद, शरद भर्तु के पक्ष अथवा पगवा, क्रमा दनीदल, पोषरीक कमल का दल, चावल का आद्य, कुडग क फूल का दृगवा, सिद्धतर वनस्पति के फूल की माला, श्वनमशक दल, श्वनकगर, श्वनकण्ठमीर, इस प्रकार का भ्रम वर्ण है ? अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य

सेयासोगेतिवा, सेतकण्वारएतिवा, सेत धंधुजीवएतिवा, भवेत्सारुवे ? गोयमा । जो
इण्टे समेटे सुकलेस्साण इच्छोइटतरियाचेव कतायरिया मणुणसरियाचेव मणामतिरिया
चेव वण्णेणं पण्णत्ता ॥ एयाओण मंते। छलस्सात्माकइसुवण्णेसु साहिज्जंति ? गोयमा ।
पचसुवण्णेसु साहिज्जति तजहा कण्हलेस्सा कालएणं साहिज्जति, णिललेस्सा नीले-
एण वण्णेयं साहिज्जंति, काउलेस्सा काललोहिण्ण वण्णेण साहिज्जति, तेउलेस्सा
लोहिण्णं वण्णेण साहिज्जति, पम्हलेस्सा हासिइएण वण्णेणं साहिज्जति, सुकलेस्सा
सुकिइएणं वण्णेणं साहिज्जति ॥ ४ ॥ कण्हलेस्साण मंते ! केरीसया अंसाएणं
पण्णत्ता ? गोयमा ! से जहा णामए णिबेसिवा णिबसारेतिवा णिबछ्छीतिवा

नहीं है इससे भी अधिक इष्टकारी कंठकारी प्रियकारी मनोऽप्याय सूर्यादना, शुक्ल सेव्या का वर्ण करता है अतो
बगवन् ! उरी सेव्या किससे २ वणमय है ? अतो गौतम ! पावो ही वर्ण मय है, तयथा ? कृत्त्य सेव्या,
कृत्त्य वर्ण पयो है, २ भीम सेव्या नीलवर्ण मय हो है, ३ कापोतसेव्या कालि और हरे दोनों वर्णसे है, ४
नेत्रो सेव्या रक्त वर्ण से है, ५ पद्म सेव्या पीलेवर्ण से और ६ शुक्ल सेव्या श्वेतवर्णमय है ॥ ४ ॥ अब
दीपरा रत्न द्वार कहते हैं ॥ अतो यमवन् ! कृत्त्य सेव्या का किस प्रकारका आस्वादन रस कहा है ?
अतो नीलवर्ण ! यथा एतन्नेव नील, भीक्यार शिष्यकीकाव, नीलका काया कुट्टकः कुट्टककीजक मुत्तक

नियन्ताणिपुतिवा कुडपुतिवा, कुडगछलिपुतिवा, कुडग
 तुवीमिवा, कुडगतुभीफलपुतिवा, सारतोसीपुतिवा, देवदालि-
 तिवा, देवदालिपुष्पातिवा, भिगवालुकीपुतिवा, घोसादि-
 पुतिवा, घोसादई फलेतिवा, कण्डकंदपुतिवा, भवेसारुवे ?
 गोयमा ! ओ इण्डे समंवे, कण्डलस्सार्ण पुणे! अनिट्टरियाकेव जाव समप्पाम-
 यरियाकेव आसाएण पण्यत्ता ॥ गील्लेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा प्पामिए
 भंगतिवा भगरिपुतिवा, पाठातिवा, चवियातिवा, चिन्तामूलपुतिवा, पिप्पलीमूलपु-
 तिवा पिप्पलीतिवा, पिप्पलिचूष्णिगयातिवा, हारियपिप्पलीतिवा, हस्तियपिप्पलि

का काहा (कथाय) कटुमुम्बी, कटुकटुम्बीकाफल, कटुक घोसकीबेल, कटुकतोसकाफल, देवराखी (तोही)
 देवदालीके फूल, मुगवाखुकी, कटवीतोके, कटवा टोकेकाफल, कण्डका कंद, राज कंद, इस प्रकार का
 रस है ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं हैं ! कुल्य सेवया के द्रव्य का रस इसे भी अधिक बहुत
 अनिष्टकारी पाए अमणग है ॥ नलिलयया के रस का प्रभ ! अहो गौतम ! भंगीया, भंगीर, भंगीर,
 भंगीराकारस, पाहा ननस्समि चविकायनस्सति, चित्रवेसकापूल, पिप्पलीकापूल, पिप्पल, पिप्पलीकाचूर्ण,
 हास्तिर्पल, हास्तिर्पिप्पली काचूर्ण, मिरच, पिप्पलीकाचूर्ण, अदरक, अदरसकाचूर्ण, इम प्रकार का रस है ! अहो गौतम !

सेयासोगेतिवा, सेतकण्वीरएतिवा, सेत धधुजीवएतिवा, भवेतास्वे ? गोयमा ! जो
इण्टे समष्टे सुकलेस्साण इत्थोइत्तरियाचेव कतयरिया मणुणत्तरियाचेव मणामत्तिरिया
चेव वण्ण्येण पणत्ता ॥ एयाओणं मत्ते! छलेस्साआकइसुवण्णेसु साहिज्जंति ? गोयमा !
पधसुवण्णेसु साहिज्जति तंजहा कण्हलेस्सा कालएणं साहिज्जति, णिलस्सा नीले-
एणं वण्ण्येण साहिज्जति, काठलेस्सा काललोहिण्ण वण्णेण साहिज्जति, तेचलेस्सा
लोहिण्णं वण्णेण साहिज्जति, पण्हलेस्सा हल्लिइएण वण्णेण साहिज्जति, सुकलेस्सा
सुक्किण्णं वण्णेण साहिज्जति ॥ ४ ॥ कण्हलेस्साण मत्ते ! केरींसया आसाएणं
पणत्ता ? गोयमा ! से जहा णामए णिबेतिवा णिवसारेतिवा णिबच्छीतिवा

नहीं है इससे भी अधिक इहकागी कंठकारी मियकारी यत्नो मणाम सुहावना, शुक्ल लेख्या का वर्ण कहा है जो
बनवन् ! कहीं लेख्या किस २ वर्णमय है ? जो मोतम ! पंचो ही वर्ण मय हैं, तथवा १ कुण्ड लेख्या,
कुण्ड वर्ण मयी है, २ नील लेख्या नीलवर्ण मय ही है १ कापोतलेख्या कोक और हरे दोनों वर्णमय हैं, ४
तेजो लेख्या रक्त वर्णमय है, ५ पद्म लेख्या पीलेवर्णमय और ६ शुक्ल लेख्या श्वेतवर्णमय है ॥ ४ ॥ अब
हीसरा एत द्वारा कहते हैं ॥ जहाँ मंगवन् ! कुण्ड लेख्या का किस प्रकारका आस्वादन एत कहा है ?
जहाँ नीलवर्ण ! यथा इहान्त भी व नीलवार गीण्वकीछाक, नीलका काटो कुटकः कुटककीछाक कुटक

पिचफाणिश्रुतिवा कुडएतिवा, कुडगछिह्रतिवा, कुडगफाणिश्रुतिवा, कुडग
 तुवीतिवा, कुडगतुवीफलतिवा, स्वारतोसीतिवा, स्वारतोसीफलेतिवा, देवदालि
 तिवा, देवदालिपुष्पतिवा, भिगवालुकीतिवा, भिगवालुकीफलेतिवा, घोसाहि-
 एतिवा, घोसादई फलतिवा, कण्डकंदएतिवा, यज्जकंदएतिवा, भवेसाख्ये ?
 गोयमा ! गो इणट्टे समहे, कण्डलेस्साणं एत्थो अभिट्टतरियाक्खे जाव समणाम-
 यरियाधेव आसाएण पणत्ता ॥ नील्लेस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा जामए
 मंगसिवा मगरिश्रुतिवा, पाढातिवा, घाधियातिवा, अत्तामूलंश्रुतिवा, पिप्पलीमूल-
 श्रुतिवा पिप्पलीतिवा, पिप्पलिवूष्णिगयातिवा, हात्यपिप्पलीतिवा, हात्यपिप्पलि

का काहा (कभाव) कटुगुम्भी, कटुगुम्भीकाफल, कटुगुम्भीकाफल, कटुगुम्भीकाफल, वेवराखी (रोही)
 देवदालीके फल, मृगवालुकी, कटवीतोरु, कटवा रोईकाफल, कण्डका कद, यज्ज कंद, इस प्रकार का
 रस है ! अहो गोतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है ! कृप्य सेश्या के द्रव्य का रस इसे भी अधिक बहुत
 अनिष्टकारी पावए भवणाग है ॥ नील्लसस्या के रस का प्रभ ! अहो गोतम ! ममीरा, यमीरा,
 ममीराकारस, पाडा ननस्पति घाधिकायनस्पति, चित्रपेलकामूल, पिपलीकामूल, पिपल, पिपलीकाचूर्ण,
 हास्तिपिल, हास्तिपिपली कामूण, निरव, पिधीकाचूर्ण, अदरक, अदरककाचूर्ण, इव प्रकार का रस है ! अहो गोतम !

चूर्णयतिवा, मिरिपुतिवा, मिरिय चूर्णयेयाति, सिंगबिरेतिवा, सिंगबेरचूर्णयेयातिवा,
भवेतास्त्रे ? गोयमा । गोइणट्टे समट्टे णीललेस्साण एचो अणिट्ट तरियाचव जाव
अमणाम तरियाचव आसाएण पणसा ॥ काठलस्साए पुच्छा ? गोयमा ! से जहा
णामए अजाणस, अयाहगणवा माठलिगणया बीक्षाणवा कविट्टाणवा, भदाणवा,
फणसाणवा, वालिमाणवा परिधताणवा, अक्खाढयाणवा धाराणवा, पाराणवा,
तदुयाणवा अपिक्काण अपरियागण धण्णेण अणुवेत्ताण, गधेण अणुवेत्ताण,
फासेण अणुवयताण भवेतास्त्रे ? गोयमा ! णो इणट्टे समट्टे जाव एतो अमणा
मयरियाचव काठलस्ता आसाएण पणसा ॥ देवलस्साण पुच्छा ? गायमा ! से

यह अर्थ वाग्य नहीं है इससे भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनोहरम कहा है ॥ कापूत सेव्या के रस की
पुच्छा ! अहो गीतम ! यथा यष्टान्त कथामाध, कथाममाहा, कथाविभारा, कथाविलफल, कथाकरीट,
कथा गत, कथा फणम, कथा दादिय, गोरवा फल, कथा असोट फम, कथा गोर, कथा पोरक, कथा
भिक्षुक, यह सब अपक जिस में रस नहीं परिणामा हो वन कर पिच्छिष्ट, गंध कर बिच्छिष्ट, स्पर्श कर वि
च्छिष्ट इस प्रकार रस है ? अहो गातम ! यह अथ योग्य नहीं है इस से भी अधिक अनिष्ट यावत् अमनाह
कावोप कथा का रस कहा है मेमो कथ्या के रस की पुच्छा ! अहो गीतम ! यथायथा

जहा नामए अथाणवा तंदुयाणवा कक्काण परियावण्णाणं धण्णेण उवयेताणं यसत्थेणं जाव
 फासेणं जाव एत्तो मणाममरिया चत्र तेठलेस्सा आसाएण पण्णधा ॥ पम्हलेस्साए
 पुत्तः ? गोयमा ! से जहा नामए चंदण्यमातिवा, मणिसिलासिवा, वरसिंघुतिवा,
 वरवायणातिवा पत्तासेयतिवा, पुप्फासवेतिवा, फलासवेतिवा, धोधीसवेतिवा, आसव-
 तिवा, मधुतिवा मेरएतिवा, कविसाणइतिवा, खज्जुरसारएतिवा, मुदियासागएतिवा,
 सुपविस्वरसेतिवा, अटुपिटुणिटुयातिवा, जघुफलकालियातिवा, वरसण्णातिवा,
 आसला मासला पेसला ईसिंठुवावलीविणी ईसिंठुवेइकदुइचा ईसिंठुवेइकरणी
 उक्कोसमदपत्ता धण्णेण उवयता जाव फासेण आसायणिजा वीसायणिजा

आन्ध, यावद उक्त प्रकार एक विम्बइ के फल पक, इस कर भरे हुए, वर्ष कर खोमिया, गर गर खापित,
 यावत् स्पर्श कर शोधित इस प्रकार का है ! अहो मोक्षम ! यह भव्य योग्य नहीं है इस ने भी अधिक
 इष्टकारी यावत् मनोउ रस है पथ छव्या के स्वाद की पृच्छा ? अहो मोक्षम ! यथाष्टान्तन्वन्धन्त प्रमा
 मदिरा, मणिशिला मदिरा, प्रपान सिंधु मदिरा, प्रपान बाकजी, पत्राश्रय मदिरा, पुष्पाश्रय, फवाश्रय,
 धोवीसाश्रय, मधु-सेइव, मेरक मदिरा, कविसाव मदिरा, खज्जुरसार, दासकारस, पक्कइसुरस अष्टवीष्ट
 निधम मदिरा, पुष्टरुता, प्रपथप करणा, मदन को बीषाने वाली, फंदर्प बढाने वाली, वर्ष इद्रिय और

गीयणिजा, विहनिजा दीवणिजा, दप्यणिजा महनिजा, सार्धदियगाय पल्हायणिजा
मयेतारुवे ? गोयमा ! ना तिण्डे ममेट्टे, पम्हलेस्साण एत्तो इट्टतरिया चेव जात्र
मणामयरिया ख्व, आसाएण पणत्ता ॥ सुक्खेस्साण भंते ! करिसिया आसाएण
पणत्ता ? गोयमा ! सेज्झाणामए गुल्लेतिवा ख्वेतिवा सक्करातिवा मच्छडियाइवा पप्फह
मोदएतिवा, भिसकदणतिवा पुप्फातरातिवा, पठमुत्तरातिवा, अवसियातिवा, सिद्ध
रिययातिवा, आगसफालि उवमातिवा अणोवमातिवा भवेतारुवे ? णो तिण्डे ममेट्टे,
सुक्खेस्साण एत्तो इट्टतरिया चेव कंततरिया चेव मणामयरिया चेव आसाएण

गात्र को अदहादकी करने वाली, इस प्रकार का रस है ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है इस
सेमी इष्टकारी यावत् मनोह पद्य लेखका का रस कहा है ॥ अहो मगवन् ! शुक्ल छंदया का किस प्रकार
का आम्नाद कहा है ! अहो गौतम ! यया दृष्टान्त गुह, मक्कर, दूरा, मिश्री, पादक की पापही, भिसकद
पुप्फपाक, पद्मातर विष्टान, आदिम विष्टा, सिद्धार्थ विष्टा, आकाश के समान उज्ज्वल वर्ण वाली भिस के
स्वाद की अन्य घोषणा नहीं ऐसी अनुभव इस प्रकार शुक्ल छंदया के द्रव्य का स्वाद है क्या ?
अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं है; इस से भी अधिक इष्टकारी, कंतकारी, विपकारी, पनाह पनाप

तओ सीतलुवखातो, तओ मिन्दउण्हातो ॥ तओ दुग्गाइगामिपातो, तओ सुग्गाइ
गामिपातो ॥ कण्डलेस्साण भते ! कसिविहे परिणामे परिणमति ? गोयमा ! तिवि
हवा, नवविहवा, सखात्रीसतिविहवा एकासीतिविहवा, बेयातालीसतिविहवा बहुवा बेहुविहवा
परिणामे परिणमति ॥ एव जाव सुकलरसा ॥ २ ॥ कण्डलेस्साण भते ! कतिपदेसिया
पण्णत्ता ? गोयमा ! अणतपदेसिगा पण्णत्ता ॥ एव जाव सुकलेस्सा ॥ ७ ॥
कण्डलेस्साण भते ! कतिपदेसोगाढा पण्णत्ता ? गोयमा ! असखब्ब पएसोगाढा

करने में १ होत है जघन्य का जघन्य, मधन्य का मधन्य, अधन्य का उत्कृष्ट ऐसे ही मध्यम के तीन
भेद, एस ही उत्कृष्ट के तीन भेद यों १ भेद होते, ऐसे ही नव को तीनगुने करने में सखात्रीस भेद
होते हैं सखात्रीस को तीनगुने करने से एकासी होते हैं और एकासी को तीनगुन करने में
दो तो पियानीस भेद होते हैं भूत ही प्रकार बहुत सख के परिणाम कह हैं जैसे कुल
भेदवा के परिणाम तीन प्रकार के करे उस ही प्रकार नील के कापोत के रंग के पक्ष के यावत् अल
मयवा के परिणाम जानना ॥ ६ ॥ भेदशुद्ध द्वारा महा भगवन् ! कुल सख्या कितने भेदशाली कही है ?
महा गौरव ! अनंत भेदशाली कही है कुल सेववा का अनंत भेदशाली स्कन्ध होता है एमे ही यावत्
शुद्ध भेदवा का भी अनंत भेदशाली स्कन्ध होता है ७ ॥ अथगाह शरभो भगवन् ! कुल सख्या

पणचा पत्र जात्र सुखलेस्सा ॥ ८ ॥ कण्ठलेस्साण भस ! केवइयाओ वगणाओ
पणचाओ ? गोयमा ! अणताओ वगणाओ पणचाओ ॥ एव जात्र सुखलेस्साण
॥ ९ ॥ केवइयाण भसे ! कण्ठलेस्साण ठाणा पणचा ? गोयमा ! असखज्जा
कण्ठलेस्सा ठाणा पणचा ॥ एव जात्र सुखलेस्सा ॥ १० ॥ एतेसिण भते !

कितन आकाश के प्रदूष अवगाह कर रही है ! अहो गौतम ! अमरुपात सोकाकाश प्रदूष
अवगाह कर रही है इसही यावत अरु स्रया का रहना ॥ ८ ॥ वर्तनाद्वार अहो मसपान् ! कृष्ण लेख्या
का किमन पुद्गल की वर्णना कही है ! अहो गौतम ! अनस वर्णना कही है ऐने ही यावत् पुद्गल लेख्या
की वर्णना कहना ॥ ९ ॥ स्थानद्वार अहो भगवन ! कृष्ण लक्ष्या के किमन स्थान करे हैं ! अहो गौतम !
कृष्ण लक्ष्या क अमरुपात स्थान करे है व काल स असख्यात आकाकाश के मितने प्रदूष होवे है वतने स्थान है, अत्रुम लेख्या क
मक्ष्या का स्थान है, अत्रुम लक्ष्या के अतर्क्य का स्थान है निम प्रकार स्फटिक मणि को असत्ता के
रग म रंगने से यादासा लेय पड फिर दूसरी बरक रंगने से अधिक रंग चढ ऐस स्थान जानना परि
पामों की पारा क्यों चढे ऊँचे क्यों स्थान का पलटा होता है जैसे पड कृष्ण लेख्या क स्थान
कह है उस ही यावत् पुद्गल लेख्या के स्थान जानना ॥ १० ॥ अहो मसपान् ! कृष्ण लेख्या के स्थान में

कण्ठलस्साण ठाणा जात्र सुकलस्साठाणाणय जहण्णगाण दव्वट्टयाए पवेसट्टयाए
 दव्वट्टयवसट्टयाए कयरे र हितो अप्पावा ४ ? गोयमा ! सव्वट्ठोषा जहण्णगा काठलेस्सा
 ठाणा दव्वट्टयाए, जहण्णगा नीललेस्सा ठाणा दव्वट्टयाए असस्सज्जगुणा, जहण्णगा
 कण्ठलस्सा ठाणा दव्वट्टयाए असस्सज्जगुणा, जहण्णगा तेजलेस्सा ठाणा
 दव्वट्टयाए असस्सज्जगुणा, जहण्णगा पम्हलेसा ठाणा दव्वट्टयाए अस
 स्सज्जगुणा, जहण्णगा सुकलस्सा ठाणा दव्वट्टयाए असस्सज्जगुणा पवेसट्टयाए-सव्व
 रत्तोवा जहण्णगा काठलेस्सा ठाणा पवेसट्टयाए, जहण्णगा नीललेस्सा ठाणा पवेसट्टयाए
 असस्सज्जगुणा, जहण्णगा कण्ठलेस्सा ठाणा पवेसट्टयाए असस्सज्जगुणा, जहण्णगा
 पावत् बल्लु लेइया क स्थान में जपन्य स्थान में द्रव्यार्थ प्रवेक्षार्थ व द्रव्यार्थ प्रवेक्षार्थ क्वीन २ थोरे इयादा
 तुरप व विदुष करे हैं ! अहा गौतम ! १ सब स थोरे जपन्य कापोत लेइया के स्थान द्रव्यार्थपने, २ उस
 में जपन्य नील सइया के स्थान द्रव्याय अर्मस्पातगुने, ३ उस से जपन्य कृष्ण लेइया के स्थान द्रव्यार्थ
 पने अर्मस्पातगुने, ४ उस में जपन्य तेओ लेइया क स्थान द्रव्यार्थपने अर्मस्पातगुने, ५ उस से जपन्य
 पण लउया के स्थान द्रव्यार्थपने अर्मस्पातगुने, ६ उस से जपन्य सुक लेइया क स्थान द्रव्यार्थ असे
 स्पातगुन अब प्रवेक्षार्थ करे हैं—१ प्रवेक्षार्थ सत्र से थोरे जपन्य कापोत लेइया क स्थान, २ जपन्य
 नील लेइया के स्थान प्रवेक्षार्थ अर्मस्पातगुने, ३ उस से जपन्य कृष्ण लेइया के स्थान प्रवेक्षार्थ असे

तेउलस्सा ठाणा पदसट्ठयाए अमसखज्जुणा, जहण्णगा पम्हलस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए
असखज्जुणा, जहण्णगा सुक्खलेस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए असखज्जुणा, ॥
एव्वट्ठपदेसट्ठयाए सन्वत्योवा जहण्णगा काउलस्सा ठाणा एव्वट्ठयाए, जहण्णगा
नील्लेस्सा ठाणा एव्वट्ठयाए असखज्जुणा एव कप्पलस्स तउलस्स, पम्हलेस्स
जहण्णगा सुक्खलेस्सा ठाणा पदसट्ठयाए असखज्जुणा जहण्णएहिंती सुक्खलेस्स ठाणे
हिंता एव्वट्ठयाएहिंती जहण्णगा काउलस्सा ठाणा पदेसट्ठयाए अणतगुणा,

एयातगुने, ६ जपय वेओ लइया क स्थान प्रदेयार्थपने असएयातगुने, ७ जपय पय छेइया के स्थान
प्रदेयाय असस्यातगुने, ८ जपय सुल्ल सेइया क स्थान प्रदेयाय असस्यातगुने अर द्रव्यार्थ प्रदेयार्थ ९ सब से
जपय कापोत लइया के स्थान द्रव्याय, १० जपय नील छेइया के स्थान द्रव्यार्थ असस्यातगुने, ११ जपय कुल्ल
सेइया के द्रव्याय असस्यातगुने, १२ जपय तजा सेइया के द्रव्यार्थ असस्यातगुने, १३ जपय पय छेइया
के स्थान त्रयाय अर्हस्यातगुने, १४ जपय सुल्ल छेइया क स्थान द्रव्यार्थ असस्यातगुने अपन्य शुक्क
सेइया के द्रव्यार्थ स्थान से, जपय कापोत सेइया के स्थान प्रयार्थ अनंतगुने (नवों कि द्रव्य के अनंत
परमाणु होते हैं) ८ जपय नील छेइया क स्थान प्रदेयार्थ असस्यातगुने, ९ जपय कुल्ल सेइया । के

जहणगम नीललेस्सा पदेसट्टयाए असलेजगुणा, एव जाव सुकलस्सा उणा
॥ ११ ॥ एतसिण भते ! कण्हलेस्सा जाव सुकलेस्सा ठाणाएअ उकाससधण
दवट्टयाए पदसट्टयाए दवट्टपदसट्टयाए कयेरे २ हितो अप्पावा ४ ? गोयमा !
सवत्थावा उकासगा कारलेस्सा ठाणा दवट्टयाए, उकासगा नीललेस्सा
ठाणा दवट्टयाए असलेजगुणा एव जहेव जहणगद तहव उको
सागवि णवर उकोसाचि अमिल्लवो ॥ १२ ॥ एतेसिण भते ! कण्हलेस्सा
ठाणा आव सुकलेस्सा टाणाएअ जहणउकासगाण दवट्टयाए पदेसट्टयाए

स्वान प्रदेसाथ असस्यातगुने, १० जपन्य तेमो कथा के स्थान प्रदर्शार्थ असस्यातगुने, ११ जपन्य पथ
केदया क स्थान प्रदर्शाथ असस्यातगुने ओ६१२ जपन्य एअ सवपा के स्थान प्रदेक्षार्थ असस्यातगुने ॥ ११ ॥
अहो मगवन् ! इन कण्ठ लक्षणा के व अरु लक्षणा के वत्कट्ट स्थान द्रव्यार्थ प्रदर्शार्थ, द्रव्यार्थ प्रदे
क्षा व कोन कपी उपादा तुल्य विक्षेप हैं ? अहो गौतम ! सच से थोड़े कापात लेक्षणा के वत्कट्ट स्थान
द्रव्यार्थ, वत्कट्ट नील सवपा क स्थान द्रव्यार्थ असस्यातगुने, यो भिस प्रकार जपन्य की बन्धावदुत्त
करी तेसे ही वत्कट्ट की भी कहना विक्षेप इतना ही की सर्व स्थान वत्कट्ट आकापक करना ॥ १२ ॥
महो मगवन् ! कण्ठ लेक्षणा के यावन् एअ लेक्षणा के जपन्य वत्कट्ट द्रव्यार्थ प्रदेक्षार्थ कोन २ से, कोये

द्वन्द्वद्वन्द्वपदेसद्वयाए कयरेरहितो अय्यावा ४ ? गोयमी ! सव्यथोवा जहण्णी कंठलेरसो
ठाणा द्वन्द्वद्वयाए, जहण्णी गीललेरसा ठाणा द्वन्द्वद्वयाए असखेज्जगुणा एव कण्ठलेरसा,
तेठलेरसा पम्हलरसा जाव जहण्णी सुखलेरसा ट्ठणा द्वन्द्वद्वयाए असखेज्जगुणा ॥ जहण्णी
सुखलस्स ठाणे रितो द्वन्द्वद्वयाए रितो उक्कोसा काज्जलस्स ठाणा द्वन्द्वद्वयाए असखेज्जगुणा,
उक्कोसा नीललरसठाणा द्वन्द्वद्वयाए असखेज्जगुणा, एव कण्ठ तत्त पम्ह, उक्कोसा सुखलस्स
ठाणा द्वन्द्वद्वयाए असखेज्जगुणा, पदेसद्वयाए सव्यथोवा जहण्णी काठलरसठाणा

इयाद रे ? अहो गौतम ! सब स धारे काणत लेखा के जहन्य स्थान द्विधाधने, ९ जहन्य नील स्त्रया के
स्थान द्विधार्थ असख्यातगुने, १ जघय कुण्य स्त्रया के स्थान त्रिधाध असख्यातगुने, ४ जघन्येवेजो स्त्रया क
स्थान द्विधाध असख्यातगुन, ५ जघय ९ स्त्रया क स्थान द्विधार्थ असख्यातगुने, ९ जघय जल
लेखा के स्थान द्विधार्थ असख्यातगुन, ३ जघन्ये जल लेखा के द्विधार्थ स्थान मे वत्तुए कापोत स्त्रया
के स्थान द्विधार्थ असख्यातगुन, ८ वत्तुए नील स्त्रया क स्थान द्विधाध असख्यातगुन, ९ वत्तुए कुण्य
स्त्रया क स्थान त्रिधार्थ असख्यातगुने, १० वत्तुए तजी स्त्रया क स्थान द्विधार्थ असख्यातगुने,
११ वत्तुए ९ स्त्रया क स्थान त्रिधार्थ असख्यातगुन, १२ वत्तुए जल लेखा क स्थान त्रिधार्थ अस-

द्वन्द्व्याए असंख्यगुणा, एव कण्ठ-तेठ पम्ह उकोसगा सुकलेस्त ठाणा
 द्वन्द्व्याए असंख्यगुणा, उकोसएहिंतो सुकलेस्तठाणेहिंतो द्वन्द्व्याएहिंतो
 जहणगा काठलेस्त ठाणा पदसट्याए अणतगुणा, जहणगा नीललेस्त ठाणा
 पदसट्याए असंख्यगुणा, एव कण्ठ तेठ पम्ह जहणगा सुकलेस्ता
 ठाणा पदसट्याए असंख्यगुणा जहणएहिंतो सुकलेस्ता ठाणेहिंतो

स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, १ जयन्य कुल्ल छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ४ जयन्य तेजो
 छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, ६ जयन्य पद्म छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने ४ जय
 न्नुल्ल छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने जयय मुल्ल छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ से वत्कट कापोत
 छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, वत्कट नील छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, वत्कट
 कुल्ल छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, वत्कट तेजो छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, वत्कट
 पद्म छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने, वत्कट मुल्ल छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ असंख्यातगुने वत्कट
 मुल्ल छेडपा के स्यान द्रव्यार्थ स, जयन्य कापोत छेडपा के स्यान प्रदेक्षाथ अनतगुने, जयन्य नील छेडपा के
 स्यान प्रदेक्षाथ असंख्यातगुने, जयन्य पद्म छेडपा के स्यान प्रदेक्षाथ असंख्यातगुने, जयन्य तेजो छेडपा
 के स्यान पदक्षार्थ असंख्यातगुने, जयय पद्म छेडपा के स्यान प्रदेक्षाथ असंख्यातगुने, जयय मुल्ल छेडपा

खलु सा नीललेस्सा तत्थ गयाउत्ससकति, से सेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चति कण्हलेस्सा
नीललम पप्प नो तारुवत्ताए जाव मुज्जो २ परिणमति ॥ ॥ सेणुण मते ।
नीललेस्सा काउलस्स पप्प नो तावरुवत्ताए जाव मुज्जो २ परिणमति ? हता
गोयमा ! नीललेस्सा काउलस्स पप्प ना तारुवत्ताए जाव मुज्जो २ परिणमति ?
से केणट्टेण मते ! एव वुच्चइ नीललेस्सा काउलस्स पप्प नो तारुवत्ताए जाव मुज्जो

वर स्वात् पसित भाग (आकार) मात्र है परंतु कुछ खेदयापने परिणमे नहीं
वर नील खेदया वही आकर संक्रमे नहीं मर्यात् जिस प्रकार कांच में मनुष्यका प्रतिबिम्ब
देखा जाता है, वस का आकार मात्र वस में देखा जाता है वर सत्य है यद्यपि प्र प्रतिबिम्ब पसित भाग
मात्र है तथापि आकार मात्र स भिन्न नहीं है इस प्रकार ही द्रव्य कुछ लक्षणा ही पसित भाग मात्र
नील खेदया होती है परंतु वह आकारमात्र मात्र ही आरसि के प्राति बिम्ब प्राप्त जानना इस खिये
महो गीतम ! ऐसा कहा कुछ खेदया नील खेदया के द्रव्य को प्राप्त हो वस खयपने वर्जपने यावत्
स्वयंपने बारम्बार परिणमनी नहीं है अहो मग ! नू ! नील खेदया कापोत लक्षणा के द्रव्य को प्राप्त हो
इस खयपने जानत बारम्बार परिणमनी है क्या ? अहो गीतया ! नीलखेदया कापुनखेदया के द्रव्य को

२ परिणमति ? गीयमा ! आगारं भाय माताएग सिधा पलियमाणे भायमायाएवा सियो। नीलेंलेरसाण सा णो खुसा काठलेरसा, तथगता। उसक्कइ उसप्पइवा सेतेणट्टेणं गीयमा ! एव बुधइ णिल्लेरसा काठलेस्स पण्य णो तारुवचाए जाव मुब्बो २ परिणमति ॥ एव काठलेरसा तेठलेरस पण्य, तेठलेस्सा पम्हलेरस पण्य, पम्हलेस्सा सुक्कलेस्सं पण्य ॥ ३ ॥ सेण्ण मते ! सुक्कलेरसा पम्हलेस्स पण्य णो तारुवचाए जाव परिणमति ? हुता गीयमा ! सुक्कलेरसा तच्च ? से केणट्टेण मते ! एव बुधइ

प्राप्त हा उस रूपपने यावत् बारम्बार नहीं परिणमती है किसकारन भहो भगवन् ! ऐसा कहा नीच्छेइया कापोत लक्ष्या के इच्छे पने प्राप्त हो उस रूपपने यावत् नहीं बारम्बार परिणीयति है ? अहाँ गौतमा ! भ्रातार भ्रातृमात्र है ईशात्, पस्वित मार्गवात्र स्यात् नीललक्षणा इती है परंतु निश्चय तदा मातुर कापाव लक्ष्या पने नहीं परिणमती है इस लिये अहो गौतमा ! ऐसा कहा नीललक्षणा कापोत लक्ष्या की प्राप्त हो उस रूपपने यावत् बारम्बार नहीं परिणमती है ऐसेकापोत लक्षणा सेओ लक्ष्यमें परिणमनेका करनेना; तेओ लक्ष्या वय लक्ष्या में परिणमने का कहना ॥३॥ अथ ललट कइत है भहो भगवन् ! नुल लक्ष्या वय लक्ष्या के न्यय का प्राप्त हा उस रूपपने यावत् नहीं परिणमती है क्या ? भहा गौतम ! नुल लक्ष्या वय लक्ष्या क इच्छपने नहीं परिणमति है किस कारण अहा भगवन् ! नहीं

पदेसद्वयाए उकोरसा काउलेरसा ठाणा पदेसद्वयाए असंखजगुणा उकोरसा नीललेस्सा
 ठाणा पदेसद्वयाए असंखजगुणा एव कण्ह तेठ गम्ह उकोरसा सुक्खलेस्सा ठाणा
 पदेसद्वयाए असंखजगुणा ॥ लेस्सा पदस्सचठथो उदेसो ॥ १७ ॥ ८ ॥
 कतिण भत लस्साओ पण्णसाओ ? गोयमा ! छलेरसाओ पण्णसाओ तजहा
 कण्हलस्सा जाव सुक्खलस्सा ॥ ९ ॥ से णुण भते ! कण्ह लेस्सा नीललेसे पप्प
 तारुवसाए तांगेवसाए तारससाए ताफाससाए भुजो २ परिणमेति ३ वा इचो आठ

के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुण, अथन्य शुल्ल लक्षणा के स्थान प्रदेशार्थ से उत्कृष्ट कापोठ लक्षणा के
 स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट नील लक्षणा क स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट कृष्ण लक्षणा
 स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट वेग लक्षणा के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, उत्कृष्ट पद्म लक्षणा के
 स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने, और उत्कृष्ट शुल्ल लक्षणा के स्थान प्रदेशार्थ असंख्यातगुने इति छेदया
 पत्र का चौथा अध्याय संपूर्ण हुआ ॥ १७ ॥ ४ ॥

अहो भगवान् ! कितन प्रकार की छेदया कही है! मोक्ष ! छ प्रकार की छेदया कही है तपसा-कुल
 छेदया पादम् शुल्ल छेदया ॥ १ ॥ अहो भगवान् ! निश्चयसे कुल छेदया के द्रव्य नील लक्षणा के द्रव्य
 को प्रपन्नो रूप पदे गणपते स्मर्त्तयेन बारम्बार परिणमते है. क्या है यों यही से. क्याकर जैसे. बीजे

जहाँ चउथुदसए तहाँ भाणियअ आन वेरुलिय मणिबिदुंतेति ॥ २ ॥ से णुण
भत ! कण्हलरसा नीलरसं पप नो तारुवसाए ना सावण्णसाए, जो तामंघसाए
जो तारससाए जा तापाससाए भुजो २ परिणमंति ? हुतो गोयमा ! कण्हलरसा
नीलरस पप जो तारुवसाए जो वण्णसाए जा गधसाए जो तारुसाए जो
सापाससाए भुजो २ परिणमति ॥ से केणट्टणे भते ! एव मुच्चइ ? गोयमा !
आमारभावमाताण्णा स सिया पल्लिमागभावमायाएया से सिया कण्हल्लेस्साण से जो

उदमे में कहा तेसा कहना गलत वेकसिय धनि का इष्टान्त से सिद्ध करना ॥ २ ॥ अहो भगवन् !
निभग कल्प सेवया के द्रव्य भील सवया को माह ॥ जत रूपने वर्णवने गंधान रसपने रसार्थवने वार
द्वार महीं परिचयने हैं ! अहो गोयम ! कृष्ण स्वरा के द्रव्य तील सेवयापने वर्णवने गंधपने रसपने
रसार्थपने महीं परिचयने हैं + अहो भगवन् ! येना कित कारन से कहते हो ? अहा गौतम !

+ ओ पण्डिता कहा वह तो निधन और मनुष्य की गति आभिय जानना और मही पलटना कहा वह मरक
और इतली आभिय जानना, मनुष्य पिण्ड में द्रव्य लेकरा तथा भाव लेकरा दोनों का पत्रा मोता है, और
नरक देव में द्रव्य लेकरा तो मही होता है परंतु भाव लेकरा का पत्रा होने का सेवन है, यही गलती मरक
में कियावत जाग है और मही भोगे कार मागव न लय करता है, इ र ऐ भाव लेकरा का पत्रा होने का (भाव है

२ परिणमति ? गोयमा ! आगारे भावे मातोप्या सिया पलियभागे भावमायाएवा सियो नीललरसाण सा णो खलुसा काठलेरसा, तथ्यगता उसक्ख उ सप्पध्वो सेतेणट्ठेण गोयमा ! एव बुच्चइ णिललरसा काठलेरस पप्य णा तारूवचाए जाव मुज्जो २ परिणमति ॥ एव काठलेरसा तेउलेरस पप्य, तेउलस्सा पम्हलेरस पप्य, पम्हलेरसा सुक्खलेरस पप्य ॥ ३ ॥ सेणेण मते ! सुक्खलेरसा पम्हलेरस पप्य णो तारूवचाए जाव परिणमति ? इता गोयमा ! सुक्खलेरसा तेष्व ? से केणट्ठेण मते ! एव बुच्चइ

प्राप्त हा उस रूपपन यावत् बारम्बार नहीं परिणमती है किसकारन अहो भगवन् ! ऐसा कहा नील्लेइया कापोव लक्ष्या के द्रव्य पने प्राप्त हो उस रूपपने यावत् नहीं बारम्बार परिणमति है ? अहाँ गौतमा ! माकार मात्रमात्र है ईशान्, पलित भोगिवात्र स्यात् नील्लक्षणा होती है परंतु निधय तथा माहर कापाव लक्ष्या पने नहीं परिणमती है इस लिये अहो गौतमा ! ऐसा कहा नील्लक्ष्या कापोव लक्ष्या हो उस रूपपने यावत् बारम्बार नहीं परिणमती है ऐसेकापोव लक्ष्या तेजो लक्ष्यमें परिणमनेका कहना, तेजो लक्ष्या पद्य लक्ष्या में परिणमने का कहना पद्य लक्ष्या अलं लक्ष्या में परिणमने का कहना ॥३॥ अत्र उल्लं कहत है अहो भगवन् ! मुक्त मेदया पद्य लक्ष्या क द्रव्य का प्राप्त ॥ उस रूपपने यावत् नहीं परिणमती है क्या ! अहा गौतम ! मुक्त लक्ष्या पद्य लक्ष्या क द्रव्यपने नहीं परिणमति है किस कारन अहो भगवन् ! नहीं

कर्मभूमिप मणुरसाण भत ! कङ्कलस्साओ पणत्ताओ ? गोयमा । छ लस्साओ
 पणत्ताओ तजहा कङ्कलस्सा जाव सुक्कलस्सा एव कम्मभूमिग मणुस्सीणवि ॥
 भरहरवप मणुरसाण भत ! कङ्कलस्साओ पणत्ताओ ? गोयमा । छ लस्साओ पणत्ताओ
 तजहा कङ्कलस्सा जाव सुक्कलस्सा ॥ पुव्वविदह अरविदह कम्म भूमिय मणुरसाण
 भते ! पुब्बा ? गोयमा । छ लेस्साओ पणत्ताओ तजहा कङ्कलस्सा जाव सुक्कलस्सा ॥
 एव मणुरसीणवि ॥ अकम्मभूमिय मणुरसाण पुब्बा ? गायमा ! चत्तारि लेस्साओ
 पणत्ताओ तजहा कङ्कलस्सा जाव तेऊलस्सा ॥ एव अकम्मभूमियमणुरसीणवि ॥

कर्मभूमि मनुष्य में कितनी लक्षणा बही है ! अहो गौतम ! छही लक्षणा कही है सद्यया—कृष्ण यावत्तुल्लु,
 इस प्रकार ही कर्मभूमिभी मनुष्यनी क भी छ ही लक्षणा जानना भरत ऐस्मन् के मनुष्यों के कितनी
 लक्षणा ठही है ? अद्य गौतम ! छ लक्षणा कही है तद्यया कृष्ण यावत्तुल्लु इस प्रकार कर्मभूमिकी
 मनुष्यनी क भी छ ही लक्षणा जानना पूर्ण मद्य विदह पश्चिम महा विदह मनुष्य क कितनी लक्षणा
 कही है ! अहो गौतम ! छ लक्षणा कही है एत ही पूर्वोपर महा विदह की मनुष्यनी के भी छ ही
 लक्षणा जानना अर्ध भूमी मनुष्य के कितनी लक्षणा कही है ? अहो गौतम ! चार लक्षणा कही है
 तद्यन्—कृष्ण लक्षणा यावत्तुल्लु तेजा लक्षणा यो अर्धभूमि की मनुष्यनी के भी चार ही लक्षणा जानना और

एव अतरदीवगमनुस्ताण, मनुस्सीणवि ॥ हेमवयपरण्णवय अकम्मभूमिय मणुस्ताण
मनुस्सीणय कइ लेस्साओ पण्णत्ताओ ? गोयमा ! चत्थारि लेस्साओ पण्णत्ताओ
तजहा कण्हलरसा जाव तउलेस्सा हरिवास गम्मयवास अकम्मभूमिय मणुसाण
मणुइसाणय पूच्छा ? गायमा ! अत्थारि लेस्सा पण्णत्ता तजहा कण्हलेस्सा जाव तेठलेरसा
इवकुइ उत्तरकुइ अकम्मभूमिग मणुस्ताणा एव चव ॥ एतेसिंचेव मणुस्सीण
एवचेव ॥ वायतिसिंचे पुरत्थिमइ, एव अत्र पव्थियमइ, एव पुक्खवरदीव माणियव्व ॥
कण्हलरसेण भते ! मणुइसे कण्हलेरस गम्म जाणेज्जा ? इत्ता गोयमा ! जाणज्जा

और दीप क मनुष्य मनुष्यनी के सी यही चारों लक्ष्या जानना इषय परणवय स्रम के मनुष्य के
किवनी लक्ष्या कही है ? अहा गौतम ! चार लक्ष्या कही तथ्या-कृष्ण लक्ष्या यावत् तेजो लक्ष्या
यस ही मनुष्यनी के सी चार लक्ष्या, ऐसे ही हरिवास रम्यकणस की मनुष्य मनुष्यनी और देव कुइ
उत्तर कुइ स्रम की मनुष्य मनुष्यनी क भी चार ही लक्ष्या जानना अिस प्रकार यह सम्मूदीप के कर्मे
भूमी क और छ अर्द्धभूमि के स्रम के मनुष्य की लक्ष्या कही ऐसे ही घातकी खंड के पूर्व विभाग में
रहे ९ स्रमों में और पश्चिम विभाग में रहे ० स्रमों में तथा पुच्छार्क के पूर और पश्चिम विभाग के सब २
स्रमों में लक्ष्या का कथन करना अहा मणवन् ! कृष्ण लक्ष्यावाला मनुष्य कृष्ण लक्ष्यावाक

कण्डलेस्सेण भते ! मणुरसे नीललेस्स गम्भ जाणेज्जा ? हुता गोयमा ! जाणज्जा जाव कण्डलेस्से मणुरसे सुकलेस्स गम्भ जाणज्जा ॥ नीललेस्सेण भते ! मणुरसे कण्डलेस्स गम्भ जाणज्जा ? हुता गोयमा ! जाणेज्जा, पत्र जाव नीललेस्से सुकलेस्स गम्भ जाणज्जा एव काउलसेण छप्पि आलावगा माणियव्या, तेकलेस्सेणवि, पग्ग लेस्सेणवि, सुकलेस्सेणवि एव एते छचीस आलोवगा ॥ कण्डलेस्साण भते ! इत्थिया कण्डलेस्स गम्भ जाणेज्जा ? हुता गोयमा ! जाणज्जा ॥ एव एतेवि सक्कीस आलावगा ! कण्डलेस्साण भते ! मणुरस कण्डलेस्साए इत्थियाए कण्डलेस्स गम्भ जाणेज्जा ? हुता गोयमा ! जाणेज्जा एव एते छचीस आलावगा ॥ कम्मभूमियए कण्डलेस्सेण भते ! मणुरसे कण्डलेस्साए

गम को मानता है क्या ! अहो गौतम ! मानता है ऐसे ही कृष्ण लक्ष्यावासा मनुष्य नील लक्ष्यावास गम का कापीत लक्ष्यावास गर्भ को, तेजा लक्ष्यावाले पत्र लक्ष्यावाले और ब्रह्म लक्ष्यावाले गर्भ को भी मानता है जिस प्रकार कृष्ण लक्ष्यावासा मनुष्य छ ही लक्ष्या के गर्भ का जानता है एव ही नील लक्ष्यावासा मनुष्य भी छ ही लक्ष्या के गर्भ को जानता है ऐसे ही कापीत लक्ष्यावासा, तमो लक्ष्यावासा, पत्र लक्ष्यावासा, ब्रह्म लक्ष्यावासा सब के छ छ आलाएक कहने से १४ आलाएक होते हैं अहो यग वत् ! कृत्स्न लक्ष्यावासी स्त्री कृष्ण लक्ष्यावाले गर्भ का क्या जान सकती है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार

॥ अष्टादश कारस्थितिपदम् ॥

जीव गई इदिय काए, जोगे वए कसाय लेस्साय ॥ सम्मत्त णाण दसण, सज्जय
उवओग आहारे ॥ १ ॥ मासग परित्त पज्जत्त, सुहुम सण्णी भवत्थि चरिमेय ॥ एतेमि

अब अठारवा कार्या स्थिति पद कहते हैं इन क ०२ द्वार क नाम १ सर्भुखिय जीव द्वार, २ गति द्वार,
३ इन्द्रिय द्वार, ४ कार्या द्वार ५ माग द्वार, ६ वेद द्वार, ७ कर्पाय द्वार, ८ लक्ष्या द्वार, ९ सम्यक्त्व
द्वार, १० ज्ञान द्वार ११ दर्शन द्वार, १२ संधति द्वार, १३ उपयोग द्वार १४ आहारक द्वार, १५ मा
पक द्वार, १६ परित द्वार, १७ पर्याप्त द्वार, १८ मूल्य द्वार, १९ सत्ता द्वार, २० मध्य सिद्धिकद्वार,
२१ आत्मकाया द्वार, और २२ चरिध द्वार इतनी द्वारों की जो कार्या स्थिति हमी ६८ कहेंग ८ प्रथम
प्रमुख जीव द्वार-जो द्रव्य स पांच इन्द्रिय हीन अ ग श्वासाश्वास और आयुष्य इन १० २४ प्राणों का
धारक होवे और भाव स ज्ञान दशन सुख और आर्त्तिक इन चार प्राणोंका धारक होवे वह प्राणी जीव कह
याता है इस में द्रव्य प्राण में ता युयापिकता होती है और माव प्राण हो सर्वारी अवस्था में तथा
सिद्ध अवस्था में बने रहते हैं सिद्ध में चार प्राण पूर्ण रूप से प्रगट हो जाते हैं १ अनंत ज्ञान, २ अनंत

+ कार्यास्थिति उसे कहते हैं कि जो जीव इन २२ बाबीय पयाय में से मिय पयाय को धारन करे उस ही
पयाय में मितन काय तरु बना रह, अन्य पर्याय को धारन नहीं कर उसे काया स्थिति कहते हैं

तुषदाण, कायठिती होइ णायन्वा ॥ २ ॥ १ ॥ जीवेण भते । जीवत्ति कालतो
 केवचिर होति ? गोयमा ! सव्वद्ध ॥ णेरइएण भत ! जेइएति कालतो केवचिर
 होइ ? गोयमा ! जहणेण वमवाससहस्साइ उक्खोसेण तेनीस सागरोवमाइ ॥
 तिरिक्खजाणिएण भते ! तिरिकवजोणिएचि कालतो केवचिर होइ ? गोयमा !
 जहणेण अतामुहुच, उक्कासण अणतंकल, अणतामा उंसप्पिणीओओसाप्पिणीओ
 खंसओ अणतालोणा अससज्जा पोगल परियहा तण पोगल परियहा आवलियाए

दर्शन, १ अनंत सुख और ६ अनंत शान्ति इस प्रकार जीव आश्रित्य प्राप्त पूछते हैं अहो भगवन् !
 जीव जीव ही अवस्था में बना रहे तो भित्तने काल तक रहे ? अहा गौतम ! सर्व काल अर्थात् जीव
 गत भेदादि काल से जीव ही है वर्तमान काल में जीव ही है और आगे अनंत काल तक जीव ही
 रहगा जीव का असीम कदापि नहीं हाना ॥ १ ॥ दूसरा गति द्वार अहो भगवन् ! नेरीय का नेरीयेवने
 रहे तो काष्ठ से कितन काल रहे ? अहो गौतम ! अथग्य दंष्ट्र हजार वर्ष उत्कृष्ट तृतीस सागर अरा
 भगवन् ! त्रिविध योनिक सिर्यवपने एह ता कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! जर्घ्य अन्नमुहूर्त
 उत्कृष्ट अनंत काल अनंत अवमर्पणी उत्सापिनी, यह काल में सप्त स अनंत लोकाकाश प्रमाण अचल अनंत
 लोक के भित्तने प्रदेश हैं इन का एकैक समय में एकैक मुद्ग का हरन करत अनंत अवमर्पणी उत्सापिनी

असंख्यति भाग ॥ तिरिक्खज्जाणिणीण भते ! तिरिक्खज्जाणिणीधि काल्तो ! केवचि
होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिणिपलिओवमाइ पुव्वकाढी
पुहुत्त मग्गमाहिंयाइ ॥ एव मणुस्सन्नि मणुस्सीन्नि एव चेव ॥ वेनेणं भते ! देवेसि
काल्तो केवचि होइ ? गायमा ! जहेव नेरइए ॥ वेदीण भते ! वेविसि काल्तो
केवचि होइ ? गोयमा ! जहण्णेणं दमवास सहस्साइ उक्कोसेण पणवण पलिओ
वमाइ ॥ सिद्धेण भते ! सिद्धसि काल्तो केवचि होइ ? गोयमा ! सादिए

कथ्यते इति ते काम्यक विषयवर्तिषु जीवरहे, प्रपञ्च असंख्यान पुद्गल परावर्तन मयात् आरम्भिका
क असंख्यते भाग मे नितने समय इति एतेन पुद्गल परावर्तन विषयवर्तने रहे एव प्रमान वनस्मति की
प्रपञ्चका मानना अत्र भगवन् ! विषयवर्तनी का विषयवर्तनीपन जीव रहे तो कितने कासंख्यक रहे ? अत्र
नोतम ! अथन्य अन्तर मुहुत्त उक्कोसे तीनपण्योपम और प्रत्येक पूरकति अधिक अर्थान्-की पर्याय सङ्गीपने
मेही जाती हे वह सात मरतो पूव काटी आयुष्य के कर्ममूषी मे करे और आठवा मत्र युगल विषयवर्तनी का
करे निम प्रकार विषयवर्तनीकी कायास्थिति कही उसही प्रकार मनुष्य की और मनुष्यवर्तनीकी भी कायास्थिति
जानना मर्यात् जगन्मन्तरमुहुत्त और उक्कोसे तीन पण्योपम और प्रत्येक काल पूर्व अधिक सात मत्र
मगसम कर्ममूषी का मनुष्य मनुष्यवर्तनी के करे आठवे मगम मे युगल मनुष्य हो फिर दत्तवा हो भावे

अपज्ववसिए ॥ गेरइएणं भंत! गेरइय अपज्वचएणि कालतो केवचिरे होइ? गोयमा ।
जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतामुहुच ॥ एव जाय देवी अपज्वासिया ॥ गेरइएण
मत ! गेरइयपज्वचएणि कालतो केवचिरे होइ ? गोयमा ! जहण्णेण दस वास
सहरसाइ, अतोमुहुत्तुणाइ उक्कोसेण तेत्तीम सागरोधमाइ अतामुहुत्तुणाइ तिरिक्ख
जाणिय पज्वचएण भंत ! तिरिक्खजोणिय पज्वचएचि कालतो केवचिरे होइ ?
गायमा ! जहण्णेण अतोमुहुच उक्कोसण तिण्ण पखिओयमाइ अतोमुहुत्तुणाइ ।

अह! मगवन्! देवता का देवता पुने रहता काल से कितने काल तक रहे! अण गौणम! जिस प्रकार नेरीयेका
कहा उस प्रकार ही देवता का कहना अर्थान् दत्त हजार वर्ष वक्तुए तेहीस सागरोपम अह।
मगवन्! देवी का देवीपने रह तो काल से कितना काल रहे? अहो गौतम! अथन्य ददु हजार
वर्ष वक्तुए पचावन पक्षयोपम यद्दुमर देवलोक की अपरिग्रही देवी की अपेक्षा स जानना अहो
मगवन्! सिद्ध का सिद्ध पुने रहे तो कितने काल तक रह! अहो गौतम! सादे अपर्यवसित अर्थान्
पिद्ध की मादितो है किन्तु भन्न नहीं है अथइमचारो गति की पर्याप्त अपर्याप्त अथवा की कायास्विति
करने है अहो मगवन्! नेरीय अपर्याप्त कितने काल तक रहे? अहो गौतम! जपम्य मी वक्तुए भी
भन्नमुहुत्तु इतने ही काल-विषय निर्यमनी मत्तुम्य मत्तुमनी देवता और देवगना समयास रहने है

एव तिरिक्ख जोणिणी पज्जसियावि, मणूसे मणुस्सीवि एव चैव देव
पज्जत्तए जद्धानेरइय पज्जत्तए ॥ देवी पज्जत्तएति कालको केव्विचर
होइ ? गोयमा ! जहण्णेण एसवाससहस्साइ अतोमुहुत्तुणाइ उक्कोसेण पप्पण
पलिओवमाइ, अतोमुहुत्तुणाइ ॥ २ ॥ सइवियाण भत्त ! सइविएति कालो
कच्चिर हाइ ? गोयमा ! सइविए दुविहे पप्पन्ने तेजहा अणाइए
अपज्जत्तिए अणाइएवा सपज्जत्तिए ॥ एगिच्चिएण भत्ते ! एगिच्चिएति कालतो

आधान् सर्व जीवों की अपकप्त अक्षर्या अन्तरमुहुर्त की ही होती है अहो भगवन् ! नरीय। पर्याप्तवने रह तो
कितन काल तक रहे ? अहा गोतम ! अथ प द्वा नार पपमे अन्तरमुहुर्त कम (पह अन्तरमुहुर्त अपर्थासापस्या
का कम किया है) उच्छुट्ठे वीस सागरोपम में अन्तरमुहुर्त कम अहो भगवन् ! विपच पर्याप्त वने रहे तो
द्वितन काल तक रह ? अहो गोतम ! जग्न्य अन्तरमुहुर्त, उच्छुट्ठ वीनपल्यापम में अन्तरमुहुर्त कम
इतना ही विपचनी का पर्याप्तका अथ प उच्छुट्ठ काळ जानना देखता पर्याप्तका नारकी जसा कहना और
पर्याप्त दपी जग्न्य प द्वा नार वप अन्तरमुहुर्त कम उच्छुट्ठ ५५ पत्योपम अन्तरमुहुर्त कम ॥ २ ॥ नीसरा इद्रिय
द्वार महा भगवन् ! इन्द्रिय मीय सशत्रियवने रहे तो काटसे कितने काळ तक रहे ? अहो गोतम ! सशत्रिय दो मन्तर के
कह रहे मर्या १ अनादी अनन्त तो समस्यजीवनी भवेत्ता और २ अनादी सान्त तो मस्य मीय की अपसा

केशचिर होइ ? गोयया ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण अणत्तकाल,
 यणत्तइकाला ॥ वेइरिएण भते ! वेइरिएति कालतो केवचिर होइ ?
 गायमा ! जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण सखज्ज काल ॥ एव तेइदिय ॥ एव
 चउरिदियधि ॥ पंचिविए कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णेण
 अतामुहुत्त उक्कोसेण सागरोवममहस्स सातिरेण अणिदिएण पुब्बा ?
 गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ सइदिय अपज्जचएण पुब्बा ? गोयमा ! जहण्णेणपि
 उक्कोसेणपि अतोमुहुत्त, एवं जाव पंचिदिय अपज्जचएवि ॥ सइदिए पज्जचएण
 महा भगवन् ! एकन्दिय एकेन्द्रियने काल से कितने काल वन रहे ? अतो गोवर्षा मघन्य अन्तरमुहुत्त उत्कट
 अर्नत्त काल वनसरति के काल जितना जानना अतो भगवन् ! वेइदिय का वेइदिय रह वो काल से कितन
 काळ तक रह ? अतो गीतप ! मघन्य अन्तरमुहुत्त उत्कट मखवात काल, ऐसे ही वेइदियका भी, और ऐसे
 ही पौरिशिग्यका भी जानना * महा भगवन् ! पंचेन्द्रिय पंचन्द्रियवन रह तो पास स कितने काल तक रहे ?
 अतो गीतप ! अएय अन्तरमुहुत्त उत्कट एक हजार सागरापय कुछ अधिक इतने काल तक पारो
 गनि वे पंचेन्द्रियने उत्पन्न हाव गरनु चतुर्दिग्य आदि स्थान में उत्पन्न नहीं हावे आर्त्तदिय का प्रभ ?
 महा गीतप ! धर्निद्रिय (मिल्ड) माली अर्नत्त है अत इन्द्रिय आक्षिप पर्पास अपयास का कहत है अतो

* वेइदिय ८० त्तिदिय ९० और पौरिशिग्य ४ अत मगोल्या करेन है.

जहण्ण अतामुहुत्त उक्कोसेण सखजामासा ॥ पच्चिदिय पज्जत्तण भते ! पच्चिदिए
 पज्जत्तएति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण
 सागरेवमसत्तपुहुत्त ॥ ३ ॥ सकाइएण भते ! सकाइएति कालतो केवचिर
 होइ ? गोयमा ! सकाइए दुविह पणत्त तजहा अणादिए अपज्जवसिय, अणादिए
 सपज्जवसिए ॥ पुटविकाइएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण
 की ही स्थिती है तेन्द्रिय पर्याप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! जप्य अवर मुहुत्त वररुह संख्यात रात्रिदिन
 क्यों कि तन्द्रिय की वररुह ८९ दिन की ही स्थिति है चौरिन्द्रिय की पृच्छा ? अहो गौतम ! जप्य
 अतर्मुहुत्त वररुह संख्यात मरिने, क्यों कि चौरिन्द्रिय की छ मरिने की ही स्थिति है पचिन्द्रिय पर्याप्त
 की पृच्छा ? अहो गौतम ! जप्य अतर्मुहुत्त वररुह सो सागरापम पृथक्त्व ॥ ३ ॥ वीया कायाद्धार अहो
 भगवन् ! सकाया सकायपने कालस किनेने काल रहे ? अहो गौतम ! सकाये दो प्रकार क कहे हैं तथ्य-
 मनादि अनंत यह अथव्य आश्रय तमस कार्मान शरीर संदेह काल हाता है इस अपेक्षा और अनादिमान्त
 मध्यमाश्रय मास आवे तब अकायी हाथ पृच्छीकाय आश्रय पृच्छा ? अहो गौतम ! जप्य अतर्मुहुत्त
 वररुह भसख्यात काळ अर्धसयाग सर्पनी वरमर्गनी यह काळ ने और सय स अर्धसयाग
 पाक्काकाल क मितने मनेच्छ मितने काल रहे नहीं तक एत ही अपकाय तेवकाय पापुकाय का

असखज्जकाट असखज्जाओ ओसपिणीओ उसपिणीओ कालतो, खेचतो असखेज्जाओ
 लागाओ ॥ एय आउ तेऊ-वाऊकाइयाति ॥ घणफ्फकाइयाण पुच्छा ? गोयमा !
 जइण्ण अतोमुहुच उक्कासेण अणतकाल अणताओ उसपिणीओ, आसपिणीओ, का
 उआ व्वत्तआ अणतालागा असखज्जापेगल परियह्हा तण पेगलपरियह्हा आवलियाए
 असखज्जाति माग ॥ तरकाइएण भत्त ! तसकाइएति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण
 अतामुहुच उक्कासेण वोसागरोवमसहस्ताइ, सखज्जवास मग्गहिंयाइ ॥
 अहाइएण भत्त ! पुच्छा ? गायमा ! अकाइए सादिए अपज्जवसिए ॥ सकाइय

कहना, व रोगनिर्णाय की पृच्छा ? महा गौतम ! जग्य अतर्मुहूर्त उत्कृष्ट अनन्तकाल अनन्तवर्षी उत्तसर्पनी
 गइ काल म, और सत्र म अनन्त लोकाकाश असल्यात पुद्गल परावर्तन वे पुद्गल परावर्तन एक आव
 िका क मनस्वतावे माग क भित्तन समय हाव उवन पुद्गल परावर्तन भवो मगवन् ! भसक्काया व्वत्त
 काय वने रहे ना काल स कितने काल रहे ? अहा गौतम ! अघन्य अन्तरमूर्त उत्कृष्ट वो हजार साग
 रापपसत्तागतत्त आरिक्क भक्कायिकगिद्ध मगवत्तका पृच्छा ? भवो गौतम ! सिद्ध भनादि अपर्यवसित हँ अव
 भपयत्त पगत्त आश्रित्य कहइ ६—अहा मगवन् ! सकायेक अपर्याप्तने रह ता कितने कालवत्त रहे ?
 महा गौतम ! जग्य उत्कृष्ट अन्तरमूर्त एते ही यावत् मनकाया हर कहना तप भपर्याप्त अन्तरमुद्गत

अपञ्चत्तएण पुञ्छा ? गोयमा ! जहण्णेण उक्कोसणमि अतोमुहुत्त, एव जात्र तस
काइय अपञ्चत्तए ॥ सकाइय पञ्चत्तए पुञ्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त
उक्कोसेण सागरावम सतगुहत्त सनिरग ॥ पुढायिकाइय पञ्चत्तए पुञ्छा ? गोयमा !
जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कासण सखजाइ वास सहस्साइ, एव आठवि ॥ तेठकाइय
पञ्चत्तएण पुञ्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सखजाइ राइदियाइ,
घाठकाइय पञ्चत्तएण पुञ्छा ? गायमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण
सखजाइ वाससहस्साइ ॥ वणफ्तिकाइय पञ्चत्तएण पुञ्छा ? गोयमा !

ही रहत है सकापिक पर्पास रह तो कितने काल तक रहे! अहा गौतम! मधन्य अन्तरमुहूत उत्तुष्ट सापिक प्रत्यक
मा सागरीयम इतने काल तक अपर्पास अवस्यामें मृत्यु नहीं पाये पया, हाकरही मेरे पृथ्वीकायिक
पयास कितने काल तक रहे ? अहा गौतम ! उत्तुष्ट सख्यात हजार वर्ष क्योंकि घासीस हजार वर्षायु है
एसही प्रप्रापिकका भी कहना, क्योंकि सात हजार वर्षायु है, तेजस्काया पयास अवस्यामें रहे तो? अहा
गौतम ! जयप म जरमुहूर्त उत्तुष्ट सख्यात राशिदिन क्योंकि तीन अहाराप्रिका आयु है वायकाया पर्पास
की पृच्छा? अहा गौतम ! सख्यात हजार वर्ष क्योंकि तीन हजार वर्ष का आयुष्य है वनस्पतिकाय पर्पास
की पृच्छा ? अहा गौतम ! जयप अन्तरमुहूर्त उत्तुष्ट सख्यात हजार वर्ष क्योंकि कि दस हजार वर्ष की
हियात है प्रमकाया पयास की पृच्छा ? अहा गौतम ! प्रपन्य अन्तरमुहूर्त उत्तुष्ट सापिक प्रत्येक हा सागरा

जहण्ण अतोमहुच्च उक्कोसेणं सखेज्जाइ वाससहरसाइ, तसकाइय पज्जत्तएण पुच्छा ।
 गायमा ! जहण्ण अतोमहुच्च उक्कोसेण सखज्जाइ वाससहरसाइ, पाठातर सखज्जाइ
 वामसहरसाइ सागरोवम सय पुहुच सातिरेग ॥ ४ ॥ सुहुमण भते ! सुहुमेति
 काल्तो कच्चिर होइ ? गोयमा ! जहण्ण अतोमहुच्च उक्कोसेण असखज्ज काल,
 अमंखज्जाओ उत्सप्पिणी आसप्पिणीआ खत्ताआ असखज्जालोमा ॥ सुहुम पुढवि
 काइया सुहुम आठकाइया सुहुम तळकाइया सुहुम वाळकाइय सुहुम वणस्सइ
 काइया सुहुम निगेवे जहण्ण अतोमहुच्च उक्कोसेण असखज्ज काल असखज्जाओ
 उत्सप्पिणी २ ओ कालआ असखज्जा लागा ॥ सुहुमण भत !

पम अयात् नव सा सागरापपर्वत प्रसकाया पे रड मर्हा जावे रर्हा अयर्गपुन पे आयुष्य पूर्ण नर्ही करे
 । फर स्थावरवना पावे या मुक्त नाव (१६) अब मूस्य वादरकायाका पूछे रे इ भडा भगवन ! मूस्य मूस्यरन
 भिनन काल एक रड ! भडा गौतम ! भयय अतमुदून वळ्ळए परोस्यान का- अगल्यात उत्सर्पिणी
 अवमर्पिणो कालसे और क्षम सा अगल्यात लोकक थाका सुप्रवश जिगना काल मुहुरही रड + मूस्य पुढरीकाया
 मूस्य अप्काया मूस्य तेजरकाय मूस्य वायुहाया, मूस्य वनस्पतिकाया, मूस्य निगोद इन आश्रय
 पुच्छा ? भडो गौतम ! भयय अ-परमुदून वळ्ळए भसंख्यात काल असख्यात उत्सर्पिणो अवमर्पिणो

+ यह कथन स्पष्टद्वाराज्ञान में आये भीष आश्रय है, भय्यवहार राशिवाले मूस्य नीगोदाये ता अनत काल पर्वत रहतेहै

असखेज्जइ भागापचय सरीर यादर वणरसतिकाइएण भते। पुच्छा ? गोयमा । जहण्णेण
 अतोमुहुच उक्कोसेण सत्तरि सागरोवम कोटाकोहीओ॥ निगावेषण भता निगोदासि पुच्छा ?
 गोयमा । जहण्णेण अतोमुहुच उक्कोमेण अणतकाल, अणतामा उसापिणि आसपिणीओ
 कालता स्रेचओ अद्गुइज्ज । पागलपरियहा ॥ वादर निगोदेण भते । यावरे पुच्छा ? गोयमा ।
 जहण्णेण अंतामुहुच उक्कासेण सतरि सागरोवम काटाकाहीओ ॥ वादर तस
 काइएण भत । वादर तसकाइएति कालओ केवचिर होइ ? गायमा । जहण्णेण
 अतामुहुच उक्कासेण दोमागरविम सहस्साइ सखेज्जवास मवमहिंयाइ ॥ एतेसि

पय एस ई । वादर अद्गुहाया मी वादर तजस्हाया भी और वादर वायुकाया भी आना अओ मगरन् !
 वादर वनस्पतिकाया वादर वनस्पतिकायापने कितने काल रह ? अओ गौतम ! अद्यन्य अन्तःमुहूर्ते उत्कृष्ट
 अभिरुपात काल गायने एत स भंगुमके भसखेयातवा माग जिनना एत क जितन आकाश प्रेक्षु एतनी
 वरसपेणी अवर्तापेणी भितना काल जानना प्रत्येक शरीर वादर पनस्पतिकाया की पुच्छा । मडा
 गौतम ! जय ए अद्गुमुहूर्त उत्कृष्ट सिचर कोडाफोट सागर अओ गायन् ! निगाद निगोदपन रह
 वा काल से कितना काल रह ? अओ गौतम ! अद्य ए अद्गुमुहूर्त उत्कृष्ट भनव काल मनन अससपेणी
 वरवापेणी काल स और एत ग अनत साक प्रमाण तथा मद इ पुद्गल परावर्तन प्रमाण वादर निगाद

अपञ्चतगा सन्धवि जहण्णेणवि उक्कासणवि अतोमुहुच ॥ वादर पञ्चत्तएण भत्ता वायरे
पञ्चत्तए पुब्बा ? गायमा ! जहण्णग अतोमुहुच उक्कासेणं सागरोवम सत्त पुहुत्त
सातिरग ॥ वादर पुट्टविकाइय पञ्चत्तएण भत्ते ! वादर पुब्बा ? गोयमा !
जहण्णेण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सस्वज्वाइ वाससहस्साइ ॥ एव आज्ज
काइयवि ॥ तटकाइय पञ्चत्तएण पुब्बा ? गायमा ! जहण्णेण अतामुहुत्त उक्कासेण
सस्वज्वाइ राइदियाइ ॥ वाटकाइय वणस्सइ काइय, पत्तय सरीर वादर वण्णरसइ
काइए पुब्बा ? गायमा ! जहण्ण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सस्वज्वाइ वास सहस्साइ

बादर निगोद्वपन कितना काल रहे ? अहा गौतम ! अधन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट सितार कोढाफ्राड सागरोपम अहो मगनन् ' बादर असहाया बादर प्रमकायापन रह तो कितने काल रह ! अहा गौतम ! मयन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट दा हजार मागरापम सख्यात वर्ष अधिक इन के अपर्याप्त सप ही लघन्य तथा उत्कृष्ट भन्तरमुहूर्त बादर पयाप्त किनन काल रहे ? अहा गौतम ! लघन्य अन्तरमुहूर्त साधिक प्रत्यक्ष मो मागरोपम बादर पृच्छीहाया पर्याप्त कितने काल रहे ? अहो गौतम ! अधन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पसपान हजार यय एम ही अपहाया का भी कहना, बादर लजसहाया पयाप्त की पृच्छा ? अहो गौतम ! लघन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट संख्यात अहोपात्रि, पापुहाया, वनस्पतिकाया और प्रथक स्त्रीर बादर बन

निगोद पञ्चत्प चाधर निगोद पञ्चत्प पुच्छा? गोयमा ! दोण्हवि जहण्णेण वि उक्कासेण वि
अम्महन् ॥ चाधर समकाइय पञ्चत्पण भेते ! चाधर तत्तकाइय पञ्चत्पति कालओ
कर विर ? गायमा ! जहण्णं अतोमुहुत्त उक्कासेण सागरोवम सय पुहुत्त साति
रग ॥ ४ ॥ सजागीण भते ! सजागिति कालतो केवचिर होइ ? गोयमा !
सजागा दुविहे पणत्ते तेजहा अणादिपु वा अपज्जवसिए अणादिपुवा सपज्जवसिए
सगतिहाया की पुच्छा ! अहो गौतम ! जयन्य अतरगहूर् वत्थु सखपात इमार वर्ष निगोद के पर्याप्त और
चाधर निगोद के पयास की पुच्छा ? अहा गौतम ! दानों ही सयन्य वत्थु अंतरमुहूर्त अहो मगवन् ! चाधर अस
काया चाधर अस क पर्याप्तपन रहे तो कितने काय रह ! अहो गौतम ! अथय अन्तर मुहूर्त वत्थु सो
गागरापय पृथत्य कुत्त अधिक ॥ ६ ॥ वाचवा नाग द्वार-अहो मगवन् ' सजोगी का सजागी पने
! कतन काल तक रहे ' अहा गौतम ! सजोगी दा मरुत क करे हे वथथा अनादी अपर्यवसित अमव्य
माश्रिय और अनादी सपर्यवसित मव्य आश्रिय अहो मगवन् ! यनजोगी मनजोगी पने रहे वा कितने काल रहे
अहा मगवन् ' अथय एक समय क्यों कि काया याग करके मनायाग के पुद्गल ग्रहण करे उस परिणमा
कर दुमर समय छोडद और तीसरे समय पर जावे इस अपसा एक समय मनोयोगकी कायास्थिति होती हे
वरत्थु भठारमुहुत्त निरतर मनोयोग के पुद्गल ग्रहण विसर्ग करे कि स्वमात्र से निश्चय योग का

मणजोगीण भंते ! मणजोगीति कालतो केवचिर 'होइ' ? गोयमा ! जहण्णेण एक समय उक्कोसेण अतोमुहुच ॥ एव वयजोगीणि ॥ कायजोगीण भते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुच उक्कोसेण वणस्सइ कालो ॥ अजोगीण भते ! अजोगीति कालओ केवचिर होइ ? गोयमा ! साविइ अपज्वसिए ॥ ५ ॥ सवेदएण भंते ! सवेद एत्ति कालओ केवचिर हाइ ? गायमा ! सवेदए तिचिह पण्णसे तजहा अणारिएवा अपज्व सिते, अणारिएवा सपज्वसिए, साविइ वा सपज्वसिए ॥ तरेयण जेतसे साविइ सपज्वसिए

पह्ला शब्दे भिन्न प्रकार मन्त्रागही काया स्थिति कही नैमे वचन भोगही यी काया स्थिति जानना भरो भगवन् ! काया जोगी का वाया जोगी पने रहे हो कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! भगवन् अन्तर मुहुत्त भङ्गी आश्रय धर्मयोग वचन योग में परिणमकर काया योग में परिणमे फिर धन्तर मुहुत्त रह कर पीछा काया भोग में परिणमे, बल्लह वनस्पति का काल भरो भगवन् ! अजोगी अनोगी पने (सिद्धपने) रह या कितने काल रहे ? अहो गौतम ! सादी अपर्याय सित ॥ ५ ॥ छह्ठा शब्द द्वार भरो भगवन् ! सवेदी सवेदीपने रहे हो कालस कितने काय तक रहो ? अहो गौतम ! सवेदी भीम प्रकार कहे हैं वषया ? अनामी अनंत, २ अनामी मान्य और ३ सादी सात्व हसुपे जो सादी (सान्त्व है वे सवेदी अपुण्य अन्तर मुहुत्त रहे क्यों कि उपपन्न अभि प्रतिपन्न भवेये गुणस्यानये बन् का लयकर पुनः उपपन्न हो सवेदी भन अन्तरमुहुत्त रहकर पुनः

स जहण्णेण अतोमहुच्च उक्कोसेण अणतकाले, अणताओ उस्सप्पिणी ओस्सप्पण्णीओ कालओ, खेचओ अवद्धु पोगलपरियहं वसूण ॥ इत्थिवेदेण भते ! इत्थिवेदेचि कालओ केवधिर हाइ ? गोयमा ! एगेण आवेमेण जहण्णेण एक समय उक्कोसेण वसुचर पलिओवमसत्तं पुव्वकोढीपुहुत्त मम्महिंयं, एगेण अवेसण जहण्णेण एयं समय उक्कोसेण अट्टारसवल्लिआवमाइ पुव्वकोढीपुहुत्त मम्महिंयाइ ॥ एगेण

श्रीणि पढकर वद का लग करे इस प्रपत्ता और वरकृष्ट अनंत कास अनंत तस्मापिनी, अचसपिनी काल म, और लग से अर्प पुत्रल परावतन में कुछ काम सचरी रह कर पुनः प्रवर्ती होते महा भगवन् ! खिदे वने रह ता कितने काल रहे ! अहो गीतम ! (एक आदेश कर तो) जप्य एक समय क्यों कि कोइ स्त्री उपश्रम श्रानिमोतपम हा वेद का लग कर पुनः प्रवर्ती हो स्त्री वेद लग कर एक समय रहे तुम प्रागुल्य पूण कर पुरुष वने उत्पन्न हारे वरकृष्ट एक हा दक्षप्रयोपम पूर्वकोटी प्रयपरा अधिक, क्यों कि तुमर दक्षका में अपरिग्रही देवीपने ५५ परगोपम की स्थिति भागव कर धनुष्यन्ती हा छ भर लगो लग पूर्व कर्त्ता आयुल्य के करे पुनः तुमरे देवलोक में अपरिग्रही देवी में ५५ परगोपम की स्थितिपने उत्पन्न होने फिर वद का पत्न्या होने, इस आपेक्षा (तुमरे आदेशकर) भगव्य एक समय वरकृष्ट भर्तारे पश्योपम प्रकाशी प्रयपरा अधिक, क्यों की तुमरे देवलोक में परिग्रही देवी की वरकृष्ट, स्थिति नक्षत्रयापम

मंते ! गर्भसगं नेवति पुच्छा ? गौयमा ! जहण्णेण एगं समये उक्खीसेणं वणेणरंसई कालो ॥ अवेवएण मते ! अवेदति पुच्छा ? गोयमा ! अथेवे दुविहे पण्णमे तंजहा साइए अपज्जवसिए वा साइए सपज्जवसिएवा, तत्थेण जे त सादिए सपज्जवसिए से जहण्णेण एगं समय उक्खीसेण अतोमुहुच ॥ ६ ॥ सकसाइएएप्पि

मर कर आठवे मर में दक्कुरु में तीन पस्सोपम का प्रश्न कर प्रश्न दक्खोक में जग्न्य स्थिति वाली दबी होवे, तथा दो मर मवनपति अगुरुकार की जाति की दबी के चार पत्थापम के आयुष्य के कर और छ मर मनुष्यनी विषिचनी के करे यो पांच प्रकार से स्त्री की लाया स्थिति का कथन किया पुरुष वेदका प्रश्न ! अहो गौतम ! जग्न्य अन्तरमुद्वुत्तं उत्तुष्ट प्रत्येक सो सागरोपम कुछ अधिक, इवने काल तक देवता में रह कुछ अधिक मनुष्य तिर्यच के मर आश्रिय जानना नपुंसक वेद का प्रश्न ? अहो गौतम ! जग्न्य एक समय उत्तुष्ट वनस्पति के काल जितना अनंत काल अहो भगवन् ! अवेदी अवेदीपने रहे सो कितना रहे ! अहो गौतम ! अवेदी दो प्रकार के करे ? साहिक अनंत और देवादिक सान्त इस में ओ सादि सान्त है वे जग्न्य एक समय उत्तुष्ट अन्तरमुद्वुत्तं दत्तं गुणस्वान ये अवेदी दो इग्यारेवे गुणस्वान से पहचाने हाथ हम आश्रिय जानना ॥ ६ ॥ अहो भगवन् ! सकपाइ सकपाइने रहे सो कितने काम रहे ! अहो गौतम ! सकपाइ तीन प्रकार के करे हैं तथथा—^१अनादि अनन्त; ^२अनादि

कालतो केश्विर होइ ? गायमा ! सकसाइ तिनिहो पणचे तजहा अणादिपवा
अपज्वसिए अणादिपवा सपज्वसिए सादिपवा सपज्वसिए ॥ तत्थण जेसे
सादिपवा सपज्वसिएथा मे जहण्णेण पूग समय, उक्कासेण अणतकाल जाव अवहु
पुगल परियट दसूण ॥ काहकसार्इणं भते ! पुच्छा ? जहण्णेणत्रि उक्कासणवि असोमुहुत्त
एव जाव माण माया कसार्इणं लोभकसार्इण भत ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण
एकसमय उक्कासण अतामुहुत्तं ॥ अकसाइति भते ! अकसाइति कालओ कवचिर

मानस और ३ सादि सामन इम में जो सारी सामन है वह अथन्य एक समय उपपन्न अणिगत पदवाइ आश्रिय, उत्कृष्ट अनंत काल की यावन आया पुनः परावर्तन कुछ कम अतो भगवत् ! क्रोध कपायी क्रोध कपायी पने रहे तो किने काल रहे ? अतो गौतम ! अथन्य उत्कृष्ट अन्तरयुर्त ऐसे ही मानकपाइ माया कपायीकी भी अथन्य उत्कृष्ट अन्तरयुर्त की स्थिति है लोग कमाइ की पृच्छा ? महा गौतम ! अथन्य एक समय उत्कृष्ट अन्तरयुर्त क्योंकी जब काइ जीव उपपन्न अंणी प्रतिपन्न होता है तब पीछा पड कर एक समय साम कपायका स्पर्श न कर आयुज्य पूज कर देवलोके में आवे वहां काच मान माया कपाय का वन्य होवे इस आश्रिय एक समय जानना श्रौथाविक की एक समय की स्थिति न करी इन का स्मरण घर है कि नीनों कपाय में पहा हुआ जनि पुनः उन्ही कपाय में जाकर उत्पन्न होता है और

हाइ ? गोयमा ! अकसाई दुविह पण्णत्त तजहा सादिएवा अपज्वसिए, सादिएवा
सपज्वसिए ॥ तथण जे से सादिए सपज्वसिए से जहणण एकसमय,
उक्कासण अतामुहुत्त ॥ ७ ॥ सलेसेण मते ! सलसेति पुच्छा ? गायमा !
सलम दुविहे पण्णत्त तजहा अणादिएवा अपज्वसिए, अणादिएवा सपज्वसिए ॥
कण्हलसेण मत ! कण्हलसेति कालतो कचचिर होइ ? गोयमा ! जहणण
अतामुहुत्त उक्कोसेण तर्हीस सागरोत्तमाइ अनोभुत्त मब्भहियाइ ॥ णील्लेसेण

मदम लाम स मृत्युपाया जीव नीनो कपायपन वत्सय हो लाम कपाय का लक्षणी दाता है अहा मगरन् !
अकसाई अकसाईन रहे तो काल स कितन काल तक रह ! अहा गौतम ! अकपाई दो प्रकार के
रहे हैं वज्रया—१ सादी अनंत और २ मात्री सात्व इसमें ओसादी सान्त है वह अयन्य एक समय उत्कृष्ट
अन्तरमुदत्त, क्यों की उपद्रव प्रेरित इगारव गुणस्थान की अन्तरमुदत्त की ही स्थिति है ॥ ७ ॥
भाउवा दश्या द्वार भयो मगरन् जीव सलशी का समुशीपन रह तो कितन काल तक रहे ? अहो गौतम !
मलक्षी दा गभार क कहे है तथया—१ मनादि अनन्त अयन्य अश्रिय और अनादि सान्त मय
अश्रिय अहो मगरन् ! कृष्ण लक्षी कृष्ण लक्षी वने कितने काल तक रहे ? अहो गौतम ! अयन्य मन्तर

भत ! नीलटसति पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतो मुहुत्त उक्कोसेण दससागरो
 वमाइ पलिओवमा सखेज्जति भाग मग्गमहियाइ ॥ काठलसेण भते ! पुच्छा ? गोयमा !
 जहण्ण अतोमुहुत्त उक्कोसेण तिणि सागरोवमाइ पलिओवमा सखज्जइ
 भाग मग्गमहियाइ ॥ तेठलेसेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त
 उक्कोसण दा सागरोवमाइ पलिओवमस्स असखज्जइ भाग मग्गमहियाइ ॥
 प्रग्गहलेसेण पुच्छा ? गायसा ! जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण दससागरोवमाइ
 अतोमुहुत्त मग्गमहियाइ ॥ सुक्कलेस्सेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुत्त

मुहुत्त उक्कट वेनीस सागरोपप मातवी नरककी अपेसा, अन्तरमुहुत्त अधिक अनुप्य तिरिच के मवकी अपेसा
 नीलवेदया की पृच्छा ! अहो गौतम ! अपन्य अन्तरमुहुत्त उक्कट दस सागरापप नौयी नरक की अपसा
 परयोपपका असख्यातवा भाग अधिक पावरी नरक आश्रिय कापोव लपया की पृच्छा ! अहो गौतम !
 अपन्य अन्तरमुहुत्त उक्कट वीन सागरोपप दुमरी नरक की अपेसा पत्यापप का असख्यातवा भाग
 नीमरी नरक क पपप पायट आश्रिय तेमोकेवथाकी पृच्छा ! अहो गौतम ! अपन्य अन्तरमुहुत्त उक्कट दो
 सागरोपप दुमरे देवसोक आश्रिय, पयोपपका अपकपातवा भाग अधिक पावरे देवसोक आश्रिय पबकेपया आ
 श्रिय पृच्छा ! अहो गौतम ! अपन्य अन्तरमुहुत्त उक्कट दस सागरोपप अन्तरमुहुत्त अधिक अनुप्य तिरिच के मव

सपञ्चवसिष्ठ । तत्पण जे से सादिष्ट सपञ्चवसिष्ठ से जहण्णेण अतामुहुस उक्कासणं
अणतकाल अणताओ उस्सपिणी उस्सपिणीओ कालओ, सपञ्च अत्रि पागलपरि
यह देखूण ॥ सम्मामिच्छ दिट्ठीण पुच्छा ? गायमा ! जहण्णेणवि उक्कासेणवि अतो
मुहुस ॥ ९ ॥ जाणीण मत ! जाणीचि कालतो कंठाचि होइ ? गोयमा ! जाणी
दुविहे पण्णे ते जहा सादिष्टवा अयञ्चवसिष्ठ, सादिष्टवा सपञ्चवसिष्ठ ॥ तत्पण जेसे
सादिष्ट सपञ्चवसिष्ठ स जहण्णेण अतोमुहुस उक्कासणं छवट्ठि सागराथमाहु साइरेगाइ

कहे हैं तथा—? अनादी अनन्त, अपठ्य आश्रित, २ अनादी सा त, मध्य आश्रित, और ३ सादी
सान्ध परवर्तमान आश्रित इम में सादी सान्ध मिथ्यत्वा की स्थिति जप-य मन्तरमुहुस उक्कट्ट अन्त काल
अन्त सर्वनी वस्तुवर्ती यह काल स और क्षेत्र से कुछ कम भाषा पुद्गल परावर्तन सममिथ्यत्वाव(मिथ्य)दृष्टि की
पुच्छा ! अहो गौतम ! अद्य-य उक्कट्ट मन्तरमुहुस की स्थिति है ॥ ९ ॥ दृष्टवा ज्ञान द्वार—अहो
ममयन् ! ज्ञानी ज्ञानोपने रह सो कितने काल तक रह ! अहो गौतम ! ज्ञानी को प्रकार के कह हैं
तत्पण—? सादी अनन्त सायिक-अम्यवर्ती व केवल ज्ञानी की अपेक्षा, और २ सादी सा-त परवर्त
माश्रित इम में सादी सान्ध की स्थिति मध्य मन्तरमुहुस की उक्कट्ट छेछट सागरोपम कुछ मापक

अभिनिवेशिण्याणीण पुच्छा ? गायमा ! एवमेव ॥ एव सुतगणीवि, ओहि
णाणीवि जहण्णेण एक समय उक्कोसेण छासट्ठि सागरोवमाइ साईरगा
इ ॥ मणपज्जवणाणीण मते ! कालतो केवचिर हाई ? गोयमा ! जहण्णेण एक
समय उक्कासेण वसुण पुनकोही ॥ कवलणाणीण मते ! पुच्छा ? गोयमा ! सादिए
अपज्जसिए॥अण्याणीण मति अण्याणी सुत अण्याणीण पुच्छा?गायमा! अण्याणीण मति
अण्याणी सुत अण्याणी तिदिहे पण्णत्ते तजहा अणादिएवा अपज्जवसिप्पवा, अणादिएवा
सपज्जवसिएवा, सादिएवा सपज्जवसिएवा॥तत्थण जेसे सादिएवा सपज्जवसिए स जहण्णेण

पश्यन्स्वरूपं तस्मै के अने ही सज्जानी नेम ही पति श्रुति काया स्थिते जानना
अवधिज्ञानी की जगत् एक समय क्यों कि विमग्न ज्ञानी सम्यक्दर्शी बन अत्राभिज्ञान प्राप्त कर तुन परे
इस अवस्था उदरुष्ट छोट सागरोपम क्षामेरा उक्त प्रकार धन पर्यन्त ज्ञानी की पृच्छा ? अहा गौतम !
जगत् एक समय प्रमत्त संयाति मनःपथर ज्ञान प्राप्त कर दूसरे समय आयुष्य पूर्ण कर इस अपेक्षा,
उदरुष्ट कुछ (भाठ वर्ष) कम क्रेड पूर्व की कवल ज्ञानी पृच्छा ! अहो गौतम ! मादी अनन्त है
सप्रज्ञानी पति अज्ञानी अति अज्ञानी की पृच्छा ! अहो गौतम ! सप्रज्ञानी पति अज्ञानी और श्रुति
अज्ञानी तीन प्रकार के कह ई लक्षणा—' अनन्दी अनन्त अमर्त्य आश्रय, २ अनन्दी मान्द मर्त्य

अतोमुहूर्त्तं उक्तासेण अणतकाले अणताओ उस्साप्पणी ओसप्पिणोओ कालेतो,
 खेत्तातोअवद्धं पोरगल परियट्ठ देसूण । विभगणाणीण मते ! पुच्छा ? गोयमा !
 जहण्णेण एक्कं समय उक्तासेण तेतीस सागरोवमाई देसूणाइ बुन्वकोट्ठाए अम्भदिमाई
 ॥ १० ॥ चक्खवसणीण मते ! पुच्छा गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहेत्त,
 उक्तासेण सागरावमसहस्सं सातिरेग ॥ अचक्खुदसणीणं मते ! अचक्खुदसणीति
 कालतो कवचिं होइ ? गोयमा ! अचक्खुदसणी दुविहं पणसे तजहा अणादि

आश्रय और सारी सान्त्त पदवाइ आश्रय, हम में जो सारी सान्त्त है वे जयन्त्य अन्तरमुहूर्त्त उत्कृष्ट
 अनन्त काले अनन्त सर्वनी उत्साहिनी काल से क्षेत्र से कुछ कम आधा पुद्गल परावर्तन
 विभग द्वानी की वृत्तज ! अहो मोक्ष ! जयन्त्य एक समय उत्कृष्ट तैलीय सागरोपम कुछ
 कम पूर्व कोटी अधिक सातवी नरक और मनुष्य विर्यव के मय आश्रय ॥ १० ॥ इग्यारह ॥
 दर्शनदार अहो मगधन् ! वसु दर्शनी वसु दर्शनीपने रह हो किमने कास सेक रहे ? अहो मोक्ष !
 जयन्त्य अन्तरमुहूर्त्त चौरिद्विधादि में अन्तरमुहूर्त्त आयुष्य योग मृत्यु पादे उत्कृष्ट एक इमार सागरोपम
 कुछ अधिक इतने कास तक चौरिद्विग्य पंचेन्द्रिय के ही मय करे, अथवा दर्शनी की वृत्तज ? अहो
 मोक्ष ! अथवा दर्शनी हो नकार के करे हैं तथवा-अनादी अपर्यवसित अथवा आश्रय अनादी

पूजा अपज्वसिष्ट, अणादिपञ्चा सपञ्चसिष्टा ॥ ओहिवसणीणं पुञ्छा ? गोयमा !
जहण्णेण एक्क समय, उक्कोसेणं दो छावट्टी सागगेवमाण सातिरेगणं ॥ केवल
दसणीण पुञ्छा ? गोयमा ! सादिष्ट अपज्वसिष्ट ॥ ११ ॥ सजतेणं भंते ! संजते
चि पुञ्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एग समय उक्कोसेण देसूणं पुन्वकोढी ॥ असजतेणं
भंते ! असजसति पुञ्छा ? गोयमा ! असजए तिदिहे पण्णत्ते तंजहा अणादिष्टा
सात्त अचि दद्वेन की पुञ्छा ! अहो गौतम ! जपय एक समय उक्कोसेण दो छासट सागरोपम कुळ
मपिक बह इस प्रकार कोहिवसिष्ट विर्मग ज्ञान युक्त सातवी नरक में जाय तैवीस सागरोपम का आपु
मोगव पुनःतिर्यच हो आदिष्ट गति सातवी नरक में जाये यह ११ सागर नरक आश्रित हुये फिर
मातवी नरक से निकल मनुष्य ॥ मग्गयव प्राप्त कर भवधि ज्ञानी बने आपुष्य पूर्ण कर विजयादि
विमानमे जाये फिर मनुष्य हो फिर विजयादि विमानमे जाये यो १३ सागरोपम होवे, यह दो छाष्ट सागरोपम
और मनुष्य तिर्यच के बीच में मव किये वे अधिक जानना केवल दर्शनी का पुष्टा ! अहो गौतम !
मादी मनन्त है ॥ ११ ॥ बारणा सयाति द्वार अहो मयवन् ! संयति का संयति रह सो कितने कासतक
रहे ! अहो गौतम ! मपय एक समय उक्कोसेण कुछ (आठ वष) कम कोह पूर्व असेमति का असेमति
रहे सो ? अहो गौतम ! ग्रीन प्रकार के कहे हैं तथया—? अनादी अनन्त अमर्य जैसे, अनादी सान्त

अपज्ववसिइ अण॥दिपुवा संपज्ववसिए ॥ तत्थण जे से सादि
ए सपज्ववसिए ते जहण्णेणं अतोमुहुं उक्कोसेण अणेतकाल अणताओ उरसपिणी
२ओ कालओ खेंचओ अवधूंपोगलपरियह वेसूण ॥ सजतासजतेण पुच्छा ?
गोयमा ! जहण्णेण अतोमुहुं उक्कोसेणं वेसूण पुव्वकोढी, जोसजएणोअसजए नो
सजयासजएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्ववसिए ॥ १२ ॥ सागारोवठत्तेण
मते ! पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंतोमुहुत्त ॥ अणागारोवठत्तेणं -
वि एव च्व ॥ १३ ॥ आहारएणं भते ! पुच्छा ? गोयमा ! आहारं दुविहे वण्णत्ते

मध्य माश्रिय, और सादी सान्ध, इस में जो सादी सान्ध है वे समय अन्यरमुद्गं उत्कृष्ट अनंत काल
मनन सर्वनी बत्सापिनी काल से और सब से कुछ कम आया पुत्रक परीवर्तन संयतासपत्ति की पुच्छा ?
अहा गौतम ! अपन्य अन्तरमुद्गं उत्कृष्ट कुछ कम जोह पूर्व, नो संयति नो अर्सयति नो सयतासयति की
पुच्छा ! अहो गौतम ! सादी प्रपथ्यवसित है ॥ १३ ॥ उत्कृष्टा उपपाग द्वार-साकार उपपागी साकार उपयोमी रहे तो
सयग्य उत्कृष्ट अन्तरमुद्गं, इसकी अनगार बहुत की भी जानना यह चारों ज्ञान माश्रिय वतना केवली
का उपपाग एक सपथ का होता है ॥ १३ ॥ उत्कृष्टा आहारक ज्ञानाहारक द्वार—अष्टा यमवच ॥

तजहा छुठमरथ आहारएय, केवलि आहारएय ॥ छुठमरथ आहारएणं भते ।
छुठमरथ आहारएति चालआ कवचिर होइ ? गोयमा ! जहणेणं खडाग भगगाहण
दुसमयउण, उक्कासेणं असखमं काल असखेजाओउसपिणी उयस्सपिणीतो कालतो
खसना अगुलरस असखज्जतिमाग ॥ केवलि आहारएण भते ! केवलि आहारते
ति कालतो कवचिर होइ ? गोयमा ! जहणेण अंतोमुहुच उक्कासण देसुणं पुब्बकी
हि ॥ अणहारण भने अणहारएसि पुब्बा ? गोयमा ! अणहारए दुविहे पण्णसे

आहारक का आहारक रहे नो कितने काल तक रह ! भरो गौतम ! आहारक वा प्रकार के बारे में
शय्या—छपस्स आहारक भैर २ कवली आहारक भरो भगवन ! छपस्स आहारक छपस्स आहारक
पने रहे सो काल मे कितने काल रह ! भरो गौतम ! अपन्य सुल्लह (छोटा) भव (२-१६ आंगुलिका)
इय मे दा समय (विप्रद गति के) कन उत्तहट अनरययत काल अमरदशत उत्सर्पनी भवमर्पनी यह
कालसे भौर क्षत्रे भंगुन क भल्लययय पाण, सप्तसे एकभंमकुक्षत्रक प्रवेससमय २१२२२ करने जितना काल
सगे चतना नानना भरो भगवन् ! केवपी आहारक आहारकने रहे तो कितने काल तक रहे ? भरो
गौतम ! अयय भन्ताभुवन् उत्तहट कुल कम पूर्व फेदी अनाहारक की पूज्या ? भरा गौतम ! भन्ताहारक
दो प्रकार के कहें वयथा—छपस्स अनाहारक भौर केवली अनाहारक भरो भगवन् ! छपस्स

पुच्छा? गोयमा! भवत्य केवलि अणाहारए दुविहे पणसे तेजहा सजोगी भवत्य केवलि अणाहारए अजोगी भवत्य केवलि अणाहारए ॥ सजोगी भवत्य केवलि अणाहारएण पुच्छा? गोयमा! अजहणमणुकोसेण तिणिसमया! अजोगी भवत्य केवलि अणाहारएण पुच्छा? गोयमा! जहणेणवि उक्कोसेणवि अतोमुहुच ॥ १४ ॥ मासएण पुच्छा? गोयमा! जहणेण एकासमय उक्कोसेण अतोमुहुच ॥ अमासएण पुच्छा? गोयमा! अमासए दुविहे पणसे तेजहा साविए अपज्जवसिए, साविए सपब्बवसिए ॥ तत्यणे

केवली समुदात आश्रय अजोगी भवत्य केवली अनाहारक की पूछा? अहो गौतम! जघन्य चत्तुष्ट अन्तरमुदूर्ते, क्योंकि छतदव गुणस्यानकी पाँच लघु अक्षर जितनी स्थिति है ॥ १४ ॥ मापककी पूछा? अहो गौतम! जघन्य एक समय भाषायोग पुद्गल ग्रहण करते घट्युपाये इस अपक्षा और चत्तुष्ट अन्तरमुदूर्ते दधन याग इतने ही काल रहता है अमापककी पूछा? अहो गौतम! अमापक दा प्रकार क कैसे

केवली समुदातमें प्रथम समय देव दुसरे समय कषाट, तीसरे समय मधम, चौथे समय लौक्या-तरे-पूर्ण, पाँचवे लोकान्तर महारत्न, छठ समय भयन साधारण, सातव समय कदाच साधारण आर आठवे समय में देव साधारण होता है इस में पहिले और आठवे समयमें उद्धारिक भोग होता है, दुसरे छठ और सातवे समय में औदारिक भोग भोग होता है, और तीसरे चौथे पाँचवे समय में वामिल योग होता है तब अनाहारक हाना है

ज से सादिष्ट सपञ्चसिष्ट से जहणें अतोमुहुत्त उकासण श्रणप्ति काला । ५। परिचें
भेत ! पुच्छा ? गायमा ! परित्त दुविहे पणसे तजहा-काय परिसेय, ससार परिसेय ॥
काय परित्तण भता पुच्छा ? गायमा ! पुद्वि कालो असखजा उसण्णिणि आस
पिणीओ ससार परित्तें पुच्छा ? गायमा ! जहणें अतोमुहुत्त उकासेण अर्णत
कालें जाव अन्न पुगल परियट्ट दसूण ॥ अरित्तें पुच्छा ? गायमा ! अरित्त
दुविह पणत्त तजहा-काय अरित्तय ससार अपरित्तण पुच्छा ?

हे तथया—१ सादिष्ट अ-१, (सिद्ध) और सादी साम्, इस में जो अदि सहित और अन्तसाहित है
व अपय अन्तरमुद्गर्त वत्कुष्ट धनस्पति काल ॥ १५ ॥ सोलसा परित्त द्वार भद्रा भगवद् ! परित्त का
परित्त कितने काल रह ! अहा गीतम ! परित्त दो प्रकार के कहे हैं, तथया—काया परित्त सरीर
आश्रय और २ ससार परित्त सम्यक्स्य प्राप्त आश्रय कायपरित्त की पुच्छा ? अहो गीतम ! पृथ्वी
कृपा का काय असंख्यात अवतर्पणी दशमपनी ससार परित्त की पुच्छा ! अपम्य अन्तरमुद्गर्त वत्कुष्ट
धर्म्म काय पादम् कुछ कय आया पुट्टम परावर्तन अरित्त की पुच्छा ! अहो गीतम ! अपरित्त दा
प्रकार क कहे हैं तथया—३ काया अपरित्त अर्णत काया क जीव और ससार अपरित्त सम्यक्स्य दो
भी ससार परित्त नहीं किया काया अपरित्त की पुच्छा ? अहा गीतम ! अपम्य अन्तरमुद्गर्त वत्कुष्ट

जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण उक्कोसेण धणरमति कालो ॥ ससार अपारितेण पुच्छा ? गीयमा !
 ससार अपारित दुत्तिहे पणसे सजहा अणदिए अपज्जवसिए अणादिए सपज्जवसिए गोपरित्ते
 णोअपरित्तेण पुच्छा ? गायमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १६ ॥ पज्जत्तएण पुच्छा ? गीयमा !
 जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण सागरोवम सत्तपुहुत्त सातिरग अपज्जत्तएण पुच्छा ?
 गायमा ! जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अतामुहुत्त ॥ णोपज्जत्त णोअपज्जत्तएण पुच्छा ?
 गायमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १७ ॥ सुहमण भते ! सुहमति पुच्छा ? गीयमा !
 जहण्णण अतोमुहुत्त उक्कोसेण पुढवि कालो ॥ वादरेण पुच्छा ? गीयमा ! जहण्णेण

वनस्पति का काल ससार अपारित की पूछा ! अहा गौतम ! ससार अपारित की प्रकार के कह है
 तप्या-१ अनादि अनन्त अमन्य अनादि सन्न भव्य, नोपरित नोअपरित नापरितापरित की पूछा ?
 अहा गौतम ! गादी अपर्यवमित ॥ १६ ॥ सत्तपुहुत्त पयासा द्रव्यो भगवन् ! पयासा का पयासा रह
 ता विमन काल तक रह ? अहा गौतम ! जयय अन्तरमुहूर्त उक्कोसेण प्रत्यक्ष सो (१६०) कुछ अधिक मागपम
 इन काल तक अपर्यवस प्रत्यासे पर नहीं अयासा की पूछा ! अहा गौतम ! अयन्य वरकट्ट
 अन्तरमुहूर्त नो पयासा ना अपर्यासा की पूछा ? सादि अन्तरे ॥ १७ ॥ सुहम की पूछा ? अहा
 गौतम ! जयय अन्तरमुहूर्त उक्कोसेण पुच्छीयाया भितना काल, वादर की पूछा ? जयय अन्तरमुहूर्त

अतोमुहुच, उक्तासेण असखेज्ज काल जाव खेचओ अंगुलस्स असंखेज्जति भारी ॥
 णो सुहुमे णो धावेरेण पुच्छा ? सादिए अपज्जवसिए ॥ १८ ॥ सण्णीण पुच्छा ?
 गोयमा ! जहण्णण अंतोमुहुच उक्तासेण सागरोवम सतपुहुच्च सातिरेग ॥ असण्णीण
 पुच्छा ? गायमा ! जहण्णेण अतोमुहुच, उक्तासेण वणस्सइ कालो ॥ णोसण्णी
 णोअसण्णीण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए अपज्जवसिए ॥ १९ ॥ भवसिद्धिएण पुच्छा ?
 गोयमा ! अणादिए सपज्जवसिए ॥ अभवसिद्धिएण पुच्छा ? गोयमा ! अणादिए
 अपज्जवसिए ॥ णोभवसिद्धियेणोअभवसिद्धिएण पुच्छा ? गोयमा ! सादिए

वत्कष्ट असंख्यात काल, क्षेत्र से अंगुल के असंख्यातवें माप क्षेत्र में आकाश प्रदेश जिसना काष्ठ नो
 मूल्य नो वादर की पृच्छा ? अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित है ॥ १८ ॥ सद्दीकी पृच्छा ? अहो गौतम !
 जपन्य अन्तरमुहूत वत्कष्ट प्रत्येक सो सागर असद्दी की पृच्छा ! अहो गौतम ! अधन्य अन्तरमुहूत
 वत्कष्ट वनस्पति का काल, नो सद्दी नो असद्दी की पृच्छा ! अहो गौतम ! सादि अपर्यवसित है ॥ १९ ॥
 योगिना मन्य द्वार-मन्य सिद्धिक की पृच्छा ? अहो गौतम ! अनादि सासत है क्यों कि मुक्ति नावेगा
 अपम्य की पृच्छा ! अहो गौतम ! अनादि अनन्त है नो मध्य सिद्धिक नो अमध्य सिद्धिक की

अपज्ववसिपु ॥ २० ॥ धम्मत्थिकाएण पुच्छा ? गोयमा ! सत्त्वद्धं, एव जाव
 अन्नासमए ॥ २१ ॥ चरिमेण पुच्छा ? गोयमा ! अणादिए सपज्ववसिपु ॥ अचरिमेण
 मते ! कालभ्रे केवचिर होइ ? गोयमा ! अचरिमे दुविहे पण्णसे तजहा
 अणादिपुव्वा अपज्ववसिपु सादिपुव्वा अपज्ववसिपु ॥ २२ ॥ इति
 पञ्चवणा भगवइए कार्यावृत्ती अट्टारसम एव समत्त ॥ १८ ॥

पुच्छा ! अहो गौतम ! सादि अनन्त है ॥ २० ॥ भोस्विकाय द्वार-धर्मीस्विकाया धर्मीस्विकायाप्ते रह तो कितने
 काल रहे ! अहो गौतम ! गत काल में भी, वर्तमान में और अनगत में अन्त काल रहेगी एस ही
 अपमास्विकाया, भाकाद्यास्विकाया और अद्धासमय का कहना ॥ २१ ॥ बचीसत्त्व चरिम द्वार—अहो
 मगइन् ! चरिम का चरिम रह वा कितने काल रहे ! अहो गौतम ! चरिम अनादि सान्त्त है मोक्ष
 जोरेंग अनरिम की पुच्छा ! अहो गौतम ! अचरिम दो प्रकार क कहें हैं तथया—अनादि अनन्त
 मपप्प और भादि साइठ और भंन रहित सो सिद्ध मगइन् इति पञ्चवणा भगवती का कार्यावृत्ति
 नामक अठारहवां

॥ एकोनविंशतितमम् दृष्टि पदम् ॥

जीवाण भत' किं सम्महिट्टी, मिच्छादिट्टी, सम्ममिच्छादिट्टी? गोयमा। जीवा सम्महिट्टीवि,
मिच्छादिट्टीवि सम्ममिच्छादिट्टीवि ॥ एव जेरइयावि असुरकुमारावि एव चत्र जाव
धणियकुमारा । पुढनि काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुढविकाइया गो सम्महिट्टी,
मिच्छादिट्टी, जा सम्ममिच्छादिट्टी एव जाव वणप्फइ काइया ॥ वेदिया सम्महिट्टीवि
मिच्छादिट्टीणि ना सम्ममिच्छादिट्टी ॥ एव जाव चठरिदिया ॥ पचिदिय तिरिक्खजोणिया,
मणुस्सो वाणमत्तर, जोइसिय वेमाणिया सम्महिट्टीवि मिच्छादिट्टीवि सम्ममिच्छादिट्टीवि ॥
होएअ कहत है—अओ भगवन् ! जीव सम्यक् हए है कि मिथ्या हए है कि सममिथ्या हए है ? अ
अहा गौतम ! समुत्तय मीव सपहए मी है मिथ्यात हए मी है और सममिथ्या हए मी है अव
मौवीम दहक का कहत है सत्र प्रश्नोत्तर जानना नरक में और दसो भवमपत्ति में सीनों ही हएप है
है गमहए मिथ्या हए विश्र हए पृथक्यादि पांचा स्यावर सपहए नहीं है, तेसे ही मिश्र हएमी नहीं
है फक्त एहदिध्यात्व हए है सीनों विछान्निगमें सपहए मी है मपर्याप्त अवस्था आश्रय पिथ्यात्व हए मी
है परन्तु समोपपत्ता हए नहीं है तियेसु वेवेन्द्रिय पनुत्प पाणवन्तर ज्योतिषी और वैमानीक दस १२
दशमोक्त तक सपहए मी है विद्यवार हए मी है और सममिथ्या हए मी है मबरीवेग में सपहए

गेविज्वविमाणिया पुच्छा? गोयमा! सम्माहिट्टीवि, मिच्छाहिट्टीवि नोत्तमामिच्छाहिट्टी ॥
 अणुत्तरोत्तमार्हपाण पुच्छा? गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा!
 सम्मामिच्छाहिट्टी ॥ सिद्धाण पुच्छा? गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा! गोयमा!
 सम्मामिच्छाहिट्टी ॥ ॥ इती पण्ययणा भगवद्देव एगुणवत्तमं पद सम्मच ॥ १९ ॥

और विष्णुत्तम ह्यो दा ह्यो पानी है पांचो अनुत्तर रिमात्त के देवता एरु सव ह्यो ही है विष्णुत्तम
 ह्यो मिश्र ह्यो नहीं है और भिन्न भगवत्तम! एरु सम्मच ह्यो है, मिश्रयात्त ह्यो मिश्र ह्यो नहीं है
 इति पञ्चाना भगवत्तम क। उम्मीसवा पद समाप्तम् ॥ १० ॥

+



* विशतितम क्रिया पदम् *

णेरइय अतकिरिया अणतर एगसमय ठुन्वहा ॥ तित्यगर धक्की बलदेव, वासुदेव
 मडलिय रयणाय ॥ १ ॥ जीवण भत । अतकिरिया करेज्वा ? गोयमा ! अत्येगइ
 करज्वा अत्येगइए णो करेज्वा ॥ एव णेरइए जाव वेभाणिए ॥ णेरइएण भते !
 णरइएसु अतकिरिय करज्वा ? गोयमा ! णो इणट्टु समट्टु ॥ णेरइएण भते ! अमुरकुमारसु
 अतकिरिय करेज्वा ? गोयमा ! णो इणट्टु समट्टु ॥ एव जाव वेभाणिएणु णेर मणससु अत
 किरिय करेज्वा ? गोयमा ! अत्येगइए करेज्वा अत्येगइए णो करेज्वा ॥ एव असुर
 कुमारे जाव वेभाणिए ॥ एव भेते चेतवीसं दढका भवति ॥ १ ॥ णेरइयांण भते ! किं

अब बीसवा भन्तक्रिया नामक पद कहते हैं द्वार के नाम—१ बीवीस देवक की अंत क्रिया का २
 भनन्तर परम्परा अंतक्रिया का, ३ एक समयमें कितने अंतक्रिया करे, ४ तियेकर होने का, ५ चक्रवर्ती
 होने का, ६ वासुदेव होने का, ७ वासुदेव होने का, ८ अद्वैतिक राजा का, ९ और चक्रवर्ती के १०
 रसन का ॥ १ ॥ अहो मगबन् ! भीव अन्तक्रिया करते हैं क्या ? हाँ गौतम ! कितनेक जीव अंतक्रिया
 करने हैं कितनेक जीव नहीं भी करते हैं ऐसे ही जरूर दो अन्तक्रिया पावन् जोभीय देवक तक का

अणतरागया अतकिरिय करेति, परंपरगया अतकिरिय करेति ? गोयमा ! अणतरगयात्रि
 अतकिरिया करेति परंपरगयात्रि अतकिरिय करेति ॥ एव रयणप्यमापुढविषेरइयात्रि जाव
 पकप्पभापुट्ठि नेरइया ॥ धूमप्यमा पुढवि नेरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! णो अणंत
 रागया अतकिरिया करेति, परंपरगया अतकिरिय करेति ॥ एव जाव अहे सच्चमा
 पुढवि नेरइया ॥ असुरकुमारा जाव थणिय कुमार, पढवि आठ वणरसति अणतरग
 कहना अहो भगवन् ! नरीया नरक में अंतक्रिया करता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ याग्य नहीं
 अणतु नरक में नेरीया अन्तक्रिया नहीं करता है अहो भगवन् ! नेरीया असुरकुमार में अन्तक्रिया
 करता है क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ याग्य नहीं, यों यावत् वैयानिक पर्यंत कहना, जिस में इतना
 विभिन्न मरीये मनुष्य में उत्पन्न होकर कितनेक अंतक्रिया करते हैं ऐसे ही असुरकुमार का भी चौबीस
 ईडक पर कहना और ऐसेही यावत् वैयानिक का भी कहना अहो भगवन् ! नरेय अन्तर रहित मनुष्यके
 मद का प्राप्त हो अन्तक्रिया कर कि परम्परा से मनुष्य के भय का प्राप्त हो अंतक्रिया करते हैं ! अहो
 गौतम ! अन्तर (अन्तर रहित नरक में निकल मनुष्य प्रय में आकर भी) अन्तक्रिया करते हैं और
 परम्परा (बीच में दूसरे भयकर फिर मनुष्य हो कर भी) अन्तक्रिया करते हैं इस प्रकार रत्त
 ममा नारकी के नरीये भी अनन्तर और परम्परा मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तक्रिया करते हैं
 ऐसे ही यावत् चौबी पक्रममा पृथ्वी पर्यन्त कहना धूमपमा पृथ्वी की पुच्छा ? अहो गौतम !

तांश्च अंतकिरिय करैति परपरागयावि अंतकिरिय करैति ॥ तेऊ वाऊ वेइदिय तेइदिय चठरिदिय जो अणसरागया अतकिरिया पकरैति परपरागया अतकिरिय पकरैति ॥ सेसा अणसरागयावि अंतकिरिय करैति, परपरागयावि अतकिरिय पकरैति ॥ २ ॥ अणसरागयाण भते ! जरइया एगसमएण केवतिया अतकिरिय पकरैति ?

गोयसा ! जहण्णण एगोवा हावा तिण्णिवा उक्कोसेण एस ॥ रयणण्यभा पुठवि
पुव्वभा के नेरीये अनन्तर मनुष्य में बनाय हाकर अम्माकिया नहीं करते हैं परतु परम्परा से उत्पन्न
क्रियेक अंतर्क्रिया करत हैं इस ही प्रकार नीच साक्षी पृच्छी पर्यंत कहना असुर कुपार यावन् स्वा
कुमार, पृच्छी, पानी, वनस्पति काया, अनन्तर मनुष्य में उत्पन्न हाकर मी अन्तर्क्रिया करत हैं
परम्परा उत्पन्न हाकर मी अन्तर्क्रिया करते हैं तब, बापु बेइद्रिय तेइद्रिय चौरिद्रिय यह अन्तर मनुष्य
बनाय हुइ अम्माकिया नहीं करते हैं परतु परम्परामत अन्तर्क्रिया करते हैं इन सिवाय और सब बंध
नीच अन्तरमत और परम्परामत मनुष्य में उत्पन्न हो अन्तर्क्रिया कर सकत है ॥ २ ॥ अहो माग
नारकी से अनंतर उत्पन्न हुइ मनुष्य में एक समय में कितन मीच अन्तर्क्रिया करते हैं (पोल्ल जाते
अहो गौतम ! अपम्य एक या चीन सत्कुट्ट दस मीच अन्तर्क्रिया करते हैं ऐसे ही दस मीच
ममय वे भ्रमयभा के भिक्खु पोल्ल जाते हैं यावत तीसरी पाठुरु प्रया तक एउ ही प्रकार कहना

गैरइयावि एव धेव जाय वालुयप्पभापुढाणिरइया ॥ अणतरागयाण भते ! पक्कप
 मापुढविणेरइया एगसमएण केवतिया अतकिरियकरेति ? गोयमा !
 जहण्णेण एक्काया दोवा तिन्निवा उक्कासणं चत्तारि ॥ अणतरागयाण भते ! असुरकुमारा
 एगसमएण कवइया अतकिरिय पकरेति ? गोयमा ! जहण्णेण एक्को वा दोवा तिन्णि
 वा उक्कोसण दस ॥ अणतरागयाओण भते ! असुरकुमारीओ एकसमएण केवतियाओ
 अतकिरिय पकरेति ? गोयमा ! जहण्णेण एक्कोवा दोवा तिन्निवा उक्कोसेणं पच ॥
 एव जहा असुरकुमारा सदेविया तहा जाव थणियकुमारावि ॥ अणतरागयाणं भते !
 पुढविकाइयाणं एगसमएण केवइय अतकिरिय पकरेति ? गोयमा ! जहण्णेण एगोवा
 ममा की पृच्छा ! भरो गोतम ! नघय एक दा हीन उत्तए चार अन्तक्रिया करव है असुरकुमार
 की पृच्छा ! भरो गोतम ! जघन्य एक दो हीन उत्तए दइ असुरकुमारेका देवी नघय एक दो
 हीन उत्तए पाच अन्तक्रिया कर, देस ही यावत् स्यन्ति कुमार पर्यंत करना अहो भगवन् ! अनन्तरगत
 पृथ्वी काया एक सप्प में कितने भवक्रिया करे ? अहो गोतम ! नघय एक दो हीन, उत्तए चार,
 एते ही भवकाय के भी चार, वनस्याति काय क निकसे छ सिद्ध होने, पक्कन्दिय विधिच के निकस दश

और ६ मपीनाइक इस छ मार्गों में से किस मार्गमें सिद्ध होवे और ८ अस्या षडुत्सुद्धार इन ८ द्वार में से सिद्ध क हो भेद करे हैं तथया—^१ अन्तर सिद्ध हो किन सिद्ध को सत्यय दुअ एक समय दुआ है अथवा एक ही वक्त में दश बीसादि सिद्ध हो कर फिर अन्तर पडा, और परम्परा सिद्ध हो जिन सिद्ध को सत्यय दुअ दो समय में अधिक काल हुआ है इस में मे परम्परा सिद्ध के ^२ ३ द्वार कहते हैं—^३ सत्र द्वार—ऊंची नीची तिरछी दिशा में सिद्ध होवे सो, २ काल द्वार—मुपमादि छे आरं में से जिस आरे में सिद्ध होवे, ५, ३ गाने द्वार—नरकादि गति के निकल सिद्ध होवे सो, ४ पय द्वार—स्त्री आदि वेद से सिद्ध होवे, ५ सीध द्वार, ६ छिंग द्वार, ७ चारित्र्य द्वार, ८ मत्यक पुड द्वार, ९ ज्ञान द्वार, १० अदगाहना द्वार, ११ चतुष्टु द्वार, १२ पिरह द्वार, १३ अंतर द्वार, १४ अनुसमय द्वार, १५ सिद्ध सत्सा द्वार और १६ अस्याबहुत द्वार फोहले करे आठ द्वार पर यह १६ द्वार तर्नेगे समय छष पद की मरुमना के मूल द्वार पर सयादि १६ द्वार कहत हैं—^१ सय द्वार—अदाइ द्वीप क पशुरे कर्म मूवी क सत्र में, ऊंची दिशा में पंढकादि वन में, नीची दिशा में मदनपातिके भवनमें, छवण कालोदधी दो समुद्रों में, इन सत्र में से सिद्ध होवे हैं २ काळ द्वार—अवसरिणी के दतले तीसर आरे में, संपूर्ण चौथे आरे में और बैठत पाँचवे आर में सिद्ध रहते हैं और उत्तरपिणी काल में ठारत दूमर आर ग जन्म हु ^२ तारे आरे में सिद्ध होवे, सम्पूर्ण तीमरे आरे में, और बैठत चौथ आर में (तीसर आरे में नीन ^३ न-पग हैं, उस ही आरे में मोस नाते हैं इस ही आरे में २० दीर्घि-१ दान नैस आते हैं और

पाये आरे में ता एक चरम तीर्थकर प्राप्त जात है) १ गति द्वार—सिद्ध हो फक्त एक मनुष्यगति में सहा
 हाव है परंतु प्रथम सोधनकरक के पूषनी पानी यनस्यति विषय पवित्र्य मनुष्य और चारों जातिके
 दवताके त्रीणों मनुष्य होकर सिद्ध हाव है परंतु अन्य स्नानकर्त्री भवेद्वार-वर्तमान फासकी अपेक्षा अपगतवदा
 वेदका तप करन वास्वा सिद्ध हाव और अनुमते आश्रय तीनों यद बाल सिद्ध होवे ५ तीर्थ द्वार
 तीर्थकर हात तीर्थ प्रवर्तन और तीर्थकर मोक्ष गय तीर्थव्यवच्छेद पुंवे दीमा वक्त सिद्ध हात है १ ३ क्षिण
 द्वार—अग्न्य म हो स्वाभिगो अर्थात्संगी गहकिमी तीनों क्षिण में सिद्ध हात है और भाव से तो एक
 स्वलिग (जिन क्षिण) में ही सिद्ध हात है ७ चारिष द्वार—वर्तमान में ता एक सायिक यथाख्यात चारिषसे
 सिद्ध हावे अनुमते आश्रय कोई नामायिक मुरस सम्पराय यथाख्यात इन तीन चारिष का समुच्च
 सीध, काइ नामायिक छंदोपस्थापनीय मुरससम्पराय, इन चार चारिष को स्वस्थ कर सिद्ध हाव तथा कोई
 नामायिक परिहारविमुद्ध मुरसमभ्यराय यथारन्यान इन चार चारिष को स्वस्थ कर सिद्ध हावे और
 कोई नामायिक छंदोपस्थापनीय परिहारविमुद्ध मुरस सम्पराय यथाख्यात पांचों चारिष को स्वर्धकर सिद्ध
 हाव ८ बुद्ध द्वार—स्वयं बुद्ध तस्यक बुद्ध भार बुद्ध पाधित तीनों सिद्ध होव ९ ज्ञान द्वार—यत्तमान में
 एक कथल ज्ञान में सिद्ध होते हैं और पूर्णानुभव आश्रय कोई यति श्रुति और केवल इन तीन ज्ञान को
 नासत्तर सीध, कोई यति श्रुति प्रकायि केवल ज्ञान कर सिद्ध हावे, कोई यति श्रुति यनः पर्यव केवल ज्ञान
 व्यर्न कर सिद्ध हावे और कोई यति श्रुति प्रकायि यनः पर्यव केवल इन तीनों ही ज्ञान स्वर्ध कर सिद्ध

हाव १० प्रगाहना द्वार—नयन्य दो राय अयगाहना वाले सिद्ध होवे उत्कृष्ट ५०० पनुष्य
 दो अयगाहना वाले सिद्ध होवे ११ उत्कृष्ट द्वार—कितनक सम्पन्न के पदमाइ अनंत
 कास (कुल नम आशा पुत्रल परार्थन) समार परिश्रमण ॥ सिद्ध होव कितनेक पदमाइ हो
 भमत्पण काल बाद सिद्ध हाव, कितनेक पदमाइ हो सख्यात काल बाद सिद्ध होवे १२ विरह द्वार—
 सिद्ध हानका विरह नयन्य एक समय का पद उत्कृष्ट पहीनिका पद, १३ अंतर द्वार १४ अणुसमय द्वार—अयन्य
 द्वा समय तक निरंतर भिद्ध हाव उत्कृष्ट आन रामप तद निरंतर सिद्ध हाव, १५ संख्या द्वार—एक
 समय में नएय एक ही भिद्ध हाव उत्कृष्ट १८ सिद्ध हाव १६ अत्यावहुत द्वार—एक समय में एक
 द्वा सिद्ध द्वार १ धाव उन से द्वा धीन आदि सिद्ध हुव न मख्यातगने इत्यादि (अत्यावहुत विस्तर स
 भान करे) इति सप्तद प्रकाना का प्रथम द्वार अग दूसरा प्रमाण द्वार कहते हैं—जिम पर उक्त
 १७ द्वार उताव है—१ तप द्वार—उक्त लोक ५० आदिक पर धार सिद्ध हाव, विरह लोक में नदी
 भाति में तीन सिद्ध हाव, मनु में द्वा सिद्ध हाव, एकेक विमय में बीस २ सिद्ध होव तो भी १०८ स अधिक
 सिद्ध नहीं हाव प्रत्येक ८ ज्यभानि क लग में १०८ सिद्ध होवे, पद्मगवन में दो सिद्ध हावे, तील अकर्म
 नाम क लग में अकर्म २ दृष्ट २ भिद्ध होव (यह साहाग्न आधिय मानना) २ काल द्वार—हाथमान
 (पदव) काल में और वधमान (पदव) काउ में तीसर चौथे आरे में अलग २ एक समय में १०८
 सिद्ध हाव, हाथमान कास के पांचवे आर में २० सिद्ध होवे, शेष सात आरे में दृष्ट २ सिद्ध हावे (सारन

प्राप्तिप) प्रयात् हायमान काल के पहिले आरे में १० दूसरे आरे में १०, तृतीय आरे में १०, चौथे आरे में १०, पाँचवें में १०, छठवें में १०, और छठवें १० गति द्वार-रत्नप्रभा चक्र प्रमा
 बालुहप्रमा के निकल १० सिद्ध होवे, एक प्रमा के निकले ४ सिद्ध होवे, समुच्चय तिर्यग गति के निकले १० सिद्ध होवे
 सभी पंचन्द्रिय के निकल १० सिद्ध होवे, तिर्यचनी के भी १० सिद्ध होवे, पृथ्वी पानी के निकले
 चार १० सिद्ध होवे, वनस्पति के निकले ६ सिद्ध होवे, मनुष्य के मनुष्य हो २० सिद्ध होवे, पुरुष के आय
 १० सिद्ध होवे, स्त्री के आय २० सिद्ध होवे, समुच्चय देवगति के आय १०८ सिद्ध होवे भवर्षाति के
 आय १० सिद्ध होवे, भुवनपति के देवी के ५ सिद्ध होवे, व्यन्तर के आय १० सिद्ध होवे, व्यन्तरनी के
 ५ सिद्ध होवे, ज्योतिषी के १० सिद्ध होवे, ज्योतिषीनी के २०, वैमानिक के १०८, वैमानिक की देवी
 के २० ॥ ६ वदद्वार—एक समय में स्त्री के २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे, नपुंसक १० सिद्ध
 होवे ८ तीर्थ द्वार—तीर्थकर एक समय में ६ सिद्ध होवे, स्त्री तीर्थकर एक समय में २ सिद्ध होवे, स्त्र्यंबुद्धो
 ६ सिद्ध, बुद्ध बोधित १०८ सिद्ध होवे, अतीर्थकर १०८ सिद्ध होवे ९ क्षिगाद्वार—गृहस्थ ४ सिद्ध
 होवे, अन्यर्द्धिनी १० सिद्ध होवे, सखिनी १० सिद्ध होवे, ७ चारिषद्वार—सायायिक मूख्य सम्पराय यवा
 रत्नान इन तीन चारिष की स्पष्टनेवास १० सिद्ध होवे, सामायिक, परिहार विमुद्ध मूख्य सम्पराय वे ययासयाव इन
 नार चारिष के स्पष्ट १० सिद्ध होवे, सामायिक छेदोप स्थापनीय परिहार विमुद्ध मूख्य सम्पराय और
 ययासयाव इन चारिष की स्पष्टने बाँके भी १० सिद्ध होवे ८ चर द्वार—बुद्ध बोधित

श्री २० सिद्ध होवे, पुरुष १०८ सिद्ध होवे नर्पुसक १० सिद्ध होवे, साधवी के प्रवि
 यापे पुरुष २० सिद्ध होवे, स्त्री भी २० सिद्ध होवे नर्पुसक १० सिद्ध होवे, ९ ज्ञानद्वार-पूर्व स्पर्शन की
 अपसा प्रति ज्ञान केवल ज्ञान के स्पष्टक ६ सिद्ध होवे, प्रति श्रुति मन पर्यव ज्ञान से केवल
 ज्ञान के स्पष्टक १० सिद्ध होवे प्रति श्रुति अवाचि केवल ज्ञान क स्पर्शक १०८ सिद्ध होवे, और प्रति
 श्रुति अवाचि मन पर्यव केवल ज्ञान के स्पष्टक भी १०८ सिद्ध होवे १० अवगाहना द्वार—वत्कृष्ट
 अवगाहना क २ सिद्ध होवे, मध्यम अवगाहना क १०८ सिद्ध होवे, अथन्य अवगाहना के ४ सिद्ध होवे
 ११ वत्कृष्ट द्वार—सम्पत्त से बहवाइ हो अनन्त काल सत्तार परिश्रमन करन वाले एक समय में १०८
 सिद्ध होवे, अस्तरव्याप्त कान्य परिश्रमन करन वाल १० सिद्ध होवे और सम्पत्त के बहवाइ नहीं हुआ प्रेम
 एक समय में ६ सिद्ध होवे १२ अन्तर द्वार—एक समय अनेक सिद्ध भी होवे यावत् छ महीने के अन्तर
 स भी एक तथा अनक सिद्ध होवे १३ अनु समय द्वार—एक हो तीन चार पांच छ सात और आठ
 समय तक लगालग सिद्ध होते हैं—जिस में प्रथम समय अथवा एक दो तीन वत्कृष्ट १२ सिद्ध होवे वे
 आठ समय तक निरन्तर सिद्ध होवे नववे समय नियमा से अन्तर पड़े, फिर ११ स ६८ पर्यन्त सिद्ध होवे
 तो सात समय तक सिद्ध होवे परन्तु आठवें समय में नियमा से अन्तर पड़, फिर ४२ से ६० पर्यन्त छ समय
 पर्यन्त सिद्ध होवे नवम अन्तर पड़े, फिर ४१ से ७० पर्यन्त पांच समय लग सिद्ध होवे छठे समय
 अन्तर पड़, ७१ स ८६ पर्यन्त चार समय लग सिद्ध होवे पांच वे समय अन्तर पड़े, ८७ से ९६ पर्यन्त

धीन समय तक सिद्ध होवे चौथे समय अर्थात् पंचे, १७ से १०२ पंचेन्य दो समय तक सिद्ध होवे फिर तीसरे समय अन्तर पंच और १०३ से १०८ तक एक समय में सिद्ध होवे फिर दूसरे समय में अन्तर पंच यही यह अनुमय और अन्तर द्वार सामिल ही कहे हैं सरुपा द्वार—पूर्वोक्त प्रकार, अन्यायदुस्व आगे कहेग इति दूसरा प्रमाण द्वार समाप्त हुआ ॥ २ ॥ तीसरे क्षेत्र द्वार पर सुआदि १६ द्वार बताते हैं—१ क्षेत्र द्वार—१२ कर्मयुगी क ३० अकथ युगी ५६ अन्तरद्वार इन अङ्काइ दीप क १०१ क्षेत्र से तथा दा समुद्र में न पाला जात है मय स्थान से नहीं जलते हैं इस पर एक ही द्वार लागू होता है, बाकी द्वार लागू नहीं होते हैं इति तीसरा द्वार समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ चौथा स्वर्णन द्वार पर १६ द्वार—जा, अ त सिद्ध आगे हुए हैं वे सब जीव क प्रदान कर रपे हैं वे असख्यातगुने एक सिद्ध की अवगाहना में प्रगत सिद्ध स्वर्ण कर रहे हैं और द्वार इस में नहीं लगते हैं ॥ ४ ॥ पंचवा काल द्वार कहत है—उन पर सुआदि १६ द्वार बताते हैं—क्षेत्र द्वार—१५ कर्मयुगी के क्षेत्र में उत्कृष्ट १०८ सिद्ध होवे तब आठ समय तक निरंतर सिद्ध हाव, हरियासादि क्षेत्र में अघोषोक्त में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, बामादि, ऊर्ध्व साक में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, मूपयसूतम और मूसम प्रार में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे मुसमदुसम और दुसम में दुसम समय में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, दुसमादुसम आगे में चार समय तक सिद्ध होवे अरसापिणी के वर्णमान काल में दुस मादुसम में और दुसम में चार समय तक निरंतर सिद्ध होवे, पञ्च ही दुसम में भी जानना, दुसमादुसम

और सुमय नुमय में आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, सुसम और सुसमसुसम में धार भव्य पर्यंत निरंतर सिद्ध होवे हैं २ गति द्वार-द्वय गति क आये आठ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, अन्य तीनो गति के आये अलग २ चार २ समय पर्यंत निरंतर सिद्ध होवे १ बद्ध द्वार—पञ्चाङ्कृत वेदी पुरुष ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे स्त्री यदी नपुंसक बर्दी अलग २ चार २ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, पुरुष पर के पुरुष हाव यह ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, बाकी स्त्री आदि क ८ भाग [१ स्त्री पर स्त्री, २ स्त्री पर पुरुष, ३ स्त्री पर नपुंसक ४ पुरुष पर स्त्री, ५ पुरुष पर नपुंसक, ६ नपुंसक पर पुरुष, ७ नपुंसक पर स्त्री और ८ नपुंसक पर नपुंसक] चार २ समय तक निरंतर सिद्ध होवे ५ तीर्थ द्वार—तीर्थ द्वार क नीध में ८ समय तक निरंतर सिद्ध होवे, तीर्थ द्वार दा समय तक निरंतर सिद्ध होवे, ६ द्वैत द्वार—स्त्रीलिंगी ८ समय तक भिन्न होवे, अन्य लिंगी चार समय तक सिद्ध होवे, शुद्ध लिंगी दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे ७ चारित्र द्वार—अज्ञ भाग में पश्चिम विमुख चारित्र आव वे चार समय तक सिद्ध होवे आर निम भाग में पश्चिम विमुख चारित्र न आव वे आठ समय तक सिद्ध होवे ८ बुद्ध द्वार आचार्यादि क प्रवर्तन आठ समय तक भिन्न होवे साधनी ४ प्रतिपत्ति स्त्री पुरुष नपुंसक चार २ समय तक भिन्न होवे स्वयंभूद २ समय तक सिद्ध होवे, ८ ज्ञान द्वार—प्रति प्रति से कबली हा दो समय तक निरंतर सिद्ध होवे, प्रति प्रति पनःपय स केवली हा चार समय तक भिन्न होवे, प्रति प्रति प्रवर्ति से केवली हा आठ समय तक सिद्ध होवे, और प्रति प्रति अत्रि पन गयवे से कबली हुवे भी आठ समय तक

निरतर सिद्ध होवे, १० अथवाहना शर-वत्कुष्ट अथवाहना के दो समय तक सिद्ध होवे, मध्यम अथवाहना के आठ समय तक सिद्ध होवे, अथवाहना के दो समय तक सिद्ध होवे, ११ वत्कुष्ट द्वार समयकत् के अपटवाह दो समय तक सिद्ध होवे, संस्थात काल के पहे चार समय तक सिद्ध होवे, असंस्थात काल के पट भी चार समय तक सिद्ध होवे, अन्त काल पर आठ समय तक सिद्ध होवे, आगे के अन्तरादि चार द्वारों का यहाँ समय नहीं है इति पाँचवा द्वार ४ छठ सिद्धी मयन अन्तर द्वार पर १३ द्वार—१ सत्र द्वार—समुचय अठाइ द्वीप आश्रय विरह काल नयन्य एक समय वत्कुष्ट ६ गतिने, समुचय जनुद्वीप पातकी स्रष्ट में जनुद्वीप की भगविदेव में मिद गति मयन का वत्कुष्ट विरह पृथक्त्व वर्ष का, पुष्टवर्ष द्वीप में और पुरष्करार्थ के भगविदेव स्रष्ट में एक वर्ष धामेरा का विरह, ६ मरव सत्र में जन्म आश्रय १८ कोटा कोटी सागर में कुष्ठकम का [वत्सर्पनी का चौथा आरा दो कोटा कोट सागर कुष्ठकम, पाँचवा तीन कोटा काट समार का, छठा चार कोटा कोट सागर का, यह ९ काटा कोट सागर हुंमे और सर्पनी पहिला चार कोटा कोट सागर, दुसरा तीन काटा कोट सागर, तीसरा दो कोटा कोट सागर में कुष्ठकम बाद तीर्थकर हो मुक्ती माग ब्रम्हते हैं यों १८ कोटा कोट सागर में कुष्ठ कय का अन्तर होलाह] साहरन आश्रय जयन्य एक समय वत्कुष्ट मध्यमात मरुअ वर्ष का अन्तर २ गतिने द्वार-नरक गतिने के आये सिद्ध होने का अन्तर पहे ता वत्कुष्ट पृथक्त्व सत्र वर्ष का, तिर्यच के आये का पृथक्त्व सा वर्ष का, तिर्यचनी का सोपर्म ईमान देनभाक के देवता छोड पाकी देवता, मनुष्यनीका वत्कुष्ट एकवर्ष क्षात्रराका स्वयं पुत्रका

और बुद्ध बोधित का वत्सुष्टु सख्यात इमार वर्ष का, पृच्छी पानी बनस्थति सौषर्ष ईशान देवलोक्त का, परिच्छे के दो नरक का इन क निकल मिद होने का अन्तर पदे सो वत्सुष्टु मख्यात इमार वर्ष का, और सर्व स्थान अथय एक समय का जानना ४ वेद शार—पुरुष पर कर पुरुष हो मिद होव, जिसका अन्तर पदे सो वत्सुष्टु एक वष का, द्वेष ८ मांग का अन्तर पदे सो सख्यात इमार वर्ष का, मत्स्येक बुद्ध का । सख्यात इमार वर्ष का, पुरुष वेद का एक वर्ष का, श्री बद्ध नृपसक वेद का अलग २ वत्सुष्टु संख्यात वर्ष का, सर्व स्थान अथय एक समय का जानना ५ तीर्थ शार—वीर्धकर का वत्सुष्टु अन्तर मत्स्य इमार पूष का, वीर्धकर का अनंत काल का अन्तर वद, अर्धवीर्धकर का समुचय सब पुरुष का वत्सुष्टु अन्तर एक वष ब्राह्मरा का वद, [आश्व पुन्यतस्म पुरुष, वित्पगण अणंत काछो, वित्पगारा नो तित्पगारा, बीसाभीमंतु सेसपु सया] ६ सिंग शार—सछिगी का १ वर्ष का श्रानरा, अन्य छिगी का और ग्रह छिगी का संख्यात इमार वर्ष का, ७ पारित्र शार—पूर्वोनुपय आश्रिय १ सामायिक, मूर्ध्म समराय, ययास्यात को स्वया मिद होनेका १ वष कुछ व्यधिक का, द्वेष का अर्थात् सामायिक छन्दोप स्वापनीय, परीहार विगुह ययास्यात, तथा सामायिक छद्रापस्वापनीय मूर्ध्म सम्पराय, ययास्यात, तथा सामायिक, छद्रापस्वापनीय, परिहार विगुह, मूर्ध्म सम्पराय, ययास्यात इन तीनों पांग का पुगल के कास मिथना वर्षात् कुछरुम १८ कोयकोदी सागरापम का, अथन्य, सब का एक समय का जानना ८ बुद्धाद बुद्धबोधित का अन्तर पदे सो पृच्छ वर्ष श्रानरा, द्वेष मत्स्येक बुद्धादिक का, तथा साध्वी के मतिपोषक का

सम्प्राप्त हजार रुपये का, स्वयं मुद्रा का पृथक् हजार पूर्ण का, मध्य सब का एक समय का • ज्ञान
 रा—यति श्रुति ज्ञान से केवल हा सिद्ध होने उन का उत्कृष्ट परयोपम का असंख्याते भाग का, माते
 श्रुत प्रशय सानी करती हा सिद्ध होने उन का १ वर्ष कुछ अधिक का, दोष माते श्रुति मनःपर्यव केवली
 हा मिद होने तथा माते श्रुति, अबोध, मनःपर्यव ज्ञानी कश्चिदानी हा सिद्ध होने उन का राख्याते हजार
 वर्ष का, नक्षत्र सब का एक समय का १ अवगाहना द्वार—उत्कृष्ट अत्यन्त पद्यम तीनो भवगाहना का
 उत्कृष्ट भन्तर चन्द्रा राजभारमक लारक पनाकार मे सात राज होते हैं तममे पूरु प्रदेश की श्रृणी सात
 राशु की सुन्नी होती है उस श्रृणी के अभख्याते भाग भित्तन आकाश पदश्च होने तम मे से एकैक पदश्च
 समय २ भयदरेते भित्तना कान नगे तवना इन तीना का भन्तर पदे परपय भवगाहना १ वर्ष का
 क्षोभित भन्तर ११ उत्कृष्ट द्वार—सम्यक्त्वमे अपहवाद् हा भन्तर उत्कृष्ट सागरोपम के असंख्याते
 भाग कर नृप संख्यात काम का १८ तथा असंख्यात काम के पद का दोनोका संख्याते हजार वर्ष का
 अनन्य काम के पदवाइका एक वर्ष क्षोभ ११ भन्तराद्वार विमन्त्र भन्तर भिद हो सो जानना १२ अणु
 समय १२—दो समय से आठ नवय तक निरन्तर सिद्ध होने १३ संख्यात द्वार एक ही सिद्ध १४ भन्तराद्वार
 इन का उत्कृष्ट भन्तर संख्यात हजार वर्ष का, मध्य एक समय का, इति छठा द्वार सातवा भाग
 १५ द्वार करते हैं—सब द्वार में भिद क्षेत्र जनिवाये के १५ द्वार ही में एक सायिक भाग ही
 जानना इति सादशा द्यत भावना जगन्नाथपुर द्वार पर लेनादि सोमर द्वार बताते हैं कल्प लोकादिक मे

चार सिद्ध होवे, दश इस्वाम्यादिक में सिद्ध होने, यह अन्योन्यः मुख्य है, क्यों कि यहाँ एक ही समय
 बराबरा बीम २ सिद्ध होते हैं, उस से ओ स्त्री आदि बीस सिद्ध होवे व कम, क्योंकि साहरन नहीं जाता है
 मातिबाचक एक समय २०८ सिद्ध होवे, वे संख्यातगुन यह सब अन्तर सिद्ध का कथन कहना अब
 परस्पर सिद्ध का स्वरूप कहत हैं—इन की प्रकरणोंमें १५ कर्म भौमिक सिद्ध वे इष्ट्य प्रमान की विन्यासे
 पढ़े ही शर में मनन कहना इन का अन्तर नहीं कहना, व काळ से पूरा है, सर्व सब से अनादि रूप है
 अब विवेचने आठवा मुचका अन्यायवृत्त शर है यह कहते हैं जिस पर १६ शर—'क्षेत्रदार-मुख
 स याहे समुद्र के सिद्ध, उस से द्वीप के सिद्ध सख्यात गुने, तथा सब से याहे जल में सिद्ध हुए उस से
 स्थल पर सिद्ध हुए संख्यात गुने, तथा सब के याहे वर्ष छाक के सिद्ध, वरास अधोलोक के सिद्ध संख्यात
 गुने वम से तिरछ छाक के सिद्ध संख्यात गुने, तथा—'सब में याहे खजसमुद्र के सिद्ध, २ उस स
 कानादपी के सिद्ध संख्यातगुने, तथा सब से याह जम्बुद्वीप के सिद्ध उस से घाँवकी खंड के
 सिद्ध संख्यात गुने, उस से पुरावावर्ष के संख्यात गुने, तथा जम्बुद्वीप के चूल् इयंत
 पर्वत त्रिस्तरी पर्वत पर स हुए सिद्ध संख्यातगुन, वम स वैषम्य प्रणय, क्षेत्र क सिद्ध परस्पर मुख्य
 संख्यातगुने, उस स महा इयंत रूपी पर्वत के सिद्ध संख्यातगुना, वम से दर्वकुक उषरकुरु सप के सिद्ध परस्पर
 मुख्य संख्यातगुन, उस से इरीवास रम्यकयास क्षेत्र के सिद्ध परस्पर मुख्य संख्यातगुने, उस स निषप नीलवंत पर्वत पर
 द्वे सिद्ध परस्पर मुख्य संख्यातगुने, उस से भरत पुरात सत्र के सिद्ध परस्पर तल्य संख्यातगुने, उस से षष्ठा विन्ध्य

संज्ञ के सिद्ध संख्यातगुण अथ य तकी सण्ट के संज्ञका विभाग कहने हैं सब से पाँचें घुल्लु हेयवत प्रिलरी पर्यंत पर हुँवे सिद्ध, उस से महा हमर्षत रूपी पर्यंत पर हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से निपच नीलवंत पर्यंत पर हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस में हमर्षत परणवप के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से देव कुठ उतर कुठ सत्र में हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हरीवास रम्यकवास सत्र में हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से भरत परावत सत्र के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से महा विद्वद सत्र के सिद्ध संख्यातगुने अब पुण्डरीक संज्ञका कहते हैं—सबसे पोट हमर्षत प्रिलरी पर्यंत पर हुँवे सिद्ध, उस से महा हमर्षत रूपी पर्यंत पर हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से निपच नीलवंत पर्यंत पर हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से हमर्षत परणवप सत्र के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से देवकुठ उतरकुठ सत्र के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से भरत संख्यातगुने, उस से हरीवास रम्यकवास सत्र में हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस में परावत सत्र के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, उस से महा विद्वद सत्र के हुँवे संख्यातगुने, (वक्त सर्व स्थानों में भरतेरावत और महाविद्वद सत्र जोर कर बाकी के सर्व स्थानों में साहरन माश्रिय सिद्ध होने का समझना) अब तीस सत्र के समुच्चय और सब सत्र पर्यंत प्रिलीकर अस्यावदुल्य कात हैं—१ सब से पाँचें अष्टादश क घुल्लुप्रिलरी पर्यंत के सिद्ध २ उस से हमर्षत परणवप सत्र के सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस में महाविद्वद रूपी पर्यंत पर हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, ४ उस से देवकुठ उतर कुठ के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने ५ उस से हरीवास रम्यकवास के हुँवे सिद्ध संख्यातगुने, ६ उस से

त्रिपथ नीलवर्ण पर हुये सिद्ध संख्यातगुण, ७ उस से दूसरे पात की लण्ड के चूड़ोपवर्ण शिखरी
 पर्वत पर हुये विद्येयापिक, ८ उस से पात की लण्ड के महादेववर्ण स्त्री पर्वत क सिद्ध संख्यातगुने, ९
 तीसरे पुकराय द्वीप के देवयज द्वितीय पर्वत के सिद्ध संख्यातगुने, १० उस से दूसरे पात की लण्ड
 के नीलवर्ण नीपप पर्वत पर हुये सिद्ध संख्यातगुने, ११ उस से पुष्करार्थ द्वीप में महादम्यवत स्त्री पर्वत
 पर हुये सिद्ध संख्यातगुन, १२ उस से पातकी लण्ड क देवकुल उषर कुल संघ के सिद्ध संख्यातगुने,
 १३ उस से पुष्करार्थ द्वीप के नीपप नीलवर्ण पर्वत पर हुये सिद्ध संख्यातगुने, १४ उस से पातकी
 लण्ड के देवकुल उषरकुरु क सिद्ध संख्यातगुने, १५ उक्त स पातकी लण्ड के इरीवास रम्यकवास
 क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १६ उस स पुष्करार्थ द्वीप के देवयज परजयय क्षेत्र के सिद्ध संख्यातगुने, १७
 उस में पुष्करार्थ द्वीप के देवकुल उषर कुरु के संख्यातगुने, १८ पुष्करार्थ द्वीप के इरीवास रम्यकवास के
 संख्यातगुन, १९ उस स जम्बुद्वीप क भरतैरावत क्षेत्र के संख्यातगुने, २० उससे
 पातकी लण्ड के भरतैरावत के संख्यातगुने, २१ उस से पुष्करार्थ द्वीप के भरत
 वैरावत क्षेत्र के संख्यातगुने, २२ उस स जम्बुद्वीप के महाविदेह क्षेत्र के संख्यातगुने, २३ उस से पातकी
 लण्ड के महा विदेह के संख्यातगुन, २४ उस स पुष्करार्थ द्वीप क महा विदेह के संख्यातगुने, जहाँ
 दो २ क्षेत्र पर्वतों क साथ नाम है वहाँ परस्पर सर्व स्थान तुल्य जानना ॥ १ ॥ दूसरा कास धार—
 १ सब से पहले दुत्तपादुलम आरे के सिद्ध, २ उस से दुःखम आरे के सिद्ध संख्यातगुने, ३ इस से

मुक्तामातु गम भार क सिद्ध असंख्यातगुण, ६ वस स सुख्य भार क सिद्ध विषयाधिक, ५ वस से सुख्यगुण्य भार के सिद्ध विषयाधिक (विशेष कासकी अपत्ता) ६ दुःख्यमासुख्य भार क सिद्ध संख्यातगुण, ७ वस उतमपिणी कास्य आश्रित्य-मन मे धाते दुःख्यमातु-सम भार के, वस स सु-सम भार क संख्यातगुण, वस से मृगमातु तम भारे क संख्यातगुण, वस स सुख्य भार के विषयाधिक, वस से सुख्यमासुख्य भार क विषयाधिक, वस स दुःख्यमासुख्य भारे के संख्यातगुण अथ दोनों की मिलाकर अस्यापहुत्य कहत है- १ मव स पाठ दुःख्यमातु-सम दानों काल के परस्पर तुल्य, २ वस से वर्षमान काल के दूसरे भारा दुःख्य के विषयाधिक, ३ वस स हायमान काल क दुःख्य पक्षि भारे के संख्यातगुण, ४ वस स दोनों काल सुख्य दुःख्य भारे के परस्पर तुल्य असंख्यातगुण, ५ वस से दोनों सुख्य भार क सिद्ध परस्पर तुल्य विषयाधिक, ६ वस से दोनों सुख्यमासुख्य भारे के परस्पर तुल्य विषयाधिक, ७ दोनों दुःख्य सुख्य भार क परस्पर तुल्य संख्यातगुण, ८ वस से हायमान काल क सिद्ध संख्यातगुण, क्योंकि इन के भीनों भार में भिन्न होने की अपेक्षा है ॥ २ ॥ तीसरा गति शर-सब से बौद्ध अनुव्यनी के निकसे सिद्ध, १ वस से अनुव्य के निकसे पुरुष मनुष्य से सिद्ध हुये संख्यातगुण, २ वस से मरक क सिद्ध गण्यतागुण, ३ वस से त्रिविपनी क निकस सिद्ध संख्यातगुण, ४ त्रिविप पुरुष के अनुसक क सिद्ध संख्यातगुण, ५ मनुष्य देवी के सिद्ध संख्यातगुण, ७ वस से वसता के सिद्ध संख्यातगुण १ वस स धाते उद्विग्न क निकसे सिद्ध हुये २ वस से पक्षिग्न क निकसे सिद्ध हुये

संख्यातगुने, १ तम से पाद-बादर बनस्पति के आय सिद्ध हुए, २ उस से वायु-पृथ्वी के आये सिद्ध हुये
 संख्यातगुने, ३ तम से पादर अपकाय के आय सिद्ध हुये संख्यातगुने, ४ उस से व्रम काय के सिद्ध
 संख्यातगुन यह संसप से कष्ट अब विस्तार से कहत है— मय से थोड़े चाथी नरक के निकल मनुष्य में
 आकर सिद्ध हुये (एम ही आग जानना) २ उस से तीसरी नरक के संख्यातगुने, ३ उस स दूसरी
 नरक क संख्यातगुने, ४ पर्याप्त बादर बनस्पति के निकल सिद्ध हुए संख्यातगुने, ५ पर्याप्त बादर पृथ्वी
 काय क संख्यातगुने ६ बादर आय काय के निकल सिद्ध संख्यातगुने, ७ मयनपति की देवी
 स आय सिद्ध हुए संख्यातगुने, ८ मयनपति दत्ता के निकल सिद्ध हुये संख्यातगुने ९
 वायव्यन्तर की देवी क संख्यातगुने, १० वायव्यन्तर दत्ता के संख्यातगुने, ११ ज्योतिषी
 दत्ता के आय संख्यातगुने, १२ ज्योतिषी देवी क निकल सिद्ध हुये संख्यातगुने १३
 मनुष्य की स्त्री क आय सिद्ध हुए संख्यातगुन, १४ फलप्य पुरुष के आये सिद्ध हुए संख्यातगुने
 १५ रत्नममा नरक के निकले सिद्ध हुये संख्यातगुन, १६ विधिवनी के आय सिद्ध हुये संख्यातगुने
 १७ निर्धन पुरुष नपुमक क आय सिद्ध हुए संख्यातगुने, १८ अनुत्तर विधन क आये सिद्ध हुये संख्यातगुने,
 १९ व्रतयक के दत्ता क आये सिद्ध हुए संख्यातगुन, २० बारय दवलोक के आय सिद्ध हुये संख्यातगुने
 २१ इग्याव दमलोक क आये सिद्ध हुये संख्यातगुने, २२ दशव दवलोक क आये सिद्ध हुए संख्यातगुने

+ मूल भाषात व फलर अर्थात् मनुष्य होते हैं; परंतु व्रतम त्रयी नहीं होते हैं.

२१ नवरे देवलोका के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २४ आठरे देवलोका के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने,
 २ पातल देवलोका के आय सिद्ध हुवे संख्यातगुने, २४ छठे देवलोका के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने,
 २७ पाँचवे देवलोका के आये सिद्ध संख्यातगुने, २८ चौथे देवलोका के आय सिद्ध हुवे संख्यातगुने,
 २९ तीसरे देवलोका के आय सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३० दूसरे देवलोका की देवी के 'आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने,
 ३१ दूसरे देवलोका के देवता क आय सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३२ प्रथम देवलोका की देवी के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने और ३३ उस से प्रथम देवलोका के देवता के आये सिद्ध हुवे संख्यातगुने
 ॥ १ ॥ वेद द्वार—१ सब से पाछे नयुसक वेद सय कर सिद्ध हुवे, २ उस से श्री वेद सय कर सिद्ध हुवे संख्यातगुने, और उस से पुत्रय वेद सय कर सिद्ध हुवे संख्यातगुने ॥ ४ ॥ सिंग द्वार १ सब से छोटे गुरु किंगी सिद्ध, २ जम स अम्भ द्विगी सिद्ध संख्यातगुने, ३ उस से सौमिगी सिद्ध संख्यातगुने ॥ ५ ॥ तीर्थ द्वार सब से छोटे तीर्थकर सिद्ध, २ उस से जल क तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ३ उस स तीर्थकर के तीर्थ साखी सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ४ तीर्थकर श्री क तीर्थ में सिद्ध हुवे साधु संख्यातगुने, ५ उस से तीर्थकर श्री के साधु से तीर्थकर सिद्ध अनंतगुने, ६ उस से तीर्थकर के तीर्थ में प्रत्येक बुद्ध सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ७ तीर्थकर के तीर्थ में भाखी सिद्ध हुवे संख्यातगुने, ८ उस से तीर्थकर के तीर्थ में साधु सिद्ध हुवे संख्यातगुने ॥ ६ ॥ आठि द्वार—१ सब से छोटे छदोपस्यापनी प्रविष्टार बिबुद्ध, सुख संख्यातगुने देवलोकात आठि स्पर्ध कर सिद्ध हुवे ४ २ उस से साध्याधिक परिकार बिबुद्ध, सुख संख्यातगुने ४ ४ ॥ साध्याधिक रहित छदोपस्यापनीय आठि कहा ॥ साध्याधिक आठि कहा येन करयेनाका जामना

यथास्यात् षड् चारित्र्यं स्वच्छकरं सिद्धं भवेत् संख्यातगुणे, १ सामायिक, छन्दोपस्थापनीय, परिहारावबुद्ध, मूल्यसम्भराराय, और यथास्यात् इन पाँचों चारित्र्य को स्पर्श कर सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ४ उत्तम से छद्वापस्थापनीय मूल्यसम्भराराय यथास्यात् इन तीन चारित्र्य को स्पर्श सिद्ध भवे संख्यातगुण, ५ सामायिक छन्दोपस्थापनीय मूल्यसम्भराराय यथास्यात् इन चार चारित्र्य का स्पर्शकर सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ६ सामायिक मूल्यसम्भराराय यथास्यात् इन तीन चारित्र्य को स्पर्श सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ७॥ बुद्धद्वार—१ सब से छोटे स्वयंबुद्ध सिद्ध, २ प्रत्यक्ष बुद्धोक्ति संख्यातगुणे, १ उस से माथी के प्रतिबोवेसिद्ध संख्यातगुण, ४ उस से साधु के प्रतिबाध सिद्ध संख्यातगुणे, ॥ ८ ॥ ज्ञान द्वार—सब से छोटे प्रति श्रुति मनःपर्यय ज्ञान का स्पर्श कर केवली सिद्ध भवे, २ उस प्रति श्रुति अबधि मनःपर्यय ज्ञान से केवली हो सिद्ध भवे अतंसंख्यातगुण, १ उस से प्रति श्रुति अबधि ज्ञान स्पर्श सिद्ध भवे असंख्यातगुणे, ॥ ९ ॥ अनुसमय द्वार—१ सब से छोटे आठ समय तन्त्र निरत्र सिद्ध भवे, २ उस से सात समय तक भवे संख्यातगुण, २ उस से छ समय तक सिद्ध भवे संख्यातगुण, १ पाँच समय तक सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ४ चार समय तक सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ५ तीन समय तक सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ६ दो समय तक सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ७ उस से एक समय में सिद्ध भवे संख्यातगुणे ॥ १० ॥ उत्कृष्ट द्वार—१ सब से छोटे साम्यवत्त्व से नहीं पड़े सिद्ध, २ समुत्तम संख्यात काळ के पदवाह सिद्ध भवे संख्यातगुणे, ३ असंख्यात काळ के पदवाह सिद्ध भवे

सद्व्याप्तगुण, ४ सप्त सं अनंत काळ के पदनाइ सिद्ध हुवे असंख्यातगुने ॥ १२ ॥ अन्तर द्वार—२ सप्त
 से थोड़े छ महिने के अन्तर से सिद्ध हुव, २ सप्त से एक समय के अन्तर से सिद्ध हुवे सख्यातगुने, नस से
 श्री सपय के अन्तर मे सिद्ध हुवे असख्यातगुने ४ यों छ महिने का पथ्य आये वहाँ तक कहना,
 फिर प्राग संख्यातगुन होन करना यों छ महिने में एक समय तक कहना, छ महिने में एक
 समय कय अन्तर स सिद्ध हुवे सख्यातगुन निनि ॥ १३ ॥ अत्रगाइना द्वार—१ सप्त से थोड़े दो
 हाय की अत्रगाइना बाल सिद्ध, २ तम से पांच सो धनुष्य की अत्रगाइना बाले सिद्ध हुवे असख्यातगुने, ३,
 उम से पथ्य अत्रगाइनाबाले सिद्ध असख्यातगुने ॥ १३ ॥ संख्या द्वार—सप्त से थोड़े एक समय में १०८
 सिद्ध हुव उम स १ ७ सिद्ध हुव अनंतगुन, तस से १०६ सिद्ध हुवे अनंतगुने, तस से १०५ सिद्ध हुवे
 अनंतगुने, १०६ सिद्ध अनंतगुना, १०३ सिद्ध अनंतगुना, १०२ सिद्ध अनंतगुना, १०१ सिद्ध अनंत
 गुना, १०० सिद्ध अनंतगुने, ९९ सिद्ध अनंतगुना, ९८ सिद्ध सख्यातगुना, ९७ अनंतगुना, ९६ अनंत
 गुना, ९५ अनंतगुना, ९४ अनंतगुना, ९३ अनंतगुना, ९२ अनंतगुना, ९१ अनंतगुना, ९० अनंतगुना,
 ८९ अनंतगुना, ८९ असंख्यातगुना, ३ असंख्यातगुना, ६८ असंख्यातगुना
 ६१ असंख्यातगुना, ४७ असंख्यातगुना, ४२ असंख्यातगुना, ४३ संख्यातगुना, ४३ सख्यातगुना;
 ४५ असंख्यातगुना, ४६ असंख्यातगुना, ४६ असंख्यातगुना १ ४५ असंख्यातगुना, ४३ यों धनुष्य मे
 पारत २७ सिद्ध असंख्यातगुना, ८२ असंख्यातगुना, २३ असंख्यातगुना, ८३ असंख्यातगुना, २५ अर्द्ध-

क्यावगुना, ८६ असक्यावगुना, २३ अर्धक्यावगुना, ८९ असेक्यावगुना, २२ सक्यावगुनी, ८७ सक्यावगुना, २१ सक्यावगुना, ८८ सक्यावगुना, २० सक्यावगुना, ८९ यावत् उस से १ सिद्ध संख्यावगुना, १०६ से दा सिद्ध सक्यावगुना, १०७ से एक सिद्ध सक्यावगुने, यों १०८ बोल की गिनना जानना इस ही का अन्धा बहुत विद्वत् करते हैं १ सब स योह अष्टासुखासन स सिद्ध हुवे, २४ अर्धक्यासन से सिद्ध हुए सक्यावगुने, १ वीरामन स सिद्ध हुवे संख्यावगुने, ६ पर्यकासन अर्धक्या से सिद्ध हुए सक्यावगुने, ७ अर्धमुल्ल सट आसन स सिद्ध हुए संख्यावगुने, ६ पसवादे स भूते सिद्ध हुए सक्यावगुने, ७ उतासन में सिद्ध हुए संख्यावगुन अब सब द्वारों का अस्यावगुल सनिकप द्वार करत हैं—असि २ स्थान १०८ सिद्ध हुवे वही ऐसा कहना—एक सिद्ध हुवे ५ सब से ज्यादा, २ उस से दा दो सिद्ध हुवे संख्यावगुन कमी, १ उस में तीन २ सिद्ध हुए संख्यावगुन कमी, ६ उस स बार ३ सिद्ध संख्यावगुन कमी, ५ उस से पांच २ सिद्ध सक्यावगुन कमी, ६ उस से छ छ सिद्ध संख्यावगुन कमी ७ उस से सात २ सिद्ध सक्यावगुन कमी, याज्ञ उस स शशीस २ सिद्ध संख्यावगुन कमी, उस से त्रेवीस २ सिद्ध संख्यावगुन कीन, उस म चौबीस ३ सिद्ध संख्यावगुन कीन, उस से पचीस २ सिद्ध संख्यावगुन कीन, उस से पचीस २ सिद्ध संख्यावगुन कीन, फिर इकावन २ सिद्ध अनंत गुनी कीन, बावन ३ सिद्ध अनंतगुन कीन, यों यावत् १०७ सिद्ध अनंतगुन कीन, उस त १०८

+ इन क भद्रम प्रश्न निश्चये कीये होकर निकल्यो हैं, इने कोइ निग्रह गीत स सिद्ध हुवे कहते हैं.

सिद्ध अनंत मुनीन, यों पचास के आधे अनंत गुनीन कहना तथा जिस २ स्थान बीस ३ सिद्ध
हवा बही ऐसा करना—सब से ज्यादा एकैक समय में एकैक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध संख्यातगुने,
तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कभी, चार २ सिद्ध संख्यातगुने कभी, पांच २ सिद्ध संख्यातगुने कभी
उस से छ २ सिद्ध असंख्यातगुन कभी, सात २ असंख्यातगुने कभी, आठ २ असंख्यातगुने कभी, नव २
असंख्यातगुन कभी, दश २ असंख्यातगुने कभी, इन्वार २ अनंतगुन हीन, यादत् बीस २ सिद्ध व
अनंतगुन हीन. ऐसे ही अबो कोकादिक के भी कहना क्योंकि वहाँ भी बीस २ सिद्ध होतें हैं यों सर्व स्थान
प्रथम चौथे मास में संख्यातगुन हीन, दूसरे चौथे णा में असंख्यातगुन हीन, और तीसरे चौथे भाग में
अनंतगुन हीन कहना और भी बहीं दश २ सिद्ध होवे वहाँ एकैक सिद्ध हुवे सब से ज्यादा, उस से
दो २ सिद्ध संख्यातगुने कम, उस से तीन २ सिद्ध संख्यातगुने कभी, उस में बार २ सिद्ध असंख्यातगुन
कभी, उस स पाँच २ सिद्ध असंख्यातगुन हीन उस से छ २ अनंतगुन हीन, यादत् दश २ सिद्ध अनंत
गुनीन ऊर्ध्व लोक में चार ही सिद्ध होते हैं वहाँ एकैक सिद्ध सब स ज्यादा, दो २ सिद्ध असंख्यात
गुन कभी, तीन २ और बार २ सिद्ध अनंतगुन हीन, वहाँ संख्यातगुन हीन नहीं कहना समुद्र में एक
समय में दो ही सिद्ध होते हैं हम में सब से ज्यादा एकैक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध अनंतगुने कभी
अही दो यादत् आठ तक सिद्ध होते हैं वहाँ ऐसा कहना—सब से ज्यादा एकैक सिद्ध, उस स दो २
संख्यातगुने कभी उक्त ज नीन २ सिद्ध संख्यातगुन हीन बार २ सिद्ध असंख्यातगुने हीन उस से पाँच २ सिद्ध

अर्णतर उन्वाहिचा नेरइएणु उववजेजा? गोयमा! जोइणट्टेसमट्टे ॥ नेरइएणं भते!
 नेरइएणेतो अणतरं उन्वाहिचा असुरकुमारसु उववज्जजा? गोयमा! जो इणट्टे
 समट्टे पव गिरतर जाव चउरिदिएसु पुच्छा? गोयमा! जो इणट्टे समट्टे ॥ नेर
 इएणं भते! नेरइएणेतो अर्णतर उन्वाहिचा पविषिए तिरिक्खज्जोणिएसु उवव
 ज्जजा? गोयमा! अरयेगइए उववजेजा अत्येगइए जो उववजेजा ॥ जेणं भते!
 नेरइएणेतो अर्णतर उन्वाहिचा पविषिय तिरिक्खज्जोणिएसु उववज्जजा सेण भंत!
 कवल्लि पण्णत्त धम्म लभेजा सवणयाए? गोयमा! अत्येगइया लभेजा अत्येगइया जो

हीन तस से उ ६ सिद्ध अनंतगुनीन, उष से साठ २ सिद्ध अनंतगुनीन, और उष से बाठ २ सिद्ध
 एक समय मे हुए अनंतगुनीन-कपी जानना यह सिद्ध भगवत का स्वरूप विस्तृत अर्थ वाली पञ्चवना
 से कहा अब आग पर्याय पलटकर का ० उत्पन्न होते हैं उस का बोधा द्वार सूत्र से करते हैं ॥ + ॥
 अहो भगवन्! नेरीये नारकी स भिंतर निकसकर पुनःनरक मे उत्पन्न होते हैं क्या! अहो गौतम!
 यह अर्थ समर्थ नहीं बर्यात् उत्पन्न नहीं हाल है अहो भगवन्! नेरीये नरक से निकलकर भिंतर
 असुरकुमार मे उत्पन्न होते हैं क्या! अहो गौतम! यह अर्थ समर्थ नहीं यो दृष्टी भवनपति पार्श्वे स्थावर
 धिक् सोईपवक कहना अर्थान् नेरीया आयुष्य पूर्णकर इतने स्थान मे आकर उत्पन्न नहीं होते हैं अहो भगवन्!

सिद्ध अनन्त गुणहीन, यों पचास के आये अनन्त गुणहीन कहना तथा जिस २ स्थान बीस २ सिद्ध होने चर्चा पसा कहना—सब से ज्यादा एकैक समय में एकैक सिद्ध, उस से दो २ सिद्ध संख्यातुने, तीन २ सिद्ध संख्यातुने कभी, चार २ सिद्ध संख्यातुने कभी, पाँच २ सिद्ध संख्यातुने कभी उस से छ २ सिद्ध संख्यातुने कभी, सात २ असंख्यातुने कभी, आठ २ संख्यातुने कभी, नव २ असंख्यातुने कभी, दस २ असंख्यातुने कभी, इन्हारे २ अनन्तगुण हीन, यावत् बीस २ सिद्ध व अनन्तगुण हीन ऐसे ही अघो लोकदिक के भी कहना क्योंकि वहाँ भी बीस २ सिद्ध होते हैं यों सर्व स्थान प्रथम चौबे मास में संख्यातुन हीन, दूसरे चौबे मास में असंख्यातुन हीन, और तीसरे चौबे मास में अनन्तगुण हीन कहना और भी जहाँ दस २ सिद्ध होते वहाँ एक सिद्ध होने सब से ज्यादा, उस से दो २ सिद्ध संख्यातुने कय, उस से तीन २ सिद्ध संख्यातुने कभी, उस से चार २ सिद्ध असंख्यातुन कभी, उस से पाँच २ सिद्ध असंख्यातुन हीन उस से छ २ अनन्तगुण हीन, यावत् दस २ सिद्ध अनन्तगुणहीन, ऊपर्य लोक में चार ही सिद्ध होते हैं वहाँ एकैक सिद्ध सात २ ज्यादा, दो २ सिद्ध असंख्यातुन हीन, तीस २ और चार २ सिद्ध अनन्तगुण हीन, वहाँ संख्यातुन हीन नहीं कहना समुद्र में एक ही जगह एकैक सिद्ध, जगह से दो २ सिद्ध अनन्तगुने कभी

गुणवा नेरमर्णवा पञ्चवर्णवा पोसहोषवासवा पण्डितवर्णवा ? गोपमा ! अत्ये
 गतिर सचाएज्वा अत्येगतिर जो सचाएज्वा ॥ जेण भंते ! संचाएज्वा सीलेवा
 जाय वासदायवासवा पण्डितवर्णवा सेणं मत ! ओहिणाण उप्पाडज्वा ? गोपमा !
 अत्येगतिर उप्पाडज्वा अत्येगतिर जो उप्पाडज्वा ॥ जेणं भंते ! ओहिणाण उप्पा
 डेज्वा सेण भंते ! संचाएज्वा सुठ भविचा आगाराओ अणगारियं पण्डितवर्णवा ?
 गोपमा ! जोइणट्ट समट्टे ॥ नेरइएणं भंते ! नेरइएणं भंते ! अणतर उच्चरिता मणुस्सेसु
 उच्चरिता ? गोपमा ! अत्येगतिर उच्चरिता अत्येगतिर जो उच्चरिता जणं

ही गोपमा ! करते हैं अहो भगवान् ! आ भवि खुदि ज्ञान युक्त होत हैं वे पाँच भर्तृजन, तीन गुणधर, चार
 शिष्टा धन, पाप से निवृत्ति रूप प्रत्यक्षान ~~प्राप्त~~ पौषोपवासवासी अगिहार करने को क्या समर्थ होते हैं ?
 अहो गोपमा ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक समर्थ नहीं भी होते हैं, अहो भगवान् ! क्षीलघन यावत्
 पौषोपवास करने समर्थ होते हैं वे भविष्यज्ञान को प्राप्त करसकते हैं क्या ! अहो गोपमा ! कितनेक मास
 करसकते हैं कितनेक नहीं भी मास करसकते हैं अहो भगवान् ! जो अविद्यान प्राप्त कते हैं वे मुन्दन
 प्रस्नगाश ~~प्राप्त~~ साधुपना धारन करने को समर्थ होत हैं क्या ? अहो गोपमा ! यह अर्थ समर्थ नहीं
 भवित् साधुपना नहीं वे सकत हैं अहो भगवान् ! नरक में से निरंतर निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होते

लभेज्जा ॥ जेण भते ! केवलि पण्णत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए सेण भते ! केवल
 वेहि बुद्धेज्जा ? गोयमा ! अत्येगतिया बुद्धेज्जा, अत्येगतिया जो बुद्धेज्जा ॥ जेण
 भते ! कवल्लवाहि बुद्धेज्जा सेण भते ! सवहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ? हुता गोयमा !
 सवहेज्जा पत्तिएज्जा रोएज्जा ॥ जेण भते ! सवहेज्जा पत्तिएज्जा सेण भते ! आ
 भिणिवाहिणाय सयणाणाइ उप्पाहेज्जा ? हुता गोयमा ! उप्पाहेज्जा, जेण भते !
 आभिणिवाहिणाय सयणाणाइ उप्पाहेज्जा, सेण भते ! सव्वाज्जा सीलवा वयथा

नेरीये नरक से निकसकर निरतर त्रिपंच पंचान्द्रिय में आकर उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! किंतने
 नेरीये त्रिपंच पंचान्द्रिय में उत्पन्न होते हैं, कितनेक नहीं भी होते हैं अहो समवन् ! जो नरीय त्रिपंच
 पंचान्द्रिय में आकर उत्पन्न होते हैं वे केवली प्रणिप्त धर्म श्रवणकर संग्राम प्राप्त करते हैं क्या ? अहो गौतम !
 किंतनेक प्राप्त करते हैं किंतनेक नहीं भी प्राप्त करते हैं, प्रहो धम्मवन् ! मा केवली प्रणिप्त धर्म श्रवणकर प्राप्त
 करते हैं व केवली प्रणिप्त धर्म में बोधित होते हैं धम्म जानते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्रतिबोध पाते हैं
 कितनेक नहीं भी पाते हैं अहो समवन् ! जो प्रतिबोध पाते हैं वे धर्म को श्रवण हैं प्रबोधि कस्ते हैं, अष्ट
 कारण में रुकाते हैं क्या ? हा गौतम ! कितनेक श्रवणा प्रतीति रखी करते हैं और किंतने नहीं भी करते
 हैं अहो धम्मवन् ! जो-श्रवण हैं प्रतीति करते हैं कबाने हैं व आभिधिबोधक ज्ञान को प्राप्त करते हैं क्या ?

गुणवा श्रेयस्यथा पञ्चवैखानसा पोसहोयवासवा पौडिवाजिचप १ गोयमा ! अत्ये
गतिव सचाएज्जा अत्येगतिण णो सर्वाएज्जा ॥ जेणं भंते ! संचाएज्जा सीलेवा
जाव पासदाववासवा पडिवाजिचप सेणं मत ! ओहिणाण उप्पाडजा १ गोयमा !
अथगतिए उप्पाटिजा अथगतिए णो उप्पाडजा ॥ जेणं भंते ! ओहिणाण उप्पा
डेजा सेण भंते ! संचाएज्जा मुढ भविंसा आगाराओ अणगारियं पञ्चद्वसए १
गोयमा ! जोइणट्ट समुहे ॥ णरइएणं भंते ! णेरइएहिंतो अणतर उच्चवडिता मणुस्सेसु
उववज्जा १ गोयमा ! अत्येगतिए उववज्जा अत्येगतिए णो उववज्जा जेणं

ही गौतम ! करते हैं भरो भगवन् ! जा मति श्रुति ज्ञान युक्त हाव हैं वे पाँच अनुग्रह, तीन गुनप्रवृत्त, चार
विष्ठा धन, पाप से निवृत्ति रूप अस्पृश्यान करक पोषावसादी जगीकार करने को यवा समर्थ होते हैं ?
अहो गौतम ! कितनेक समर्थ होते हैं कितनेक समर्थ नहीं भी होते हैं, अहो भगवन् ! वीलप्रवृत्त यावन्
पोषावसाम करने समर्थ होते हैं वे अविद्याज्ञान को प्राप्त करसकते है क्या ! अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त
करसकते हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त करसकते हैं अहो भगवन् ! ओ अविद्याज्ञान प्राप्त क ते हैं वे मुक्तिन
प्रारम्भावास छान सापुपना पारन करने को समर्थ हाव हैं क्या ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं
अर्थान् सापुपना नहीं वे सकते हैं अहो भगवन् ! नरक में से निरंतर निकल कर मनुष्य में उत्पन्न होते

भते ! ठथवेज्जा सेण भत ! केवलो पण्णस धम्म लभज्जा सवणयाए ? गोयमा ! जहा पच्चिदिय तिरिक्खजोणिएसु जाव जेण भत ! आहिणाण उप्पाडेज्जा सेण सचाएज्जा मुहु माविचा अगाराओ अगगागिय पव्वइत्तए ? गोयमा ! अत्थगतिए सचाणज्जा अत्थगगिण जा सचाएज्जा ॥ जेण भत ! सचाएज्जा अगाराओ अणगारिय पव्वइत्तए सण भते ! मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा ? गायमा ! अत्थगतिए उप्पाडेज्जा अत्थगतिए जो उप्पाडेज्जा ॥ जण भत ! मणपज्जवणाण उप्पाडेज्जा सेण भते ! केवलणाण उप्पाडेज्जा

है क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्सन्न होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन ! जा मनुष्य गति में उत्सन्न होते हैं वे कैसी प्रणित धर्म को श्रवण कर अंगीकार करते हैं क्या ? अहो गौतम ! भ्रष्ट प्रकार विर्वच पवेन्द्रिय का कहा वैसा यहाँ भी सब कहना यावत् अर्थचिदान प्राप्त करते हैं वे बही तक अहो भगवन ! जा नेरीये मनुष्य हा अक्की ज्ञान प्राप्त करते हैं वे मुदित हो श्रुत्यायास को छाट साधु बनने को सपर्य होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक सपर्य होते हैं कितनेक नहीं भी होत हैं अहा भगवन ! जो मुदित होने साधु बनने सपर्य होते हैं वे मनापर्यय ज्ञान को प्राप्त कर सकन हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त कर सकत हैं कितनेक नहीं भी प्राप्त कर सकन हैं अहो भगवन ! जो मनापर्यय ज्ञान प्राप्त कर सकन हैं वे केवल ज्ञान भी प्राप्त कर सकते हैं क्या ?

गोयमा ! अस्थेगतिए उप्पाइजा अस्थेगतिए णो उप्पाइजा ॥ जेणे भते ! केवल
 णाण उप्पाइजा सेण भंता सिद्धजा वुज्झजा भुघेजा सव्वदुक्खाणं अत करेजा ? इता
 गोयमा ! सिद्धजा जाय सव्वदुक्खाण अत करजा ॥ नेरइएण भते ! नेरइएहिंते
 अणत्तरे उब्बाहिंता वाणमत्तरेसु जोइसिय वेमानिएसु उववज्जेजा ? गोयमा ! णो
 इणट्ठे समट्ठे ॥ ४ ॥ असुरकुमारेण भंते ! अणत्तर उब्बाहिंता नेरइएसु उववज्जेजा ?
 गायमा ! जा इणट्ठसमट्ठे ॥ असुरकुमारण भते ! अणत्तर उब्बाहिंता असुग्गुमारसु

अहो गौतम ! कितनेक प्राप्त करते हैं कितनेक नहीं भी करते हैं भग्न भगवन् ! जो केवल ज्ञान प्राप्त करत है वह सिद्ध बुद्ध मुक्त हो। सब दुःख का अन्त करत है क्या ? अहो गौतम ! वे सिद्ध बुद्ध मुक्त हो। सब दुःख का अन्त करते हैं भग्न भगवन् ! नरीये स निरतर निकल कर बाणस्थतर जातिपी वैमानिक देव में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं है अर्थात् नरक कभी न दृष्टा में उत्पन्न नहीं होते हैं इति नरक के दंडक पर चौबीस ही दंडक की फलस्यवट कही ५६ ॥ अथ अमुरकुमार दश की कथत है—अहो भगवन् ! अमुरकुमार दृष्टा निरतर निकल कर नरक में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अथ समर्थ नहीं अर्थात् उत्पन्न नहीं होते हैं भग्न भगवन् ! अमुरकुमार दृष्टा निरतर अमुरकुमार से निकलकर पुन प्रमृगकुमार में उत्पन्न होते हैं क्या ? भग्न गौतम ! यह अर्थ

मांणो इण्डे समेट् ॥ एव जात्र थणियकुमारसु ॥ असुरकुमारण भंते ! असुर
तर उवट्ठिचा पुढविकाइएसु उववज्जवा ? दृता गोयमा ! अत्येगतिप्
गतिप् णो उववज्जवा ॥ जण भंते ! उववज्जवा सण भंते ! केवलि
मज्ज सवणयाए ? गोयमा ! णो इण्डे समेट् ॥ एव आठ वणफात्तिकाइएमुनि
त ! असुरकुमारैहिं तो अणतर उवट्ठिता सेउवाठ बेइदिय तेइदिय चठरिदिप्सु
। यमा ! णा इण्डे समेट् ॥ अत्रसेसु पंचिदियतिरेक्खजेगियामिमु

इत्तस्मिन्नुत्तमर पर्यन्त कहना खो मगवन् ! असुरकुमार देवता भिन्नतर निरुक्त
न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! कितनेक उत्सव होते हैं कितनेक नहीं भी उत्सव
भी असुरकुमार पृथ्वी कायमें उत्पन्न होते हैं वे कदवी घणित घंघे अत्रणकर प्रतिबोध
खो गौतम यह धर्म समर्थ नहीं, येग ही अप्पायका भी कहना और वनस्वरति फाय
मगवन् ! असुरकुमार द्रवत्ता भिन्नतर निकलकर तमस्कणाय वायुनाथ देहिनिय तइप्
होता है क्या ? अहो गौतम ! यह कार्य समर्थ नहीं अत्रणच विधिप येकोन्प पनुत्प
भी देवामिच का अना नरक का कहा हैमा असुरकुमार का भी करना और जिस

असुरकुमारैः सुजहा । नेरइओ ॥ एवञ्चाथ धणियकुमार ॥ ५ ॥ पुढविकाइएण, भते । पुढविकाइए
हिंते । अणतरउन्वट्टिचा नेरइएसु उववज्जवा ? गोयमा । ने । इणट्टे समेट्ठे, एव असुरकुमारैः सुवि
जाव धणियकुमारैः सुवि ॥ पुढविकाइएण भते । पुढविकाइएहिंता । अणतरं उन्वट्टिचा
पढविट्ठप्पस उववज्जवा ? गोयमा । अत्थगतिप उववज्जवा । अत्थेगतिप ने
उ । २८ । ॥ जेण भते । उववज्जवा सेण भते । कथलि पणत्त धम्म लभेज्जा
सरणवाए ? गापमा । ने । इणट्टे समेट्ठे ॥ एव आऊकाइयाविसुवि निरतर भाणियन्व

मकार मनुकुमार का कथन है। उस ही प्रकार गायन् स्थिति कुमार तक का कहना यह ११ दहक
हुन ॥ ५ ॥ अहो मगवन् ! पृथ्वीकाय क नीच घर कर नरक में उलझ होत है क्या ! अहा गौतम !
अह मगवन् नहो भयत उत्तम नहि होने । एस ही असुरकामरादि दशा ही भुवनस्मि दक्ष का भी
कहना महा भगवन् ! पृथ्वीकाय म स निगत निरुद्ध कर पुनः पृथ्वीकाया पेशस्य होत है
परा । अहो गौतम ! किनक उत्पन्न होत है किनक लत, लहू नहो भी होत है अहो मगवन् ! ओ
पृथ्वीकाय पथरीकाय में उत्पन्न हो व बट कबली प्रणित धर्म श्रवणकर प्राप्त कर सकत है परा । अहो
गौतम ! महा भगवन् नहो पृथ्वीकाय क जैसा ही अपह्वाय तजस्वाय वायुकाय वनस्पतिकाय, पेदीय
तद्वेग पारोदय तक कहना विर्यच पेदीन्य का और मनुष्य का जैसा नरीय का कहा जैसा कहना

तेतुकाइएण भते! तउकाइएहि तो अणतरं ठस्यहिचा यधिदिय तिरिक्खजाणिएसु उववज्ज
 जा? गोयमा! अत्थेगतिए उववज्जजा अरथगतिए णो उववज्जेजा, जेण भते! उववज्जजा सण
 भन! कथलि पणत्त धम्म लभेजा सवणयाए? गायमा! अत्थगतिए लभेजा अरथेगतिए नो
 लभेजा ॥ जण भते! कवली पण्यत्त धम्म लभेजा सवणयाए सेण भते! कवलि
 योहि युज्जेजा? गोयमा! णो इण्हेट्टु समट्ठे मणुरस वाणमतर जोइसियवमानिएसु
 पुच्छा? गोयमा! णा वृणट्टु समट्ठु॥ एव जहव तेतुकाइए गिरतर एव वाउकाइएनि ॥
 ॥१॥ यहविण भते! यहविपुहि तो अणतरं ठवट्ठिचा णरइएसु उववज्जेजा? गोयमा!

पमान्त्रिय विपेव योनिकपने कस्यम हाते है क्या! अहा गौतम! कितनेक उत्सव होते है कितनेक नहीं
 उत्सव हात है, या उत्सव हात है वे कबली प्रणित धर्म प्राप्त कर सकते है क्या! अहो गौतम! कितनेक
 कर सकते है कितनेक नहीं भी कर सकते है अहो भगवन्! ना कबली प्रणित धर्म श्रवण कर प्राप्त कर
 सकते है वे धर्म के ज्ञानकार हाते है क्या! अहो गौतम! यह अर्थसपर्यं नहीं मनुष्य वाणव्यस्तर खातिपी
 और भेमानिक में तेमस्त्राय के नीच उत्तम नहीं हाते है यों मिस प्रकार तेमस्त्राय का कहा
 तेम ही वायुहाव का कहना यह पाँच स्थावर के पाँच दूरक हुवे ॥ ६ ॥ अहो भगवन्! वेदन्त्रिय
 वेदन्त्रिय में से निरुत्तर भिरुत कर नारकी में उत्सव होत है क्या? अहो गौतम! यह अर्थ समथ नहीं

जहा पुढविकाइए जत्र मणूमेसु जाव मणपज्जणाण उपपादेज्जा ॥ एव तद्दिय
 चत्तारिदियावि जाव मणपज्जणाण उपपादेज्जा, जेण भत्तामणपज्जव जाण उपपादेज्जा सेण
 भत्त ! केवलणाण उपपादेज्जा ? गोयमा ! जो इणहु समेट्ठे ॥ ७ ॥ पच्चिय
 त्तिरिवल्लजाणिएण भत्ते ! पच्चियेए त्तिरिवल्लजाणिएहिंत्तो अणत्तर उव्वहिंत्ता जेरइएसु
 उव्वज्जज्जा ? गायमा ! अरयेगतिए उव्वज्जज्जा अरयेगतिए जो उव्वज्जज्जा जण भत्त !
 उव्वज्जज्जा ! सेण केवल्लि पणत्त धम्म लभेज्जा सवणयाए ? गोयमा ! अरयेगतिए

रयादि नेमा लुशीकायाका कयन कहा तेमा पेदीन्द्रिय का भी कहना भिम में इतना विद्येय यावत् मन
 पर्यव ज्ञान की प्राप्ति करे वहां तक कहना परंतु केवल ज्ञान की प्राप्ति नहीं करे जेमा पेदीन्द्रिय का कहा
 तेमा ही पेदीन्द्रिय का और चत्तारिदियाका भी कहना यावत् मनुष्य में उत्पन्न हो मन पंचव ज्ञान तक प्राप्त
 कर सकत है परंतु केवल ज्ञान प्राप्त नहीं कर सकत है ॥ ७ ॥ अहो भगवन् ! पेदीन्द्रिय तिरिय योनिक
 पेदीन्द्रिय तिरिय योनिक स भित्तर निकल कर नरक में उत्पन्न होते हैं क्या ? अहा मौलम ! कितनेक
 तराय होते हैं कितनेक नहीं भी होते हैं अहो भगवन् ! यो तिरिय पेदीन्द्रिय नरक में उत्पन्न होते हैं वे
 केवल योनिगत भय भ्रमणकर प्राप्त कर सकत है क्या ? अहो मौलम ! कितनेक प्राप्त कर सकत है कितनेक

सेण भते ! सधाएजा सोलंशा जाव पढिबजित्तए ? गोयमा ! जो इअट्टसमंठे ॥ एव
असुरकुमारेभु जाव यणियकुमारेसु ॥ एमिदियवि गळेधियसु जहा पुढविकाइए,
पविदिय तिरिक्खजोणिएसु मणुसेसुए जहा नेरइए, वाणमतर जाइसिय वेमाणिएसु
जहा नेरइएसु उववज्जति पुच्छा भनियाए ॥ एव मणुसेसुवि ॥ थाणमतर जाइसिय
वमाणिए जहा असुरकुमारे ॥ ८ ॥ रयण्यभापुढवि नेरइएणं भत ! रयण्यभा पुढवि नेरइए
हिंसा अणतर उव्वहिंसा तिरयगरत्त लभेज्जा ? गोयमा ! अत्येगातिए छेमेज्जा

अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं। इस प्रकार अनुरक्षण से यावत् स्यानिष्ठ कुमार तब कहना, एक
द्विष और विकलौद्रय का ऐसा पृच्छीक्षाया का कहा ऐसा कहना पंचेन्द्रिय निर्वय यानिक का और
मनुष्यका नेमा नेरीयका कहा ऐसा कहना, वाणकपन्तर मोतेपी वेमानिकका ऐसा नेरीयाका कहा ऐसा कहना,
त्रिमप्रकार विषय पंचेन्द्रियका कहा ऐसा मनुष्यका मी कहना और वाणकपन्तर ओतिपी वेमानिकका ऐसा
असुरकुमार दयता का कहा ऐसा कहना ॥ ८ ॥ अब पाँचवा तीर्थकर पद्म प्राप्ति का द्वार कहते हैं—अहो
भगवन् ! रत्नमया पृच्छी क भेरीये अन्तर रहित निकल कर तीर्थकर होते हैं क्या ! महा गौतम !
किन्नेक तीर्थकर होते हैं किन्नेक भर्षी भी होते हैं अहो भगवन् ! किम कारण ऐसा कहा किन्नेक

अस्थेगातिए जो लभेज्वा ॥ से केणटुण भते ! एव बुच्चइ अस्थेगातिए लभेज्वा अस्थे
 गतिए जो लभेज्वा ? गोयमा ! जस्सण रयणप्पमापुठविनेरइयरस तित्थगरणाम
 गोयाइं कम्माइं वच्चाइं पुट्ठाइ कट्ठाइ पट्टुथियाइ गिठ्ठिआइ अमिणिठ्ठिआइं अभिसमण्णा
 गताइं उद्विण्णाइं, णा उवसताइ ह्वंति, सेण रयणप्पमा पुठ्ठि जेरइए रयणप्पमा
 पुठ्ठि जेरइएहिं तो अणतरं उग्गट्ठिच्चा तित्थगरत्तं लभेज्वा जस्सण रयणप्पमापुठ्ठि
 जेरइयस्स तित्थगर नामगोयाइ जोधच्चाइ जाय जो उद्विण्णाइ उवसताइ भवति सेण

वीर्यकर हाव है कितनेक नहीं भी होता है ! अहो गौतम ! जिस रत्नप्रया नरक के नेरीवेने पूर्व भव में
 वीर्यकर गात्र नाम कर्म का श्वाभोजन किया था, क्या हो, स्वर्ग हो, दुस्वर्ग हो, मारिष्ठ हो सीमानुराग स
 अनुभव हा विशेष प्रकार से अनुभव हो सन्मुख भाया हो उदय आया हो उपशान्तपन नहीं रहा हो
 वह रत्नप्रया नरक का नेरीया रत्नप्रया नरक से निरन्तर निकलकर वीर्यकर पद प्राप्त कर सकता है
 आराम रत्नप्रया नरक के नेरीये पूर्व भव में वीर्यकर गोम नामक कर्म का क्या नहीं किया वह नेरीया वहाँ से निर
 म्भर निकलकर वीर्यकर पद का प्राप्त नहीं होता है इस क्रिय अहो गौतम ! ऐसा कहा है कि कितनेक
 रत्नप्रया नरक के नेरीय निरन्तर निकल कर वीर्यकर पद प्राप्त कर सकते हैं और कितनेक नहीं कर सकते

रयण्यमां पुढवि नेरद्वर्हितो अणतर उज्ज्वलितो लमेजा से तेणट्टेण
 गोयमा ! एव बुधति अरथेगतिण लमेजा अरथेगतिण लमेजा ॥ एव जति
 याल्लयण्यमा पुढवि नेरद्वर्हितो तिस्थगरस लमेजा ॥ पक्कप्पमा पुढवि नेरद्वर्ण
 मत ! पक्कप्पमा पुढवि नेरद्वर्हितो अणतर उज्ज्वलितो तिस्थगर सल्लमज्जा ? गोयमा !
 ना इणट्टे समट्ट अत्तकिरिय पुण करेजा ॥ धूमप्पमा पुढवि नेरद्वर्ण पुच्छा ?
 गोयमा ! जो इणट्ट समट्ट विरत्तिपुण लमेजा ॥ समाए मत्ते ! पुच्छा ? गोयमा !

हे जेमा रत्नप्रभा का कहा वैसा ही सुर्करप्रभा और धामुद्धवा का भी कहना अहो भगवन् ! पक्कप्रभा
 पृथ्वी क नरीय पक्कप्रभा पृथ्वी से निरंतर निकल कर तिर्यकरपना प्राप्त कर सकते हैं क्या ! अहो गौतम !
 यह अर्थ योग्य नहीं परंतु केवल ज्ञान प्राप्त कर भन्ताक्रिया (मौल) प्राप्त कर सकते हैं पूज्यप्रभा महा
 की पृष्ठा ! अहो गौतम ! तिर्यकरपना और केवल ज्ञान का अर्थ नहीं कर सकते हैं परंतु सर्व विरति
 (मायु) पना प्राप्त कर सकते हैं तपप्रभा नरक की पृष्ठा ! अहो भोतम ! तिर्यकर पद केवलज्ञान और
 मायु पना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं पण विरताविरति [आवर्त] पण प्राप्त कर सकते हैं नीचे सातवी
 नरक की पृष्ठा ! अहो गौतम ! तिर्यकर पद केवलज्ञान साधुपना और अक्क पना तो नहीं प्राप्त कर

जो इण्डे समेटे त्रिरयात्रियं पुन लभेज्जा ॥ अहं सत्तयाए पुच्छा ? गोयमा ! जो इण्डे समेटे समत्तं पुन लभेज्जा ॥ अमुरकुमारेण पुच्छा ? गोयमा ! जो इण्डे समेटे अतकिरिय पुन करेज्जा ॥ एव निरंतरं आप आठकाइए ॥ सठकाइएण भंते ! सेउकाइएहिंते अणतरं उव्वज्जेज्जा ? गोयमा ! जो इण्डे समेटे, केवलं पण्य वम्म लभेज्जा सवणयाए, एव वाउकाइएणि ॥ दणस्सत्तिकाइएण पुच्छा ? गोयमा ! जो इण्डे समेटे, अतकिरिय पुन करेज्जा ॥ वेइविय तेइविय चउत्तिविषाण पुच्छा ? गोयमा ! जो इण्डे समेटे मण्यज्जव जाणं जाव उप्पगडेज्जा, पच्चिय

सकते हैं परंतु सम्बन्धही हो सकते हैं अमुरकुमार की पूछा ? तीर्थंकर पना ता प्राप्त नहीं कर सकत हैं परंतु कबही हो अन्तःक्रिया कर सकत हैं ऐसे ही दशों ही मयनगति का आनना और ऐसे ही वृक्षीकाय, अप्काय वनस्पतिकाय का आनना, अहो प्रगबन् ! तेजस्साय वेअरुकाय से निरंतर निकल आया पुन्यमे उत्पन्न होते हैं क्या ? अहो गौतम ! यह अर्थ पर्यय नहीं अर्थात् नहीं होते हैं परंतु तिर्यय होकर बरसी वर्णित पर्ये ग्रहण करना प्राप्त कर सकते हैं ऐसे ही वायुकाय का भी काना बान्निप तेइन्द्रिय चरितेन्द्रिय की पूछा ! अहो गौतम ! तीर्थंकरपना तो प्राप्त नहीं कर सकते हैं परंतु पनापर्यय आनना प्राप्त कर सकते हैं, पंचेन्द्रिय तिर्यय पुन्य वाण्यफन्तर एवोदिपी की पूछा ! अहो गौतम ! तीर्थंकर पर

याविरयं पुण लभेज्जा ॥ अहं सत्तभाए पुच्छं ? गोयमा ! गो
 सिध्दगारत्ते ॥ सक्कप्यमा नु लभेज्जा ॥ अनुरफुभारेणं पुच्छा ? गोयमा ! गो इण्ठे
 गोयमा ! गो इण्ठे समट्ठ, १ ॥ एव निरंतरं जाव आउकाइए ॥ तंउकाइएणं भंते !
 हितो पुच्छा ? गायमा ! गो इ यणुस्सेनु उवयधेज्जा ? गोयमा ! गो इण्ठे समट्ठ, केवलं
 हितो पुच्छा ? गोयमा ! अरथेगातिव वाउकाइएण ॥ दणस्सतिकाइएण पुच्छा ?
 यत्तदेवचं, गवर सक्कप्यमा पुठवि २ पुण करेज्जा ॥ धेइदिय तंइदिय चउरिदियाण
 वेमणिइहितोय अणुत्तरोववातियवज्ज मणपज्जव जाण जाव उप्पादेज्जा, पविदिय

ही वाक्चरित का कहना जिस नेरीये ने वक्त्रवर्ती की पूछा ? सीधकर पना तो मात नहीं कर
 होवे है बाकी क नहीं होवे है अहो गगवन् ! अर्कर न्नों ही यवनपरिहा जानना और वेने ही
 वक्त्रवर्त पद को प्राप्त होत है क्या ? अहा गौतम ! यह अर्थ तेजस्काय तेजस्काय से भिर-डर निकल
 पयन्त कहना विर्यव मनुष्य की पूछा ! अहा गौतम ! यही अर्थोत्तर नहीं होवे है परंतु विर्यव होकर
 जोतिषी वैधानिक की पूछा ? अहो गौतम ! कितनेक श्रम-काय का भी कहना वेदश्रिय वेदश्रिय
 दात है जैसा यह वाक्चरित पद प्राप्त करने का बोधीस दृढकर्मा कर सकत है परंतु यनाऽपर्यव ज्ञान तक
 कहना, परंतु इतना विशेष दूसरी अर्कर ममा पुच्छी क मी निच्छी पूछा ! अहो गौतम ! सीधकर पर
 रामेनेम के होवे का भी कहना परम इतना विषय कि वैधानिक

जहृण्णं भवणवासीसु उक्खोसेण अण्णुएकण्ये ॥ १२ ॥ एव अमिओगाणावि
॥ १३ ॥ सल्लिगीण दसण वावण्णगारं जहृण्णेण भवणवासीसु उक्खोसेण उव्वरिमगे
थिज्जएसु ॥ ११ ॥ कतिथिहेण भंत ! असण्णियाउए पण्णसे ? गोयमा ! चउन्विहे
असण्णियाउए पण्णसे तंजहा णरइएय, असण्णियाउए जाव देव असण्णियाउए ॥
असण्णीण भते ! जीवे किं नरइयाउय पकरति जाव दवाउय पकरेति ? गोयमा !
णेरइयाउयपि करेति जाव दवाउयपि करेति ॥ णरइयाउयं करमाणे जहृण्णेण
वसवाससहस्ताइ उक्खोसेण पल्लिओवमरस अससखज्जइ भाग पकरति ॥ तिरिक्खज्जोणिया

आकाश के अपूर्णवादी भयन्य सौपर्ण देवलोक उत्कृष्ट स्वतक स्रुत देवताक तक, ११ तिर्यंच लघन्य मुच
नपति में उत्कृष्ट साधार आठव देवलोक में, १२ आजीविका पेयी गाथात्मक मतावमन्वी जयन्य उत्कृष्ट
अणुत (वारेव) दक्षमाक में, १३ एस ही अभियागिका भी खानना १४ जन सिंगी सम्यक्त्व मृष्ट
प्रदम्य मुचनपति उत्कृष्ट रूपर का प्रियेयक ॥ ११ ॥ बारवा भमर्षी का द्वार कहत है—अहो भगवन् !
भमर्षो के भापुल्य किसने प्रकार क कह है ? अहो गीतम ! असर्षी के चार प्रकार क आयुल्य
कह है सण्या—१ नेरीया असर्षो आयुल्य यावत् देव असर्षो आयुल्य असर्षी नरीय का आयुल्य
करता इवा भगवत् दत्त इओर वर्ष का आयुल्य करता है उत्कृष्ट एक पदयोगम के असस्रपावने भाग का

गोयमा ! पंचविह्रे पणसे तजहा पुढविकाइयणगिंदिय ॥ एयस्सण भते !
 वणस्सइ काइए एगिंदिय ओरालिय सरिरे ॥ पुढविकाइय एगिंदिय केता अप्पाव। बहु
 भते ! कतिविह्रे पणसे ? गोयमा ! दुविह्रे पणसे तजहा सुहुं—असण्ण
 एगिंदिय ओरालिय सरिरे बादर पुढविकाइय एगिंदिय ओरालिय सरिरेय । ॥ ण्णि,
 पुढविकाइय एगिंदिय सरिरेण भता कतिविह पणसे ? गोयमा ! दुविह पण्ण
 तजहा-पज्जत्त नुहुम पुढवि काइय एगिंदिय ओरालिय सरिरे, अपज्जत्त सुहुम पुढवि

बुरे रूप बनान वाला वैष्णवशरीर ? आहारक शरीर आहारक जीव के ही होते अर्थात् घटते पूर्व धारक
 को सशय की निवृत्ति का करता आहारक शरीर । तेमा लक्ष्या प्रगट करने कारनसूत अपि समान
 पुद्गल का समूह आहार आदि ब्रह्म किये पुढलों का पश्चान्निवासा तेमस शरीर, और ५ कामान शरीर
 कम। के पुद्गल क समुदाय रूप औपारिकादि शरीर निधत्ति के कारणभूत वह कार्यन शरीर महो
 भगवन् । औपारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? महो गौतम ? पाँच प्रकार का कहा है तथया ।
 पकेन्द्र का औपारिक शरीर यावत् पंचेन्द्र का औपारिक शरीर. अहो भगवन् ! एकेन्द्रिय का
 औपारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! पाँच प्रकार का कहा है तथया—? पुच्छी
 काम चक्रेन्द्र का औपारिक शरीर यावत् पञ्चविकार चक्रेन्द्रिय का औपारिक शरीर अहो

काश्यपुर्गिदिय ओरालियसरीरे ॥ बाहर पुढवि काहएवि एव धेव, एव जाव
वजरमइ काहय पुर्गिदिए ओरालियसरीरति ॥ धेइदिय ओरालिए सरीरेण भते ॥ कतिविहे
पणत्त ? गोयमा ! दुविहे पणत्ते तजहा पज्जत्ता धेइदिय ओरालिय सरीरेय, अपज्जत्त
वइदिय ओरालियसरीरेय ॥ एव तइदिय च्छठरिदियावि ॥ पच्चिदिय ओरालिय सरीरेण
भते ॥ कतिविहे पणत्ते ? गोयमा ! दुविहे पणत्ते तजहा तिरिक्खजोणिय पच्चिदिय
ओरालिय सरीरेय, मणुत्सपच्चिदियओरालियसरीरेय ॥ तिरिक्खजोणिय पच्चिदिय

मगवन् ! पृथ्वीकाय एकान्द्रिय का औदारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ? अहो गौतम ! दो
प्रकार का कहा है तथया ' सूक्ष्मपृथ्वीकाय एकान्द्रियका औदारिकशरीर और २ बाहर पृथ्वीकाय एकान्द्रिय
का औदारिक शरीर ॥ अहो मगवन् ! सूक्ष्मपृथ्वीकाय एकान्द्रियका औदारिकशरीर कितने प्रकारका कहा है ? हे
गातम ! दो प्रकारका कहा है तथया ' पयास मूत्रमूत्र पृथ्वीकाय एकान्द्रिय का औदारिक शरीर, और २
अपर्याप्त मूत्रमयनीकाय एकान्द्रियका औदारिक शरीर ॥ इस प्रकार ही बाहरपृथ्वीकाय एकान्द्रिय के
भी दोभेद कहना यह वार मद् जैसे पृथ्वीकायके क्रिये एवमही वनस्पति तदुपाधोस्यावरके चार २ भेद कहना।
अहो मगवन् ! एकान्द्रियके औदारिकशरीरकितने भेद कहे हैं ? अहो गौतम ! दोभेद कहे हैं तथया ' पर्याप्त बेन्द्रियका
औदारिकशरीर, अपर्याप्त बेन्द्रिय का औदारिकशरीर ॥ एवमही तेहन्य और चौरिन्द्रिय के औदारिक

ओरालिय सररीण भते ! कतिविहे पणचे ? गोयमा ! तिबिहे पणचे तजहा जलयर तिरिक्ख
 जोपिय पचिदिय ओरालिय सररी, यलयर तिरिक्ख जोणिय पचिदिय तरालिय, सररीय, झहय
 तिरिक्ख जोणिय पचिदिय तरालिय सररीय ॥ अलयर तिरिक्ख जोणिय पचिदिय
 ओरालिय सररीण भते ! कतिविहे पणचे ? गोयमा ! दुनिहे पणचे तजहा
 समुच्छिम अलयर पचिदिय तिरिक्ख जोणिय ओरालिय सररीय, मम्मवकतिय जलयर
 पचिदिय तिरिक्ख जोणिय ओरालिय सररीय ॥ समुच्छिम जलयर पचिदिय तिरिक्ख जोणिय

शरीर के मेहदना ॥ 'अहो मयबन् ! पचेमिन्त्र के औदारिक शरीर के कितने मेह करे हे ? अहो गीतम !
 दो मेह कर हे कृपा-तिर्विषयोमिह पचेमिन्त्र का औदारिक शरीर और मनुष्य पचेमिन्त्र का औदारिक
 शरीर अहो मयबन् ! तिर्विष योनिक पचेमिन्त्र के औदारिक शरीर के कितने मेह करे हे ? अहो
 गीतम ! सीम मेह करे हे कृपा—' जलकर तिर्विष योनिक पचेमिन्त्र का औदारिक शरीर, एककर
 तिर्विष योनिक पचेमिन्त्र का औदारिक शरीर, केकर तिर्विष योनिक पचेमिन्त्र का औदारिक शरीर अहो
 मयबन् ' जलकर तिर्विष योनिक पचेमिन्त्र के औदारिक शरीर के कितने मेह करे हे ! अहो गीतम !
 हा कर करे हे कृपा—समुच्छिम जलयर पचेमिन्त्र तिर्विष योनिक का औदारिक शरीर, औ-

पश्चिम ओराण्डिय सरीरेणं भते ! कर्तिविहे पण्णत्ते १ गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा पञ्चसग समुच्छिम पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओराण्डिय सरीरेय, अपञ्चसग समुच्छिम पंचिदिय तिरिक्खजोणिय ओराण्डिय सरीरेय ॥ ग्व गम्भवक्कतिपुत्ति ॥ थल्यर तिरिक्ख जोणिय पंचिदिय ओराण्डिय सरीरेण भते ! कइविहे पण्णत्ते १ गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा-धउण्णथल्यर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओराण्डिय सरीरेय, परिसथ थल्यर तिरिक्खजोणिय पंचिदिय ओराण्डिय सरीरेय ॥ धउण्णथल्यर पंचिदिय ओराण्डिय सरीरेणं भते ! कइविहे पण्णत्ते १ गोयमा ! दुविहे पण्णत्ते तजहा-समुच्छिम धउण्णद

असुवर विषेव पेवेन्द्रिय का औदारिक धरीर भरो भगवन् ! समुच्छिम असुवर पेवेन्द्रिय विषेव योनिक क औदारिक धरीर के कितने भेद करे हैं ! भरो गौतम ! दो भेद करे हैं तथया—पयोस समुच्छिम पेवेन्द्रिय विषेव योनिक का औदारिक धरीर और अपयोस समुच्छिम पेवेन्द्रिय विषेव योनिक का औदारिक धरीर इस प्रकार ही गर्भन असुवर के पयोस अपयोस से दो भेद करना पर पार भेद असुवर के करे भरो भगवन् ! स्पसुवर विषेव पेवेन्द्रिय औदारिक धरीर के कितने भेद करे हैं ! भरो गौतम ! दो भेद करे हैं, तथया—' धमुगद स्पसुवर पेवेन्द्रिय का औदारिक धरीर और पर

पंचदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरिरेय, भुअपरिसप्प थलयर पंचदिय तिरिक्खजोणिय
ओरालिय सरिरेय, उरपरिसप्प थलयर पंचदिय तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरिरेय भंते।
कतिविह पणत्त? गायमा। दुद्धिह पणत्ते तजहा-समुच्छिम उरपरिसप्प थलयर पंचदिय
तिरिक्खजोणिय ओरालिय सरिरेय गम्भक्कतिय उवपरिसप्प थलयर पंचदिय तिरि
क्खजोणिय ओरालिय सरिरेय ॥ समुच्छिम बुद्धिह पणत्ते तजहा-अपजत्त समुच्छिम
उरपरिसप्प थलयर तिरिक्खजोणिय पंचदिय ओरालिय सरिरेय, पजत्त समुच्छिम
उरपरिसप्प थलयर तिरिक्खजोणिय पंचदिय ओरालिय सरिरेय ॥ एव गम्भक्कतिपवि,

औदारिक क्षीर ऐसे है। गमज क मी दो भद कहना अहा भगवन् ! परितर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय
तिर्यक् योनिक के औदारिक क्षीर के कितन भेद कह है ? अहो गौतम ! दो भेद कहे हैं तथया—
' उरपरितर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक का औदारिक क्षीर और मुमपरितर्प स्थलचर पंचेन्द्रिय
तिर्यक् योनिक का औदारिक क्षीर अहो भगवन् ! उरपरिसप्प स्थलचर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक के
आदारिक क्षीर क कितने भेद कह है ? अहा गौतम ! दो भेद कहे हैं तथया—पर्याप्त और अपर्याप्त
ऐस ही गर्भन क भी पयाप्त अपर्याप्त दो भेद करना गौ धार भेद उरपरिसप्प स्थलचर पंचेन्द्रिय के ऐसे

उत्तरपरिसर्य षट्कभेदो॥एवं भुयपरिसर्यावि समुच्छिन्ना गम्भवर्कतियाय ॥ समुच्छिन्ना दुविहा
स्वहयरा दुविहा पण्णत्ता तजहा समुच्छिन्नाय, गम्भवर्कतियाय ॥ समुच्छिन्ना दुविहा
पण्णत्ता तजहा पञ्चाय, अपञ्चाय ॥ गम्भवर्कतियावि पञ्चाय अपञ्चाय ॥ मणुस्स
पञ्चदिव ओरालियसरीरेण भत ! कतिविह पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविह पण्णत्ते
तजहा समुच्छिन्नामणुस्स पञ्चदिव ओरालियसरीरेय, गम्भवर्कतिय मणुस्स पञ्चदिव
ओरालियसरीरेय । गम्भवर्कतिय मणुस्स पञ्चदिव ओरालिय सरीरेण
भते ! कतिविह पण्णत्ते ? गोयमा ! दुविह पण्णत्ते तजहा पञ्चाय गम्भव
कतिय मणुस्स पञ्चदिव ओरालिय सरीरेय, अपञ्चाय गम्भवर्कतिय मणुस्स पञ्चदिव

एव ही मुद्रपरिसर्य के भी—१ समुच्छिन्ना, २ गर्भज, ३ पर्याप्त और ४ अपर्याप्त चार भेद कहना लखर
भी दा प्रकार के कहें तथ्या—समुच्छिन्ना और गर्भज इन के एकैके के दो २ भेद पर्याप्त और अप-
र्याप्त भेदो भगवन् ! मनुष्य पञ्चदिव ओरालिक शरीर के कितन भद कहे हैं ? अहो गीतम ! दो
भेद कहे हैं तथ्या—१ समुच्छिन्ना मनुष्य पञ्चदिव का ओरालिक शरीर और गर्भज मनुष्य पञ्चदिव का
ओरालिक शरीर इन दो समुच्छिन्ना के भी दो भेद पर्याप्त और अपर्याप्त, तेस ही भयज क भी दो भेद

ओरालियसरीरेया ॥ १ ॥ ओरालियसरीरेण भते । किं सठिण् पण्णत्ते ? गोयमा । णाणासठाण
 सठिण् पण्णत्ते ॥ पणिंदिय आरालियसरीरण भते । किं सठिण् ? गोयमा । णाणासठाणसठिण्
 पण्णत्ते ॥ पुढाविकाइय पणिंदिय ओरालियसरीरण भते । किं सठिण् पण्णत्ते गोयमा । मसूर
 वंद सठाण सठिण् एव सुहुम पुढविकाइयाणवि, वादराणवि एवचेंद, पजत्ता
 पज्जण्णवि एवचेंद ॥ अठक्काइयपणिंदिय ओरालिय सरीरेण भते । किं सठिण्
 पण्णत्त ? गायमा । थिण्गविंदु सठाण सठिण् पण्णत्ते, एव सुहुम वादर पज्जत्ता

वर्यास भौर अपर्णास पर ओदारिक शरीर क मदानुभेद का प्रथम द्वार हुआ ॥ १ ॥ अशो मगवन !
 भौदारिक शरीर किम मस्थान से सस्थित होता है ? अहा गोतम ! अनेक प्रकार क मस्थान स सस्थित
 है अशो भगवन् ' एकान्तिय का ओदारिक शरीर किम मस्थान से सस्थित है ! अशो गोतम ' अनेक प्रकार
 क मस्थान य सस्थित है अहा मगवन ! 'पृथ्वीकाया एकान्तियका शरीर किम मस्थान से सस्थित है ?
 अहा गोतम ! समूर का अपद्रुल (दाह) तथा चंद्रमा क मस्थान से सस्थित पृथ्वीकाया के नीचों का शरीर है
 मूलमहादर पयाप्य अपयाप्य पृथ्वीकाय का भी पताही कहना अप्रकाय का स्थित कथिन्तु—यानी क सुदुर्बुदे के
 मस्थान स मस्थित है, वे प्रस्काय का शरीर मूर्त के भार के असे मस्थान से सस्थित है, वायुकाय का

पञ्चाणत्रि ॥ तउकाइय एगिंदिय उरालिय
 गोयमा ' सुईकलाव सठाण सठिए
 अपञ्चाणत्रि ॥ वाउकाइयाणवि पढागासठ
 अपञ्चाणत्रि ॥ घणफ्तिकाइयाण गाण
 पञ्चा अपञ्चाणत्रि ॥ वेइदिण ओरालिय
 गोयमा ' हुइसटाणसठिए पणचे, पव पणुरस

परमा पताका के सस्यान से सस्थित है और वनस्याति विह पणचे राजहान्यज्जग गम्भव
 पृथ्वीकाय के मूसम वादर पर्याप्त अपयान्त्र चार मद कापञ्चग गम्भवकृतिय मणुरस पञ्चदिय
 अहा भगवन् ! वदन्तिय का भीदारिक क्षीर किमु सरूप पर्याप्त और ४ अपर्याप्त चार भेद कहना लखर
 से सादृश्य है, एस ही वदन्तिय चौरद्विष सीनों के पर्याप्त इन क एकेक के दो २ भेद पर्याप्त और अप-
 कहना भरी गगवन् ! तिर्यग पंचन्तिय के भीदारिक के कितन मद्र करे हैं ! अहो गीतम ! दो
 त ही नकार का सस्यान कहा है तथया—१ ममचतुस्त्रोदारिक क्षीर और गर्भज मनुष्य पंचन्तिय का
 पस्यान, ४ वापन सस्यान, ५ नृज्य सस्यान और ६ ई और अपर्याप्त, तैस ही गर्भज के भी दो मद्र

विद्याणां॥ पांचाक्षर्य तिरिस्त्रजोणिय ओरालि

गोयमा ! छविहे सठाणसठिए पणचे तजह
सठाणसठिए एव पज्जचापज्जचाणवि, समुब्धि
सरीरन भते ! किंसठाणसठिए पणच ?
पज्जचापज्जचाणवि ॥ गम्भवफतिय तिरिक्
भते ! किंसठाणसठिए पणचे ? गायमा !
पणवि, वादराणवि एवचेव, पज्जचा
ओरलिय सरीरेण भते ! किंसठाए
पणचे, एव सुहुम वादर पज्जचा

अपगप का भी कहना अहो भगवन् ! समूहम्

वयामस्यान हे' अहो गौतम ! हुटक सस्यान स ससिदि का प्रयप द्वार दुश ॥ १ ॥ अहो भगवन् !
भगवन् ! गर्भज विर्येय यानिक पयोन्त्य के औदारिहा गौतम ! अनेक प्रकार के सस्यान स सस्यव
ही प्रकार के सस्यान स सस्यव हे तथया—समवत्सुस्थान स सस्यव हे ! अहो गौतम ! अनेक प्रकार
अपगप का भी कहना इस प्रकार सस्यान आश्रय यका उदारिक शरीर किस सस्यान से सस्यव हे !
मलचर पचन्द्रिय विर्येय योनिक के औदारिक शरीर निन से सस्यव पृथ्वीकाया के मीनों का शरीर हे
प्रकार के सस्यान स सस्यव हे, तथया—समवत्सु ॥ अपकाय का स्थिद्विन्दू—यानी क एवधुदे के
नेसे सस्यान से सस्यव हे, वायकाय का

समचरससठाणसठिए जाव हुढसठाण सठिए, एव पज्वा अपज्वाणवि, एव मेते
तिरिक्खजोगिया ओहियाण जव आलावगा ॥ जलयर पधिय तिरिक्खजोगिय
ओरालियसरीरेण भत । किं सठाणसठिए पणसे ? गोयमा ! छम्बिह सठाणसठिए
एणच तजहा समचठरंस जाव हुढे, एव पज्वापज्वाणवि, ॥ समुच्छिम
जलयरा हुढसठाणसठिए एतसिं चैव पज्वापज्वाणवि एवंचव गम्भवक्कंसिय
जलयरा छम्बिह सठाणसठिए, एव पज्वापज्वाणवि, एव जलयराणवि जवसूत्ताणि

अपर्याप्त का भी कहना यों यह तिर्यक् योनिक के औधिक नव आलापक (१) समुच्चय तिर्यक् का, २
समुच्चय तिर्यक् के पर्याप्त का और समुच्चय तिर्यक् क अपर्याप्ता का यह ३ आलापक समुच्चय तिर्यक् के
कह, ऐसे ही ३ आलापक समुच्छिम तिर्यक् के और ३ आलापक गर्भज तिर्यक् के सब ९ हुये) अहा मनवन्!
असन्नर पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक के औदारिक शरीर किस संस्थान स सस्थित है ? जहो गौतम !
उ ही संस्थान से मस्थित है ऐसे ही पर्याप्त अपर्याप्त भी उ ही संस्थान से संस्थित है, समुच्छिम अन्नर
और इस के पर्याप्त अपर्याप्त एक हुढ संस्थान से संस्थित है गर्भज अन्नर और इस के पर्याप्त अपर्याप्त
उ ही संस्थान से संस्थित है वों ० आलापक अन्नर के भी कहना ऐसे ही नव आलापक समुच्छिम

एव चटण्य थलयराणवि, एव उरपरिसप्यथलयराणवि, भुयपरिसप्यथलयरा॥

एवं स्वहयराणवि णवसूराणवि णवरं सत्त्वस्य समुच्छिन्ना हुहसंठाणसठिया भाणि
यदथा इयर छसुवि ॥ मणुरस पंचिविय ओरालियसरीरण मत ! किं सठाणसंठिए
पण्णचे ? गोयमा ! छंभिह सठाणसंठिए पण्णचे तजहा समचठरंसे जाव हुह,
पञ्चापञ्चाणवि एव चव गभवकतियाणवि एव चव पञ्चापञ्चाणवि
एव चव ॥ समुच्छिन्नाण पुच्छा ? गोयमा ! हुहसठाणसठिया ॥ २ ॥ ओरालिय
सरीरस्सण मत ! कमहालिया सरीरागाहणा पण्णचा ? गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स

स्वत्त्व के, नव आलापक उरपरिमर्ष स्वच्छर के, नव आलापक भुयपरिसप्य स्वच्छर के और ऐसे ही
नव आलापक लचर तिर्यच के सर्व स्थान समुच्छिन्न क ईद न स्थान कहना और गर्भमंज क छ ही मस्थान
कहना 'महो मगवन्' मनुष्य वचेन्द्रि क मोक्षारक शरीर किस मस्थान म संस्थित कहा है ! महा
गीतम ! छ ही प्रकार क मस्थान मे संस्थित कहा है तथा—'समचतुस्र यावत् पुढक ऐस ही
पयाप्य अपर्याप्य के भी छ ही मस्थान कहना और गर्भम मनुष्य के तथा पर्याप्य अपर्याप्य
के भी छ छ मस्थान कहना, समुच्छिन्न मनुष्य क और समुच्छिन्न के अपर्याप्य के
एक पुढ क मस्थान कहना ॥ २ ॥ जब अहगाहना द्वार करते हैं—'महो मगवन्' मोक्षारिक शरीर की

असस्त्रैज्जइभाग उक्कोसेण सातिरेग जायणसहस्स ॥ एगिदिय ओरालियस्सवि
एव चैव जहा ओहिस्स ॥ पुढविकाइय एगिदिय आरालियसरीरेण भते । क महालिया
पुप्फा ? गोयमा ! जहण्णयि उक्कोसेणवि अगुल्लस्स असस्त्रैज्जइभाग, एवं अपच्चगाण
वि पच्चत्तगाणवि एव सुहुमाण पच्चत्तापच्चसाणवि, चायराण पच्चत्तापच्चसाणवि
एव एसो नव भेदो ॥ जहा पुढविकाइयाण तहा आठकाइयाण, तेउकाइयाणवि,
वाठकाइयाणवि ॥ वणस्सइकाइय ओरालियसरीररमण भत्त । के महालिया सरीरो
गाहणा पणत्ता ? जहण्णेण अगुल्लस्स असस्त्रैज्जइभाग उक्कोसेण सातिरेग जायणसहस्स

कितनी बड़ी अवसाहना करी है ! अहा गौतम ! अपन्य अंगुल के असंख्यातव प्राप्त वरुष्ट नुष्ट
 अधिक एक हजार पाजन की एकन्द्रिय के औदारिक क्षीर की मी इतनी ही बरगाहना करना मेझी
 अधिक करी अहा मगधन् ! पृथ्वीकायिक एकेन्द्रिय की कितनी बड़ी बरगाहना करी है ? महा
 गौतम ! जप-प वरुष्ट अंगुल के असंख्यातव माग, ऐसे ही अपर्याप्त की और पर्याप्त की मी करना,
 यों तीन गुन हुए ऐसे ही '१' समुच्चय मूल्य की और मूल्य के पर्याप्त अपर्याप्त की मी
 करना यह १ मूल हुए और ऐसे ही समुच्चय बादर की तथा बादर के पर्याप्त अपर्याप्त की मी
 करना यह पृथ्वीकाय के मी आन्नायक गुण जैसे पृथ्वीकाय के गुण जैसे ही अपर्याप्त के

जहण्णेण अंगुलस्स असम्बज्जतिभाग उक्कोसेण सातिरेग जार

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असम्बज्जतिभाग उक्कोसेण ज्ञोयणसदस्स सातिरेग पञ्चत्ताणवि एव धय, अपज्जत्ताण जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असम्बज्जतिभाग, सहमाणा पज्जत्ता अपज्जत्ताणय तिष्ठपि जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अंगुलस्स असम्बज्जतिभाग ॥ धेह्मदिय आरालिय सरिरस्सण भत्त ! कं महालिया सरिरोगाहणा पण्णत्ता ? गोयमा ! जहण्णेण अंगुलस्स असम्बज्जतिभाग उक्कोसेण बारसजोयणाइ

भी ० मूत्र, वेजस्त्राय के भी मत्र नय और वायुकाया के भी ० मूत्र कहना अशो भगवन् ! वनस्पति काया के औदारिक शरीर की किन्तनी अबगाहना करी है ? अशो गौतम जयन्य अंगुल के असस्यातवे माग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक इमार यामन की क्यों कि समुद्र एक इमार योजन के ऊँटे हैं वन के पानी के ऊपर कमल पुण्ड्र ठरे हुये हैं अवर्षात्त वनस्पति की जयन्य उत्कृष्ट अंगुल के असस्यातवे माग पयात्त की नयय अंगुल के असस्यातवे माग उत्कृष्ट कुछ अधिक एक इमार योजन की बादर वनस्पति की पुच्छा ! अशो गौतम ! जयन्य अंगुल के असस्यातवे माग उत्कृष्ट एक इमार योजन धानेरी, बादर पयात्त की भी इतनी ही कहना अवर्षात्त की जयन्य उत्कृष्ट अंगुल के असस्यातवे माग की कहना मूत्र

एवं सर्वथयत्रि अपञ्चत्तयाण अगुलस्स - असंख्खेतिमागं
पञ्चत्तयाण जहेव ओरालियस्स ओहियस्स एवं तेइदियाणवि तिष्णिमाज्जयाइ, चउरि-
याणवि चत्थारिगाठयाइ, पच्चिदिय तिरिक्खजोमियाणं उक्कोसेणं जोयणसहस्सं, एवं
समुच्छिन्नामाण एय गम्भन्नकतियाणवि एव चेव नवमेदो माणियव्वो ॥ एवं जल्यराणवि
जोयणसहस्स नवमेदो थल्यराणवि नवमेदो, उक्कासेण उगाठयाइ पञ्चराणवि एवं
च ॥ समुच्छिन्नामाण पञ्चराणय उक्कोसेण गाठयपुहुचं, गम्भन्नकतियाण उक्कोसेणं छ
गाठयाइ, पञ्चत्तगाणय आहिय चठप्पय थल्यराण पञ्चत्तय गम्भन्नकतिय पञ्चत्तयाण

वनस्पति की और मूल के पार्श्व अपर्याप्त की जपन्य उत्कृष्ट अगुल के असरपातरे मान की कल्पा नही ममबन् ।
 वैश्विके औन्नतिक नरीर की कितनी मरगाहना की है ! अहो गीतप ! अयन्य अंगुल के असरपातरे मान
 उत्कृष्ट बारा योजन की, यों पूर्व स्थान अपर्याप्त की ता अंगुल के असरपातरे मान
 और पचाप की लेन्द्रिय की तीनगाऊकी, पौरिन्द्रिय की चार गाऊकी, समुचय विवेकपरेन्द्रिय की उत्कृष्ट
 द्रव्य हमार योजन की, ऐसे हो मनु ईउन की धीर गभज की दानों की हमार २ योजन की यद नर मय
 समुचय विवेक पर्याप्त के हुवे ऐसे ही जलधर पर्याप्त की भी उत्कृष्ट एक हमार योजन की है जिस
 के की एक प्रकार ० केट-कटभर (समुचय मज्जमर, २ पर्याप्त, ६ गभज, ६

प तर्कोसंग छागाठयाई, समुच्छिमाण पञ्चत्ताणय गाठयपुहुत्त उक्कोसेणं एवं, उरपरिसं
 प्पणावि, ओहिय गम्भक्कतिय पञ्चराणां जोगणसहस्सें समुच्छिमाण जोगणपुहुत्त,
 भुययरिसप्पाणं ओहिय गम्भक्कतिय उक्कोसेण गाठयपुहुत्त, समुच्छिमाण धणुयपुहुत्त
 खहयराणं ओहिय गम्भक्कतियाण समुच्छिमाणय तिण्हवि उक्कोसेण धणुहपुहुत्त
 इमाओ संगहजिगाहाओ—जोगणसहस्सछगाठयाइ,

अपपाप्प ७ समूहिंछम पर्पाप्प और ९ अपपाप्प एं ९] स्वस्वर के मी ९ आत्मपद कहना मिस
 में गर्मन पर्पाप्प की चत्तुष्ट ६ गाऊकी अबमाइना कहना, और समूहिंछम पर्पाप्प की चत्तुष्ट गाठ
 पृथक् की कहना गम्भ पर्पाप्प की यो चत्तुष्ट ६ गाठ की कहना औपिक चतुष्ट स्वस्वर की ६
 पर्पाप्प गर्मन की छ गाठकी, समूहिंछम पर्पाप्प की पृथक् गाठ की, एसे ही चत्तुष्ट की औपिक स्या
 गम्भ पर्पाप्प की हजार योजन की, समूहिंछम की प्रत्येक योजन की, मुनपरिसंकी औपिक स्या गर्मन
 की चत्तुष्ट पृथक् गाठ की, समूहिंछम की चतुष्ट पृथक् की, स्वर की औपिक स्या गर्मन की और
 समूहिंछम की चत्तुष्ट पृथक् चतुष्ट की मय विर्यच पंचेन्द्र की सप्त में अबमाइना दर्शाते ६ ग्रही
 गाया करते हैं—जस्वर की हजार योजन की, चतुष्ट स्वस्वर की छ गाठ की, उरपरि
 पञ्च परं की हजार योजन की, मुनपर की पृथक् गाठ की, स्वर की पृथक् चतुष्ट की,

उक्कोसेणवि अगुलस्स असस्वज्जति भाग समुत्तिमाण जहण्णेणवि उक्कोसेणवि अगुलस्स
असस्वज्जति भाग गम्भमक्कतिथाण पज्जाणय जहण्णेण अगुलस्स असस्वज्जति भाग,
उक्कासेण तिप्पिगाठयाई ॥ ३ ॥ घेठान्विय सरिण भत्ते ! कइविहे पण्णत्त ?
गोयमा ! दुनिहे पण्णत्ते तज्झा एग्गिदियवउन्विय सरिणय, पधिदियवेउन्वियसरीरेय
जति एग्गिदियवेउन्वियसरीरेय किं वउक्काइय एग्गिदियवेउन्वियसरीरेय
अवाउक्काइय एग्गिदिय वेउन्वियसरीरेय ? गायमा ! वाउक्काइय एग्गिदिय वउन्विय

की ५० घनुप्य की भरत एरयन क्षत्र में पाहल बैठत आरे तीन गाव की छतरने दो गाव की,
दुमर बैठते आर दा गाव की ततरत एक गाव की, तीसर बैठत आरे एक गाव की, उतरसे ५००
घनुप्य की, चौथ बैठत आर ५०० घनुप्य की ततरते ७ हाथ की पावन बैठत आर ७ हाथ की ततरते
१ हाथ की, छठ बैठते १ हाथ की ततरत एक हाथ में कुछ कम की ततरावणी कालं म, भयंम बैठते
आरे में कुछ कम एक हाथ की ततरते एक हाथ की, दूसरे बैठत आरे एक हाथ की ततरत ७ हाथ की,
तीसर बैठते आर ७ हाथ की, उतरत ५०० घनुप्य की, चौथ बैठत ५०० घनुप्य की उतरते एक
गाव की, पांचव बैठत एक गाव की ततरत दो गाव की और छठ बैठते दा गाव की और उतरत तीन
गाव की यह औदारिक क्षीर का अधिकार समाप्त हुआ ॥ ३ ॥ अर वैक्रम क्षीर वा कहत है-अहो
प्रभवत्त ! उक्कत क्षीर कितन प्रकार क रहे हैं ? महा गौतम ! वैक्रम क्षीर वा प्रकार के कहे हैं,

सरीर, जो अवस्थकाइय एर्गिदिय वेतन्वियसरीरेय, जइ वात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय सरीर, कि सुदुमवात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय सरीरे, बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय सरीरे ? गोयमा ! जो सुदुमवात्काइय एर्गिदिय वेतन्वियसरीरे, बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्वियसरीरे ॥ जइ बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय वेतन्विय सरीरे, कि पञ्चत्तय बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय सरीरे, अपञ्चत्तय बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय सरीरे ? गोयमा पञ्चत्तय बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्वियसरीर, जो अपञ्चत्तय बाहर वात्काइय एर्गिदिय वेतन्विय सरीरे ॥ जइ पञ्चिदिय वेतन्वियसरीर कि गेरइय पञ्चिदिय वेतन्वियसरीरे जाव कि देवपञ्चिदिय

वयया—एकन्त्रिय का वैक्रेय करीर और पञ्चन्त्रिय का वैक्रेय करीर यदि एकन्त्रिय के वैक्रेय करीर हो तो क्या वायु काण क वैक्रेय करीर है कि वायुकाया विना अन्य एकन्त्रिय के वैक्रेय करीर है ? कहा गोठम ! वायु काया के ही वैक्रेय करीर है अन्य एकन्त्रिय के नहीं है यदि वायुकाया एकन्त्रिय के वैक्रेय करीर है तो क्या मूल्य वायुकाया एकन्त्रिय क वैक्रेय करीर है की बाहर वायुकाया एकन्त्रिय के वैक्रेय करीर है ? अहो मोतम ! मूल्य वायुकाया एकन्त्रिय के वैक्रेय करीर नहीं है परंतु बाहर वायुकाया एकन्त्रिय के वैक्रेय करीर है यदि बाहर वायुकाया एकन्त्रिय क वैक्रेय करीर है ॥

सदृशर सभेजवासाउप गम्भयकतिप पौचिदिग तिरिस्खजोणिप वेठाब्बियसरीरे ?

तोपमा । जलपर सखजवासाउप गम्भयकतिप पौचिदिग तिरिस्खजोणिप वेठाब्बियसरीरे-

पलपर सखजवासाउप गम्भयकतिप पौचिदिग तिरिस्खजोणिप वेठाब्बियसरीरेवि,

तर सखजवासाउप पौचिदिग निरिस्खजोणिप वेठाब्बिय सरीरेवि ॥ जइ जलपर

जवासाउप वेठाब्बियसरीरे किं पञ्चराग जलपर सखेजवासाउप गम्भयकतिप

वेदिप निरिस्खजोणिप वेठाब्बियसरीरे, अगज्जनाग जलपर सखेजवासाउप

गम्भयकतिप पौचिदिग तिरिस्खजोणिप वेठाब्बियसरीरे ? तोपमा ! पञ्चराग

जलपर सखेजवासाउप गम्भयकतिप पौचिदिग तिरिस्खजोणिप वेठाब्बियसरीरे

विं छरीर हे वरतु धर्ममप्याग बपागुमाज गभज पंचन्य निरन के वेक्रेप छरीर नहीं है यदि ममयात

पौचिदिग मभत पंचेन्य निरप क वेक्रेप छरीर है तो क्या वयोस ममयात बर्षागुमाके मभत पंचेन्य

रविंद के देजव छरीर है कि जरयास संख्याम बसागुमाके मभज के वेक्रेप छरीर है भदो गीनमो पचास

पचास बसागुमाके के वेक्रेप छरीर है वरतु ममयास धर्ममप्याग बर्षागुमाके के वेक्रेप छरीर है यदि पचास

ममयाग बर्षागुमाके के वेक्रेप छरीर है तो क्या जरया के वेक्रेप छरीर है कि ममयाग के वेक्रेप छरीर है, कि केयर

जो अरजशाग जलपर सखेजवासाउय गम्भेवकसिप पाँचदिय तिरिक्खजोगिय वेठन्विय
सरीरे ॥ जइ थलपर सखेजवासाउय गम्भेवकसिप पाँचदिय तिरिक्खजोगिय वेठन्विय
सरीरे किं चउत्पद थलपर सखेजवासाउय गम्भेवकसिप पाँचदिय तिरिक्खजोगिय
वेठन्विय सरीर, परिसप्य थलपर सखेजवासाउय गम्भेवकसिप पाँचदिय तिरिक्खजोगिय
वेठन्विय सरीर ? गोयमा ! चउत्पय थलपर सखेजवासाउय गम्भेवकसिप पाँचदिय
तिरिक्खजोगिय वेठन्विय परिसप्य जाव सरीरेत्रि पुर्य सव्वसि गेयव्व ॥ जाव सव्वसि
राण पज्जत्ताणं णोअपजत्ताण ॥ जदि मणुस्स पाँचदिय वेठन्विय सरीरे किं समुब्बिम
मणुरस पाँचदिय वेठन्विय सरीरे गम्भेवकसिप मणुस्स पाँचदिय वेठन्विय सरीरे ?

बैक्रय दरीर है ? अहो गौतम ! वीनों प्रकार क विविध के बैक्रय दरीर है यदि मलधर के बैक्रय दरीर
है तो क्या पर्याप्त के है कि अपयाप्त है ? अहो गौतम ! पर्याप्त क है परंतु अपर्याप्त के नहीं है यदि स्यसचर
के बैक्रय दरीर है तो क्या वतुल्यद स्यसचर के बैक्रय दरीर है कि परितर्ग स्यलधर के बैक्रय दरीर है ?
अहो गौतम ! दानों ही क ही बैक्रय दरीर है इन प्रकार ही तब ही के कहना यावत खेवर पर्याप्त के
बैक्रय दरीर है परंतु अपयाप्त के नहीं है यदि मनुष्य क बैक्रय दरीर है तो क्या समुब्बिम मनुष्य के

गोयमा ! जो समुच्छिन्न मणुरस पचिदिय वेठविय सरीरे गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीर ॥ जइ गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीरे कि कम्म ममग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीर अकम्ममममिग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीरे, अतारदीवय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीर ? गोयमा ! कम्मममिग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय, ॥ जो अकम्ममममग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीरे जो अनरदीवग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीरे ॥ जइ कम्ममममग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठविय सरीरे कि संखज्जवासाठय कम्ममममग गठमवकतिय मणुरस पचिदिय वेठ

वैक्रेय शरीर है कि गर्भम मनुष्य क वैक्रेय शरीर है ! अहो गोतम ! समुच्छिन्न मनुष्य क वैक्रेय शरीर नहीं है परंतु गर्भम मनुष्य क वैक्रेय सरीर है यदि गर्भम मनुष्य क वैक्रेय शरीर है तो क्या कर्मममम सत्र के मनुष्य के वैक्रेय शरीर है कि अकर्मममम मनुष्य क वैक्रेय शरीर है कि अकर्मममम मनुष्य के वैक्रेय शरीर है ! अहो गोतम कम्मममम मनुष्य के वैक्रेय शरीर है वाकी दानो शत्रु के मनुष्य के वैक्रेय शरीर सरीर है यदि अकर्मममम मनुष्य क वैक्रेय शरीर है तो

मनुष्य के वैक्रेय शरीर है कि अकर्मममम मनुष्य क वैक्रेय शरीर है कि अकर्मममम मनुष्य के वैक्रेय शरीर है

सरीरे ॥ जइ देव पंचिदिय वेठविय सरीरे किं भवणवासी देव पंचिदिय वेठविय-
 सरीरे जाव वेमाणिय हेव पंचिदिय वेठविय सरीरे ? गोयमा ! भवणवासी देव
 पंचिदिय वेठविय सरीरे जाव वेमाणिय देव पंचिदिय वेठवियसरीरेवि ॥ जइ भवण
 वासी देवपंचिदिय वेठविय सरीरे किं असुरकुमार भवणवासी देव पंचिदिय
 वेठविय सरीरे जाव यणियकुमार भवणवासी देव पंचिदिय वेठविय सरीरे ?
 गोयमा ! असुरकुमारस्सवि जाव यणियकुमारस्सवि वेठविय सरीरे ॥ जइ असुरकु-
 मार देव पंचिदिय वेठविय सरीरे किं पञ्चग जसुरकुमार देव पंचिदिय वेठविय
 सरीरे अपञ्चग असुरकुमार देव पंचिदिय वेठविय सरीरे ? गोयमा ! पञ्चग
 असुर देव भवणवासी पंचिदिय वेठविय सरीरेवि अपञ्चग असुरकुमार देव

यदि भवणपति देवता के वैक्रेय क्षीर है तो असुरकुमार के वैक्रेय क्षीर है कि पावत। स्थिति कुमार
 देवता के वैक्रेय क्षीर है ? अहो गौतम ! वृक्षों ही भाति के भवनपति देवता के वैक्रेय क्षीर है यदि
 असुरकुमार देवता के वैक्रेय क्षीर है तो क्यावर्थात असुरकुमार देवता के वैक्रेय क्षीर है कि- अपर्णापठ अमुरकुमार
 देवता के वैक्रेय क्षीर है ? अहो गौतम ! दोनों प्रकार के असुरकुमार देवता के वैक्रेय क्षीर है, ऐसे ही पावत
 अग्नि कुमार पर्यन्त कहना- ऐसे ही आठों भाति के बाणव्यस्तर देव का पाँच भाति के- योनिपति

पश्चिदिय वेडन्वियसरीरवि एन्न जाय थणियकुमाराण दुगतो भवो ॥ एव : धाणवतराण अट्ट
विद्वान् ॥ ओइसियाण पचविद्वान्, वेमणिया बुविहा पणसा कप्प्यावगा कप्पार्तीताय ॥ क
प्पेवगा धारसन्निहा सत्तिवि एव च दुगतो भवो ॥ कप्पतीया बुविहा पणत्ता गेवज्जाया
अणुत्तराय गेवज्जा पचविहा ॥ अणुत्तरोधवाइया पचविहा ॥ एतेसि पचत्ता पचत्ताभि-
ल्लवेण दुगतो भवो ॥ ४ ॥ वेडन्वियसरीरण भते ! किं सठिण् पणत्त ? गोयमा !
णाणासठणसठिण् पणत्ते, वाठकइय एगिणिय वेडन्विय सरीरण भते !
किं सठिण् पणत्त ? गोयमा ! पढागासठणसठिण् पणत्ते ॥ जेरइय पश्चिदिय

देवता का और कइयोताइ करगतीत दोनो आदि के वैमानिक देवता याने बारे दबलोके क देव का नव
श्रेयइ के देव का और पाँचो अनुत्तर विमानवासी देवता का सब क अपर्प्या पयो, एव ये दैक्ये शरीर हे
एसा कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् वैक्रिय शरीर किससस्थान से सास्थित है ? अहो गोयम ! अनेक प्रकार के
सस्थानसे सास्थित है ॥ अहो भगवन् ! बायुकाय एकेन्द्रिय का वैक्रिय शरीर किस संस्थान ॥ सास्थित है ?
गोयम ! पताका के सस्थान से सास्थित है ॥ अहो भगवन् ! नेरियेके वैक्रिय शरीर किस संस्थान से
सास्थित है ? अहो गोयम ! नेरियेके शरीर दो प्रकारके फरे हैं, - तथया प्रधारणिय और विसर वैक्रिय, या

वेतुविद्य सण नाणा सठाणसठिण पणसे ॥ एवं जाव थणिथेकुमार दवणचिदिय
वठल्विय सरोर, एव वाणमतराणवि, जवर ओहिया पुच्छजति ॥ एव जोइसियाणवि
आहियाण ॥ एव साहम्म जाव अब्बुयदव सरोर, गविज कण्यातीय वेमाणियदव
पचिदिय चठविय सरोरण मत । किं सठाण सठिण पणसे ? गोयसा ! गविजग
दव पचिदिए णं भवधारणिव सरोरसेण समचठरस सठाण सठिण पणसे, एव
अणुचरेभवशाइयाणवि ॥ ५ ॥ वठल्विय सरोरण मत ! के भहलिया सरोरोगा
हुणा पण्यत्ता ? गायसा ! जहणण अगुलरस असंखजतिअगं, उक्कासेण सातिरेग
जोयणसतसहरस, वाउकाय पुगिदियवेठविय सरोरसस भते ! के भहलिया सरोर

भेद कहना भहा भगवन् ! प्रवेयक कल्याणीय वेयानिक वेव वेचिदिय का वेकिय अगेर किस सस्यान से
सस्थित है ! अहा गौतम ! प्रवेयक के दशता के एक व्यवधारणीय हो शरीर है वह समचतुस्र संस्यान स
मस्थित है, एव ही अनुचर विमान के दशता का कहना ॥ २ ॥ भहा भगवन् ! वेकिय शरीर की अब
गाइना कितनी बड़ी कही है ! अहा गौतम ! जयन्त्य अगुन के अर्धसंघातम माम नत्तुए कुउ अधिक एक
वासंन्यामन की अहो भगवन् ! वायकाया पकान्तिप हा वेकिय अगेर कितना बड़ा कहा है ? भहा

मार्तो नरक की समयभय अवगाहना

नाम	मयक अवगाहना		उत्कृष्ट अवगाहना	
	धनुष्य	हाथ	अंगुल	भाग
१ रत्नमया	०	२	८	१
२ चूर्णमया	०	०	२०	१५
३ बालकमय	१	०	००	३१
४ पकमया	६	१	२०	६२
५ धूम्रमया	१२	०	०	१२५
६ तममया	६१	५	१३	०
७ तपस्वमया	०	०	०	५०

पण्डित) तजहा मन्वधारणिज्वाय उत्तरेवेठवियाय तरयण जासा मन्वधारणिज्वा

गौतम ! मधय और उत्कृष्ट अंगुल क असहयावे भाग मितना : अरो भगवत् । नारकी पवेद्रिय का
 केकय शरीर दितना बडा कहा हे ! अरो गौतम ! नरीय का शरीर दो प्रकार का कहा हे तथया—
 माय रनीय और उत्तर केकय इस में मयथारनीय शरीर की अवगाहना नयय; अंगुल के मसस्यावे
 मग उत्कृष्ट पांच सो धनुष्य की, और सपर केकय बनाये शरीर की अवगाहना मयम्य अंगुल के सं

गाहणा पणसा? गोयमा!

जहण्णेण अंगुलरस अस
 खज्वासिभाग उक्कासेणवि
 अंगुलरस असखज्जइभाग,
 णेरइयपविदिय वडव्विय
 सरिरस्सण भते। क महा
 लिया सरीरोगाहणा
 पणसा? गोयमा! दुविहा

१ रत्नप्रसाद के १३ पाद्यों की अवगाहना २

नयन्य अस्ताहना					वरदण्ड अवगाहना				
पा	पनुष्य	दाय	अगु	याग	पनुष्य	दाय	अगु	भाग	भाग
१	०	१	०	०	१	१	०	०	०
२	०	१	०	०	१	१	०	१	०
३	०	१	०	०	१	१	०	१	०
४	०	१	०	०	१	१	०	१	०
५	०	१	०	०	१	१	०	१	०
६	०	१	०	०	१	१	०	१	०
७	०	१	०	०	१	१	०	१	०
८	०	१	०	०	१	१	०	१	०
९	०	१	०	०	१	१	०	१	०
१०	०	१	०	०	१	१	०	१	०
११	०	१	०	०	१	१	०	१	०
१२	०	१	०	०	१	१	०	१	०
१३	०	१	०	०	१	१	०	१	०

सा जहण्णं अंगुलरस अस
 खज्जतिमगं, उक्कोसेण पंच
 धणुसयाह, तरथण जासा
 उच्चरयेठान्विया सा जह
 ण्णेण अंगुलरस सखज्ज-
 तिमाग, उक्कोसेण धणुसहस्स
 रयणप्पमा पुढवि णेरुयाणं
 भत्त ! के महालिया सरिरो

स्वातंत्र्ये माग वस्तु एक इमार योजन
 की अहा भगवन् ! रत्नप्रसाद नरक के
 नैरीये की अवगाहना कितनी बड़ी कही है ?
 अहा गौतम ! रत्नप्रसाद नरक के नरिये
 का शरीर दो प्रकार का कहा है तथया—
 मयपारानीय और उच्चर येक्य इस में
 मयपारानीय शरीर की अपन्य अंगुल के

गाहणा पण्णत्ता? गोयमा !
 पुत्रिहे पण्णत्ते तज्जहा भव
 धाराणिज्जाय, उत्तर वेठाळ्ळि
 याय तत्थण जासा भव
 धारणिज्जा सा जहण्णेण
 अगुलस्स असंख्खज्जतिभ्भग,
 उक्कोसेण सत्तघण्हूह तिण्णिाय
 रयणीमो, छब्बअगुल्लाइ ॥
 तत्थण जासा उत्तर वेठ
 ज्जिया सा जहण्णेण अगु-
 न्नसंस्सपात्त भाग और वत्कुह साव

प्रमाण				वत्कुह			
पानुप्य	हाय	अंगुल	भाग	पानुप्य	हाय	अंगुल	भाग
१	१	१	०	८	२	२	११
२	२	२	१	९	०	२२	११
३	०	२०	१	९	३	१८	११
४	३	१८	१	१०		१४	११
५	२	१६	१	११	१	१०	११
६	१	१०	१	१२	०	७	११
७	०	७	१	१२	३	३	११
८	३	७	१	१३	१	२३	११
९	१	२३	-	१४	०	१२	११
१०	०	१९	१	१४	३	१५	११
११	३	१५	१	१५	२	१२	०

पानुप्य तीन हाय ८ अंगुल की और उत्तर बैक्रय घरीर की मध्यम अगुल के संख्यातव याम वत्कुह
 पने पानुप्य और महाइ हाय की, इस प्रकार आगे भी प्रश्नात्तर मानना शर्कर प्रमा की व्यवपारणीय शरीरकी

अपन्य		अवगाहना उत्कृष्ट	
पा	धनुष्य हाथ	अगुल भाग	अगुल हाथ
१ १२	२ १२	०	१ १०
२ १३	१ १०	०	१ १०
३ १४	०	०	१ १०
४ १५	०	०	१ १०
५ १६	०	०	१ १०
६ १७	०	०	१ १०
७ १८	०	०	१ १०
८ १९	०	०	१ १०
९ २०	०	०	१ १०
१० २१	०	०	१ १०
११ २२	०	०	१ १०
१२ २३	०	०	१ १०
१३ २४	०	०	१ १०
१४ २५	०	०	१ १०
१५ २६	०	०	१ १०
१६ २७	०	०	१ १०
१७ २८	०	०	१ १०
१८ २९	०	०	१ १०
१९ ३०	०	०	१ १०
२० ३१	०	०	१ १०
२१ ३२	०	०	१ १०
२२ ३३	०	०	१ १०
२३ ३४	०	०	१ १०
२४ ३५	०	०	१ १०
२५ ३६	०	०	१ १०
२६ ३७	०	०	१ १०
२७ ३८	०	०	१ १०
२८ ३९	०	०	१ १०
२९ ४०	०	०	१ १०
३० ४१	०	०	१ १०
३१ ४२	०	०	१ १०
३२ ४३	०	०	१ १०
३३ ४४	०	०	१ १०
३४ ४५	०	०	१ १०
३५ ४६	०	०	१ १०
३६ ४७	०	०	१ १०
३७ ४८	०	०	१ १०
३८ ४९	०	०	१ १०
३९ ५०	०	०	१ १०
४० ५१	०	०	१ १०
४१ ५२	०	०	१ १०
४२ ५३	०	०	१ १०
४३ ५४	०	०	१ १०
४४ ५५	०	०	१ १०
४५ ५६	०	०	१ १०
४६ ५७	०	०	१ १०
४७ ५८	०	०	१ १०
४८ ५९	०	०	१ १०
४९ ६०	०	०	१ १०
५० ६१	०	०	१ १०
५१ ६२	०	०	१ १०
५२ ६३	०	०	१ १०
५३ ६४	०	०	१ १०
५४ ६५	०	०	१ १०
५५ ६६	०	०	१ १०
५६ ६७	०	०	१ १०
५७ ६८	०	०	१ १०
५८ ६९	०	०	१ १०
५९ ७०	०	०	१ १०
६० ७१	०	०	१ १०
६१ ७२	०	०	१ १०
६२ ७३	०	०	१ १०
६३ ७४	०	०	१ १०
६४ ७५	०	०	१ १०
६५ ७६	०	०	१ १०
६६ ७७	०	०	१ १०
६७ ७८	०	०	१ १०
६८ ७९	०	०	१ १०
६९ ८०	०	०	१ १०
७० ८१	०	०	१ १०
७१ ८२	०	०	१ १०
७२ ८३	०	०	१ १०
७३ ८४	०	०	१ १०
७४ ८५	०	०	१ १०
७५ ८६	०	०	१ १०
७६ ८७	०	०	१ १०
७७ ८८	०	०	१ १०
७८ ८९	०	०	१ १०
७९ ९०	०	०	१ १०
८० ९१	०	०	१ १०
८१ ९२	०	०	१ १०
८२ ९३	०	०	१ १०
८३ ९४	०	०	१ १०
८४ ९५	०	०	१ १०
८५ ९६	०	०	१ १०
८६ ९७	०	०	१ १०
८७ ९८	०	०	१ १०
८८ ९९	०	०	१ १०
८९ १००	०	०	१ १०

पणरसधण्डू अढाईजाआरय-
 णीआ ॥ सखारपभाएण पुष्ठा?
 गोयमा ! जात्र तरथण जासा
 भवधारणिआ सा जहण्ण
 अगुलरस असखज्वतिभाग
 उक्कोसेण पणरसधण्डू
 अढाईजाओ रमणीओ,
 कीअन्य अगुल के असत्पातव भाग उत्कृष्ट
 पनर पनुण्य भद्राई हाथ की और उत्तर अंक्य
 की अथय अंगुल के सस्यावेष भाग
 उत्कृष्ट एकभीम पनुण्य एक हाथ की
 यों भाग मरे स्थान प्रवधारणीय की अन्य
 अंगुल के असत्पातव भाग की मार उत्तर वे
 प्रिय की अन्य अंगुल के सत्पातव भाग की
 भावना अब उत्कृष्ट भद्रगाहना ही कहत है

विशक राजाशदुर खाजा सुभद्रवसहायमी कराशापनाइमी

तमप्रभाके ३ पायर्टे की
अपगाहना

अपन्य		उत्कृष्ट	
पा	घ हा अं घ	१२८ ० ० १४४	२१४
		२१४४	१ ८
		१००८ १ ८२५०	०

तत्पण आसा उत्तरवेठनिव्या सा जहण्मेण अगु
लरुम सखज्जतिभाग उक्कोत्तेण एक्कीतीस धणइ
एक्कारयणी ॥ य.लुयप्यभाण भवधारणिज्ज। एक्कीतीस
धणइ एक्कारयणी उत्तर वेठनिव्या छावट्टिधणइ
दाणियरयणीम्मा ॥ पकप्पभाए भवधारणिज्जा वावट्टि

वालुकप्रमा के मधधारनीय की एकतीस अनुप्य एक हाथ की, उत्तर
वैक्रय की घांठ अनुप्य दा हाथ की एक प्रमा क मधधारनीय
की घांठ अनुप्य दा हाथ की और उत्तर वैक्रय की एक सो

पञ्चप्रपाक ७ पापर की भवगाइना ५

जयप		सत्सु		मा
वा	घ हा	वा	प हा	अ
१३१	१०	०	१६	२२०
२३६	२०	१	६०	०१७
३४०	०१७	१	४४	२१३
४६६	२१३		४६	०१७
५६०	०१०	३	४३	२१३
६२३	०१३	१	२८	०१३
७८८	०१३	३	३२	०१३

0	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000
---	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------

धनुइ दोरयणीओ, उत्तर वेठन्विया पण्णीस धनुइ सत, धूमप्यभाए भवधारणिजा
पण्णीस धनुसत, उत्तर वेठन्विया अद्गुईजाइ धनुसयाइ॥ तमाए भवधारणिजा अद्गुईजाइ
धनुसताइ, उत्तर वेठन्विया पचधनुसयाइ॥ अहे सत्तमाए भवधारणिजे पचधनुसयाइ उत्तर
वेठन्विया धनुसहरस एव उक्कोसण॥ जहण्णेण भवधारणिजा अगुलस्स असंखज्जतिभाग
उत्तर वेठन्विया अगुलस्स सखज्जतिभाग॥ १॥ तिरिक्खज्जोणिय पच्चिदिय वेठन्विय सरिर-
रसण भते! के महाळिया सरिरोगाहणा पण्णत्ते ? गोयमा ! जहण्णेण अगुलस्स सखज्जति
भागं, उक्कोसण जोयणसत पुहत्त ॥ मणुस्स पच्चिदिय वेठन्विय सरिररसण भत !

पचीस धनुष्य की धूम्रप्रभा की यवधारणीय की एक सा पचीस धनुष्य की उत्तर वेक्रेय
की दो सो पचास धनुष्य की, तम्पमा क यवधारणीय की दो सो पचास धनुष्य की
उत्तर वेक्रेय की पांच भा धनुष्य की और नीच सातवी नरक की यवधारणीय की पांच मो धनुष्य की
उत्तर वेक्रेय की हजार धनुष्य की पाँचे २ की अलग २ अवगाहना यत्र से जानना ॥ ३ ॥ अहो
मगबन् ! तिर्यक् पानिक पचान्द्रिय के वैक्य शरीर की अवगाहना कितनी कही है ? अहो गौतम !
नपय भगुस के असंख्यात्तर भाग उच्छृष्ट नच सो याजन की अहो मगबन् ! धनुष्य क वेक्रेय शरीर

के महालिया सररीगाहणा पणत्ता ? गोयमा ! जहण्णेर्ण अगुलस्स संखज्जति
 माग उक्कासण सात्तिरग जोयणसतसहस्स ॥७॥ अमुरकुमार भयणथासीदेव पच्चिदिय
 वेत्थियसरीरस्सण भते ! के महालिया सररीगाहणा पणत्ता ? गोयमा ! असुर
 कुमाराण दवण बुद्धिहा सररीगाहणा पणत्ता तजहा भवधारणिआय उत्तर वेत्थियाय,
 तत्थण जासा भवधारणिज्जा सा जहण्णेण अगुलस्स असंखज्जति भाग, उक्कोसेण
 सत्तरयणीआ, तत्थण जासा उत्तर वेत्थिया सा जहण्णण अगुलस्स संखज्जति
 भाग उक्कासेण जोयण सत सहस्स ॥ एव जाव यणियकुमारा, एव ओहियाण

की प्रवगाहना कितनी करी है ! अहो गौतम ! जयन्त्य अंगुल क असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट कुछ अधिक
 एक लाख योगा रिष्णुकुमारादि की १७७ अहो भगवन् ! अमुरकुमार भवनपति देवता के वैश्वेश्वरीरकी
 कितनी प्रवगाहना करी है ! अहो गौतम ! असमकुमार देवता का शरीर दो प्रकार का कहा है तथा
 ! प्रवगाहनीय और उत्तर वैश्वेश्वर इस प्रवगाहनीय की जयन्त्य अंगुल के असंख्यातवे भाग उत्कृष्ट साठ
 हाथ की और उत्तर वैश्वेश्वर की जयन्त्य अंगुल के संख्यातवे भाग उत्कृष्ट एक लाख योगन की इस
 प्रकार ही यावत् स्थानि कुमार पर्यन्त करना एवं ही भौषिक वाणरूपर देव की और उपाधिपी
 देव की करना, एते ही सौवर्ग ईशान, वैश्वेश्वर के देवता की करना, और इस प्रकार ही उत्तर वैश्वेश्वर

वाणमनराणें एव जॉईसियाणवि ॥ सोहम्मीसाण देवाण एवचेव, उधर वेठन्विय जोंव
अच्युतोक्प्यो, जधर सणकुमार भवधारणिजा जहण्णेण अगुलस्स असखेज्जति भाग
उक्काहण छ रयणीओ, एव महिदेवि ॥ वमलोण लतएसु पचरयणीओ, महासुक्क
सहम्सारेसु चत्तरीरयणीओ आणय पाणय आरण अच्युत तिणि रयणीओ ॥ गेवेज्ज
कप्पातीति वमाणिय घेव पत्तिदिय वेठन्विय सरिसण भत्तेके महालिया सरिरोगाहणा
पणत्ता ? गोयभा ! गवेज्जग देवाण एग भवधारणिजा सरिरोगाहणा पणत्ता, सा
जहण्णेण अमुलस्स असखेज्जति भाग उक्कासेण दोरयणीओ ॥ एव अणुत्तराववाइय

छरीर की अवसाहना यावत् अच्युत देवस्थक मरु कठना, भवधारणीय छरीर की अवसाहना का किंए
कहत है- अघन्य अंगुल के अर्धस्पातवे भाग सर्व स्थान जानना उत्कृष्ट सनत्कुमार मोहेन्द्र में छ हाथ
की, प्रथम सर्वक में पंचि हाथ की, महायुक्त सदस्सार में चार हाथ की, आनत प्रानत, आरण और अच्युत
इन चार देवलोको में हीन हाथ की अहो भगवन् ! ग्रैयवेक और अनुसर कन्यातीत देव पचोन्नयका, पैक्रय
छरीर कितना पडा कडा है ! अहो भौतमा ! ग्रैयवेक दस्ता के एक भवधारणीय छरीर की है उसकी अवसाहना
अपन्य अंगुल के अर्धस्पातकमाग उत्कृष्ट दो हाथ की, एत ही अनुचरोपपातक देवकी भी कहना जिम में
इतना विशद एक हाथ की अवसाहना जानना दशशोक के प्रतरो की अथवा देवअवसाहना पच से

संतक देवसोक्त की १२
अवगाहना

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
हाय	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
भाग	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

१३
यहाभुक्त देवसोक्त की
अवगाहना

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
हाय	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
भाग	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सौपर्व इसान देवसोक्त की १३ प्रतर की अवगाहना ८

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
हाय	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
भाग	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

सतसुद्धार माहें देवसोक्त की १२ प्रतर की अवगाहना १

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
हाय	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
भाग	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

१४
संतक देवसोक्त की
अवगाहना

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
हाय	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
भाग	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

प्रसन्नदेवसोक्त की अवगाहना ११

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११
हाय	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
भाग	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५
छेद	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११

2

आरण देव फी अपगा

प्रतर	१	२	३	४
हाय	१	३	३	३
माग	३	३	३	०
खर	२३	११	१२	११

आनंद भूष की १८

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

22

अपवर्ग वेर की वरगा-

प्रवर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००
-------	---	---	---	---	---	---	---	---	---	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

22

प्राणव हेतु की व्यवस्था-

प्रतर	१	२	३	४	५
हाव	३	२	३	४	५
माग	७	६	५	४	३
खर	११	११	११	११	११

हना.

नभःप्रयोगिक हव की भवगाहना १९

प्रतर	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
राय	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
भाग	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०
७५	१	२	३	४	५	६	७	८	९	०

20

अनुषर विमान मे.

बलर	१	२
सागर	११	११
राय	१	१
भाष	१	०
केर	११	११

देवाजत्रि, पवर पुष्कारयणी ॥ ८ ॥ आहारग सरीरेण मंते ! कतिविदे पण्णसे ? गोयमा ! पुगागारे पण्णस, अइ पुगागार पण्णसे किं मणुस्स आहारग सरीरे अमणुस्सग आहारग सरीरे ? गोयमा ! मणुस्सग आहारग सरीरे नो अमणुस्सग आहारग सरीरे ॥ जइ मणुस्सग आहारग सरीरे किं समुच्छिम मणुस्सग आहारग सरीरे, गम्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे ? गोयमा ! को समुच्छिम मणुस्सग आहारग सरीरे, गम्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे ॥ जइ गम्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे, गम्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे किं कम्ममूमिग गम्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे, अकम्ममूमग गम्भवक्कतिय मणुस्सग आहारग सरीरे, अंतराधायग गम्भवक्कतिय मणुस्स आहारग

जानना इति वैक्षेप शरीर का आधिकार समाप्त हुआ ॥ ८ ॥ अहो भगवन् ! आहारिक शरीर कितने प्रकार का कहा है ! अहो गौतम ! एक ही प्रकार का कहा है अहो भगवन् ! यदि एक ही प्रकार का है तो क्या मनुष्य के आहारिक शरीर होता है कि मनुष्य विषाण अथवा कभी आहारिक शरीर होता है ! अहो गौतम ! एक मनुष्य के ही आहारिक शरीर होता है यदि मनुष्य के आहारिक शरीर होता है तो क्या समुच्छिम मनुष्य के आहारिक शरीर होता है कि गर्भज मनुष्य के आहारिक शरीर होता है ! अहो गौतम ! समुच्छिम मनुष्य के आहारिक शरीर नहीं होता है परंतु भगवन्

सरीर ? गायमा ! कम्मभूमिग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीरे, णो अकम्म भूमग, नो अतरदीधिग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीरे ॥ जइ कम्मभूमग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीर ? किं संखज्जवासाउय कम्मभूमग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीरे असंखज्जवासाउय कम्मभूमग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीरे ? गायमा ! संखज्जवासाउय कम्मभूमिग कम्मभूमग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीर, णो असंखज्जवासाउय गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीरे संखज्जवासाउय कम्मभूमग गम्भवकतिय मणुस्स आहारग सरीरे- अफज्ज संखज्जवासा-

मनुष्य के ही आहारक शरीर होता है यदि मर्मत्र मनुष्य के ही आहारक शरीर होता है तो क्या कर्मभूमि मनुष्य के हावा है कि कर्मभूमि मनुष्य के होता है कि अन्तर द्वीप के मनुष्य के होता है ? अहो गौतम ! कर्मभूमि मनुष्य के ही आहारक शरीर होता है परंतु कर्मभूमि और अन्तरद्वीप के मनुष्य के आहारक शरीर नहीं होता है, यदि कर्मभूमि मनुष्य के आहारक शरीर होता है तो क्या संख्यात बर्षापुरात कर्मभूमि मनुष्य के होता है कि अरुल्यात बर्षापुरात कर्मभूमि मनुष्य के होता है ? अहो गौतम ! संख्यात बर्षापुरात कर्मभूमि मनुष्य के आहारक शरीर होता है परंतु असंख्यात बर्ष के आयुष्यवात

उय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स आहारग सरीरे ? गोयमा ! पज्जत्त सखेज्ज-
 वासाउय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स आहारग सरीरे णो अपज्जत्तग सखेज्ज
 वासाउय गम्भवक्तिय कम्ममू मग मणुस्स आहारग सरीरे ॥ जइ पज्जत्तग सखेज्ज
 गसाउय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स आहारग सरीरे किं सम्मदिट्ठि
 पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स आहारग सरीरे,
 मिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स आहारग सरीरे,
 सम्ममिच्छदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स आहारग सरीरे
 गोयमा ! सम्मदिट्ठि पज्जत्तग सखेज्जवासाउय कम्ममू मग गम्भवक्तिय मणुस्स

मनुष्य के आहारक नहीं होता है यदि संख्यात वर्षाणु मनुष्य के आहारक नहीं होता है तो
 क्या वर्षाणु संख्यात वर्षाणु मनुष्य के आहारक नहीं होता है कि अपर्याप्त संख्यात वर्षाणु मनुष्य के
 आहारक नहीं होता है ? अहां गौतम ! पर्याप्त संख्यात वर्षाणु मनुष्य के आहारक नहीं होता है
 परंतु अपर्याप्त मनुष्य के आहारक नहीं होता है यदि पर्याप्त संख्यात वर्षाणु मनुष्य के आहारक
 नहीं होता है तो क्या सम्यक् दृष्टी मनुष्य के आहारक नहीं होता है कि पिप्प्या दृष्टी मनुष्य के
 आहारक नहीं होता है कि सम्यक् दृष्टी मनुष्य के आहारक नहीं होता है ! अहां गौतम !

पण्णचे तजहा-एगिंदिय तेयगसरीरे जात्र पचिंदिय तेयगसरीरे ॥ एगिंदिय तेयगसरीरे
 ण भते ! कइविहे पण्णचे ? गायमा ! पंचविहे तजहा-पुढाविकाइय जात्र
 वणस्सइकाइय एगिंदिय तेयगसरीर ॥ एवं जहा ओरालियसरीस्स भेवो भणियो,
 तहा तेयगस्सवि, जात्र चठरिंदियाणं ॥ पंचिंदिय तेयगसरीरेण भते ! कतिविहे
 पण्णचे ? गोयमा ! चठन्विहे पण्णचे तजहा नेरइय तेयगसरीरे जात्र देव तेयगसरीरे
 नेगइयाण दुगतांभदो भाणियन्वो जहा वैठन्वियसरीरे ॥ पचिंदिय तिरिक्खज्जाणिया
 णं मणुस्साणय जहा ओरालियसरीरे भेवो भाणियो तहा भाणियन्वो ॥ देवाण जहा

कितने भद करे है ? अहो गौसम ! पांच प्रकार करे हैं तथया—एकेन्द्रय का तेजस क्षरीर याबल
 पंचन्द्रियका का तनस क्षरीर यों निम प्रकार औदारिक क्षरीर क मदानुभद करे उस ही प्रकार तेजस
 क्षरीर क भी मदानुभद कहना पावत पर्यंत कहना अहा गगन् ! पंचेन्द्रिय क तनस क्षरीर
 क कितन भद करे हैं ! अहा गौसम ! चार भद करे हैं तथया—नारकी का तेजस क्षरीर यावत, देवता
 का तनस क्षरीर पूर्वोक्त प्रकार मारकी के पर्याप्त अपर्याप्त ऐसे दो भेद कहना जिस प्रकार वैक्रय क्षरीर
 कर पंचेन्द्रिय तिर्यक् कीतिक के और मनुष्य के जिस प्रकार औदारिक क्षरीर क भद करे उस प्रकार

चेठवियसरीं मेधा भाणियो तहा भाणियव्ढो जाव सव्यद्विसिद्धोगवेवति ॥ १२ ॥
 सेयगसरीरण भते ! किं सठाण साठए पणत्त ? गोयमा ! जाणा सठाणे साठए
 पणत्त ॥ पुगिंदिय सेयगसरीरण भते ! किं सठाण साठए पणत्ते ? गोयमा !
 जाणा सठाण साठए ॥ पुढांबिकाइय तयगसरीरेण भते ! किं सठाण साठए पणत्त ?
 गोयमा ! मसुरचदसठाण साठए पणत्त ॥ एव आरालय सठाण अणुसारण
 भाणियव्ढं जाव चठरिंदियाणवि ॥ जेरइयाण भत ! तयगसरीरे किं सठाण साठए

कहना देवता के जिस प्रकार वैष्णव शरीर के भेद को तैस ही कहना यावत् मयाय सिद्ध पर्यंत ॥१२॥
 भयो मगबन् ! तमस शरीर का किस प्रकार का संस्थान कहा है ? भयो गीतम् ! अनेक प्रकार का
 संस्थान कहा है, एकैन्द्रिय के तमस शरीर का किस प्रकार का संस्थान कहा है ? भयो गीतम् ! अनेक
 प्रकार का संस्थान कहा है पृष्ठीकाय एकैन्द्रिय का क्या संस्थान कहा है ! महा गीतम् ! मयूरकोदास
 और चन्द्रमा के संस्थान स संस्थित है यों जिस प्रकार औदारिक शरीर क संस्थान को उस अनुसार
 से कहना यावत् चतुरेन्द्रिय पर्यंत भयो मगबन् ! नरीय के तमस शरीर का क्या संस्थान कहा है ?
 भयो गीतम् ! जिस प्रकार वैष्णव शरीर का संस्थान कहा उस ही प्रकार इस का भी कहना वैष्णव

पण्णचे ? गोंयमा ! जहा वेडवियसरीरे, पर्विषिय तिरिक्खजोणियाण मणुस्साण जहा एतेसिं चैव ओरालियसि ॥ देवाने भते ! किं सटाण सठिए तेयगासरीरे ? गो ! मा ! जहा वेडवियस्स जाव अणुत्तराववाइया ॥ १३ ॥ जीवस्सण भते ! मारणं तिप समुग्घाएणं समोहयस्स तेयगसरीरस्स के महालिया। सरीरोगाइणा पण्णत्ता ? गोंयमा ! सरीरप्पमाणेमेत्ता, विक्खंमवाहखेण, आयोमेण जहण्णेण अगुलस्स असंखज्वति मागो उक्खोसेण लोगताओ लोगते ॥ एगिदियरसणं भते ! मारणत्तिय समुग्घाएण समोह-

विर्यव योनिक का और मनुष्य का हा औदारिक शरीर के ऐसा ध्रुपान कहना अहो भगवन् ! देवता के तेजस शरीर का ऐसा संस्थान कहा है ? अहो मोक्षम ! ऐसा वैकल्प शरीर का संस्थान कहा ऐसा कहना यावत् अनुत्तरोपपादिक देव पर्यंत अब तेजस शरीर की अवगाहना कहव ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! जीव मारणाधिक समुदाह समोहवा। हुआ तेजस शरीरकी कितनी अवगाहना करी है ? अहो गौतम ! शरीर प्रणान माधा वीही अर्यात् बायी तरफस बायी तरफनकवो शरीर भितनी चौड़ी होती है इस प्रकार ही पृष्ठ से छातीतक आही मी जानना और पम्बी जयन्त्य तो अंगुल के अंसस्थानके माग तम ही स्थान तत्पन्न होवे उस भपत्ता स और उत्कृष्ट साक के अन्त पर्यन्त क्यों कि अपोलाक से मरकर कुर्त्त लोकात्त वंश और कर्ण कोक से भया लोकात्त तक ऐसे ही दशों ही दिशा के मूल से मरकर

यस्त तेषां सरीरस्त के महालिया सरीरोग्राहणा पणसा गोयमा । एवञ्चैव ॥ पुढवि
अत्र तत्क वणफातीकायस्त ॥ वेददियस्तर्जनं मते । मारणतिय समुघाएण ससोहयस्त
तयासरोस्त के महालिया सरीरोग्राहणा पणसा, ? गोयमा । सरीरप्यभाणेमेता
विस्वमयाइछणं. आयासेण जहणगत से जगुलस्म असखेज्जभागं उक्कोसेण तिरिय
लागाकाः खेगता एव जाव चउमिदियस्त ॥ नरइयसण मते । मारणतिय समुघाएण

अन्त में जा नीच उत्पन्न होते हैं तब अपेक्षा स आयाता: अहो भगवन् । एकेन्द्रिय के मारणाधिक
समुदाय समोह कर तब तेजस् शरीर की कितनी बरी अद्यावत्ता करी है ? महा गौतम ! भिन्न प्रकार
सम्पन्न करी उस ही प्रकार एकेन्द्रिय की करना. क्यों कि सूक्ष्म एकेन्द्रिय ही नव लोक व्यापक है
वे ही लोक छी आदि से अन्त तक उत्पन्न होते हैं. भिन्न प्रकार एकेन्द्रिय के तेजस् शरीर की अवगा-
हना करी उस ही प्रकार पृथ्वीकाया अप्काया तेजस्वावा वायुकावा वनस्पति -काया की करना. अहो
भगवन् ! वेददिय मारणाधिक समुदाय समोह तब तेजस् शरीर की कितनी बरी अद्यावत्ता करी है ?
अहो गौतम ! शरीर के प्रमाण भितनी चौड़ी तथा भारी और सम्पन्न में जयप भंडु के अंतस्त्वयावेषे
माग-उरकट तिष्ठे लोक के अन्य तक क्यों कि वेददिय आदि की उत्पत्ति विद्युत्स्व, समुद्रादि तिष्ठे
स्वेक में ही है. वेददिय जैसे ही वेददिय समा पौरुषिय का करना, अहो भगवन् ! नेरीये मारणाधिक

समोद्धर्षस तयासरीरस के महालिया सररीगाहणा पणसा ? गोयमा । सरररप्यमा ।
 प्येमसा विक्षम्भयाहृत्तर्णे आयामर्णे अहृत्तर्णे सातिरेग ओयणसहस्त उकोसण
 जात्र महसत्तमापुदवि, तिरिय जात्र संयंभुमण समुद उहुजात्र पंहुकण्णे पुवम्भरणीओ,
 वेधिविय तिरिस्वओजियस्सर्णे भत । मरणतिय समग्घापण तमाहयस्स क महालि

या तेयानरीरोगाहणा पणसा ? गोयमा ! जहा भइदियस्स सररररस ॥ मणुस्सस्सण
 समुदात समाहुत्त तमस छरीर की कितनी बड़ी अयमाइना करी दे ! अहो गौतम ! छरीर के प्रभुष्ट में
 भीही तथा जाही, और सम्मान में अयन्य ता कुछ अधिक एक हजार योजन क्यों कि मेरीये माकर
 नरक में देवता में एकोन्रय में विक्रसेन्ध्रय में तराम नहीं होते हैं नरक के और सिध्दे लोक के मध्य
 का विमान एक हजार योजन का आहा है, तथा ओ पाताल कलश में उत्पन्न होवे तो पञ्चाल कलश की
 भी ठीकरी एक हजार योजन की आही है उस कलश के दूसरे तीसरे विभाग में पानी है उस में लखवर
 पवन्निर्गपने उत्पन्न होवे इस अवेत्ता अयन्य एक हजार योजन आमेत और उत्कृष्ट नीच की सातवीं
 नरक से तिर्छा यावत् स्वयंभूरण समुद्र पर्यन्त उत्पन्न यावत् पंडक वन पर्यन्त पंडक वन की बाबूवीयों में
 विर्षय पंचोन्नयपने उत्पन्न होवे तो आनना महा मर्मवन् ! पवन्निर्गप विर्षय यानिक आ मारणीतिक
 मपुच्छा समोद तप-तेजस छरीर की किनभी अयगाहना कही है ? अहो गौतम ! जिस प्रकार बईइय

भते 'मरणनिय समुग्धाएण समोहयस्स तेयासरीरस्स केमहालिया। सरीरोगाहुण। पणसा ?
 गायमा ' समयस्वत्ता। ओलेगता। असुरकुमाराण भत । मारणतिय समुग्धाएण समोहयस्स
 क महालिया। तथा संगेरागाहुणा एणत्ता ? गोयमा। सरीरप्यमाणमेत्ता विक्खम याहुल्लण
 आयामण जहुण्णण अगुलस्स अमखेवति भागं उक्कामण अहे जाव तच्चा। पुटवीए हट्टिलं
 चरिमते तिरिय जात्र समयमुरमण समुहस्सयाहिरल्ल घेइयता, उहु जाव इभीपक्कमारा
 का वडा तेमा ही कहना महा मगवत् ' म्मुण्य नच मारणानिक समुदात करे तव तेजस् वरीर की
 कितनी बड़ी भयगाइना करी है ' महा गौतम ! समय संत्र स लगाकर लाक क भन्त पर्यन्त, क्यों कि
 विद्यापत्तों की नदीसरदाप तक तथा चरण मुनिवरो कचक द्वीप पर्यन्त होते हैं इस भयमा म तथा मनुष्य
 पर के एकेअन्य में उत्पन्न होते इस अनेपा से अहा मगवत् ! भसुरकुमार देवता मारणानिक समुदात
 कर तब किमनी बड़ी भयगाइना करी है ? महा गौतम ! शरीर के प्रमाण में चौड़ी तथा आदी और
 मन्दी नग्नय भयुल के भयसपातन भाग क्यों कि असुरकुमार देवता भरकर बड़ी भुवनादि की पृथ्वी-
 काया में उत्पन्न होते इस भयसा स वरुण नीचे नीसरी नरक का भीष का चरणान्त पर्यन्त क्यों कि
 पक्षिभूत असुरकुमार देवता का गमन है वही आपुण्य पूर्ण करता निश्चय स्वर्गपुरमण भयुत्र की बाहिर की बन्दी का
 ५५-५५ नदीनकी बाहिर पृथ्वीकाया है, ईसा यागत विष्णुप्रापण पृथ्वी-विष्णुविष्णु

पुत्रवि ॥ ०३ जात्र धनियकुमारा ॥ घाणमतर जोइसिय मोहम्मीमाणागाय
 पुत्र घत्र ॥ सणकुमार दवराण भत ! भारणतिय समुघाणण समोहयरस
 तपासरीस क गहालिया सरारोगाहणा वणघा ? गोयमा ! सररिप्पमाणमत्ता,
 विक्खमयाहल्लण, आयोमेण जहण्णज अगल्लस असखजति भाग उक्कासण अहे

जात्र महापातालाण दाखति भाग तिरिय जाव सयसरमण ममुहे उहु
 इस प्रकार ही पावत् स्थितिकुमार पथन कहना, और ऐसे ही बाणान्तर ब्योतिषो सौधर्म ईशान
 देवलोक के देवता का कहना अहो भगवन् ! सनत्कुमार देवता भारणांतिक समुदयान समोहे तत्र तमस
 क्षरीर की कितनी बही अबगाहना कही है ! अहा गौतम ! क्षरीर क प्रदान में वो खोही तथा जाही
 और लम्बाई में अग्रन्ध अगुल क असंख्यातवे माग क्यों कि यद्यपि मनस्कुपारादि देवलोक क देवता
 पृथ्वीकायादि में उत्पन्न होते नहीं है तथपी तिर्यक्ष पचन्धिय पने उत्पन्न होते है जन्मोत्पत्तादि क बास्वे
 मरु पर्वतादि पर भावे हुने धात्री में ज्ञान करत नृत्युपाकर बही हो मच्छादि पने उत्तरभ राजाये इत भावेसा
 स गिन है तथा पूर्व मन्मथिक मनुष्यनी के साथ भोग करत परकर जस क ही उत्तर में उत्पन्न होते इस
 अवेसा म उत्कृष्ट नीचे हो पातनकपथो के दूसरे विभाग में तिरछे यावत् सयभूमण समुद्र में, ऊपर
 मरुपुन व्यवका वक्त क्यों कि किमी पारवे दयबोक के देवता की नेश्राय से वीमार देवछोक का वेवता।

गेवेज्जगदयमर्पणं भत ! मारणसिय समुग्धाएण समाह्वयस्स तेयासरिरस्स के महालिया
 सरीरागाहणा पण्णत्ता ? गायमा ! सरीरपम्माणमप्पा विक्खम्भे वाहल्लुण, आयामण
 जह्णुण्णेण ॥ १८॥ उक्कोसण जाय महल्लोइयागामा, तिरिय जाव मणुस्सस्स
 उक्कु जान मंग उ २ ।। माणाइ अणुत्तरावधाइयस्समि एवधेय ॥ १९ ॥ कम्मगसरी
 रण भत ! त्थिइह पण्णत्ता ? गायमा ! पच्चविहे पण्णत्ता तज्जहा एगिदिय कम्मगसरीर
 जाय पौचिदिय कम्मगसरीरे एव जहेव तयगसरीरस्स भवो सत्ताण ओगाहणाय भणिया

कहना भरा ममबन् ! प्रियरु के दत्ता पारणातिक समुठाल करत है सब उन रु तेजस शरीर की
 भगवाहना कितनी हाता है ! हो मोक्ष ! शरीर प्रमान ता चौड़ी कीर लम्बी जयन्त ता विद्यापरी की
 आय पर्वत बयो, कि इन क उचर गैरुग शरीर ही है तथा यह किमी स्थान भावागमन भी नहीं करत है
 इतिहास मे बाद नीय मनुष्य में उत्पन्न हात हा वंताइय पथ पर मा विद्यापर की प्राप्ति है उस में मनुष्य
 या उत्पन्न है उ । अपरा उत्कृष्ट नीये भागागमिनी विमय पर्वत, तिरुछ यावन् मनुष्य क्षत्र पर्वत, ऊँच
 मनी रिमान पर्वत नुर रेवता के क्षेत्र का भी पता है कन्ना इति तेजस शरीर का कवन
 ॥ ६॥ - गाय १ न शरीर । कर्त । न हार के कह है ? अहो मोक्ष ! पवि प्रकार के कहे है
 ॥ १७॥ - भूय का कार्यरु शरीर पापक पचन्धिय का कार्यरु शरीर, यो जिय प्रहार तेजस शरीर का

गेत्रेजगदधरमण भक्त ! मागणसिय समुग्धाएजे समोदहरस तेयासरीरस के महालिया
 सरीरागाहणा पणसा ? गायमा ! सरीरपम्माणसत्ता विक्खभे बाहुहुण, आयासण
 जहुण्णेण ॥ १८ ॥ उद्धोसण जात्र अहलोइयागामा, तिरिय जात्र मणुस्सखत्त
 उद्ध जात्र संगोउ २ । समाणइ अणुत्तरावशद्वियस्समधि पयथेय ॥ १९ ॥ कम्मगसरी
 रणं भत्ते उद्धोइह पण्णस ? गायमा ! पचविहे पण्णत्त तज्जहा एगिदिय कमगसरीर
 जात्र पच्चिदिय कम्मगतगीरे एव जहेय तयगसरीरस्समधोसत्ताण ओगाहणाय भणिया

कहना अशा समबन् ! प्रिय के देवता मारणातिक समुछात करत है तब उन के तेमम शरीर की
 धरताहना कितनी हार्ता है ? हो गौतम ! शरीर प्रमान वा चौड़ी और लम्बी जयन्त्य ता विणाधरो की
 ओन पर्यंत क्योंकि इन क उत्तर गैल्लग शरीर हैं ते तथा यह किमी स्थान भावागमन भी नहीं करते हैं
 इन्हीलिय मेरे बाद नीच मनुज में उत्पन्न हात है वहाइय पक्ष पर मा विणाधर की आज है उस में मनुज्य
 एते उत्पन्न है ते उग अ वहा उत्कृष्ट नीचे अगागामिनी विभय पर्यंत, तिरछ यावत् मनुज्य सत्र पर्यंत, ऊंच
 मारे - रिमान प, मा मूर तेमारे के जेवना का वी एग है कन्ना हानि तेमम शरीर का कपन
 ॥ १८ ॥ - ग, न - न, उरिर किं, न हाट के कह है ! अहो गौतम ! पंच प्रकार के कहे है
 ॥ १९ ॥ - ग, न - न, उरिर किं, न हाट के कह है ! अहो गौतम ! पंच प्रकार के कहे है

तह १ गिरविसस भाणियद्व जाय अणुचराववातियासि ॥ १५ ॥ ओराद्विय सरी-
रस्मण मते ! कइदिसि पोगला चिजति ? गोयमा ! गित्वाधारण छविसि वाधायंप
दुध सियनिदिसि सियचठदिसि सियचदिसि ॥ वेठद्वियसरोरस्मण मत !
कतिदिस पागला चिजंत ? गोयमा ! गियमा छविसि, एव आहारगसररस्सवि,
तयाकम्मगाण जहा आरालियरस ओरालियमरीरस्सण मत ! कइदिसि पोगला
कहा नैसा हे ! निविशुप कर्मन शरीर का भी कहना पावत अनुचर विमान के दस्ता पयन्त ॥ इति ॥ १५ ॥
अब पाँचा शरीर आश्रिय पुद्गल भवप दाग कहत हैं अहाँ मगबन् ! औदारिक शरीर कितन दिशा क
पुद्गल औदारिक पन संबध करता है ? अहाँ गौतम जो अस्माक नजीक न हा तो उस की व्यापात न
दान म ॥ ही दिशा के पुद्गलों का ग्रहण करता है और जो औदारिक शरीर धारक लोक के अन्त में हो
वन का अस्माक की व्यापात होन में वा लोक के कौन में हाता तीन दिशा के पुद्गलों ग्रहण करे
नीच के पा ऊपर क कौन से कुछ ऊच नीच हाथ सो पार दिशा के पुद्गलों ग्रहण कर और आ एक रीत
की तरफ हाथे व पाँच दिशा क पुद्गलों ग्रहण करे अहाँ मगबन् ! बक्ष्य शरीरबासा कितनी दिशा क
पुद्गलों ग्रहण करन है ? अहा गौतम ! निश्चय में छ ही दिशा के पुद्गलों ग्रहण करते हैं क्यों कि वैक्य
शरीरपारी संदेव लोक क पश्य में ही होत हैं ऐस हो आहारक शरीर का भी कहना और तेजस

उपचिञ्चति ? गोपमा ! एवं यत्र जाव कम्मगसरीरस एव लघुचिञ्चति अधचिञ्चति ॥ १६ ॥ जस्सण भते ! आरालियसरीर तस्सण येउन्विजसरीर जस्सवेउन्विजसरीर तरस आरालियसरीर ? गायमा ! जस्स आरालियसरीर तरस वेउन्विजसरीर सियअ स्थि सियणाएय जस्सवेउन्विजसरीर तस्स ओरालियसरीर सियअस्थि सियणस्थि ॥ जस्सण भन्त ! आरालियसरीर तस्स आहारगसरीर जस्स आहारगसरीर तस्स ओरालियसरीर ? गायमा ! जस्स ओरालियसरीर तस्स आहारगसरीर सियअस्थि सियणस्थि,

कायाण शरीर का जसा औदारिक शरीर का कहा तेस कहना जिस प्रकार जितन प्राण करने का कहा उस ही प्रकार उरविनेने संग्रह करन का कहना और इस ही प्रकार अन्तर्य-पुत्रों का छादन का कहना ॥ १६ ॥ अब शरीर संयोग द्वार कहत है—भइया भगवन् ! जिस क औदारिक शरीर हाता है उस के वैकल्प शरीर होता है और जिस क वैकल्प शरीर हाता है उस के औदारिक शरीर होता है क्या ! भइया भौतय ! जिस क औदारिक शरीर होता है उस क वैकल्प शरीर कदापिन् हाता है कदाचित् नहीं भी हाता है वैकल्प लाब्धिनाल औदारिक शरीरपारी क वैकल्प शरीर हाता है अथ क नहीं हाता है और जिस क वैकल्प शरीर होता है उस क भी औदारिक शरीर कदापिन् होता है कदाचित् नहीं हाता है देवों कि लाब्धिवत् विर्षेच मनुष्य के लो है अथ क नहीं है अही भगवन् ! जिस क औदारिक

जस्स आहारगसरीर तस्स ओरालियसरीर णियमा अत्थि ॥ अरसण भत्ते !
 आराण्डयसरीरं तस्स तेयगसरीर, जस्स तेयगसरीरु तस्स आरालियसरीर ? गायमा !
 जस्स आरालियगरीर तस्स तेयगमरीर णियमाअत्थि, जस्स पुण्णतेयगसरीर तस्स
 आरालियमरीर सियआत्थि मियणत्थि ॥ एव कम्मवसरीरेवि ॥ जस्सणं भत्ते !
 वठन्वियसरीर तस्स आहारयसरीर जस्स आहारगसरीरं तस्स वेठन्वियसरीर ?
 खरीर हाता है उन के आहारक खरीर होता है और जिस के आहारक खरीर होता है उस के औदा-
 रिक खरीर हाता है क्या ? अथा गौतम ! जिस के औदारिक खरीर हाता है उस क आहारक खरीर कदा-
 चिद् हाता है कदाचित् नहीं होता है क्योंकि कि जा मनुष्य माषु हो बहुत पक्ष के पाठा हुए हो आहारक
 न क्व मग्न ईई हा उन के आहारक खरीरही होत है, अन्य के नहीं होते हैं और आहारक खरीरपारी के
 औदारिक खरीर ता नियमा से जाना है क्योंकि कि आहारक लांछि औदारिक खरीरवाले के ही होती है
 अथा मगदन ! जिस क औदारिक खरीर होता है उस क तजम खरीर होता है क्या और जिस क
 तजम खरीर हाता है उस के औदारिक खरीर हाता है क्या ! अथा गौतम ! औदारिक खरीरवाले के
 तजम खरीर ता नियमा से होता ही है और तजम खरीरवाले को कदाचित् औदारिक खरीर हाता है
 कदाचित् नहीं भी हाता है क्योंकि कि अथवा औदारिक खरीरवाले क तजम खरीर तो है परंतु औदारिक

गोयमा ! जस्स वेठिअियसरीर तस्स आहारगसरीर णत्थि, जस्स पुण आहारगसरीर तस्स वेठिअियसरीर णत्थि, तेयाकम्माइं जहा ओरालिपुणसभम, तहव आहारगसरीर णत्थि सम तेयाकम्माइ तद्देव उच्चागियन्ग ॥ अस्सण भते ! तेयगसरीरं तस्सकम्मगसरीर जस्सकम्मगसरीर तस्स तेयगसरीर ? गोयमा ! जस्सनेयगसरीर तस्सकम्मगसरीर णियमाअत्थि, जरसन्निक्कम्मगसरीर तस्स वि तयगसरीर नियमाअत्थि ॥ १७ ॥

शरीर नहीं है जिस प्रकार औदारिक वज्र का मध्यव कहा वन ही प्रकार तेमस् कार्माण का भी मध्यव कहना अगो भगवन् ! जिस क वैक्रय शरीर जाता है उस क क्या आहारक शरीर जाता है और जिस क आहारक शरीर होता है वन क वैक्रय शरीर होता है ? अहा गौतम ! जिस क वैक्रय शरीर होता है उस क आहारक शरीर नहीं जाता है और जिस क आहारक शरीर होता है उस क वैक्रय शरीर नहीं जाता है वैक्रय मज्जस कार्माण मध्यव केमा औदारिक तजस कार्माण का कहा तेमा ही कहना और आहारक शरीरक साथमें मज्जस कार्माण शरीर नियमास है तजस कार्माणक स्थान आ तरक शरीरकी मनना है और नहीं भी है अहा भगवन् ! जिस क तजस शरीर है उस क कायाण शरीर है और जिस क कार्माण शरीर है उसको क्या तेजस शरीर है ? अहा गौतम ! जिस क तजस शरीर है उस क कार्माण शरीर नियमा स है और

१॥ १॥ १॥ रागावहादुर लासा सुखदम महायमी ज्वालागहादुरा ॥

पतासण भत ! ओरालिय वेठास्विय, आहारग तेग ^{द्वन्द्व}गसरणि ^{द्वन्द्व}द्वयाए
पदमद्वयाए ^{द्वन्द्व}द्वयपदेसद्वयाए कयेरे २ अप्पाया ^{द्वन्द्व}द्वयोध ^{द्वन्द्व}नुखाया विसमाहियावा ?
गायमा ! सवत्थाया आहारगतरीरा ^{द्वन्द्व}द्वय ^{द्वन्द्व}नवेवय सरिआ ^{द्वन्द्व}द्वयद्वयाए असख
जगुणा आरालियमरीरा ^{द्वन्द्व}द्वयाए ^{द्वन्द्व}सखजगुणा तयाकम्मगसरीरा दानित्तुखा ^{द्वन्द्व}द्वयाए
अणतगुणा ॥ पदसद्वयाए-सवत्थोवा आहारगसरीरा ^{द्वन्द्व}द्वयाए ^{द्वन्द्व}वेठविजयसरीरा पदेसद्वयाए
असखजगुणा ओरालियसरीरा पदसद्वयाए असखजगुणा तयगसरीरा पदे ^{द्वन्द्व}द्वयाए

जिम स कामाण शरीर है उस के तेजस शरीर भी नियमा मे दे ॥ ७॥ अशो पमवद् ! औदारिक वक्रय आहारक
तेजस कर्मान न्क्यार्थ पमे प्रदशार्थ पने तथा द्रव्यप्रदेशार्थपने किम २ सवाह श्रुत मुख्य विषय है ! अ॥ गाव ५ !
मम मे योह आहारक शरीर द्रव्यार्थपने वगो कि भल्योने ही होते है, २ तम से वैक्य शरीर द्रव्याधान
असखयतगुन चारों गति मे पाजा है, तम स औदारिक शरीर द्रव्यापने असखभावमन वगो कि पापा
स्वावरोंके मी यह शरीर है, और तमसे तेजस कार्वाणनाने परस्पर तुल्य द्रव्यार्थपने यमकतमन वगोकि सर्वसमारी
मायोके होता है निगोद आश्रय कणनगुना कहा है अथ प्रदेशाथ कदव है सप्तैषादे आहारक शरीर प्रदशार्थपने
२ तमसे वैक्य शरीर प्रदशाधन असखयातमना, तमसे ३ औदारिक शरीर प्रदशार्थपने यमकतमना, ४ तमसे
नतम शरीर प्रदशार्थपने अननगुना तमस कार्वाण शरीर प्रदशाधन अननगुना अथ द्रव्यप्रदशार्थपने सर से

कम्मग मरीराण जहणियाए ओगाहणाए उक्कासियाए ओगाहणाए जहण
 उक्का । ४५ 'यागाहणाए कय २ हिनो, अप्पो-१४ ? गोयमा' सन्नत्थोवा ओरालिय
 सरीरस्स जट्ठाणया ओगाहणा तयाकम्मगण दोण्डवि तुल्ला जहणिया ओगाहणा
 विमसाङ्गि वेत्थियमरीरस्स जहणिया ओगाहणा असेस्सज्जुणा आहारण' सरीरस्स
 जहणिया ओगाहणा असेस्सज्जुणा उक्कासियाओगाहणा सन्नत्थोवा आहा-
 रणसरीरस्स उक्कोभियाओगाहणा, ओरालिय सरीरस्स, उक्कोसिया, ओगाहणा।
 मस्सज्जुणा वत्थवियसरीरस्स उक्कोसिया ओगाहणा सस्सज्जुणा तयकम्मगण

होती है तपस्वि निगादीय मीच तत्पक्ष होते उन का शरीर बहुत छोटा होता है उस ल' तेजस का'र्म' की वरत्सर तुल्य भौदारिककी अपन्य अवगाहना से इनकी अपन्य अवगाहना विशेषाधिक बयों कि मारणाधिक समुदाय वक्त में शरीर से बाहर निकले प्रत्य भौदारिक शरीर में परिष्क होते हैं उस से वैक्रम्य शरीर की अपन्य अवगाहना, असंख्यातगुनी बयों कि दृष्टादि के तत्पक्ष होती बर्फ में पड़ी दानी है उन से बाधारत शरीर की अपन्य अवगाहना असंख्यातगुनी बयों कि एक दृष्ट में दुःख स्व की होती है अब प्रत्यक्ष अवगाहना की अवगाहना के इन हैं—पक्ष में दोहो तत्पक्ष अवगाहना बाधारक शरीर की बयों कि एक दृष्ट की ही होती है, उस से भौदारिक शरीर की तत्पक्ष अवगाहना संख्यातगुनी बया कि कुछ

वैष्णव सृष्टा उक्तोसया आगाहणा असंख्यगुणा जहण्णतकोसियाए ओगाहणाए सन्व
 रथोया आरालियसरिरस अहणिया ओगाहणा, तथाकम्माणं दोण्हवि तुल्ला जहणिया ओ
 गाहणा विसेसाहिया, वेठवियसरिरस्स जहणिया ओगाहणा असंख्यगुणा, आहारगसरी
 रस्स जहणिया आगाहणा असंख्यगुणा, आहारगसरिरस्स जहणिया हितो ओगाहणा
 हितो तरनयेव उक्तोसिया ओगाहणा विसेसाहिया आरालियसरिरस्स उक्तोसिया
 ओगाहणा मख्यगुणा, वेठवियसरिरस्स उक्तोसिया ओगाहणा असंख्यगुणा,

अधिक एकद्वार योजनकी है, वसते वैक्रय शरीरकी वस्तु, अवगाहना संख्याशुनी क्यों कि कुछ
 अधिक संस योजन की होती है, उस स वेमस कार्माण परस्पर तुल्य वैक्रय की वस्तु अवगाहना से
 इन की वस्तु अवगाहना असंख्याशुनी क्योंकि केवल समुदास वक्त सर्पस्रोत व्यापी बनते हैं
 प्रथम अथन्य वस्तु अवगाहना का भेदा करते हैं—१ तब से योदी औदारिक शरीर की अथन्य अवगा
 हना, २ उस से वेमस् कार्माण दोनों की, परस्पर तुल्य औदारिक की अथन्य अवगाहना से इन की
 जपन्य अवगाहना विधुपायिक, ३ वैक्रय शरीर की अथन्य अवगाहना असंख्याशुनी, ४ आहारक
 शरीर की अथन्य अवगाहना असंख्याशुनी, ५ आहारक शरीर की अथन्य अवगाहना त आहारक

सेवाकर्मगाणं दाह्यते तुंछो उक्तास्यो अगिहाहणा असस्वजेगुणा ॥ इति पूर्णं
 घणाए मगवद्देए एकव्यसम सर्गापय सम्मत् ॥ २१ ॥

शरीर की वस्तु अवगाहना विद्याधिक ४ उग स दगारिक शरीर की वस्तु अवगाहना संन्यतगुनी
 १ तम स वैक्रय छोरे की वस्तु अवगाहना संन्यतगुनी, ८ तम से सेनस कार्याण की परस्पर तुल्य
 वैक्रय की वस्तु अवगाहना स असंन्यतगुनी अधिक इति पञ्चव्या पणवरी का इत्येतथा शरीर पद ॥ २१ ॥



ॐ द्वाविंशतितम क्रियापदम् ॐ

कतिण भते । किरियाआ पणत्ताओ ? गोयमा ! पचकिरियाओ पणत्ताओ
तजहा-काइया, अहिगरिणिया पादोसिया परियात्रणिया, पाणातिगायकिरिया ॥ १ ॥
काइयाण भंत ! किरिया कतिविहा पणत्ता ? गोयमा ! बुविहा पणत्ता तजहा-
अनुवरयकाइया, दुण्णत्तत्तकाइया किरिया य ॥ २ ॥ अहिगरणिआण भते !
किरिया कतिविहा पणत्ता ? गोयमा ! बुविहा पणत्ता तजहा-संजोयणाहिगरणि

अब वासीसदा क्रियापद कहते हैं अहो भगवन् ! कर्मण्य के कारण रूप क्रिया कितने प्रकारकी करी
है ? अहो नीतम ! क्रिया पांच प्रकार की करी है तथ्या—१ काया शरीर कर के रूग वं कायिकी
क्रिया, स्वप्नादि द्रव्य कर क्रिया लगे यह कथितानी क्रिया, २ मा द्वेय परिणावो कर लग वह प्रहंपनी
क्रिया, ४ जो परिताप पुत्र की कर्षा होवे वह परितापनी क्रिया भार ५ जो प्राणों का यात्र कर यह
प्राणातिपातकी क्रिया ॥२॥ अहा भगवन् ! कायिकी क्रिया कितने प्रकार की करी है ? अहो नीतम !
अहो प्रकार की करी है तथ्या—३ दृष्ट स तथा सर्व स घटकर पाप स काया को निरताप्र दूर न होवे
इह भविष्यति कायिकी क्रिया, और दुष्ट प्रकार अर्थत्वा से काया क योग्यकी प्रवृत्ति कर यह दुर्मयुक्त

याप जिद्वत्तणहिगरणिंयाय ॥ ३ ॥ कदासियाण भते ! किरिया कतिविहा
पण्णत्ता ? गायमा ! तिथिहा पण्णत्ता तज्जहा-जेण अप्पजावा परस्सवा
तदुभयस्सया असुम मणवा धारते सेच पादाभिया किरिया ॥ ४ ॥ परियात्राणियाण
भत ! किरिया कद्विहा पण्णत्ता ? गायमा ! तिथिहा पण्णत्ता तज्जहा जण अप्पणो
वा परदमवा तदुभयस्सया अनाय वदणं उदरेत्ते सेच परियात्राणिया किरिया
॥ ५ ॥ पाणाइवापकिरियाण भत ! कतिविहा पण्णत्ता ? गायमा ! तिथिहा पण्णत्ता

क्रायिकी क्रिया, ॥ २ ॥ अहा मगधन् ! अधिकरणि ही क्रिया के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम !
 दो भेद कहे हैं, तथया-संयोजना सो छत्स के हाथ आदि का संयोग सिद्धात् और २ नवे छत्स बनाव
 भर निर्व्यति क्रिया ॥ ३ ॥ अहो मगधन् ! मद्रपनी क्रिया क कितने भेद कहे ! अहो गौतम ! तीन भेद
 कहे हैं तथया—जो अपनी आत्मापर अन्य की आत्मापर तथा अपनी पराह दोनों की आत्मापर मन
 परिणाम अयुष-स्वाढ धारण करे यह मद्रपनी क्रिया ॥ ४ ॥ अहा मगधन् ! परितापानिकी क्रिया के कितने
 भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं तथया—अपनी आत्मा को पर की आत्मा को तथा अपनी पर
 की दोनों की आत्मा परिताप-दुःख उत्पन्न करे यह परितापानिया क्रिया ॥ ५ ॥ अहो मगधन् ! माणतिपाव की
 क्रिया के कितने भेद कहे हैं ! अहो गौतम ! तीन भेद कहे हैं तथया जो अनर्जित पराङ्मना होने की आत्मा के प्रयोग

तजहा जण अप्पाणवा परवा तदुभयंश जीवियाओ अइरोवइ सेच पाणाइवाय्किरिया
॥१॥जीवाण भते!किं सकिरिया अकिरिया?गोयमा!जीवा सकिरियावि अकिरियावि ॥
सेकणट्ठण भते! एव वुच्चति जीवा सकिरियावि अकिरियावि ? गोयमा ! जीवा
दुनिहा पणत्ता तजहा ससार समावण्णगाय अससार समावण्णगाय, तरथण जत्ते
अससार समावण्णगाय तेण सिद्धा, सिद्धाण अकिरिया ॥ तरथण जेतें ससार
समावण्णगा त दुविहा पणत्ता तजहा सत्तेसि पट्ठिवण्णगाय असत्तेसि पट्ठिवण्णगाय ॥

प्रसंग कर रह न जाते रातकी क्रिया ॥ १ ॥ अहो भगवन् ! नीच सक्रिय है कि आक्रिय है ? अहो
गौतम ! नीच सक्रिय भी है और आक्रिय भी है अहा, भगवन् ! ऐसा किम कारण कहा कि नीच
सक्रिय भी है और आक्रिय भी है ! अहा गौतम ! नीच क्षा प्रहार के कह है तथा—, ससार
सम्यग् और अससार सम्यग् इस में जो अससार सम्यग् नीच है व मिद्ध करलात है व सिद्ध
भगवन् ता सक्रिय है अथाए वन को क्रिया नहीं सकती है और जो ससार सम्यग् नीच है वन क
दो भद क्रिये है तथा—सत्त्वशी, मदिवल जो चतुदशवे गुणस्यानाकृते क पर्वत की तरह हीनों योगोंका
भियोगी मूर पर अगामी पने हैं, के और अशैलेधी, नीच जो वेरवे गुणस्यानथल जोकों इस में जो अशैलेशी

किरिया कजति ? हुता गोयमा ! अरिण ॥ कहिण भते ! जीवाणं मुसावाएणं
 किरिया कज्जइ ? गायमा ! सन्वद्वेसु ॥ एव निरतर नरइयाण जाव वेमाणियाण ॥
 अरिण भत ! जीवाण नदिण्णादाण विरिया कज्जति ? हुता गोयमा ! कहिण
 भते ! जीवाण अविणगाएणेण किरिया कज्जइ ? गोयमा ! गहणधारणिजेसु दब्बेसु ॥
 एव नरइयाण जाव निरतरं वेमाणियाण ॥ अरिण भते ! जीवाण मेहुणण
 किरिया कज्जति ? हुता अरिय ॥ कहिण भते ! जीवाण मेहुणेण किरिया कज्जति ?

हो गौतम ! हे अहो भगवन् ! नीव मृणावाद की क्रिया कहा करता है ? अहो गौतम ! सदा
 मकार क द्रव्य का अथवा प्रकृता हुआ मृणावाद की क्रिया करता है इस क भी एक समुच्चय जीव का
 और चौबीस दंडक के एस पचीस सूत्र कहना अहो भगवन् ! नीव क अदत्तादान की क्रिया है क्या ?
 हो गौतम ! हे अहो भगवन् ! जीव अदत्तादान की क्रिया कहा करता है ? अहो गौतम ! किसी
 भी वस्तु को ग्रहण करना हुआ, धरन करता हुआ अद्यापान की क्रिया करता है इस क भी समु
 चय जीव और चौबीस दंडक क पचीस सूत्र कहना अहो भगवन् ! जीव क पैयुन की क्रिया है क्या ?
 हो गौतम ! हे अहो भगवन् ! जीव पैयुन क्रिया कहा करता है ? अहो गौतम ! स्त्री मादि के

'एव अट्टारस्त एते दृढगा ॥ ८ ॥ जीवेण मते ! पाणाद्भवातेणं कतिकम्मपगडीओ
 यधति? गोयमा! सत्तविह बंधएवा अट्टविह बंधएवा एव जेरइए जाव वेमाजिए जीवाणं भते!
 पाणाद्भाएण कतिकम्मपगडीओ यधति? गोयमा! सत्तविह बंधगावि अट्टविह बंधगावि ॥
 जेरइयाण भते! पाणा! सिवाएण कतिकम्मपगडीओ यधति? मायमा! सत्तेवि ताव होज्जा सस
 विह बंधगा, २ अहवा सत्तविह बंधगाय अट्टविह बंधगेय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय अट्टविह
 नीव आश्रिय करे ॥ ८ ॥ अब किया कर्म बन्ध का कथन कहते हैं अह! मगवत् ! भीव भाणातिपात
 करता हुआ कितनी प्रकृति का बन्ध करता है ! अहा गौतम ! भिन वत्त आयुष्य कर्म का बंध नहीं
 करता है उस वत्त सात कर्म का बंध करता है और भिस वत्त आयुष्य का बंध करता है उस वत्त
 माठ ही कर्म प्रकृति का बंध करता है क्यों कि आयुष्य का बंध एक पक्ष में एक ही वत्त होता है
 ऐसे ही नरक के वैशानिक पर्वत करना अब बहुत माश्री कहते हैं, अहा मगवन् ! बहुत भीव
 पाणातिपात स कितनी कर्म प्रकृतियों का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! सात-अथवा आठ अहो,
 मगवन् ! नेरीये प्राणातिपातक क्रिया स कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहा गौतम ! सब
 वैसे ही करना इस के तीन भागें होती हैं—' सात कर्म के बंधक वा सदैव बहुत पाते हैं इसीलिय सात
 कर्म बंधन करन शक्य बहुत, सात कर्म के बंधक बहुत और आठ कर्म का बंधन एक, ३ सात कर्म के

अधोगाय एव अमरकुमारायि जाय शणियकुमारायि ॥ पृष्ठविभ्रातु संक गऊ-वर्णकृति
काइयय एए सन्नेयि जहा आहिया जाया, अवयमा जहा णरइण ॥ एव एते जीव
एगिदियवज्जा तिण्ण मगा सन्नय माणियवत्ति जाव मण्ठावसण सल्लण ॥ एवं
एगत्त पोहत्तिया ॥ छत्तिस् दहगाहोति ॥ ९ ॥ जीवेण भते ! नाणावरणिज्ज कम्म
ववमाणे फइ किरिए ? गायमा ! सिय त्तिंकरिए सियचडकिरिए ॥ एवं
णरइए जाव वमाणिए ॥ जीवाण मत ! गाथावरणिज्ज कम्म अथमाणा कतिकिरिया ?

दन्वक मी बहुत भोग आठ कर्म के वन्यक मी बहुत इस ही प्रकार तीन मांस असुरकुमार स 'यार्ति
स्तान्तिकुमार पर्यंत दशों ही मुचनपति देव का कहना पृथ्वी पानी तेल वायु वनस्पतिकाय को जैसे
मौयिक नीब का कहा वैसे कहना ऊपर सब दहक का जेमा नरीयका कहा तैसा कहना यों इस प्रकार
एकन्त्रिय छेदकर सब दहक पर तीन २ मांस कहना बार जेमा प्राणातिपात से कम वच का सूत्र कहा
एसा ही वाचर भिष्या दर्शन दुस्य तक अठाराही पाप से कमवच का सूत्र जानना इस प्रकार ही
एक नीब माश्रिय १८ सूत्र कहना और अनेक नीय माश्रिय यी १८ सूत्र इस ही प्रकार कहना यों
सब १९ सूत्र दहक आश्रिय हुन ॥ ९ ॥ भदो मगवन् ! नीब प्रानावरणिय वच करत पुआ कितती क्रिया
करता रे ! भदो जीणम ! कदाचित तीन किया करता रे कदाचित चार किया करता रे

गोयमा । तिष्ठिरियात्रि चठकिरियात्रि पचकिरियात्रि ॥ एव जेरइया जात्र
वेमाणिया एव दरिसणावरणोय वेयजिब्ब, माह्णिज्ब, आउय, णाम, गोय, अतराइयंय,
अट्टुत्रिह कम्मपगहीत्ता गाणियब्बाओ एगचपाह्णिचिया सालस दहगा भवति ॥ १० ॥
जीवण भत्ते ! जीयात्तो कत्तिफिरिए ? गायमा ! सियत्तिकिरिए, सिय
पचकिरिए मियअकिरि, जीव्णेण भत्ते ! णरइयओ कइकिरिये ? गायमा ! सियत्तिकिरिए, सिय
चठकिरिए सियअकिरिए ॥ एव जाव थणियकुमाराअ ॥ पुढत्तिकाइयाओ आज्जकाइयाओ

है, और कदाचित् पांच क्रिया भी करता है यों नदीये से वाक्क वेमानिक ऐसे पचीस सूत्र
कहना भार जिस प्रकार यह इमामवरणिय कर्ष का कहा पत्त ही प्रकार दर्शनावरणीय, वेद
नीय, पाहनीय, अयुल्ल नाय, गौय, यन्त्रसग यों आठों हेकर्मोंका कहना ओं जाठों कर्मों क आठ सूत्र एक बीस
आश्रिय और अठ सूत्र बहुत जीव आश्रिय यों १३ सूत्र कहना ॥ १० ॥ अब बीस २ की परस्पर
क्रिया का कहने हैं अष्टा भगवन् ! एक जीव अथ जीव की अपक्षा कितनी क्रिया करता है ! भगो
गौतम ! क्वाचित् तीन क्रिया करता है, क्वाचित् चार क्रिया करता है कदाचित् पांच क्रिया करता है
और क्वाचित् षट्क्रिय भी हाता है भगो भगन् ! जीव को नारही की अपक्षा कितनी क्रिया
सगती है भगो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया सगती है स्यात् चार क्रिया सगती है और स्यात् अ-

तेऊकाइयाओ वाऊकाइयाओ वणस्सइ काइयाओ वेइदिय तेइदिय चठरिंदिय ॥ पच्छिंदिय
तिरिक्खजोणियभणस्साओ जहा जीवाओ ॥ वाणमतरजोइसियवेमाप्पियातो
जहा णरइयातो ॥ ११ ॥ जीवेण भते ! जीवेहिंतो कइकिरिए ? गोयमा !
सियतिकरिए सियच्चठकिरिए सियप्पकिरिए सियओकिरिए ॥ जीवेण भते ! णरइ,
गहिंतो कत्तिकरिए ? गोयमा ! सियतिकरिए, सियच्चठकिरिए, सियप्पकिरिए ॥ एव
क्रिय मी होता है परंतु नरक को अपेक्षा धाम क्रिया नहीं लगती है क्योंकि-बैक्ये वरीरवाले नो
कर्माएवपी होव है किमी के पार परते नहीं है वन्ना आयुए पूरा होने से ही परत है जिस प्रकार
नरकका कहा उस ही प्रकार इहाँ ही भुवनपातिसव तक कहना पृथ्वीकाया अणुकाया तेजस्काय वायुकाया वन
स्रविकाया, बहिंदिय तहिंदिय चौरिन्त्रिय तिरिय वंविंदिय और मनुष्यका जैसे मनुष्य जीवका कहा जैसे कहना
और वाचस्पत्यर क्योठिपी वेमानिक का मेपा नारकी का कहा तेस ही कहना ॥ ११ ॥ अब एक-एक जीव
को बहुत जीव भाषिय प्रश्न पूछते हैं अहो भगवन् ! एक जीव को बहुत जीव आश्रिय कितनी क्रिया
लगती है ? अहो गौतम ! कहावित् तीन क्रिया, कहावित् चार क्रिया, कहावित् पाँच क्रिया, छगती है
और कहावित् भाषिय मी होता है अहा भगवन् ! एक जीव को बहुत नरक के नेरीय आश्रिय
कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया, छगती है, स्यात् चार क्रिया लगती है,

जहैव पदमो पदोऽपि विवर्तितो भाणियन्तो जाव वेमाणियासि ॥ १२ ॥ जहियण भते ! जीवाता कइकिरिया ? गोयमा ! सियतिकिरियावि सियचठकिरियावि, सिय पचकिरियावि, सियअकिरियावि ॥ जीवाणं भते ! नरइयासो कतिकिरिया ? गोयमा ! जहैव आविहउदठओ तहैव भाणियव्यो, जाव वेमाणियसि ॥ १३ ॥ जीवाण भते !

जीवेदितो कइकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियावि चठकिरियावि, पंचाकिरियावि, स्यात् अश्रिय भी हाठा है यो जिस प्रकार प्रथम दंडक बीच आश्रिय कहा तेसे ही यह भी दंडक कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना ॥ १० ॥ अब बहुत बीच आश्रिय एक जीव को क्रिया लग रही है अशा भगवन् ! बहुत बीच आश्रिय एक जीव को क्रिया लग रही है स्यात् आश्रिय भी होता है अशो भगवन् ! तीन क्रिया स्यात् चार क्रिया स्यात् पाँच क्रिया लग रही है स्यात् आश्रिय भी होता है अशो भगवन् ! बहुत बीचों को एक नरक के बीच आश्रिय कितनी क्रिया लग रही है अशो भगवन् ! जिस प्रकार प्रथम एक जीव का दंडक कहा तेसे ही ॥ ११ ॥ भी कहना यावत् वैमानिक पर्यन्त ॥ ११ ॥ अब बहुत बीच आश्रिय बहुत बीचों का चौथा दंडक पूछते हैं अशा भगवन् ! बहुत बीचों को बहुत बीच आश्रिय कितनी क्रिया लग रही है ? अशो भगवन् ! स्यात् तीन क्रिया लग रही है स्यात् चार क्रिया लग रही है स्यात् पाँच क्रिया लग रही है और स्यात् आश्रिय भी होते हैं अशो भगवन् ! एक के जीवों

अकिरियाधि ॥ जीवाण मते ! जेरइएहिंतो कतिकिरिया ? गोयमा ! तिकिरियाधि-
 चठकिरियाधि, अकिरियाधि ॥ अमरकुमारेहिंतो एवंचव आत्र 'वेमाधिपहिंतो
 ॥ १४ ॥ धारालियसरीरेहिंतो जहा जीवेहिंतो ॥ १५ ॥ जेरइएणं मत !
 जीवाता कातिकिरिण ? गोयमा ! सियतिकिरिण सियचठकिरिण, सियंधकिरिण ॥
 जेरइएण मते ! जेरइयाहिंता कइकिरिण ? गोयमा ! सियतिकिरिण सियचठकिरिण
 एवं जाव यप्पियकुमारामो, पुढविकाइयामो जाव मणुत्सातो जहा जीवा, वाणमंतर

आश्रित कितनी क्रिया लगती है ! अहो गौतम ! , स्यात् भीन क्रिया लगती है स्यात् चार क्रिया
 लगती है स्यात् अक्रिय होते हैं इस प्रकार अमुकुमार पावत् वैपानिक देव पर्यन्त प्रथम दंडक कदा वैसे
 ही कहना यह चारों दंडक हुये ॥ १४ ॥ अब पांच शरीर आश्रित क्रिया का करते हैं अहो भगवन् !
 जीव को भौतिक शरीर आश्रित कितनी क्रिया लगती है ! अहा गौतम ! भेमे समुच्चय जीव का कदा
 वैसे ही कहना ॥ १५ ॥ अब चौथी दंडक आश्रित परस्पर पूछते हैं-अहो भगवन् ! एक नरक के जीव को
 जीवसे कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् भीम, स्यात् पार व स्यात् पांच क्रिया लगती है
 अहो भगवन् ! एक नरक के जीव को एक नरक के जीव आश्रित कितनी क्रिया लगती है ? अहो
 गौतम ! स्यात् तीन क्रिया और स्यात् चार क्रिया लगती है. ऐसे ही नरक के जीव को दण्ड भगवन्

जो इसीमा वेमाणि यातो जहः जेरइया ॥ १३ ॥ जेरइएण भंते ! जीवेहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सिय तिकिरिए, सियचठकिरिए, सियपचकिरिय ॥ जेरइएण भंते ! जेरइएहिंतो कइकिरिए ? गोयमा ! सियतिकिरिए सियचठकिरिए, एवं जहेन पढमो दइओ तहा एसो बित्तिओ भाणियच्चो, एव जाव वेमाणि एहिंतो, जवरं जेरइ यस्स जेरइएहिंतो देवेहिंतोय कंथमाकिरियाणत्थि ॥ जेरइयाणं भंते ! जीवातो कतिकिरिया पावे आश्रय तीन तथा चार क्रिया लगती है पृथ्वीकाया से यावत् मनुष्य पर्यन्त जैसा समुच्चय भीनका कहा जैसा कहना वायुगन्धन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा नैरीया का कहा जैसा कहना, अब एक नरक के भीष को बहुत चौबीस दंडक के भीषों आश्रय करते हैं अहो भगवन् ! एक नरक के भीष को बहुत भीष आश्रित कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया, स्यात् चार क्रिया स्यात् पांच क्रिया लगती है अहो भगवन् ! एक नैरीये को बहुत नरक के, नैरीये आश्रित कितनी क्रिया लगती है ! अहो गौतम ! स्यात् तीन क्रिया और स्यात् चार क्रिया लगती है यों जिस प्रकार प्रथम दंडक कहा तेसे ही यह दूसरा दंडक भी कहना यों यावत् वैमानिक पर्यन्त जिस में इतना विशेष नारकी को नारकी से तथा नारकी का देषता से पांचवी क्रिया नहीं लगती है अब बहुत नारकी के भीषों को एक चौबीस दंडक के एक भीष आश्रय करते हैं—अहो भगवन् ! बहुत नरक के जीवों का

गायमा ! सियसिर्किरिया सियचठकिरिया सियपञ्चकिरिया ॥ एव जात्र व्रमाणियाआ
 पवर नेरइयतो द्वाओय पचमाकिरिया नास्थ ॥ १७ ॥ नेरइयाण भते ! जीवहिंता
 कइकिरिया ? गोयमा ! तिर्किरियात्रि चठकिरियात्रि पचकिरियात्रि ॥ नेरइयाण भत !
 नेरइयहिंता कतिर्किरिया ? गोयमा ! तिर्किरियात्रि, चठकिरियात्रि, एव जाव वमा
 निपहिंता, पवर मोरालियसरिहिंता जहा जात्रहिंता ॥ १८ ॥ अमुरकुमारण

एक जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ! अहा मौतय ! स्यात् तीन क्रिया, स्यात् चार क्रिया,
 स्यात् पाँच क्रिया, यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना जिस में इतना बिषय आरकी और दक्ता म
 पाँचवी क्रिया नहीं लगती है ॥ १७ ॥ अब बहुत नरक क लोगों का बहुत जीव आश्रिय क्रिया लगती है
 वह कहत हैं—अहो भगवद् ! नरीयको बहुत जीव आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ! अहो गौतम !
 तीन भी लगती है चार भी लगती है और पाँच भी लगती है अहो भगवद् ! बहुत नरक क नरीय को
 बहुत नरक के नेरीये आश्रिय कितनी क्रिया लगती है ! अहो गौतम ! तीन क्रिया भी लगती है और
 चार क्रिया भी लगती है, यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना, जिस में इतना बिषय औदारिक खीर की
 अग्नेया हो भूमे मनुष्य की आश्रिय कहा हैसे कहना यह नरककारो दइक सपसु दुये ॥ १८ ॥ अहो भगवन् !

भते ! जीवाओ कतिकिरिए ? गायमा ! जहूण णरइए वचारि दइगा तइव असुर
कुमारेवि वचारिदइगा भागियव्या एव उववजिऊण भावेयव्यति, जीवे मणस्सेय
अकिरिए वुच्चति मेसा अकिरिया न वुच्चति ॥ सव्वजीवा आराळिय मरिराहितो णव
किरिया नइय ववहितो पच्चकिरिया ण वुच्चति, एव एक्कक्कीवप्पे वच्चारि २

एक प्रसुखकार का एक जीव आश्रय कितनी क्रिया लगती है ? अहा गौतम ! जिस प्रकार नरक के
चार दंडक फट उस ही प्रकार अमरकुमार क भी चार दंडक कहना (१ एक जीव आश्रय एक जीव
का, २ एक जीव आश्रय बहुत जीव का ३ बहुत जीव आश्रय एक जीव का और बहुत जीव आश्रय
बहुत जीव का) यों चौबीस ही दंडक में जो जो स्थान भीव छत्पत्ती की है वहां २ चार २ दंडक कहना।
इस में समुच्चय जीव और मनुष्यक स्थानता आफयडा मूख लगाना क्योंकि मनुष्यको ही अधिक्य व्यवस्था
प्राप्त होती है छप स्थानमें प्रक्रिय नहीं कहना और सर्वस्थान में औदारिक शरीर के चारक जीव आश्रय
पाव । प्रिया कहना, रक्षेय शरीर बाल नारदी दत्तता स पाव किया नहीं कहना क्योंकि इनका नोपक्रमी
आयुष्य है यह किसी क मार मरते नहीं है तथा आयुष्य पूण हुवे ही मरते हैं यों एकेक जीव, पक्षपे
चार २ दंडक कहना वष एक जीव आश्रय एक जीव से समुच्चय जीव का १ मूत्र और चौबीस दंडक

या कञ्चति तस्मिन्नि काङ्क्षयाकिरिया नियमा कञ्चति ॥ १ ॥ जस्सण भते ! जीवस्स काङ्क्षया किरिया कञ्चति तस्सपादिसिया किरियाकञ्चति, जरस पादिसिया किरिया कञ्चति तस्म काङ्क्षयाकरिया कञ्चति ? गोयमा ! पृथक्चव ॥ जस्सण भते ! जीवस्स काङ्क्षया किरिया कञ्चति तस्सण परित्तावणिया किरिया कञ्चति, जस्सण परित्तावणिया किरिया कञ्चति तस्स काङ्क्षया किरिया कञ्चति ? गोयमा ! जस्सण जीवस्स काङ्क्षया किरिया कञ्चति तस्सपरित्तावणिया किरिया सिक्क कञ्चति सिधणो कञ्चति, जरसण पुण परित्तावणिया किरिया कञ्चति तस्सकाङ्क्षया किरिया णिबमा कञ्चति एवं पाप्माङ्खवाय

जिस को अविहरणीकी क्रिया है उस के कायिकी क्रिया निश्चय से लगती है अहा भगवन् ! जिस का कायिकी क्रिया है उसको क्या प्रदूषणी क्रिया लगती है क्या और जिस को प्रदूषणी क्रिया है उस को कायिकी क्रिया लगती है क्या ! अहा गौतम ! ऐसे ही जानना अहो भगवन् ! जिस को कार्याकी क्रिया है उस को क्या परितापनिकी क्रिया लगती है और जिस को परितापनिकी क्रिया है उस को क्या कार्याकी क्रिया लगती है ! अहा गौतम ! जिस का कायिकी क्रिया होती है उस को परितापनिकी क्रिया क्या पित् होती है और कर्षण् नहीं भी होती है और जिस को परितापनिकी क्रिया होती है उस को कायिकी क्रिया निश्चय ही होती है ऐसे ही प्राणातिपास क्रिया का कष्टना ऐसे ही पारिष्ठ की सी-

किरियादि, पूत्र आदिछाओ परोप्पर नियमा तिण्णि कज्जति, जस्स आदिछाओ तिण्णि कज्जति तस्स उवरिस्साआ दोण्णि सिय कज्जति सिय गो कज्जति ॥ जस्स उवरिस्साआ दोण्णि कज्जति तस्स आदिछाओ नियमा तिण्णि कज्जति, ॥ जस्सणं भत्त ! जीवस्स परित्तावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणासिवायकिरिया कज्जति, जस्स पाणाइवाय किरिया कज्जति तरस परित्तावणिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जस्सण जीवस्स परित्तावणिया किरिया कज्जति तस्स पाणासिवाय किरिया सिय कज्जति सिय

क्रिया परस्पर नियमा होती है जिसको-पहिलेकी चीज होती है उसको पीछेकी दा क्वचित् होती है और क्वचित् नहीं भी होती है और जिस को पीछ की दा क्रियाओं होती है उस को पहिले की चीज क्रिया निश्चय स होती है अहा भगवन् ! जिस जीव को परित्तावणिकी क्रिया होती है उस का क्या प्राणादिपातिकी क्रिया लगती है अथवा जिस को प्राणादिपातकी क्रिया होती है उस को क्या पानिकी क्रिया लगती है ! अहो गौतम ! जिस जीव क परित्तावणीय क्रिया लगती है उस के प्राणा विपात की क्रिया क्वचित् लगती है और कदाचित् नहीं भी लगती है क्योंकि पान मारा और चइ छ मरीने बर्धत मरा नहीं वा-सस परित्तावणी क्रिया ही लगती है प्राणादिपात की क्रिया नहीं लगती है

तसमर्थं परिनाशयिष्यामि किंरियाए पुट्ट पाणाइवायकिरिया ॥ २४ ॥
जीवे एगत्तियाओ जीवाओ जसमय काइयाए अकारणिया किरिया कज्जति,
किरियाए पुट्ट तं समय परितावणियाए-किरियाए, पुट्ट पाणाइवा जपएस चत्तारि दहग
गतिए जीव एगत्तियाओ जीवाओ जसमय काइयाए अहिगर,
किरियाए पुट्टे तसमय परितावणियाए पुट्टे, पाणाइवायकिरियाए २ ? गोयसा !
अत्येगतिए जीवे एगत्तियाओ जीवाओ जसमय काइयाए अधिगरणियाए १
पुट्ट तसमय परितावणियाए अपुट्टे, पाणाइवायाए अपुट्ट ॥ ३ ॥ अत्ये

क्रिया का स्पर्शता है उस समय परितापनीकी और प्राणातिपातकी क्रिया से भी स्पर्शता है क्या ! अहो गौतम ! कितनक जीव तो एक मोड़ की अपेक्षा जिस समय में कायिकी अधिकरण की प्रवृत्तकी क्रिया से हर्षित है उस ही समय परितापकी और प्राणातिपात की क्रिया से स्पर्शते हैं और कितनक जीव एक जीव की अपेक्षा जिस समय कायिकी अधिकरणोय प्रवृत्तकी क्रिया को स्पर्शते हैं उस समयमें परितापनी की क्रिया से स्पर्शते हैं और प्राणातिपातकी क्रिया नहीं स्पर्शत है । कितनक जीव अन्य किसी जीव से 'निसं' समय कायिकी अधिकरणो प्रवृत्तकी क्रिया एवम् उस समय परिताप की क्रिया भी स्पर्श नहीं और प्राणातिपात की क्रिया भी स्पर्श नहीं । उतपन्न करने से '४ और

कञ्चति तस्स परिगहिया किरिया कञ्चति, जस्स परिगहियां किरिया कञ्चति, तस्स आरमिया किरिया कञ्चति ? गोयमा ! जस्सण जीवरस आरमिया किरिया कञ्चति तस्स परिगहिया किरिया सिय णो कञ्चइ, जस्स पुण परिगहिया किरिया कञ्चइ तस्स आरमिया किरिया नियमा कञ्चति॥जस्सणं भत्ता जीवरस आरमिया किरिया कञ्चति तस्स मायवच्चिया किरियाकञ्चति पुच्छा ? गोयमा ! जस्सण जीवरस आरमिया किरिया कञ्चति तस्सणं मायावच्चिया किरिया नियमा कञ्चति,

अर्थात् चौबीस ही देहक में पाँचों क्रिया लगती है अब परस्पर यह पाँच क्रिया कहत हैं अहो भोग बन ! जिस का आरम्भिक क्रिया लगती है उस को परिग्रह की भी क्रिया लगती है क्या और जिस को परिग्रह की क्रिया लगती है उस को आरम्भ की क्रिया लगती है क्या ! अहो गौतम ! जिस जीव को आरम्भ की क्रिया लगती है उस जीव को परिग्रह की क्रिया स्यात् लगती है स्यात् नहीं भी लगती है क्योंकि प्रपञ्च संयुक्तिका अश्वनादिकी अनुशोदना से आरम्भ की क्रिया वा लगती है परंतु परिग्रहकी क्रिया नहीं लगती है और जिस का परिग्रहो क्रिया लगती है उसका आरम्भिका क्रिया जरूर ही लगती है अहो भगवन् ! भित्ति सीढ़ का आरम्भ का क्रिया लगती है उस को माया प्रत्ययी क्रिया लगती है क्या और भित्ति

मायावशिया किरिया कज्जति तस्स उव्वरिह्वाओ वोवि सिया कज्जति सिय णो कज्जति,
जस्स उव्वरिह्वाओ वोवि कज्जति तस्स मायावशिया नियमा कज्जति, जस्स अपघक्खा-
ण किरिया कज्जति, तस्स भिच्छादंसणवशिया किरिया सिय कज्जति सिय णो
कज्जति, जस्स पुण भिच्छादसण वशिया किरिया कज्जति तस्स अपघक्खाण किरिया
जियमा कज्जति ॥ जस्स उव्वरिह्वाओ वोवि सिया किरिया, परोपरिय नियमा कज्जति,
जस्स धत्तातो वत्तारि कज्जति, तस्स भिच्छादसणवशिया किरिया भज्जति, जस्स पुण

अप्रत्याख्यानी क्रिया चौथा मुमक्ष्याम तक है और आरम की छठ गुणस्याम तक है और जिसको
अप्रत्याख्यान की क्रिया समती है उस का आरम की क्रिया तो निश्चय से लगती है, इस प्रकार ही
दिष्ट ॥ त दर्शन क्रिय के साथ भी कहना और इस प्रकार ही वगैरही क्रिया का भी कहना तीनों
ऊपर ही क्रिया साथ ही कहना जिस को माया प्रत्ययी क्रिया लगती है उस को ऊपर की दो क्रिया
कदाचित् लगती है कदाचित् नहीं भी लगती है और जिस के ऊपर की दो क्रिया समती है उस के
माया प्रत्ययी क्रिया निश्चय से समती है जिस क अप्रत्याख्यानी क्रिया लगती है उस के विध्यात्स
दर्शन क्रिया कदाचित् लगती है कदाचित् नहीं भी लगती है, और जिस के विध्यात्स दर्शन क्रिया

मिच्छादसणवचिया किरिया कज्जति तस्स एता- सत्तारि णियमा कज्जति ॥ एते जस्स
 थणियकुमाररस ॥ पुढाविक्काइयस्स जाय भवठरिदियस्स पचवि परोपरनियमा कज्जति,
 पचिदिय निरिक्खजोप्पियस्स आदिह्मायाओ तिण्णिवि परोप्पर नियमा कज्जति, जस्स
 एयाओ कज्जति तस्स उशरिक्कातो पोइ भज्जति, जस्स उवगिह्माओ योण्णि कज्जति तस्स
 ग्रामाओ तिण्णिवि नियमा कज्जति ॥ जस्स अपक्खसाण किरिया तस्स मिच्छादसण
 वसिया किरिया सिप कज्जति सिय णो कज्जति, जस्सपुण मिच्छादसणवचिया

सगती है उस को पावें क्रिया निम्न में लगती है त्रैम गह क्रिया का विधान कहाँ इस ही प्रकार एक
 नरक का ददक और दश मुहनणते के दस ददक यों ददक कहना पृथ्वीकाया से यावत् चौदहिय तक
 पावों ही क्रिया नियमा से लगती है, विर्यव पंचेन्द्रिय के पादक की बीनो क्रिया हो परस्पर नियमा में
 लगती है और जो इन तीन क्रिया का करता है उस के ऊपर की दो क्रिया की मज्जना किमी को
 छोड़ किसी को नहीं भी खने और जिस के ऊपर की दो क्रिया लगती है उस के नीचे की तीन क्रिया
 निम्न से लगती है जिस के अग्रस्यास्थानी क्रिया लगती है उस के विप्यात्त्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया
 स्थान् लगती है स्यात् नहीं लगती है और जिस को विप्यात्त्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया लगती है उस को

किरिया कज्जति तरस अपस्यस्वाण किरिया नियमा कज्जति ॥ मणुस्सरस जहा जीवस्स
॥ प्राणमसर जोइसिय वेमाणियस्स जहा नरइयस्स ॥ २९ ॥ ज समयण भते !
जीवस्स आरभिया किरिया कज्जति तसमय परिगाहिया किरिया कज्जति, एव एते
जस्स जतसय जदेस जयदेसेणय चत्थारि न्हगाणेगव्वा ॥ जहा नरइयाण तहा सन्वदेवाण
णेयन्व, जात्र वेमाणियाण ॥ ३० ॥ अट्ठिण भत ! जीवाण पाणाइवाय वेरमणे
कज्जति ? इता गोयमा ! अरिथ ॥ कम्हाण भते ! जीवाण पाणातिपाय वेरमणे कज्जति ?

अमरशाख्यानी क्रिया नियमा से लगती है मनुष्य का कथन जिस प्रकार समुच्चय नीव का कहा होता
कहना प्राणव्यवहार ज्योतिषी और वैयानिक का कथन जैसा नेरीय का कहा होता ॥ २० ॥ अब
काल आश्रित कहते हैं—अहो भगवन् ! जिस समय जीव आरंभिया क्रिया करता है उस समय में
परिग्रही क्रिया करता है और जिस समय परिग्रही क्रिया करता है उस समय आरंभिया क्रिया करता है
क्या ! यश गौतम ! यों हम प्रकार १ समुच्चय, २ जिस समय, ३ जिस वृत्ति, और जिस प्रदेय यों चारों ही दृष्टक
जिस प्रकार नेरीय का कहा उस ही प्रकार सब देवता का भी कहना यावत् वैयानिक पर्यंत ॥ ३० ॥
अब निवृत्ति अधिकार कहते हैं—यहो भगवन् ! जीव को प्राणातिपात की निवृत्ति होती है क्या ?
यहो गौतम ! होती है अहा भगवन् ! किस प्रकार प्राणातिपात की निवृत्ति होती है ! यहो गौतम !

गोपमा! छसु जीवनि काएसु ॥ अस्थिण भते ! गेरइयाण पाणातिवाय वेरमणे कज्जसि ?
 गोपमा ! जो इणंठु सभट्टे एव जाव वेमाणियाण, णवर मणुस्साण जहा जीवाण ॥
 एव मुसाय ॥ जाव मायामासेण ॥ जीवस्मय मणुस्सस्सय सेसाण णो इण्णट्टु समट्टे णवर
 अविण्णाद गट्ठण धरणिज्जमुवस्येण, मेहुण रुजेसुवा, रुवसहगतेसुवा इत्थेसु
 सेसाण सहसु दग्धसु ॥ आत्थण भते ! जीवाण मिच्छादसणसहसुवेरमणे कज्जसि ?
 इता गावसा ! अस्थि ॥ कम्हाण भते ! जीवाण मिच्छादसणसहसुवरमणे कज्जसि ?

ज जीव की काया की रत्ना करन से बड़ो मगरन् ! नेरीये के पाणातिवात की निवृत्ति होती है
 क्या ! अहो गौतम ! यह बर्ष पातय नहीं बचाए नहीं होती है यों बाबू वैमानिक पर्यन्त चौकीसही
 ईदक का कहना परंतु जिस में इतना विद्वप-भनुष्य के जैसा समुच्चय जीव का कहा जाता इम
 प्रकार की प्रवादाद का बाबू सतरहवा पाप नाश। मुषा की निवृत्ति का भी कहना इन सतरही
 पापकी समुच्चय जीव और मनुष्य तो कदागिबिबु निवृत्ति करप रहे हैं और कदागिबिबु नहीं की करत हैं बाकी तेवीस
 ही ईदक के जीवों निवृत्ति नहीं करसकते हैं अहा मगरन् ! जीव क विध्यात्स दर्शन वस्य की निवृत्ति होती है क्या ?
 हाँ गौतम ! होती है अहो मगरन् ! किस प्रकार जीव के विध्यात्स दर्शन वस्य की निवृत्ति होती है ?
 अहा गौतम ! सर्व इच्छ की वस्य का सदान का छानने से इस प्रकार ही नेरीये से बाबू वैमानिक

गोयमा ! सन्त दन्तेसु ॥ एव नेरइयाण जाव वेमाणियाण, जयर पूर्णिदिय विगल्लिदि
याण जो वण्णंते समंते ॥ ३१॥ पाणात्तिवास विरण्ण भंते ! जीव कसिकम्मवणादीओ
यधती ? गोयमा ! सत्तविह वधएवा अट्टविह वधएवा, छविह वधएवा, एगविह

पर्वत चोर्वास ही देवक का कहना परं तु इतना बिशेष एरुन्दिष क और विरुन्दिष के मिथ्यात्व दर्शन
दृश्य की निवृत्ति नहीं होती है ॥३१॥ अहो यगवन् ! प्राणाभिपान से निवृत्ति करने वाला बीब कितन कर्म
प्रकृति का बंध करता है ! अहा गौतम ! प्रपन्न छठ अवसण सामने आठवे और नवव गुणस्थान में
आयुष्य कर्म छहकर सात कर्म का बन्ध करते हैं, यह भी बहुत मिलता है, और प्रपन्न अवसण आयुष्य
के द्वावकास में आयुष्य का बंध करते हैं यह भी बहुत मिलता है, और छ के बंधक अनिवृत्ति बादर
गुनस्थान के कदाचित् नहीं भी मिलते हैं क्योंकि इनका विरह उच्छृणु छ यहीनेका होता है और जिस वक्त
मिलते हैं उस वक्त अन्य एव द्वा उच्छृणु एकमा आठ मिलता है, उस क दो भाग हात है ? आयुष्य
बंधकतो इगारव गुनस्थान व ल, सीणयोही बारव गुनस्थान वाले कदाचित् मिल कदाचित् नहीं भी मिल
उस का भी मन्तर पड़ता है और मयागी कपली संदेष्ट मिलते हैं इषोखिय इगारव बारव वेरव गुण
स्थान में एकवदनीय के बंधक हैं अयोगी मरषक होते हैं, यह भी किसी वक्त मिलते हैं किसी वक्त
नहीं मिलते हैं क्योंकि इन का भी उच्छृणु छ यहीने का विरह पड़ता है जिस वक्त मिलते हैं

बधएवा अथधएवा ॥ एव मणुस्सेवि भाणियन्वे ॥ ३२ ॥ पाणातिपात विरयाण भते !
 जीवा कइकम्मप्पबन्दीओ बधति ? गोयमा ! सव्वेवि तावहोज्जा—१ सत्तविह बध
 गाय, एगविहवंधमाय २ अहवा सत्तविहबधगाय एगविहबधगाय, अट्टविह बध
 एय ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, एगविह बधगाय, अट्टविह बधगाय, ४ अहवा
 सत्तविह बधगाय एगविह बधगाय छव्विह बधगाय, ५ अहवा सत्तविह बधगाय,
 एगविह बधगाय छव्विह बंधगाय, ६ अहवा सत्तविहबधगाय, एगविह बधगाय,

इस एक अधन्य एक दो तीन चत्तुष्ट १०८ पिसते हैं, इस लिये अक्षरक के दो भागे होते हैं इस
 प्रकार ही मनुष्य का भी कहना यह एक बचन आश्रित कहा ॥ ३२ ॥ अब बहुत बचन आश्रित
 करते हैं—अहो भगवन् ! पाणातिपात से निषर्तनेवांके बहुत जीवों कितनी कर्म प्रकृति का पन्थ करते
 हैं ! अहो मौतम ! तत्क प्रकार ही सब कहना एक पोरसे का भागा और ६ पोरों, यों ७ भाग,
 सात प्रकृति के बन्धक बहुत होते हैं, सामायिक चारिपिया का विरह नहीं पढता है इस लिये, और एक
 सात बदनी के बन्धक ठरय गुणस्यानवास भी बहुत पिसते हैं उन का भी विरह नहीं पढता है यह
 दोनों मर्देर बहुत पिसते हैं इसलिय इन क मान होते हैं, औरटके बन्धक, छ के बन्धक, अर्धबन्धक इन तीनों
 का विरह पढता है इसलिय ८ के २७ भाग होते हैं वह इस प्रकार-एक भागा तो सात के बन्धक का

१. अथधोप ७ अहवा सप्तविह वधगाय, एगविह वधगाय,
अथधगाय ॥ अहवा १ मत्तविह वधगाय, एगविह वधगाय
अट्टविह वधगाय छविह वधगाय, २ अहवा सप्तविह वध-
गाय, एगविह वधगाय अट्टविह वधगाय छविह वधगाय, ३ अहवा
सप्तविह वधगाय, एगविह वधगाय, अट्टविह वधगाय छविह
वधगाय, ४ अहवा सप्तविह वधगाय एगविह वधगाय

दूसरा न होवे इस आश्रय एक सयोगी १ भांग कहते हैं १ सात के
वैषक भी बहुत एक के वैषक भी बहुत २ अथवा सात के वैषक बहुत,
एक के वैषक भी बहुत, और आठ का वैषक एक, ३ अथवा सात के
वैषक बहुत, एक के वैषक बहुत, आठ के वैषक भी बहुत, ४ अथवा सात
के वैषक भी बहुत, आठ के वैषक बहुत, छ के वैषक भी बहुत, ५ अथवा
सात के वैषक भी बहुत, एक के वैषक भी बहुत, अथवा एक, ७ सात के
वैषक भी बहुत, आठ के वैषक भी बहुत और अथवा यी बहुत यह
१ अथवा यी क १ और एक मीना सात का वैषक बहुत एक का वैषक बहुत न वैषक
बहुत का सप्त सात यी होवे, अथवा सयोगी के १२ यमि कहते हैं १ सात के वैषक एक कर्म के

सात के एक के आठ के	वैषक	वैषक	वैषक
१	१	१	१
२	२	२	२
३	३	३	३
४	४	४	४
५	५	५	५
६	६	६	६
७	७	७	७

सात	एक	आठ
१	१	१
२	२	२
३	३	३
४	४	४

बधगाय, एगविह बधगाय छविह बधेएय, अबधएय, ४
 अहवा सत्तविह बधगाय एगविह बधगाय, छविह यव
 गीय अबधगाय ॥ १ अहवा सत्तविह यधगाय, एगविह
 बधगाय अट्टविह, बधएय, छविह बधगेय अब-
 धएय २ अहवा सत्तविह बधगाय, एगविह
 बधगाय अट्टविह यधएय, छविह बधएय,

अबधक बहुत, १ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत,
 १ आठ के बंधक बहुत, अबधक एक, ४ सात के भी

बंधक बहुत, एक के भी बहुत और अबधक भी बहुत अब सात एक
 छ और अबधक के ४ भागें कहत हैं— १ सात के बंधक बहुत, छ का बंधक
 एक संबंधक एक, २ सात के बंधक बहुत, एक का बंधक एक, अबधक
 बहुत ३ सात के बंधक बहुत, छ क बंधक बहुत, अबधक बहुत पर १२ भाग
 हैं। सयोगे बुझे ॥ अब जिसयोगी आठ भागें कहत हैं— १ सात के बहुत एक का बंधक
 एक, छ का बंधक एक, २ अबधक सातकर्म के बंधक बहुत, एक प्रकार के बंधक बहुत,
 आठ बंधक का बंधक एक, छ का बंधक एक, अबधक बहुत, ३ सात के बंधक बहुत, एक के बंधक बहुत

मिलिया, सचावीस भंगो भवति॥एत्र मणूस्सावि, एधेचत्र सचावीस भंगो भावियेव्वा॥
एव मुसावायविरयस्स जाव मायामोसविरयस्सय, जीवस्सय मणुस्सस्सय ॥ ३३ ॥
मिच्छादसणसहू विरण्ण भते ! जीवे कतिकम्मपगढीभा भधति ? गोयमा !
सत्तविह बधएवा, अट्टविह बधएवा, छब्बिह बधएवा, एगविह बधएवा, अबधएवा,
मिच्छादसणसत्तविरण्णं भते ! णेरहए कतिकम्मपगढीभा भधति ? गोयमा !
सत्तविह बधएवा अट्टविह बधएवा, जाव पच्चिय तिरिक्खजोपिए मणुस्से जहा

कथने कहा इस ही प्रकार घुषाबाद क पाप का भी कहना, पाबल सतरा पाप पायायुषाका स्यांगका भी इस ही प्रकार कहना ॥ ३३ ॥ अहो भगवन् ! मिथ्यात्व दृष्टन द्रव्य की निवृत्ति वाले जीव के कितनी कर्म प्रकृति का रूप होता है ! अहो गौतम ! सात प्रकृतिका भी रूप होता है, आठ का भी रूप होता है, ७ प्रकृति का भी रूप होता है, एक प्रकृतिका भी रूप होता है, और अर्बबक भी होता है, ॥ अहो भगवन् ! मिथ्या दर्शन द्रव्य की निवृत्ति करने वाले नेरीये कितनी कर्म प्रकृति का रूप करते हैं ! अहो गौतम ! कितनेक सात कर्म प्रकृति का रूप करते हैं और कितनेक आठ कर्म प्रकृति का रूप करते हैं इस प्रकार ही दशों भवनपति पर्वों स्यावर धीनों विक्कान्द्रिय और निर्पच पंचेन्द्रिय तक कहना मनुष्य का भैस समुषय जीव का कहा हैसा करना और बाणम्यतर

जीने, प्राणमतर ओइसिय वेमाणिए जहा णरइए ॥ मिच्छादसणसल्ल विरयाण
भते । जीवा कतिकम्मपगहीओ ववन्ति ? गायमा ! तच्च ससावीम मंगा भाणियल्ल ।
मिच्छादसणसल्लविरयाण भत ! णरइया कतिकम्मपगहीआ वधाते ? गायमा !
सच्चवि ताव होज्जा-सच्चविह ववगाय, अहवा सच्चविह ववगाय अट्ठनिह ववपाय
अहवा सच्चविह ववगाय अट्ठनिह ववगाय, एव जात्र वेमाणिया, णवर मणुस्साण
जहा जीवाण ॥ ३४ ॥ पाणम्विगतसर्विरयरसण भते ! जीवरस किं भारमिवा

व्यापिनी वैशानिक का नाम नैरायेका कहा गया है । अथ भगवन् ! विष्णु दर्शन कष्ट की
निवृत्ति करमाणा भीत कितनी प्रकृति का बंध करता है ? अथ गोत्रम् ! यही जो एक प्रकार २७ योगों
कहना ॥ अथ भगवन् ! विष्णु दर्शन कष्ट की निवृत्ति करने वाला नैराय्या किन्हीं कर्ष प्रकृतियों का बंध
करता है ! अथ गोत्रम् ! सब नेत्र हो जाते हैं अथात् मातप्रकृति के बंध की वृत्ति है २ अथवा सात
प्रकृति के बंध वृत्ति है आठ प्रकृति का बंध एक है, ३ अथवा मातप्रकृतिका बंध की वृत्ति है और
आठ प्रकृति के बंध की वृत्ति है ॥ यही ही वास्तविक पर्यन्त तीन २ योग कहना जिसमें इतना
विशेष मनुष्य का ऐसा बंध कहा गया है ॥ ३४ ॥ अथ भगवन् ! प्राणविषाद की निवृत्ति करने
वाला भीत आदिमिता किया करता है कि-वास्तविक विष्णु दर्शन अथवा जीव विष्णु करता है २ अथ गोत्रम् !

खीरे, त्राणमस्तर ओहसिय दमाधिपु अहा णेरइए ॥ मिच्छादसजसणसह विरयाण
भते ! जीवा कतिकम्मपगडीओ बघते ? गायमा ! तच्च सत्तावीम भंगा भाणियन्ता
मिच्छादसजसण विरयाण भत ! णरइया कतिकम्मपगडीआ बघात ? गायमा !
सज्जेवि ताव होआ-सत्तविह बघगाय, अहथा सत्तविह बघगाय अट्टाअह यअएय
अहवा सत्तविह बघगाय अट्टाअह बघगाय, एव जाव वेमाणिया, णवर मणुस्साण
अहं जीवाण ॥ ३४ ॥ पाणांतियातविरयरमण भत ! जीवरस किं आरामया

वर्णनेही वेमानिक का बेश नरायेका कहा तेमा करना ॥ अथ ममदन १ मिथ्या दर्शन वस्तु की
निबुल करानाकी वीर कितनी प्रकृति का रूप करना है ३ वरा गोभ्य ! यही जो वस्तु प्रकार २७ मीने
कहना ॥ बहो मगदन ! मिथ्या दर्शन वस्तु की निबुल कराने नाला नेरीषा किशनी कर्ष प्रकृतिपोंका रूप
करता है ! बहो गौतम ! मर मेम की हाते हैं अयात मातप्रकृति के रूप की बहुत है २ अथवा सात
प्रकृति क रूप बहुत हैं आठ प्रकृति का रूप एक है, ३ अथवा मात प्रकृति का रूप की बहुत है और
आठ प्रकृति के रूप की बहुत हैं ॥ पूने ही पाबल वेमानिक पर्यन्त तीन २ योग करना जिसमें इतना
रिक्क प्रनुष का बेशा बीर का कहा तेसा करना ॥ ३४ ॥ प्रदो मगदान ! प्राणाविषाव की निबुलकरने
नाका बीर आरामिसा किषा करात है कि माबल मिथ्या दर्शन वस्तु की किषा करता है ३ अथो योवम

किरिया कज्जति जात्र भिच्छादसणवत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! पाणाति
 वातविरयरस जीवस्स आगमिया किरिया सिय कज्जति सिय जो कज्जति॥पाणातिवात
 विरयरसण भ= ! र्जस्स ररेगाहिया किरिया कज्जति ? गोयमा ! जो इणट्टे समट्टे ॥
 पाणातिपातनिगमण भमे ! जीवस्स मायावत्तिया किरिया कज्जति ? गोयमा !
 सिय कज्जति । ७ नः ८ ज्जति॥पाणातिपात विरयरसण भते ! जीवस्स अपच्छक्खाणवत्तिया
 किरिया कज्जति ? गोयमा ! जा इणट्टे समट्ट ॥ भिच्छादसण वत्तियाए पुच्छा ?
 गोयमा ! जो इणट्ट समट्ट ॥ एव पाणातिवातविरयरस मणुस्सस्सवि ॥ एव जात्र माया-

पाणातिपात की निवृत्ति करनेवाला जोव आरमकी क्रिया स्वात् करता है स्वात् नहीं भी करता है
 प्रमत्त संघटी अभिष आहारादि की अनुमोदना में या प्रमाद बल आरिषकी क्रिया लगती है अन्य
 समयसादि नहीं लगती है अहा प्रमदना प्राणातिपात की विवृत्ति करनेवाला जीव परिग्रही क्रिया क्या करते हैं कि
 नहीं करते हैं ! अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं अर्थात् नहीं करते हैं भगवन् ! प्राणातिपात
 की विवृत्ति करनेवाले जीव मायाप्रत्ययो क्रिया करते हैं कि नहीं करते हैं ! अहो गौतम ! कितनेक प्रमत्त
 संघति करते हैं कितनेक नहीं करते हैं अहो ममवन् ! प्राणातिपात की क्रिया नहीं करने वाला भीव
 ममरगास्थानी क्रिया क्या करता है कि नहीं करता है ! अहो गौतम ! नहीं करता है अहो ममवन् ! प्राणाति-

मासाविरयस्स ज्विस्स मणुस्सस्सय ॥ मिच्छादंसणसत्ताविरयस्सण भत्ते ! जीवस्स
किं आरभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्थिया किरिया कज्जति ?
गोयमा ! मिच्छादंसणसत्ताविरयस्स ज्विस्स आरभिया किरिया सिय कज्जति सिय
णो कज्जति एव जाव अपवत्थणाणकिरिया सिय कज्जति सिय ज्ञो कज्जति, मिच्छा
दंसणवत्थिया किरिया नो कज्जति ॥ मिच्छादंसणसत्ताविरयस्सण भत्ते ! णेरइयस्स
किं आरभिया किरिया कज्जति जाव मिच्छादंसणवत्थिया किरिया कज्जति ?

पाव की निवृत्ति करने वास्ता जीव विध्या दर्शन की क्रिया करता है कि नहीं करता है अहो गौतम! नहीं करता है
जः मायाविपाक की निवृत्ति का कहा इस ही प्रकार दृष्टावाद् अदृष्टादान यावत् उत्तरदाया माया मोसा पापकी
निवृत्ति का भी कहल जिस प्रकार समुच्च जीव का कड़ा बस ही प्रहार मनुष्य कुः मी कहना अहो
ममन् ! विदवा दर्शन क्षय की निवृत्ति करनेवाला नीच आरमिया क्रिया करता है कि नहीं करता है ?
अहो गौतम ! स्वात् करता है स्वात् नहीं भी करता है ऐसे ही परिग्रही माया प्रत्ययी और अमत्या-
सुखानी क्रिया का कहना अहो मगधन् ! विध्या दर्शन शून्य का निवृत्तिवाले नेरीये को क्या आरमिकी
क्रिया संगती है यावत् नया विध्या दर्शन मन्थयी क्रिया संगती है ? अहो गौतम ! आरमिया

गोयमा ! आरभिया किरिया कज्जति जात्र अपखस्खाणकिरियावि कज्जति, मिच्छादसण वच्चिया किरिया णो कज्जति ॥ एत्र जात्र यणियकुमाररस ॥ मिच्छादसणसहस्रविग्यस्सण भते ! पच्चिय तिरिक्ख जेणियस्स एवमेव पुच्छा ? गोयमा ! आरभिया किरिया कज्जति जात्र माणवत्थिया किरिया कज्जति अपखस्खाण किरिया सिय कज्जति सिय णा कज्जति, मिच्छादसण वत्थिया किरिया ण कज्जति। मग्गस्सत्त जहा जीवस्स वाणमतत्र जोहसिय वेमावियस्स जहा णेरइयस्स ॥ ३५ ॥ एतासिण भत ! आरभियाण जात्र मिच्छादसण वत्थियाणय कयर २ हितो अप्पावा ३ ?

परिभ्राईया मायामत्ययी और समस्याख्यान यह चार क्रिया तो करवा है मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया नहीं करता है एस हो यावत् त्यन्ति कुमार पर्यन्त कहना भवो भगवत् ! मिथ्यादर्शन शरय निबुद्धिनास्ते। गर्भवको आरभिकी क्रिया तथा समग्री है यावत् मिथ्यात्व दर्शन प्रत्ययी क्रिया ख्याती है ? भवो गौतम ! आरभिकी परिभ्राईया माया प्रत्ययी यह तीन क्रिया समग्री है अप्रत्याख्यानमिथ्या किसीका समग्री है किसीको नहीं भी समग्री है क्यों कि यह आवक भी होते हैं और मिथ्यादर्शन प्रत्ययी क्रिया नहीं भी समग्री है मनुष्यका वैसा अविकल कहा ऐसा कहना वाणव्यन्तर ज्योतिषी वैमानिकका मैमा नेरियेका कहा ऐसा कहना ॥ ३५ ॥ अब अहमवधारण करते हैं भवो भगवन् ! आरभिकी यावत् मिथ्यादर्शन प्रत्ययी क्रियामें

गोपमा ! सव्यथेन्द्रो मिच्छादस्य क्षत्त्रियाओ किरियाओ, अपञ्चवल्क्षण किरियाओ
 विससाहियाओ पारंगहियाओ किरियाओ विससाहियाओ, आरिभियाओ किरियाओ
 विससाहियाओ, मायायत्तियाओ किरियाओ विससाहियाओ॥ इति पणवणा भगवईए
 व धोसम किरिया पय समसत्त ॥ २२ ॥

कोन वदा हे पावत् विरोधापिह कोन हे ! अहो गोतम ! सब स वाह विप्यास्य दर्शन प्रत्यपी क्रियावासे
 बहो कि प्रयत्न गुणस्यान मे ही लगनी हे, उस स अपस्यास्यान क्रियावासे विरोधापिह बहो कि बोधे
 गुणस्यान वरु हे, उम स परिग्रहीषा क्रियावासे विरोधापिह कयो कि पाचव गुणस्यान वरु हे, उस से
 आरिभिया क्रियावासे विरोधापिह बहो कि छउ गुणस्यान वरु हे उस से माया प्रत्यपी क्रियावासे विरो-
 धापिह बहो कि दत्तव गुणस्यान वरु हे इति पणवणा भगवटीका बर्षासिया क्रियापद सपूर्ण हुआ ॥२३॥



॥ त्रयोविंशतितम कर्मबन्धपदम् ॥

कतिपयगद्दी कहिं बंधइ कसिहिं ठाणेहिं बंधइ जन्त्रो । कहवैदइय पगढी अणुमावो
कसिविहो करस ॥ १ ॥ कहण भत ! कम्मपगढीओ पणत्ताओ ? गायमा ! अट्ट
कम्मपगढीओ पणत्ताआ तंजहा जाणावरणिज्ज, दरिसणाश्रणिज्ज, वेदणिज्ज,
मोहनिज्ज, आठय, जाम, गास मंतराइय ॥ २ ॥ जेसइयाण भत ! कति कम्म
पगढीओ पणत्ताओ ! गायमा ! एव च एव आव वमाणिआण ॥ ३ ॥ कहण्य

मम तवीमवा कम प्रकृति पद करते हैं जिस के द्वारों :—१ कर्म की प्रकृति कितनी है, वन प्रकृति
वो का वष किस प्रकार होता है, २ कितने स्थान जीव कम प्रकृति बंध करता है, ४ किस प्रकार जीव
कर्म प्रकृति बदता है, और ३ अनुपाग (रस) कितन प्रकार का, यह पांच धार करते हैं ॥ १ ॥ यहा
भगवन् ! कर्म प्रकृति विन्नो कही है ? अहा मोक्ष ! कर्म की आठ प्रकृति कही है तयवा—
ज्ञानावरणीय, २ वसनावरणीय, ३ बदनीय, ४ माहनीय, ५ आपुण्य, ६ नाम, ७ गोम, और ८ अतराय
॥ २ ॥ अहो भगवन् ! नरीय का कितनी प्रकृति कही है ? अहो गोमय ! वक्त आठों प्रकृति कही है,
तेसे ही पावन वैमानिक तक चौबीस ही दंडक में आठों कर्म प्रकृति है ॥ ३ ॥ अब दूसरा रूप धार करते

भते ! जीवे अट्ट कम्मपगढीओ बंधति ? गोयमा ! जोणावरणिज्वस्स कम्मस्से
 उदएण दरिसणावरणिज्जं कम्म नियच्छति दरिसणावरणिस्स कम्मस्स उदएण
 दंसणमोहजिज्जं कम्म गिगच्छइ दंसणमोहजिज्वस्स कम्मस्स उदएण मिच्छत्त
 गिगच्छइ मिच्छत्तेणं उदिण्णेण एव खलु जीवे अट्ट कम्मपगढीओ बंधइ ! कहण्ण
 भते ! नरइए अट्ट कम्म पगढीओ बंधइ ? गोयमा ! एव चंच एव जाव वेमाणिए
 ॥ ३ ॥ कहण्णं भत ! जीवा अट्ट कम्मपगढीओ बंधति एव चंच जाव वेमाणिया
 ॥ ५ ॥ जीवेणं भते ज्ञाणावरणिज्जं कम्म कतिहिं ठाजेहिं बंधति ? गोयमा !

हैं—अहो भगवन् ! किस प्रकार जीव आठ कर्म की प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! ज्ञानावर
 णिय कर्म के सब से दर्शनावरणीय कर्म हाथा है दर्शनावरणीय कर्म के उदयस दर्शन मोहनीय कर्म होता
 है दर्शनमोहनीय कर्मको बाँधता हुआ, विध्यत्स की बाँछा करे, उस विध्यत्स के उदय कर आठों कर्म
 का बाँधता है वो निर्धय जीव आठ कर्म प्रकृति का बंध करता है, इस प्रकार ही नारदी से समाकर
 वैष्णविक पर्यंत चौबीस ही दंडक के जीव कर्म बंध करते हैं ॥ ४ ॥ अब बहुरचन बोखते हैं—अहो भगवन् !
 किस प्रकार बहुत जीवों कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अहो गौतम ! एक प्रकार ही यावद् वैधितिक
 पर्यंत करना ॥ ५ ॥ बंध का कारण द्वार—अहो भगवन् ! भीष ज्ञानावरणीय कर्म का बंध कितने स्वान

दोहिं ठाणेहिं तजहा रागेणय दोसेणय रागेदुविहं पणचें तजहा मायाय लोभेय दोसे-
 दुविहं पणचे तजहा कोहेय माणेय इचेतोहिं चउहिं ठाणेहिं वीरिय उवगगहिणहिं,
 एव खलु जीवे णाणावरणिज कम्म वधइ एव णेरइए जाव वेमानिए ॥ ६ ॥
 जीवाण भते ! णाणावरणिज कम्म कतिहिं ठाणेहिं बधंति ! गोयमा ! 'दोहिं ठाणेहिं
 एवं चव एव णेरइया जाव वेमानिया एव दसणावरणिज जाव अतराइय एव एए
 ते करता है ! अहो मौक्त्य ! हो स्थान (प्रकार) से करता है तथ्या—२ रागमाबकर और द्वेष
 णवकर इस में राग के दो भेद कहे हैं माया और स्नेह, वेसे ही द्वेष के भी दो भेद क्रोध और मान
 इन चारों स्थान में जीव के वीर्यका उपस्थापन करनेवालेको प्रयुक्त कर यों निश्चय जीव ज्ञानावरणीय कर्म
 का बंध करता है इस प्रकार ही नेरीये से यावत्-वैपानिक पर्यंत जीवस्य ही दृढक के जीवों उक्त चार
 कारण करके ही ज्ञानावरणीय कर्म का बंध करता है ॥ ६ ॥ अब बहुवचन कहते हैं—'अहो मावन्' बहुत
 जीवों ज्ञानावरणिकर्म का बंध किस प्रकार करते हैं ? अहो मौक्त्य ! उक्त दोनों स्थान और एकेक
 स्थान के दो दो भेदों कर इस प्रकार ही जीवस्य ही दृढक पर कहना जिस प्रकार यह ज्ञानावरणीय
 कर्मवशका कथन कहा उस ही प्रकार दर्शनावरणीयः कर्मवश का यावत् अन्तराय कर्म वध-कहना, भावों ही
 कर्म रागेद्वेष से बंधते हैं यों आठ कर्मों के आठ दृढक एक जीव आश्रय और आठ दृढक भेदेक जीव

एगल पोहरिया-सौलस दहगा ॥ ७ ॥ जिविण भंते ! जाणावरणिज कम्म वेदेति
गायमा । अत्यगइए वदइ अत्यगइए पो वेदेइ जेरइएणं मते ! जाणावरणिज
कम्म वेदेइ ? गोयना ! गियमा येदेइ एव जाव वेमाणिए जवर मणुस्से जहा
जीवे ॥ ८ ॥ जिविण भंते ! जाणावरणिज कम्म वेदेइ ? गोयमा । एवचेंव एव-

आश्रिय १६ दहक कहना ॥ ७ ॥ दहना हर कहत है—अहो-मगइन् ! मीव ज्ञानावरणीय कर्म को वेदेते
हैं ! अहो गौतम ! कितनक मीव बहत है और कितनेक जीव नहीं बहते हैं अर्थात् जो बारये गुणस्थान
के नीचे व गुणस्थान में भीवों है वे ज्ञानावरणीय कर्म बहत हैं बारये आदि गुणस्थान वाले नहीं पवते हैं
अहो समवन् ! मेरीये ज्ञानावरणीय कर्म को वेदेते हैं क्या ! अहो गौतम ! निम्न से वेदेते
हैं यों बापत् पैमानिक पर्यंत कहना बिम में इतना विशेष मनुष्य का अधिकार बैसा समुच्चय
जीव का कस तैस ही कहना अर्थात् कितनेक वेदेते हैं कितनेक नहीं वेदेते हैं ॥ ८ ॥
यह एक जीव आश्रिय कहा तैसा ही बहुत मीव आश्रिय भी चौबीस दहक और समुच्चय मीव पर कईना
हो जिस प्रकार ज्ञानावरणीय कर्म बहते का कहा तैसा ही एवनावरणीय का चौबीस कर्म का और यन्त
मात्र कर्म इस बार कर्मों का कहना और बदनीय आयुष्य नाश और कर्म का भी
एक प्रकार ही करमा परंतु इतना विशेष कि इन चार कर्मों को सब मनुष्यों निश्चय कर वेदेते हैं

जाय वैमाजिया । 'एवं' जहाँ जाणांवरणिजं तथा संसर्गविराजितं, मोक्षिजं अंतरा
इयं च, देयविजातयः नामगोपादं एवं च नवर मणुस्तेविः नियमा वेदेष्टुः एवं एते
पुगचपोहृत्तिया सोल्लस दंतगा ॥९॥ जाणांवरणिजंस्सर्गं भते ! कम्मस्स जीवेणं कम्मस्स
पुट्टस्स बदफासपुट्टस्स सचियस्स चियस्स उवचियस्स, आयागपचस्स विवागपचस्स
फलपचस्स उवयपचस्स जिविण कयस्स, जीवेणनिज्जितियस्स जीवेणं परिणामियस्स
क्यों कि यह चार कर्म बारें गुणस्थान के छपर भी पढदये गुणस्थान तक पाते हैं यह एक भीव
आश्रिय आठ कर्म के आठ बंदक करे, तैते बहुत जीवोंकि आश्रिय भी आठ बंदक कहना, यों १९ बंदक
कहना ॥ ९ ॥ अब अनुमाग का पांचवा द्वार करते हैं—अहो मनवन् ! ज्ञानावरणिय कर्म जीवने बंधे
राग द्वेष कर, स्वर्ग आत्म प्रदेष्ट कर, मनवूत बंधे विविष्ट जंयकर, विशेष स्वर्ग के लक्ष्य किय
विने—एकत्रकिये, उपधीने—अपनी २ जाती में सज्जमाये, उपाधि प्राप्त रहये जाने जैसे हुये, विपाक माव
प्राप्त हुये, फलवने सन्मुख हुये, उदय आये, जीवने ही कर्म किये हैं जीवने ही उक्त प्रकार से कर्मों को
निष्पन्न किये हैं, जीवने ही योग रसपने परिषमाये हैं स्वतन्त्र हो उन कर्मों की उदीरणा की है, अन्य
जीवों क भी जो कर्मों की उदीरणा हुए है वह उन के किये कर्मों की ही हुए है अपने और सम्य के
दोनों के उदीरणा होते उस गति को प्राप्त हुये जैसे अमाता का उदय होते सारक गति को जोरे सारा का

सपत्न्या उदिष्णस्स परेणवा उवीरियस्स तेषुभयणुणवा उदीरिजमाणस्स, गतिं पप्प ठितिं पप्प
 मव पप्प पोगाल पप्प पोगालपरिणामं पप्प कतिविहे ण्णुभावे ण्णस्से ? गोयसा !

जाणावरणिजस्सण कम्मस्स जीविण बद्धस्स जाव पोगालपरिणामय्य दसविहे
 ण्णुभावे ण्णस्से तज्झा-सोतावरणे, सोयुविष्ण्वाणावरणे, जेतवरणे, जेतविष्ण्वाणा
 वरणे, पाणावरणे, पाणविष्ण्वाणावरणे, रसावरणे, रसविष्ण्वाणावरणे, फासावरणे,

अथ गोवे देवणीय को मास हुवे, स्विदि को मास हुवे अर्याए जो स्थिति नत्थ किया का यह भोगवने लगे
 मय को मास हुवे अर्याए नरकारिक मय को मास हुवे, पुदुल (काए कोष्टादि) को मास हुवे, पुदुल्लो के
 परिणाम (विप का दुस्समय अमृत का नुस्सयवको) मास हुवे, इस प्रकार कर्म योगवि जस के किस्से नकार
 के अनुभव करे दे ! अहो गौतम ! ज्ञानापरणीय कर्म का भीव को ब्रह्म रोवे लस के पुदुल परिणाम का
 दस प्रकार का अनुभव कहा दे, तथया—आजावरण—१ कानों से शब्द सुनसके नहीं २ श्रोत्र विज्ञाना
 वरण शब्द में ममज्ञानक नहीं, ३ नर्मावरण आँसों से श्म देखसके नहीं, ४ देवविज्ञानावरण-रूप में समझ
 सके नहीं, ५ गन्धाग्रण-गंध ग्रहण करसके नहीं, ६ रसविज्ञानावरण-गंध में समझसके नहीं, ७ रसावरण-
 रस ग्रहण करसके नहीं, ८ रसविज्ञानावरण-रस में समझसके नहीं, ९ फासावरण-स्पर्श ग्रहण करसके नहीं, और

फासवीष्णापावरणेय ज वेदति, योगालया योगालपरिणामवा वीससाधा
 योगालाण परिणाम तसिवाउदण्ण जाणियन्व, ण जाणति जाणिओकामे, ण जाणति
 जाणिचावि ण जाणइ, उच्छण्ण जाणीयावि भवति।।आणावरणिजस्स कमत्स उदण्ण
 एत्तण गेयमा ! आणावरणिजि कम्मे, एत्तण आणावरणिजस्स कम्मत्स जीवेण बद्धत्स
 जात्र योगाल परिणाम पण्य वत्तविह अणुसावे पण्णवे ॥१०॥ वरिसणावरणिजसस्स
 भत्ते ! कम्मत्स जीवेण बद्धत्स जात्र योगालपरिणाम पण्य कत्तिविहे अणुमावे

१. स्वर्ग विद्वानावरण स्पष्ट के भद क्षीतोप्यादि में समझ सक नहीं। जो वेदते नहीं हैं पुद्गलों बहुत अथवा पुद्गल एक
 पुद्गलों के परिणामको साधा असंवा रूप, विसंवा पुद्गल परिणाम अर्थात् जैसे पानी कर मराये हुये बबल स्वभाव
 से ही पानी की पारा बर्पाते है ऐसे ही दर्शन परचित्त उपपात को प्राप्त होचे हैं, वे कर्म उदय को
 जाने व उदय को परिष्ममें उसे जाने और उदय का नहीं परिष्ममें, उन का नहीं जाने कर्म पावका जानने
 अधिकारी हुश भी नहीं आने, कितने जानते हुये भी अमान होये क्यों कि जिन के ज्ञानगुन वका गये हैं
 उस का ज्ञानावरणीय कर्म का उदय हुआ है अहो गौतम ! यह ज्ञानवरणीय कर्म और अहो गौतम !
 यही अधिक ज्ञानावरणीय कर्म क्षीय के मदस के छाये वन्म हुये पावत् पुद्गल परिणामको प्राप्त हुनोमिसका वक्षमकार
 का अनुभव कहा ॥१०॥ अहो मगबन् ! दधनावरणीय कर्मका जीव को बंध का यानत् पुद्गल परिणाम प्राप्त

पणसे ? गोयमा ! दरिसणावरणियस्तस कम्मस्तस जीवण बद्धस्तस आव पागलपरि
 भाम वप्प णवविहे अणुभावे पण्णच सज्झा-णिहा, णिहा णिहा, पयला, पयला
 पयला, धीणछी, वक्खुदसणावरण, अवक्खुदसणावरणे, ओहिदसणावरणे, केवल
 दसणावरणे, जयदेति पागलवा पोगलेवा पोगलपरिणामया वीससावा पोगल
 परिणाम तेसिवा उदएणं पासियव्ववा न पासति, पासिओकामेवि न पासति, पासित्तावि
 ज्ज्यासति, उच्छुण्णदसणियाधि भवति, वरिसणावरणियंस्तस कम्मस्तस उदएणं

होनेमित का कितने प्रकारका अनुभव करा है ? अहो गौतम ! दर्शनान्तरेणीय कर्मका अधिक बंधन प्राप्त
 पुत्र परित्याग प्राप्त हुये मित का मने प्रकार का अनुभव करा है। हर्षां-१ निद्रा मुक्त स आये सुप्त से
 जाग्रत रात, २ निद्रा निद्रा दुःख से आये दुःख स जाग्रत रात, ३ प्रथमा वेदित निद्रा आये, ४ प्रथमा प्रथमा
 रास्ते बसते निद्रा आये, और ५ पिण्डी निद्रा दिन का विम्वदन दिना काम निद्रा से कर इस निद्रा में
 आये असुख के भितना वक्त प्राप्त रात ६ वक्त दर्शनान्तरेणीय आत्मा स अष्टांग रात सके मरी, ७ अष्टांग रात
 नाकरण आत्मा दिन चारों द्विदिवसे सम्पन्न प्रकार देल सच नहीं, ८ अष्टांग दर्शनान्तरेणीय अष्टांग रात
 प्राप्त न होये, और ९ केवल दर्शनान्तरेणीय केवल दर्शन की प्राप्ति न होये, इन नव प्रकार से जो वेद
 पुत्रों ब्रह्मा पुत्रक, पुत्रमन्त्रका परिणाम वीसता पुत्रक का परिणाम इन के बदले ब्रह्म योग्यकी, मरी भी

एतन् गोयमा ! दुरितणाधरणिज्व कम्मे, एतन् गोयमा ! दुरितणा धरणिज्वस्स कम्मा
स्स जीवेण बद्धस्स जाय पोगलपरिणामं पप्प नवविहे अणुभावे पण्यत्ते ॥ ११ ॥
सातायेदणिज्वस्सणं भत्त ! कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाय पोगलपरिणामं पप्प
कसिबिहे अणुभावे पण्यत्ते ? गोयमा ! सायावेदणिज्वस्स कम्मस्स जीवेण बद्धस्स
जाय अट्टविहे अणुभावे पण्यत्ते तज्जहा मणुण्णा सहा, मणुण्णा रुवा, मणुण्णा गधा,
मणुण्णारत्ता, मणुण्णाफासा, मणुसुहता, वतिसुहता, कायतुहता- ओ वेदेई पोगलवा
पागलवा पागलपरिणामथा धीसतावापोगल्लापं परिणामं तसिंवा उदण्ण सातावेदणिज्व

येस दसता दुरा भवेत्ता रहे वणो कि त्त के दर्शन गुण हा आरण दुवा है, यर अहो मौतम ! दर्श
नादरणीय कर्म का तदय और अहो गौतम ! यह दर्शनादरणीय कर्म धीव को बंध पावत् पुत्रल परि
पाम प्राप्त क तव मदसे अनुयाय कहा ॥ ११ ॥ अहो भगवन् ! साता वेदनीय कर्म हा जीव को बंध का
पावत् किता भद परिणाम कहा है ? अहो गौतम ! साता वेदनीय कर्म बंध का पावत् जीव को आत
प्रकार का अनुभव करे हैं- सद्यथा-१ मनोऽप स्रष्ट, २ मनोऽप स्प, ३ मनोऽप गध, ४ मनोऽप रस,
५ मनोऽप स्पर्श, ६ मन सुखकारी, ७ वषण सुखकारी और ८ काया सुखकारी जो पुत्रलो एव
पुत्रस २ के परिणाम शीतसा पुत्रस के परिणाम उन के तदय से साता वेदनीय कर्म को वेदे यह अहो

कर्म वेदेति, एतन् गोपमा । सातावेद्यनिजं कर्म, एतन् गोपमा । साता वेद्यनिजस्स जाव अट्टविह अणुमावे पणसे ॥ आसाता वेद्यनिजस्सपणं भते । कम्मस्स जीवेणं तद्वेव पुच्छा ? उत्तर च पत्तर-अमणुणासदा जाव कम्पदुहया, एतन् गोपमा । आसातावेद्यनिजस्स जाव अट्टविह अणुमावे पणसे ॥ १२ ॥ मोहनिजस्स भते - ! कम्मस्स जावण दक्खस्स जाव कइविह अणुमावे पणसे ? गोपमा । मोहनिजस्स कम्मस्स जीवेण वद्धस्स जाव पचविह अणुमावे पणसे तज्जहा सम्मसवेयपिज्जे, मिच्छत्तवेयपिज्जे, सम्ममिच्छत्तवेयपिज्जे, कसायवेयपिज्जे, गो कसायवेयपिज्जे,

गोत्वम । माता वेदनीय कर्म, और वही भवो गोत्वम । साता वेदनीय का यावत् आठ प्रकार का अनुभव कहा है । भवो मात्वम् । बसाता वेदनीय कर्म का वष यावत् कितने भेद कहा है ! भवो गोत्वम् । आठ प्रकार जिसा साता वेदनीय का कहा तैसा ही इसी का भी कहना परंतु यहां जमनोद्वय-रूप गोचरसंस्पर्श और दुःस्वकारी, पण, प्रपन्न, काणा के योग कहना ॥ १२ ॥ भवो ममवत् । मोहनीय कर्म का भी व के वष यावत् अनुभव कितने प्रकार से होता है ! भवो गोत्वम् । मोहनीय कर्म के बीच के वष के पांच प्रकार अनुभव कहा है, तथया—१ सम्पत्त्व वेदनीय, २ मिथ्या वेदनीय, ३ सपिप्लवा वेदनीय,

जैवेदिति पोगलचा पोगलचा वीससावा पोगलपरिणाम, तसिवा
उदएण मोहणिज्ज कम्म वेदति॥एसण गोयमा! मोहणिज्जे कम्म, एसण गोयमा! मोहणिज्जस्स
कम्मस्स जाव पंघविहे अणुभावे पण्यसे ॥ १३ ॥ आठयस्सण भते ! कम्मस्स
जीवण तहेव पुच्छा ? गोयमा ! आठयस्सण कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाव बढ
विहे अणुभावे पण्यसे तजहा नेरइयाउए, तिरियाउए, मणुस्साउए, देवाउए जैवेदिति
पोगलचा पोगलचा पोगलपरिणामवा वीससावा पोगलपरिणाम तसिवा उदएण
आठय कम्म वेदति, एसण गोयमा ! आठएकम्मे : एसण गोयमा ! आठय कम्मस्स

४ कपाय वेदनीय और ५ नो कपाय वेदनीय इन के जो वेद सुझाँ, पुत्रल परिणाम वीससा पुत्रल परि
णाम उस के उदय से माहनीय कर्म वेदता है यह अहो गौतम ! मोहनीय कर्म और यह अहो गौतम !
मोहनीय कर्म के यावत् पांच प्रकार का अनुभव कहा ॥ १३ ॥ अहो भगवन् ! आयुष्य कर्म का वंश
भीष क यावत् कितने प्रकार अनुभव होता है ! अहो गौतम ! आयुष्य कर्म के वंश भीष क चार
प्रकार का अनुभव कहा है वधया-१ नारकी का आयुष्य, २ विर्यष का आयुष्य, ३ मनुष्यका आयुष्य
और ४ दधता का आयुष्य, इन के जो वेद सुझाँ, पुत्रल २ के परिणाम वीससा पुत्रल परिणाम उस के
उदय कर आयुष्य कर्म वेदता अहो गौतम ! आयुष्य कर्म और यह आयुष्य कर्म का यावत् चार

आथ चठविविहे मणुभावे पण्ये ॥ १४ ॥ सुहणामस्सण भते ! कम्मस्स जीवेण पुच्छा ? गोयसा ! सुहणाम कम्मस्स जीवेण बद्धस्स जाथ चठइस्सविहे मणुभावे पण्ये तंजहा-इट्ठा सहा, इट्ठा रुवा इट्ठा गधा इट्ठा रत्ता, इट्ठा फासा, इट्ठा गती इट्ठा तिती इट्ठा लावण्य, इट्ठा जसेकिची इट्ठे-उट्ठाण-कम्मचल-वीरिय-पुरिसकार परक्कम इट्ठसरया, कत्तसरया, पियसरया, मणुण्यसरया, जवेवेत्ति पोगलवा पोगल परिणामवा, वीत्तसत्ता पोगलपरिणामवा तत्तिवा उट्ठण सुमणामकम्म वेदति, एत्तण गायसा ! सुमणावे कम्मे, एत्तणं गोयसा ! सुमणामस्स कम्मस्स जाथ

मकार का अनुपद कहा है ॥ १४ ॥ मग्गे मगावन् ! शुभ नाम कर्म बीष के किस प्रकार बंधते हैं अनु पद गाथा है ' मग्गे गौतम ! शुभ नाम कर्मों का बाधक बंधने प्रकार का अनुपद होता है तबथा—' इट्ठानी छब्ब, २ इट्ठानी रप, २ इट्ठानी गेह, ४ इट्ठानी रत्त, ५ इट्ठानी स्वर्ग, ६ इट्ठानी गति, (चसनेकी) ७ इट्ठानी स्थिति, (आपुण्य) ८ इट्ठानी आबन्धवा, यतुगद्, ९ इट्ठानी यत्त कीर्ति, इट्ठानी उत्थान-कर्म-बल-वीर्य पुत्तास्कार-पराक्रम १० इट्ठानी स्वर (वासी.) ११ कान्तकारी स्वर, १२ पियकारी स्वर, और १४ पनाइ स्वर इन के ओ बदे पुत्तस्से तथा पुत्तस्से का परिणाम, वीत्तसा पुत्तस्से का परिणाम उभ के उचय कर शुभ नाम कर्म को बंधता है पर

चतुर्दशविधे अणुभावे पण्यसे ॥ दुहणामस्सण भते ! पुण्णा ? गोयमा ! गोयमेव
 णवरं अणिट्ठत्तदा जाव हीणस्सराता, वभिस्सराया, अणिट्ठस्सराया, अकत्तस्सराया,
 जं वेदेति सेतं संवेद्य ॥ जाव चतुर्दशविधे अणुभावे पण्यसे ॥ १५ ॥ उद्यागोत
 रस्सण भते ! कम्मस्स जीवेण पुण्णा ? गोयमा ! उद्यागोतस्सकम्मस्स जीवेण
 चट्ठस्स जाव अट्ठविधे अणुभावे पण्यसे संजहा—जातिविसिद्धिया, कुलविसिद्धिया,
 बलविसिद्धिया, रूपविसिद्धिया, तबविसिद्धिया, सुयत्रिसिद्धिया, लामविसिद्धिया, इस्सरिया
 विसिद्धिया, ज वेदेई पोगळ्ळेवा पोगळ्ळपरिणामंवा धीससावा पोगळ्ळ परिणा-

अशो गौसप १ शुभ नाम कर्म भौर वर शुभ नाम कर्म का चतुर्दश प्रकार का अनुभव कहा अनुभव नाम
 कर्म की पूज्या ! अशो गौसप ! शुभ की वर ही कहना परतु एवना विषेव अनिष्ट-बन्ध-रूप
 मेष रस-स्पर्श-गति-नित्यति-अवस्थ मकीर्ति, तस्यानादे पारव हीन स्वर, दीन स्वर, अनिष्ट स्वर,
 मर्कट स्वर, आ वेद वर जसे यावत् चतुर्दश प्रकार अनुभव नाम कर्म का अनुभव कहा ॥ १५ ॥ अशो
 भगवन् ! उर्व मीम कर्म की पूज्या ! अशो गौसप ! उर्व गोत्र कर्म केष का धीन क काठ प्रकारका
 अनुभव कहा रे तपया—१ चाति विधिष्ट-उषम), २ कुल विधिष्ट, ३ वल विधिष्ट, ४ रूप विधिष्ट,

मे तेसिवा उदएण जाव अट्टविह् अणुभावे पणसे ॥ जीयागोपस्सण भंते ! पुच्छा ?
 गोयमा ! एवं चेव गवर जातिविहीणया, जाव इस्सिरियविहीणया, जंवेदेसि
 पोगलत्वा पोगलेत्वा पोगलपरिणामवा वीससवा पोगलाण परिणाम तेसिवा
 उदएणं जाव अट्टविह् अणुभावे पणसे ॥ १६ ॥ अंतराइयस्सण भंते !
 कम्मस्स जीविणं पुच्छा ? गोयमा ! अंतराइयस्स कम्मस्स खीवेण वद्धस्स जाव

५ तप विच्छिद, ६ मूत्र विच्छिद, ७ श्वास विच्छिद, और ८ एवमेव विच्छिद इन के जो बड़े पुद्गलों पुद्गल
 पुद्गल का परिणाम विच्छेदा पुद्गल परिणाम का जंग गोचोदय के बाद भेद अनुभव कहा नीच मोक्ष की
 पुच्छा ! बहो गौतम ! ऐसे ही इतना विशेष भाति की हीनता पावे यावत् ऐश्वर्यवा की हीनता पावे यों जो बड़े
 पुद्गलों, पुद्गलों का परिणाम तस के तदप कर बाद प्रकार का नीच गोच का अनुभव कहा ॥ १६ ॥ बहो यमवन् !
 भंतराव कर्मका तदप का नीच को अनुभव कितने प्रकारसे होता है ! बहो गौतम ! भन्तराय कर्मका यावत्
 पांच प्रकार का अनुभव कहा है तथया-१ शान्तान्तराय दान देनेमें विघ्न प्राप्त होवे, २ अशान्तान्तराय, ३ भोगान्तराय,
 ४ तपभोगान्तराय और ५ शीर्यान्तराय श्रेष्ठ मार्गमें बसबीर्य को बसके महीं न भिन्न प्रकार अन्ये पुद्गलों पुद्गल पावत्

+ अनुकर्ण बाली पम्बना सूत्र में लिखा है कि १७ काम करने से अस्तएण कर्म का कच होता है तथया-१
 कल्याणरहित से, २ दोसों को दुःखी करे, ३ असमर्थ पर कोपकरे, ४ गुरु आद्या तछेदे, ५ तपसी को धदन नहीं करे,

पंचविहं अणुबाबे पण्युचेतजहा-दुणातराए, लमातराए, भोगातराए, उपभोगातराए वीरिय-
तराए, जयेदेइ योगालंघा जाय वीससावा तेसिवा उदएण अंतराइय कम्म वेवेति,
एसण गोयमा ! अतराइए कम्म, एसण गोयमा ! जाव पचविहं अणुभावे पण्युचे ॥
इतिकम्मपगही पवे पढमो उदेसो सम्मत्तो ॥ २३ ॥
कतिणं भंते ! कम्मपगहीओ पण्युचाओ ? गोयमा ! अट्टकम्मपगहीओ पण्युचाओ
तजहा पाणावरणिज्ज जाव अतराइय ॥ १ ॥ पाणावरणिज्जेणं भंते ! कस्मे कति

उन के सदय हावे पांच प्रकार से अन्तराय कर्म को वेदवा हे ऐसा वीर्यकर का करमान हे
इति कर्म मकृष पद का अर्थमोदेवा ॥ २३ ॥ १ ॥

अथमोदेव में मूल मकृति कही दूसर में दसर मकृति कहते हे अहो मगबन् ! कर्म मकृति कितती कहा
हे ! अहो गौतप ! आठ मकृति कही हे, तथया—ज्ञानावरणीय यावन् अन्तराय ॥ १ ॥ अहो मगबन् !

१ निज वचन उभाये, ७ केन घम में विषय बाल ८ मूल फले अन्तरायदे, ९ ज्ञानाम्पास में अन्तरायदे, १०
उपस मार्ग में प्रप्रेते अन्तरायदे, ११ परमार्थ नइते इसी करे, १२ विपरित कर्म प्रकाश करे, १३ असुय बोले, १४
अरुणरेवे, १५ अय के कर्म प्रकाशे, १६ भिदम्भ करे ईश्वर्य करे, और १७ सिद्धान्त की असातना करे-

गोयमा! दुविहे पण्यचे संजहा-दसणमोहनिज्येय, चारिच मोहनिज्येय॥ दसण मोहनिज्येय
भते! कम्मे कतिविहे पण्यचे? गोयमा! तिथिहे पण्यचे तजहा सम्मत्तवेयनिज्य, मिष्ठुत्तवेय
निज्येय, सम्माभिष्ठुत्तवेयनिज्येय चारिच मोहनिज्येय भते! कम्मे कतिविहे पण्यचे? गोयमा!
दुविहे पण्यचे संजहा-कसायत्रेयनिज्येय, जो कसाय वेयनिज्येय ॥ कसाय वेयनिज्येय
भते! कतिविहे पण्यचे? गोयमा! सोलसविहे पण्यचे संजहा अणताणुवधीकोहे
बरो गगबन्! मोहनीय कर्म के कितने प्रकार करे! अहो मोहनीय! दो प्रकार करे हैं तथया? दर्शन
मोहनीय सम्पत्तपातक और चारिच मोहनीय चारिच पातक ॥ अहो! गगबन्! दर्शन मोहनीय के
कितने भेद करे हे! अहो मोहनीय! तीन भेद करे हे तथया-? सम्पत्त वेदनीय सदाय सम्पत्त २
मिथ्यात्व मोहनीय अतस्त वे तत्त और तत्त वे अतस्तका अज्ञान ३ सम्पत्तियात्त मोहनीय तत्त अतस्त वे
एकसा अज्ञान ॥ अहो गगबन्! चारिच मोहनीय कर्म कितने प्रकार करे हे? अहो मोहनीय! दो
प्रकार करे हे तथया? 'कसाय वेदनीय और अकसाय वेदनीय ॥ अहो गगबन्! कसाय वेदनीय के
कितने भेद करे हे! अहो मोहनीय! सोल भेद करे हे तथया १ अनन्तानु बन्नी कोय एवत्त की राड सुमान,
२ अनन्तानु नैपीपान वस्तर के स्वम सुमान, ३ अनन्तानु बन्नीमाया वासकी अटसमान, और ४
अन्तानु बन्नी काम किरमकी के रंगमण्यन ५ अन्तानु बन्नी कोय अयोनिही उराडसमान, ६ अन्तानु बन्नी

गायमा'थडाठवह पण्णस सलहा णाइयाउण त्तोरयअउणु अणुससाउणु दवाउणु॥ ६ ॥

१। अणु होइ नरकाय २० सामकर रग्याना हो १ सामकन २ यतीर सन ३ अर्काण चर ४ पिथ्यास
 मे रप ५ नाव की साकर ६ अय्यराय, ७ गाराकर ८ कायराय मर ९ मद्राथद नजान १०
 । नर्याणया ११ सामा १२ संवकायानक १३ एवांठयका यमक १४ यहाआभा १५ महापोगप्रहो,
 १६ सामाशन १७ म'राशानो, १८ तांपिपासन कर, १९ रांगर्यानी आर २० कुण्णाइ ओवमुद्धत्तलो ॥
 । नर्गि गौरेका मायुथ २ सामकर १३ १ सोमाखार रोज २ अय का ठग ३ । पदयार याय ४
 दुदवे रदेनेक ५ गज नाल्याय रय, ६ पायाकर, खग माम रप ८ साम सासा मर ९ अचउा पुरा
 । ममाप, १ केमरी दे पदांग मे मेरुया १ रांगानरस्तु म र्यक्तर १२ क्योम्पिनि मे मलकर १३ आम्बवडाव
 १४ गोरिकने १५ प्रमडकगन १६ गृगनकां प्रगहो वस्तु मे प्रपकर १७ कापुनेतो, १८ नोपेनेतो १९
 । नगा आ २० । मानर्यानी ॥ मनर्यापु १३ सामने १४ १ गुरुक्षेमिक २ पुगली न कर ३ दयासु ४
 दन्तद ५ आरमा ६ दानुगसा ७ पाएव द्रुग्गेपार्थो, ८ परका पीराकारी, ९ परको हिलकारी, १०
 । पिनपरीन ११ मरुतेका पाईक १२ अनुभ्याभक्त आर १३ अयमर्षी ॥ वषायु १४ । यालकर
 १५ नय १६ अरुइकयावी २ योगसंताय गदिन ३ सारागसंयवी ४ वनपारी ५ मद्यक्सी ६
 । वमानुगो ७ दानर ८ यवे ध्यानी ९ सामनर्यानी १० अरुननपरी और ११ सुवदरिनावाल ॥ ११ ॥

गामय भंते ! कम्मे कतिविहे पणसे ? गोयमा ! बायालीमतिविहे पणसे सज्जु-
 नेन्म २ जातिनामे, ३ सरिरनामे ४, सरिरगोथगणामे ५ सरिर यधनणामे
 ६ सरिर सघायणनामे ७ चयणणाम ८ उणणाम ९ यणणाम, १० गधणामे ११ रस-
 णाम १२ पामणाम १३ अगुरुल्लुणाम, १४ उव्वघायणाम, १५ पणायणाम १६
 आणुद्वेणामे १७ उसासणामे, १८ कायवणामे १९ उज्जीयणाम, २० विहाय
 गतिणामे, २१ ससणामे, २२ धायणामे, २३ सुहमणामे, २४ बाहरणाम, २५

बडो भयान ! नाम कर्म के किछन भद्र कहैं ? बडो गौखम ! ६२ भद्र कहैं तथया—१ गति
 १५ । भद्र ॥ ११ गधन कह बड गति, २ ज्ञानि नाम, जिस मे जीव की पैछान गये सा ज्ञानि २ ब्रह्म-
 नाम सर्व क १२ नका स्थान सा शरीर, ६ शरीर क अगतीग नाम शरीर के अद्वय, १ शरीर के अपन
 नाम शरीर क पुत्रलो का सम्बन्ध ३ शरीर संयोजन नम शरीर के पुत्रको एकत्र होना ७ व्ययन गति
 शरीर का पराक्रम, ८ स्थान नाम शरीर का आकार ९ यम नाम-११ १० गम नाम-१२, ११ रम
 नाम-१३ १२ १४ नाम-१५ का स्वर्ग, १३ यगुरु सप्त नाम-१६ का भी नहीं पति भी नहीं एमा,
 १४ उपायन नाम भयन शरीर से, अग्नी, घन होने के, अतः अतः स रोष पादाज्ञाने,

पञ्चषण्मासे २६ अपञ्चषण्मासे, २७ साधारण-सरीरणामे, २८ पंचेय-सरीरणामे, २९
 थिरणामे, ३० अथिरणामे, ३१ सुभणामे, ३२ असुभणामे, ३३ सुभगणामे, ३४
 दुभगणामे, ३५ सुसगणामे, ३६ पुसरणामे, ३७ आदेज्जणामे, ३८ अणादिज्जणामे,
 ३९ असोकिचीणामे, ४० अजसोकिचीणामे ४१ विम्माणणामे ४२ तिर्यगरणामे,
 गन्नामेण मंते ! कम्मे कतिविह पण्णत्ते ? गोयमा ! चठान्निहे पण्णत्ते
 तंअहान्नेरइय गतिणामे, तिरियगतिणामे, मणुस्सगतिणामे, देवगतिणामे, ॥

१५ परायात नाम-बन्धु उस का तब प्रमाण महत् नहीं कर सके, तब अपने शरीर से अन्य का याव
 होवे जैसे सर्पादि, १६ अनुपूर्वी नाम-विश्रुत गति में जाते भीव का बन्धी गति में छे जावे, १७ अन्वास
 नाम-मुक्त से आओवास लेवे, १८ आलाप नाम-आलापबन्ध सूर्य के विमान समान, १९ उद्योत नाम-
 कन्द्र विमान के जैसा उद्योतबन्ध शरीरकाष्ठ, २० विहाय गति नाम-आकाश में गति करने योग्य शरीर
 काष्ठ, २१ ब्रह्म नाम-वेद्विद्यादि, २२ स्वावर नाम-बुधक्यादि, २३ मूत्स नाम-छोटे शरीर के धारक,
 २४ वाटर नाम-बड़े शरीरकाष्ठ, २५ पर्वात नाम-पूरी वर्षाव के धारक, २६ अपर्याप्त माय अपूर्ण वर्षाव के
 धारक, २७ साधारण नाम-एक शरीर में अनंत भीवकाष्ठ, २८ मत्स्यक नाम, २९ स्थिर नाम-अचल

जातिनामेण पुच्छा ? गोयमा ! पचविहे पण्णसे तज्झा-पुंगिदिय जातिनामे, जाव
 पचिदिय जातिनामे, ॥ सरीरणामेण भते ! कम्मकतिविहे पण्णसे ? गोयमा !
 पचविहे पण्णसे ओरालियसरीरणामे जाव कम्मगसरीरणामे ॥ सरीरणोवगणामेण भते !
 कतिविहे पण्णसे ? गोयमा ! तिचिहे पण्णसे तज्झा ओरालियसरीरणामेण भते !
 वेउल्लियसरीरणोवगणामे, आहारगसरीरणोवगणामे ॥ सरीरणोवगणामेण भते !
 कम्मे कतिविहे पण्णसे ? गोयमा ! पचविहे पण्णसे ? तज्झा ओरालिय सरीर

हरीयोवाक्क, १० आस्थिर नाम-विचिह्न इड्डियोवाला, ११ पुम नाम-मुन्दर खरीरवाला, १२ अणुम नाम
 सारा खरीरवाला, १३ मौमाग्य नाम-सर्व को बहुमंकारी, १४ दुर्योग्य नाम-अभियकारी, १५ सुस्वर
 नाम-मपुर स्वरवाला, १६ दुस्वर नाम-सारा स्वरवाला, १७ आदेय नाम-उस का रचन सर्व को
 होवे, १८ अनादेय नाम-उस बचन कोई होने नहीं, १९ यसोकीर्ति नाम-उस का बचन सर्व को
 विस्मयातीव, २० अयसोकीर्ति नाम-अयसस्वी, २१ निर्वाण नाम सर्व अमायाण ययास्थान होने, और
 २२ तिर्यकर नाम-तीवकर पदको प्राप्त करानवाला अब इन के भेद कह्य हैं—सारा मगन्न ! धरि के किसमे
 भेद करे हैं ! भये गीतण ! चार भेद कह रहे तथणा—१ नरक गति, २ तिर्यच गति, ३ पनुत्प गति,

सठाणणामे, नगोहपरिमहल सठाणणामे, साहसठाणणामे, आमभसठाणणामे,
 सुममठाणणामे हुहसठाणणामे ॥ वण्णणामेण भत्ते ! कतिविहे पण्णस ? गोयमा !
 पयविहे पण्णस तज्जहा कालवण्णणाम, जाव भुविहवण्णणामे ॥ गधमामिण भत्त !
 वत्तिविहे पण्णस ? गोयमा ! दुविहे पण्णस तज्जहा सुग्भिगधणामे, दुरभिगधणाम ॥
 रसणामण पुच्छा ? गाथमा ! पयविह पण्णस तज्जहा सिचरसणामे जाव महुर
 रसणाम ॥ कामनामण भत्त ! पुच्छा ? गोयमा ! अट्टविह पण्णस तज्जहा कक्कसह

औद्युक्त का शरीर का रूपन कर वह वचन नाम । सघातन नाम क भी पय पक्षर वचन-१ औ-
 २१ ऐवम् २२ वह संघातन अहा मंगयन् । भयन नाम क कितन मद कह है ? अहो गौसमे ! छ
 २३ अह २४ तद्यय — १ वज्रपदम नाराच भयन बन्त मसी, क्रयप पटिण, नाराच वेधन इम युक्त
 शरीर का वचन हा २५ भवप्रपम नाराच संघयन, २ अहम माराण भयन त्रिम मे स्त्रीना नहो हो,
 ३ नाराच त्रिम मे पट्टीयेन हो एमा शरीर, ४ अर्ध नाराच संघयन आपा पर कर वय, ५ किलक मघयन
 फक्त कीसी रूप अटका हा, और ६ छत्रु सघयने अछय २ हटोयो हो अहो मंगयन् ! सस्यान नाम क

फासनामे, जाय लुक्-सफासनामे ॥ अगुरुलुङ्नामे एगागारे पण्यसे ॥ उधवायनाम
 एगागारे पण्यसे ॥ परावायनामे एगागार पण्यत् ॥ आपुपुर्वीनामे अउल्लिहे
 पण्यसे तंजहा। पेरइय आपुपुर्वीनाम, जाय दवापुपुर्वीनामे ॥ ठसासनामे एगा-
 नारे ॥ सेसाणि सन्वाणि एगागाराइ पण्यसाइ जाय तित्यगरनामे ॥ पवर विहाय
 मतिनामे दुविह पण्यसे तजहा पस्त्य विहायगतिनामय, अपस्त्यविहाय गतिनामे
 कितने मद है ! अहो गौतम ! त मद को है तयका—सर्वचतुस संस्थान सर्वांगोपग पूर्ण प्रयाप्येते
 शरीर २ न्यब्राह्म परिमोदस संस्थान बह के समान नामी ऊपर अन्धा और नीच खराब शरीरबन्धा,
 ३ साहि संस्थान प्रथम नीचे का शरीर अन्धा ऊपर का शरीर खराब, ४ शायन संस्थान ठिगना शरीर,
 ५ कुञ्ज संस्थान और ६ इटक संस्थान आये मल मुरख जैसा शरीर, वर्ष नाम पंच प्रकार का कहा है
 १ कुञ्ज वर्ष श्रावत् शुक्ल वर्ष गंध नाम के दो मद—१ मुरधिमर्ष और मुरधिमर्ष नाम इस नाम के
 पांच मद—१ तिक रस वाक्पद् मपुर इस नाम, स्वर्ध नाम के कितन मद कह है ! अहो गौतम !
 जात मद कह है। तयका—कईस स्वर्ध नाम, वाक्पद् अस्त स्वर्ध नाम अगुरु सपु नाम, उपधात नाम,
 वाक्पद् नाम, इन तीनों के एकक ही मद है अनुपूर्वी नाम के चार मद हैं—नरकानुपूर्वी यावत् देसा
 अनुर्द्ध, दन्नाम नाम मे वाक्पद् तीर्थकर नाम लङ्क क ककेक ही योग है विष्णु से इतना पित्रप विहाय गति

॥ ७ ॥ गोएण भते ! कम्म कतिविहे पण्णसे ? गोयमा ! दुविहे पण्णसे तजहा
उधागातेय, नीयागोएय ॥ उधागोएण भते ! कम्मे कतिविहे पण्णसे ? गोयमा !
अद्वविहे पण्णसे तजहा जातिविसिट्ठिया जाव इस्सरिय विसिट्ठिया ॥ एव नीयागो-
एवि एवर जातिविट्ठिता जाव इस्सरियविट्ठिता ॥ ९ ॥ अतराइएणं भते !
कम्मे कतिविहे पण्णसे ? गोयमा ! एवविहे पण्णसे तजहा वाणतराइ जाव वीरिय
तराइ ॥ १० ॥ जाणावरमिजस्सण भते ! कम्मस्स केवइयें काळठिहें पण्णत्ता ?

नाम क दो षट् है तथया—१ प्रवृत्त विहाय गति और अवृत्त विहाय गति ॥ ७ ॥ अहो भगवन् !
 मैत्र कर्म के दितने षट् करे हैं ! अहो मौलव ! दो षट् करे हैं तथया—२ उद्व
 मात्र और नीच मात्र-निषेध से तदभोक्त के आठ षट् करे हैं तथया—आवि की वसमता यावत् ऐश्वर्य की
 वसमता एत एति नीच गोत्र के आठ पैं विषय भावि की शिन्ता यावत् ऐश्वर्य की शिन्ता ॥ ९ ॥ अहो
 भगवन् ! अन्तराय कर्म के कितने षट् करे हैं ! अहो गौतम ! पाँच षट् करे हैं तथया—३ दानान-
 राय यावन् दीर्घान्तराय ॥ १० ॥ अब आठ कर्मों की स्थाति का कहते हैं अहो भगवन् ! ज्ञानावर्ज्योय

✽ त्रिपिण्ड श्रम कर्मिण्यर्पित. के. २० मोक्ष दाताणी मे व श्रम्य त्यान मे जानमाः

गोयमा ! ऊहण्णेण अतोमुहुत्त उक्खोसंण तीससागरोपम कोढाकोढीओ, तिण्णिय^१
 वाससइस्माति अवाहा अवाहुणिया कम्मदिती कम्मणिसेगो ॥ ११ ॥
 णिहाएव्वगरसण भत्त ! कम्मरस केवतिय कालठिती पण्णसा ? गोयमा ! जहण्ण
 सागरावमस्स तिण्णि सत्तमागा पत्तिआधमस्स असेखेज्जति मागेण ऊणता, उक्खोसण
 तीससागरावम काढाकाढीओ, तिण्णियवाससइस्साइ अवाहा, अवाहुणिया कम्मदिती
 कम्मनिसेगा ॥ दमणचउक्कमसण भत्त ! कम्मस्स 'कवतिय' काल्ठिती ? गोयमा !

कर्म की कितनी स्थिति कही है ? अहा गौतम ! जपन्य अर्धमूर्धन की उत्कृष्ट वर्ष स अयु स्थिति दसई
 मूहय मध्यतय गुनस्थान क धारिमयण'वद्, उत्कृष्ट वैवीस सागरोपम कोडाकोडी प्रलय गुनस्थान में भोक्छि
 परिष्कायवद्, तहाँ हावे इस का अवाधा का उत्कृष्ट हीन इमार हरेन, अर्धकर्म का निषय अन्त समय
 नरु सप हरे समय २ लगवे ॥ ११ ॥ अहो मगरन् ! मित्र, पण्डित की कितने काम की स्थिति कही है
 अहा गौतम ! अपम्य ता एक सागर क सात भाग कर दम में के तीन भाग भितनी उस घे में घी एक
 परपोष्य के असेरुपात्ते भाग भितनी कम, उत्कृष्ट नीस काढाकोट सागरोपम की अवाधाकास तीन इमार
 हरे का अहो मगरन् ! दर्शनचौक की कितने काम की स्थिति कही ? अहा गौतम ! अपम्य अर्धमु-

१- अर्ध कर्म दिय बाद उदय में आने पर के बीच अर्धकाल को अवाधा काळ कहते हैं ।

जहण्णेण अतोमुहुचं उक्कोसेण तीससागरोधमकोढीकोढीओ, तिणिगवाससहस्साइ
 अयाहा ॥ १२ ॥ साता वेदणिज्जरस इरियात्राहियधवग पढुअ अजहण्णमणुक्कोसेण
 दो समया, संपराइय'बंधगं पढुअ जहण्णणवारस मुहुत्ता उक्कासण पजरस्स सागरोधम
 कोढीकोढीओ, पण्णरसयवाससहस्साइ अयाहा ॥ असायात्रेयणिज्जस्स जहण्णेण
 सागराधमस्स तिससराभागा पळिओधमस्स असखज्जइ भागणं उण्णता उक्कोसेण
 तीससागराधम कोढीकाढी तीभिवातसहस्साइ अयाहा ॥ १३ ॥ सम्मच्चवदणि
 जस्स पुष्ठा ? गोयमा । जहण्णेण अतोमुहुचं उक्कोसेण छावट्टिसागरोधमाइ साति

हैं की उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोह सागरोपम की अवापाकास तीन हजार वर्ष का इतने काळ उदय नहीं
 पावे ॥ १२ ॥ साता वेदनीय कर्म की इयोवही के बच आश्रिय अपन्य उत्कृष्ट दो समय की क्यों कि
 प्रथम समय बंध होता है और दूसरे समय वेदकर तीसरे समय निर्भरे सम्पराधिक बंध आश्रिय जघम्य
 बारा मुहूर्त उत्कृष्ट पहले क्रोडाक्रोह सागरोपम की, पहले सो वर्ष का अवापाकास असाता वेदनीय कर्म
 की जघम्य एक सागरोपम के सात भाग में के तीन भाग भितनी भिस में एक पत्योपम के अयस्यपाने
 भाग भिननी कम उत्कृष्ट तीस प्राडाक्रोह सागरोपम की तीन हजार वर्ष का अवापाकास ॥ १३ ॥
 सम्पत्त्य वेदनीय कर्म की जघम्य अर्धमुहूर्त की उत्कृष्ट छान्द क्रोडाक्रोह सागरोपम की कुछ अधिक

रगाह, मच्छसद्यदाजबस्स जहण्णण सागराथम पलिओवमस्सअसखज्जातभागज
 उणग, उक्कोसेण सचरिसागरोवम कोढाकोढीओ सययवाससहस्साइ अवाहा
 ऊपया सम्मभिच्छसवेयणिजस्स जहण्णण अतामुहुच उक्कोसेणवि अतोमुहुच
 कसायवारसगरस्स जहण्णण सागरोवमस्स चचारिसचभागा पलिओवमस्स असख-
 ज्जतिभागं उणता, उक्कोसेण चचालीसंसागरोवम कोढाकोढीओ, चचालीसं
 वाससयाइ अवाहा जाव निसेगो ॥ कोहसज्जलेण पुच्छ ? गोथमा ! जहण्णेण वो
 मासा उक्कोसेण चचालीसं सागरोवम कोढाकोढीओ, चचालीसयाससयाइ जाव

मिध्यात्वेदनीय कर्म की एक सागरोपम वस में से पर्योपम के अर्थस्वातरे भाग कम, वस्तुतः सिचर
 कोटाकाटी सागरापम की, सात हजार वर्ष का अबाधा काल समधिध्यावेदनी की बधन्य अंतर्मुख वस्तुतः
 भी अन्तरमुख की बार कदाय की अपन्य एक सामरोपम के सात भाग करे वस में के बार भाग
 वितनी वस में न पर्योपम का अर्थस्वातता भाग कम, वस्तुतः वालीय कोटाकोट सागरोपम की, समीप
 हजार वर्ष का अबाधा काल सबल के कोप की अपन्य दो यतिन की, वस्तुतः वालीय कोटाकाट
 सागरोपम की बार हजार वर्ष का अबाधा काल, सबल के भाग भी, अपन्य एक यतिन की वस्तुतः

निसर्गो ॥ माणसेजलणे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण भास उक्कोसेण अहा कीहस्सा।
 माया सजलणाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अब्बमास उक्कोसेण जहा काहस्स ॥
 छोभसजलण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतामुहस उक्कोसेण जहा काहस्स ॥
 इत्थीवेदस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमस्स दिवहुसतभागं पलिओवमस्स
 असस्वजति भागेण उणतं उक्कोसेण पण्णरस सागरोवम कोढाकोढीओ, पण्णरस
 वाससयाइ अवाहा आव निसर्गो, पुरिस वेदस्सणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णं
 अट्ट सवच्छराति उक्कोसेण दससागरोवम कोढाकोढीओ, दसधाससयाइ अवाहा।

फ्राप क भित्ती, संखल के मापा की अघन्य १५ दिन की उत्कृष्ट क्रोध भित्तों, संखल के छीप की
 अघन्य अन्तरापूर्व की उत्कृष्टाकाश भित्ती की बद की एकसागर क साथ माग में के देह विमल इस में से
 भी पदपापम के अमरस्यातय माग भित्ति के कम की, उत्कृष्ट पद्मर काढाकोढ सागरोपम की पद्मरे हजार
 वर्ष का मापाया काल, पुरुष चेद की अघन्य भाठ वर्ष की उत्कृष्ट दश क्रोडाकाढ सागरोपम की एक
 हजार वर्ष का अवावा काल नपुंसक चेद की अघन्य एक सागरोपम क साथ भाग में के दो माग
 भित्ती उन में स पद्मोपम क अमरस्यातय माग भित्ती के उत्कृष्ट भीस क्रोडाकोढ सागरोपम की:

जाव निसगा॥ पुसग नदस्सण पुच्छा? गोयया! अहण्णेण सागरोधमस्स दणिण सत्तभागा
 पल्लिओधमस्स असंख्खजति भागेण ऊणया, उक्कासणं वीससागरावम काढाकाढीआयी मय
 वास सयाइ अथाहा जाव निसगा॥ द्वास रतीण पुच्छा? गोयया! जहण्णणं सागरावमस्स एक
 सत्त भाग पाल्ल ओधमस्स असंख्खजति भागेण ऊणया उक्कोसेण दससागरागम कोडा
 काढीओ दसयथाससताइ अथाहा ॥ अरति भय, सोग, दुगच्छाण पुच्छा? गावमा!
 अहण्णेण सागरोधमस्स दणिण सत्तभागा, पल्लिआवमस्स असंख्खजति भागेण ऊणया,
 उक्कोसेण वीससागरोधम कोढाकोढीओ, वीसयथास सताइ अथाहा जाव निसगा
 ॥ १४ ॥ मेण्डयाउयस्सण पुच्छा? गोयमा! जहण्णेण दस वास सहसताइ,

दो हजार वर्षका बवाबा काक, हास्य और श्रुति की अपन्य साविथा एक मात्र सागरोधमने पस्पादक अस
 ल्याने भोग कम की, बल्लुह दस काढाकाढी सागरोधम की, एक हजार वर्ष का बवाबा काक अरति
 मय काक और दुर्गच्छा ही, अथय एन सागर के साथ भाग करे जिस में क दा भाग मिलनी,
 उस में से फस्यापम के प्रसंख्यानने भाग कम थी, बल्लुह वीस काढाकाढी सागरोधम की, दो हजार
 वर्ष का बवाबा काक ॥ १४ ॥ नारकी के मापुल्य की पुच्छा! अपन्य दस हजार वर्ष अमरमुर्त
 अभिक (पीछे के भाग आश्रित) बल्लुह तैलीस सागरोधम व पूर्व कोर मापुल्य का तीसरा भाग भवि

अट्टारससागरोवम कोढाकोडीओ अट्टारमवाससताई अबाहा जात्र निसेगो, तइंदिय जातिनामाएण जहण्णेण एवच उक्तासेण अट्टारससागरोवमकोढाकोडीओ, अट्टारसवा ससताइ अबाहा जात्र निसेगो ॥ चठरिंदिय जातिनामाएण पुच्छा ? गोगमा! जहण्णे ण सामरोवमरस णवपणतिसतिमाग। पलिआवमरस अमस्वज्जतिमाग उगमा, उक्तासेण अट्टारम सागरावम कोढाकोडीओ अट्टारसवासनवाइ अनाहा जात्र निसेगो पर्विंदियजातिनामाए पुच्छा ? जहण्णेण सागरोवमरस। दणिमसतभाग। पालआग्रमरस असस्वज्जतिमागण उणया, तुक्तासेण वीससागरावम कोढाकोडीओ वीसयवाससताइ,

काल वइन्द्रिय नाति नाम कम क। अपन्य एक सागर के देवीम (१२) माग कर वम में के नव (०) माग निम में पदपोपम का असंख्यातवा माग कम, उत्कृष्ट अठारा क्रोशकोट सागरापम अठारा सो वर्ष का अबाधा काल तइन्द्रिय मति न म रुई का तपण ए। ही उत्कृष्ट अठारा क्रोशकोटी सागरापम अठारा मा वर्ष का अबाधा काल वीरिन्द्रिय नाम कम ही मध्यन्य एक सागर के पेरीस गग म क ९ माग वम में स पदपोपम का असंख्यातवा माग कम उत्कृष्ट अठारा कोढाकोट सागरापम, अठारे सा वर्ष का अबाधाकाल पर्वन्द्रिय जाति नाम कम जघन्य एक मागर के सिंदिमाग में क दो माग उस में से परयोपम क। असंख्यातवा माग कम, उत्कृष्ट वीस कोशकोट सागरापम, दा इत्तर वर्ष का अबाधाकाल

अथाहा अथ हुनिया॥ओरात्थिसरीरि एवच, वेडन्वियसरीरनामाण भत ! पुच्छा ? गायमा ! जहण्णेण सागरात्रमसहस्स दोत्तमगाणिलिओत्रमस्स, असखेज्जतिमागेण उज्जता उक्कोसेण धीससागरोयमकाढाकाढीओ वीसइथाससताइ अथाहा अथाहुनिया, साहारगामरीरनामएज पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अतोसागरात्रम कोढाकाढीओ उक्कोसेणत्रि अतोसागरात्रमकोढाकाढीओ ॥ तथाकम्मसरीर नामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दोण्णिसत्त भागा पलिआत्रमस्स असखेज्जतिमागेण उज्जता, उक्कोसेण वीससा गरात्रमकोढाकाढीओ, वीमयवापसताइ अथाहा जात्र नि भगो ॥ सरीरवधण नामाएत्रि

भौतिक शरीर का भी इतना ही वर्चस्व प्रियता कहना, ११ वैष्णव शरीर का अपन्य एक हजार सागर का मात्र भाग में का दो भाग तममें स पत्तयेव के अभिस्थातव भागकम उत्कृष्ट बीस काढाकाढ सागरापम ने हजार वर्ष का प्रथा काय, आहार, शरीर की वधय भक्तिसागर काढाकोड उत्कृष्टमी अंता सागर काढाकाढ, तप्तस काढन शरीर की अपन्य उद्भवागर के साथ, भाग में से दो भाग उस में स पत्तये ११ का अभिस्थातवा मात्र कम उत्कृष्ट बीस कोढाकाढ सागरापम बीस हजार वर्ष, का अथाकाय भी पाँच शरीर की स्थिति कही तमी ही पाँचों शरीर के वधय की स्थिति जानना, और पाँच संघातन की भी इन प्रकार ही कहना, वज्ररूपम नारय मययन की राते नाम क मिनी नयय एक सागर के साथ

नारायणसंघयणनामस्स पुच्छा ? गायमा ! जहण्णेण सागरौवमस्स अट्टपण्णती
 गतिमागा पलिआयमस्स असखज्जइ भागेण उणता, उक्कासण सोलस सागरोवम
 क्काडाकडिआ सोलसथससताइ अवाहा, जात्र निसेगा, कीलिया संघयणणामेण
 पुच्छा ? गायमा ! जहण्णण सागरावमस्स णअण्णतीसतिमागा पाले
 ओशमस्स असखज्जतिमागण उणया उक्कासण अट्टमस सागरावम कण्ठे।काढाओ,
 अट्टमस वाममताइ अवाहा, जाव निसेगा ॥ छवट्टमसघयणणामस्स पुच्छा ? गायमा !
 जहण्णेण सागरोवमस्स वणिंसथामागा पलिओवमस्स असखज्जति भागण उणया,

एक रागर क पेंतिस याग में से नव याग जिस में पदयापन के अर्सेखातेवे भाग कम की उत्कृष्ट
 यठारं क्रोडाक्रोही सागरोपम की अठारासो वर्ष का भयाबाकाल, छेवट सघयनकी अपन्य
 एक मागर के सात याग में मे द्वा याग जिस में से पदयोपम के असल्यातेवे भाग कम की उत्कृष्ट बीस
 क्रोडाक्रोड सागरोपम की द्वा हजार वर्ष का भयाबा काल, जिस प्रकार छ सघयन नाय की स्थाति कही
 सम ही प्रकार छ सस्यान नाय की भी स्थिति कहना गुरुर्ण की सघन्य एक सागरोपम के सात याग में
 के एक याग जिस पदयोपम क अर्सेखानेवे याग की कम उत्कृष्ट द्वा क्रोडाक्रोड सागरोपम की, एक
 हजार बर का भयाबाकाल, पीछे वर्ण की अपन्य एक सागरोपम के अठवीस भाग य से पांच याग जिस

लोहितवर्णनामैर्ण पुच्छा ? गोयमा ! जहृण्णेण सागरोवमस्स छे अट्ठुर्वसिति भार्गो
 पलिओवमस्स असस्वेज्जति भागेण उणया, उक्कोसेण पणरस सागरोवम
 काढाक्कोड्ढीओ, पणरस दाससताइ अवाहा जाव निसेगो॥ अलिवण्णणामाए पुच्छा ?
 गोयमा ! जहृण्णेण सागरोवमस्ससच्च अट्ठुर्वसिति भागा, पलिओवमस्स असस्वेज्जति भागेण
 उणया उक्कोसेण अट्ठुट्ठरस सागरोवमकाढाक्कोड्ढीओ, अट्ठमट्ठारसवाससताइ
 अवाहा जाव निसेगो ॥ कालवण्णणामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहा छेवट्ठुसवयपस्स
 सुब्भिगध नामाए जहा सुब्भिवण्णणामस्स दुब्भिमगधनामाए जहा

भाग में के एक भाग में स परयापम हैं असस्यात्ते भाग कम की उत्कृष्ट पृथ्वी को दानोद सागरोपम की
 एक हजार वर्ष का अवाचा काळ दुर्भाग्य की छत्र संपन्न भित्ती अर्थात् जप्य एक सागर के साथ
 यान में के दा नाम जिस में परयापम के असस्यात्ते भाग कम की उत्कृष्ट पृथ्वी को दानोद सागरोपम
 की दो हजार वर्ष का अवाचा काळ रसों में मयूर रस की आदि पौधों रस की जैसी पौधों वर्ण की
 कटी नैसे ही कहना स्पष्ट में वा जप्यस्त (सारा) बार स्पष्ट बर्कष, भारी, कृष्ण, मृत्त इत भाग
 की छत्र संपन्न भित्ती जप्य एक भाग के सात भाग में के दा भाग भित्ती जिस में परयापम के
 असस्यात्ते भाग भित्ती कम, उत्कृष्ट पृथ्वी को दानोद सागरोपम, दो हजार वर्ष का अवाचा काळ और

उन्वट्ट संघयणस्तः॥रसाण महार्दीण जहावण्णाण भाणिय, तहेय परिवाहीओ भाणियव्व
 फासा जे अपसरया तेसिं जहा छेवट्टस्स जेपसरया तेसिं जहा सुक्खिलवण्ण नामस्स,
 अगुरुलहुनामाए जहा छेवट्टस्स, एव उवघातेनामाएवि पराघातेनामाएवि एवंचव,
 निरयाणपुन्यि नामाण पुब्बा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरावममहस्सदोसच्चभागा
 पल्लिओविमस्स असस्सेज्वति भागेण ऊणया, उद्धोसिण वीससागरोवमकोढाकोहीओ
 वीसय वाससत्ताइ अवाहा जाव निसगा॥ तिरियाणपुन्धीए पुब्बा ? गोयमा! जहण्णज

वार मत्तस्व [अच्छे] स्वर्धे, लघु मूट, शीत, ज्जिग्व इन की प्रकृ वर्ण तैसी अर्थात् एक सागर के सात
 भाग में का एक भाग जिस में पर्योषम के अम्लस्यातवे भाग ढींधी, उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड भागरोपम की,
 अगुरु लघु नाम की छठ सघन जैभी अर्थात् वयन्य एक सागर के सात भाग में के लगे भाग जिस में
 पर्योषम के अम्लस्यातव भाग कम की उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की, दा इसार वर्ष का अर्वाधाका न
 ऐसे ही उपघात और पराघात नामकी स्थिति जानना नरकानुर्वा की मध्य एक इसार सागरापम के सात भाग में
 से पर्योषम के अम्लस्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागरोपम की, दो हजार वर्ष का
 अर्वाधा काल तिर्यक् अनपूर्वी की अथन्य एक सागर के सात भाग में के दा भाग जिन में पर्योषम के अम्ल

सागरोपमस्त यो सच भागा, पलिओवमस्त असंख्यति भागेण उणगा, उक्कोसिअं
 धीससागरोपम कोढाकोढीओ, धीसायवाससताइ अवाहा जाव नितेगो मणुयाण
 पक्षियामेण पुच्छा ? गोयमा । जहण्णेण सागरोवमस्त दिवङ्गुसचभाग पलिओवमस्त
 असंख्यति भागेण उणगा, उक्कोसेण पण्णरस सागरोपम कोढाकोढीओ, पण्णरस
 यवाससताइ अवाहा, जाव नितेगो ॥ देवाणुपुब्बिनामात पुच्छा ? गोयमा ।
 जहण्णेणं सागरोपमसहस्सएगसचभाग पलिओवमस्त असंख्यतिभागण उणगा,

स्न्यात याग कमकी उत्कृष्ट बीस क्रोढाक्रोढ सागरोपमकी, दो हजार वर्ष का अवाधाकाल मनुष्यानुपूर्वीकी
 अपन्य एक सागरोपम के सात भाग में मे देहभाग भितनी जिसमें पत्योपम के असंख्यातवे भाग कम, उत्कृष्ट
 एकरे क्रोढाक्रोढ सागरोपम की एकरे सो वर्षका अवाधाकाल देवानुपूर्वी की अपन्य एक हजार सामरा-
 पम के सात भाग में की एक भाग भितनी उस में से पत्योपम के असंख्यातवे भाग कम की उत्कृष्ट दस
 क्रोढाक्रोढ सागरोपम की, एक हजार वर्ष का अवाधा काल एवाम नाप की तिर्यक् अनुपूर्वी भितनी
 एकरे एक सामर के सात भाग में के दो भाग में से पत्योपम के असंख्यातवे भाग कम भितनी, उत्कृष्ट
 बीस क्रोढाक्रोढ सागरोपम की, ऐसे ही आताप नाप की और उचोठ नाप की प्रचस्त विहाय गति की

उक्थोसेण इतसागरोवमकोढाकीढीओ इतसयवासस्ताई अबाहा जाँध नितेगो, ॥
 उरभावनामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहा तिरियाणपुव्वी ॥ आयवनाभाएवि एवचैव,
 उज्जाय नामाएवि ॥ पतत्थविहायोगति नामाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एगमागरो-
 वमत्स एगसत्तमाग उक्थोणेण इतसागरोवम कोढाकाढीओ, इतवासस्ताई आबाहा
 जाव । न गो, अपतत्थविहायागतिणामत्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सागरोवमत्स
 दोप्पिमत्तमागा, पल्लिमोवमत्स अत्तत्थेज्जति मागेण, उणया, उक्थोसेण वीससागरोवम

अपन्य एक सागर के सात भाग में के एक भाग भित में से पत्योपम के अत्तत्थातवे भाग अितनी कमी, उत्कृष्ट इहं
 क्रादाक्रोड सागरापम ही एक इहार वर्ष का अबाधा काल अमश्वत्त विराय गति की मध्य एव सागरोपम के
 सात भाग में दो भाग उस में से पत्योपम का अत्तत्थातवा मार्ग कम उत्कृष्ट इहं क्रादाक्रोड सागरोपम की
 दो इहार वर्ष का अबाधा काल इस नाम की और स्यावर नाम की इतनी हो जानना सूक्ष्म नाम की
 मध्यन्य एक सागरापम के १५ भाग में के नव भाग अितनी पत्योपम के अत्तत्थातवे भाग कम की
 उत्कृष्ट अठारा क्रादाक्रोड सागरापम की, अठारा सो वर्ष का अबाधा काल बाहर नाम की जैसे अम
 वत्स नाम की बेंसी अर्थात् एक सागर के सातीय दो भाग की पत्योपम के अत्तत्थातवे भाग कम

सचभागा, मुभगनामाएगो असुभनामाए दो, मुभगनामाएगो, दुभगनामाए दो, सुस्तरनामाएगो, दुस्तरनामाए दो, अादिवनामाएगो, अणादिव नामाए दो ॥ असोकिसि नामाएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अट्टमुहुत्ता उक्कासेण दससा गरोधमकोढाकोढीओ, दससाससताइ अवाहा जाव निसेगो ॥ अजस्सेकिसि

काल आस्तिर नाम की एक सागर के सात भाग में दो भाग में सपर्योपप के असंख्यातने नाम कम उत्कृष्ट बीस फोडाफोड सागरोपप, दो हजार वर्ष का अबाधा काल, दुभ नाम की एक सागर के सात भाग में से एक भाग पर्योपप के असंख्यातने भाग कभी, उत्कृष्ट दश फोडाफोड सागर अबाधा काल एक हजार वर्ष का, अत्रुप नाम की अवन्य एक सागर के सातीये दो भाग पर्योपप के असंख्यातने भाग कम, उत्कृष्ट बीस फोडाफोड सागर, दो हजार वर्ष का अबाधा काल, दुभग नाम की अवन्य एक सागर के सात भाग में से एक भाग की पर्योपप के असंख्यातने भाग कम उत्कृष्ट दश फोडाफोड सागर एक हजार वर्ष का अबाधा काल दुभग नाम की एक सागर के सात भाग में से दो भाग की पर्योपप के असंख्यातने भाग कम, उत्कृष्ट बीस फोडाफोड सागर दो हजार वर्ष का अबाधा काल सुस्तर नाम की एक सागर के सात भाग में से एक भाग पर्योपप का असंख्यातना भाग कम, उत्कृष्ट दश फोडाफोड

दी, सत्तभागा तत्थ त्थोसेणं दीससागरोत्तम कोढाकोढीओ दीसययाससयाई अवाहा जाव
 निसेगो॥ १९॥ उद्योगोयस्स पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अट्टमुहुत्ता त्थोसेण दमसागरोत्तम
 कोढाकाढीओ दसवाससयाइ अवाहा ॥ पियागोयस्स पुच्छा ? गायमा ! जहा
 अप्पसरथ विद्यायगतिणामस ॥ १७ ॥ अतराइएणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णं

की अयन्योत्कृष्ट स्थिति ज्ञानना (यूय में वहाँ एक सात याग कहा है वहाँ उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड
 सागरोपम कहना और एक हजार वर्ष का अबाधा काल कहना और वहाँ दो सात याग कह तहाँ
 उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागर की दस हजार वर्ष का अबाधा काल ज्ञानना (जहाँ जितन क्रोडाक्रोड
 सागर की स्थिति है वहाँ तबन सो वर्ष का अबाधा काल ज्ञानना) इस का सुन्नामा गर्व स्थान
 अर्थ में कहा दिया है ॥ १६ ॥ ऊंच गात्र कर्म की अपुंग आठ मुहूर्त की उत्कृष्ट दश क्रोडाक्रोड
 सागर की एक हजार वर्ष का अबाधा काल नीच गात्र की जैन अयश्चस्त विद्याय गात्र कभी
 अमृत अपुष्प एक सागर के माथीये दस याग पत्थापम क असंख्यातेमे याग कम उत्कृष्ट बीस क्रोडाक्रोड सागर की
 दो हजार वर्ष का अबाधाकाल, ॥ १७ ॥ अन्तराय कर्म की अयुष्य अतर्मुहूर्त की उत्कृष्ट तीस क्रोडाक्रोड
 सागरापम की तीन हजार वर्ष का अबाधाकाल इतने वर्षोंमें कर्मका तदप होंगे फिर स्थितिमात्र कर्म योगव कर्म
 कर्म का साथ होंगे यों सब आठों कर्म की १४८ प्रकृति के वृत्त्य स्थिति कही इस में से—२१ यतिज्ञान

अतोमुहुत्त उक्तेसेण तीस सागरोपम कोढाकोडीओ, तिणिणय याससहस्साइ अवाहा,
 अथाहविषया कम्ममिंसो ॥ १८ ॥ एगीदियाणं भता जीया णाणावरणिज्वरस कम्मस्स
 किं वधति ? गायमा जहण्णेण सगरावमस्स तिणिण १ चभागो पलिओवमस्स अतस्सेज्जति
 म्मारेणंऊणए उक्तासेण तच्चेव पढिपुण्णेवधति, एव णिहापचगस्सवि, दसणचउद्धत्तम
 वि ॥ एगीदियाणं भते ! जीवासातावेयणिज्वरस कम्मस्स किं वधति ? गायमा !
 २. शुद्धि ज्ञान ३ अविपिज्ञान, ४ धनःपयस ज्ञान, ५ चतु दर्शन, ६ अन्तर्दुर्धन, ७ अविपि ८ पुण्य
 ९ १० भगवत् का चौक, ११ १२ पाँचों अतराय इन १७ प्रकृति का एक ग्यानिया दो ग्यानिया,
 तीन ग्यानिया, चतुस्यनिया रस होता है शेष १०३ प्रकृति का प्रथमा ११ प्रकृति का २ ग्यानीय
 तीन ग्यानिया चउ ग्यानिया रस होता है, दृष्टान्त-असं अक्षीमादि का पानि ये दोन एक सेर रस बनाव
 १४ एक ग्यानीय, उस आधि पर वण्ट कर तीन भाग रख वह दा ग्यानीण अक्षमेर रसे वह त्रिस्वानिया
 और एव रसे वह चतुस्यनीया रस जान जानना यह अन्तम प्रकृतिगों का दृष्टान्त मानना और शुभ
 प्रकृतिगों के छिप गुह के पानी का दृष्टान्त मानना ॥ १८ ॥ अब एकन्द्रिय पर प्रकृति सञ्चय कहत है
 अहं मगवन् ! एकेंद्रिय ओष ज्ञानावरणीय कम्मका बन्धनकी स्थिति किननी करते है? यहाँ गौठम' प्रथम
 एक सागरोपम के साथ नियतीनभाग उस में पश्योपम के असंख्यात भाग कव की क्योंकि पीछ मिथ्यात्व माहनीय

जहण्णेण मांगरोधमस्स दिवङ्गमत्तमाग पल्लिओवमस्स असस्सेज्जतिभोग्गेऊणय, उक्को
सण तस्स, पडिपुण्ण यधति, असायायेदणिज्वरस जहा णाणावरणिज्वरस एग्गेवियणि
भन ! जीवा मम्मत्त वेदणिज्वरस किं यधति ? गोयमा ! णस्थि किञ्चिच्चधति ॥
एगिदियाणं भते! जीवा मिच्छतवयणेज्वरस कम्मरस किञ्चधति ? गायमा ! जहण्णेणं
सागरोत्तमं पल्लिओवमस्स असस्सेज्जतिमागणं ऊणय, उक्कासेण तस्सेव पडिपुण्ण वंघति॥

की उत्कृष्ट मितः काहाकाद सागर का परलोपम क तीनमे सितर क भाग का हरन करत असंख्यात भाग
हिन होवे इस लिये मध्य स्थिति में परलोपम का भसंस्थातवा भाग कम कहना उत्कृष्ट एक सागर क
सान भाग म क तीन भाग पूरे का बंध करे, एत ही ५ ज्ञानावरणीय ९ दर्शनावरणीय १ बदनीय, ५
अन्तराय यों २० प्रकृति का एकन्द्रिय आश्रय स्थिति जानना अहो भगवन् ! एकान्द्रि बंधी साहा
बदनीय कम की कितनी स्थिति का बंध करत हैं ? अहा गौतम ! तपन्य एक सागरापम के सात भाग में
के दह भाग जितनी उम में ते भी परलोपम का भसंस्थातवा भाग कम, उत्कृष्ट पूर्ण दह भाग की
प्रमाणा बदनीय की ज्ञानावरणीय कर्म भैसी जानना अहा भगवन् ! एकान्द्रिय ग्रीर मध्यस्तर बदनीय
का कितना बंध करत हैं? अहो गौतम! किञ्चिन्मात्र भी बंध नहीं करत हैं क्योंकि एकान्द्रिय की सम्यक्त्व
बेदनीय कर्म नहीं है अहा भगवन् ! एकान्द्रिय जीव विद्या बदनीय का किस प्रकार बंध करतें हैं ? अहा

पुर्णिमियाणं मते ! जीवा सम्मभिच्छचेयणिज्जस्से कियंयति ? भीयंमो ! नस्तिय
 किंचिदि वधति ॥ पुर्णिमियाण मते! कसायधारसगस्स किम्वधति ? गोयमा ! जहण्ण्ये-
 ष मागरोवमस्स चत्तारि सत्तमागे, पलिओवमस्स आवस्वेज्जति भागेणउणए उक्कोसेणं तच्चव
 वडिपुण्णवधसि ॥ एव कोइ संजलशाइवि, जात्त लोममजलणाणवि ॥ इटियेवेयस्स जहा
 सानावेदस्स पुर्णिमिय पुरिमवेदस्स कम्मस्स जहण्णेणं सागरावमस्स एगवत्त मार्गं पलिओव-
 मस्स असस्सज्जतिभागेणत्तण्य, उक्कोसेण तच्चव पडिपुण्ण वधति, पुर्णिमिया णपुसगं

गौतम ! अपन्य एक सागरोपय में पर्योपय का अर्पस्यातवा माग कय उत्तुह एक सागरोपय पूर्ण भहो
 मगवन् ! एकन्द्रिय नीब सममिष्यात्वं वेदनीय का वष किस प्रकार करत है ! अहो गौतम ! किंचित
 माम मी नहीं बंधत अहो मगवन् ! एकन्द्रिय नीब शरे कपाय (४ अन्तानधी, ४ अमत्स्यावयानी, ४
 मत्स्याक्यानावरणी) का वष कितना करत है ! अहो गौतम ! अपन्य एक सोमरोपय के सात माम में से
 चार माम निममें वश्योपयका अर्पस्यातवा माग कय, उत्तुह चारभाग पूर्ण ऐसे ही सुबलन की चारों प्रकृति
 का भानना एव ही स्त्री वेद का वष नैसा साता वेदनी का कहा अर्थात् अपन्य एक सागरके सात मार्ग
 में का इह माग मसे पस्यापय का अर्पस्यातवा माग कय, उत्तुह पूरा देह भाग, पुरुष वेदका अपन्य एक
 सागर के सात याम में का एकयाम में से पर्योपय का अर्पस्यातवा मागकय उत्तुह एव

वेदस्य कर्मस्य पुच्छा ? गोयमा ! अह्णणेण सागरोवमस्य दोषचभागे पलिओवमस्स
असंखज्जतिभागणं उण्णसे, उक्कोसेणं तंवेच पढिपुण्य वधति ॥ हासरसीए जहा पुरिम-
वेदस्स, अरतिमयसोगदुगछा ? जहा मयसगवेदस्स ॥ नेरइयाउय वेवाउय,
नेरयगतिनाम देवगइनामे, वेढवियसरीरनाम, आहारगसरीरनाम, नेरइयाणपुण्विनाम
देवाणपुण्विनाम, तितियगरनाम, एसाप्पिपदाणि ण वधति तिरिक्खज्जोबियाउयस्स
पुच्छा ? गोयमा ! जह्णणेण अतोमुहुच उक्कोसेणं पुव्वकोढीसचेहि वाससहस्सेहि,

भाग पूर्व नपुंसक वेद का अग्र्य एक सागर के सात भाग में का दो भाग में स एत्योपम का असंख्यतवा
भाग कम. उत्कृष्ट पूर्व दो भाग हास्य और रति का षष्ठ पुरुष वेद जैसा भरति मय मोग और दुर्गछा
का नपुंसक वेद भित्ता नरकायु २ देवायु, ३ नरक गति नाम, ४ इंदवगति नाम, ५ वैक्रय, क्षीर, ६
आहारक क्षीर, ७ नरकानुपूर्वी ८ देवानुपूर्वी और ९ वीर्यकर नाम इन ९ प्रकृति का षष्ठ एकेन्द्रिय
के नहीं होता है वीर्ययोनी आयुष्य का अग्र्यः अंतर्मुर्त का उत्कृष्ट एक पूर्व प्रोढ और बावीस इमार
वर्ष का वीसरा भाग अधिक परमवायु षष्ठ करे अण्काय अपेक्षा सात इमार वर्ष एक इमार वर्ष का
वीसरा भाग अधिक यो आगे भी विषेच की स्थिति कहना ऐसे ही अनुव्यायु का भी
कहना. विषेच योनिक गति नाम का नपुंसक वेद जैसा कहना अनुव्य गति नाम का भी ऐसे ही कहना।

वाससहस्रसति भागेणय अभिहित्वचधति, एवं मणुस्साठयस्वधि, तिरिक्खजोप्पियगतिना--
माए जहा नपुसगवेरस, मणुयागतिनामाए जहा सातायेदणिवस्स, एगीदियजातिनामाए
पथिदियजातिनामाए जहा नपुसगवेरस, वेहदिय तेहदिय जातिनामाए जहण्णेणं
सागरोवमस्स, षडपण्णतिसतिभागे पळिओवमस्स, अ-खेज्वतिभागेणं ऊगत उक्कोसेणं
तचव पढिपुण्णेवधति चठरिदियनामाएवि जहण्णं सागरोवमस्स षवपण्णतोसाविभागे
पळिओवमस्स असखज्वति भागेणऊगता उक्कोसेणं तचव पढिपुण्णेवधति, एवं जयय

मसा सादा वेदनीय का कहा एकेन्द्रिय पचेन्द्रिय नाति नामका नपुमक वेद नैसा कहना पन्थिय तेन्द्रिय
जाति नाम का अपन्य एक सागरापम के पेठीस वें नव भाग परयोपम का- असख्यातवा भाग कम,
उत्कृष्ट नव भाग-प्रतिपूर्ण चोरीन्द्रिय नाम का अपन्य- एक सागरापम के पेठीस भाग में क नव, भाग
पचेन्द्रिय का-असख्यातवा भाग कम उत्कृष्ट नव भाग पूर्ण इस प्रकार ही जहां-अपन्य साठीये दो भाग
तीन भाग, चार भाग, अठ्ठसीसीये साठ भाग होये तहां जअन्य दो उतनी ही परयोपम के असख्यातवे भाग
कम कहना. और, उत्कृष्ट यदि पूर्ण कहना (परयोपम का असख्यातवा भाग कम कहना) उत्कृष्ट
साठीया एक भाग देड भाग तहां तेजा हो कहना [परयोपम का असख्यातवा भाग कम कहना] जहां
यदि पूरा कहना यत्तोकीति केव गोत्र का एक सागरापम का साठीया एक भाग परयोपम के असख्यातवे

जहण्णग दोसत्तमागा, तिण्णिवा चत्तारि वासत्तमागा अट्ठवीसइभागा भवति तर्थण
जहण्णण तेचेव पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणं कणगा भाणियब्बा, सक्कोभेण तेचेव
पडिपुण्णा वधति, जत्थण जहण्णेणं एगोवा दिवडोवा सत्तभागो तत्थ जहण्णेण तेचेव
भाणियब्ब उक्कोसेणं तंचेव पडिपुण्णवधति, जसोक्कत्ति उच्चगोयाण जहण्णेण सागरा
वमस्स एग मत्तमागा, पलिओवमस्स असखेज्जतिभागेणकणय, उक्कोभेण तंचेव पडिपुण्ण
वधति, अतराहयस्सण भंत! पुच्छा? गोयमा! जहा गाणावरणिज्जस्स जाव उक्कोसेणं
तंचेव पडिपुण्णवधति ॥ १९ ॥ अइदियाण भंत ! जीवा गाणावरणिज्जस्स कम्मस्स
किं वधति? गोयमा! जहण्णेण सागरोवम पण्णवीसाण तिण्णिसत्तमागा पलिओवमस्स

भाग कम उत्तए एक माग पूर्ण अन्तराय कर्म का ज्ञानावरणीय कर्म जैसा ही कहना पावए उत्तए ५५
मातेपूर्ण वष करे एकन्दि क १६८ मकृति में स १ सम्यक्त्व माहनीय, २ मित्र मोहनीय, ३ नरकायु, ४ दवायु,
५ नरकाति, ६ दवाति, ७ वैश्वेय घरीर, ८ वैश्वेय अगापीग, ९ वैश्वेय वंघन, १० आहारक घरीर, ११ आहारक भंगो
१२ आहारक वंघन १६ आहारक संपादन, १७ नरकानुपूर्वी, १८ वनानुपूर्वी, और १९ धीर्यक्रनाम
इन १९ मकृति का वष एकान्द्रय के नहीं जाता है, बाकी १३२ मकृति का वंघ होता है ॥ १९ ॥ अब
अन्तराय क जीव के ज्ञानावरणीय कर्मकी कितनी मकृति का ज्ञाना सिद्धि वष होता है ?

वासेहिं अहिय बधति एव भणयाउयस्सदि सेस जह्णं एगिंदियाण जात्र अंतराद्धं
 यस्म तद्दिदयणं भन ! नाणाग्रणिज्जरग किंघंघति ? गायमा ! जह्णणेणं मागरोवम
 पण्णा ७५ तत्पिअत्तभागा पलिआवभरस अमस्सेज्जात मागणं उणय, उक्कोसेणं
 तंघ ७५ पण्ण घधति एव जस्मजतिभागा, ते तस्म सागरोवमपण्णाप्ताए सह
 माणयत्वा ॥ २० ॥ तेइंदियाणं मिच्छत्तवधणिज्जस्स किं बधति ? गोयमा ! जह्णणेण
 सागरस्सम पण्णासं पलिओवमस्स अमस्सेज्जाति मागेणं उणय, उक्कोसेण तंघेव पठि-

पस्योगमका असस्सातथा भाग कम, उत्कट पूर्ण पेसीस सागरोपम विर्यच योनिक आयुष्यका बधन्य अर्त
 मुहूर्त उत्कट पूर्ण फ्राडाज्जोट और मार बर्ष अधिक का क्षय करे देय ही मनुष्यायु का भी क्षय ऐसा
 एकद्वित्र का कहा तेमा कहना यावत् मन्तराय कर्म पर्यंत कहना ॥ २० ॥ अथा मगवन् ! वेइद्वित्र
 मीन उ जगवरणीय का क्षय कितना होता है ? अहो गौतम ! जघन्य पचास मागरोपम के साथ माग
 कर एम ठा ! भाग परयापमका असस्सातथा भाग कम, उत्कट पूर्ण तीन भाग यों जिस के जितने माग करे
 उन पय का सागरोपम के पचास भाग करना अथाइस ३ भाग अथाइस माग करना, पेसीस के मग
 पेसीस भाग करना परंतु तब स्थान पचास सागर क ही माग करक कहना, वेइद्वित्र के भिष्यात्त्व वेदनीय

पुण्यं बधति ॥ तिरिक्खजीणिआउयस्स जहण्णेणं अतोमुहुत्तं उक्कासेणं पुण्यकोही,
मोहमहि ग्हाइएहि रातिदिपतिभागेणय अहिधधति ॥ एव मणुस्माउयस्सवि सेस
जहा धेतिदियाणं जाअ अतराह्वस्स ॥ २१ ॥ चट्ठीरोवियाण मंते ! जीआ जाणाव
रणिअस्स कम्मस्स किं बधति ? गोयमा ! जहण्ण सांगोवमस्स तिणिजसत्त भागा,
पलिआवमस्स असंखजति भागेणं उणत्ते, उक्कासेण तच्च पाटिपुण्णे बधति ॥
एव जस्स जति भागो ते तस्स सांगोवमसत्तेण माणियद्वो ॥

का ईए कितना जाना है ! अहा गौतम ! जयत्य पचाम सागरापम में पन्योपम का असम्पातना भाग
कम उत्कृष्ट पचास भागपच पूज विर्यच यातिक आयुष्य का अयन्य अन्तरमुहूर्त उत्कृष्ट पूर्व काटी,
सां रातवि एक रात्रि का सीमरा भाग अधिक एमे म्मुल्यायु भी कहना छप जैसा बेइद्रिय का
कहा जैसा कहना यों यावत् अन्तराय कर्म पर्यन्त कहना ॥ २१ ॥ अहो ममबन् ! चौरिन्द्रिय क जाना
वरणीय कर्म का कितना ईष होता है ! अहो गौतम ! अयन्य एक सा सामरापम क मात्र भाग कर
रस में क तीन भाग उस में पर्यापच का अमस्यातना भाग कम उत्कृष्ट तीन भाग पूरे यो विस के
जितनी भाग की स्थिति होवे छतन भाग कहना अयन्य धूपन में पर्योपम का असेक्यातना भाग कम

सम भाणियव्यो जरत जति, आगति मिच्छसवैयणिवस्स जहण्णेणं सागरोवमं
सहस्स पठिआवमस्स असखेज्जति भागण ऊणय, उक्कोसेण त्वेय पठिपुण्ण॥ णेरइया
उयरस्स जहण्णेण इमथाससहस्साइ अतोमुहुत्त मग्गहिंयाइ, उक्कोसेणं पठिआवमस्स
असखज्जति माग पुज्जकाढीत्ति भाग मग्गहिंय वंघति, एव तिरिक्खजे, पियाउयस्सवि,
णवर जहण्णेण अतमुहुत्तं पुव मणुस्साउयस्सत्ति, देवाउयस्स अहा णेरइयाउयस्स ॥
असण्णीप्प मत्ते ! जीवा प्योचिदया णिरयगतिणामाए कम्मरस किंचत्ति ?
गोयमा ! जहण्णेण सागरावमसहस्स वोत्तत्तभाग पठिआवमस्स असखेज्जतिमाणेण

सागरोपम के साथ माग करे उस में के तीन भाग इस में पक्षपोष का असख्यातवा माग कम, उत्कृष्ट
तीन भाग प्रतिपूर्ति इस प्रकार जिस के निबन्धने प्राप्त होवे इतने कहना परन्तु एक हजार सागरावम के
७—२८—३५ भाग कहना मन्थ में पक्षपोष का असख्यातवा भाग कम
कहना पूरा माग कहना पिथ्यास पदनीय का अर्धन्त एक हजार सागरावम में पक्षपोष का असख्यातवा
माग कम, उत्कृष्ट पूरा इमार सागरोपम नरकाय का अर्धन्त दण्डमार वर्ष अर्धमुद्रम अधिक, उत्कृष्ट
पक्षपोष का असख्यातवा माग दूध कोटी का वीसवा भाग अधिक, ऐसे ही विषय श्रौतिक का भी कहना;

जहण्णेण अंतोसागरोश्रम कोढा

सिण्णियथासहस्साइ अवाहा, दस

सिज्जरस जहा आहिया ठिती भाणिया तहेव

मपराइवथयच अमायावयणिज्जरस जहा नि

सम्मासिउत्तवेदाणज्जरसय जहा ओहिया ठिती भणिया तव

जहण्णं अंतोसागरोश्रमकोढाकाढीओ, उक्कासेण सत्तरिसागराव

सत्तयवात्सहस्समति अवाहा, जाव निसगा ॥ कसाय चादरास्स जहण्णेण एवचव,

गीतम् ! बघन्य प्रहो सागराय काढाकाही बत्कृष्ट तीस सागरोपय कोढाकोही तीन हजार वर्ष
अवापाकाम दर्शन बौक का ज्ञानावरणोप मैमा कहना माता वेदनीय का औपिक मैसा कहना फर आठ
क्रिया आश्रिप दा मयपकी साम्यराधिक वंच आश्रय अमाता वदनीयकी मैवी निद्रावचक, फिर सी वेद
साम्यपर वेन्नाय की मिष्ट्या वेदनीय की मैसा औधिक की करी तैसी कहना पिपु, शोक, दुगळा, इने
मय्य प्रन्त काढाकाही सागराय की बत्कृष्ट सितर काढाकाही सागरोपय की, पुरुष वेद के करण
पवापाकास बार कपाय की मयन्य इतनी बत्कृष्ट चालीस कोढाकोर सूरिके संजस के क्रोय को सर्ववत्स

उच्छोसेन चंचालीस सागरोत्थम कोढाकोढीओ चतालीसनास सेयी^६ जहणजेणं सागरोत्थमं
 फेड माण माया लाम सजेलबाए दामासा मासा अहमासा अतोमुहुचो^५ तचेत्र पढिपुण्ण॥ णरइया
 स्म पणजहाकसाथवारसगस्म ॥ चठण्हवि आउयाण जाह ओहिया ठिती तेस्य पालिआवमस्स
 वधति ॥ आहारगमरीस्स तिरयगरणामाएय जहण्णेण अतासागरोत्थमकोढाका^७ न्ध्याउयस्सवि,
 उक्कासणवि अतोसागरावम कोढाकोढी वधति ॥ पुरिसववस्स जहण्णेण अटु^८ स्स ॥

१. मुसुदेव सदापमी अनामसादमी .

संवच्छरति उक्कासेण दससागरोत्थम कोढाकाढीतो दसवाससयाणि अवाहा,
 असाकिणि णामाए उच्चागातस्स एव चेव, गवर जहण्णेण अटु मुहुत्ता ॥ अतराइयस्स

अवापाकस सबब के काब की दो गहीने की मान की एकव शिन की माया की पनेर दिन की काम
 की येतपुर्त की ओर वत्तुह भेमी बारे क्काय की दह तैमी चारों प्रकार के आयुष्य की भेमी मौधिक
 की करी तैमी, भाहारक बरीर और हीरिंकर नाम की यथन्य वत्तुह अम्हा फाढाफोदी सागरोपम की,
 पुरुष नेद की अपाय आठ बर्ष की वत्तुह दवं फाढाकादी सागरापद की, एक इमार बर्ष का अवादा,
 काक पथाफाति नाम की केव गाब की इठनी ही कहना जित गे इना विशेष जयन्य आठ पुर्न की
 अम्भराव कर्म की भेसी ज्ञानवरणिय की, येव सर्व संबयन सत्थान पांच बर्ष दो गेप की जयस्व

वेधपु, तद्यतिरिते अजहण्णे एवं एतेर्ण अभिलावेण मोहान्ते । तच्च पाठपुण्ण ॥ ५१२५ ॥
 माणियव्व ॥ माहणिजस्सण मते । कम्मस्स जहण्णटिती यधत्ते । तेस्यं पालेओवमस्स
 अण्णयर नादरसपराते उवसाभएवा अवएवा एसण गोयमा ।

आयाउयस्सवि,
 की०

कम्मस्स जहण्णट्टिति यधति, तव्वइरिते अजहण्णेण ॥ आउयस्सण ॥

कम्मस्स जहण्णट्टिती यधते के? गोयमा! जेण जीवे असस्सेप्पं अउयापिठ्ठे, संख्यं

श्रेणि का करते हैं—प्रथम भन्तराय वंशी कथाय का चौक और दर्शनाधिक इन सात प्रकृति का उपशम
 चौथ गुणस्थान से आठवे गुणस्थान पर्यन्त भानना फिर नवम अनियुधि बादर गुणस्थान में वरिष्ठ की
 सात प्रकृति से छगाकर इक्कीस प्रकृति छग उपशमादे, वर करते हैं प्रथम एक ७, प्रकृति उपशमादे
 फिर नपुंसक नेद उपशमादे ९ फिर स्त्री नेद उपशमादे फिर १० १८ हास्य राठे अरति भय शोक
 दुःख इन ८ प्रकृति को उपशमादे १९ फिर पुरुष बद उपशमादे, १७-१८ फिर प्रत्याख्यानी, अमत्या
 ख्यानी क्रोध उपशमादे, १९ फिर संखल का क्रोध उपशमादे, २० फिर प्रत्याख्यानी अमत्या
 ख्यानी मान उपशमादे. २२ फिर भंगखलका मान उपशमादे, २३-२४ फिर प्रत्याख्यानी अमत्याख्यानी
 माया उपशमादे २५ फिर संखल की माया उपशमादे, २६ प्रकृति नवम गुणस्थान वर उपशमादे, २७
 २७ फिर प्रत्याख्यानी अप्रवराख्यानी ओम उपशमादे देवादे सस्य सम्पराय गुणस्थान में इन २७ प्रकृति

निरुद्धसे आउते ससे सव्यमहर्षी१, आठवर्षधट्टा२, तीसरे आठवर्षधट्टा३, घट्टा४, घर्म फालसमयासि सव्यजहीष्णिप द्विय, अपञ्चचापज्वालेय निष्वातेइ ? गीयमा । आऊय

का उपसम इन्दे, फिर इसारे गुणस्थान में अ५२३३ का प्राय उपशमावे उब स३२८ मोहनिष कर्म की प्रकृति उपसमावे । इस में उपशम आने गत नबब (गुणस्थानवाला बार स३२३३ की कषाय और पुरुष वेद इन वीप प्रकृति का अपन्य स्थिति का रूप करो, अब सपक अग्नि का स्वरूप कहत हैं—मनवानु ब५१ चौक और तीन मोहनीय व३ गान प्रकृति बोये पर्वत छठे साठवे आठवे गुणस्थान सक सप करे, अनिवृत्ति बादर गुणस्थान में १ विषादि, २ निद्रानिद्रा, ३ मयसायला ४ नरकगति, ५ नरकानुपूर्वो, ६ तिर्यक् गति, ७ दिवंपानुपूर्वो, ८ बर्हिन्त्य, ९ तद्विन्त्य, १० पोरिन्त्रिय, ११ स्वाधर नाम, १२ आवाप नाम, १३ उद्योत नाम, १४ मूर्ख नाम, १५ एकेन्द्रिय गति और १६ साधारणनाम, व३१६ प्रकृति अति वृत्ति बादर गुणस्थान का असंख्यातवा भाग रहे न५ सप करे, स३२३ प्रकृति हुई और फिर आठ रूप अपस्याख्यामी मस्याख्यामी चौक पर्व ३३, फिर ३२ नपुंसक वेद सप कर, ३३ फिर स्त्री वेद सप करे, [यह नपुंसक गुणस्थान के अन्तिम समय में] फिर हास्य, रति, भरति, मय, शोक, दुःखा, इन ६ मो कषाय का सप कर, स३३० हुई, फिर ६० पुरुष वेद का सप करे, ६१ पुरुष वेद के करण विसेप करके स३२३ के कोप को दूसरा गुणस्थान में प्रवेश कर विसेप करके स३२३ के कोप को सर्ववन्धन

कर्ममय जहण ठितीवये तव्यइरिते, अजहण जे उखोसकाछ ठितीपाठएण भते! जाणावर
णिज्जं कम्म कि जेरइआंयधति तिरिस्खजोणिओ घघति तिरिस्खजोणिणी घघति, मणुस्सो

के पान में प्रसेप, फिर करण विशेष कर सुखक क पान को सुखक की माया मे प्रसेपे फिर करण विशेष
कर सुखक की माया का समस्त के छेय में प्रसेप फिर बाकी रहे मुख साय को समावादि करके
तीनों का सय करे, इतना दक्ष गुणस्यान में किये बाद तीन कपायी होवे, बारबे गुणस्यान बाद फिर
सीन कपाय के अन्तिम समय में, निद्रा और प्रचसा का सय करे, सब ४६ छवस्य अवस्था में सय करे.
फिर ५ ज्ञानावलीय ९ दर्शनावलीय और ६ अन्तराय इन १४ प्रकृति का छवस्यताके अन्तिम समयमें
साय ही सय करे, सब ६० हुई फिर तेरे गुणस्यान में देवगति के सारचारिणि—> देवय श्रीर,
२ आहारक श्रीर, ३ ६ दोनों के ब्रह्म, ६ ६ दोनों के सपावन, ७ ८ दोनों के अगोपीग, ९ देवगति,
१० देवानुपूर्वी, यह प्रकृति सय करे, फिर बौद्धिक ठेमस कार्माण यह तीन श्रीर, इन तीनों का
इन तीनों के सपावन, एव ९ १ औदारिक अगोपीग, १ सस्यान १ सघयन, ४ वर्ष, १ मनुष्यानुपूर्वी
परावत नाम, २ उपपात नाम, १ अगुरुषु नाम, २ गति एव १२, १ प्रत्यक नाम, २ पयास नाम, २
इश्यास नाम ६ स्थिर नाम, ५ अस्थिर नाम, ६ दुषनाय ७ अशुभ नाम, ८ मुस्वर नाम, ९ दुस्वर नाम,
१० सुमाय नाम ११ दोर्मोग्य नाम, १२ अनादय नाम, १३ अयशोकीर्ति नाम, १४ निर्माण नाम.

पवति । कैरिसर्पण नरद्वय उक्तास फाल्गुनीय जाणावरणिज कम्म भवति गोयमा ! सण्णी
 कर्ष करे वह याठ याठ सवर्णना करके सर्वोत्कृष्ट आयुर्वेद करे वह आयुर्वेद करे वह वन्य करना उसवक्त
 यों सर्वथा प्रकार भवन्त्य आयुष्य अपर्वाप्त में ऐसा आयुष्य न करे, यहाँ वरम काळ वह एक मार्कर्पना
 प्रमान परमप्रमय काळ प्रदण येहिस प्रकार स्नाक काळ आयुष्य का र्व संभवे वपेति भवन्त्य स्थिति वह
 सप्त स्थिति ज्ञानना अपर्वाप्त श्रीर उत्कृष्ट आयुष्य निम्नाने असम्भवे वपेति आहार वर्पाय, श्रीर वर्पाय
 इन्द्रिय वर्पाय निष्पन्न कर वह श्रीर नाम निष्पन्न करने समर्थ है सर्व से श्रीर परमय का आयुर्वेद करके
 बरे-वह औदारिक वैजय आहारक श्रीर के योग्य वर्तते हुवे आयुष्य करे, परंतु तेजस कामनि ओदार
 कादि का विद्य इन तीनमें जो वर्पा करे वो जपन्त्य स्थिति वह के स्वामी बसते हैं ५ ज्ञानावरणीयकी, ५
 दम्पनावरणीय, ५ सातावेदनीसंपरायिक, ५ यशनाम १ ऊषणोन्न, यों १, अतराय ५ यों १७
 प्रकृति मूल्य सम्पराय गुणस्थान में उपस्थम अग्निमत जपन्त्य स्थिति सा र्वधु कर, और सप्तक श्रीणि
 का बनी करे ता मृत्यु पावे, और जो आहाराकदिक तथा तीर्थकर नाम इन तीन के जपन्त्य स्थिति वह
 आठवे गुणस्थान में कर, और मोहनीय कर्म की २९ प्रकृति है इस में संपन्न का चौक और गुरुवेद
 इन पांच प्रकृति का जपन्त्य स्थिति वन्य नहवे गुणस्थान का पत्नी उपस्थम श्रीणि में चढा हुआ कर और
 सप्तक श्रीणि में चढा हुआ यह पांच मोहनीय की प्रकृति र्वम तो वृद्धे गुणस्थान में चढकर काळ करे
 और एक भुज्जल के साम का भय करे वह वृद्धे गुणस्थान में अंतिम समय क्षय भरे यह २५ हुए अब

॥ चतुर्विंशतितम कर्मस्थितिपदम् ॥

कतिर्ण भते ! कम्मपगहीओ पणत्ताओ ? गोयमा ! अट्टकम्मपगहीआ पणत्ताओ
तज्झा पाप्पावरणिज्ज जाअ अतराय एव णरइयाण जाअ वमानियाण ॥ १ ॥
जिविण भते ! पाणावरणिज्ज कम्म वधमाण कतिकम्मपगहीओ वधति ? गायमा !
सत्थेवि ताअ हाआ सत्थेविह वधएवा अट्टविहवधएवा छन्निह वधएवा ॥ २ ॥
परइएण भत्त ! पाप्पावरणिज्ज कम्म वधमाण कतिकम्मपगहीआ उचति ? गोयमा !

अब चौबीसवें पद में कर्मों की स्थिति कहते हैं अथा भगवन् ! कितनी कर्म प्रकृति कहाँ है ? अथो
गोतम ! कर्म की प्रकृति आठ कही है सन के नाप—? ज्ञानावरणीय कर्म पाश्चत् अतराय कर्म इस
प्रकार आठों रूप पाश्चत् वैमानिक पथन्त पाते हैं ॥ १ ॥ अब एक नीव आश्रित्य प्रश्न अथो
भगवन् ! जीव ज्ञानावरणीय कर्म का वध करता हुआ कितनी कथ प्रकृति का वध करता है ! अथो
गोतम ! जब ही आयुष्य कर्म छोड़ साधों कर्म की प्रकृति का वध निरंतर करता है आयुष्य कर्म
बाधते वक्त आठ कर्म का वध करते हैं कितने आयुष्य और पादनीय कर्म छोड़कर छ कर्म का भी
वध करते हैं, दसवें गुणस्यानबाधे, कितन एक वेदनीय कर्म का वध करते हैं नीतराणी ॥ २ ॥ अब
चौबीस दृढक आश्रित्य कहते हैं अथा भगवन् ! नेरीय ज्ञानावरणीय कर्म १। वध करत हुवे कितनी

सखविहबधएवा अट्टविह बधएवा एव जाव धेमाणिए, जधर मणसे जहा जीवे ॥ १ ॥
 जीवाण मते ! नाणायरणिज्ज कम्म बधमाणा कति कम्मप्पगर्हीओ बधति ? गोयमा !
 सन्नेयित्तव होज्जा सखविहबधगाय अट्टविह बधगाय, २ अहवा सत्तविह बधगाय
 अट्टविह बधगेय ३ अहवा सत्तविहबधगाय छन्निह बधगेय ४ अहवा सत्तविह बधगाय,
 छन्निह बधगाय ॥ णेरइयाप्प मते ! नाणावरणिज्ज कम्म बधमाणा कतिकम्मप्पगर्हीओ
 बधति ? गोयमा ! सन्नेयि ताव होज्जा, सत्तविहबधगाय अहवा सत्तविह बधगाय

कर्म प्रकृति का वष करते हैं ! अहा गौतम ! आयुष्य नहीं बंध दस सात कर्म प्रकृति का बंध करते हैं,
 आयुष्य बंधे तब आठ कर्म प्रकृति का वष करते हैं ऐस ही यावत् धैर्यानिष्क पर्यन्त कहना जिस में
 इतना विक्षय मनुष्य का जने समुच्चय जीव का रहा तेसे कहना ॥ १ ॥ अब बहुत अधिक आश्रित कह
 है अहा भगवन्' बहुत जीव ज्ञानावरणीय कम का वष करत हुए कितने कर्म का वष करते हैं? अहो गौतम !
 सबही तेसे इने आयुष्य बिना सात कर्मके बननवाले बहुत, आयुष्य युक्त आठ कर्मके वषने वाल बहुत
 अथवा सात वचनवाले बहुत, आठ भी वचनेवाले एक सात वचन वाल बहुत, छ वचनेवाले बहुत, ४ अथवा
 १०० वषनेवाले बहुत, छ वचनवाले भी बहुत अहो भगवन् ! बहुत नेरीये ज्ञानाने
 वरणीय कर्म का वष करते हुए कितनी कम प्रकृति का वष करते हैं ! अहो गौतम ! सब तेसे ही होव

अट्टविह बंधगेय, अहवा सत्तविह बंधगाय अट्टविह मंगा ॥ पक्ष जात्र
धमिय कुमार ॥ पुढवि काइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! सत्तवि बंधगात्रि अट्टविह
बंधगात्रि एव जात्र वणस्सइकाइया ॥ त्रिगलिधियाण पच्चियतिस्सिख जोगियाण
तियमगो, सत्तवि तावहुजा सत्तविह बंधगाय अहवा सत्तविह बंधगाय अट्टविह
बंधगेय अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्टविह बंधगाय ॥ मणुस्साण भत्ते ! पाणावर
विजस्स पुच्छ ? गोयमा-! सत्तवि ताव हुजा सत्तविह बंधगाय, ३ अहवा सत्त-

सात कर्म के बंधनेवाले : अथवा सात कर्म बंधनेवाले बहुत और मात कर्म बंधनेवाला एक, १ अथवा
सातभी बंधनेवाले बहुत और आठ भी बंधनेवाले बहुत यह तीन भाग पाते हैं, ऐसे ही तीन मंगे
भक्तकुमार से वापस स्वर्गित कुमार-तक पाते हैं पृथ्वी काया की पृच्छा :- अहो गौतम ! सात
कर्म के बंधनेवाले भी बहुत मिलते हैं और आठ कर्म के बन्धक भी बहुत मिलते हैं यों पांचों
स्वाधर में एक ही मांमा पाठा है विकलेन्द्रिय में और पंचेन्द्रिय तिर्यच में मरक के जैसे
तीनों मंगे सात हैं यथा-१ सात कर्म के बंधनेवाले बहुत, २ अथवा सात के बंधनेवाले बहुत
आठ के बंधनेवाला एक, ३ अथवा : सात के भी बंधनेवाले भी बहुत और आठ क बंधनेवाले भी
बहुत ॥ मय मनुष्य में ९५ योगि पाते हैं ॥ अहो भगवन् ! बहुत मनुष्यों ज्ञानावरणिय - कर्म का बंध

विह यधगाय अटुविह यधगाय २, अहवा सत्तविह यधगाय, अटुविह यधगाय ३,
अहवा सत्तविह यधगाय छविह यधगाय ४, अहवा सत्तविह यधगाय छविह यध
गाय ५ अहवा सत्तविह यधगाय, अटुविह यधगाय, छविह यधगाय, ६ अहवा
सत्तविह यधगाय अटुविह यधगाय छविह यधगाय ७, अहवा सत्तविह यधगाय,
अटुविह यधगाय, छविह यधगाय, ८ अहवा सत्तविह यधगाय, अटुविह यधगाय,
छविह यधगाय एव एते णव भगा, तेसा वाणमताराइया जाय वेमायिया जहा

करते हुआ किने कर्म का बंध करते हैं ! अहो मौतम ! सब भी तेसे ही आयुविना सात कर्म के बंधक
बहुत भिखते हैं २ अथवा सात के बंधनेवाला एक है आठका बंधने वाला एक है, १ अथवा सातके बंधनेवाले
बहुत आठ के बंधनेवाला बहुत २ अथवा सात के बंधनेवाले भी बहुत हैं, छका बंधनेवाला एक है ५ अथवा सात
के बंधनेवाले भी बहुत हैं और छके बंधनेवाले भी बहुत हैं, ६ अथवा सातके बंधने वाले बहुत हैं आठके बंधने
वाला एक है छका बंधन वाला एक है, ७ अथवा सातके बंधनेवाले बहुत हैं, आठका बंधनेवाला एक है, छ के
बंधनेवाले बहुत हैं ८ अथवा सातक बंधनेवाला बहुत आठके बंधनेवाले बहुत छ के बंधनेवाला एक ९ सातके बंधने
वाला बहुत हैं आठके बंधनेवाले भी बहुत हैं, छ के बंधनेवाले भी बहुत हैं यह नम भगि पावे हैं देव रहे जो बाप

गेरझ्या, सत्त्वविहायि चघया मणिआ तहा मानियव्वा ॥ ४ ॥
 एव जाव णाणावरण वधमाणा जहिं भणिआ दसणा वरजवि
 वधमाणा ताहिं जीवादीया एगत्तपोहत्तेहिं मानियव्वा ॥ ५ ॥
 वेयाणिज्ज वधमाणे जीये कलिकम्मपगढी वघसि ? गोयमा !
 सत्त्वविह वधएवा अट्टविह वधएवा छत्विह वधएवा, षण्णविह
 वधएवा ॥ एव मणूसेवि सेसा नारगादिया सत्त्वविह वधगा
 अट्टविह वधगा, जाव वेमायिण ॥ जीवाण भते !

अन्तर ज्योतिषी वैमानिक इन का जैसा नेगीये का कहा जैसा कहना ॥ ४ ॥ यों
 मिय प्रकार ज्ञानस्वरणीय कर्म वध के योगे करे तेसे ही दर्शनावर्णीय कर्म वध
 के भी एक जीव की अपेक्षा भी कहना और बहुत जीव की आश्रय भी कहना
 ॥ ५ ॥ अब वेदनीय कर्म के करते हैं—अहो यगबन् ! जीव वेदनीय कर्म का
 वध करता हुआ कितनी कर्म प्रकृति का वध करता है ! अहो मौतप ! सात कर्मका
 वध का भी वध करता है, छ का भी वध करता है और एक का भी वध करता
 है वह जैसे मनुष्य जीव का कहा तेसे मनुष्य का भी कहना छप भरकादि जीव के सात का, कर्म
 और आठ कर्म का वध करना यावत् वैमानिक पण्डित बहुत जीव आश्रय—अहो यगबन् ! बहुत

मात के वधक पण्डित

मात	मात
१	१
२	२
३	३
४	४
५	५
६	६
७	७
८	८
९	९

यह मनुष्य कर मात

भी वध करता है
 वह जैसे मनुष्य जीव का कहा तेसे मनुष्य का भी कहना छप भरकादि जीव के सात का, कर्म
 और आठ कर्म का वध करना यावत् वैमानिक पण्डित बहुत जीव आश्रय—अहो यगबन् ! बहुत

वयानिज्जं कम्मं यधमाणां कतिकम्मं पगढीओ यधइ ? गायमा ! सन्नेवि ताव होज्ज। सत्तयिह
यधगाय अटुविह यधगाय एगविह यधगाय छन्विह यधमाय, अहवा सत्तविह यधगाय
अटुविह यधगाय, एगविह यधगाय, छन्विह यधपुय, अहवा सत्तविह यधगाय,
अटुविह यधगाय एगविह यधगाय छन्विह यधगाय ॥ अत्तसेसा नरगादिया जाव
धमानिया जाई णाणवरण यधमाणा यधति ताहि माणियन्वा णवर
मणुत्साण भत्ते ! वेदणिज्जं कम्म यधमाणा कतिकम्मपगढीओ यधति ?
गायमा ! सन्नेयिताव होज्ज ३ सत्तविह यधगाय एगविह यधगाय २
अहवा सत्तविह यधगाय एगविह यधगाय अटुविह यधगेय, ३ अहवा सत्तविह

जीवों वेदनीय कर्म का बीज करत हुए कितनी कर्म प्रकृति का बंध करते हैं ? अशो गौतम ! सत्र वैसे ही १ सात कर्म क बंधत बहुत, आठ कर्म क बंधक बहुत, एक कर्म क बंधक बहुत २ अथवा सात के बंधक बहुत आठ के बंधक बहुत एक के बंधक भी बहुत, छ का बंधक एक, १ अथवा सात के बंधक बहुत, आठ क बहुत, एक के बंधक बहुत, छ के बंधक बहुत, अपर श्रेय नरक जैसे यावत् वैमानिक पर्यन्त ऐसे ज्ञानावरणीय के बंधक का कहा वैसा कहना जिस में इतना विक्षेप मनुष्य, वेदनीय कर्म का बंध करता हुआ—” मत्र सात के बंध करनेवाले बहुत, एक का बंध करनेवाले भी बहुत, २ अथवा सात के बंध

वधगाय एगविह वधगाय, अट्टविह वधगाय ४ अहवा सत्तविह वधगाय, एगविह
 वधगाय, छन्विह वधगाय ५ अहवा सत्तविह वधगाय एगविह वधगाय छन्विह
 वधगाय, ६ अहवा सत्तविह वधगाय, एगविह वधगाय, अट्टविह वधगाय छन्विह
 वधगाय ७ अहवा सत्तविह वधगाय, एगविह वधगाय अट्टविह वधगाय छन्विह
 वधगाय ८ अहवा सत्तविह वधगाय एगविह वधगाय अट्टविह वधगाय छन्विह
 वधगाय, ९ अहवा सत्तविह वधगाय, एगविह वधगाय, अट्टविह वधगाय छन्विह
 वधगाय एए नय संग माणियन्वा ॥ १ ॥ श्रीहोजिज्ज कम्म वधमाण जीवि कति
 पुच्छा ? गोयमा । जीविगियिक्कं जीविगियिया सत्तविहवधगायि, अट्टवि-

करेवाल बहुत, एक क बप करनेवाले भी बहुत, आठ का बप करनेवाला एक, १ अथवा सात क बपक
 बहुत, एक के बपक बहुत, आठ क बपक भी बहुत, अथवा सात के बपक बहुत, एक के बपक बहुत,
 छ का बपक एक ६ अथवा सात क बपक बहुत, एक का बपक बहुत, छ के बपक बहुत, १ अथवा
 सात के बपक बहुत, एक क बपक बहुत, आठ क बपक एक छ का बपक एक, ७ अथवा सात क
 बपक बहुत, एक के बपक बहुत, आठ का बपक एक छ क बपक बहुत, ८ अथवा सात क बपक बहुत
 एक के बपक बहुत, आठ के बपक बहुत, छ का बपक एक, ९ अथवा सात क बपक बहुत, एक क
 बपक बहुत, आठ के बपक भी बहुत और छ के भी बपक बहुत यों न बयान करना ॥ १ ॥ अह पग-

हर्म्यधगाधि ॥, जोवेण भते! आउय कस्म बधमाने पुच्छा ? गोयमा ! न्यिमाअट्ठ, एवं
नेरइए जाव वमाणिप एव पुहत्तणवि ॥ गाम गोय अतराइय, वधमाने जीवे कति
कम्म ? गोयमा ! जाहिं गाणावरणिज्ज यधमाने बधति ताहिं भाणियव्वो ॥ एवं,
नेरइयावि जाव वेमाणिप ॥ एव पुहत्तेणवि भाणियव्व ॥ पणवणा भगवइए
चोत्तीसइम कस्मयधपय सम्मत्त ॥ २४ ॥

धन ! मोहनीय कर्म का बंध करता हुआ जीव कितने कम का बंध करता है ! अहो गौतम !- एकेश्वरिय
 भीव का छहकर बाकी में तीन मांग शून्य है और एकेश्वरिय में सात के बंधक भी बहुत है। आठ के
 बंधक भी बहुत है अहो मगधन् ! जीव आपुण्य कम का बंध करता हुआ कितने कम प्रकृति का बंध
 करता है ! अहो गौतम ! निश्चय स, आठों ही कर्म का बंध करता है यों नरीय से यावत् वैमानिक
 पर्यन्त चौबीस ही दंडक का कहना एक जीव आश्रय भी कहना और बहुत जीव आश्रय भी कहना
 अहो मगधन् ! नाम, गोत्र व अन्तराय कमका बंध करत द्वे जीव कितने कर्मका बंध करते हैं ! अहो गौतम !
 जैसा मानावरणीय कम का कहना, यों नरीय से यावत्, वैमानिक पर्यन्त चौबीस दंडक का
 कहना ऐसे ही एक जीव आश्रय बहुत जीव आश्रय कहना इति पञ्चवणा भगवती का
 चौबीसवा पत्र समाप्त हुआ ॥ २४ ॥

॥ पंचविंशतितम कर्मवेदनापदम् ॥

कतिण भत ! कम्मप्पगढीआ यण्णत्ताओ ? गोयमा ! अट्ट कम्मप्पगढीओ पण्णत्ताओ
 सज्झा णाणावरणिजं जाव अतराइय ॥ एवं णेरइयाणं आव वेमाणियाण ॥
 जीवेणं भत ! णाणावरणिज कम्म बधमाणे कति कम्मप्पगढीओ वदेति ? गोयमा !
 नियमा अट्ट कम्मप्पगढीआ वदेति ॥ एव णरइए आव वेमाणिए ॥ एव पुहुत्तेणदि ॥
 एव वेदणिज वजं जाव अतराइय ॥ जीवेण भते ! वेवणिज कम्म बधमाणे कतिकम्म
 प्पगढीआ वदेति ? गोयमा ! सत्तविह वेयएवा अट्टविह वेयएवा, चठन्विह वजएवा
 बहो म्मापन् ! कर्म प्रकृति कितनी कही है ? अहो गौतम ! आठ कम प्रकृति कही है तथया-
 दान्तरणीय मायव् अन्तराय यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त चौबीस ही दंढक कटना अहो मम
 धन् ! नीच दान्तरणीय कर्म का बंध करता हुआ कितने कर्म की प्रकृति का बंधता है ? अहो गौतम !
 अय से आठों कर्म की प्रकृति बंधता है यों नेरीये से यावत् वैमानिक पर्यन्त कटना ऐसे ही एक
 नीच आश्रिय तथा बहुत नीच आश्रिय करना यों बरनीय छोट मन्तराय कम तक कटना, अहो मम
 धन् ! नीच बरनीय कर्म बंधता हुआ कितनी कर्म प्रकृति को बंधता है ? अहो गौतम ! आठ कर्म भी
 बंधता है उपप्राप्त पोई आठ अकर्म भी बंधता है मिदपास रही स मूल्य सम्भराय गुणस्थान तक, बार

एवं मणूसवि ॥ ससा णेरइयाइए, एगसपिनि पुहत्तंषावि नियमा अटुकम्मप्यगर्हाओ
वेदेति जाय वेमाणिया ॥ जीयाण भत ! वेदणिजकर्म बधमाणा कातिकम्मप्यगर्हाओ
वेयति ? गायमा ! सठववि ताव होजा अटुविहवेदगाय बठप्पिह वेदगाय, अहवा
अटुविहवेदगाय सपविहवेदगाय, अहवा अटुविह वेदगाय बठप्पिह वेदगाय, सचविह
वेदगाय, ॥ एव मणुस्सावि भाणियइवा ॥ इति पणवणा भगवईए पणवीत्तम
कम्मंत्रेय परं सम्मत्त ॥ २५ ॥

कर्म भी वेदवा है केवली की अपेक्षा, ऐसे ही मनुष्य का भी कहना जब नरक से यावत् मनुष्य छोड़
वैमानिक तक एक बचन मात्रिय बहुत बचन मात्रिय नियमा आठों कर्म का परफल है भद्रा भगवन् !
बहुत सीवों वेदनीय कर्म बचत हुवे कितनी कम प्रकृति वेदते हैं? भद्रा गौतम! मन ऐसे ही कहना आठ के
बद्धक बहुत चार के बद्धक भी बहुत, अथवा आठ के बद्धक भी बहुत सात का बद्धक
एक अथवा आठ के भी बहुत, चार क बहुत, सात क भी बहुत ऐसे ही मनुष्य का भी कहना इति
पणवणा भगवती का कथ बदना नामक पञ्चमोऽध्यायः पद समाप्त ॥ २५ ॥

❖ पडविंशतितम कर्म प्रकृति पदम् ❖

कतिण भते! कस्मप्यगढीओ पण्णाओ? गोयमा! अट्ट कस्मप्यगढीओ पण्णाओ तजहा
 णाणावगणिज्ज आत्र अतराइय एव नरइया आत्र वेमाणियाण ॥ १ ॥ जीवेण भते !
 णाणावगणिज्ज कम्म वेदमाणे कति कस्मप्यगढीओ वधति ? गायमा ! सत्तविह
 वधएवा, अट्टविह वधएवा छविह वधएवा एगविह वधएवा ॥ २ ॥ गेरइएण
 भुत ' णाणावसणिज्ज कम्म वेदमाणे कसिकम्म वधति ? गोयमा ! सत्तविह वधएवा

अहो, पणवन् ! कितनी कर्म की प्रकृति कही है ! अहो गौतम ! आठ कर्मों की प्रकृति कही है
 वधएवा—भूतवराणिय यावत् अंतराय यो नेरीय स यावत् वैमानिक पर्यन्त बोधीस ही दंडक में आठ ही
 कर्म प्रकृति पाती है ॥ १ ॥ अहो पणवन् भीव ज्ञानावराणिय कर्म कों वदता कित्त्त कर्म की प्रकृति कों
 बंधता है ! अहो गौतम ! अयुष्य बिना साठ कर्म प्रकृति का भी बंध करता है, अयुष्य सहित आठ कर्म
 प्रकृति का भी बंध करता है अयुष्य और मोहनीय बिना दशमे गुनस्थान बाधा छ प्रकृति का भी बंध
 करता है और केवली की आपसा एक वेदनीय का बंध करता है ॥२॥ अहो पणवन् नेरीया ज्ञानावराणिय
 कर्म वेदता हुआ कित्तिनी कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहा गौतम ! साठ कर्म का भी बंध करता है

अट्टविह बधगाय, एव जाव वेमाणिया ॥ मणुरसे जेहा जीवे ॥ ३॥ जीवाण मते ॥
 पाणावरणिजं कम्म वेदमाण। कतिकम्म पगढीओ बंधति ? गोयमा ! सवेवेवि ताव
 होआ, सत्तविह बधगाय अट्टविह बधगाय, २ अहवा सत्तविह बधगाय अट्टविह बधगाय
 छोविह बंधगाय, ३ अहवा सत्तविह बंधगाय, अट्टविह बधगाय, छोविह बधगाय ४
 अहवा सत्तविह बधगाय, अट्टविह बधगाय, एगविह बधगाय, ५ अहवा सत्तविह
 बधगाय, अट्टविह बधगाय एगविह बधगाय ६ अहवा सत्तविह बधगाय अट्टविह बधगाय,

और आठ कर्म का भी बंध करता है यों नेरीवे स बाण् बेमनिकं पर्यन्त कहना इस में मनुष्य का जैस
 समुच्चय जीव का कदा चेसा कहना ॥ ३ ॥ अब बहुत जीव आश्रय कहते हैं अहो ममवन् ! बहुत जीव
 जानावर के बंधन का बन्धन हूँ कितनी कर्म प्रकृति का बंध करता है ? अहो गौतम ! सदैव तेसे ही जानना
 १ सात कर्म क बंध भी बहुत, आठ कर्म के बंध भी बहुत, २ अगवा सात कर्म क बंध भी बहुत,
 आठ कर्म क बंध भी बहुत, छ कर्म का बन्धक एक, ३ अथवा सात कर्म क बंध भी बहुत, छ क
 कर्म के बंध भी बहुत, छ कर्म क बंध भी बहुत ४ अथवा सात कर्म के बंध भी
 बहुत, आठ कर्म के बंध भी बहुत, एक का बंधक एक, ५ अथवा सात कर्म के बंध भी
 बंध भी बहुत, आठ कर्म के बंध भी भी बहुत, एक कर्म के बंध भी बहुत

छठिविह बंधगेय, एगविह बंधगेय ७ अहवा सतविह बधगाय अटुविह बधगाय, छठिविह
बधगेय, एगविह बधगाय ८ अहवा सतविह बधगाय, अटुविह बधगाय छठिविह
बधगाय, एगविह बधगाय, ९ अहवा सतविह बधगाय अटुविह बधगाय छठिविह
बधगाय, एगविह बधगेर एव एत एतमगा, अयसेसाण एगिधिय मणुस्स वज्जाण
तियमगा जाव वमाणियाण ॥ एगिधियाण सत्तविह बधगाय अटुविह बधगाय ॥
मणुस्साण पुब्बा ? गोयमा ! भवति ताव हेज्जा ! सत्तविह बधगा, २ अहवा

१ अथवा सात कर्म के बचक भी बहुत, आठ कर्म के बचक भी बहुत, छ कर्म का बचक एक, एक कर्म का बचक एक ७ अथवा सात कर्म बचक बहुत, आठ कर्म बचक बहुत, छ का बचक एक, एक कर्म के बचक बहुत, ८ अथवा सात के बचक बहुत, आठ के बचक बहुत, छ का बचक बहुत, एक के बचक एक और ९ अथवा सात क बचक बहुत, आठ १५ बचक बहुत, छ क बचक बहुत, एक के बचक भी बहुत यों यह नव माँग अपर शेष सब के एन्ड्रिये और मनुष्य छोड़कर सवस्यान हीन माँगा यावत् वैमानिक पर्यन्त १८ बँदक मानना एफन्ड्रिय में मात के बचक भी बहुत, आठ के बचक भी बहुत मनुष्य की पृथक् ! नरो गौतम ! सर्व नैरे दी शत्रे साप कर्म क बचक २ अथवा सात के बचक बहुत, आठ का बचक एक ३ अथवा सात के बचक भी बहुत, आठ क बचक भी बहुत, ४ अथवा सात के बचक बहुत,

सत्तविह वधगाय, अट्टविह वधगेय ३ अहवा सत्तविह वधगाय, अट्टविह वधगाय, ४
 अहवा सत्तविह वधगाय छन्विह वधगेय, ५ एवं छन्विह वधएणवि सम दो
 भगा, ७ एगविह वधएणवि सम दो मागा, अहवा सत्तविह वधगाय अट्टविह वधएय
 छन्विह वधएय, चउभगा, ११ अहवा सत्तविह वधगाय, अट्टविह वधएय, एगविह वधएय
 वधएय चउभगो १५ अहवा सत्तविह वधगाय, छन्विह वधएय, एगविह वधएय
 उ का वचक एक, ५ सात का वचक बहुत उ का वचक भी बहुत, या एक वचक के दो भागे ३ सात
 के वचक बहुत, एक का वचक एक, ७ सात क वचक बहुत एक के वचक भी बहुत जो एक के वचक के
 दो भागे ८ सात के वचक बहुत, आठ का वचक एक, उ का वचक एक, ९ सात के वचक बहुत, आठ
 के वचक एक उ का वचक बहुत, १० सात के वचक बहुत, उ का वचक एक, ११ सात के वचक
 बहुत, आठ के वचक बहुत यों तीन के चार भागे कुजे १२ अथवा सात के वचक बहुत आठ
 का वचक एक एक का वचक एक, १३ अथवा सात के बहुत, आठका वचक एक एक के वचक बहुत, १४
 अथवा सात क वचक बहुत आठ के वचक बहुत एक का वचक एक १५ अथवा सात के वचक
 बहुत, आठ क वचक बहुत एक क वचक बहुत, यों चार भागे १६ सात क वचक बहुत उ का एक
 एकका वचक एक १७ सात के बहुत सवा एक, एक क बहुत १८ सात क बहुत उ के बहुत, एक के बहुत

सात के सात क	१	२
१	१	१
२	२	२
सात के पा के	१	२
१	१	१
२	२	२
सात के एक के	१	२
१	१	१
२	२	२

सात के सात के एक के	१	२	३	४	५	६	७
१	१	१	१	१	१	१	१
२	२	२	२	२	२	२	२
३	३	३	३	३	३	३	३
४	४	४	४	४	४	४	४
५	५	५	५	५	५	५	५
६	६	६	६	६	६	६	६
७	७	७	७	७	७	७	७

षट्संयोगी ८ योगी शक्ति है	सात	आठ	छ	एक
२०	१	१	१	१
२१	१	१	१	१
२२	१	१	१	१
२३	१	१	१	१
२४	१	१	१	१
२५	१	१	१	१
२६	१	१	१	१
२७	१	१	१	१
२८	१	१	१	१

सठभगा १९
 महुवा सचविह
 बधगाय, महु
 विह बधएय
 छव्वह वगएय,
 एगविह बधएय
 मगा महु॥ एव
 एते सत्तवास

मगा ॥ छ ॥ १६

एव जहा पाणावरणिज " तहा- वरिसभावरणिज

१२ सात के बहुत छ १०
 तीन संयोगी १२ योगी ८
 एक एक का बंधक १९
 यह माना वरणीय क २७ योगी करे
 के बहुत एक के भी बहुत पर भी धार
 दुजे १० सात के बंधक बहुत आठका बंधक, छका बंधक
 एक इस क आठ योग कराना सब २७ दुजे ॥ ४ ॥ भेसे
 बेसे दिखना एपिण्ड के भी २७ योगी कराना भी

अतराद्रथि ॥ ५ ॥ जीवेण भते ! वेयणिज्ज कर्म वदमाणे कह् कम्मवग्गडाओ
 यथति ? गोयमा ! सत्तविह वधएवा, अट्ठविह वधएवा, एगविह
 वधएवा अवधएवा ॥ एव मणुस्सेवि अवेसेसा णरइयादि सत्तविह वधगाय
 अट्ठविह वधगाय, एव ताव वमाणिआ ॥ जीवाणे भते ! वेदणिज्जं कम्मं

अन्तराय कर्म के भी २२ योग कहना ॥ ५ ॥ भ्रह्मो यगधान' श्रीव वेदनीय कर्म को
 बतवा हुआ कितने कर्म भी प्रकृति का वध करता है ! अहो गौतम ! सात कर्म का भी वध
 करता है, आठ कर्म का भी बध करता है, छ कम का भी बध करता है और एक कर्म का भी
 बध करता है कोई क वध नहीं भी होता है जैसे यह समुद्रय जीव का कहा ऐसा ही मनुष्य का भी
 कहना अगर शप नारकी आदि सात कम का भी बधक बहुत है, आठ कर्म का भी बधक बहुत है यों पाप
 वैमानिक पर्यन्त कहना अहो यगवत् ! बहुत श्रीवों वेदनीय कर्म को वेदत इव किन्ती कर्म प्रकृति का
 बध करते हैं ! अहो गौतम ! सब तेसे ही कहना सात कर्म के बधक भी बहुत है आठ कर्म के
 बधक भी बहुत है एक कर्म के बधक भी बहुत है, १ अथवा सात कर्म ज बधक बहुत हैं, आठ कर्म के
 बधक भी बहुत है एक कर्म के बधक भी बहुत, छ कम का' बधक एक है, २ अथवा सात कम का
 बधक भी बहुत है, आठ कर्म के बधक भी बहुत है, एक कर्म के बधक भी बहुत है छ कम क बधक भी

गाय, पगविह बधगाय छविह बधगाय एव अवधगणवि सम वो भगो
भाणियन्वा अहवा सचविह बधगाय, अटुविह बधगाय, पगविह बधगाय,
छविह बधगेय अयधगाय चठभगो एव एते नवभगो॥ एगिरियाण अमगाय नारागा
दीण तियभगा जाव वेमाणियाण, जवर मणुस्ताण पुच्छा ? गोयमा ! सज्वेवि ताव
होन्वा सचविह बधगाय एगविह बधगाय अहवा सचविह बधगाय, पगविह
यधगाय, छविह बधगेय, अटुविह बधगेय, अवधएय एव एते सचात्रीस भगा

नव भाग होते हैं, एकोन्दिय को भग्न जानना नारकी आदि के तीन भाग समस्त वैमानिक पर्यन्त
मनुष्य की पूछा ! भगो सौदम ! सब ही ऐसे हाव १ साठ कर्म के बचक बहुत, एक कर्म के बचक
भी बहुत, (क्यों कि जपन्य दो क्रोड करछी एक समय में पाते हैं) अस्वा मात कर्म के बचक बहुत,
एक कर्म के बचक बहुत, छ कर्मका बचक एक (दशवे गुणस्थान आश्रिय) आठ कर्म का बचक एक [आयु
बच वर] बचक भी एक (चउदव गुणस्थानबर्वा) यों इस के भी सचाइस भागे कहना, जिस प्रकार
क्रिया पद में प्राणातिपात विरमण प्रव के करे यों जिस प्रकार वेदनीय कर्म के भाग कह उस ही
प्रकार आयुष्य कर्म मोहनीय कर्म वेदता हुआ जीव साठ कर्म नीचे आठ कर्म बधे छ कर्म का नप भी

भाषियन्वा ॥ अहा किरियासु पाणातिपातधिरयस्स ॥ एवं जहा वेदणिज्ज तहा आउय
नाम गोयच भाणियन्व ॥ मोहणिज्ज वेदेमाणे जहा वध ॥ पाणावरणिज्ज तहा
भाणियन्व ॥ पणवणा भाग्यर्द्धं छुत्वासहम कम्मवेदपय सम्मत्त ॥ २६ ॥

कर जैसा जानारनिपका करा तेसा ही कइना ऐवे ही मनुष्य का भी कइना इति पञ्चवणा भगवती का
कम बदना नामक छवरीसुवा पद ममाभामू ॥ २६ ॥



॥ सप्तविंशतितम क्रिया पदम् ॥

कतिण मते! कम्म प्यगढीओ वण्णत्ताआ? गोयमा! अट्ट कम्म प्यगढीओ पण्णत्ताओ
तज्झा णाणावरणिज्ज जात्र अत्तराइय एव णेरइयाण जात्र वेमाणियाण ॥ जीवेण
मते ! णाणावरणिज्ज कम्म वेदेमाणे कति कम्म प्यगढीओ वेदति ? गोयमा !
सत्तविह्वेए अट्टविह्वदएवा, एव मणुस्सेणपि अत्तेससा, एगत्तेणपि पुहत्तेणपि णियमा
अट्टकम्म प्यगढीओ वेदति जात्र वेमाणिया ॥ जीवाण भत ! णाणावरणिज्ज कम्म
वेदेमाण कति कम्मप्यगढीओ वेदति? गायमा! सन्नेवि ताव हाज्जा अट्टविह्व वेदगाय अहवा

५५५ मगवत्त ! कर्मों की प्रकृति कितनी कड़ी है ! अहो गौतम ! आठ कर्मों की प्रकृति कड़ी है
तथा—ज्ञानावरणीय यावत् अन्तराय यो नरीये से नाव वैमानिक पयन्त कहना अहो भगवन् !
जीव ज्ञानावरणीय कर्म ब्रह्मा इवा कितन कर्म की प्रकृति को वेदता है ? अहा गौतम ! उपशान्त मोह
सीजनार की अपक्षा मात कर्म वेदे, और मूल्य सम्भारायादि की अपक्षा आठ कर्म वेद ऐसे ही मनुष्य
का भी कहना अपर शप एक जीव आश्रय बहुत जीव आश्रय निशय से आठ हो कर्म की प्रकृतिका
वेदने है यावत् वैमानिक पर्य उ बहुत जीव ज्ञानावरणीय कर्म का वेदत हुवे कितनी कर्म प्रकृति को
वेदत है ! अहा गौतम ! सब वेदते ही कहना आठ कर्म का वेदक है, २ अपना आठ कर्म के वेदक
बहुत, मात कर्म का वेदक एक, ३ अपना आठ कर्म के वेदक भी बहुत, सात कर्म के वेदक भी, बहुत

घटसयागी ८ यणि का यम

साव	आठ	छ	एक
२	२	२	१
३	२	२	२
४	२	३	२
५	२	३	२
६	२	२	२
७	२	३	३
८	३	३	३

इति पणवप्पा भगवतीए सत्तावीसहम

एमे ही मनुष्य का भी कहना दर्शनापरणीय कर्म का और अन्तराय कर्म का भी ऐसे ही कहना वेदनाय आपुण्य नाम, गोत्र, कर्म वेदता हुआ कितनी प्रकृति वेदता है ? अहो गौतम ! ऐसा बंधक वेदक का कहा हैसा ही कहना अर्थात् नरकादि २३ देवक आठों ही कर्म बंधते हैं बहुबचन आश्रिय समुच्चय जीव आश्रिय मनुष्य आश्रिय हीन भांग पावे 'महो प्रगमन्' बीच मोहनीय कर्म वेदना कितनी कर्म प्रकृति वेदता है ! अहो गौतम ! मियमा से आठों ही कर्मकी प्रकृति वेदता है एत ही नेरीये से यावत् वैमानिक पयन्त कहना और ऐसे ही बहुत जीव आश्रिय कहना श्रुति पत्रयणा का वेदपद संपूर्ण

अट्टविह वेदगाय सत्तिविहवेदगेय, ईहवा अट्टात्रिह वेदगाय सत्तिविह वेदगाय एव मणुस्साणवि ॥ दरिसणा वरणिज्ज कम्म अतराइयच एव चैव भाणियन्व वेदणिज्ज आउय णाम गोयाइ वेदमाणे कति कम्मप्पगढीओ वेदेति गोयमा ! जहा बचगा वेदगस्स वेदणिज्ज तहा भाणियन्व ॥ जीवेण भत्ते ! मोहणिज्ज कम्म वेदमाणे कति कम्मप्पगढीओ वेदेति ? गोयमा ! णियमा अट्ट कम्मप्पगढीओ वेदति ॥ एव णेरइए जाव वेमाणिए ॥ एव पुहुत्तेणेवि

वेदपय सम्भत्त ॥ २७ ॥

अचिच्छाहराधि, मीमाद्वाराधि ॥ २ ॥ नरइयाण भते ! आहारद्वी ? हत्ता गोयमा !
 जाहारद्वी ॥ नरइयाण भत ! कयति काटस्स आहारद्वे समुप्पज्जति ? गोयमा !
 नरइयाण दुग्धिह आहार पण्णचे तज्जहा आमागणिन्वाचिण्य, अणाभोगावचिण्य
 तत्थण जमे अणाभोगणिन्वाचिण सण अणुसमय आविरहिण्ण आहारद्वे समुप्पज्जति
 तत्थण जस आमं गणिन्वाचिण्ण सेण अससखज समइण अतासुहुचिण्ण आहारद्वे समुप्पज्जति
 ॥ ३ ॥ नरइयाण भते ! किं आहार साहारति ? गोयमा ! इत्थतो अणतपदसियाइ,

शरीर पास नइ इत्थक [पांच स्वाधर, तीन विक्काद्वय, तिर्यक् पचनिय और मनुष्य) सचित्त अधिच
 और मित्र तीनों प्रकार का आहार करते हैं ॥ २ ॥ दूसरा द्वार—अहो भगवन् ' नेरीये आहार के अधी
 (इच्छक) हैं क्या ? हाँ गौतम ! आहार के अधी है अहो भगवन् ' नरक के जीव कौ कितने का
 छात्र से आहार की इच्छा होती है ! अहो गौतम ! नेरीय का आहार दो प्रकार का कहा है तथया—
 आभोगनिवृत्ती तपयोग युक्त आहार कर, और २ अनाभोग निवृत्ति उपयोग बिना आहार करे जैसे
 शायक नीय का तप के पुद्गलों का आहार होते इस में तो अनाभोग निवृत्ती आहार की वो मतिस्वय निरतर
 इच्छा होती है, और तस में सो आभोग निवृत्ती है वह अमर्याद समय के अतर्मुहूर्त से
 आहार की इच्छा दानी है ॥ ३ ॥ तीसरा द्वार—अहो भगवन् नेरीये किं प्रहार का आहार करते हैं ?

स्वेत्ताओ असस्वेज्य पदसोनाडाई, कालितो अण्णतर कालीठितियाई, भावतो वण्णमताई,
 गधमताई रसमताई फासमताई, जाइ भायसा वण्णमताई आहारैति ताई किं एगवण्णाई
 आहारैति जाव किं पचयण्णाई आहारैति ? गायसा ! ठाणमगण पदुच्च एगवण्णाइपि
 आहारैति पचयण्णाइपि आहारैति ॥ विहाणमग पदुच्च कालवण्णाइवि आहारैति
 जाव सुक्खिवण्णाइ आहारैति ॥ जाइ वण्णओ कालवण्णाइ आहारैति ताई किं एगगुण
 कालाई आहारैति जाव दसगुण कालाई आहारैति, सस्वज्जगुण असस्वेज्जगुण अणत

अओ गौतम ! द्रव्य से ता अन्त मद्रश्मात्मक अनत मद्रशी स्वरूप के द्रव्य का ग्रहण कर, संश्रमे अस
 स्यात आकाश मद्रश्म का अवगाह कर रहे त्वय का आहार ग्रहण कह, कालमे अन्तरगतिन समय कालकी
 भित्तिकास पदुत्ताका आहारा ग्रहण करे भाव से वर्णशाले र्गधवाल रमणाव स्वर्णशाले पुद्गला का
 आहार कर ॥ यदि भाव ॥ वर्णमेत पुद्गला का आहार ग्रहण कर ता वधा एह वर्ण के पुद्गला का
 आहार ग्रहण कर कि यावत् पांचा वर्ण क पुद्गलों का आहार ग्रहण कर ? अहा गौतम ! स्थान साधन्य
 मार्ग प्रत्ययी एक वण क पुद्गलों का भी आहार करे [यह वचन व्यवहारगत की अपसा है अनत
 मद्रशी स्वरूप मे निमग्न स वण पांच ही पात है परतु व्यवहार मे त्रिम रगणय यह दसासा है उसी
 रगणय उस गिता है जैसे तोता हरी इत्यादि] यावत् पांचो वण के पुद्गलों का भी आहार कर

गुण कालाह् आहारैति ? गायमा ! एगगुण कालाह्नि आहारैति जात्र अणतगुण कालाह्नि आहारैति, एव जात्र सुक्किहाह् एव गधतोवि रसतोवि जाह् भावतो फासमताह् ताह् णो एगफासाह् आहारैति णो दुफासाह् आहारैति णो तिफासाह् आहारैति चउफसाह्पि आहारैति जात्र अट्टफासाह्पि आहारैति, त्रिहाणमगगणपदुह्, कक्खवाह्पि आहारैति जात्र लुक्खवाह्पि आहारैति जाह् फामतो कक्खवाह् आहारैति ताह् किं एगगुणक्खवाह् आहारैति जात्र अणतगुण कक्खवाह् आहारैति ? गोयमा !

विमान मार्ग (अक्षग २ वग) की अपेक्षा कृप्य वज क पुद्गलों का भी आहार करे यावत् पुद्गवर्ण के पुद्गलों का भी आहार कर ॥ यदि वज से काल वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे तो क्या एक गुन स्वले वज पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि यावत् दश गुण काल वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे, सम्प्रगत गुन काले वर्ण के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि असम्प्रगत गुन काल वज के पुद्गलों का आहार ग्रहण करे कि अनन्त गुन काले वज क पुद्गलों का आहार ग्रहण करे ! यहो मोक्षम ! एक गुन काले पुद्गलों का भी आहार करे यावत् अनन्त गुन काले पुद्गलों का भी आहार ग्रहण करे ॥ नैसा यह काल वर्ण का कथा ऐसे ही पचिों वणों का यावत् गुल पर्यन्त करना भैस ही पचिों वणों के आहारका कयन किया ऐसे ही दो गष के पुद्गलों का पांच रस के

परिणामेति, अभिक्खणे ऊससति, अभिक्खणं नीससति, आहृष आहृष
 परिणामेति आहृष ऊससति आहृष नीससति ? हुंता गोयमा ! जेरइयां सवइतो
 आहारैति एवधव जाय आहृष नीससति ॥ जेरइयाणं मंते ! जे पोगगले आहारचाए
 गिण्हति तेण्तसि पोगगलाण सयालसि कसिभाग आहारैति कइभाग आसायति ? गोयमा !
 असखेज्वति भाग आहारैति अणतभाग आस्साति ॥ जेरइयाण मत ! ज पागगले अहारचाए
 गिण्हति ते किं सन्वे आहारैति ज्योसन्वे आहारैति ? गोयमा ! तेसन्वे अपरिसेसिए आहारैति ॥

ग्रहण कर चौवा द्वार—अहो भगवन् ! नेरीय सर्व प्रकार आत्मप्रदेश कर आहार करे सर्व आत्म
 प्रदय कर परिणम सर्व उन्वास निःश्वासपने ग्रहण करे, वारम्बार आहार, वारम्बार परिणमे वारम्बार
 उन्वास निःश्वास प्रहण करे कदाचित् आहार करे, कदाचित् परिणमे, कदाचित् उन्वास निःश्वास लेवे ?
 अहो गौतम ! नेरीय सर्व प्रकार आहार करे ऐसे ही वायव कदाचित् उन्वाचनि श्वास लेवे पचिवा द्वार
 अहो भगवन् ! नरीये निन पुत्रल्लो को आहारपने ग्रहण करे व उन पुत्रल्लो का आगमिक काल में किने
 माग का आहार कर कितने माग का अस्वाद न करे ! अहो गौतम ! असलयातव भाग के पुत्रल्ल का
 आहार प्रहण करे और अनत वे भाग पुत्रल्लो का अस्वाद न करे (शरीर क धातु आदिक्य परिणमे) वे
 आहार किये और जिवने रसेन्द्रिय को सर्वो चवने अस्वादन किये अहो भगवन् ! नारकीने जो पुत्रल्ल

जेरइमाण भते।जे योगले आहारेचाए गिण्दुति तेणेंतेसि योगला कीसत्ताए मुजो २ पारण मति? गोयमा। सोइदियचाए जाय फासिदियचाए, अणिट्टचाए अकसचाए अपियसाण अमण्णचाए अमणामचाए अणिच्छियचाए अभिजियचाए असुहचाए अहचाए जोडडू चाए दुक्खसाए, जोसुहचाएतसि मुजो २ परिणमसि ॥ ३ ॥ असुर कुमारणवि भाषियव्व, हुता गोयमा ! आहारट्टी, एव जहा जेरइयाण तहा असुरकुमारणवि भाषियव्व, जाव तेसि मुजो २ परिणमसि तरयण जे से आमोगणिज्वत्तिए सेण जहण्णेण

आहारपने ग्रहण किये उन मुष का आहार करता है किवा सब का आहार नहीं करता है? अहो गौतम ! वे सब निर्दिष्ट आहारपने ग्रहण करे, वचे नहीं अहो यगवन् ! नेरीये जिन पुद्गलों को आहार पने ग्रहण करे वे किस प्रकार वारम्बार परिणमें ! अहो गौतम ! आग्नेन्द्रियने यावत् स्वर्गेन्द्रियपने अनिट्टकारी अकसकारी अभियकारी अयोध अमणाम इण्ठने योग्य नहीं अभिजापा रक्षितपने असुसपने नीवा रापावपने परंतु कंच स्वभावपने नहीं, दुखःपने परंतु सुखपने नहीं वे पुद्गलों वारम्बार परिणये यहनरक का दहक पुण्य दुष्टा ॥ ३ ॥ अहो यगवन् ! असुरकुमार देवता आहार के अर्थी हैं क्या ! हां गौतम ! आहार के अर्थी हैं यों जिस प्रकार नेरीये का वर्णन किया उसही प्रकार असुरकुमार देवता का भी करना यावत् उन के वारम्बार पुद्गलों परिणमत हैं, उस में ओ अनामोग निवृत्ती हैं वे अपन्य हो चौथ

धृतथमचंसं, उक्तोऽनेन सातिरिगस्स वासंसहस्सस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति उत्सण्ण
कारण पटुच्च वण्णता हल्लिच्चसुक्खिक्काइ, गघतो सुब्धिगघाइ, रसतो अचिलमहुराइ,
फासतो मऊअलहुयानिदुण्हाति. तेसि पोरणे वण्णगुणे जाव फासिदियत्ताए जाव
मजामत्ताए इच्छियत्ताए भिक्खियत्ताए उट्ठत्ताए जो अहसाए सुहत्ताते जो दुहत्ताते,
एतेसि भुज्जो २ परिणमति, सेस जहा ळेरइयाण एव जाव यणियकुमाराण, जवर
आमोगणिविचिष्टि ए उक्तोऽनेन विवत्स पुहुत्तस्स आहारट्ठे समुप्पज्जति ॥ ४ ॥ पुढवि-

मक्त (एक दिनान्तर) उक्तए कुछ अधिक एक हजार वर्षान्तर (एसा नियम है कि जिस देवताका भित्तने
सामरोपम का आयुव्य होता है तनको उसन ही हजार वर्ष में आहार की इच्छा होती है, असुखमार
देव का एक सामरोपम से कुछ अधिक आयुव्य है इसलिये ऐसा कहा है) बाद आहार की इच्छा
वृत्त्यन्त होती है, कज्जकारण मत्स्य वर्ण से पीत वर्ण के और शुक वर्ण के गप से सुभिम्ब क रस से सह
और मधुर रस के, स्पर्श से मृदु छपु लज्ज और क्षिग्य (चिक्कने) स्पर्श गप पुद्गलों ओवेन्द्रियपने यावत्
स्पर्शेन्द्रियपने शुष्कारी पावत् प्रणापते हैं, इच्छने योग्य अपिछापने योग्य केच प्रकार के परतु नीच जात के
नहीं सुख रूप परतु दुःख रूप नहीं हैं पुद्गलों वारम्बार परिणपते हैं. नेच कयन जैसा नेरीयों का कहा
जैसा ही कहना यों पावत् स्तानित कुमार पर्यंत कहना परंतु इतना विशेष-आमोग निरुति स्रष्टु प्रत्यस्त

रसाई, कसाय अखिलमहाराष्ट्र, फासतो फक्खड फास-गुरुय लहुय सीत ठासिण
 णिद्ध-तुक्खाति तसि पाराणा वण्णगुणा सस जहा णेरइयाण, जात्र आहस णीस
 सति ॥ पुढविक्काइयाण भते ! जे पोगले आहारत्ताए गिण्हति तेसिण भते !
 पोगगलाण सयालसि कतिभाग आहारोति कतिभाग असायति ? गोयमा ! अस
 खजति भाग आहारोति अणस भाग आसायति ॥ पुढविक्काइयाण भत ! जे पोगले
 आहारत्ताए गिण्हति तकि सन्वे आहारोति, जे सन्वे आहारोति ? गोयमा ! जहेव

दिखा का आहार ग्रहण करत है, जिस में इतना विषय—यह चल्णकारण प्रत्यय नहीं कहना वयो कि
 पृथ्वीकाय के बीचों पांचों वण के पुत्रों का आहार ग्रहण करत है परंतु कम वर्ण पुत्रों का आहार
 ग्रहण नहीं करत है तेसे ही दोनों गव के पांचों रस के और सर्व कर्कश गुरु सयु आदि भातों सर्व के
 पुत्रों का आहार ग्रहण करत है व भी पुराण वर्णदिगुण वल्ल इव यावत् अथ कथन जैसा नेरिये का
 कहा जैसा कहना यावत् कदाचित् निःश्याम्यत है तर्हात कहना अहो भगवन्! पृथ्वीकाय जिन पुद्गलोंको आहार
 पने ग्रहण करे उन पुद्गलों में स आगमिक काल में कितने आहारपने परिणय कितने अस्वादपने परिणय ?
 अहो गंतय! असस्यावये भागका आहार करे और अंतवये भागका अस्वादग्रहण करे अहो भगवन्! पृथ्वीकाय
 जीव जिन पुत्रों को आहारपने ग्रहण करे वे स पुत्रों का आहार करते हैं या सब का आहार नहीं

गेरइया तहेय ॥ पुढविकाइयाण भते ! जे पोगल आहारचाए गिण्ठति तेण तेसि
पोगल्लाण कीसचाए भुजो २ परिणमति ? गोयमा ! फासिधिय वेमायसाए तेसि भुजो २
परिणमति एव जाय वणफतिकाइयाण ॥ ५ ॥ वेइदियाण भते ! आहारट्टी ? हता
गोयमा ! आहारट्टी ॥ वेइदियाण भते ! केवइ कालस्स आहरट्टे समुप्यज्वति ?
जहा गेरइयाण जवर तरण जे से आमोगानिन्वचए सेण असस्सेज्वति
ममए अंतोमुहुचिए वेमायाए आहारट्टे समुप्यज्वति सेस जहा पुढवि

कते है ! अहो गौतम ! जेमा नेरीये का कहा तेसा ही कहना अहो भगवत् ! पृथ्वीकाया जिन
पुद्गलों को आहारपने ग्रहण करे वे पुद्गलों किसपने शरम्भार परिणमे है ? अहो गौतम ! एक स्वे
न्द्रियपने वेसाय-अग्रमाण वे शरम्भार परिणपते है, यो यावत् पनस्पतिकाया पर्यन्त कहना ॥ ५ ॥
अहो भगवन् ! वेइदिय क जीव आहार के अर्थो है क्या ? अहो गौतम ! जेसा नेरीये का कहा
जेमा ही कहना, जिस में इतना विशेष जो मायाय निवृति वह असंस्याठ समय का अन्तरपुर्त में अग्र
याण आहार की इच्छा उत्पन्न होती है सोप जेमा पृथ्वी काया का कहा तेसा कहना यावत् क्यापिह
भासोभास सेते है यहां तक कहना परतु इतना बिशेष की नियमा म छ ही दिश्रा का आहार ग्रहण

काइयाण जाव आहवणीससति, णवरं भियमा छावसि ॥ वेइदियाण पुच्छा ? गोयमा !
 जे पोगले आहारचाए गिण्हति तेण तेसि पोगलाण कहभाग आहारेंति
 कतिभाग आसार्थति एव जहा णेरइयाण भते ! जे पोगले आहारचाए
 गिण्हति ते किं सन्ने आहारइ णो सन्ने आहारइ ? गोयमा ! वेइदियाणं दुविहे खाहारे
 पण्णे तजहा-लीमाहोरय, पक्खेवाहारय, जे पोगल लोमाहारचाए गिण्हति ते सन्ने
 अरिसेसे आहारेंति, जे पोगले पक्खेवाहारचाए गिण्हति, तेसि असंखज्जति माग

करते हैं क्यों कि प्रस भीव लोक के मध्य में ही पाते हैं अहो मगबन् ! वेइदिय जिन पुट्ठों का आहार
 पन ग्रहण करते हैं उन में का आगमिक काल में कितना माग आहारपने परिणमता है कितना माग
 अस्वादपने परिणमता है ! अहो गौतम ! जेसा नेरीये का कहा तैसा ही कहना अहो मगबन् ! वेइ
 दिय आहार क सिप जितन पुट्ठ ग्रहण करते हैं उन सब का आहार करत है कि सब का आहार
 नहो करते हैं ? अहो गौतम ! वेइदिय के दो प्रकार का आहार कहा है, तथया—रोम आहार ओ
 सवा कर (रोम क छिट्रो कर) ग्रहण किया जाने और २ प्रसेप आहार जो पुत्त में प्रसेप कर ब्याया
 मोरे इस में से आ पुट्ठस रोम आहारपने ग्रहण कर वे मय विशेष राखेव आहार करे और ओ प्रसेप

आहारं समुप्यज्वति सेस जहा अमुरकुमाराण आव एतंसि भुजो २ परिणमति ॥ ९ ॥ सोहमेकप्ये आभोगाभिव्यचिष्ट जहण्णेण दिवसपहुत्तस्स उक्कोसेण दोण्ह वाससहरसाण, ईसाणे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दिवसपहुत्तस्स सातिरेगरस, उक्कोसेण सातिरेगाण दोण्ह वाससहरसाण ॥ सणकुमाराण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णे दोण्ह वाससहरसाण उक्कोसेण सत्तण्ह वाससहरसाण, माहिंवेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दोण्ह वाससहरसाण, उक्कोसेण सत्तण्ह वाससहरसाण सातिरेगाणं, बमलोग पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण सत्तण्ह वाससहरसाण उक्कोसेण

हजार वर्ष के अन्तर से आहार की इच्छा होती है शेष बैसा असुरकुमार का कहा बैसा कहना यावत् उन क पारम्पर परिणमता है ॥ ९ ॥ अब सब देवलों का अन्तर कहते हैं अनामोगातेष्टुति मौषर्म देवलोक में अथन्य पृथक्त्तदिन के अन्तर से उत्कृष्ट दाहधार वर्ष के अन्तर आहार की इच्छा उत्पन्न होती, इक्षान देवलोक में अथन्य पृथक्त्त दिन से कुछ अधिक के अन्तर से उत्कृष्ट दो हजार वर्ष कुछ अधिक अन्तर से, सनत्कुमार देवलोक में अथन्य दो हजार वर्ष के अन्तर, उत्कृष्ट सात हजार वर्ष में, सत्सत्तार देवलोक में अथन्य द्वा हजार वर्ष कुछ अधिक के अन्तर उत्कृष्ट सात हजार वर्ष

दसण्ड वाससहस्ताण ॥ लतएण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण वसण्ड वामसहरसा
 ण उक्कोसेण वोदसण्ड वाससहस्ताण ॥ महासुक्के पुच्छा ? जहण्णेण वोदसण्ड वास
 सहरसाण उक्कोसेण सत्तरसण्ड वाससहस्ताण ॥ सहसारे पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णे
 ण सत्तरसण्ड वाससहस्ताण उक्कोसेण अट्टारसण्ड वाससहस्ताण, आणएण पुच्छा ?
 जहण्णेण अट्टारसण्ड वाससहस्ताण, उक्कोसेण एगुणवीसाए वाससहस्ताण पाणएण
 पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एगुणवीसाए वाससहस्ताण उक्कोसेण वीसाए वाससहस्ताण
 आहणेण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण वीसाए वाससहस्ताण उक्कोसेणः एक्कवीसाए

हुए अपिक के अन्तर्, प्रसन्न देवलाक में अपन्य सात हजार वर्ष में उत्कृष्ट दश हजार वर्ष में सातक देव
 लोक में अपन्य दश हजार उत्कृष्ट चौदह हजार वर्ष में, महायुक्त में अपन्य चौदह हजार उत्कृष्ट
 सतरा हजार वर्ष में, सहसारे में अपन्य सतरे हजार वर्ष में, उत्कृष्ट अठार हजार वर्ष में, आनत में अपन्य
 यठारा हजार उत्कृष्ट उभीस हजार वर्ष में, प्राणत में सवन्ध उभीस हजार उत्कृष्ट वीस हजार वर्ष में,
 जारन में अमन्य वीस हजार वर्ष में उत्कृष्ट इक्कीस हजार वर्ष में, अण्युत देवलोके में अपन्य इक्कीस
 हजार वर्ष में उत्कृष्ट पचीस हजार वर्ष में यो-सर्ष स्यात्त कहना यावत् सर्षा में सिद्ध पर्यन्त नीचेकी

वाससहस्ताणि ॥ अच्युतं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण एक्खीसाए वाससहस्ताण
 उक्कोसेण बाधीसाएवाससहस्ताण, हट्ठिमहेट्ठिमगेत्रेअगाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण
 बाधीसाए वाससहस्ताण उक्कोसेण तेवीसाए वाससहस्ताण, एवं सन्वथ तहस्ताणि
 भाणियन्नाणि जाव सत्थं सिद्धं ॥ हट्ठिममज्झिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण
 तेवीसाए उक्कोसेण बोधीसाए, हेट्ठिमत्थरिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण वठवी
 साए उक्कोसेण पणवीसाए, मज्झिमहट्ठिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण पणवीसाए
 उक्कोसेण छब्बीसाए मज्झिममज्झिमाण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण छब्बीसाए उक्को

नीचे की प्रियेयक में अथवा बाधीत हजार वर्ष वत्सुह तवीत हजार वर्ष में नीचे की मध्य की प्रियेयक में
 नयन्य तेवीम हजार वर्ष में वत्सुह बोधीत हजार वर्ष में नीचे की ऊपर की प्रियेयक में अथवा बोधीत
 वत्सुह पधीत हजार वर्ष में, मध्य के नीचे की प्रियेयक में अथवा पधीत हजार वर्ष में, मध्य के ऊपर की प्रियेयक में
 में, मध्य के मध्य की प्रियेयक में अथवा छब्बीत वत्सुह सताधीत हजार वर्ष में, मध्य के ऊपर की प्रियेयक में
 अथवा सताधीत वत्सुह अताधीत हजार वर्ष में ऊपर के नीचे की प्रियेयक में अथवा अताधीत वत्सुह
 गुप्तीत हजार वर्ष में ऊपर के मध्य की प्रियेयक में अथवा गुप्तीत वत्सुह वीत हजार वर्ष में, ऊपर

मणभक्तीविधि, तत्पण ज त मणभक्ती दया तसिण इच्छामणे समुपपज्जसि,
इच्छामाण मणभक्त्वण करित्तए तएण तहिं देवेहिं एव मणसीकते
समाणे स्थिपामेय ज पोगला इट्ठा कता जाय मणामा एतोसिं मणभक्त्वसाए
परिणमति स जहा णामए सीया पागला सीय पप सीयचव अतिवइत्ताण विट्ठति,
उमिण वा पोगला उमिण पप उमिण चव अतिवत्तिताण विट्ठति, एवामव तोहिं
आहार नानों प्रकार क आहार हैं अहा मगवन ! नरीये क औज आहार (आ वत्पाचि की वक्त
ग्रहण कर वह) हैं कि मनमसी आहार (आ इच्छित पुस्तकों का ग्रहण) है ? अहा गौतम ! नारकी
भोज भाहार है परंतु मन मसी भाहार नहीं है यों सत्र औदारिक धारी [तस्य स्यावर तीन विरुसन्दिप
निर्व्यं पंगन्दिप पन्थिय] ये भी भोज आहार है परंतु मनमसी आहार नहीं है और भवनपति से यावत्
वैमानिक पर्यंत चारों याति के आत्र आहार मी है और मनमसी आहार भी है उस में जा मनमसी
आहार द्रवता के है वह त्रिम वक्त मन की इच्छा हा तप ही वक्त व मन मसी आहार कर उन द्रवता को
इम प्रकार मन में विचार करत ही शीघ्र ही एहारी कान्तकारी प्रियकारी मनोव मणाम पुद्गल उन के
मन क मसाम परिणमत है यणहणान्त—जिस प्रकार नीत योनिक जीव का शीतल पुद्गल पिछे व उसे
आगवने बहुत शीतलीभूत होवे परस्पर अंगीकार कर रहे जो उष्ण योनिक हैं उन क उष्ण पुद्गल

किं आहारक अनाहारक ? गोयमा ! जो आहारक अनाहारक ॥ २ ॥ जीवाण भते ! किं आहारक अनाहारक ? गोयमा ! आहारकयानि अनाहारकयानि ॥ जेरहयाण पुच्छा ? गोयमा ! सन्वेयि ताव हाजा आहारगा अहवा आहारगाय अनाहारकय, अहवा आहारगाय अनाहारगाय, एव जाव वेसणिगा, पत्रर एगिदिगा जहा जीवा ॥ सिद्धाण पुच्छा ? गोयमा ! पा आहारगा अनाहारगा ॥ ३ ॥ सवसिद्धिपण अहो गौतम ! सिद्ध सदैव अनाहारक ही होते हैं ॥ ३ ॥ अब बहुत जीवों आश्रय करते हैं अहो सगन्न ! जीवों आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहा गौतम ! आहारक भी हैं और अनाहारक भी हैं नारकी का प्रश्न ! अहो गौतम ! सब तैसे ही होते आहारक जीव बहुत होते हैं परंतु विरहकाल में प्रिय गतिबाल नहीं मिलनेसे अनाहारक नहीं पावे अथवा कि प्रीतिवक्त आहारक बहुत होते और अनाहारक एक होव, और किसी वक्त में आहारक भी बहुत होते तथा अनाहारक भी बहुत होते, आहारक बहान समायी जीव आश्रय और अनाहारक बहुत सिद्ध आश्रय तथा निगोद में समय २ अन्नत जीव आश्रय में पाते हैं वे अनाहारक ही होते हैं इस आश्रय एव ही तीन भाग नारकी से यावत् वेया निक पर्यन्त कहना जिस में इतना विशेष एकत्रिय क पाव देहक छोड़ दना क्यों कि एकत्रिय में समय ३ ससपात असस्यात अन्नत जीवों चक्षुष होते हैं सिद्ध आश्रय पृच्छा ? अहो गौतम ! सिद्ध आहारक नहीं है परंतु अनाहारक हैं ॥ ३ ॥ दूसरा यन्त्रायण्य द्वार—महा भमन्न ! भव्य सिद्धिक

अणाहार? गोयमासिय आहारए सिय अणाहारए, एव जाव वेमाणिए, जवर एमिदिय विगलिदिया न पुच्छिजति॥ सण्णीण भते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा? गायमा! जीवा-इआतियमगा जावयमाणिया॥ असण्णीणं भते! जीवे किं आहारए अणाहारएय? गोयमा! सिय आहारए सिय अणाहारए एव जवरइए जाव वाणसतरनर जोइसिय वमाणिए न पुच्छिजति असण्णीण भते! जीवा किं आहारगा अणाहारगा? गोयमा! आहारगावि अणा-एकैन्णिय क और तीन दहक विरुत्तान्णिय के नहीं कहना बहुत सही जीव आहारक है कि अनाहारक है? अहो गौवम! ममुखय क जीव क औम तीनो मणि कहना यावत् वैयतिक पर्यन्त अहो भगवन्! अहंही जीव आहारक है कि अनाहारक है? कदाचित् आहारक है कदाचित् अनाहारक है यो नेरीये स यावत् वाणव्यन्तर द्वय तक कहना आगे असंघो नहीं है इमन्णिय उगातिपी विमानिक की पुरछा नहीं करना ॥ बहुत अहंही मीवो आहारक है कि अनाहारक है? अहो गौवम! आहारक मी बहुत है अनाहारक भी बहुत है यह एक ही भागा पाता है क्यों कि एकन्तिमे सदैव बहुत पाते हैं ॥ अहा भगवन्! असंघो तरीया आहारक है कि अनाहारक है? अहो गौवम! उभांग पात है? आहारक बहुत और अनाहारक नहीं क्योंकि बहुत स भगवन् जीव प्रथम भरक मे सत्यम हो आहार-पय, स का भय किया है वे आहारक को चुहे परसु पन भात्रा पयायन्थ कर पूर पयासि

हारगानि, पुगोमगो॥ असंख्यो ग भते' नेरइया कि आहारगा अणहारंगा? गेयमा !
 आहारगानि अणहारगानि अहवा आहारएय अणहारएय अहअ आहारएय अणह !
 रगाय, अहवा आहारगाय अणहारगाय अणहारगाय एव एते
 छमगा एव जात्र धाणियकुमारा, एगिदिपुसु अभगय ॥ बह्दिय जात्र पच्चिदिय
 तिरिक्खजोणिपुसु तियमगा, मणुस्स वाणमत्तरेसु छ मगा ॥ जो सण्णा जो असंखणि
 अबस्या को मास न इव इस स्त्रिय मत्तेओही भिने भाते हैं उस वक्त असंखी विग्रह गवी में कोई भी
 नहीं है, जिस से अनाहारक नहीं २ आहारक नहीं अनाहारक भी बहुत अर्यात् बहुत से असंखी जीव मरेकर नरक
 क रास्ते में विग्रह गति पन गमन कर रह हैं वे नरकका आयुर्वन्धी है इस स्त्रिय अनाहारक बहुत पारुषु उस
 वक्त अपर्याप्त नरक में असंखी एक यो नहीं है ३ अथवा आहारक भी एक और अनाहारक भी एक
 अर्यात् दा जीव नरकापु वधकर खवे जिस में एक जीव तो उत्पन्न हा आहार पर्याप्त से पचात हुआ है
 और एक जीव विग्रह गति में है ४ अथवा आहारक एक, अनाहारक बहुत, ५ अथवा आहारक
 बहुत अनाहारक एक, और ६ आहारक बहुत और अनाहारक भी बहुत ॥ यों छमगे मानना
 ऐसे ६। यावत् स्थानिकुमार पर्यन्त कहना एकेन्द्रिय में योगी नहीं पाता है क्यों कि
 आहारक अनाहारक दोनों अनन्त हो पाते हैं वहलिय में लगाकर एकेन्द्रिय एक तीन मांग पाते हैं

मंते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए,
एव मणुस्सवि सिद्धे अणाहारगय ॥ पहुत्तेण जो सणीं जाअसणी जीवा आह।
रगावि अणाहागावि मणुस्सेसु तियमगो, सिद्धा अणाहारगा ॥ ५ ॥ सल्लेसेण भत्ते!
जीव किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए सिय अणाहारए एव
सद्यथा—? विप्रवृत्ति में कई न हो तब सब अनाहारक बहुत होते, २ अथवा आहारक बहुत अनाहारक
एक, क्यों कि विप्रवृत्ति में एक ही मात्र पात्र तब और ३ आहारक भी बहुत अनाहारक भी बहुत
मनुष्य आश्रित १ और वाणज्य तर आश्रित नरक क भैते छ ही माले पात है
अहो भगवन् ! जो सभी जो असंख्य जीव आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो
नीतम ! स्मात् आहारक भी हैं क्यों कि आ संख्ये जा असंख्य केवल जानी हैं उस में स जो समुदाय
करत सीतरे चौथे पांचव समय अथवा सिद्ध भगवत् तो अनाहारक है वाक्की के भवस्व केदली आहारक है
एते ही मनुष्य का भी कहा और सिद्ध अनाहारक हैं बहुत जो सभी जो असंख्य जीवों आहारक
भी बहुत हैं क्यों कि अथय दो कोट क्यसी पाते हैं और अनाहारक भी बहुत हैं क्यों कि अन्तर्हित हैं,
बहुत मनुष्यों में उक्त तीन भाग पाते हैं, कुशल समुदाय आश्रित बहुत सिद्ध सदैव आहारक हैं ॥ ५ ॥
संज्ञा द्वार—अहो भगवन् ! दुस्सेखी नीच आहारक है किम्बुआहारक हैं ? अहो गौतम ! कयचिन्

उ मंगि
आ अना

३
०
३
३
३
३
३

तीन मंगि

आ अना

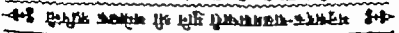
३
३
३
३

गोयमा ! सिय आहारगाय सिय अणाहारगा ॥ वैद्विय तेद्विय चउ
रिदिय छमगा, सिद्धा अणाहारगा अवसेसाण तियभगो॥ मिच्छहिट्टीसु
जीवे एगिदिय वजा तियभगो, ॥ सम्माभिच्छहिट्टीण भते ! किं
आहारए अणाहारए ? गोयमा ! आहारए णा अणाहारए, एव एगिदिय
विगल्लिदिय वज्ज जाव वेमाणिए ॥ एव पुहुप्पेणवि ॥ ७ ॥ सजएण
भते ! जीवे किं आहारए अणाहारए ? गोयमा ! सिय आहारए
सिय अणाहारए, एव मणुरपेवि ॥ पुहुप्पेण तियभगो ॥ अमजएण
पुच्छा ? गोयमा ! सिय आहार ए सिय अणाहारए, पच्छेण जीवेगिदिय

अनाहारक है ? गौतम ! कदाचित् आहारक है कदाचित् अनाहारक है मम्यग द्रष्टी वेद्विय
लेन्द्रिय चौरिन्द्रिय में छ मार्ग कहना सिद्ध सम्यक् द्रष्टी अ पहारक है, बाकी सबमें तीन मार्ग
पावे हैं ॥ विष्टयास्ती नीब के एकेंद्रिय छोड़कर बाकी सब रयान तीन मार्ग ॥ और
समपिष्टया (मिश्र द्रष्टी नीब आहारक ही होश है क्योंकि यह द्रष्टी पर्याप्त अस्वप्ना में ही पाती है एके
न्द्रिय और विकलन्द्रिय छोड़कर क्योंकि इन में मिश्र द्रष्टी नहीं पाती है, बाकी सर्व रूपान यावत् वैमानिक
पर्यंत कहना ॥ ऐसेही बहुत मोहों आश्रय भी कहना ॥ ७ ॥ छद्वा संशयित द्वार—महो गगन ! मयति
नीब आहारक हैं कि अनाहारक हैं ? अहो गौतम ! आहारक है नीब स्वात मनाहारक भी है । केवल

वधनेरईएसु छभगा अवसेसाण जीवे एंगिदियवज्जो तियभगो मायाकसाइ लोभक
साइसु देवणरईएसु छभगा अवसेसेसु अविगिदियवज्जो तियभगो,
अकसाइ जहा णा मण्णी णोअसण्णी ॥ १ ॥ णाणी जहा सम्मदिट्ठी, आभिणि
घोहियणणी सुयणाणीसु यइदिय तेइदिय चउरिदिएसु छभगा, अवसेसेसु जीवादीओ
तियभगो, जेसि अरिय ओहिणाणी पचिय तिरिक्खजोणिया मणुस्साय आहारगा
णोअणाहारगा, अवसेसेसु जीवादिओ तियभगो, जेसि अरिय ओहिणाण मणपज्व

सहै स्थान तीन पति पाते हैं, मोक्ष कपायबाले समुच्चय जीव से पावत् चौबीस ही देवक का भी इस ही
प्रकार कहना जिस में इतना विषोप-देवता में छ भाग कहना क्यों कि देवता में लोभ कपाय स्व से
ज्यादा है इस छिय क्राय कपायबाल एकादि मिलते हैं, मान कपायबाले के देवता नारकी में छ भाग
वक्त प्रकार ही और छप जीवों में एकन्त्रिय छोदकर तीन भाग पावे माया कपाय और लोभ कपाय
बाल देवता नरक में छ भागें मपर श्रेय एकेन्द्रिय छोदकर सब जीवों में तीन भागें अकपायी का जेमा
ना भट्टी नो असमी का कहा तेसा कहना ॥१॥ आठवा ज्ञान द्वार समुच्चय ज्ञानी का जेस सम्यक्दृष्टीका कहा
तेसा कहना पति ज्ञानी श्रुत यानी आश्रय वेईन्द्रिय वेईन्द्रिय चौरिन्द्रिय की अपसा छ भाग कहना अपरश्रेय
जीवादि क की अपसा तीन भाग जिस में दो ज्ञान पाते हो सत में कहना अवाधि ज्ञानी तिरिय पचेन्द्रिय में दो आ



जाणी जीवा मणुस्साय एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि, आहारगा णो अणाहारगा, कवलणाणी
जहा णोमणी णोअसणी ॥ अण्णाणी मत्तिअण्णाणी सुयअण्णाणी जीवणग्गिदियवज्जो
तियमगो विमगणाणी पच्चिदिय तिरिक्खजणिया मणूसाय आहारगा नो अणाहारगा
अवसेससु जीवादिओ तियमगो ॥ १० ॥ सजोगी जीवाग्गिदियवज्जो तियमगा, मणजोगी
वज्जजोगीय जहा सम्मामिच्छादिट्ठी णवर वज्जजोगी विगल्लदियाणवि, कायजोगीसु
जीवेग्गिदियवज्जो तियमगो, ॥ अजोगी जीव मणुरस सिद्धा अणाहारगा
हारक है परतु अनाहारक नहीं हाता है अपरशेष समुच्चय वीर्यमें और एकेन्द्रिय बिल्लिन्द्रिय छोड़कर सब ओरोंमें
तीन भाँगे रहन्त, जिस में अवशिष्ट ज्ञान पावे उस में मन पर्वव ज्ञानी समुच्चय आब और मनुष्य एक तथा
बहुत आहारक ही होते हैं वस्तु अनाहारक नहीं होते हैं कयल ज्ञानीका तैसा नोसही नाअसहीका कहा तैसा
कहना आठवा अज्ञान द्वार—मति अज्ञानी श्रुति अज्ञानी का एकाद्रिय छोड़ कर तीन भाँगे कहना
विमगजानी पंचन्द्रिय तिरिप में मनुष्य में आहारक ही होते हैं अनाहारक नहीं होते हैं अपर शेष समुच्चय
ओबादि में तीनों भाँग पाल है ॥ १० ॥ आग द्वार—सजागी में एकन्द्रिय छोड़ तीनों भाँगे पाते
हैं, मनपानी बचन यागी का तैसा सम्यक् दृष्टी का कहा तैसा कहना (एक बचन आश्रित्य आहारक ही
होते हैं) जिस में इतना विषय बचन योगी बिल्लिन्द्रिय में भी कहना काया यागी का एकेन्द्रिय छोड़
कर तीन भाँगे कहना अभागी समुच्चय जीव मनुष्य अजोगी और सिद्ध यह अनाहारक ही होते हैं ॥ ११ ॥

॥ ११ ॥ सागर अणागारवत्सु जीवगिदियवज्जो तियमगो, सिद्धा
 अणाहारगा ॥ १२ ॥ सशदी जीव एगिदिय वज्जो तियमगो, इत्थिवेद पुरिस
 ॥ १३ ॥ जीवादिआ तियमगो णपुसगवेदय जीवगिदियवज्जो तियमगो, अवेदएय जहा
 ववलणार्णी ॥ १४ ॥ ससरीर जीवगिदियवज्जो तियमगो, ओरालिय सरीरेसु जीव
 मणुस्सतु तियमगा अवसेसा आहारगा नो अणाहारगा, जेसि अत्थि आरालिय
 सरीर वडन्निय सरीरी आहारग सरीरीय आहारगा णो अणाहारगा, जेसि अत्थि,

दमवा उपयोग द्वार—साकार उपयोगी और अनाकार उपयोगी दोनों में एकद्विष्ट छोट कर सभी सब
 जीव में तीन भाग सिद्ध अनाहारक ही होते हैं ॥ १२ ॥ इत्याद्या वेद द्वार—सर्वदी में समुच्चय तीन आश्रय
 एकद्विष्ट छोट कर तीन भाग जो वेद पुरुष वेद में सर्व स्थान तीन भाग नपुंसक वेद के एकद्विष्ट
 छोट कर सर्व स्थान तीन भाग अवेदी का जैसा केवल ज्ञानी का कहा होता है ॥ १३ ॥ द्वारका
 द्वार द्वार—सदरीर जीव में एकद्विष्ट छोट कर तीन भाग औदारिक शरीर आश्रय समुच्चय जीव
 और पुरुष में तीन भाग केवल समुच्चय आश्रि अपर श्रेष्ठ आहारक भी बहुत अनाहारक भी बहुत
 भिन्न जीव के औदारिक शरीर पाता है उन का कहना वैक्य शरीर और आहारक शरीर आहारक है
 परंतु अनाहारक नहीं है जिन के वैक्य शरीर हो उन का नाम लेना तेजस और कार्भन शरीर जीव

तेयकम्मगसरीरी जेन्नेमिदियवज्जो तियभगो सरीरी जीवा सिद्धाय नो आहारगा
अणाहारगा ॥ १४ ॥ आहार पज्जत्ती पज्जत्तए सरीरपज्जत्ती पज्जत्तए इदियपज्जत्ति
पज्जत्तए आणायाण पज्जत्ति पज्जत्तए एतासु चठसुवि पज्जत्तीसु जीवेसु मणुस्सेसुय तीय
भगो अवसेसा आहारगा जो अणाहारगा, भासामणपज्जत्ति पच्चिदियाण अवसेसाण
णत्थि ॥ आहार पज्जत्तिअपज्जत्तए जो आहारए अणाहारए, एगत्तेणवि पुहुत्तेणवि,
सरीरपज्जत्ती अपज्जत्तए सिय आहारए सिय अणाहारए ॥ उवरिस्त्रियासु चठसु अपज्जत्तीसु

पकेन्द्रिय छान्दकर तीन भाँगे, मशरीरी सिद्ध बनाहारक है ॥ १४ ॥ तेरवा पर्याप द्वार-आहारपयाय से
पर्याप्त, शरीर पयाय छे पर्याप्त, इन्द्रिय पर्याप से पर्याप्त, आसोश्वास पर्याप से पर्याप्त,
इन में चार पयाप नीब मनुष्य में तीन भाँगे केवली आश्रिय बाकी सर्वस्थान आहारक जानना
परतु बनाहारक नहीं है, भाषा मनपयाय पकेन्द्रिय में हैं अपर शेष स्थान में नहीं हैं. आहार पर्याप में
अपर्याप बनाहारक है परंतु बाहारक नहीं है क्योंकि प्रथम आहार पर्याप ही है इस विना बिग्रह गति
बाल नीब ही होते हैं एक भीब आश्रिय और बहुत आश्रिय ऐसा ही कहना २ शरीर पर्याप में अपर्याप्त
इस स्वात् बाहारक है स्यात् बनाहारक है इन दो पर्याप का छोट बाकी की चार पयाय से अपर्याप्त

नेरइय देव मणुरसेसु छमगा, अवसेसाण जीवगिदियवज्जो तियमगो, मासामण
पज्जचिए जीवेसु पच्चिदिय तिरिक्खजोणिएसुय तियमगो गेरइयधे देवमणुस्सेसु छमगा
सत्थपेदेसु ॥ एगचपुहुचणं जीवादिओ दहगा पुच्छाए भाणियन्ना, जरस ज अरिय तस्स
त पुच्छिज्जति ज णारिय त न पुच्छिज्जति जाव मासा मणपज्जसिएसु अपज्जत्तए नेरइय देव
मणुणसु छमगा, सेसेसुय तियमगा ॥ इतिवीओ उहसो सम्पत्तो ॥ २८ ॥ २ ॥
पणवण्णः भगवईए मट्टावीसम आहारपय सम्भत्त ॥ २८ ॥ +

मे नरक देव मनुष्य मे छ मोगे पावे है अपर होय जीव मे एकेन्द्रिय छाहकर हीन भवि पावे है
याथा मन वयात्त जीव मे तिरिक्ख योन्निक मे हीन मोगे नरक दण्डना मनुष्य मे छ मोगे यह मबद्वार-
मे जगा सब पद मे एक जीव भाभिय तथा बहुत जीव भाभिय जीवादि देवक की पृच्छा कहना, भिस
के जा हो उस की पृच्छा करनी नही सो न पूछना यावत् भापा मन पर्याप्ति से अपर्याप्त देव मनुष्य
देसीये मे छ मोगे अप स्यान हीन मोगे इति द्वितीयादेशा समाप्त ॥ २ ॥ इति पञ्चमना भगवति
का मठावीसवा आहार पद समाप्तम् ॥ २८ ॥

स्रष्टव्यिहे पण्णत्ते तज्झा स्रक्खदसण अणगारोवओगे, अक्खदसण अणगारोवओगे, ओहिदसण अणगारोवओगे, केवलदसण अणगारोवओगे ॥ एव जयिणं ॥ ३ ॥
 नरइयाणं भत्त ! कतिविहे उवओग पण्णत्ते ? गोपमा ! पुत्तिहे उवओग पण्णत्ते
 तज्झा-सागारोवओगय अणगारोवओगेय ॥ नेरइयाण भत्ते ! सागारावओगे कतिविहे
 पण्णत्ते ? गोपमा ! छव्विहे पण्णत्ते तज्झा मत्तिणाय सागारोवओगे, सुयणाय
 सागारोवओगे ओहिणाय सागारोवओगे मत्तिअणाय सागारोवओगे, सुयअणाय
 सागारावओगे, विभंगणाय सागारोवओगे ॥ नेरइयाण भत्ते ! अणगारोवओगे

॥ २ ॥ महा भगवन् ! अनाकार उपयोग क कितने भेद कह हैं ? अहा गौतम ! चार भेद कह हैं
 तथया—१ चक्षु इन्द्रिय कर देखे वह वस्तु दर्शन २ वस्तु बिना चार शब्दों कर तथा मन कर देखे वह
 अक्षु दर्शन ३ अवधि कर देखे वह अवधि दर्शन, और ४ सब द्रव्यादि देखे वह कल्प दर्शन यह
 समुच्चय मीन क उपयोग कह १२ भेद कह हैं ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नेरिय क कितने प्रकार के उपयोग
 करे हैं ? अहो गौतम ! दो प्रकार क उपयोग करे हैं तथया—१ साकार उपयोग, और २ अनाकार
 उपयोग अहो भगवन् ! नेरिय में साकार उपयोग के कितने भेद कह हैं ? अहो गौतम ! छ भेद
 कह हैं तथया—१ मति ज्ञान, २ श्रुति ज्ञान, ३ अरुधि ज्ञा, ४ मति ज्ञान, ५ श्रुति ज्ञान और

॥ एकोनविंशत्तम उपयोग पदम् ॥

कतिविहण भते ! उवओगे पणत्ते ? गोयमा ! दुविहे उवओगे पणत्ते तजहा
सागारोवओगेय अणागारोवओगेय ॥ १ ॥ सागारोवओगेय भते ! कतिविहे पणत्ते ?
गोयमा ! अट्टविहे पणत्ते तजहा आभिणिबोहियणाण सागारोवओगे, सुयणाण
सागारोवओगे ओहिणाण सागारोवओगे, मणपज्जवणाण सागारोवओगे केवल्लणाण
सागारोवओगे ॥ मतिअण्णाण सागारोवओगे सुयअण्णाण सागारोवओगे, विमगणाण
सागारोवओगे ॥ २ ॥ अणागारोवओगेय भत ! कतिविहे पणत्ते ? गोयमा !

अव ज्ञान परिणाम यह कहते हैं—भयो भगवन् ! कितने प्रकार के उपयोग करते हैं ? भयो गौतम !
दो प्रकार के उपयोग करते हैं तथथा—१ साकार उपयोग वह ज्ञान का और २ अनाकार उपयोग वह
दर्शन का ॥ १ ॥ भयो भगवन् ! साकार उपयोग के कितने भेद करते हैं ? भयो गौतम ! आठ भेद
करते हैं तथथा—१ अपनी स्वयं की मति कर जाने वह आभिनिबोधिक् ज्ञान साकार उपयोगी २ शब्द
श्रवण कर जाने वह श्रुत ज्ञान ३ मर्मादा युक्त गच्छादि जाने वह अबाधि ज्ञान, ४ मन के सूक्ष्म पर्याय
को जाने वह मनोपर्यव ज्ञान और ५ सब द्रव्यादि का जाने वह केवल्ल ज्ञान ६ विपरीत बुद्धि होव सो
मति जज्ञान ७ चतुष्टय कर जाने वह श्रुत अज्ञान, और ८ विपरीत द्रव्यादि जाने वह विमंग ज्ञान

गोयमा ! दुविहे उवआंगे पण्णत्ते तजहा-सागारेय, अणगारेय ॥ वेहंदिपाण मत्ते !
 सामारावओंग कतिविहं पण्णत्ते ? गोयमा ! चउत्विहे पण्णत्ते तजहा आभिणिघोद्विय
 पाण सागारोवओंग, सुयणाण सागारोवओंगे, मतिअण्णाण सागारोवओंगे, सुयअण्णाण
 सागारावओंग ॥ चहंदिपाण मत्ते ! अणगारोवओंगे कतिविह पण्णत्ते ? गोयमा ! एगे
 अचक्खु दसण अणगारावओंगे एव तेहंदिपाणवि। चउरिदिपाणवि एव च्चक्खवरं अणगा
 रोवओंग दुविहे पण्णत्ते तजहा चक्खु दसण अणगारोवओंगे अचक्खु दसण अणगाराव
 ओंगे पविदिय त्तिरिक्ख जेणियाणं जहा एरइयाण ॥ मणुस्साण जहा ओहिंए उवओंगे

बेइन्द्रिय पूजा ? अहो गौतम ! दो प्रकार के उपयोग कह हैं तथ्या—१ साकार उपयोग और २
 अनाकार उपयोग अहो भगवन् ! बेइन्द्रिय का साकार उपयोग कितने प्रकार का कह है ! अहो
 गौतम ! चार प्रकारका कहा है तथ्या—१ पतिज्ञान, २ श्रुतिज्ञान, ३ मति अज्ञान और ४ श्रुति अज्ञान
 अनाकार उपयोग कितने प्रकार का कहा है ! अहो गौतम ! एक अचक्षुदर्शन अनाकार उपयोग
 कहा है ऐ० ई० तत्त्विय चौरिन्द्रिय का भी कहना जिस में इतना विशय चतुरिन्द्रिय में अनाकार उपयोग
 दो प्रकार का—१ चक्षुदर्शन और २ अक्षुदर्शन पचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक का भेसा नेरीया ॥ कहा हैसा
 ए साकार उपयोग और कीन अनाकार उपयोग कहना : मनुष्य का भेसे समुषय जीव का कहा हैसे चारे

बठचाधि अणागारीबठचाधि ॥ गेरइयानं भंति ! किं सागारीबठचा ! अणागारीबठचा ?
 गोयमा ! नेरइया सागारीबठचाधि अणागारीबठचाधि ॥ से केणट्टेणं भंति ! एवं
 बुधाति ? गोयमा ! नेरइया जेणं आभिणिबोहिण्याण सुयणाण ओधिष्णाण,
 मतिअण्णाण सुय अण्णाण त्रिमण्णा जे वठचा तेण नेरइया
 सागारीबठचा, जेणं नेरइया ब्वसुदसण अक्खसुदसण ओहिदसणेवठचा तेण
 नेरइया अणागारीबठचा, से तेणट्टेण गोयमा ! एवं बुध्धति जाव अणागारीबठचाधि
 एव जाव एपिपकुमार ! ॥ पुढत्रिकाइयाण पुष्ठा ? गोयमा ! तइव जाव जेणं

साकार उपयोगी भी है और अनाकार उपयोगी भी है अहो भगवन् ! नेरीये साकार उपयोगी हैं कि अनाकार
 उपयोगी हैं ? अहो गौतम ! ने 'ये साकार उपयोगी भी हैं और अनाकार उपयोगी भी हैं किस कारण अहो
 भगवन्' नेरीये साकार अनाकार दोनों प्रकार के उपयोगी हैं ! अहो गौतम ! जो नेरीये मतिज्ञानी
 बुद्धिज्ञानी अर्थात् ज्ञानी भातेयज्जानी अति अज्ञानी भिन्नंग ज्ञानी है वे साकार उपयोगी है और जो
 नेरीये बधुदर्शनी अक्खु दर्शनी अर्थात् दर्शनी है वे अनाकार उपयोगी हैं इस कारण अहो गौतम !
 एसा करा कि नेरीये साकार अनाकार दोनों उपयोग नाक हैं ॥ यो पापस्वनिध कुमार

पुढविकाइया मनिअण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेणं पुढविकाइया मनिअण्णाण
 जेण पुढविकाइया अचक्खुदसणोवउत्ता तेण पुढविकाइया अणगारे मउत्ता,
 से तणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चति जाव वणफ्फकाइयाण, खइदियाण अट्टसहिंया
 तेइव पुच्छा ? गोयमा ! जाव जेण बइदिया आभिजिओहिंयाण सुयणण मतिअ
 ण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेण बइदिया सागारोवउत्ता, जेण बइदिया अचक्खु
 दसणोवउत्ता तेण बइदिया अणगारोवउत्ता से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चति ॥
 एव जाव चठरिंदिया जवर चक्खुदसण अमहिय चठरिंदियाणति॥पविंदिय तिरिक्ख-

पर्यंत कहना पृथरीकाय की पृच्छा ! अहो गौतम ! तैसे ही कहना यावत् ना पृथरीकाय मति अज्ञान
 अति अज्ञान बाधो है वह साकार उपयोगी है और ना पृथरीकाय अचक्षु दर्शन वाली है व अनाकार
 वरयोगी है इसलिये अहो गौतम ! ऐसे कहा ऐसे ही यावत् धनस्पतिकाय पर्यंत कहना बेन्द्रिय की
 अर्थ पाहेत तैसे ही पच्छा ! अहो गौतम ! यावत् जो बेशीद्रय मति ज्ञानी शुनिदानी मति अज्ञानी श्रुति
 मज्ञानी है वे साकार उपयोगी है और जो बेन्द्रिय अचक्षु दर्शनी है वह यनाकार उपयोगी है इसलिय
 ऐसा कहा ऐसे ही यावत् चौरिन्द्रिय पर्यंत कहना, इतना विशेष चौरिंदिय के वसु दर्शन अधिक कहना



जाणिया जहा णरइया ॥ मणुस्सा जहा जीवा वाणमतर जोतिंसीया धेमाणिया जहा
 नेरइया ॥ इति पणवणिए भगवतीए एगुणतीसम उवओगपय सम्मत्त २९ ॥ •
 विर्येन पबान्धवा हा नं य जेना कहना पनुप्य का ममुचय जीव मैमा कहना और वाणव्यन्तर
 वैमानक का नेरीय जहा कहना इति पप्ररणा भगवतीका गुणतीसचा उपयोग पद समाप्तम् ॥ २९ ॥

पुढविकाइया मतिअण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेण पुढविकाइया अण्णाणोवउत्ता,
जेण पुढविकाइया अचक्खुदसणोवउत्ता तेण पुढविकाइया अण्णाणोवउत्ता,
मे तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चति जाव वणफ्फकाइयाण, वेइदियाण अट्टसहिया
तेहव पुच्छा ? गोयमा ! जाव जेण वेइदिया आभिजियोहियाण सुयण्ण मतिअ
ण्णाण सुयअण्णाणोवउत्ता तेण वेइदिया सागरोवउत्ता, जेण वेइदिया अचक्खु
दसणोवउत्ता तेण वेइदिया अण्णाणोवउत्ता से तेणट्टेण गोयमा ! एव वुच्चति ॥
एव जाव चउरिंदिया जवरं चक्खुदसण अट्टसहिय चउरिंदियाणति॥ पच्चिदिय तिरिक्ख-

पर्वत कहना पृथीकाय की पृच्छा ! अथो गोयम ! तेमे ही कहना यावत् ना पृथीकाय मति भवान
मति अमान वाली है वह साकार उपयोगी है और ना पृथीकाय अन्तु दर्शन वाली है व अनाकार
व उपयोगी है इसलिय अथो गोयम ! ऐसे कहा एये ही यावत् पनस्यनिकाय पर्वत कहना वेन्द्रिय की
अर्थ पणित तेमे ही पृच्छा ! अहा गोयम ! यावत् मो वेइन्द्रिय मति ज्ञानी श्रुतज्ञानी मति अमाना श्रुति
अज्ञानी है वे साकार उपयोगी है और मो वेन्द्रिय अन्तु दर्शनी है वह अनाकार उपयोगी है इसलिय
पसा कहा एये ही यावत् चौरिन्द्रिय पर्वत कहना, इतना विशेष चौरिन्द्रिय के बहुत दर्शन अधिक करना

सुयअण्णाण सागार पासणया, विभगणाण सागार पासणया ॥ २ ॥ अणगागर
पासणयाण भत्ते! कतिविहा पण्णत्ता! गायमा! ति विहा पण्णत्ता तज्जहा अक्खुदसण अगागागर
पासणया ओहिदसण अणगागर पासणया, केवलदसण अणागागर पासणया ॥ एव जत्थिण
॥ ३ ॥ नेरइयाण भत्ते! कतिविहा पासणया पण्णत्ता? गोयमा! पुविहा पासणया
पण्णत्ता तज्जहा-सागार पासणया अणागागर पासणया ॥ नेरइयाण भत्ते! सागार
पासणया कतिविहा पण्णत्ता? गोयमा! च्छविहा पण्णत्ता तज्जहा-सुयणाणसागार
पासणया, ओहिणाण सागार पासणया, सुयअण्णाण सागार पासणया, विभगणाण

यद् अनार्यवशान साकार पासनता और केवल ज्ञान रूप मायवस्तु कर देखे वह केवल ज्ञान साकार
पासनता ॥ २ ॥ भयो भगवन्! अनाकार पासनता कितने प्रकार की करी है? अहा गौसम! अनाकार
पासनता तीन प्रकार की करी है तथया पहिले चार अनाकार उपयोग है उस में ते? अयसु
दर्श! यदि प्रारण नहीं किया है क्यों कि अयसु दर्शन उसे ही करते हैं कि ना किसी वस्तु का स्फुट प्रगट
देख नहीं सके तथा अयसु दर्शन का उपयोग भी थोड़े काल का है स्फुट प्रगट पने विष्टेय काल रहता
नहीं है इस सिधे तीन ही अनागार पासणया करी है तथया 'चसुदर्शन अनागार पासनता, २
भा' दर्शन अनागार पासनता और केवल दर्शन अनागार पासनता ॥ जैसे यह पासनताका स्वरूप कहा

सागार पामनथा ॥ जेरइयार्ण भते अणगार पासणया कतिविहा पण्णत्ता ?
 गायमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा चक्खुदराण अणगार पासणया ओहिदसण
 अणगार पासणया ॥ एव जाव धारियकुमारा ॥ पुट्ठवि काइयाण भते ! कतिविहा
 पासणया पण्णत्ता ? गोयमा ! एग सुयअण्णाण सागार पासणया पण्णत्ता ॥ एव
 जाव वणप्फइ काइयाण ॥ वेइदियाण भते ! कतिविहा पासणया पण्णत्ता ? गोयमा !
 एगासागाएपासणया पण्णत्ता ॥ बइदियाण भते ! सागार पासणया कतिविहा
 पण्णत्ता ? गोयमा ! दुविहा पण्णत्ता तजहा सुयणाण सागार पासणया, सुयअण्णाण

कहा ऐसा समुच्चय नीच का भी पामनता का स्वरूप कहना ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! नरीये के कितनी
 प्रकार की पासनता करी है ? अहो मौलम ! दो प्रकार की पासनता करी है तथया ' साकार पासनता
 और अनाकार पासनता नरीये की साकार पासनता चार प्रकार की है तथया १ श्रुत ज्ञान, २ 'अवधि
 ज्ञान, ३ श्रुत अज्ञान और ४ विभंग ज्ञान नरीये क अनाकार पामनता दो प्रकार की है तथया बहुत
 दर्शन और अनधी दर्शन ॥ इस प्रकार ही दष्टों ही मदनयणि देवता का भी कहना ॥ पूष्णीकाय के एक
 प्रकार की मुति अज्ञान रूप नाकार पासनता है अनाकार पासनता नहीं है ऐसे ही पावत् वनस्पति
 काया पर्यन्त कहना ॥ चान्द्रिय क दो प्रकार की साकार पामनता है श्रुति ज्ञान और श्रुति अज्ञान

सागारपासगया ॥ एव तेह्रदियाण पुच्छा ? गोयमा ! दुविहा सागार
पासगया अणागारपासगता य सागारपासगता जहा वेह्रदियाण, चउरिदियाण भते !
अणागारपासगता कतिविहा पणत्ता ? गोयमा ! एगा चक्खुपसण अणागारपास
गता पणत्ता ॥ मणस्साण जहा जीवाण सेसा जहा जेरइया जाव वेमाणिया
॥ ४ ॥ जीवाण भते ! किं सागारपस्सी अणागारपस्सी ? गोयमा ! जीवा
सागारपस्सीवि अणागारपस्सावि ॥ से केणट्टण भते ! एव वुच्छइ जीवा सागारपस्सीवि
अणागारपस्सीवि ? गोयमा ! जण जीवा सुयणाणी अहिणाणी मणपज्जवणाणी केवल्लणाणी,

अनाकार पासगता नहीं है ॥ ऐसे ही तन्त्रि क भी कहना वौरिन्द्रिय के साकार पासगता भी है
और अनाकार पासगता भी है जित में साकार पासगता दो प्रकार की है शुत दान और
श्रुतप्रज्ञान अनाकार पासगता एक प्रकार की है वसुदर्शन विर्यवपचन्त्रि की पासगता
नरक जैसी कहना मनुष्य की पासगता समुचय जीव जैसी कहना और वाणव्यन्तर
उपोत्तिपी की पासगता मो नरक जैसी कहना ॥ ४ ॥ अहो भगवन् ! जीव
साकार प्रेपी है कि अनाकार प्रेपी है ? अहो गीतप ! जीव साकार प्रेपी भी है और अनाकार प्रेपी
भी है किस कारन अहो भगवन् ! एसा कहा कि जीव साकार प्रेपी भी है और अनाकार प्रेपी भी है ?

तेण चउरिदिया सागारवस्ती जेण चउरिदिया चवखुदमणी तेण चउरिदिया अणागार परकी स तणट्टण गोयमा ! एव नुचति ॥ मणुस्सा जहा जाया अयसेसा जहा नरइया जाव वेमाणिया ॥ ५ ॥ कवर्लीण भत ! इम रयणप्पम पुट्ठिं जागारेहि हुक्किं उवमार्हि दिट्ठहि वण्णहिं सठाणहिं पमागहिं पडायागहिं जसमय जाणति तं समयवासति ज समय पामति त समय जाणति ? गोयमा ! गो इणट्ठे समट्ठ ॥ ते कणट्टण भत ! एव वुच्चति कवर्लीण इम रयणप्पम आयागहिं जाव ज समय आकार करे कि यह रत्नप्रभा के सान काट ॥ प्रथम रत्न काट हजार पाजा का ई फिर वस्त्र काट मयस्र योजन, फिर बहुतय काट इत्यादि आकार को माने इतु ना किस कारन रत्नप्रभा कही, अथवा प्रथम रत्न काट होने स रत्नप्रभा कही ओपमा मा रत्नप्रभा पृथ्वी के रत्न काव किम प्रहार का ई तो कि पद्धराग जमा है इष्टी ने घगति क हटान्त कर विद्ध करना वण विभाग मळगत अमस्यात अनठ वण विभाग तदससण स रंघ रस स्पश मी ग्रहण करना मस्यान-नरक का आकार अन्तर मे पृथुम वाहिर स चतुरस्र प्रमान मो एक लात्व अस्सी हजार याजन पृथ्वी का पिंड तथा एक रज्जु प्रमान लम्बी चौड़ी सर्वथ घनादृषि भादि वज्रियाणि प्रति द्वार-मर्ष दिशा विविधा में एकमा विभाग इत्यादि निम समय में जानने हैं उस समय में हरात हैं गया और जिस समय मत्वे उरा समय जानने हैं वया ! जहा गामम ! यह अथ समर्प नहीं अयात एक ही समय में जानना और दत्तना ऐम दो कार्य

જાણતિ જો તંત્રસમયપાસતિ જ સમય પાસતિ જો ત સમય જાણતિ ? ગોયમા! સાગારે
સ પાળે ભયતિ અણાગારસ દસને ભવતિ, સે જેણદ્રેણ ગાયમા ! જાત્ર જો ત મમય
જાણતિ પત્ર જાત્ર અઠ સત્રમે ॥ પત્ર સોહમકપ્પ જાત્ર અન્નુત્ર મેયજગવિમાણા
અણુત્રરત્રિમાણા હંસિપ્પમારા પુઠ્ઠસિ પરમાણવોગલ પુપ્પસિય સ્વ જાત્ર
અણત પ્પદસિય સ્વ ॥ કયલીણ મતે ! રયણપ્પમ પુઠ્ઠવિ અણાગારહિં અહેઝહિં અણુ
વમાહેં અદિદ્દત્તહિં અવ્વણેહિં અમટાણેહિં અપમાણહિં અપ્પહોધારેહિં પાપતિ ન જાણતિ ?

नहीं हात है अहो भगवन् ! किस कारण से ऐसा कहा कि कुछ ज्ञानी इस रत्नपथा पृथ्वी के आकाश
राशि को जिस समय जानना है उस समय नहीं देखते हैं और जिस समय देखते हैं उस समय नहीं
मानते हैं ? अहा गानप ! ज्ञान साकारिक इहमा है और वस्तुन अनाकारिक होता है अथवा दोनों भिन्न ?
ज्ञान स त्रिद समय में ज्ञान स्वरूप आत्म प्रदेष्टु हात है उस समय दक्षन स्वरूप नहीं होते हैं और जिस
समय अधुन स्वरूप ज्ञान है उस समय ज्ञान स्वरूप नहीं होते हैं यों ज्ञान दर्शन क परस्पर विरुद्धता
ज्ञान स एक समय में जानना और दखना ये काथ नहीं हाते हैं इसालय अहो मौतम ! ऐसा कहा
जिस समय जानन है उस समय देखत नहीं हैं और जिस समय देखते है उग समय जानत नहीं हैं जिस
दकार यह रत्नपम, पृथ्वी का कहा उस हो प्रकार यावन सातवी नरक पर्यन्त कहना और ऐसे ही
साथम देवराज स पावल अस्तुत देवराज नचोष्टिक पाष अनुत्तर विमाने इत्यत्याग मारा पृथ्वी- परमानु

हुता गोयमा ! केवढे ! रयणप्पम पुढविं अणागारेहिं जाव पासति ण जाणसि॥
 सेफेणट्टण भत्ते ! एव बुद्धसि केवलीण इम रयणप्पम पुढविं अणागारेहिं जाव
 पासति ण जाणसि ? गोयमा ! अणागारेसे दसणे भवति सागरे से णणे भवति,
 से तेणट्टणं गोयमा ! एव बुद्धसि केवली इम रयणप्पम पुढविं अणागारेहिं जाव
 हेत्तिपठमार पुढविं परमाणुपोगल जाव अणत पदेसिय खव पासति ण जाणसि ॥
 इति पणवणाए भगवद्देए पात्तिणिआ तीसइम पय सम्मच्च ॥ ३० ॥

पुद्गल द्विप्रेदीप्तिक स्कन्ध यावत् अनन्त प्रदीप्तिक स्कन्ध तत्त मा का एक सायही कथन करना अशो
मगबन् केवल ज्ञानी रत्नप्रभा पृथ्वी का मनाकार कर भोक्तुकर अनोपमाकर अदृष्टान्त कर अवर्णोदिकर
भसस्थान कर भ्रममान का अमत्याहारकर देखते हैं परतु मानते नहीं हैं अशो गौतम ! केवल
ज्ञानी रत्नप्रभा पृथ्वी को मनाकार म यावत् देखते हैं परतु मानते नहीं हैं अशो मगबन् ! किस
कारण ऐसा कह कि केवली रत्नप्रभा पृथ्वी को आकार से यावत् देखते हैं परतु मानते नहीं हैं !
अशो गौतम ! कवलीके मनाकार दसन है साकार ज्ञान है इस खिये ऐसा कहा कि केवली इस
रत्नप्रभा पृथ्वी के आकार को यावत् देखते हैं परतु मानते नहीं हैं ऐसे ही यावत् इषत प्रागमार
पृथ्वी पर्यंत करना, परमाणु पुटल से अनन्त प्रदशीक स्कन्ध देखते हैं परतु जानते नहीं हैं ॥ इति पञ्चमना-
भगवती का पामनता नामक वीसठा पद्य समाप्तम् ॥ ३० ॥

॥ एकत्रिंशत्तमः सङ्की पदम् ॥

जीवन्मर्त्य भंते ! किसण्णी असण्णी नासण्णी नो असण्णी ? गोयमा

असण्णीवि, जो सण्णी जाअसण्णीवि ॥ जरइयाण पुच्छा ? गोयमा ! नेरइ

असण्णीवि जो जोसण्णी ना असण्णी एव अमुरकुमारा जाव यणियकुमारा पुच्छवि

काइयाण पुच्छा ? गोयमा ! नोसण्णी असण्णी जो नभण्णी जा असण्णी एव जाव यणिय

तेइदिय वडारेंदियावि ॥ मणुस्सा जहा जीवा पणियिग तिरियसाज्जोभिया णमत्तगय

अर एकतीमवा सहा असणी पद कहने हैं ॥ भरो भगवन् ! नीर सङ्गी है कि ममहा ठ कि नासणी

नोपसङ्गी है ? (जा भाव रहमाव के पर्यावा लोबन पुक्त अबवा भिन्नहस्तरणादिकप क विज्ञान युक्त

पद सङ्गी और इस लक्षणों से विपरित यह असङ्गी क्या केवल ज्ञानी और सिद्ध को सङ्गी नो असङ्गी

केवलों के मत ठे पणु वन्दर विषय को प्राण करत नहीं दें) भरो गोतम ! नीर सङ्गी मी है जहाही

धी है नीर ना सङ्गी नो असङ्गी है ॥ भदा भगवन् ! नरीय सङ्गी है कि असङ्गी है कि नो भङ्गी नो

असङ्गी है ! भरो गोतम ! नेरीये सङ्गी मी है असङ्गी मी है [असङ्गी परकर मयम नरकमें उत्पन्न दाता

जहाँ तक मनःमात्रपर्याय का वचन नहीं करे वहाँ तक असङ्गी कहा जाता है इस अप्रसा से परतु नो

भङ्गी नो अपङ्गी नहीं है वेदे ही अष्टावक्र से ज्ञान स्थिति कारण वर्णन कहता है

॥ द्वात्रिंशत्तम संजया पदम् ॥

जीवाण भते ! किं सजया, असजया संजयासजया, जो सजया जो असजया नो सजयासजया ? गोयमा ! जीवा सजताथि, असजयाथि, सजयासजयाथि, जो मजना नो असजता जो सजतासजताथि । नेरइयाण भते ! किं सजया, असजया, सजयासजया जो सजया नो असजया जो सजयासजया ? गायमा ! नेरइया जो सजता, असजता, नो जोसजयासजया, जोसजता नो असजता जोसजतासजता, एवं जाव वद्धरिदिया, धंघिदिय तिरिक्खजोणियाण पुच्छा ? गोयमा ! वंघिदिय तिरिक्खजोणिया, जोसजया असज

अव सयति भसयति की पृच्छा का बचीसवा पद करत हैं ॥ अहो भगवन् ! जीव बवा संयति है कि असंयति है कि सयता सयति हैं कि नो सयति नो असयति नो सयता संयती है ? (मर्ब विरतिसायु का संयति करते हैं, अयति को असंयति करते हैं, वतामोले-वेणवति-आवक को सयतासयती करते हैं सिद्ध को नोर्मयति नाअसयति नोसयतासंयति करते हैं) ? अहो गोसम ! जीव सयति भी है असयति भी है सयनाअयति भी है और नोसयति नोअसंयति नोसयतासयति भी है अहो भगवन् ! नेरीय बवा संयति है इरपादि चारों प्रश्न ! अहो गोसम ! नेरीये सयति भी नहीं है सयता संयति भी नहीं और नो सयती नो असंयती ना सयताभयती भी नहीं है परंतु एक असंयति है ॥ येने ही ठखो ही सुवनपसिदेव, पावो एगार हीनों विक्खमान्दय यद सब असयति है पचेन्दिअ सिद्धिअ अनेयति है ओर पपकांसमति भी है

साथी, सज्जतासज्जता, जो जोसज्जता जो असज्जता जो असज्जता ॥ मणुरसा
पुष्ठा'गोयमा'मणुस्सा सज्जतावि असज्जतावि, सज्जतामज्जतावि जो जोसज्जता जो असज्जता
जो संज्जतासज्जता वाणमतर जे इसिया वमाणिया जहा फरइया ॥ सिद्धाण पुष्ठा ?
गोयमा ! सिद्धा नो सज्जता नो असज्जता नो सज्जतासज्जता, जो सज्जता जो
असज्जता जो सज्जतासज्जता । सज्जतामज्जतामीसगाय, जोवा तहव मणुस्साय,
सज्जत गइया तिरिया ॥ ससा असज्जता होति ॥ इति पणवणाए भगवइए
सज्जय पय वसीसतिमं सम्मप ॥ ३२ ॥

क्यों कि जातिस्मरणदि क प्रभाव स वेष्टकविपना पारन करते हैं परंतु सपति और ना भयति नो
अभयति नो सपता सपति नहीं है मनुष्य सपती मी है साधु आश्रित, असपति हैं अपनी आश्रित,
सवनामंयही मी है आकर आश्रित, परंतु नो भवति नो असपति नो संयता सपती नहीं है ॥ बाप
व्यम्बर उपोत्तिनी और वैमानिक गीये क मैत्र एक असपति है सिद्ध प्रगबन् ' संयति मी नहीं है
अभयती मी है संयतासपती मी नहीं है परंतु नो भयति नो असपति नो संयतासपती है गोयर्भ
सर्व प्रती सपति, प्रव रतिन अंदयती, प्रताप्रती [मित्र] श्रावक जीव और मनुष्यमें सीनों हैं तिरिय पचोव
असपति और सपतासपति हैं और सब सव असपति हैं ॥ इति पणवना पणवती का संयतासपता
नामक वसीसता वद समाप्त ॥ ३२ ॥

॥ तयस्त्रिशतम अवाधि पदम् ॥

भेद विमग मठाणे अर्द्धिभतर गहिरय दसोही ॥ आहि तस्यस्वय मुष्टी पाहेवाय चेव अपाहि
वाइ ॥ १ ॥ कतिगिदाण रते! आही पण्णचा ? गायमा ! दुविहा ओही पण्णचा तजहा
मन्तरइयाय सओस्वसमियाय दाण्ट गनपमइया तजहा देवाणय नेरइयाय दाण्डंखआवस
मिया तजहा मणूसाण पंचाविय तिरिस्वजागियाणय ॥ २ ॥ नेरइयाण मत ! केवइयं स्वत्त
ओहिणा जाणति पासति ? गायमा! जहण्णे म अक्खगाठय उक्कोसेण वच्चारि गाठयाइ

अथ अवाधि पद कइव है ॥ इस के द्वारों के नाम १ भवद्वार, २ विषयद्वार, ३ भस्वानद्वार, ४
आभ्यन्तरद्वार, ५ वायुद्वार, ६ देवावाधिद्वार, ७ अवधि सपद्वार, ८ बुद्धिद्वार, ९ प्रतिपादिद्वार, और १०
प्रसतिगतिद्वार, ॥ १ ॥ अही मगवन् ! यवाधिज्ञान कितने प्रकार का कहा है ! अथा गौतम ! अवधि
नाम का प्रकार का कहा है, वचया—१ भव प्रत्यक्ष भी जन्म से हाव और २ सयापन्नम प्रत्यक्ष जने
करने करने से होने इस में म भव प्रत्यक्ष अवधि के दो मन्त्र सचया—१ द्रवता क और २ तरक क
[तर्पकर के भी म भव प्रत्यक्ष ही अवधि मान होता है यन्तु याद दाने स यही प्राण नहीं कि ५] सवा
१ भव प्रत्यक्ष क भी दो भद कह है, वचया—१ अनुप्य क और २ विषय पचन्द्रिय के ॥ २ ॥ दूसरा

ओहिणा जाणति पासति ॥ रयण्यमा पुढवि गेरइयाण भते ! कयसिय खर
ओहिणा जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेण अण्डुट्टाइ गाठयाइ उक्कोसेण चत्तारि
गाठयाइ ओहिणा जाणति पासति, सक्कप्यमा पुढवि गेरइया जहण्णेण
उक्कोसेण अण्डुट्टाइ ओहिणा जाणति पासति, वालुयप्यमा पुढवि गेरइया जहण्णेण
अण्डुट्टाइ गाठयाइ ओहिणा जाणति पासति उक्कोसेण तिण्णिगाठयाइ, ओहिणा जाणति
पासति ॥ पकण्यमा पुढवि गेरइयाणं पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दुण्णि गाठयाइ
उक्कोसेण अण्डुट्टाइ गाठयाइ ओहिणा जाणति पासति, धूमप्यमा पुढवि गेरइयाण

विषय द्वार—अहो मगबन् ! नेरीये अबवि ज्ञान करके कितना सब जानत है देखते है ? अहो गौतम !
अयम्य आवा कोश उक्कए बार कोश अबवि ज्ञान कर जानते देखते है अब अलग २ तरक का कहते
है—रत्नप्रमा के नरीय अयम्य साह तीन काश उक्कए बार कोश, छर्कर प्रमा के नरीय अयम्य तीन
काश उक्कए साह तीन कोश, बाहुर प्रमा के नेरीय अयम्य अट्टाइ कोश उक्कए तीन काश, एक प्रमा के
नेरीय अयम्य दो कोश, उक्कए अट्टाइ कोश पूजप्रमा के नेरीये अयम्य देह काश उक्कए दा कोश तम प्रमा के
नरीय अयम्य एक कोश उक्कए देह काश, और तमप्रमा प्रमा के नेरीये अयम्य आपा काश उक्कए एक

पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण दिवहु गाठयाइ, ठकोसेण दोगाठयाइ ओहिणा जाणति पासति तमा पुढवि पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण गाठय ठकोसेण दिवहु गाठयाइ ओहिणा जाणति पासति, अहे सत्तमाए पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण अह गाठयाइ ठकोसेण गाठयाइ ओहिणा जाणति पासति ॥ असुरकुमाराण भते ! ओहिणा कंवतिय खेचं जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेण पण्णवीस जोयणाइ ठकोसेण असखेज वीधसमे ओहिणा जाणति पासति ॥ नागकुमाराण पुच्छा ? गोयमा ! जहण्णेण पण्णवीस जोयणाइ ठकोसेण असखेज वीध समुह ओहिणा जाणति पासति, एव जात्र धणियकुमारा ॥ पविंदिय तिरिक्ख जोणियाण भते ! कंवतिय

कोट सप्त अर्थात् ज्ञान कर ज्ञात देखत है असुरकुमार देवता जघन्य पक्षीस योजन उत्कृष्ट असम्प्राप्त द्वीप समुद्र यह नियम है कि पन्थापम के नागपुत्र बाछे सख्यावद्दीप समुद्र और साग रोपम के जापुत्र बाछे असम्प्राप्त द्वीप समुद्र अर्थात् ज्ञान कर जानते देखत है नागकुमार देवता जघन्य पक्षीस यामन उत्कृष्ट संख्यावद् द्वीप समुद्र अर्थात् ज्ञान से जानते देखत है ऐसे ही यावत् स्तनिव कुमार देवता के कहना तिर्यक्ष पंचेन्द्रिय जघन्य भगुल के अभख्यावद् भाग उत्कृष्ट असम्प्राप्त

अग्रेवाण भते ! कवसिय खेत्त ओहिणा जाणति पासति ? गोयमा ! जहण्णेणं
अगुलस्स असखेज्जातिमाग उक्कोसेण अहेसत्तमाए पुढधीए हेट्ठिस्स चारिमत्त तिरियं खत्ते
जात्त असखज्ज दीप्प समुदे उट्ठु जात्त सयाइ विमाणाइ आहिणा जाणति पासति ॥
अणुत्तरोत्तवाइया देवाण भते ! कवतिय खेत्त ओहिणा जाणति पासति ? गोयमा !
समिप्पत्तागगालि ओहिणा जाणति पासति ॥ ३ ॥ येरइयाण भते ! ओही
किं सठिए वण्णत्त ? गोयमा ! सप्पागार सठिए वण्णत्ते, असुरकुमागज पुप्फा ?
गोयमा ! पल्लुगसठाण सठिए एव जात्त थणियकुमाराण पक्विदिय तिरिक्खजोवियाणं

अणुत्त देवलोक के देवता उंचा भिच्छी रहता ही देखे, नीचा पाँचवी नरक के घरमात्र तक देखे नीचे
की और पथ्य की प्रवेयक क देवता उंचा भिच्छी रहता ही पंचे नीचे छठी नरक के चरमात्र तक देखे
ऊपर के प्रवेयक क देवता उंचा भिच्छी रहता ही नीचे सातवी नरक का तीर्थ का चरमान्त अनुत्तर
विमान के देवता लोक नाम्हा में, कुछ कम भुक्तिविमोक्ष छोड़कर संपूर्ण लोक जाने ॥ ३ ॥ सीसरा स
संस्थान द्वार ओहो भगवन् ! नरीये का भवधि ज्ञान, किस संस्थानपर है ? ओहो गौतम ! विषाह के
संस्थान सस्थित है अथर कथार देखता रहता पल्लव (पल्लवगण्डे की लोचनी) के संस्थान, पत्ते ही पावत

पुच्छा ? गोयमा ! नाणा संटाण सठिए पण्णत्त एवमणसाणविघाजमतराणं पुच्छा ? गोयमा ! पढह सटाण सठिए पण्णत्ते जोइसियाणं पुच्छा ? गोयमा ! झझरि सटाण सठिए पण्णत्ते, साहम्मग देवाण पुच्छा ? गोयमा ! उरुमुइंगागार सठिए पण्णत्त एव जाव अण्णुय देवाण गेविज्जग देवाणं पुच्छा ? गोयमा ! पुक्कवगारि सठिए पण्णत्ते, अणुत्तरोववाइयाण पुच्छा ? गोयमा ! जव्वालिया सठित ओही पण्णत्ते ॥ ४ ॥ जेरइयाण ओहिस्त मंत ! किं अंतो, वाहि ? गोयमा ! अंतो णो वाहि, एवं जाव यणियकुमारा, पंचिदियतिरिक्खजोणियाण

स्वनिष्ठ कुमार दत्ता का कहना, विर्येष पंचेन्द्रिय माना प्रकार के संस्थान से देखे, ऐसे ही मनुज्य का भी कहना वाचस्पत्यर देवता पदर [वादिम] के संस्थान देखे, ज्यातिवी देवता झालर के संस्थान देखे, साधर्म्य दत्ताक के दत्ता उर्दे [त्रह] पादक के संस्थान देखे, ऐसे ही बारवे अच्युत देवलोके पर्यंत कहना, प्रत्येक के देवता फूलकी चमेरी के संस्थान देखे और अनुत्तर विमान के देवता अवन नाष्ठिक [मूलल वान क पास में के] संस्थान देखे, ॥ ॥ अब बाध-आम्यन्तर द्वार करते हैं अहो भगवन् ! नेरीय के आम्यन्तर अचोपे ज्ञान है बाह्य अवधि ज्ञान है ! अहो गौतम ! आम्यन्तर अवधि ज्ञान है परंतु बाह्य अवधि ज्ञान नहीं है एव ही पादर स्तानिकुमार तक कहना पंचेन्द्रिय विर्येच योगिक के आम्यन्तर तर्ही होता है

स्थान	भेद	उपकृत विषय		मस्थान	वाह्य अर्थोत्तर	दृष्ट सर्व	अनुगामी अनुगामी	अवस्थित अनवस्थित	प्रतिपाद्य प्रतिपाद्य
		उपर	नीचे						
नरक	भत पूषक	१, २, ३, ४, ५, ६, ७, ८, ९, १०, ११, १२, १३, १४, १५, १६, १७, १८, १९, २०, २१, २२, २३, २४, २५, २६, २७, २८, २९, ३०, ३१, ३२, ३३, ३४, ३५, ३६, ३७, ३८, ३९, ४०, ४१, ४२, ४३, ४४, ४५, ४६, ४७, ४८, ४९, ५०, ५१, ५२, ५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०, ६११, ६१२, ६१३, ६१४, ६१५, ६१६, ६१७, ६१८, ६१९, ६२०, ६२१, ६२२, ६२३, ६२४, ६२५, ६२६, ६२७, ६२८, ६२९, ६३०, ६३१, ६३२, ६३३, ६३४, ६३५, ६३६, ६३७, ६३८, ६३९, ६४०, ६४१, ६४२, ६४३, ६४४, ६४५, ६४६, ६४७, ६४८, ६४९, ६५०, ६५१, ६५२, ६५३, ६५४, ६५५, ६५६, ६५७, ६५८, ६५९, ६६०, ६६१, ६६२, ६६३, ६६४, ६६५, ६६६, ६६७, ६६८, ६६९, ६७०, ६७१, ६७२, ६७३, ६७४, ६७५, ६७६, ६७७, ६७८, ६७९, ६८०, ६८१, ६८२, ६८३, ६८४, ६८५, ६८६, ६८७, ६८८, ६८९, ६९०, ६९१, ६९२, ६९३, ६९४, ६९५, ६९६, ६९७, ६९८, ६९९, ७००, ७०१, ७०२, ७०३, ७०४, ७०५, ७०६, ७०७, ७०८, ७०९, ७१०, ७११, ७१२, ७१३, ७१४, ७१५, ७१६, ७१७, ७१८, ७१९, ७२०, ७२१, ७२२, ७२३, ७२४, ७२५, ७२६, ७२७, ७२८, ७२९, ७३०, ७३१, ७३२, ७३३, ७३४, ७३५, ७३६, ७३७, ७३८, ७३९, ७४०, ७४१, ७४२, ७४३, ७४४, ७४५, ७४६, ७४७, ७४८, ७४९, ७५०, ७५१, ७५२, ७५३, ७५४, ७५५, ७५६, ७५७, ७५८, ७५९, ७६०, ७६१, ७६२, ७६३, ७६४, ७६५, ७६६, ७६७, ७६८, ७६९, ७७०, ७७१, ७७२, ७७३, ७७४, ७७५, ७७६, ७७७, ७७८, ७७९, ७८०, ७८१, ७८२, ७८३, ७८४, ७८५, ७८६, ७८७, ७८८, ७८९, ७९०, ७९१, ७९२, ७९३, ७९४, ७९५, ७९६, ७९७, ७९८, ७९९, ८००, ८०१, ८०२, ८०३, ८०४, ८०५, ८०६, ८०७, ८०८, ८०९, ८१०, ८११, ८१२, ८१३, ८१४, ८१५, ८१६, ८१७, ८१८, ८१९, ८२०, ८२१, ८२२, ८२३, ८२४, ८२५, ८२६, ८२७, ८२८, ८२९, ८३०, ८३१, ८३२, ८३३, ८३४, ८३५, ८३६, ८३७, ८३८, ८३९, ८४०, ८४१, ८४२, ८४३, ८४४, ८४५, ८४६, ८४७, ८४८, ८४९, ८५०, ८५१, ८५२, ८५३, ८५४, ८५५, ८५६, ८५७, ८५८, ८५९, ८६०, ८६१, ८६२, ८६३, ८६४, ८६५, ८६६, ८६७, ८६८, ८६९, ८७०, ८७१, ८७२, ८७३, ८७४, ८७५, ८७६, ८७७, ८७८, ८७९, ८८०, ८८१, ८८२, ८८३, ८८४, ८८५, ८८६, ८८७, ८८८, ८८९, ८९०, ८९१, ८९२, ८९३, ८९४, ८९५, ८९६, ८९७, ८९८, ८९९, ९००, ९०१, ९०२, ९०३, ९०४, ९०५, ९०६, ९०७, ९०८, ९०९, ९१०, ९११, ९१२, ९१३, ९१४, ९१५, ९१६, ९१७, ९१८, ९१९, ९२०, ९२१, ९२२, ९२३, ९२४, ९२५, ९२६, ९२७, ९२८, ९२९, ९३०, ९३१, ९३२, ९३३, ९३४, ९३५, ९३६, ९३७, ९३८, ९३९, ९४०, ९४१, ९४२, ९४३, ९४४, ९४५, ९४६, ९४७, ९४८, ९४९, ९५०, ९५१, ९५२, ९५३, ९५४, ९५५, ९५६, ९५७, ९५८, ९५९, ९६०, ९६१, ९६२, ९६३, ९६४, ९६५, ९६६, ९६७, ९६८, ९६९, ९७०, ९७१, ९७२, ९७३, ९७४, ९७५, ९७६, ९७७, ९७८, ९७९, ९८०, ९८१, ९८२, ९८३, ९८४, ९८५, ९८६, ९८७, ९८८, ९८९, ९९०, ९९१, ९९२, ९९३, ९९४, ९९५, ९९६, ९९७, ९९८, ९९९, १०००	अनुगामी अनुगामी	अवस्थित अनवस्थित	प्रतिपाद्य प्रतिपाद्य				
असुर कुमार	भत पूषक	५३, ५४, ५५, ५६, ५७, ५८, ५९, ६०, ६१, ६२, ६३, ६४, ६५, ६६, ६७, ६८, ६९, ७०, ७१, ७२, ७३, ७४, ७५, ७६, ७७, ७८, ७९, ८०, ८१, ८२, ८३, ८४, ८५, ८६, ८७, ८८, ८९, ९०, ९१, ९२, ९३, ९४, ९५, ९६, ९७, ९८, ९९, १००, १०१, १०२, १०३, १०४, १०५, १०६, १०७, १०८, १०९, ११०, १११, ११२, ११३, ११४, ११५, ११६, ११७, ११८, ११९, १२०, १२१, १२२, १२३, १२४, १२५, १२६, १२७, १२८, १२९, १३०, १३१, १३२, १३३, १३४, १३५, १३६, १३७, १३८, १३९, १४०, १४१, १४२, १४३, १४४, १४५, १४६, १४७, १४८, १४९, १५०, १५१, १५२, १५३, १५४, १५५, १५६, १५७, १५८, १५९, १६०, १६१, १६२, १६३, १६४, १६५, १६६, १६७, १६८, १६९, १७०, १७१, १७२, १७३, १७४, १७५, १७६, १७७, १७८, १७९, १८०, १८१, १८२, १८३, १८४, १८५, १८६, १८७, १८८, १८९, १९०, १९१, १९२, १९३, १९४, १९५, १९६, १९७, १९८, १९९, २००, २०१, २०२, २०३, २०४, २०५, २०६, २०७, २०८, २०९, २१०, २११, २१२, २१३, २१४, २१५, २१६, २१७, २१८, २१९, २२०, २२१, २२२, २२३, २२४, २२५, २२६, २२७, २२८, २२९, २३०, २३१, २३२, २३३, २३४, २३५, २३६, २३७, २३८, २३९, २४०, २४१, २४२, २४३, २४४, २४५, २४६, २४७, २४८, २४९, २५०, २५१, २५२, २५३, २५४, २५५, २५६, २५७, २५८, २५९, २६०, २६१, २६२, २६३, २६४, २६५, २६६, २६७, २६८, २६९, २७०, २७१, २७२, २७३, २७४, २७५, २७६, २७७, २७८, २७९, २८०, २८१, २८२, २८३, २८४, २८५, २८६, २८७, २८८, २८९, २९०, २९१, २९२, २९३, २९४, २९५, २९६, २९७, २९८, २९९, ३००, ३०१, ३०२, ३०३, ३०४, ३०५, ३०६, ३०७, ३०८, ३०९, ३१०, ३११, ३१२, ३१३, ३१४, ३१५, ३१६, ३१७, ३१८, ३१९, ३२०, ३२१, ३२२, ३२३, ३२४, ३२५, ३२६, ३२७, ३२८, ३२९, ३३०, ३३१, ३३२, ३३३, ३३४, ३३५, ३३६, ३३७, ३३८, ३३९, ३४०, ३४१, ३४२, ३४३, ३४४, ३४५, ३४६, ३४७, ३४८, ३४९, ३५०, ३५१, ३५२, ३५३, ३५४, ३५५, ३५६, ३५७, ३५८, ३५९, ३६०, ३६१, ३६२, ३६३, ३६४, ३६५, ३६६, ३६७, ३६८, ३६९, ३७०, ३७१, ३७२, ३७३, ३७४, ३७५, ३७६, ३७७, ३७८, ३७९, ३८०, ३८१, ३८२, ३८३, ३८४, ३८५, ३८६, ३८७, ३८८, ३८९, ३९०, ३९१, ३९२, ३९३, ३९४, ३९५, ३९६, ३९७, ३९८, ३९९, ४००, ४०१, ४०२, ४०३, ४०४, ४०५, ४०६, ४०७, ४०८, ४०९, ४१०, ४११, ४१२, ४१३, ४१४, ४१५, ४१६, ४१७, ४१८, ४१९, ४२०, ४२१, ४२२, ४२३, ४२४, ४२५, ४२६, ४२७, ४२८, ४२९, ४३०, ४३१, ४३२, ४३३, ४३४, ४३५, ४३६, ४३७, ४३८, ४३९, ४४०, ४४१, ४४२, ४४३, ४४४, ४४५, ४४६, ४४७, ४४८, ४४९, ४५०, ४५१, ४५२, ४५३, ४५४, ४५५, ४५६, ४५७, ४५८, ४५९, ४६०, ४६१, ४६२, ४६३, ४६४, ४६५, ४६६, ४६७, ४६८, ४६९, ४७०, ४७१, ४७२, ४७३, ४७४, ४७५, ४७६, ४७७, ४७८, ४७९, ४८०, ४८१, ४८२, ४८३, ४८४, ४८५, ४८६, ४८७, ४८८, ४८९, ४९०, ४९१, ४९२, ४९३, ४९४, ४९५, ४९६, ४९७, ४९८, ४९९, ५००, ५०१, ५०२, ५०३, ५०४, ५०५, ५०६, ५०७, ५०८, ५०९, ५१०, ५११, ५१२, ५१३, ५१४, ५१५, ५१६, ५१७, ५१८, ५१९, ५२०, ५२१, ५२२, ५२३, ५२४, ५२५, ५२६, ५२७, ५२८, ५२९, ५३०, ५३१, ५३२, ५३३, ५३४, ५३५, ५३६, ५३७, ५३८, ५३९, ५४०, ५४१, ५४२, ५४३, ५४४, ५४५, ५४६, ५४७, ५४८, ५४९, ५५०, ५५१, ५५२, ५५३, ५५४, ५५५, ५५६, ५५७, ५५८, ५५९, ५६०, ५६१, ५६२, ५६३, ५६४, ५६५, ५६६, ५६७, ५६८, ५६९, ५७०, ५७१, ५७२, ५७३, ५७४, ५७५, ५७६, ५७७, ५७८, ५७९, ५८०, ५८१, ५८२, ५८३, ५८४, ५८५, ५८६, ५८७, ५८८, ५८९, ५९०, ५९१, ५९२, ५९३, ५९४, ५९५, ५९६, ५९७, ५९८, ५९९, ६००, ६०१, ६०२, ६०३, ६०४, ६०५, ६०६, ६०७, ६०८, ६०९, ६१०							

सोपम ईशान मनल्लुपा पेट	नमयक	मयमविमान की श्वना	रतनप्रभा	सिं यर्स द्वीप समुद्र असंख्यात द्वीप समुद्र	बुध्दमुर्दग के स्थान	अध्यक्ष	देव मे	अनुगामी	अवांश्चित	प्रम
प्रम इ	"	"	शुर्करप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
नतिक दे	"	"	शालुकप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
महानुक्त, सहस्रार	"	"	पंकप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
आपन	"	"	घुन्नप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
माणन भार	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
न अरण्य	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
प्रयम की	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
थिक	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
इमरी	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
नीमरी विक्र	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
गोचमनुष	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
रियमान क	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"
वि	"	"	तमप्रभा	"	"	"	"	"	"	"

ॐ चतुर्विंशत्तम परिचारणा पदम् ॐ

अर्जुनसमायाहार आगरे भोयगादुया वागल भेवजाणति, अस्मत्सणेय,
 अहिगा ॥ १ ॥ सम्मत्तरस अहि मे, मतापरियारणाय वेधन्वा काफासे म्मे,
 मङ्ग मजेय अद्यादुहु ॥ २ ॥ १ ॥ जेरदुगणं मत ! अणतराहारा तत्तोपिन्व-
 वणया, तनापरियादुण्या ततो परिजामण्या ततागरेयारण्या ततो
 पञ्चा विटास्त्रिणया ? हुता गायमा ! जेरदुया अणतराहारा ततोपिन्वक्कण्या

मत्र पौनीसरे पद में बंद परिणाम करते हैं इन के द्वारों के नाम १ अन्तर आहार द्वार, २ आर्माण
 भनाभोम आहार द्वार, ३ आहार क पुद्रल जानन का द्वार, ४ मथ्यरमाय द्वार, ५ सम्यक्त्व का
 कोमंगय द्वार, ६ परिधारणा द्वार, ७ काया स्वर्ध रूप कर्ममन कीर अपरेचारता को अत्यवदुतर द्वार
 ८ १ ॥ धर्म मगर्धम् ! नेरीय तराज हाकर तम ही मयय अन्तर आहार करने फिर क्षीर की
 निवर्णन करत हैं, फिर येका पाग्य पुद्रल पण्णियन हैं, फिर पुद्रल पण्णियमाद् ऊंच नीच मयन अद्याद
 रूप परिचात्ता करत हैं तब फिर वेक्यय क्षीर करने हैं क्या ! हो गौतम ! नेरीय नरक में उत्पन्न
 होकर तरकाले तम ही कर्मय अन्तर मयय आहार प्ररण करत हैं । कर क्षीर निपन्नावे हैं फिर तब

गोयमा ! तच्च जात्र परियारणया णो वेवण विउव्वणता ॥ एव जात्र चउरिंदिया,
णवर वाउकाइयाण पौंचदिय । तिरिक्खजोणिया मणुस्साय जहा णेरइया, वाणमत्तरा
जोइमिया वेमाणिया जहा अमुरकुमारा ॥ ४ ॥ णेरइयाण भते ! आहार किं
आमोगनिव्वत्तिए अणामोगनिव्वत्तिए ? गायमा ! आमोगनिव्वत्तिण्वि अणामोगनि-
वत्तिएवि, एव असुरकुमाराण जाव वेमाणियाण णवर एगिंदियाण नो आमोगनि

परिणमोने फिर इन्द्रिय आदि क रूपन परिणमे ठेप नीच होबे वष्टा कर तब फिर वैक्रय कर ! अरो
गौतम ! उक्त प्रकार ही कहना परतु वैक्रय करन का नहीं कहना ऐसे ही यावत् चौरिन्द्रिय क दहक
पर्यंत कहा जिस में इनना विषय वाक्याय के वैक्रय करने का कहना पचन्द्रिय विषय योनिक ॥
और मनुष्य का जैसा नेगीया का कहा तथा ही कहना ॥ णव्वयन्तर ज्यातिवी वेमानिक का जैसा असुर
कुमार का कहा वैसा कहना ॥ ४ ॥ दूसरा द्वार अहो भगवन् ! नेगीये क आमोग निवृत्ति आहार है कि
अनाभाग निवृत्ति आहार है ! (मन की इच्छा सहित आहार करे वह आमोग निवृत्ति और इच्छा बिना
समय २ आहार कर वह अनाभाग निवृत्ति आहार कहलाता है] अहां गौतम ! आमाग निवृत्ति आहार
भी है और अनामागनिवृत्ति आहार भी है इस प्रकार ही अनुरकुमार ग यावत् वेमानिक पर्यन्त चौबीस
हो ईदक का कहना जिसमें इतना विशेष एकेन्द्रिय के आमोग निवृत्ति आहार नहीं है भगवत् वे जानकर मा

व्यचिष्ट, अपाभोगनिव्वचिष्ट ॥ ५ ॥ जे पोगले आहारचत्ताए
गिण्टति ते किं जाणति पासति आहारति उदाहु न याणति न पासति आहारति ?
गोयमा ! न जाणति न याणति आहारति एव जाव तद्दिया स्वतरिदियाण
पुच्छा ? गोयमा ! अरथगतिया जाणति पासति आहारति अरथगतिया न जाणति
पासति आहारति ॥ पथिदियतिरिक्खजोणिथाण पुच्छा ? गोयमा ! अरथगतिया
जाणति पासति आहारति अरथगतिया जाणति न पासति आहारति, अरथगतिया न जाणति

हार नही करते है परतु अनामोग निवृत्ति आहार ही है ॥ ५ ॥ अहो भगवन् ! नेरीग जो आहार के पुद्गल ग्रहण करते है
उन का जानक वस्त्र कर आहार करते है काहिय या विना दत्त विना आने आहार करते है ? अहो
गौतम ! विना ज्ञान विना दत्त आहार करते है क्यों कि राम आहार के पुद्गल मूलम इने म नारकी के
अवधि यून इने म जान सकत दत्त सकते नहीं है, ऐसे ही यावत् सद्यस्य तक ज्ञाना पोरिन्त्रिय की
पृच्छा ? अहा गौतम ! कितनक नहीं जानत है परतु धष्ठु ईद्विग स दत्त कर आहार करते है, कितनक
विना जाने विना दत्त आहार करते है [पिथ्यात्वाश्रय मे न आने अपकार कर न दत्त] पचन्त्रिय
तियेय योनिक की पृच्छा ? अहा गौतम ! कितनेक ज्ञान कर जान कर आत्मा कर दत्त कर भी
आहार करते है, कितने सशो क ज्ञान कर जानते है परतु आत्मा का निषय धिराथ इने मे नहीं दत्ता

जहाँ इन्द्रिय उद्वेग पड़मे अभियं तहाँ मण्डित्य जात्र से तेण्डुण गोयमा ! एवं
 बुधति ॥ ६ ॥ जेरइयाण भते ! कथतिया अस्सवसाणा पणत्ता ? गायमा !
 असख्खा अस्सवसाणा पणत्ता तण भते ! किं पमत्था अपमत्ता ? गोयमा ! पसत्थावि,
 अपमत्थावि एव जात्र वेमाणाणा ॥ जेरइयाण भते ! किं सम्मसा भिगमा, मिच्छसा भिगमा,
 समामच्छत्ता भिगमा ? गायमा ! सम्मसा भिगमावि मिच्छत्ता भिगमावि, सम्मामिच्छत्ता
 भिगमावि एव जात्र वमानियावि, जवर एगित्तिया विगलित्थिया जे, सम्मत्ता भिगमा,
 मिच्छत्ता भिगमावि, जे सम्मामिच्छत्ता गमा ॥ ८ ॥ देवाण भते ! किं सदेवीया

मायिक सम्पदक रहा है वे जानन है ज्ञान कर गो जिस प्रकार प्रपण वरुण से कहा वेमा कहना यात्र
 इन्द्रिय अहो तोतव ! एमा कहा ॥ ६ ॥ जा प्रपणत्त ! नारदी क कितन प्रका के प्रपणत्तमाय
 [परिणाम] कहा है ? अहा गौतम ! म स्यान् प्रपणत्तमाय कहे है प्रहा भगवन् ! वे प्रपणत्तमाय प्रपणत्त
 (प्रपणत्त है) कि प्रपणत्त (बुरे) है ! अह गातम ! प्रपणत्त मी है और अपमत्त मी है यों यात्र वेमा
 निरु पर्यन्त कहा ॥ ७ ॥ अहा भगवन् ! नगीय सम्पत्तम दन्तुत्त है कि विपत्तत्व दन्तुत्त है कि मित्र के
 सम्पत्त है ! अहा गौतम ! तीनों प्रकार के है यों यात्र वैपत्ति पर्यन्त करना परंतु दन्तना विपत्त
 एवम्पत्त और विरुक्कन्तिप्र सम्पत्त और मित्र रही नहीं है परंतु केवल प्रपणत्त रही है (यही निरु

सपरिवारा, सदेवीया अपरिवारा, अदेवीया अपरिवारा ? गोयमा !
अथगतिया देवा सदेवीया सपरिवारा, अथगतिगा देवा अदेवीया सपरिवारा, अथगति
या देवा अदेवीया अपरिवारा जो चवण देवा सदेवीया अपरिवारा ॥ सेकेण्टेण भते !
एव युञ्जति अथगतिया देवा सदेवीया सपरिवारा, तच्च जात्र जो चवण देवा सदेवीया
अपरिवारा ? गोयमा ! भवणवति वाणमतर जोतसिय सोहर्म्मासाणसु कप्पसु
देवा सदेवीया सपरिवारा सणकुमार महिद चमलोग लतक महासुक्क सहस्सार आणय
पाणय ठरण अम्बुएसु कप्पसु देवा अदेवीया सपरिवारा, गवेज अणुत्तरोववाइया देवा

लेन्द्रिय अपर्णासु सम्यक्त्वाभिगम भी है परंतु किंचित् व मोक्षपावि होन से यहाँ ग्रहण नहीं किया है)
महा भगवन् ! देवता हैं सो क्या देवी साहित और परिवार साहित हैं, कि देवी साहित और परिवार
साहित है कि देवी साहित और परिवार साहित है कि देवी और परिवार दोनों साहित हैं ? कितनेक देवता देवी
साहित और परिवार साहित हैं, कितनेक देवता देवी साहित और परिवार साहित हैं और कितनेक देवता देवी
साहित और परिवार साहित भी हैं परंतु देवी साहित और परिवार साहित एस देवता नहीं है यद्यो भगवन् !
किस कारन से ऐसा कहा कि कितनेक देवता देवी साहित और परिवार साहित हैं या पस् दित्तनऽ भेषता देवी
साहित और परिवार साहित नहीं है ! अहा गोसम ! भुवनपति वाणव्यन्तर योतिपी और सौषर्मे ईशान

अद्वीपा अपरिवारा ना चेत्रण देवणा सवेधीया अपरिवारा, सेतेणट्टेणं गोयमा !
 एव उच्चति अत्यगतिद्या दया सवेधीया सपरिवारा तच्च ज्ञो चेत्रण देवा सवेधीया
 अपरिवारा ॥ ८ ॥ कतिविहाण भते ! परियारणा पणत्ता गोयमा ! पचविहा पणत्ता
 तजहा कायपरियारणा फासपरियारणा रूवपरियारणा, सवपरियारणा, मणपरियारणा,
 सकणट्टण मत ! एव वुच्चति पचविहा परियारणा पणत्ता तजहा कायापरियारणा
 जाव मणपरियारणा ? गायमा ! भवणवासि चाणमतर जोतिसि सोहम्मसायेसु

इदं क न देवा देवी साहित और परिवा सहित है मन्तुपर देखसो क स छाकर याव अच्युत
 द्युतक पर्यन्त के देवा देवी गति है परतु परिवार साहित है प्रेयक और अनुत्तर विमान के देवा
 देवी और परिवार दानों गति है इस लिय भवो गौतम ! ऐसा कहा कि कितनक देवा देवी और
 परिवार दोनों सहित है और यावत् देवी और परिवार सहित कोई देवा नहीं है ॥ ८ ॥ अहो भगवन् !
 कितनी प्रकार की परिवारणा (मयून मेवना) कही है ! अहो गौतम ! पांच प्रकार की-परिवारणा
 कही है तथा-१ काया परिवारणा, २ स्पर्श परिवारणा, ३ रूप परिवारणा, ४ शब्द परिवारणा, और
 ५ मन परिवारणा अहा भगवन् ! किस कारण ऐसा कहा है कि पांच प्रकार की परिवारणा कही है
 तथा-काया परिवारणा यावत् मन परिवारणा ॥ अहा गौतम ! भगवन् पांच वाण्यन्तर बवोतिपी

कल्पे सु देवा कायपरियारगा मणकुमारमहिरे सु कल्पसु देवा कामपरियारगा बभलोयस्त
 ने सुकल्पसु देवा रूपपरियारगा महामुक्तसहस्रारेण कल्पसु देवा सदपरियारगा आणय
 पाणय आरण अण्वुपसु देवा मणपरियारगा, गणवजग अणुतरावजाइयादेवा अपरियारगा
 सेतेजनेपुं गेयमा तंवे च आव मणपरियारगा ॥ ९ ॥ तत्थगं जे कायपरियारग देवा तमिणं
 इच्छाम पे ममुपजइ इच्छामेण अच्छाहिं सकिं कायपरियारकरिखए, तएण तेहि ववहिं
 और मोचय ईशान देवमाक क देवता के काया की परिचारना है सबकुमार और माइन्द्र देवलोके के
 देवता के सर्व की परिचारना है ब्रह्म और सोऽक देवलोके के देवता के रूप की परिचारना है महा
 शुक्र और सहस्रार देवलोके के देवता के लङ्का की परिचारना है मानवप्रजन और प्रण प्रभुन देवलोके के
 देवता के मन की परिचारना प्रपक और अनुसर विमान के देवता के अपरिचारना है अर्थात् उन के
 काम की इच्छा नहीं है ॥ इमपि अह गौतम ! देवा कहा है कि पाँच प्रकार की परिचारना है काया
 परिचारना वाक् परिचारना ॥ ९ ॥ उक्त पाँचकार की परिचारना में से सा देवता कय परिचारना
 शक है उन की जिस शक्त इन्द्रादर इच्छा शक्ति में प्रलय देवीयों के पाँच भागपरिचारना कर्तव्य
 वसरक पर देवता इम प्रकार मनमें विचार करती क्षीप्रता से उन की अप्रयानों चकार ममान, सर्व
 एक मनोव्य मनाइर मनरेष्य एकर वैश्व रूप वैश्व करे, वैश्व रूप एव देवता के पाँच भाग पर पर

रादिं सदिं कायपरियारणे कए समाने इच्छा मणे खिण्णमेवावेति ॥ अतिथणं भते ! तेसिण दवाण सुक्कपागळा ? हुता अत्थि ॥ तण भते ! तासि अण्णराणं की सत्ताए भुज्जो २ परिणमंति ? गोयमा ! सोत्तिदियत्ताए चर्म्मिक्खविच्चाए घाणिदियत्ताए रसिंदिय स्वाए फासिदियत्ताए इट्ठत्ताए कत्ताए मणुमत्ताए मज्जामत्ताए सुभगत्ताए मोह्वगस्सुव्वज्जोन्वणगुणलावणत्ताए ते तासे भुज्जा २ परिणमंति ॥ १० ॥ तत्थणं जे से फास परियारगा दवा तेसिणं इच्छामणे समुप्पज्ज एव जहंवे कायापरियारगा

शरीर के पुद्गल देवता के शरीर में परिणमों और देवता के शरीर के पुद्गल देवी के शरीर में परिणमों यों परस्पर मोगते हुए अतुल्य सुख का अनुभव करते हैं तब फिर वे दोनों ही तृप्ति को प्राप्त होते हैं दोनों की इच्छा की निवृत्ति होती है। (परंतु जिस प्रकार मनुष्य मनुष्यनी के औदारिक शरीर के पुद्गल के पुद्गल होते हैं वैसे देवता के नहीं होते हैं वही फल सुखानुभव अपेक्षा इच्छा तृप्ति की अपेक्षा पुद्गल के वैकल्प रूप अव्यय प्रकार के होते हैं) अहो भगवन् ! इन अपेक्षा के व पुद्गलों किस प्रकार बारम्बार परिणते हैं? अहो गौतम! आग्नेयिष्यने बहुश्रद्धिष्यने प्राणेन्द्रियष्यने रसेन्द्रियष्यने स्वर्गेन्द्रियष्यने इष्टकारी हा कन्तकारी हो, मनाइकारी हो, भुज्यष्यने, सौभाग्यष्यने, यौवनव्यष्यने, मुञ्चकव्यष्यने बारम्बार परिणमते हैं : यह कायापरिचारक का कथन हुआ ॥ २० ॥ अत्र में जो सर्व परिचारक, देवता हैं व उन के मन

तद्वद्विगिरावसेसं भाणियम्य ॥ ११ ॥ तस्येनं जेतुं स्वपरियाराणां देवा तेसिण
इच्छामणे समुपपन्नमिह इच्छामणे अचर्याहिं सदि स्वपरियारण करिष्ये, ततेण से
सेहिं देवोहिं ११ मणसिकण्ठसमाणे तहेव जाय उचरवेउन्विथाइ स्वाइ विउन्विता
वेउन्विता जणामव तेदेवा तेनामेव उवागच्छसि रक्षा तेसि वेवाण अदूरसामते ठिवा
ताइ उरालाइ जाव मणोरमाइ उचरवेउन्विथाइ स्वाइ उवदंसमाणी रउवच्छिट्ठति, तएण
तेदेवा ताहिं अचर्याहिं सदि स्वपरियारणकरोती, तेस तवेव जाय भुजो २ परिणमति

ये इच्छा उत्पन्न होते तब जिस प्रकार काया परिचारक का कर्मा सब ही प्रकार निर्विघ्न रूप से
देवी को करण कर अर्पणकिया कर सान्त्त तृप्त अतुल सुख के अनुभव करते हैं ॥ ११ ॥ उस में जो रूप
परिचारक देवता हैं उन का इच्छा होती है कि अमरा के माय रूप परिचारना करूँ, उस वक्त
उन देवताको इस प्रकार विचार होते ही उन की मन्तरा पुरोक्त प्रकार तत्काल उत्तर वैक्रम रूप बनाकर
महा बह देवता होता है वही मानी है और उस देवता बहुत दूर नहीं तेसे ही बहुत नजीक नहीं
इस प्रकार, लड़ी रहकर वह उसक उत्तर वैक्रम औदार प्रधान यावत् प्रणाम रूप उस देवता का रूप (अगोपाग)
देवतानी हुई गहरी है उभयभक्त देवता भी अपनी पपन्प हटोकर उस का शृंगार अगोपाग का निरसन कर
परिचारना करता है छप कथन वक्त प्रकार यावत् उस का पाँचों इन्द्रियने अतुल सुख बारम्बार

॥ १५ ॥ तदर्थेण जत सहपरियारगां दद्यात्तसिष्य इच्छा मण समुपपज्जइ इच्छामाण
 अच्छराहिं सद्धिं सहपरियारण कोरुण, ततण तहिं दवहिं एव मणसीए कणसमाणे तहव
 जाव उत्तरवठोब्बियाइस्सवाइवठव्विंति २ एवा जणोमेव तदवा तेणामेव उयागच्छति २ एवा
 तसिद्धाण अदूरसामन ठिवा अनुत्तराइ उच्चावयाइ सहाइ समुद्दीरमाणीआ २ चिट्ठति

ततेण तदवा ताहिं अच्छराहिं सद्धिं सहपरियार कोरति सस तच्च, जाव मुञ्जा २
 परिणयकर वइ नृत होता है ॥ १२ ॥ यहाँ आ शब्द परिचारक दवता है उन क मन में इच्छा होती
 कि ये अप्सरसंग शब्द परिचारना करे व वइ दवता इस प्रकार बिचार करते ही उसकी अन्तरा
 शक्त प्रकार ही उचर वैक्रम रूप करके उस दवता के पास आती है आकर उस
 के पास खड़ी रहकर अनुत्तर प्रश्न केव प्रकार के प्रश्न शब्दों बोझी हुई रहती
 है तब वइ देवता उस अप्सरा के साथ शब्द प्रयुज्जकर शब्द परिचारना करता है
 जब पूर्वोक्त प्रकार पावत पावों शिञ्जयपेने धारम्भार अनुसमुत्तानु भवकर नृत होते हैं ॥ उस में जो मन
 परिधरक दवता है उन क मन में इच्छा हाव कि मैं अप्सरा क साथ मन परिचारना करूं तब उस
 दवता का इस प्रकार बिचार होते ही शीघ्रता से उस की अप्सरा-द्वी अपन स्वस्थान विमान में हो रही
 हुई अनुत्तर उन प्रकार का विषयानुसृत मन के परिणाम परिणमाकर रहता है यावत् तब मन क पुत्र

परिणमति ॥ तस्थुण अत मणपरियारग। देवा तेसि इच्छामणे समुपपजति इच्छामोणे
 तस्थुण। त्ति सन् मणपरियारण करिचपु तएण सहि देवाहि एव मणरीकएम्ममाणे

खिष्यामव तासा अच्छराओ तत्थगयाओ चय समार्णीओ अणुचराइ उच्चावयाइ मणाइ

पम्सर परिणमकर अनुक्त सुम्भामुप कृत है (बहु अर्थ वाली पश्यना में मिलता है कि स्वर्थ परिचारक सहाया परिचारक क सुम्भ अनन्तगुण, काया परिचारक स रूप, परिचारक के सुम्भ अन्नतगुने, कप परिचारक न वस्त्र परिचारक सुम्भ अनन्तगुने, शब्द परिचारक से मन परिचारक क सुम्भ अन्नतगुने, और मन परिचारक क अपरिगारक क सुम्भ अनन्तगुने ४ ॥ और भी उक्त कथन का विश्वप त्यागना इस प्रकार है कि प्रथम लौकिक स्वयंश्रेष्ठ की क छ लाख विमान है उनमें रहने वाली देवीयों की । स्वर्ग तक्षक एक पर्याप्त की वस्तु पर्याप्त की है उसमें एक पर्याप्त से दश पर्याप्त क प्रसूत जाती है । या प्रथम श्रवण के दत्ता के माग में जाती है दश पर्याप्त से एक समय श्रीः २० पर्याप्त क आयुष्यवाली देवीयों हीसर दशभोक क दशक माग में जाती है, धीम पर्याप्त ५ एक समय श्रिः १० पर्याप्त के प्र, युद्ध वाली देवी पाँचवे दशभोक के देव के भाग में पड़े ही । गन्तव्य स एक समय अधिक वासीत पर्याप्त के आयुष्यवाली देवी सातव देवभोक के दत्ता ५.१ में जाती है, वालीस पर्याप्त से एक समय, अधिक पेशालीस पर्याप्त के आयुष्यवाली

पञ्चमार्गिता २ चिद्वृत्ति तत्तर्पणं ते देवा ताहि अष्टगहिं मार्हिं मणपरिपारण करोति सेस
निरवमस आत्र भुञ्जो २ परिष्ममति ॥ एतंसिण भते ! देवानं कायपरियाराणा
ज्ञान मणपरिपारणा अयरियारयाणाणय कयरे २ हितो क्षणयाध १ गोयमा !

इसी नरप भस्मोक्त क देवके योग में आती है और पेंतालीस परसोपम से एक सप्त अथिक पचास परसोपम
क आयुष्यवासी देवी इषास रवलाक के देवके योग में आती है ॥ ऐसे ही दूसरे देवलाक में
मयारद्वी देवी के चार साव विमान हैं उस में से राने वाली देवीयों का अयग्य एक परसोपम से कुछ
अधिक उत्कृष्ट पचावन ५२ परसोपम का आयुष्य है उस में से एक परसोपम से कुछ अधिक दूसरे
परसोपम के आयुष्य वाली देवी दूसरे देवलोक्त के देवके योग में आती है, दूसरे परसोपम से एक समय
अधिक पचीस परसोपम के आयुष्य वाली देवी चौथे देवलाक क देवता में योग करने में आती है, पचीस
परसोपम में एक समय अधिक पेंतास परसोपम के आयुष्यवासी देवी छठ देवलोक्त के देवके योग करने में
आती है पेंतास परसोपम में एक समय अधिक पेंतालीस परसोपम क आयुष्यवासी देवी आठवे देवलोक्त
क देवता क योग में आती है पेंतालीस परसोपम से पचीस परसोपम के आयुष्यवासी देवी दसवे देव
लाक के देव क योग करने में आती है और पचास परसोपम से एक सप्त अथिक पचपन परसोपम के
आयुष्यवासी देवी बारह देवलोक्त क देवता के योग में आती है आठवे देवलोक्त क देवी ()

॥ पञ्चीनैशतम वेदनापरिणामग्रदम् ॥

श्रीनाथ दत्त सारींग भाष तद् वेदना इति दुःखम्, अन्तुयगमोवक्त्रमिया, निहाय
 अनेहय जायव्या ॥ १ ॥ सातमसात मन्त्रे, सुहृद्व दुःख अकुषल मसमच,
 भावसरद्विय त्रिगालिदियाआ, ससा बुविहवच ॥ २ ॥ १ ॥ कतिविहाण मत्त !
 नवणा पणसा ? गोषमा ! तिविहा वदना पणसा तजहा सीता, उसिणा नितो
 सिणा ॥ नेरहयणं मत्त ! किं सीत वेदण वेदति उसिण वदण वेदति, सितोसिण

अर पेंतीसना वेदना पद कसेतें ॥ जिस के १७ द्वार के नाम १ सीतादि वेदना, २ लब्धादि वेदना,
 १ शारीरिकादि वेदना, ४ सामादि वेदना, ५ वेदना हाथे, ६ दुःखादि का, ७ अन्तुयगम अपक्कम वदना, ८
 गिरा ९ अणिदा १ सावा वसाठा, ११ सुख, १२ दुःख, १३ अकुल १४ अकुप, १५ मानसी, १६
 त्रिगालिदिय, और १७ सेप दा प्रकार की ॥ १ ॥ आता भगवन् ! किये प्रकार की वेदना कही है ? यहाँ
 गतप ! सीत मन्तरकी वेदना कही है, मणया-शीत वदना, २ लब्ध वेदना, और ३ लोकाव्य वदना यहाँ मंगवन् !
 नरक के तीनों किस प्रकार की वेदनाएँ हैं ? यहाँ गौतम-शीत वेदना भी केने हैं, लब्ध वेदना भी वेदते हैं परंतु
 खेत ६ म (मीश्र) वेदना नहीं वेदते हैं क्योंकि वहाँ एकान्त तुल्य रूपी वेदना है अथ एकैक पृथ्वी की वेदना-करव

सारागा अ सीत वंदन वेदति ॥ घुमप्यभाए पृथक्च गुविहा, जवर ते बहुयतरागा ले
सीत वंदन वेदति, त यावतरागा अ उासिण वंदन वदति ॥ तमाए तमतमाएय सीत
वंदन वेदति, नो उासिण वंदन वेदति यो सितासिण वंदन वेदति ॥ असुरकुमाराण
पुच्छा? गोयमा! सीतयि वंदन वेदति उासिणयि वंदन वेदति सीतंगिणयि वंदन वदति ॥ एव
आव वेमाणिया ॥ २ ॥ कतिविहाणं भते ! वंदन! पणत्ता ? गोयमा ! चउन्दिहा
वंदना पणत्ता तज्झा पय्याओ, सेत्ताओ, मावाओ ॥ गरइयाण भते !

नीच क बहुत भायठे बाले कीठ की वेदना वेदते हैं ॥ तथा और वयत्ता पृथ्वी बाले एक उीठ
वेदना वेदते हैं वाकी की दो वदना महीं वेदत हैं असुरकुमार की पूछा ! कहा गौतम ! उीठ की
वदना मी वेदते हैं, उज्ज की वदना मी वेदत हैं और सीताए की (भिम वेदना मी) वदते हैं सब
वे सीतल प्रज्जादि में जानानि करत हैं सब सीत वंदते हैं जब कोई पहाप्रदेक देव कोष कर नेम
छी कर देस तब उज्ज वेदना मी वेदते हैं जैसे इवान्द्र में जपर सवा रावणानी के देव को परित्यापित
किसे अन्यथा संदेय नो सीताए [भिम] सुसपप वदना ही वदते हैं एस ही पावत् वैमानिक वयन्त
बौरीस रंदक का ही कहना म २ ॥ भदो भगवन् ! कितने प्रकार की वेदना कही है ? भदो गौतम !
चार प्रकार की वदना कही है, तथया—२ इण्य की वदना, २ लष की वेदना, १ कास की वेदना

किं द्रव्यञ्च वेदं वेदं वेदं किं मावतो वेदं वेदं ? गायमा ! द्रव्यतोऽत्र
वेदं वेदं, जाय मावतोऽत्र वेदं वेदं ॥ ३ ॥ कर्तिविहाय
भत ! वेदं पण्णा ? गोयमा ! तिदिहा वेदं पण्णा तजहा सारीरि, माणसी,
सारिमाणसी ! पेरइयाण भते ! किं सारीरि वेदं वेदं माणसि वेदं वेदं
सारीमाणसि वेदं वेदं ? गोयमा ! सारीरि वेदं वेदं, माणसि वेदं वेदं
वेदं ! सारीरणसि वेदं वेदं पण्णा तजहा सारीरि, माणसी, सारीमाणसी !

और माव की वेदना अब अलग-वेदना कहते अहा भगवन् नेरीये द्रव्य वेदना वेदते हैं कि यावत् माव वेदना वेदते
हैं 'अहो गोतम ! द्रव्य वेदना यो वेदते हैं यावत् माव वेदना यो वेदते हैं यो यावत् यैमानिक तत्र कहना
नरक में दुःख रूप वेदना में मुक्त रूप और मनुष्य तिर्यक में विश्रुता का ॥ ३ ॥ अहो भगवन् ! कितने
प्रकार की वेदना करी है ? अहो गोतम ! तीन प्रकार की वेदना करी है तपया—शरीर से उत्पन्न
होवे वह शारीरिक २ मन से उत्पन्न होवे वह मानसिक और शरीर मन से दोनों से होवे वह शारीरिक मानसिक, यहाँ
भगवन् ! नेरीये क्या शारीरिक वेदना वेदते हैं कि मानसिक वेदना वेदते हैं कि शारीरिक मानसिक वेदना वेदते हैं ?
अहो गोतम ! शारीरिक यो वेदना वेदते हैं मानसिक भी वेदना वेदते हैं और शारीरिक मानसिक भी वेदना वेदते हैं
यो यावत् यैमानिक पर्यन्त कहना । जिस में इतना विषय पुनर्जन्म और विकलेंद्रिय फल शारीरिक

सारीर्षि वेदं वेदति, जो माणसं वेदं वेदति, जो सारिरसाणसि वेदं वेदति ॥ १३ ॥
 कतिविहाण भस्मे ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा वेदणा पण्णत्ता साता
 असाता, सातासाता ॥ नरइयाण भते ! किं सात वेदं वेदति असाता उदण
 वेदति, सातासात वेदं वेदति ? गोयमा ! तिविहापि वेदं वेदति एथ सन्व जीवा
 जाव वेमाप्पिया ॥ ५ ॥ कतिविहाण भत ! वेदणा पण्णत्ता ? गोयमा ! तिविहा
 वेदणा पण्णत्ता तजहा दुक्खा सुहा, अदुक्खमसुहा ॥ णेरइयाण भते ! किं दुक्ख

वेदना वेदते हैं परंतु मानसिक व धारारिकमानसिक वेदना नहीं वेदते हैं क्योंकि इन के मन नहीं है ॥ ४ ॥
 बहो ममबन्धु ! कितने प्रकार की वेदना करी है ? अहो मौत्स्य ! तीम प्रकार की वेदना करी है
 तथवा—' साता २ असाता, और ३ साता असाता बहो ममबन्धु ! नेरीयें क्या साता वेदना वेदते हैं
 कि असाता वेदना वेदते हैं कि प्राता असाता (मित्र) वेदना वेदते हैं ? अहो मौत्स्य ! तीनों प्रकार की वेदना
 वेदते हैं, तीर्थंकर के जन्मादि ब्रह्म में साता भी वेदते हैं सब वेदना परपामी कुछ असाता भी वेदते हैं
 और पूर्व मय सम्बन्धी काइंमिष द्रव दुःख स वचने आये, तब साताअसाता दोनों वेदते हैं क्योंकि
 दुःख से बचते नहीं है ॥ ऐसे ही वैयानिक पूर्णत कहना ॥ ५ ॥ अहो ममबन्धु ! कितने प्रकार की वेदना
 करी है ? अहो मौत्स्य ! तीम प्रकार की वेदना करी है तथवा ' दुःख, २ सुख और ३ दुःख सुख दोनों

निर्वेदण वेदति ? गीगमा ! दुस्स्वपि वेदण वेदति, सुहपि वेदण वेदति, अत्रुस्वम
 सुहपि वेदण वेदति ॥ एव जात्र वेमाणिया ॥ १ ॥ कतिविहाण भत ! एणा
 पण्णसा ? गोयमा ! दुविहा वदणा पण्णत्ता तज्जहा अज्झादगमियाय ७ ॥ ३ ॥
 णेरहयाण मत्ते ! किं अज्झोवगमिय वेदण वदति उगक्कमिय वेदण वदति ? मायम !
 णो अज्झोवगमिय वेदण वेदति, उगक्कमिय वेदण वेदति एव जात्र चउरिदिया ॥ पक्खिय
 तिरिक्ख जोणिया मणुस्साय दुविहपि वेदण वेदति, वाणमतारा जोहसिया वेमाणिया जहा

रहित मय्यस्वभाव ॥ अहा भगवन ! नरीय सीनों प्रकार की वेदना में से किम प्रकार की वदना वेदने है ?
 भरो गीतम ! सीनों प्रकार की वेदना वेदने है उक्त कथन अनुसार ही यों यावत् वैमानिक पतित कठना
 (कर्पादय का मल दुःख शता है और पुद्गल सगर्भों कर सावा अक्षता शता है) ॥ ६ ॥ अहा भगवन !
 कितने प्रकार की वदना कही है ? अहा गीतम ! दा प्रकार की वेदना कही है तथया अध्येषगानि क्षता
 जो स्वयं वेदना की उद्धारना कर तथा साधु साध्यादि कष्ट हैं और ७ उगक्कमिय वदना सो कर्पादय कर
 तरास हाव जैसे उर्रादि अहो भगवन ! नारकी का क्या अध्येषगमिक वदना है कि उपक्रमिक वदना
 है ? अहा गीतम ! मध्य पणमिक वदना नहीं है परंतु उपक्रमिक वदना है एव ही यावत् दश भुवनपति
 पावस्यावर सीनों विदुश्चरित्र्य पर्यंत करना पवेन्निय तिर्यच यानिक और भनुण क दानों प्रकार की,

नेरइया ॥ ७ ॥ कतिविहाण भते ! वेदणा पण्णसा ? गोयमा ! दुविहा वेदणा पण्णत्ता तजहा निदाय अणिदाय ॥ नेरइयाण भते ! किं निदाय वेदण वेदति अणिदाय वेदण वेदति ? गोपमा ! निदायपि वेदण वेदति, अणिदायपि वेदण वेदति ॥ से केषं द्ढण भते ! एव बुद्धति नेरइया निदायपि वेदण वेदति अणिदायपि वेदण वेदति वेदति गायमा ! नेरइया दुविहा पण्णत्ता तजहा सण्णीभूताय, असण्णीभूताय, तस्थण जेत सण्णिमूया तेण निदाय वेदणं वेदति तस्थण जेत असण्णीमूया तेण अणिदाय वेदण वेदति स तेणंद्दण गोयमा ! एवं बुद्धति, नेरइया निदायपि वेदण वेदति अणि-

वेदना है क्योंकि यह कर्म सब करने के बन्धी भी होते हैं ॥ बाणव्यन्तर ब्योविपी वैमानिक नेरीये की तरह एक बपकमी ही वेदना बढ़ते हैं ॥ ७ ॥ अहो मगवन् ! कितने प्रकार की वेदना करी है ! अहो गौतम ! दो प्रकार की वेदना करी है तथया १ पन के जानपने युक्त वह निदावेदना और जाने बिना हो सो अनिशा वेदना ॥ अहो मगवन् ! नेरीया निदा वेदना बढ़ते हैं कि अनिशा वेदना बढ़ते हैं ! अहो गौतम ! दोनो प्रकार की बढ़ते हैं ॥ किस कारण अहा मगवन् ! ऐसा कहा कि नेरीय दो प्रकार की वेदना बढ़ते हैं ? अहो गौतम ! नेरीय दो प्रकार के हैं तथया १ संखीयुन ओ फुल कर्म का पक्काताय करे और मसडीं भूत ओ कृत्त कर्म का पक्काताय नहीं करे, इस में ना सही भूत हैं व निदावेदना बढ़ते हैं और बसडीं भूत हैं

दाय विवेदण वेदति ॥ एव जात्र धनियकुमारा ॥ पुढविकाइयाण पुच्छा ?
 गायमा ! नो निदाय वेदण वेदति अणिदाय वेदण वेदति ॥ से केणट्टेण भते ! एव पुच्छति
 पुढविकाइया नो निदाय वेदण वेदति अणिदाय वेदण वेदति ? गोयमा ! पुढवि
 काइया सन्धे असण्णी भूया, अणिदाय वेदण वेदति, से तेणट्टेण गोयमा ! एव पुच्छति
 पुढविकाइया नो निदाय वेदण वेदति अणिदाय वेदण वेदति ॥ एव जात्र
 चट्ठरिदिया ॥ पच्चिदियतिरिक्खजोणिया मणुस्सा माणमतरा जहा केरइया ॥
 जोइसियाण पुच्छा ? गोयमा ! निदायपि वेदण वेदति अणिदायपि वेदण वेदति ॥

वे अनिदा वेदना वेदते है ॥ इसलिये अहो गौतम ! ऐसा कहा नेरीय दोनों प्रकार की घटना वेदते हैं ॥
 एस ही यावत् स्वनिठ कुमार पर्यंत कहना ॥ पृथ्वीकाय निदा वेदना नहीं वेदती है परंतु अनिदा पर्वना वदती है
 अहो मगगन् ! किस कारण एस कहा कि पृथ्वीकाय निदा वेदना नहीं वेदती है अनिदा घटना ही पदती
 है ? अहो गौतम ! पृथ्वीकाय सब असंशी प्रत ही है एस ही यावत् चौरिन्द्रिय पर्यंत कहना, पचेन्द्रिय
 तिर्यक् योनिक मनुष्य और पाशव्यमग्न द्रवका नेरीयां प्रेता कहा दोनों प्रकार की वेदना वेदते हैं, ज्योतिषी
 की लक्षणा ? अहो लीलाजोमिती जेनों प्रकाशकी घटना वेदते हैं अहो मगगन् ! ज्योतिषी दोनों प्रकार की

से केणट्टेण भंते ! एव बुद्धसि जातिसिया ! जिहायपि वदेति अणिदायपि
वेदण वेदति ? गायमा ! जोइसिया दुवेहा पण्णा तजहा माईमिच्छदिट्ठी उव
वण्णगाग अमाई सम्मदिट्ठी उववण्णगाय तरयण ज तं माइ मिच्छदिट्ठी उवव
वण्णगा तंण अणिदाय वेदण वदति तत्थण ज त अमायी सम्मदिट्ठी उववण्णगा तंण
णिदाय वेदण वदति सेतंणट्टण गोयमा ! एव बुद्धसि जातिसिया दुवेहापि वदण वेदति
एव वेमाजियावि ॥ इति पण्णउणाए भगवतीए वेदनापय पत्तिसम सम्मत्त ॥ ३५ ॥

बदना किस प्रकार बदते हैं ? अहो गौतम ! क्याहिपी दो प्रकार के करे हैं ? तथ्या-भायापुक भिध्यात्व
होने और पायाराहित सम्पगृहणी इस में जो मायीविध्याहणी वत्यम पुंवे हैं वे बिक के अमावकर
अनिय बदना बदते हैं और जा अमायी सम्पकहणी हैं व बिक के सद्गा से निदा बदना वेदते हैं इस
प्रकार अहा गौतम ! एसा कहा जयातिपी दानों प्रकार की बदना वेदते हैं एसा ही वैमानिक का भी
बदना स दूते वेनीमग बदना पद समाप्त ॥ ३५ ॥

॥ पदलिंशत्तम समुद्धातपदम् ॥

य-ग कसाय म-ग वेठडिउय नेयएय आहारे, कैयलिण समुग्घाए जीवमणुस्साणं
सत्तव ॥ १ ॥ १ ॥ कतिग मत ! समुग्घाया पण्णत्ता ? गायमा! सत्तसमुग्घाया
पण्णत्ता। तज्झा-ववणात्समुग्घाए, कसाय समुग्घाए, मारणसिय समुग्घाए, वेडन्विय

अथ छत्तीसवा समुदात पद कहत ह ॥ नाम १ वेदना समुदात वदनीय कर्मोदय, २ कपाय समुदात
(निरिद) ॥ १ ॥ १ ॥ परणत्तिक समुदात आयुज्य दर्पोदय, ४ वैक्के समुदात-नाम कर्मोदय, ५
तज्जस समुदात नाम रुकोन्त्य ६ आहारक समुदात नाम कर्मोदय, और ७ केवली समुदात वदनी नाम
गैय कर्म के मात्रिय यइ सातो सुद्धात समुग्घय जीव में और मनुज्य में पाती है (जिस वक्त आत्मा
वेदनीयादिक अनुभव क उपवाग में परिणमें तम वक्त दूसरा उपयोग त इत्थे इसन्विय एकी भाव प्रवृत्त
रत घात इत्थे ब्योक्तिक वदनादि समुद्धात घटवने परिणमें हैं व बहुत वदनीयादि कर्मोदय क दस कालान्तर
में मनुपवन पातय य उन का वदनीरणा करके आरुपकर उदय में प्रसपकर भोगवकर निर्भरा कर जो
जीव के प्रदय से लगय तम का मन्के लते समुदात कहते हैं) ॥ १ ॥ अहा मगवन ! कितन प्रकार की
समुद्धात करी दे ? अहे गौतम ! सात प्रकार समुदात करी है तथया ? वेदनी समुद्धात, २ कपाय

भारणानिय समुग्धाण षट्ठविय समुग्धाए, तेया समुग्धाए, जखरं मणुस्साण सत्तविहा
समुग्घाए णणत्ता तज्झा वयणा समुग्धाए कमाय समुग्धाए, मारणतिय समुग्धाए
वेउटिविय भमग्घाए, तेया समुग्धाए आहार समुग्धाए, केवली समुग्धाए ॥ ४ ॥
एगमगन्सण भते ! णेरइयस्स कवतिया वदणा समुग्धाया अतीता ? गोयमा !
अणता, केइइया पुरकडा ? गायमा ! कस्सइअतिय कस्सइणतिय, जस्सइतिय
जहण्णेण पक्काया, दाया, तिण्णिवा, उक्कोमेण सस्सेज्जाया असस्सेज्जाया अणताया ॥ एव

राय समुदात करी है, तथया—'वेदनी, २ कपाय, ३ यारणातिक, ४ वैश्रय, और ५ वेत्तस, जिन में इनना
वेदेप म्मुप्प क सातों समुदात करी है तथया—' वेदनीय, २ कपाय, ३ परणातिक, ४ वैश्रय ५
पन्न, ६ माहारक और ७ केपल ॥ ४ ॥ सब चौबीस दटक पर एक जोष आश्रिय पूज करते हैं अइ
मगध' एकेए नारकी नरीयेन गतिकाल में वेदनी समुदात कितनी वक्त करी है ? अहो गौतम ! अनंती
वक्त करी है वदेति गगकास में अनंतमय किये हैं और एकक मर में से इहो वक्त वेदना समुदात की
है इस आपणा अहो मगधन् ! एकक नेरीयोने आगापिक फाल में वदनी समुदात कितनी वक्त करगा ? अहो
गौतम ! कोइ करगा और काइ नहीं भी करेगा, जो करेगा तो मध्य एक दा तीन वक्त ससपान अससपान
काई अनंत मी करगा, एस ही अमुरकुणार स यावद् वैमानिक पर्पन्त कहना और यर जेसा वेदनीय

[illegible]

जेरद्वयाण भंत ! केवतिया केवलि समुग्धाया अतीता ? मोयमा ! जत्थि, केवतिया
 पुरेकहा ? गोयमा ! असखेजा ॥ एव जाय वेमाणियाण, जत्थर वणप्पसिक्काइया
 मणूसेसु इम पाणस वणप्पनिकाइयाण मत ! कवतिया कवलि समुग्धाया अतीता ?
 गायमा ! जत्थि केग्गया पुरेकहा ? गोयमा ! अजता ॥ मणूस्साण मत्ते ! केवतिया
 केवलि समुग्धाया अतीता ? गोयमा ! सिय अत्थि सिय जत्थि, जठअत्थि जहण्णेणं
 ज्झिम मनुव्व आश्रिय एसा ही भागापिक काल आश्रिय थी कहना अरो पगएन् ! बहुत नेरीयेने
 आहारक समुदाव गत फाल में कितने वक्त का ? अहा गौतम ! नहीं की भागापिक काल में कितनी
 वक्त करेंगे ? अहो गौतम ! असंख्याव वक्त करेंग यो यावत् वैमानक पर्यन्त
 कहना, नित में इतना विषय वनस्पतिकायाका व मनुष्यका इतना फल के अहा मगान् ! वनस्पतिकाया क
 मीरेने अतीव काल में केवल समुदाव कितन वक्त की ! अहा गौतम ! नहीं की जगगत फाल म
 कितनी वक्त करेंग ! अहो गौतम ! अनन्त वक्त करेंग अहा मगएन् ! मनुष्योंने मर काल में केवल
 समुदाव कितने वक्त की ? अहा गौतम ! किमीने की किमीने नहीं थी की जिनो की दे तो एक ही
 वक्त ही है बहुत जीवों आश्रिय अपन्य एक दू तीनवक्त वरकट प्रत्येक सो [२०० से ९०० तक] एकवक्त में इतन
 केवसी समुदाव स निवृत्ति पाये इरे पावे हैं अनेगते काल में कितनी वक्त करेंगे ? अहो गौतम !

एकौवा दोवा तिणिग्वा उक्कोसेण सयमुहुच्च, केवतिया पुरेकढा ? गोयमा ! सिय
सखज्वा सिय असखज्वा ॥ ६ ॥ एगमेगस्तसर्ण भते ! णेरइयस्स णरइयस्से केवतियया वेयणा
समुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणता, केवतिया पुरेकढा ? गोयमा ! कस्तइ अरिय
करमइणत्थि जरसअत्थि जइण्णेण एकौवा दोवा तिणिग्वा उक्कोसेण सखेज्वाया
असंखेज्वा अणताया, एत्थं असुरकुमारस्से जात्र वेमाणियस्से ॥ एगमेगस्तसर्ण भते !
असुरकुमारस्स णेरइयस्से केवतिया वेयणासमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणता,

कितनेक संख्यात वक्त गर्भज मनुष्य आश्रय कितनेक असंख्यात वक्त समूहस्थ मनुष्य आश्रय, फिर वे गर्भज मनुष्य हा समुद्रात करोगे ॥ ६ ॥ अब चौबीस दहक की परस्पर एक मीन आश्रय पूजा करने है अहा मगधन् ! एकक नरक के नेरीबने नरकपने वेदना समुद्रात अतीव काष्ठ में कितनी वक्त की ! अहो गौतम ! अनन्त वक्त की आमायिक काष्ठ में कितनी वक्त करेग ! अहो गौतम ! कोइ करेगा और कोइ नहीं मी करेगा क्योंकि जों नरक में पुन प्रावेगा वह नरकपने वेदनी समुद्रात करेगा और और नहीं प्रावेगा वह नहीं करेगा जो करेगा तो मपन्य एक, वक्त दो वक्त तीन, वक्त तल्लह सम्प्रात वक्त असंख्यात वक्त कितनेक अनन्त वक्त भी करेगा क्योंकि संख्यात मव करनवाला संख्यात करेगा असंख्यात मव करने पाछा असंख्यात वक्त करेगा और अनन्त मव करने पाछा अनन्त वक्त करेगा ॥ ऐसे ही असुर कुमार से लुगाकर यावत् पैमानिके देव पर्यंत कहना ॥ अहो मगधन् ! ऐवैक असंख्यातने

केवतिपा पुरेकछा ? गोयमा ! कस्सइ अरिह कस्सइ णत्थि, जस्सत्थि तस्स । सिय सस्सेज्जा सिय असस्सेज्जा, सिय अणंता, एग्गेगस्सण भत्ते । असुरकुमारस्स असुरकुमा राचे केवतिपा वेयणा समुग्घाता अतीता ? गोयमा ! अणंता, केवतिपा पुरेकछा ? गोयमा ! कस्सअरिह कस्सणत्थि जस्सत्थि अहण्णेण एक्कोवा दोवा तिण्णिन्ना उक्कोसेम सस्सेज्जावा असस्सेज्जावा अणतावा ॥ एव णागकुमारचेवि जाव वेमाणियचे ॥ एव जहा वेयणासमुग्घाएण तेणं असुरकुमारा णरइयाइ वेमाणियपज्जवसाणेसु

नेरीपपने गतक्काल में बदनीय समुद्रपात कितनी बक्त की ! अहो गौतम ! अनंत बक्त की आगमिक काल में कितनी बक्त करेंगे ! कोइ करेंगे कोइ नहीं भी करेंगे ! जो करेंगे वो स्यात् सस्याव स्यात् असंख्याव स्यात् अनंत भी करेंगे असुर कुमारने मतकाल में वेदनीय समुद्रपात कितनी बक्त की ! अहो गौतम ! अनंत बक्त की, आगमिक काल में कितनी बक्त करेंगे ! कोइ गौतम ! कोइ नहीं भी करेंगे जो करेंगे तो अपम्य एक दो तीन दक्कह सस्याव असख्याव अनंत करेंगे ॥ ऐसे ही नागकुमार से लगाकर यथात् वैमानिक पर्यंत कहना ॥ यों बिम प्रकार वेदना समुद्रपातका असुरकुमार वेदनाका नरक से लगाकर वैमानिक तक का कथन कहा ऐसे ही नागकुमारादिक अपर क्षेत्र स्वस्थानपने परस्थानपने कहना यथात् वैमानिक पर्यंत में उत्पन्न होये तहां तक का कहना यों इस प्रकार चौबीस ही दब्बक होवे हैं

भणिष्ट, तहा जागकुमाराधिया अवसेसेसु ठाणपरट्टणेसु भाणियठ्या जाव धेमाणियचे,
एवमेव थठवीसा पढगा भवंति ॥ एगमेगस्सण भंते ! जेरइयस्स
जेरइयचे केवसिया कसायसमुग्घाया अतीता ? गोयमा ! अणता, कवइया पुरेकढा ?
गोयमा ! कस्सइरिय कस्सइणरिय, जस्सअरिय सिय सखेजा सिय असखेजा सिय अणता
एगमेगस्सणं भंते ! जेरइयस्स असुरकुमाराचे केवतिया कसाय समुग्घाया अतीता ?
गोयमा ! अणता, केवतिया पुरेकढा ? गोयमा ! कस्सइ अरिय कस्सइ णरिय

अब कथाय समुद्रयात्र का करेव है ॥ अहो भगवन् ! एकेक भेरीयेने भेरीयेने असीठ काळ में कथाय
समुद्रयात्र कितनी बक्त की है ! अहो गौतम ! अनठ की है आगपिक काळ में कितनी करेंगे ! अहो
गौतम ! कोइ करेंगे कोइ नहीं भी करेंगे जो नारकीयेने वत्सल होगे वे करेंगे, जो करेंगे वे संस्याव भव करनेवाले
संस्याव बक्त, भवकरुपाव भव करनेवाले असस्याव बक्त, और अनठ भव करने वाले अनठ बक्त करेंगे
अहो भगवन् ! एकेक भेरीयेने असुरकुमारपने गतकाळ में कथाय समुद्रयात्र कितनी बक्त की ?
अहो गौतम ! अनठ बक्त की आगपिक काळ में कितनी बक्त करेंगे ! अहो
गौतम ! कोइ करेगा काइ नहीं भी करेगा जो करेगा जो स्याव सस्याव, स्याव
असस्याव स्याव अनठ बक्त इस ही प्रकार भेरीये का कयन स्थानित कुमार तक करमा पुष्पीकाव

जस्तआरियसियसखेजा सियसखेजा सिय अणता, एव जाव नेरइयस्स थाणियकुमारचे,
 पुढाविकायचे एगुचरियाए नेयव्य, एव जाव मणूस्सचे, थाणमंतरच जहा असुरकुमारचे
 जोइसियच अतीता अणता, पुरकडा कस्सइस्थि कस्सइणस्थि जस्तअस्थि सिय सखेजा
 सिय असखेजा सिय अणता, एव विमाणियचस्थि सिय असखेजा सिय अणता,
 असुरकुमारस्स नेरइयचे अणता अतीता पुरेकडा कस्सइ अस्थि कस्सइ जस्थि,
 जस्तस्थि सिय सखेजा सिय असखेजा सिय अणता, असुरकुमारस्स असुरकुमारचे

ने यावत् मनुष्य पर्यंत अतीत काळ आश्रिय उक्त प्रकार आगाधिक काळ आश्रिय कोइ करेगा कोइ नहीं
 करेगा मो करेगा मो जपन्य एक दो तीन चत्तुष्ट सख्यात असख्यात कोइ बनत भी करेगा क्यों कि इन
 में अन्तर मुई का आयुष्य होने से कोइ एक एक ही कषाय समुदाय करपर राजव्यन्तर का असुर
 कुमारदर का कडा तैसे कहना ज्योतिषिका गतकाखमें अनंत की अनागतमें कोइ करेगा कोइ नहीं भी करेगा
 मो करेगा वो स्वात् असख्यात स्वात् बनत भी करेगा इनमें संख्यात नहीं कहना क्योंकि इनका असख्यात
 रूप का आयुष्य है ऐस ही वैयानिक का भी कहना यह नरक आश्रिय बोधीत देहक की पूजा हुई अब
 असुरकुमार आश्रिय पूजा करते हैं असुरकुमार देवताने नेरीये पने कषाय समुदायत गतकाल में अनन्ती
 की भी वर्तमान काळ में कोइ करेगा कोइ नहीं भी करेगा मो करेगा वो कोइ सुख्यात कोइ असख्यात

अनीता अणता पुरकहा एगुत्तरिया, एयं नागकुमारचे निरतरं जात्र वेमाणिन्ये
जहा नेगइयस्स भणिय तहेव माणियव्व, एव जात्र धणियकुमारस्सवि वेमाणिन्ये
णवर सव्वेसिं सट्टाणे एगुत्तरिओ परट्टाणे जहा धेव अ भुरकुमारस्स, पुढविकाइ
यस्स नेरइयत्त जाव धणियकुमारचे अतीता अणता पुरेकहा कस्सइ अरिथ
करसइ णरिथ जस्सरिथ सिय सखेज्जा सिय असखेज्जा सिय अप्पता ॥ पुढवि

काइ धनत भी करेगा असुरकुमारदेवने असुरकुमारपेने गतकास में अनंती की अनागत में कोई एक दो
वीन (जिन का यादा आयुष्य बाकी रहा है वे इतन वक्त करे के आयुष्य पूर्ण कर जाव फिर असुर
कुमार में नहीं आवे इस आश्रय) तरुष्ट सख्यात असख्यात अन्त यों निरतर यावन् वैमानिक पर्यंत
कहना मय का सस्यान में एक दा तीन कहना परस्यान में जैसा असुरकुमार का कहा हैमा कहना पृथ्वीकाय
ता नगीचे से यावत् स्थिति कुपार तक अतीत कासमें अन्त की, अगाधिक कासमें कोई करेगा कोई नहीं
कला जो करेगा नो स्यात् सख्याती स्यात् असख्याती स्यात् अन्त वक्त पृथ्वीकाया से यावत् पनुष्य
पपन्त एक दो यावत् अनंत वक्त तक कहना क्यों कि इन का अंतमूर्त का भी आयुष्य होता है धाण
अपरमें जैसा तीरिय का कहा हैसा कहना ज्योतिषी और वैमानिकमें स्यात् असख्यात स्यात् अनंती
वक्त करेगा, ऐम यावत् पनुष्य का भी कहना, राणज्यन्तर ज्योतिषी वैमानिक का जैसा असुरकुमार

काइयचे जाव मणूसचे एगुचरिया वाणमतरचे जहा गेरइयते जोइसिय वेमाणियचे
 अतीताअणता, पुरेकडा कस्तइरिय कस्तइरिय जस्तिय सियअसंवेजा सिय अणता, एवं
 जाव मणुसस्तसवि गेयल्ल वाणमतर जोइसिय वेमाणिया जहा असुरकुमारा गवरं
 सट्टाणे एगुचरियाए माणियन्ने जाव वेमाणियस्त, वेमाणियचएव एते चठधीस चठधीसा
 दंडगं माणियन्ना॥ तेंगसमुग्वाओ जहा मारणांतिय समुग्वाओ गवरं जस्तअरिय एवं
 का कश तेसा कशना स्वस्थान एक दा आदी से कशना यावत् वैमानिक पर्यन्त वैमानिक में उत्पन्न होवे
 यों इस प्रकार चौवीस दंडक कशना मारणांतिक समुदाव स्वस्थान में भी ब्रह्म मे लगाकर अनंत तक
 कशना क्योंकि मारणांतिक समुदाव तो सप्त के एक भव में एक पृष्ठ ही होती है यों यावत् वैमानिक
 पर्यंत कशनों यों इस प्रकार चौवीस ही दंडक कशना वैष्णव समुदाव का तेसा निरविशेष कशना जिस
 में इतना विश्व जिस स्वान वैष्णव क्षीर होवे उस स्थान का कशना और वायु स्वावर तीन दक्खेन्द्रिय के
 वैष्णव क्षीर नहीं है ता उन का नहीं कशना यों चौवीस ही दंडक कशना अर्थात् जिस प्रकार
 ननु का श्री नरकाने गमकाल में २६ दंडके अन्त को जागामिक काल में काइ करेगा
 काइ नहीं यों करेगा भिम के है बह एक से लगा अनंत तक करेगा, बौ नरक का भीव अमुर
 कुमारने कोइ करेगा कोइ नहीं करेगा जो करेगा वह स्थान सलकाव करेगा यावत् असंख्याव भी करेगा और

एतेषि चतुर्वीसा दहगा भाणियन्वा चतुर्वीसा दहगा मारणतिय समुग्घासो सट्ठणेवि परट्ठणेवि एगुत्तरियाए नयन्वा जाववेमाणियस्स वेमाणियत्ते एव मेते चउव्विस चविसा दहगा भाणियन्वा ॥ वेठन्विय समुग्घाते जहा कसाय समुग्घाओ तहा निरयसेसो भाणियन्वा जवर जस्सअत्थि तरस त धुच्चइ एत्थवि चउव्वीस, चउव्वीसा दहगा भाणियन्वा तेयगसमुग्घाओ जहा मारणतिय समुग्घाओ, जवर जस्सअधि तस्सत धुच्चइ एवं एत चउव्वीस चउव्वीसा दहगा भाणियन्वा ॥ एगमेगस्सण भते! जेरइयस्स जेरइयत्ते क्वइया आहारग समुग्घाया अतीता? गोयमा! जत्थि, केवतिया पुरकडा?

करोगा और काइ अनंत भी करेगा यों दसों भवनपति का जानना चार स्यावर में वैक्रय सरीर नहीं है वायुकाय आश्रित अथवा एक दो तीन पावत अनंत करेगा तीन विक्रान्द्रिय में वैक्रय दरीर नहीं है तिर्यच वैचेन्द्रिय मनुष्य का वायुकाया जैसा कहना बाप्य अन्तर ज्योतिषी वैमानिक का असुरकुमार जैसा कहना यह जिस प्रकार नारकी के नीब का बोबीस दंडक पर कथन कहा जैसा असुरकुमार क भी पौबीस दंडक अस्त्र २ अनुक्रम से कहना दस भवनपति अन्तर ज्योतिषी वैमानिक का परस्पर स्वस्थानक संस्थात असंस्थात कहना, वायुकाया तिर्यच वैचेन्द्रिय मनुष्य परस्पर स्वस्थानक एक दो तीन कहना यह वैक्रय समुदात करी अब वैजस समुदात कहते हैं जिस प्रकार मारणांतिक समुदात करी उस प्रकार वैजस समुदात भी कहना जिस में इतना विभाप वैजस समुदात को स्वस्थान एक से कहना और जिस को सजस समुदात भी है उस के नहीं कहना मारणांतिक ॥

प्रथम पुरेकदात्रि, एवं मेते चठवीस चठवीसा दढगा, जात्र वेमाणियस्स विमाणियसे॥ एगमेगे
रसणभते! गेरइयाण गेरइयपे केवतिया केवलि समुधाया अतीता! गोयमा! णरिय, केवइया
पुरकदा? गोयमा! णरिय एव जात्र वेमाणियच अत्र मणुस्सत्त अतीता णरिय
पुरेकदा कस्सइअरिय करसइणरिय जरसरिय एक्को, माणसस्स मणूतचे अतीता, कस्सइ
अरिय करसइ णरिय जरसरिय एक्का एव पुरेकदात्रि, एवमेते चठवीस चठवीसा दढगा॥ ७॥
गेरइयाण मते! गेरइयचे केवइया वेदणा समुधाया अतीता? गोयमा! अणता, केवतिया

अब केवल समुधाया का कहते हैं 'अहो मगबन्' एक के नेरीयने नेरीयने केवल समुद्धान्त मंत्र
काल में कितनी की है! अहो गौतम! नहीं की आगायिक काळ में कितनी करेगा? अहो गौतम!
नहीं करेगा यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना, जिप में इतना विशेष मनुष्यवने अतीत काळ में हो
मनुष्य छाह तेरीम ही दंडकबाले किसीने भी नहीं की आगायिक काळ में कोई करेगा कोई नहीं भी
करेगा जो करेगा तो एक ही वक्त करेगा और मनुष्य का मनुष्यवने केवल समुधाया मंत्र काळ में
किसीन की है किसीने नहीं भी जो फी है तो एक ही वक्त की है वे अतीरस्य पुत्रे है और जो
करेगा वे एक ही वक्त करेगा॥ ७॥ भयपटुन जीव आश्रय परस्पर पृच्छा करते हैं अहो मगबन्! बहुत नरक के नेरीयने
नेरीयपने मतों काळ में वेदनीय समुधाया कितने वक्त की है! अहो गौतम! अनंत वक्त की है, आगायिक काळ में
अनंत वक्त करेंग यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना और इसी प्रकार सब आश्रय परस्पर कहना यावत्

पुरेकडा? गोयमा! अणता, एव जाव वेमाणिपत्ते। एव सन्वजीवाणं भाणियन्वा जाव वेमाणि-
 याण वेमाणिपत्त, एव जाव तेयग समुग्धातो, जवर उवठजिठणणेयच्च, जस्सात्थि वेठव्विय
 तेयगा ॥ जेरइयत्ते केवतिपा आहारग समुग्धाता अतीता? गोयमा!
 जत्थि, केवइया पुरेकडा? गोयमा! जत्थि, एव जाव वेमाणिपत्ते, जवर मणूरसत्ते
 अतीता असस्वजा, पुरेकडा असस्वजा, एव जाव वेमाणिपत्त, जवर वणप्फइकाइयाण
 वेमानिकने वेमानिकपत्ते कितनी की! अनती, कितनी करेग! अनती कैसे यह
 वेदनीय समुदयात्त का बहुत जीव यात्रिय परस्पर बोधीस दडक पर कयन किया उस ही।
 प्रकार कपाय समुदयात्त का, मारवातिक समुदयात्त वेक्य समुदयात्त का और
 तनम् समुदयात्त का कयन करना, जिस स्थान जो समुदयात्त वाली हो वह कहना वेक्य
 और तनम् समुदयात्त सब स्थान नहीं वाली है उस का विचार कर कहना अब आहारक समुदयात्त
 का कहने हैं अहो मयवन्! गुरु ते भगवते नैरीयेपत्ते मत्तकास में आहारक समुदयात्त कितने वक्त की?
 प्रहो मीतप! नहीं की, आगामिक कास में कितनी वक्त करेगे! अहो मीतप! नहीं करेग ऐसे ही यावत्
 वैमानिक पत्त कहना जिस में, एतना विशेष मनुष्य अभियगये कास में असंख्यात वक्त कहना स्यांकि
 असंख्यात जीव है और, आगापिक कास जात्रिय भी असंख्यात वक्त ही कहना जो यावत् वैमानिक

मनुस्सत्ते अतीता अणता, पुरेकढा अणता, मणुस्साण मणसत्ते अतीता सिय संखेज्जा सिय असखेज्जा, एव पुरेकढावि, सेसा सन्वे जहा नेरइया, एव एते चठव्वीस चठव्वीसा ददगा ॥ नेरइयाण मते ! नेरइयत्ते केवइया केवल्लि समुग्घाता अतीता ? गोयसा ! नत्थि, केवत्तिया पुरेकढा ? गोयसा ! नत्थि एव जाव वेमाणियत्ते, एव मणसत्त अतीता नत्थि, पुरेकढा असखेज्जा, एवं जाव वेमाणिया, एव वणप्फत्ति काइयाण मणुस्सत्ते अतीता नत्थि, पुरेकढा अणता ॥ मणुसाण मणसत्ते अतीता सिय

तक कहना जिस में इतना विषय मनुष्यगति के जीवोंने मनुष्यपने आहारक समुद्घात गतकाल में अनंत वक्त की बवोकि अनंत जीवों है आगापिक काल में भी अतव वक्त करेग और मनुष्यने मनुष्यपने अतीत काल में स्वाव सस्यगी की गर्भेन मनुष्य आश्रिय, और स्वात् असस्याव की समृद्धिम मनुष्य आश्रिय आगापिक काल आश्रिय भी इसी प्रकार कहना वेष वदक का भेना नेरीया का कयन कहा तेसा कहना यों चौबीस ही वंदक का चौबीस ही वदक पर बहुत बीबों आश्रिय कयन कराना अब केवल समुद्घात आश्रिय कहत है अबो भमबन् ! नेरीयेने नेरीयपने अतीत काल में कितनी केवल समुद्घात की ? अबो गौतम ! नहीं की आगापिक काल में भी नहीं करेगे यों यास्व वैमानिक पर्यंत कहना जिस में इतना विषय मनुष्य ने मनुष्यपने गतकाल में नहीं की अनंत गतकाल में असस्याव करेगे

हयार्ण कपरे २ हितो अष्पात्रा बहुयात्रा तुष्ठात्रा त्रिसेसाहियात्रा १ गोयमो सन्वत्योत्रा
जीत्रा आहारग समुग्धातेण समोहया, केवलि समुग्धातेण समोहया संखेज्वगुणा,
तेयग समुग्धाएण समोहया असखेज्वगुणा चेटविय समुग्धातेण समोहया असखेज्व
मुणा, मारणतिय समुग्धातेण समोहता अणतगुणा, कसाय समुग्धाएण समोहया
असखेज्वगुणा, वेदया समुग्धातेण समोहया त्रिसेसाहिया, असमोहिया असखेज्वगुणा

मिक्ते है १ वर अयय एक दो तीन चत्तुष्ट पृथक्त्व सो है १ यह आहारक शरीर के प्रारम काल वाले गिन
है २ उन स केवल समुद्घात समोहने वाले सख्यातगुने क्योंकि यह एक वक्त में प्रवक्त्व सारस
है, ३ उन से तजस समुद्घात समोहने वाले असख्यातगुने क्योंकि वैबिन्द्रिय विर्यच पनुष्य और देवता
में भी पाती है ४ उन से वैक्रय समुद्घात के समोहने वाले असख्यातगुने, क्योंकि नरक और बापुकाय
वाल बढ़गये, ५ उस से मारणातिक समुद्घात समोहने वाले अनत गुने क्योंकि यह वनसगति आदि सर्व
स्यान में पाते है, ६ उन से कषाय समुद्घात समोहने वाले असख्यागुन क्योंकि मारणातिक समुद्घात
सा एक मत्र में एक ही वक्त रोती है और यह बहुत वक्त रोती है, और ७ उस से वेदनीय समुद्घात समोहने वाले
विद्वपाधिक क्योंकि कषाय दसवे गुन स्यान तक है और देवना समुद्घात चत्तवे गुणस्यान
तक है, और ८ उस में असम्पुद्घात वाले असख्यातगुने क्योंकि निगोदादि में समुद्घात से निवर्तते

भारणतिय समुग्धातेण, वेठब्बिय समुग्धातेण, तेयग समुग्धातेण, समोहयाणं असमो-
हयाणय कयर २ हित्तो अप्पाया बहुयावा तुल्लावा त्रिसैसाहियावा ? गोयमा !
सन्वत्थोवा असुरकुमारा तेयग समुग्धातण समोहता, भारणातिय समुग्धातेण
समोहता असखेज्जगुणा, वेदणा समुग्धातेणं समोहता असखज्जगुणा, कसाय
समुग्धातेण समोहता सखेज्जगुणा, वेठब्बिय समुग्धातेण समोहता, सखेज्जगुणा, असमो-
हया असखेज्जगुणा, एव जाव थणियकुमारा ॥ १॥ एतेसिण भत्त ! पुढविकाइयाण पुच्छा ?
गोयमा ! सन्वत्थोवा पुढविकाइया भारणतिय समुग्धातण समोहया, कसायसमुग्धाएण

वैभ्रय और ५ तजस समुद्धयासी समोह असमोह में कौन २ कमी ज्यादा दुदय विद्यय हैं ? अहो गौतम !
सब स थोड असुरकुमार देजस समुद्धयाव समोहने बाल क्यों कि कभी किसी के शोही है २ उन से
भारणाविक समुद्धयाव के समोहने वाले असख्यातगुने एक वक्त सब के शोही है, ३ उन स वेदना
समुद्धयाव समोहने बाल असख्यातगुने, ४ उन से कपाय समुद्धयाव समोहनेबाले सख्यातगुने, ५ उन से
वैभ्रय समुद्धयाव समोहने बाल सख्यातगुने, और उनसे असमोहित असख्यातगुने, यों यावत् स्तान्त
कुमार पर्यंत रहता ॥ १२ ॥ अहो भगवन् ! पृथ्वीकजय के वेदना, कपाय धारणाविक समुद्धयाव
क समोहया असमोहया में कौन २ कमी ज्यादा तुल्य विद्येय हैं ! अहो गौतम ! सब से थोडे पृथ्वीकजा

समोह्या संसिजगुणा, वेदणा समुग्धाएणं समोह्या विसेसाहिया, असमोह्या
असंखजगुणा ॥ १॥ एव जाय वणफ्फइ कइयाण, जवरं सज्जयोवा वाउकाइया
वेउविश्य समुग्धाएणं समोह्या मरणातिक समुग्धाएणं समोह्या असंखं
जगुणा, कसाय समुग्धाएणं समाहिता असंखजगुणा, वेदणा समुग्धाएणं
समोह्या विसेसाहिया, असमोह्या असंखजगुणा ॥ १२ ॥ ॥ चइदियाण भते !
वेदणा समुग्धाएणं, कसाय समुग्धाएणं, मरणतिय समुग्धाएणं समोह्याएणं असमो
ह्याएणं कयरेरहिंती अण्णाया ० ? गोपमा ! सज्जयोवा चइदिया मरणतिय समुग्धा-
एणं समोह्या, वेदणा समुग्धाएणं समोह्या असंखजगुणा, कसाय समुग्धाएणं

मारणातिक समुग्धाएणं समोह्याएणं, कसाय समुग्धाएणं समोह्याएणं, १ वेदना समुग्धाएणं समो-
ह्याएणं विसेसाहिया, २ उन से असंखजगुणा असंखजगुणाएणं एते ही यावत् वसस्विकाया भक्त कराना, नितमे
इतना विद्वान् सब से श्रेष्ठ समुग्धाएणं वेदना समुग्धाएणं समोह्याएणं, २ उन से मारणातिक समुग्धाएणं
समोह्याएणं असंखजगुणा, ३ कसाय समुग्धाएणं समोह्याएणं असंखजगुणा ४ उस से वेदना समुग्धाएणं
समोह्याएणं विसेसाहिया, ५ उन से असंखजगुणा असंखजगुणाएणं ॥ १२ ॥ अहो मगबन् ! वेदना
कसाय मरणतिय समुग्धाएणं कौन २ कमी क्यादा है ? अहो गौतम ! सर्व से श्रेष्ठ विसिद्ध मारणा-
तिक समुग्धाएणं समाहिता, २ उन से वेदना समुग्धाएणं समोह्याएणं असंखजगुणा, ३ उन से कसाय समुग्धाएणं

समोहया सखेज्जगुणा असमोहया असखेज्जगुणा ॥ एव जाय पठारदिया ॥ १३ ॥
 पाचिदिय तिरिक्ख जोगियाण भंते ! वेदणा समुघातेण समोहयाण, कसाय समुघा
 तेण समोहयाणं मारणनिय समुघातेण समोहयाण, वेदविय समुघातेण समोहयाण
 तैया समुघाते समोहयाण, असमोहयाण कयरे २ हिंते अप्पावा ४ ? गोयमा !
 सव्वस्योवा पचिदिय तिरिक्खजोगिया तैयासमुघातेण समोहया, वेदविय
 समुघातण समोहया असखेज्जगुणा मारणतियसमुघातण समोहया असखेज्जगुणा,
 वेदणासमुघातेण समोहया असखेज्जगुणा, कसायसमुघातेण समोहया असखेज्जगुणा,

समोहनेवात्त संख्यातगुणे, ४ असमोहत्त संख्यातगुने, एसे ही यावत् चौद्विय पर्यन्त कहना ॥ १३ ॥ अहो
 मगनन् ! पचिदिय तिरिक्ख गानिक मे वदना कपाय मारणाविक वैकय, वेज्ज समुघात के समाये अस
 मोहय मे कोन ० कमी ज्यादा हे ! अहा गौतम ! सब से पाटे तिरिक्ख पचिदिय तेनम्प समुघात करने
 वाल, २ उन स वैकय समुघातण समोहनेवाल असंख्यातगुने, क्यों कि मिस को कन्पि होती हे ५ ही यह
 समुघात कर सकते हे, १ उन से मारणाकिय समुघातण समोहनेवाल असंख्यातगुने असंखी आश्रिय
 ६ उन से वदना समुघातण समोहनेवाले असंख्यातगुने, ५ उन से कपाय समुघातणवाले असंख्यातगुने,

अत्र मोहया सखेजगुणा ॥ १४ ॥ मणुस्साण भते ? वेदणासमुग्धातेण समोहयाण
 कपायसमुग्धातेण समोहयाण, मारणतिय समुग्धातेण समोहयाण, वेठवियसमुग्धातेण
 ममाहयाण तयगसमुग्धातेण समोहयाण, आहारसमुग्धातेण समोहयाण, केवलिसमुग्धा-
 तण समोहयाण कपरे २ अप्पावा बहुयाथा तुक्काएवा विसेसहियावा ? गोयमा ! सव्वथोवा
 मणुस्सा ! आहारग समुग्धातेण समाहया, केवलिसमुग्धातेण समोहया सखेजगुणा,
 तयग समुग्धातेण समोहया सखेजगुणा, वेठविय समुग्धातेण समोहया सखेजगुणा,
 मारणतिय समुग्धातेण समाहया असखेजगुणा, वेदणा समुग्धातेण समोहया असखेज

१ उन से असमुद्घातिक संस्थातगुने ॥ १४ ॥ अहो मगबन ! मनुष्य में वेदना, कपाय, मारणातिक,
 विक्रय, तेजस् आहारक कच्ची इस के समानेवाल असमानेवाले में कपी क्यादा कौन २ है ? अहो
 गौतम ! सब में याद आहारक समुद्घात के समानेवाले, केवल समुद्घात के समानेवाल संस्थातगुने,
 (यह दोनो समुद्घय जीव में कहे तैथे जानना) ३ उन से तेजस् समुद्घात समानेवाल संस्थातगुने,
 नयो कि एक वक्त में एक साल तक पिछते हैं, उन से विक्रय समुद्घातवाले संस्थातगुने क्यों कि एक
 क्राद प्रमान मिलत है. वक्रवर्ती, वासुदेव त्रियापर स्मिप पाष मुनि आदिक के दोही है, ४ मारणातिक
 समुद्घातवाले असख्यातगुने, समुद्घिग मनुष्य आश्रिय, ५ वदना समुद्घातवाले असख्यातगुने क्यों कि

गुण। कसायसमुग्धातेण समोद्दया सखेज्जगुणा, असमोद्दया। असखेज्जगुणा ॥ वाणमत्तर
जाइसिप वेमाणिया जह्वा अरुकुमारा ॥ १५ ॥ कतिण भते ! कसाय समुग्धाता
पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाय समुग्धाता पण्णत्ता तज्जहा कोहसमुग्धाते,
माणसमुग्धाते मायासमुग्धात लोभसमुग्धाते ॥ गरुडयाण भन ! कति कसाय
समुग्धाता पण्णत्ता ? गोयमा ! चत्तारि कसाय समुग्धाता पण्णत्ता, एव जात्र वमा
णियाण ॥ एगमगरस्सण भते ! गेरुडयस्स केवातिया कोह समुग्धाता अतीता ? गोयमा !
अणता केवातिया पुरकट्ठा ? गायमा ! वस्सह् अत्थि कस्सह् गत्थि जरगअत्थि

बहत वक्त होती है ३ कपाय समुद्रयातबाल भक्षयातगुने स्वभाब से ८ भवमोही असुखातगुने बाण व्य-उर उपाधिपी और वैमानिक देय की अस्यावदुस्त् नैसी असुरकुमार देव की कही वैसी कहना ॥१८॥ भव समुद्रयात के भद्र कहत हैं, अहो भगवन् ! केहेना समुद्रयात कितने प्रकार की कही है ? अहो गौ भव ! चार प्रकार की कही है तथा—१ प्राय कपाय समुद्रयात २ मान कपाय समुद्रयात, ३ माया कपाय समुद्रयात और ४ लोभ कपाय समुद्रयात अहो भगवन् ! नेरीय के कपाय समुद्रयात कितन प्रकार की कही है ? अहो गौतम ! चारों प्रकार की कही है ऐसे ही यावत् वैमानिक पयन्त कहना भद्रा भगवन् ! एतेक नरीये क क्रोथ समुद्रयात अवीव काल में कितन बक्त हुई ! अहा गौतम !

जहूणें पक्षीया देवा तिणिवा उक्तीसेण सखेज्वावा असखेज्वावा, अर्थात्तावा, एव
जाय वेमाणियस॥ एव जाव लोभ समुघाते, एते चत्वारि दहगा ॥ नेरइयाण भते!
केवतिया कोढ समुघाता अतीता ? गोयमा! अण्ता, केवतिया पुरेकडा ? गोयमा!
अणता एव जाव वेमाणियाण एव जाव लोभससमुघाए चत्वारि दहगा ॥ एग
मगरसण भते ! वेरइयस पेरइयसे केवतिया कोह समुघाता अतीता ? गोयमा !
अणता, एव जहा वेदणा समुघातो भणितो तहा कोहसमुघातोवि भणितव्वो निरव
सेस जाव वेमाणियसे ॥ माणसमुघाए मायासमुघाएय निस्वसेस जहा मारणतिय

अनत वक्त हुइ आगापिक काल में कितने वक्त होगी ! अहो गोतम ! किसी क होमी किसी के नहीं मी होगी
जिम के होगाना नयय एह वक्त दो वक्त तीन वक्त उठठट मरुपाव वक्त असंख्यात वक्त अनत वक्त मी होगी
और जेमा काय कपाय समुदात का कहा जेमा ही यावत् लोभ कपाय का कहना यों चारों
दयाए क बार दहक कहना अहो भगवन् ! बहुत नेरीयोंने क्रोध कपाय समुदात अर्थात् काल में कितने
वक्त की है ! अहो ! अनत वक्त की है अगापिक काल में कितनी वक्त करेंगे ! अहो गोतम ! अनत
वक्त करेंगे यों यावत् नैमानिक पपन्त कहना और ऐसे ही यावत् लोभ कपाय पर्थन्त कहना यों बहुत
भी आश्रिय मी चार कपाय के चार दहक कहना अब परस्पर एकेक नेरीये आश्रिय चौबीस दहक

समुग्धाते, लोहसमुग्धाते जहा कसाय समुग्धाते, गंधरं सत्वजीवा असुरादि नेरइएसु लोभकसाएणं भते । एगुत्तरिशा गेयव्वा ॥ नरइयाण भते । गेरइयत्त केवतिया कोहसमुग्धाता अतीता ? गोयमा ! गणता, केवइया पुरेकहा ? गोयमा ! अणता, एवं जात्र वेमाणियत्ते, एव सट्टाण परट्टाणेषु, सत्वरयवि माणियव्वा, सत्त्व जीवाण चत्वारि समुग्धाता जात्र लोभ समुग्धाओ, जात्र वमाणियाणं विमाणियत्ते ॥ एतेसिणं भते । जीवाण कोहसमुग्धातेणं माणसमुग्धातेणं, मायासमुग्धातेणं, लोभसमुग्धातेणं

पर प्रोष कपाय का कहत है अहो भगवन् ! एकेक नेरीयने नारकी पने क्काय कपाय असीठ काल में कितनी वक्त की ? अहो गौतम ! अन्ती वक्त की यों भिस प्रकार पडिख वेदना समुदात का कदा उस ही प्रकार कपाय समुदात का कहना यों यावत् देमानिक पर्यन्त बोलीसही दइक कहना इस प्रकार ही मान कपाय समुदात का और माया कपाय का यी निरविशेष जैसा भार्णोविक समुदात का कहा तैसा ही कहना और सोम कपाय समुदात का जैसा कपाय समुदात का कहा तैसा कहना उस में स्वना विशेष सब ओवों आश्रय असुरकुमार आदि नेरीये आदि के सोध कपाय अथन्य एक दो आदि कहना अथ बहुत ग्रीव आश्रय परस्पर पडते हैं-अहो भगवन् ! बहुत नेरीयो नेरीयेपने कितनी प्रोध

समोह्याण अकसायसमुग्धाते समोह्याण असमोह्याण कयरे २ हितो अप्पिवा
 बहुपावा तुल्लावा विसेसाहियावा ? गोयमा ! सन्वरयोवा जीवा अकसाय समुग्धाण
 समोह्या, माणसमुग्धाएण समोह्या अणतगुणा कोह कसाय समुग्धातेण समोह्या वि
 सेसाहिया माया समुग्धातण समोह्या विसेसाहिया, लोभकसाय समुग्धातेण समोह्या
 विससाहिया, असमोह्या सखेजगुणा ॥ एतासिण मत ! जेरइयाण कोह समुग्धाएण
 माणसमुग्धाएण, मायासमुग्धाएण लोभ समुग्धाएण समोह्याण असमोह्याणय कयरे २

कपाय समुद्धात अहीव काल में की ! अहो गौतम ! अनन्त वक्त की आगापिक काल में कितनी करेगा ?
 अहो गौतम ! अनन्त वक्त करेगे यों यावत् वैमानिक पर्यन्त कहना यों स्वस्थान परस्थान सर्व कहना
 सब जीवों के वाग प्रसार की समुद्धात यावत् लोभ कपाय पर्यन्त कहना यावत् वैमानिक देवने वैमानिक
 देव पन कितनी की बर्षा तक कहना अब इन चारों की अत्यावृत्त कहत है अहा प्रगनन् ! इन भीवों
 में कोथ समुद्धात बाल, मान समुद्धात बाले, माया समुद्धात बाले और लोभ समुद्धात बाल मपोहित
 प्रसवोहित में कभी उपादा तुरण विशेष कोन २ है ! अहा गौतम ! सब से पावे भीव अकपायी समुद्धात के
 समोहन बाले इस में वेदनादि छोडी समुद्धात बाल बागय उत से मान कपाय के समोहिक अनन्तगुने

हितो अप्यावा ध? गोयमा । सञ्चरयोवा णेरइया लाभ समुग्घाएणं समोहया, माया
 समुग्घातेणं समोहया सखेज्जगुणा, माणसमुग्घातेण समोहया सखेज्जगुणा, कोह
 समुग्घातेणं समोहया सखेज्जगुणा, असमाहया सखेज्जगुणा ॥ असुरकुमारान
 पुच्छा ? गायमा ! सत्वरयोवा असुरकुमारा कोहसमुग्घातेण समोहया माण
 समुग्घातेण समाहया सखेज्जगुणा, मायासमुग्घातेण समोहया सखेज्जगुणा,
 लोमसमुग्घातेण समोहया सखेज्जगुणा, असमोहया सखेज्जगुणा ॥ एव सत्वेदवा

बनस्पति आश्रित्य, उस ते क्रोध कपाय समोहक विशेषाधिक, उस ते माया कपाय के समोहक विश्वपाधिक
 उस ते लोम कपाय के समोहक विश्वपाधिक, उस से असमाहक सख्यावगुने अशो भगवन् ! इन नेरीय
 में प्राय कपाय समुदातक, मान कपाय समुदातक, माया कपाय समुदातक, लोम कपाय समुदातक, और
 असमुदातक, इन में कौन २ योहे उपात्ता हैं ! अशो गौतम ! सब से याहे नेरीये लोम कपाय क स्याहने
 वाक्, उन में माया कपाय के समोहन बाल सख्यावगुन, एतन स मान कपाय समुदातक समोहक सख्याव
 गुन, ५ उन से प्राय कपाय समोहक सख्यावगुने, उन से असमोहक सख्यावगुने, असुरकुमार की पृच्छा!
 गौतम ! सप से गाढ असुर कुमार क्रोध समुदातक, मान कपाय के समुदातक सख्यावगुने, माया, कपाय

जाव वैमाणिया पुढविकाइयाण पुच्छी गोयमा सव्वत्थोया पुढविकाइया माण समुग्घातेण समोहया, कोह समुग्घातेण समोहया त्रिसेसाहिया, माया समुग्घातेण समोहया त्रिसेसाहिया लोमसमुग्घातेण समोहया, त्रिसेसाहिया, असमोहया सखब्बगुणा ॥ एव ज्ञाव पौचविय तिरिक्खजोणिया, मणुस्सा जहाजीया शवर माणकसाय समुग्घाएण समोहया अससखब्बगुणा, ॥ १९ ॥ कतिण उठमात्थिया समुग्घाता पण्णसा ? गोयमा ! उउम्मरियया समुग्घाता पण्णसा तजहा ? वेवणा समुग्घाए कसायसमुग्घाए मारणत्तिय

के समुदातक सस्यातगुने, सोम कपाय के समुदातक सस्यातगुने, असमुदातक सस्यातगुने यो ही सब इनवाओं की वैमानिक पर्यन्त अन्त्यागर्हस्व कहना पृथ्वीकाविक्रिणी पृष्ठाभरो गौतमा सबसे बोट वृक्षीकाधिक मान कथय के समुदातक, भोक कपाय समुदातक विशेषाधिक, माया कपाय के समुदातक, बिन्ध्या विक, ४ सोम कपाय के समुदातक विशेषाधिक, असमोहिक सस्यातगुना, यो पाव, पंचेन्द्रिय तिर्यक् योनिक पर्यन्त कहना मनुष्य का तेले समुषय नीव का अन्त्यागर्हस्व कहा तेसा ही कहना, परतु इतना बिषय मान कपाय असस्यातगुने कहना ॥ १९ ॥ अब उषस्व की समुत्पाव का प्रश्न करते हैं ? अहो ! मगबन् ! उषस्व क कितनी समुत्पाव होवा है अहो गौतम ! उषस्व की व समुत्पाव होवा है तबमा-१ वेदना समुत्पाव, २ कपाय समुत्पाव, ३ मान

वेदविय समुग्धाते, तेय समुग्धाते ॥ एव जात्र थाकियकुमाराण, एगिदिय
खिगळिदियाण पुच्छा ? गोयमा ! तिण्ण छाउमरिथया समुग्धाया पण्णत्ता,
तज्झा वेदणा समुग्धाए, कसाय समुग्धाए, मारणातिय समुग्धाए, गवर
वाउकायाणं वचादि समुग्धाया पण्णत्ता तज्झा वेदणा समुग्धाते, कसाय समु
ग्धाते, मारणतिय समुग्धाते, वेदविय समुग्धाए ॥ पचिदिय तिरिक्खजोणियाण,
पुच्छा ? गायमा ! पच समुग्धाता पण्णत्ता तज्झा वेयणासमुग्धाए, कसाय समुग्धाए,

वैश्य, और ५ वेवस मनुष्य की पुच्छा ! अहो गौतम ! मनुष्य के छी जइस्य की समुदास है तथया ?
वेदनीय, २ कपय, १ मारणातिक, ४ वैश्य, ५ वेवस और ६ भारारु पाणव्यन्तर ज्योतिषी और
वैमानिक के जैसा बनुरकुमार का कहा वैसा कहना अब समुदास की शेष स्पर्धना कहते हैं ॥ १७ ॥
कहा मगवस् ! जीव वेदना समुदास समोहने समोहकर जो पुत्रक निकाले वे पुत्रक : बितना
शेष बिना स्पर्ध छोड़ते हैं और कितना शेष स्पर्धते हैं ! अहो गौतम ! बरीर ममान छम्भा चौडा बरीर
मकने ही नादपने शेष स्पर्ध कर रहता है [यह लोक के मध्यवती जीव आश्रिय कहा है अन्य या लोक
किनारे रहे जीवों तीन चार बाबदिया के पुत्रक स्पर्ध करते हैं] बाकी के शेष बिना स्पर्ध रहता है यह
शेष स्पर्धता है अब काळ आश्रिय कहते हैं अहो मगवस् ! यह शेष किन्ने काळक अस्पर्ध रहता है

प्यमाप्यमृतं विद्वत्समं बाह्येण नियमा आदेश एव तित स्वच अपुण्ये एवातिस्वचे
 फुडे, ॥ तेषां भते ! स्वचे केवति कालस्स आपुण्ये, केवति कालस्स फुडे ? गोयमा !
 एगसमपुण्यमा पुसमपुण्यमा, तिमपुण्यमा, विगहणं एवइ कालस्स आपुण्ये,
 एवइ कालस्स फुडे ॥ तेषां भते ! पोगले केवति कालस्स निच्छुमति ? गोयमा !
 कवण्णयं भतेमुहुत्तस्स, उक्कोसेणवि भतेमुहुत्तस्स तण भते ! पंगला निच्छुडास
 'माप्पा जइ तस्य बाप्पाइ भूयाति जीवाइ ससाइ अभिहणति वचति लेसति

पूछे कितनी क्रिया लगती है ? अहो गौतम ! किसी को ना किंचित् बापा उत्पन्न करता है उसे
 वीन क्रिया सम्पत्ती है, जो विशेष परिणाम उत्पन्न करता है उसे पाप क्रिया लगती है और जिन के
 पुण्य बाधे होभाए हों पाप क्रिया भी लगती है अहो भगवन् ! वह एक वीर एक वेदना समुदात
 करते बहुत भीषों वेदना समुदात करे उस का मयम बहुत वीर की यात्र की आगे उन से भी बहुत
 भीष भारे गव, और उन से भी भारी बहुत से जीवों भारे गये पों परम्परा से पात होती एक भीष से
 भयम जीवों को कितनी क्रिया कहे ? अहा गौतम ! एक प्रकार वीन भी लगती है बार भी लगती है
 और पाप भी लगती है अहो भगवन् 'भेरिय को वेदना समुदात समोदये किवनी क्रिया लगती है !

सधायति सघटति परिसार्धति, किलावति, उद्वंसति ? इतां बोधयमा !
तेहिताण मत्त ! से जीवे कसिक्किरिए ? गोयमा ! सिय तिक्किरिए सिय
घटाक्किरिए गिय पघक्किरिए।तेण भते। ताओ खीन्नाओ कसिक्किरिया ? गोयमा ! सिय तिक्कि-
रिया, सिय घटाक्किरिया, सिय पघक्किरिया ॥ तण भते ! जीवे तेयज्जीवा अण्णोसे
जीवाण परिघाएण कसिक्किरिया ? गोयमा ! तिक्किरियावि घटाक्किरियावि पंच-
क्किरियावि ॥ जेरइएण भते ! वेदणा समुग्घाएण समोदते एव जइए जीवे जवर
तेरइयाच्चिलाओ, एव निरबसेस जाव वेमाणिये ॥ एव कसायसमुग्घातेवि भाणियव्वो

अहा गौतम ! मेमा कपर जीव हा कहा हैसा ही नेरीये हा कहन्य यो पावल वैमानिक पर्वत निर्विघ्न
कहना ऐसे ही कपाय समुद्राप का भी कहना अब भारणांतिक समुद्राट का कहत है ! अहो भगवन !
जीवभारणांतिक समुद्राट मगहाण भूवाजो पुस छूटन पुट्ठको कर किठना सब नहीं। सग्वे है किठना सब सग्वेते
अहा गौतम ! शरीर प्रमान चौडा जादा और सम्बरपने में जगन्य अंगुल के असंख्यावसे भाग छट्ठए
अनत्थाठ पावन एकदिखाये इतना सय अरणाओ और इतना सय सखाओ अहो भगवन ! यह किठने काल मन
स्पर्शा रह किठने काल सखाओ रह ! अहो गौतम ! एक समर दो समय तीन समय चार समय
विमरगति के काल रपेन्त इतना काल नहीं। सर्व इतना काल सग्वे सेव हैसा ही कहना यावतु स्यात्

जहणेण अगुलस्स मखेज्जतिमाग उक्खीसेण संखेज्जाइ जोयणाइ, एगदिसिं विविसिं बी
 एवइएस्सत्त आपुण्णे एवातिपु खीत्तेप्पुड, सेणं सते ! खेपे केवति कालस्स आपुण्णे केवति
 कालस्स फुडे ? गोयमा ! एमसमएणवा दुसमएणवा तिसमएणवा विग्गहेण एवति
 कालस्स आपुण्णे एवति कालस्सफुडे, सेस तथंवा जाव पचकिरियावि ॥ एय नेरइएणवि
 एवर आयमेण जहण्णं अगुलस्स संखेज्जमाग उक्खीसेण संखेज्जाइ जोयणाइ
 एमदिसिं एवतित्ते खेपे केवतिकालस्स तचं, जहा जीवपदे, एवं जहा
 नेरइयस्स, तहा असुरकुमास्स, गंधरं एगदिसिं विविसिंवा, एव जाव थणियकुमारस्स

कहना एने हो नरीये का भी कहना, इतना विषय ब्रह्मपते में अवश्य बहुत के सत्यतादे माग उत्तरे
 संरुपात योजन प्रप्रात एव विद्या में इतना ब्रह्म ब्रह्मदे. इतना ब्रह्म, स्वर्गे कितने काल लगे ? जसा
 बीप पद में कहा वैसा कहना यों मैसा नेरीये का कहा वैसा असुर कुमार का भी कहना इतना विषय
 एकोन्य आश्रय दो विद्या कहना यों यावत् स्थिति, कुमार पर्यंत कहना ब्राह्मण, का समुदाय
 नीच मैसा कहना निस में इतना विशेष एकविद्या ही कहना ब्रह्मेन्द्रिय तिर्यक योनिक का निषिद्ध
 मैसा नेरीय का कहा वैसा ही कहना प्रमुष्य बाणव्यन्तर श्योनिनी वैमानिक का वैसा असुर कुमार
 एवका कहा वैसा ही कहना मय वैसा समुदाय का कहे हैं, यो ब्रह्म ! नीच तेजस समुदाय निस

वाउकाइयस्स जहा जीवपदे, पवरं ण्गदित्तं। पच्चिदिय तिरिक्खजोणियस्स निरवसेस
जहा भेरइयस्स, मणुस्सवाणमंतर जोतिसिय वेमाप्पियस्स निरवसेस जहा असुर-
कुमारस्स ॥ अविणं भंते! तेयसमुग्घाएणं समोहए समोहाणिचा जे पोगले निच्छुभति
सेहिणं भंते ! पोगलेहि केवतितं सेचे आपुण्णे, एवं जहेव वेठविध समुग्घाए
तहेव गयरं आयामेणं जहण्णेणं अंगुलस्स असलेज्जसिभाग सेसं तवेव, एव जाव
वेमाप्पियस्स, पवरं पच्चिदिय तिरिक्खजोणियस्स एगदित्तं एवतिए सेचे फुंठे॥ जीवेणं
भत ! अहारग समुग्घाएण समोहाणिचा जे पोगले निच्छुमइ तेहिण भंते! पोगलेहि

बाद जो फुल्लो निक्कल दे कितना सत्र नहीं स्वर्धे यो यावत् जैसा वैक्रेय समुद्राव का कहा है। ही कइना
परंतु इतना विशेष सम्बन्ध में अथन्य अंगुल का असल्यातवा भाग उत्कृष्ट संख्यात योजन सेप सेसे ही
कइना यो यावत् वैमानिक पर्यंत कइना, जिस में इतना विशेष पंचेन्द्रिय विशेष योनिक एकदिया में इतना
तोय स्वर्धे आहारक समुद्रावका काठे है महा मगन ! ग्रीव आहारक समुद्राव समोइकर जो फुल्लो
दुब है दे कितना सेत्र नहीं स्वर्धे कितना सत्र 'सर्धे' ? अहो गौसप ! अरीर के प्रमान में
जारा चौटा, सम्बन्धने में अथन्य अंगुल के असल्यातवा भाग उत्कृष्ट संख्यात योजन एक दिशा में

कैवडइए खेचे आ(पुणे केवडइए खेचेपुटे? गोयमा! सरीरप्यमाणमेत्ते विखेखाहल्लेणं आयी
 मेण जहण्णेणं अगुलस्स असखतिमाग उक्कोसेण सखेज्वाइ कोयणइ एंगविसि एवतिए
 खेच एगसमण्णवा दुममण्णवा, तिसमण्णवा, विगगेहेणं एवति कालस्स आपुण्णे एवति
 कालस्स फुड, तेण भते ! पोगला केवडकालस्स निण्छुभाति ? गोयमा! जहण्णेणवि
 उक्कोसेणवि अतोमुहुत्तस्सातेण भते! पोगला निण्छुढासमाणा जाई तत्थ पाणहिं मूयाइ
 जीवाइ सत्ताइ अभिहणंति जाव उइवति तओण भते! जीवे कति किरिए ? गोयमा!
 सिय तिकिरिए सिय चटकिरिए सिय पचकिरिए ॥ तणं भते! जीवा ताओ जीवाओ

इतिना सेंच, काल से एक समय दो समय तीन समय बिग्रा गति से इतना सेंच, स्वर्गे, इतना
 सब काल से स्वर्गे, बड़ा मगबन् ! वे पुत्रक कितने काल में छूटे ! अहो गौतम ! नर्पेय भी उच्छुष्ट
 भी अवर्तुर्गनें अहो मगबन् ! वे पुत्रक छूट इंचे अहां आवे वहां प्राणमेव जीव मत्त की घाव करे पांचव
 उपद्रव करे उन को कितनी क्रिया छग ? अहो गौतम ! स्यात् तीन स्यात् चार स्यात् पंच अहो
 मगबन् ! बाग भी उन भीषों से छूट कर वे पुत्रक अन्य जीव को छगे, अन्य भीषों से छूट अन्य
 अन्य को छगे, उन भीषों को कितनी क्रिया छगे ? अहो गौतम ! उक्त प्रकार तीन चार पांच क्रिय

कति किरिप्? गोयमा! एव चेव॥ सेण भते! जीवे तेय जीवा अण्णेसि जीवाण परपराग्घाएण
 कति किरिप्? गोयमा! तिकिरियाधि, चउकिरियाधि पंचकिरियाधि॥ एव मणूसेवि ॥ १८॥
 अणगारस्सण भते! भावियप्पणो केवल्लि समुग्घाएण समोद्दयरस जे चरिमा निज्जरा
 पोगला सुहुमाण पण्णत्ता तेपोगला सन्नलोगपियण फुत्तिचाण चिट्ठत्ति? हत्ता
 गोयमा! अणगारस्स भावियप्पणो केवल्लि समुग्घाएण समोद्दयरस जे चरिमा
 निज्जरा पोगला सुहुमाण पण्णत्ता तेपोगला समणात्तो! सन्नलोगपियणं फुत्तिचाण
 चिट्ठत्ति ॥ उठमरयेण भते! मणुस्से तेसि पिज्जरापोगलाण किंचि वण्णेणं वण्णं,

हमे मागे परम्परा से जीवों की प्राप्ति होते व्रत के कितनी क्रिया करो! अहो गौतम! वीन बार
 पाँच क्रिया लग ऐसे हैं। मनुष्य का भी कहना ॥ १८ ॥ अब केवल समुद्राव आश्रय करते हैं!
 अहा प्रगल्भ! सुषम तथापि कर अपनी आत्मा को भावने वाले अनमार (साधु) केवल समुद्राव
 समोह कर जा अन्तिम निर्मल के सूक्ष्म पुद्गल कह हैं अहो श्रमण आयुष्मन्तो! वे पुद्गलों सब लोक
 को स्पर्श कर रहते हैं? अहो गौतम! भवितात्या अनमार केवल समुद्राव समोह कर जा
 अन्तिम निर्मल के पुद्गल मूल्य पुद्गल करो हैं अहो श्रमण आयुष्मन्तो! सर्व लोक को स्पर्श

नन्दनं नन्दं नन्दनं रत्नं, नन्दनं फास, जाणसि पासते ? मत्तम्
 नन्दं नन्दनं नन्दं ! पूव बुधाति उठमयेण माससे नोव
 नन्दं नन्दनं नन्दं वन्देण वन्देण गंधे, रसेण न, फासेण न
 गोयमा ! मय्यमं जयुयि दिव्ये सत्यदीवसमुदायं सम्यग्मत
 सेछापूपयसठाण सठिए वहे रहस्यकयाल सठाण सठिये,
 सठाण सठिते, वहे पहिपुण्ण वंद सठाण सठिते, एण जोयण
 विक्खंभेण, तिस्सिज जोयणसयसहस्साइ सोलससहस्साइ बोस्सि

रावे हैं अपने मगबन् ! छद्मस्व भुण्ण बन निर्भर हूँ मूल्य पुरखों को
र स्वर्ग से सर्वकर आनसकें देख सकें ! बहो गीतण ! यह अर्थ- इस
॥ बहा मगबन् ! किस कास्न ऐसा करा छद्मस्व भुण्ण बन निर्भरा के
र्णकर, नैप से गपकर, रसमे रसकर, स्वर्ग से स्वर्ग करनेवाँ मान सम्मान
रहाम्ना-या अम्बुदीप नावक दीप स्वर्ग दीप समुद्रों के अमृत का लव से

इ एगदिसि एवाति ए
लस्स क्वापुण्णे एवति
गेयमा! जहण्णेणवि
तस्य पाणाइ भूयाइ
किरिए? गोयमा!
ताओ जीवाओ

संज्ञ, स्वर्ण, इवेना
' नयन्य भी वर्तकृष्ट
की वात करे पायत्
स्वात् पांच अगे
तेषों से छू अनेक
, बार पांच क्रिय

तेजिण्य कोसे अट्टाणीसच धणुसत तरत अगुलाइ अखगुलच विचि । अससाहत्त
परिकसेवेण पण्णच ववणं मद्विणुए जाव महासेक्स एगमह सविलेवणं गव
समुग्गय गहाय त अवबालेति, तमह एग सविलेवण गधसमुग्गय अवबालइत्ता
इणमेवणतिकहु केवल कण्य जंबूदीव पीव तिहिअच्छराणिवातहि तिसत्तक्खुप्पो
अणपरियट्ठिचणं इत्थ मागच्छेजा, सेण्ण गोयमा! से कवल कण्ये जंबूदीवे हीवे तेहिघाण
पोगलेहि फुछे ? हुंता फुछे छडमरयेण गोयमा! मणूसे तेसि घाणयोगलाण किंचि
वण्णेण वण्णं गवेण गधं, रसेणरसे, फासणंफासे जाणति पासति ? भगव! जो इणट्टे

मोठ मविण्णं नन्त्रमा के संस्वामसे सारियव एक त्तर पोजन का सम्या बीषा, तीन लाख पोलइमार
को सो सवाधीस याजन नीन गाव एकसो अठापीछ वनुज्य सादीवरे अगुल से किंपित बिहप परादि है काइ
देवमा महाक्रुद्धि क वागत् महासोस्वधान एक, बडा सुनपी डल्ल से मरा हुवा बडा इत्थ में वारन का उस
का मुन दुल्ला रहें वस गुप्पी चूर्ण का दवा सुद्धा रखवा सम्पूज अणुदीव को तीन पर्वदि
वजाय इवने में इक्कीस बहार लगाकर मुन पीछा आवे थयो गोषय ! अपूर्ण जमुदीप में
रह भीव की वस सुनपी चूर्ण के प्रचयन मविण्णो का को स्पष्ट पया! अशो भगवन् ! स्पर्ध अशो गोठम !
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

समष्टि से तेगट्टेण गोयमा ! एव बुद्धति छठमत्येणं । मणुस्से तेसि निजरापोदगलाण
 णो किंचि वण्णेण वण्य, गंधेण गंधं, रसेणरस, फासेणफासे जाणति पाससि, ए
 सुदुमाय ते पोरगला पणत्ता समणात्तसो ! सब्वलोगपियणं फुसिच्छाण धिट्ठति
 ॥ ३९ ॥ कम्हाण मत ! केवलि समुग्घाय गच्छति ? गोयमा ! केवलस्स चत्तारि
 कम्मस्स अत्ता अक्खणीणा अवेयिता अणिज्जिणा भवति तज्जहा वेयमिज्जे, आउए, जामे,
 गोत्ते, सब्वचहुए से वेदणिज्जे कम्मं हुवति सब्वरथोवे से आउए कम्मं भवति, विसमसम
 करेति वधेणहिं ठितीहिय विसम समीकरणताए वधेणहिं ठितीहिय, एव खलु केवली

स्वाकर जाने की यह असुकर द्रव्य और है दत्त क्या ! अहा भगवन् ' यह अर्थ समय नहीं इसलिये भो
 गोतम ! ऐसा कहा है कि छवस्व मनुष्य उन निर्भरा के पुत्रों को किंचित्साय भी धर्म से वर्जकर, गंध
 से गंधरू, रस से रसकर स्वयं से स्पर्शकर जाने दत्त नहीं इस प्रकार के मूख पुत्र वे को है भो श्रमण
 प्रायुष्यतो ! वे पुत्रों सर्व त्याग का स्पर्श कर रहे हैं ॥ २९ ॥ अहो भगवन् ' किस कारन से केवली
 के समुदाय होती है ! अहा गोतम ! केवली के चार कर्म हीण नहीं होते बिना बद रहे, निर्भरा नहीं हुई उन
 चार कर्म के नाम १ वेदनीय कर्म, २ आयुष्य कर्म, ३ नाम कर्म, और गोत्र कर्म इन में सब से अधिक
 प्रदेवों बाधा तो वेदनीय कर्म रहा और सब स्वयं प्रदेव बाधा (योडा) आयुष्य कर्म रहा, यह विषय

समोद्वहति ॥ एव समुधाय गच्छ ॥ २० ॥ सन्नेविण भते ! केवली
समोद्वहणइ, सन्नेविण भते ! केवली समुधाय गच्छति ? गोयमा ! जो
इणइसमट्ठ ॥ ! जरसाउपुण तुल्लाइ वणेषि ठितीहिय भवोषगगहकम्माइ
समुधाय सेण गच्छति आगताण समुधायं मणता केवली जिणा
जरामरण विप्पमुक्का सिद्धिवरगतिगता ॥ २१ ॥ कति समइएणं भते !

(न्यादा कर्म) है इन का सम [बराबर] करने वालो जगन्मय आत्मप्रदेश के साथ झोलीभूषणना किया उन की स्थिति को विषय का सम करन बघन की स्थिति कोलये गों निमय केवलीके समुदाव होती ॥२०॥ अहो भगवन् ! सब कथल ज्ञानी के समुदाव होती है ! अहो भगवन् ! सब केवली समुदाव करते हैं ? ! अहो गौतम ! यह अर्थ समर्थ नहीं, परन्तु जिस के आयुष्य कर्म की अन्य कर्षों के तुल्य पन्थ स्थिति न इति वे मत्तोपग्राही कर्म को सम करने को समुदाव करत हैं और अनत केवली भिन्नपर विना समुदाव किये ही नरा परण विमुक्त हो सिद्ध प्रधानगति को गये हैं (बहुत अर्थी पञ्चरना में स्थिते हैं भिन का छ परीना बाकी आयुष्य रहे उन को कथल ज्ञान उत्पन्न होव उस में कोईक विषय कर्म केवल समुदाव करते हैं श्रेय समकर्म वाले और छे मरिने से गतिस्थि आयुष्य वाले को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ हो उनक केवल समुदाव नहीं होती है यह कथन गोमट्टमार ग्रन्थ में भी है) ॥ २१ ॥ अहो भगवन् ! कितने समय में आत्मजी

समष्टि से तेगट्टेणं गोयमा ! एवं वुद्धति छठमत्थेण | मणुस्से तेसि निजरायोगलान
 णो किंचि वण्णेणं वण्णं, गंधेणं गंध, रसेणरस, फासेणफासे जाणति पासाति, ए
 सुहुमाणं ते पोगला पण्णत्ता समणाउसो ! सन्वलोगपियणं फुसित्ताण धिट्ठति
 ॥ १९ ॥ कम्हाणं भत ! केवल्लि समुग्घाय गच्छति ? गोयमा ! केवल्लिस्स चत्तारि
 कम्मस्स असा अक्खणा अवेरिता अभिञ्जिण। भवति तज्जहा वेय्यिज्जे, आउए, पामे,
 गोचे, सव्वचहुए से वेदभिज्जे कम्म हवति सन्वत्थोवे से आउए कम्मे भवति, विसमसमं
 करेति वधेणेहिं ठितीहिय विसम समीकरणताए वधेणेहिं ठितीहिय, एव खलु केवली।

स्पष्टकर माने की यह बमुक्त द्रव्य और है दत्त क्या ! महा भगवन् ! महा अर्थ समर्थ नहीं इसलिये महा
 गानप ! एसा कहा है कि एषस्व मनुष्य तन निर्भरा के पुत्रलों को किंचित्त्वाप भी वर्ण से वनकर, गंध
 से गन्धकर, रस से रसकर स्पर्श से स्पर्शकर माने दत्त नहीं इस प्रकार के मुख्य पुत्रल वे को है अहो श्रमण
 गच्छतौ ! व पुत्रलों सर्व साक का स्पर्श कर रहे हैं ॥ १९ ॥ यहाँ भगवन् ' किम कारन से केवली
 नाउ हावी है ! महा गौतम ! कवली के चार कर्म क्षीण नहीं बाने पिना वेद रहे, निर्जरा नहीं हुई उन

नाम १ वेदनीय कर्म, २ आयुष्य कर्म, ३ नाम कर्म, और गौत्र कर्म इन में सब से अधिक
 वेदनीय कर्म रहा और सब स्वल्प प्रवेश पाछा (चोटा) आयुष्य कर्म रहा, यह विषय

अद्वसमइए पणोच संजहा पढमे समए दउकरेति वाँए समए कयाड करोति, तसिए

नि उवर दिगा रे मुख हा सो पुव पाधिम दिशा में कपाट करे [उस कपाट के समप में] सावा वेदनिय, २
 रागा ३ मनुष्यगति ४ दशानुर्ध ५ मनुष्यानुर्धी, ६ वैधेन्द्रिय जाति, पाच खरीर, एवं ११,
 छिन प्रगांग एव १६ प्रउस्तनयणदि ६ ए१ १८ मयम सघयन मयम सस्यान २, मगरुनयु नाम २२
 परापत्त नाम, २३ उभास नाम २६ प्रउस्त विहायगति, २६ ग्रसनाम, २६ बावर नाम २७ पर्याप्त नाम,
 २८ प्रत्येक नाम २९ आवाप, ३० उद्यात ३१ स्त्रिय, ३२ शुभ, ३३ सौभाग्य, ३४ सुख, ३५
 मोदय, ३६ यक्षकीर्ती, ३७ निर्मान नाम, ३८ तीर्वकर नाम, और ३९ त्वं गौत्र इन ४० प्रकृतियों के
 अनुपात में अशस्त प्रकृति क अनुभाग प्रसपकर घातकरे हम समुदाय के ऊपर की स्थिति
 का जो अमस्यानश भाग में का एक भाग के फिर अमस्यते प्राग करे २९ प्रकृति सब के मी अनव
 भागकरे एस व रे कपाट क समयमें स्थिति के असस्यातवे प्रागकी घातकरे, फिर एक भाग असस्यातवा
 रत और एक अशस्त एत अनुभाग सादकर अनव अनुभाग को वाच करे] १ तीसर समय इस कपाट
 का मयन (पुन) कर, हम मयम 'अतिशृष्ट' शप जो स्थिति उसका एक अशस्यातवा प्राग के असस्यात
 भाग करे, और एक अनवश भाग रहा है उस प्रकृति के एक प्राग के मी फिर अनुक्रम में
 अनव प्राग करे तब तीसर समय स्थिति के असस्यातवे प्राग को घात करे और पढे की स्थिति का

आउजाकरण पणत्ते ? गोयमा ! असख्य समइए अतामहुत्तिए आउर्जिकरणे
पणत्त ॥ २२ ॥ कतिसमइएण भत ! कवलीसमुग्धाए पणत्ते ? गोयमा !

करण [मनादि क योग की उद्भवा हो आत्मा का मोक्ष सन्मुख करने का] कहा है ! यहो गौतम !
मसस्याए समय क भंहर पुन काळ में यादखी कल होता है, ॥ २२ ॥ यहो भगवन् ! केवल समुदास
किनेने समय की कही है ? यहो गौतम ! प्राठ समय की केवल समुदास कही है सद्यथा—, आत्म
प्रदेव का अपने शरीर प्रमान आदा बोदा और चउदह राजकाक प्रमान देहकर (उस वक्त वदनीय नाम
यौत्र कर्म की स्थिति पत्योषण के जर्मस्यातने माग मात्र रह और आयुष्य पादा हाटे वह वदनीय नाम
गौत्र कर्म की राखी है उस की स्थिति का नास करके असस्यात माग कर सही दहक समय देह जतेही
अर्मस्यात भाग की घात कर, और एक संस्यातवा भाग बाकी रहे और येण जो कर्म है उन की
महानि का भनंत माग करे उन के नाम-१ प्रथम संस्यान छोहकर पांच सस्यान, प्रथम सपयन छोहकर
पांच सपुषण, प्रसाता वेदनी एवं ११ अमक्षस्त बर्णादि चार, उपधात नाम, अमक्षस्त विहायगति, दुर्माग्य
नाम, मस्यि८ नाम, अमर्षासि नाम, मशुभ नाम अनादेय नाम, अपन्नकीर्ण नाम, नीच मौन
इन २५ मकृति के पुत्रा के अनंत विभाग हैं उस में का एक अर्मतवा विभाग छोहकर
माका सयकरे) २८र ममप जो पूर्वदेह करही बक्त पूर्वदिशा में मुल हाते चपर वक्षिण दिशा में रुपादकरे

छट्टेसमए मयं पढिसाहुरति, सचमेसमए कयाढ पढिसाहुरति, अट्टमेसमए दढपढिसाहुरति

अनंतगुण अधिक है वे चौथे समय में रह ५ पाँचवे समय में जो चौथे समय में लोकान्तर आरम्भ प्रदेश कर पूर्ण किया था उसे आकर्ष कर संहारे चौथे समय शेष तीनों कर्मोंकी स्थितिका जो अंश रखावना माग कहा है और प्रकृति क अनुमाग का अनवशा मान रहा है उस का फिर मुद्दि कर अनुक्रम से अमंख्यातया एक माग के फिर असंख्यात माग करे और अनवश माग कहना वहाँ अनकाशका अन्तर क पाँचवे संहारन समय जो तीनों कर्मकी स्थिति के असंख्या तने माग की बात करे शेष एक असंख्यातया माग छोड़ और अनुमाग के अनवशे माग की बात करे शेष एक अनवशा माग और रहे यहाँ दृढादिक के प्रथम समय से लगाकर पाँच व लोक मंहारन समय तक प्रत्येक समय २ तीनों कर्मों की स्थिति का रूप और प्रकृतिका अनुपग के अनव माग रूप कर के बात कर, यह यहाँ पाँच वे समय के पाद आयुष्य १ तीनों कर्म की स्थिति के प्रकृति क अनुमाग का सर्व समान अन्तर मुहूर्त के काल में धरापर करे और यहाँ छठ समय से आरम्भ कर जो स्थिति के परमाणु अन्तर मुहूर्त के काल में विनाश करे, यह तो यहाँ पीछे के समय से प्रसन्न पने से भेद माप होवे इसलिये पण्णदि समय में सब के टुकड़े २ समय २ में एक २ बरफ में भितना अणु है उस ने काळ में अन्तर मर्हर्त का चरम समय सब टुकड़े जड़ीरणा करे, सयकरे यों अन्तर मुहूर्त के काळ स्थिति अणु के

समए मथकरेति, चउत्ये समए लोगपुरेति, पंचमेसमएलोगं पढिसाहुरति,

असंख्यातवा भाग छोड और अप्रमत्त प्रकृति के २५ के अनुभाग अनंत भाग कर के एक भाग छोटे अनुभाग के अंदरे भाग की यात करे, एक अनंत छोटे भाग करे प्रमत्त प्रकृति के अनुभाग की यात करे प्रमत्त प्रकृति के अनंत अनुभाग है उन को अप्रमत्त प्रकृति के अनुभाग में प्रक्षेप कर यात करे, बाहिमी फिर वीसरे समय अवशेष काल की स्थिति और अनुभाग रहे ४ चौथे समय यवन में जो लोक की माह लाकी रही हो उसे लोक के अनंत तक पूरा करे संपूर्ण लोक को पाती के घट की परे आत्म प्रवेष्ट कर परिपूर्ण पर दे (उस समय वीसरे समय में द्रव काल की स्थिति रही है एक असंख्यातवा भाग रहा है. अन्य प्रकृति का एक अनंतवा भाग रहा है उस का बुद्धि कर अनुक्रम से काल की स्थिति के असंख्यातवे एक भाग के और भी असंख्यात भाग करे अन्य प्रकृति का एक अनंतवा भाग के फिर अनंत भाग करे वे चौथे समय जिस स्थिति के असंख्यातवे भाग की यात करे और एक भाग छोटे वह असंख्यातवा भाग द्रव रहे अन्य प्रकृति के अनुभाग का एक अनंतवे भाग की यात करे वह एक अनंत भाग द्रव रहे यह भी प्रमत्त प्रकृति के अनंत अनुभाग पछि के भाग साथ ही यात कर पो स्थिति की और प्रकृति की यात करे, इस एक चौथे समय में केवली मार्गंत के वेदनीपादिक की स्थिति आयुर्कर्म की स्थिति से असंख्यातगुनी अधिक थी और प्रकृति का अनुभाग है वे अनुभाग

दठ पाईसाहरिचा तसो पण्डा सराररयं भवति॥ २३ ॥ सेण भंते ! तद्वा समुघाय
गते किं मणजोग जुजति, वडजोग जुजइ कायजोग जुजति? गोयमा! णो मणजोग जुजति
णो वडजोग जुजति, कायजोग जुजति ॥ कायजोगेण भंते ! जुजमाणे किं ओराणिय
सरीर कायजोगं जुजति, ओराणिय भिस सरीर कायजोग जुजति, किं वेउन्निवय

अनुभाग के अद्वैतके परम समय में सर्व आयुष्य की स्थिति अनुयाग अणु अक्षरुपात्त सम काळ में सव
को समष्टि पांचवे समय छोड़ सारन कर सर्व स्थिति परावर कर छोड़ समय जो वीसरे समय में
मयन रूप किये ये उन प्रदेवों को आकर्षण का संतरे वह स्थिति क प्रकृति के अनुभाग का आयुष्य का
पाछव है अनुभागका आयुष्य के समान मणुस्यकरे फिर ८ आठव समय में जो प्रथम समय में आत्म प्रवेशों का
प्रदरूप किष्वा काया उसका आकर्षण करे वहां भी, वारों अर्द्धक सृष्टि एक स समय करे इस प्रकार दंडक संदे
मेंसे हरन करके सर्व प्रदेवों का स्वतःके धीर में समावेश करके मुमक्षरुपने ॥ २३ ॥ अथा मगपन् ।
वड समुदाव को करेवे हुवे क्या मन भाग प्रयुजते हैं, वचन योग को प्रयुजते हैं कि काया याग को
प्रयुजते हैं ! वहां मौलम ! मन लोग को और पवन योग को नहीं प्रयुजते हैं परंतु काया योग को
प्रयुजते हैं यदि काया भाग को प्रयुजते हैं तो क्या उदारिक कायजोग को प्रयुजते हैं कि औदारिक

सरीर काय जोग जुजति वेठविय मीस सरीर काय जोग जुजति, किं आहारग
 सरीर काय जोग जुजति, आहारग मीस सरीर कायजोग जुजति, किं कम्मग
 सरीर काय जोग जुजति ? गोयमा ! ओरालिय सरीर काय जोग जुजति,
 ओरालिय मीस सरीर कायजोग जुजति, जो वेठविय सरीर काय जोग जुजति,
 जो वेठविय मीस सरीर काय जोग जुजति, जो आहारग सरीर कायजोग जुजति,
 जो आहारग मीस सरीर कायजोग जुजति कम्मगसरीर कायजोग जुजति पढमट्टमेसु
 समएसु ओरालिय सरीर कायजोग जुजति धीतियल्लुसचंयसु समएसु ओरालिय

मिश्र काया योग को प्रयुजते है कि वैकल्पकाया योग को प्रयुजत कि वैकल्प मिश्रकाय जोग को प्रयुजते
 है आहारक काया योग को प्रयुजत है, कि आहारक मिश्र काया योग को प्रयुजत है, कि कार्यन काया
 योग को प्रयुजते है ! अतो गौतम ! यौदारिक काया योग प्रयुजते है, यौदारिक मिश्र काया योग प्रयुजते
 है, वैकल्प काया योग नहीं प्रयुजते है, वैकल्प मिश्र काया योग नहीं प्रयुजत है, आहार काया योग नहीं
 प्रयुजते है, आहारक मिश्रकाया योग नहीं प्रयुजत, परंतु कार्यन काया योग प्रयुजते है, इससे पाँचके समय
 और आठव समय वा यौदारिक काया योग को प्रयुजते है, दूसरे छत समय यौदारिक मिश्र काया योग
 प्रयुजते है, तीसरे चौथे और पाँचव समय कार्यन याग प्रयुजते है यहां केवली अनाहारिक होवे है (वन

मीसा सरीर कायजोग जुजति, तातिय चउतय पचमेसु समएनु कम्मग सरीर कायजोग जुज
ति ॥ २४ ॥ सेण भंत ! तहा समुग्घाय गते सीअति वुअसति मुद्धति परिनिष्वाप्ति सन्वदु
क्खण अत करति ? गोयमा ! णो इणट्टु समट्ठे ॥ सेण ततो पढिनियति
पढिनियत्तिचा इह मागच्छइ २ चा तता पच्छा मणजोगपि जुजति, वइजागंपि
जुजति, कायजोगपि जुजति ॥ मणजोगेण जुजमाणे किं सच्चमणजोग जुजइ मोसमण
जोग जुजति सच्चामासमण जोग जुजति, असच्चामोसमण जोग जुजति ? गोयमा ! सच्चमण

वच दध प्राण में मे मनबल, बचनबल और आसो आस बिना बस प्राण केबसी के पाते
हैं) ॥ २४ ॥ अहो मगबन् ! केवल इानी समुदात करते हुये सिद्ध बृद्ध मुक्त परिनिष्वा
प्ति सर्व दुःख का अन्त करते हैं क्या ? (अहो गौतम ! यह अर्थ योग्य नहीं बर्नातू तत्काल सिद्धबुद्ध मुक्त नहीं होते हैं
परंतु तब समुदघात से मार्तिर्नबुध होकर यही आते हैं अर्थात् शरीरस्य होते हैं [प्रत्येकार सिल्लते हैं] कि
समुदघात बोली वक्त केबसी के आठ खचक प्रदेख लोक के मध्य पर्यंतमे रूके यदि खचक प्रदेख के
स्थान रहते हैं तबही संपूर्ण लोक में उन के आत्मा के प्रदेख दरावर रहते हैं, नहीं वो लोक के बाहिर
निकल जाते किन्तु ऐसा होना असंभव है कात्माकाभी फरमान है कि एक आत्म के प्रदेख लोक प्रमान है]
फिर मन्सोण भी पुंजते हैं बचन योग्यभी पुंजते हैं और काबाबोग भी पुंजते हैं ॥ अहो मगबन् ! मनबोम

जोग जुजति, णो मोसमणजोग जुजति णो सच्चा मोसमणजोग जुजति, असच्चा मोसमणजोग जुजति ॥ धृतिजोग जुजमाण किं सच्चवइ जोग जुजति, मोसवइ जोग जुजति, सच्चा मोसवइ जोग जुजति असच्चा मोसवइ जाग जुजति ? गोयमा ! सच्चवतिजोग जुजति, णो मोसवइ जोग जुजति, णो सच्चा मोसवतिजोग जुजति, असच्चा मोसवइ जोग जुजति ॥ कायजोग जुजमाणे आगच्छजवा, गच्छेजवा, विट्टेजवा, निसिएजवा तुयइजवा । तखचजवा, पहिंघेजवा, पढिहारिय पीठफलगसेजवा सथारग पच्चपिणेजवा,

पुंजते हुने क्या सत्यमनयाग पुंजते हैं कि मृपामनयोंग पुंजते हैं कि मिश्रमनयोंग पुंजते हैं कि व्यवहार मनयोंग पुंजते हैं ? अह ! गौतम ! सत्यमनयाग और व्यवहार मनयोंग पुंजते हैं किन्तु असत्यमन और मिश्रमनयोंग नहीं पुंजते हैं । बचनयोंग पुंजते हुने यथा सत्यवचनयाग पुंजते हैं कि असत्यवचनयोंग पुंजते हैं, कि मिश्रवचन याग पुंजते हैं कि व्यवहार वचन याग पुंजते हैं ? अहो गौतम ! सत्य और व्यवहार वचन योंग पुंजते हैं किन्तु असत्य व मिश्रवचन-योंग नहीं पुंजते हैं और काययोंग पुंजते हुने आवागमन करते हैं, खड़े रहते, बैठते हैं क्षयन करते हैं, उद्वहन, पहिंघन करते हैं, पीठयारे लाय हुये दीया संधारक पीठफलग पीछ दते हैं [यद्युर्थी पन्न वना ये विवतन हैं कि पठकपल हुआसमओ भिन्न गहुतो विमिसओ, काओ अभाअरभेयं, छम्मासमुक्को समुमिणंति भयात् आयुप्प के उपास से रहते हैं तथा समुदयाव की पाँछ करेते हैं सपन्य भन्तर मुदुर्थ ।

ततो अणतर सुहृमस्स पणगजविस्स अपब्बत्तयस्स जहण्णजोगिस्स हेट्ठा असंख्ख
 गुण परिहीण तच्च कायजोग निरुमइ सेण एतेण उवाण्ण पढम मणजोग निरुमति
 पढम मणजाग निरुभिच्चा, यतिजोग निरुमति, वतिजाग निरुभिच्चा, कायजाग

नीलन फूलन क अपर्याप्त का जा प्रथम समय का उत्पन्न हुआ काया योग ततना जघन काया याग
 सर्ग में अथ धीर्गवासा, उस से भी नीच का पादा अमलपातगुना हीन, असलपातवे भाग हीन उसे समय २
 निरुधन करत यों असलपात समय में काया याग का निरुधन करे इस का निरुधन करत सूक्ष्म क्रिया
 अदतिगती तीसर मुक्त ध्यान के पापमें ऊपर चढ़त तदारिक शरीरमें रह विपरिच्छि पूषकरे तब शरीर क
 तृतीय भाग प्रदत्त रहे यों तीसरा काया यागका निरुधन कर कबसी उत्त व्यापमें प्रथम मनयोगको रूपे, मनयाग
 याग का रुक्कर वचनयाग का रुक्क, वचनयोग को रुक्कर कायायाग का रुक्क कायायाग को रुक्कर
 यागका सत्त्वा निरुधन कर, यागका संपूर्ण निरुधन कर यों योग क निरुधन कालान्तर अन्तिम अन्तर
 मधुत में वदती भादि तीनों कर्म की प्रकृति को अलग ३ संकलकर और भी संकेतने योग्य कर, कर के
 उस की श्रानिम प्रदत्तकी रचना कर, वह इस प्रकार—प्रथमतो कर्म क बहुत स्थितिबाल प्रदत्त का निर्मि
 दुसर समय अभ्यग्यात गुनहीन निजर, यों तीसरी वक्त कर्म निर्मर, यों चरमस्थ स्थित का

नियमति, कायजोगं निरामिषा जोगनिरोहं करोति जोगनिरोहं करोचो अजोगच पाउण्ड २ सा, ईसि हस्तपञ्चमखरधारणट्टाण्णससंख्ख समइय अतोमुहुचिय सेलेसि पढिचज्जइ, पुव्वरइयगुण सेठीय षण कम्म तीसे सेलेसि मद्दाण्ण सससंख्खाहि

स्थापना दूसरी रचना प्रथम पोंछे निर्भरे फिर क्यादे निर्भरे, इस की स्थापना
तीसरी स्थिति की रचना, तीसरी प्रथम संग पोंछे निर्भरे फिर सम विग्रह निर्भरे चौथी स्वना
प्रथम बहुत फिर सम पाँचवी रचना समयर प्रवे असंख्यावस्तुन निर्भरे यह
मनयोग निरूपण का कथा, वेला ही बचन जोग का मी कहना यों तीसर बिमान काया भोग
के पुत्रल सकेल हम अयागीपना का प्राप्त करे यों अजोगी वने के सम्मुख होकर स्वोक (पोट)
काख खेली/शापना प्राप्त करेंगे वह करते हैं “अ इ उ ऋ लृ” इन पाँच व्यंसरो के ऊपरार
करनेका मिदना काख है तबना काक लमें इतले बाण से युन श्रौणि कर प्रथम समय बहुद कार्य निर्भरे दूसरे
तीसरे प्रथम पोंछे ७ कर्म निर्भरे, तनकी स्थापना इस प्रकार से कर्म समय

दसपण्णोविउत्ता णिट्ठियट्ठा णारया णिरियणा निम्मला त्रितिमिरा

विसुद्धा सासयमणागयद्ध काल चिट्ठति ॥ २६ ॥ से केणट्ठेण भते ! एव बुच्चति

जित्तल आत्मा प्रदेश अवगाहे लवने आकाश प्रदेश स्पर्शता हुआ सीधी श्रणिसे जावे किन्तु इधर उधर न मुड इसलिय अस्पर्शमानमति कही है, जिस समय इन चारों कार्योंका नाश हुआ उसही समय एकही समय में वक्रगाति रहित सिद्ध साध को प्राप्त करें तबनेही आकाश प्रदेश सिद्ध क्षेत्र के अवगाह कर सिद्ध स्थान में रहे, साकार ज्ञान उपयोग सहित ॥ किन्तु प्रदेश उपयोग उस वक्त नहोवे क्योंकि एक समय में दो उपयोग नहीं होते हैं। इस प्रकार तहाँ लोकाग्र में सिद्ध होवे उदरिकादि पाँचों शरीर रहित आत्मा क सपन प्रदश सहित कृच्छ्र ज्ञान, केवल वर्धन के उपयोग युक्त सर्व प्रकार के काय क्षोय सर्व प्रयाजन पुण्य पुत्र कर्म रहित भागाधिक काल में भी कर्म का बन्ध नहीं करते प्रयत्नों के इत्तन चक्रन रहित निश्चल, अक्रिय होने से कर्म रत्नका अस्थगर्भ पुत्र बच्चे कर्म क्षय होने से कर्म रहित तथा दृढ्य मेल रहित अज्ञान रूप समित्त रहित अत्यन्त विशुद्ध अविनाशी आम्बत, अनागत अनंत काल पर्यन्त वहाँ सिद्ध बनकर रहे ॥ २६ ॥ अहो मगधन ! ऐसा किस कारण से कहा कि वे वहाँ सिद्ध होते है शरीर रहित होइये

तेण तत्त्वमिच्छा भवति असरीरी जीवधणा दसणणाणोवउत्ता भिट्ठियट्ठा णौरया
 विरेयणा निम्मला वित्तिमिरा विसुद्धा सासयमणागद्ध काल चिट्ठति ? गोयमा !
 स जेहा णामए वीआण अगिगवट्ठुण पुणरवि अकुरुप्पत्ति ण भवति
 पवामस मिद्धानवि कम्मवीएसु दट्ठेसु पुणरविज्जभुप्पत्ति नभवइ से तेणट्ठेण
 गोयमा ! एव वुच्चति तेण तत्थ सिद्धा भवति असरीरा जीवधणा दमणणाणोवउत्ता
 भिट्ठियट्ठा णौरया विरेयणा विनिम्मला वित्तिमिरा विसुद्धा सासय मणागयद्ध काल
 चिट्ठति ॥ २७ ॥

जीव सयन प्रदश रहते हैं दर्शन ज्ञान के उपयोग मोहित हैं, सर्व अर्थ के साधक हैं, कर्म रम रहित हैं, नि
 श्रय हैं, क्रिया कर्म की रज रहित हैं, निर्मिष, अज्ञान समिप्य तिमिररहित विमुक्त आश्रय, अनागत कालमें अनंत
 काल तक रहते हैं ! अहो गीतय ! यथादृष्टान्त मूजा हुआ अनाज, अवशा बीज अग्नि में दग्ध किया
 हुआ पुनरावि बट अकूर उत्पत्ति नहीं कर सकता है। यही प्रकार सिद्ध भगवत्ते भी कर्म ब्रीम
 का दग्ध कर दिया पुनरावि मवाकूर को उत्पन्न नहीं करत है इसलिय अहो गीतय ! ऐसा कहा है वे वहां
 सिद्ध बात है, शरीर रहित जीव के सयन प्रदश युक्त कवल ज्ञान केवल दर्शन के उपयोग युक्त निष्प्राय
 सर्व कार्य साधक प्रयाजन सम्पूर्ण दुःख कर्म रम रहित दुःख हैं, निश्चल हुआ हैं क्रिया रहित कर्म रहित
 निर्मिष, अज्ञान समिप्य रहित, विशुद्ध आनन्द अनागत काल में रहण है ॥ २७ ॥ अर्थात् उप मन्त्र अतिशय मे

सासय भव्यावाह चिद्वृत्ति सुही सुहृपत्ता ॥ इति पणवणा ममुग्घाय

पद छचित्समं सम्मच ॥ ३६ ॥

जप नरा मरणादि सप दुस्ससे विमुक्त पन इण द्वाभत अग्घावाध पुसही सुल पे सदेन रहते हे ॥ इति
पणवणा मसवही का समुदपात नापक छचीसवा पद समासम ॥ ३७ ॥

* इति पञ्चदश *

पणवणा सूत समाप्तम् ॥

वीर सवत २४४२ युगधर युका २४ वार चंद

